श्रीबघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पँवारकुलभूषण श्रीमद्राजाधिराज
श्री १०५ दुर्गासिंहजी बहादुर C.I.E.
सोलन

॥ ॐ ॥

हृदन्तरज्ञानतमोवितान-निवारणं पण्डितमण्डलीडयम् ।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्डपञ्चांग' मिदं चकास्तु ॥

सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग

श्रीगणेशाय नमः

मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश ।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश ॥

श्रीलक्ष्म्यै नमः

R Kim...

राजा चन्द्रः

मन्त्री चन्द्रः

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मद्दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

रूपगढ़ीया (रूपड़) क्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयैः

1953–54

अलंकृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतं च

भारत के विख्यात पञ्चांगकर्ता
एवं ग्रन्थकार

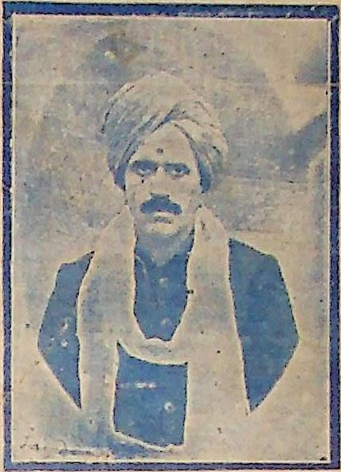

दैवज्ञरत्नराजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

BAGHAT श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम् PANCHANG

श्रीविक्रमार्कीय सं० २०१०, शके १८७५, सन् १९५३–५४ ई०, जयहिन्द सं० ६, (१५ अगस्त से ७)

गुरुवर्य्य श्री ६ पूज्यपाद कं० वा० गोविन्द सदाशिव आपटे एम. ए. बी. एस. सी. गणकचक्रचूड़ामणीत्याद्युपाधिधारिणाम् एवञ्च श्रीजयपुरमहाराजाश्रित-सिद्धान्तपञ्चाननपूज्यश्री ६ पं० केदारनाथसाहित्यभूषणज्यौतिषयन्त्रालयाध्यक्षाणां शिष्येण श्रीमद्दैवज्ञवर्य पं० रामचन्द्रात्मजेन पञ्चाम्बुदेशान्तर्गतकुरालीनिवासिना बघाटनरेशाश्रितेन ज्योतिषाचार्य्येण श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मणा विरचितम् । गणितकर्तारौ—साहित्याचार्यश्रीसत्यव्रत-प्रियव्रतशास्त्रिणौ ।

बांकीपुर
पटना

मोतीलाल बनारसिदास पुस्तक विक्रेता, पो० बक्स ७५, नेपालीखपरा बनारस

किनारी बाजार
देहली

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु ॥

श्री शंकरः शं करोतु।

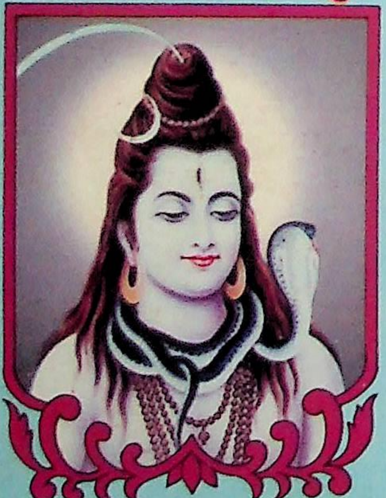

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ॥

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

शोधनिबन्ध विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०७७, शक संवत् १९४२
सन् २०२०-२०२१, जय हिन्द संवत् ७३-७४

पंचांग-प्रवर्तकः

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा बुध

मंत्री चन्द्र

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व॰ डॉ॰ शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली ९३ वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्राप्ति स्थानः रुचिका पब्लिकेशन्स
टाईटल पर रुचिका पब्लिकेशन्स का होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य 117/-

सर्वाधिकार– 'M/S मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली' द्वारा सुरक्षित हैं।

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52´, अक्षांश उ. 30° 44´ के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्त्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे–** सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेजी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30´ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के [illegible] नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। किञ्च– घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं–00मि. के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्त्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य [illegible] परवर्त्ती) वार का काल समझना चाहिए। **जैसे–** मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर [illegible] अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन– पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में ---(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्त्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकेन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ.	–अस्त।
अं	–अंश।
उ.	–उदित, उत्तर।
क.	–कला।
कृ.	–कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा.	–क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.	–गोधूलि (लग्न)।
ति.	–तिथि।
द.	–दक्षिण।
दा.	–दानपूजन।
दि.	–दिन।
दि.ल.	–दिन का लग्न।
प्रा.	–प्रारम्भ।
भ.	–भद्रा।
मा.	–मार्गी।
मि.	–मिनट।
रा.	–राशि।
ल.	–लग्न।
व.	–वक्री।
वा.	–वार।
वि.	–विकला।
वै.	–वैष्णवों के लिए।
स.	–व्रत सबके लिए।
शु.	– शुक्लपक्ष, शुक्रवार, – शुक्र (ग्रह)।
सं.	–संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.	–साम्पातिक काल।
स्मा.	–स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित **"प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109** के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की जाती है।

हृदन्तरस्थान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीऽयम्। 卐 त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

शोधनिबन्ध विशेषांक

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

विक्रम संवत् २०७७, शक संवत् १९४२
सन् २०२०-२०२१, जय हिन्द संवत् ७३-७४

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा बुध

मंत्री चन्द्र

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथो के यशस्वी लेखक स्व० पं० श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A, सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व० डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य

गौरवशाली ९३वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशक : अग्रवाल बुक डिपो (रजि.)
460, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23943254, 23936116

मूल्य 117/-

सर्वाधिकार-श्री० मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुमाली द्वारा सुरक्षित

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

संक्षिप्त विषयसूची (सं. 2077 वि.)

विषय	पृष्ठ
पंचांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द, आवश्यक निर्देशन	टा. पृ. 2
इनर टाइटल,	1
विषयसूची,	2
प्रमुख-प्रमुख एवं वर्गीकृत व्रतपर्व, सिक्खपर्व, अवकाश, मेले,	3-10
श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय,	11-12
संदिग्ध व्रतपर्व-व्यवस्था (सं. 2077 वि.)	13-15
गण्डमूल, पंचक,	16
ग्रहण-विवरण	17-21
संवत् 2077 वि. की कुल जन्म-वर्ष-प्रश्न-कुण्डलियां	22-32
शनि-साढ़ेसाती,	33-37
आकाशी कौंसिल (सं. 2077 वि.)	38-54
जलवायु एवं वर्षाविचार	55-59
व्यापारविमर्श (सं. 2077 वि.)	60-74
यंत्र, मंत्र, तंत्र—साधनाकाल एवं चमत्कार,	75-82
पण्डितों के लिए साधारण जानकारी	83-86
त्रयस्त्रिंशद् योगावली	87-91
प्रसूति लग्नविचार, नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र आदि,	92-103
नवांशराशि बोधक सारणी	104
12 राशियों का मासिक फल (सं. 2077 वि.)	105-116
वर्षराजादि फल (सं.2077 वि.)	117-126

विषय	पृष्ठ
तिथ्यादि 26 पक्ष (सं. 2077 वि.)	127-152
घण्टा-मिनटात्मक तिथ्यादि (भा.स्टैं.टा.),	153-168
चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणप्रवेश (सं 2077 वि.)	169-173
दैनिक ग्रहस्पष्ट, स्पष्टराहु,	174-189
अक्षांश भेद से चन्द्रदर्शन की तारीखें	190
चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (सं. 2077 वि.)	191-192
यूरेनस आदि के भोगांश, भौमादि ग्रहों के क्रान्तिशर,	193-198
ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरणचार, वक्र-मार्ग/उदय-अस्त,	199-204
अक्षांशादि सारणी,	205-214
दैनिक लग्नसारिणी (चण्डीगढ़ के लिए),	215-220
प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल,	221
प्राचीन पद्धति से लग्न एवं दशमसाधन आदि,	222-225
सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नई सरल विधि, साम्पातिक काल कोष्ठक आदि,	226-231
विंशोत्तरी दशान्तर्दशा सारणी,	232
सूर्यसिद्धान्तीय एवं सूक्ष्म-शुद्ध वर्षप्रवेश सारणी, ग्रहशील चक्र,	233-235
आवश्यक मुहूर्त्त,	236-238
मेलापक-सारणी देखने की रीति और अष्टकूट-परिहार, मेलापक-सारणी	239-246
लग्न-गण्डान्त, विवाहमुहूर्त्त में दस दोष,	

विषय	पृष्ठ
दिक्शूलादि विचार, यात्रा मुहूर्त्तादि,	247-260
शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2077 वि.)	261-265
सं. 2078 में सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त	266
त्रिबलशुद्धि कोष्ठक (सं. 2077 वि.)	267-269
अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2077 वि.)	270-271
मुण्डन, उपनयन, देवप्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त,	272-274
सर्वार्थसिद्धि आदि योग	275-277

इसवर्ष की नई विशेष सामग्री

विषय	पृष्ठ
पंडितों के लिए साधारण जानकारी	83-86
त्रयस्त्रिंशद् योगावली	87-91

शोधनिबन्ध विशेषांक *

विषय	पृष्ठ
समस्याएं और समाधान	281-288
किस ग्रह का रत्न धारण करें?	289-293
दशाप्रारंभ का सूक्ष्म काल	294-299
भारतेतर देशों में व्रत-पर्व-तिथियों का निर्णय	300-302

'अभिजित् प्रकाशन',
Kothi No. 59, Sector 6,
Panchkula (HARYANA)
की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के बारे निर्देश पृष्ठ 279 पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि-पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य्य - श्रीमच्छंकर-भगवत्पाद-प्रतिष्ठित - श्रींकांचीकामकोटिपीठाधिप-जगद्गुरु-श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे-महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म-श्रीशक्तिधरशर्म-श्रीमदिन्दुशेखर-शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पंचांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र-दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रत-पर्वादि-धार्मिक-कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्-इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ. शक्तिधरशर्मा ज्योतिष-गणितादि-विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं "दृक्सिद्धान्तभास्करः" इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड-पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती-महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक-लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश-कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

कांचीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या
(सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2078 वि.) में विशेष—अगले वर्ष (सं. 2078 वि.) के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग में भी अनेक ज्ञानवर्धक विषय एवं महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री देने का हमारा पूरा प्रयास रहेगा।— संपादक

* इस विशेषांक की विषयसूची के लिए पृष्ठ 279 भी देखें।

भी अनेक ज्ञानवर्धक विषय एवं महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री देने का हमारा पूरा प्रयास रहेगा।— संपादक

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2020 ई. से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक "व्रत-पर्व विवेक" पर आधारित)

जनवरी (सन् 2020 ई.)

इंग्लिश नववर्ष 2020 ई. प्रा.	1 जन.	बु.
पौषी पूर्णिमा	10 जन.	शु.
माघस्नान प्रारम्भ	10 जन.	शु.
श्री गणेश (संकष्ट) चतुर्थी	13 जन.	चं.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	चं.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	मं.
मौनी अमावस	24 जन.	शु.
माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	25 जन.	श.
गौरी तृतीया (गौंतरी)	28 जन.	मं.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	28 जन.	मं.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	29 जन.	बु.
लक्ष्मी एवं सरस्वती पूजन	29 जन.	बु.

फरवरी (सन् 2020 ई.)

रथसप्तमी/आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	1 फर.	श.
भीष्माष्टमी	2 फर.	र.
गुप्त नवरात्र समाप्त	3 फर.	चं.
भीष्म द्वादशी	6 फर.	गु.
माघी पूर्णिमा	9 फर.	र.
माघस्नान समाप्त	9 फर.	र.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 फर.	शु.

मार्च (सन् 2020 ई.)

होलाष्टक प्रारम्भ	2 मार्च	चं.
गोविन्द द्वादशी	6 मार्च	शु.
होलिकादहन	9 मार्च	चं.
होलाष्टक समाप्त	9 मार्च	चं.
वसन्तोत्सव	10 मार्च	मं.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा. (पं.)	10 मार्च	मं.
महाविषुव दिन	20 मार्च	शु.
महावारुणी पर्व	21 मार्च	श.
वारुणीपर्व	22 मार्च	र.
मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.)	22 मार्च	र.
भौमवती अमा	24 मार्च	मं.
चान्द्र संवत् 2076 वि. पूर्ण	24 मार्च	मं.
चान्द्र संवत् 2077 वि.प्रा.	25 मार्च	बु.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	25 मार्च	बु.
वर्षफलश्रवण	25 मार्च	बु.
तैलाभ्यंग/ध्वजारोहण	25 मार्च	बु.
गौरी तृतीया (गणगौर)	27 मार्च	शु.
आन्दोलन तृतीया	27 मार्च	शु.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	29 मार्च	र.
हयव्रत	29 मार्च	र.
नागपंचमी	29 मार्च	र.
स्कन्दषष्ठी	30 मार्च	चं.

अप्रैल (सन् 2020 ई.)

श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	1 अप्रै.	बु.
श्रीरामनवमी	2 अप्रै.	गु.
वासन्त नवरात्र समाप्त	2 अप्रै.	गु.
नवरात्र-व्रतपारणा	3 अप्रै.	शु.
दोलोत्सव	4 अप्रै.	श.
विष्णुदमनोत्सव	5 अप्रै.	र.
अनंग त्रयोदशी	6 अप्रै.	चं.
श्रीमहावीर जयन्ती	6 अप्रै.	चं.
शिवदमनोत्सव	7 अप्रै.	मं.
वैशाखस्नान प्रारम्भ	8 अप्रै.	बु.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	चं.
श्रीपरशुराम जयन्ती	25 अप्रै.	श.
अक्षय तृतीया	26 अप्रै.	र.
श्रीगंगा जन्म	30 अप्रै.	गु.

मई (सन् 2020 ई.)

श्रीजानकी जयन्ती	2 मई	श.
श्रीनृसिंह जयन्ती	6 मई	बु.
श्रीकूर्म जयन्ती	7 मई	गु.
वैशाखी पूर्णिमा	7 मई	गु.
श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा	7 मई	गु.
वैशाखस्नान समाप्त	7 मई	गु.
भद्रकाली एकादशी (पं.)	18 मई	चं.
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	22 मई	शु.
भावुका अमावस	22 मई	शु.
शनैश्चर जयन्ती	22 मई	शु.
रम्भा तृतीया	25 मई	चं.
अरण्यषष्ठी	28 मई	गु.
विन्ध्यवासिनी पूजा	28 मई	गु.

जून (सन् 2020 ई.)

श्रीगंगा दशहरा	1 जून	चं.
निर्जला एकादशी व्रत	2 जून	मं.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	5 जून	शु.
सूर्यग्रहण	21 जून	र.
आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	22 जून	चं.
रथयात्रा (पुरी)	23 जून	मं.
कुमार षष्ठी	26 जून	शु.
विवस्वत् सप्तमी	27 जून	श.
गुप्त नवरात्र समाप्त	29 जून	चं.

जुलाई (सन् 2020 ई.)

श्रीविष्णुशयनोत्सव	1 जुला.	बु.
कोकिला व्रत	4 जुला.	श.
शिवशयनोत्सव	4 जुला.	श.
गुरु पूर्णिमा (व्यास-पूजा)	5 जुला.	र.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रा.	5 जुला.	र.
श्रावण-शिवरात्रि	19 जुला.	र.
हरियाली अमावस	20 जुला.	चं.
सोमवती अमा	20 जुला.	चं.
मधुस्रवा तृतीया/संधारा तीज	23 जुला.	गु.
नागपंचमी	25 जुला.	श.
ऋक्- उपाकर्म	25 जुला.	श.
श्रीदुर्गाष्टमी	27 जुला.	चं.

अगस्त (सन् 2020 ई.)

रक्षाबन्धन (राखी)	3 अग.	चं.
श्रावणी पूर्णिमा	3 अग.	चं.
शुक्ल-कृष्ण यजु-उपाकर्म	3 अग.	चं.
श्री अमरनाथ यात्रा (ज.क.)	3 अग.	चं.
श्रीगणेश(संकष्ट) चतुर्थी	7 अग.	शु.
बहुला चतुर्थी	7 अग.	शु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	11 अग.	मं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)	12 अग.	बु.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	12 अग.	बु.
श्रीगुग्गा नवमी	13 अग.	गु.
कुशोत्पाटिनी अमावस	19 अग.	बु.
पिठोरी अमावस	19 अग.	बु.
गौरी तृतीया	21 अग.	शु.
हरितालिका तृतीया	21 अग.	शु.
साम उपाकर्म	22 अग.	श.
कलंक चतुर्थी	22 अग.	श.
सिद्धिविनायक व्रत	22 अग.	श.
ऋषि पंचमी	23 अग.	र.
सूर्यषष्ठी व्रत	24 अग.	चं.
मुक्ताभरण सप्तमी व्रत	25 अग.	मं.
श्रीराधाष्टमी, दूर्वाष्टमी	25 अग.	मं.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	25 अग.	मं.
श्रीचन्द नवमी	27 अग.	गु.
श्रीवामन जयन्ती	29 अग.	श.

सितम्बर (सन् 2020 ई.)

श्री अनन्त चतुर्दशी	1 सितं.	मं.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	1 सितं.	मं.
पूर्णिमा श्राद्ध	1 सितं.	मं.
महालय प्रारम्भ	1 सितं.	मं.
पितृपक्ष प्रारम्भ	1 सितं.	मं.

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2020 ई. से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक "व्रत-पर्व विवेक" पर आधारित)

चन्द्रषष्ठी व्रत	8 सितं.	मं.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	10 सितं.	गु.
महालय/श्राद्ध समाप्त	17 सितं.	गु.
अधिक (मल) मास प्रारम्भ	18 सितं.	शु.
अक्टूबर (सन् 2020 ई.)		
अधिक (मल) मास समाप्त	16 अक्तू.	शु.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	17 अक्तू.	श.
उपाङ्गललिता व्रत	20 अक्तू.	मं.
सरस्वती आवाहन	21 अक्तू.	बु.
सरस्वती पूजन	22 अक्तू.	गु.
सरस्वती के लिए बलिदान	23 अक्तू.	शु.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	24 अक्तू.	श.
सरस्वती विसर्जन	24 अक्तू.	श.
महानवमी (पूजा, उपवास के लिए)	24 अक्तू.	श.
महानवमी (बलिदान के लिए)	25 अक्तू.	र.
नवरात्र समाप्त	25 अक्तू.	र.
विजयादशमी (दशहरा)	25 अक्तू.	र.
नवरात्रपारणा	25 अक्तू.	र.
भरतमिलाप	26 अक्तू.	चं.
कोजागर व्रत	30 अक्तू.	शु.
शरत् पूर्णिमा	31 अक्तू.	श.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	31 अक्तू.	श.
कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ	31 अक्तू.	श.
नवम्बर (सन् 2020 ई.)		
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	4 नवं.	बु.
अहोई अष्टमी (पंजाब)	8 नवं.	र.
गोवत्स द्वादशी	12 नवं.	गु.
धन त्रयोदशी	13 नवं.	शु.
यम-प्रीत्यर्थ दीपदान	13 नवं.	शु.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.)	13 नवं.	शु.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	14 नवं.	श.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा	14 नवं.	श.
गोवर्धन पूजा, बलिपूजा	15 नवं.	र.
अन्नकूट, गोक्रीड़ा	15 नवं.	र.
यमद्वितीया, भाईदूज	16 नवं.	चं.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	16 नवं.	चं.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	20 नवं.	शु.
गोपाष्टमी	22 नवं.	र.
अक्षय नवमी	23 नवं.	चं.
कूष्माण्ड नवमी	23 नवं.	चं.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	25 नवं.	बु.
हरिप्रबोधोत्सव	25 नवं.	बु.
तुलसी विवाह	26 नवं.	गु.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त	26 नवं.	गु.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	28 नवं.	श.
त्रिपुरोत्सव	29 नवं.	र.
भीष्म पंचक समाप्त	29 नवं.	र.
श्रीगुरुनानक जयन्ती	30 नवं.	चं.
कार्त्तिकस्नान समाप्त	30 नवं.	चं.
कार्त्तिक पूर्णिमा	30 नवं.	चं.
दिसम्बर (सन् 2020 ई.)		
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	8 दिसं.	मं.
सोमवती अमा	14 दिसं.	चं.
स्कन्द, गुहषष्ठी	20 दिसं.	र.
चम्पा षष्ठी	20 दिसं.	र.
मित्र सप्तमी	21 दिसं.	चं.
श्रीगीता जयन्ती	25 दिसं.	शु.
श्रीदत्त जयन्ती	29 दिसं.	मं.
जनवरी (सन् 2021 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2021 ई. प्रा.	1 जन.	शु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	बु.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	गु.
पौषी पूर्णिमा	28 जन.	गु.
माघस्नान प्रारम्भ	28 जन.	गु.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	31 जन.	र.
फरवरी (सन् 2021 ई.)		
मौनी अमावस	11 फर.	गु.
माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	12 फर.	शु.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	14 फर.	र.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	15 फर.	चं.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	16 फर.	मं.
लक्ष्मी/सरस्वती पूजन	16 फर.	मं.
रथसप्तमी	18 फर.	गु.
आरोग्य सप्तमी	18 फर.	गु.
भीष्माष्टमी	20 फर.	श.
गुप्त नवरात्र समाप्त	21 फर.	र.
भीष्म द्वादशी	24 फर.	बु.
माघी पूर्णिमा	27 फर.	श.
माघस्नान समाप्त	27 फर.	श.
मार्च (सन् 2021 ई.)		
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	11 मार्च	गु.
होलाष्टक प्रारम्भ	21 मार्च	र.
गोविन्द द्वादशी	25 मार्च	गु.
होलिकादहन	28 मार्च	र.
होलाष्टक समाप्त	28 मार्च	र.
वसन्तोत्सव	29 मार्च	चं.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा. (पं.)	29 मार्च	चं.
अप्रैल (सन् 2021 ई.)		
मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.)	10 अप्रै.	श.
सोमवती अमा	12 अप्रै.	चं.
चान्द्र संवत् 2077 वि.पूर्ण	12 अप्रै.	चं.

आगामी वर्ष (वि.सं. 2078) के लिए प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व

नाम मेला/पर्व	तारीख
(सन् 2021 ई.)	
कुम्भ महापर्व हरिद्वार	13 अप्रैल
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	13 अप्रैल
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	13 अप्रैल
श्रीदुर्गाष्टमी	20 अप्रैल
श्रीरामनवमी	21 अप्रैल
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	25 अप्रैल
श्रीपरशुराम जयन्ती	14 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	26 मई
श्रीगंगा दशहरा	20 जून
गुरु पूर्णिमा	23 जुलाई
रक्षाबन्धन	22 अगस्त
संकष्ट चतुर्थी	25 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	30 अगस्त
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	30 अगस्त
दूर्वाष्टमी	30 अगस्त
गौरी तृतीया	9 सितम्बर
वामन द्वादशी	17 सितम्बर
श्राद्ध प्रारम्भ	20 सितम्बर
शारद नवरात्र प्रारम्भ	7 अक्तूबर
श्रीदुर्गाष्टमी	13 अक्तूबर
दशहरा (विजयादशमी)	15 अक्तूबर
शरत् पूर्णिमा	19 अक्तूबर
श्रीवाल्मीकि जयन्ती	20 अक्तूबर
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	24 अक्तूबर
श्री हनुमान् जयन्ती	3 नवम्बर
दीपावली	4 नवम्बर
गोवर्धन पूजा	5 नवम्बर
भाईदूज	6 नवम्बर
गोपाष्टमी	11 नवम्बर
श्रीगुरु नानक जयन्ती	19 नवम्बर
श्रीभैरवाष्टमी	27 नवम्बर
(सन् 2022 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जनवरी
गणेश (संकष्ट) चतुर्थी	21 जनवरी
वसन्त पंचमी	5 फरवरी
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	16 फरवरी
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	1 मार्च

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2020 ई. से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2020 ई.)	
पौष शुक्ल	6 जन.
माघ कृष्ण	20 जन.
माघ शुक्ल	5 फर.
फाल्गुन कृष्ण	19 फर.
फाल्गुन शुक्ल	6 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	19 मार्च
चैत्र शुक्ल	4 अप्रैल.
वैशाख कृष्ण	18 अप्रै.
वैशाख शुक्ल (स्मा.)	3 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	18 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	2 जून
आषाढ़ कृष्ण	17 जुन
आषाढ़ शुक्ल	1 जुला.
श्रावण कृष्ण	16 जुला.
श्रावण शुक्ल	30 जुला.
भाद्रपद कृष्ण	15 अग.
भाद्रपद शुक्ल	29 अग.
प्र. आश्विन कृष्ण(स्मा.)	13 सितं.
प्र.(अ.)आश्विन शुक्ल	27 सितं.
द्वि.(अधि.)आश्विन कृष्ण	13 अक्तू.
द्वि.(शुद्ध)आश्विन शुक्ल	27 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	11 नवं.
कार्त्तिक शुक्ल	25 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	11 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	25 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष कृष्ण	9 जन.
पौष शुक्ल	24 जन.
माघ कृष्ण (स्मा.)	7 फर.
माघ शुक्ल	23 फर.
फाल्गुन कृष्ण	9 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	25 मार्च
चैत्र कृष्ण	7 अप्रै.

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2020 ई.)	
माघ कृष्ण	11 जन.
माघ शुक्ल	25 जन.
फाल्गुन कृष्ण	10 फर.
फाल्गुन शुक्ल	24 फर.
चैत्र कृष्ण	10 मार्च
चैत्र शुक्ल	25 मार्च
वैशाख कृष्ण	8 अप्रैल
वैशाख शुक्ल	24 अप्रैल
ज्येष्ठ कृष्ण	8 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	23 मई
आषाढ़ कृष्ण	6 जून
आषाढ़ शुक्ल	22 जून
श्रावण कृष्ण	6 जुलाई
श्रावण शुक्ल	21 जुलाई
भाद्रपद कृष्ण	4 अगस्त
भाद्रपद शुक्ल	19 अगस्त
प्र.आश्विन कृष्ण	3 सितं.
प्र.(अ.)आश्विन शुक्ल	18 सितं.
द्वि.(अ.)आश्विन कृष्ण	2 अक्तू.
द्वि.(शुद्ध)आश्विन शुक्ल	17 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	1 नवं.
कार्त्तिक शुक्ल	16 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	1 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	15 दिसं.
पौष कृष्ण	31 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष शुक्ल	14 जन.
माघ कृष्ण	29 जन.
माघ शुक्ल	12 फर.
फाल्गुन कृष्ण	28 फर.
फाल्गुन शुक्ल	14 मार्च
चैत्र कृष्ण	29 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिये गये पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2020 ई.)	
पौष	10 जन.
माघ	8 फर.
फाल्गुन	9 मार्च
चैत्र	7 अप्रैल
वैशाख	6 मई
ज्येष्ठ	5 जून
आषाढ़	4 जुलाई
श्रावण	3 अगस्त
भादपद	1 सितं.
प्र. (अ.) आश्विन	1 अक्तू.
द्वि. (शुद्ध) आश्विन	31 अक्तू.
कार्त्तिक	29 नवं.
मार्गशीर्ष	29 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष	28 जन.
माघ	26 फर.
फाल्गुन	28 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2020 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	27 मार्च
श्रीरामनवमी	2 अप्रैल
श्रीपरशुराम जयन्ती	25 अप्रैल
श्रीनृसिंह जयन्ती	6 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	7 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	7 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	25 जुला
⊗ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	11 अगस्त
श्रीवराह जयन्ती	21 अगस्त
श्रीवामन जयन्ती	29 अगस्त

⊗ अर्धरात्रि (चन्द्रोदय) व्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द-विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2020 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	13 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	12 मार्च
वैशाख	11 अप्रैल
ज्येष्ठ	10 मई
आषाढ़	8 जून
श्रावण	8 जुलाई
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	7 अगस्त
प्र. आश्विन	5 सितं.
द्वि.(अ.) आश्विन	5 अक्तू.
कार्त्तिक	4 नवं.
मार्गशीर्ष	3 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष	2 जन.
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	31 जन.
फाल्गुन	2 मार्च
चैत्र	31 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(सन् 2020 ई.)	
माघ	28 जन.
फाल्गुन	27 फर.
चैत्र	28 मार्च
वैशाख	27 अप्रैल
ज्येष्ठ	26 मई
आषाढ़	24 जून
श्रावण	24 जुलाई
भाद्रपद	22 अगस्त
प्र.(अ.)आश्विन	20 सितं.
द्वि. (शु.) आश्विन	20 अक्तू.
कार्त्तिक	18 नवं.
मार्गशीर्ष	18 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष	16 जन.
माघ	15 फर.
फाल्गुन	17 मार्च

प्रदोष व्रत

(सन् 2020 ई.)	
पौष शुक्ल	8 जन.
माघ कृष्ण	22 जन.
माघ शुक्ल	7 फर.
फाल्गुन कृष्ण	20 फर.
फाल्गुन शुक्ल (शनि)	7 मार्च
चैत्र कृष्ण (शनि)	21 मार्च
चैत्र शुक्ल	5 अप्रैल
वैशाख कृष्ण (सोम)	20 अप्रैल
वैशाख शुक्ल (भौम)	5 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	20 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	3 जून
आषाढ़ कृष्ण	18 जून
आषाढ़ शुक्ल	2 जुलाई
श्रावण कृष्ण (शनि)	18 जुलाई
श्रावण शुक्ल (शनि)	1 अग.
भाद्रपद कृष्ण	16 अग.
भाद्रपद शुक्ल	30 अग.
प्र.आश्विन कृष्ण (भौम)	15 सितं.
प्र.(अ.)आश्विन शुक्ल(भौम)	29 सितं.
द्वि.(अ.) आश्विन कृष्ण	14 अक्तू.
द्वि.(शुद्ध) आश्विन शुक्ल	28 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	13 नवं.
कार्त्तिक शुक्ल	27 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (शनि)	12 दिसं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	27 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष कृष्ण	10 जन.
पौष शुक्ल (भौम)	26 जन.
माघ कृष्ण (भौम)	9 फर.
माघ शुक्ल	24 फर.
फाल्गुन कृष्ण	10 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	26 मार्च
चैत्र कृष्ण	9 अप्रैल

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2020 ई. से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2020 ई.)

माघ	23 जन.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	21 फर.
चैत्र	22 मार्च
वैशाख	21 अप्रैल
ज्येष्ठ	20 मई
आषाढ़	19 जून
श्रावण	19 जुलाई
भाद्रपद	17 अगस्त
प्र.आश्विन	15 सितं.
द्वि. आश्विन	15 अक्तू.
कार्त्तिक	13 नवं.
मार्गशीर्ष	13 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष	11 जन.
माघ	10 फर.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	11 मार्च
चैत्र	10 अप्रैल

पूर्णिमा व्रत (सन् 2020 ई.)
(स्नान-दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)

पौष	10 जन.
माघ	9 फर.
फाल्गुन	9 मार्च
चैत्र	8 अप्रैल
वैशाख	7 मई
ज्येष्ठ	5 जून
आषाढ़	5 जुलाई
श्रावण	3 अग.
भाद्रपद	2 सितं.
प्र.(अ.)आश्विन	1 अक्तू.
द्वि.(शुद्ध) आश्विन	31 अक्तू.
कार्त्तिक	30 नवं.
मार्गशीर्ष	30 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष	28 जन.
माघ	27 फर.
फाल्गुन	28 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2020 ई.)

माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	13 अप्रैल
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	14 जून
श्रावण	16 जुलाई
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्त्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	15 नवं.
पौष	15 दिसं.
(सन् 2021ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान-दानार्थ) (सन् 2020 ई.)

माघ	24 जन.
फाल्गुन	23 फर.
चैत्र (भौमवती)	24 मार्च
वैशाख	22 अप्रैल
ज्येष्ठ	22 मई
आषाढ़	21 जून
श्रावण (सोमवती)	20 जुलाई
भाद्रपद	19 अग.
प्र. आश्विन	17 सितं.
द्वि.(अ.) आश्विन	16 अक्तू.
कार्त्तिक	15 नवं.
मार्गशीर्ष (सोमवती)	14 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष	13 जन.
माघ	11 फर.
फाल्गुन (शनैचरी)	13 मार्च
चैत्र (सोमवती)	12 अप्रैल

मासिक दुर्गाष्टमी व्रत (सन् 2020 ई.)

पौष	3 जन.
माघ	2 फर.
फाल्गुन	3 मार्च
चैत्र	1 अप्रैल
वैशाख	1 मई
ज्येष्ठ	30 मई
आषाढ़	28 जून
श्रावण	27 जुलाई
भाद्रपद	26 अग.
प्र.(अ.)आश्विन	24 सितं.
द्वि.(शुद्ध) आश्विन	24 अक्तू.
कार्त्तिक	22 नवं.
मार्गशीर्ष	22 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष	21 जन.
माघ	20 फर.
फाल्गुन	22 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (सन् 2020 ई.)

माघ	17 जन.
फाल्गुन	15 फर.
चैत्र	16 मार्च
वैशाख	14 अप्रैल
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	13 जून
श्रावण	12 जुलाई
भाद्रपद	11 अग.
प्र.आश्विन	10 सितं.
द्वि. आश्विन	10 अक्तू.
कार्त्तिक	8 नवं.
मार्गशीर्ष (श्रीभैरवाष्टमी)	8 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष	6 जन.
माघ	4 फर.
फाल्गुन	6 मार्च
चैत्र	4 अप्रैल

अरुणाय त्रयोदशी
श्रीसंगमेश्वर महादेव, अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)
(सन् 2020 ई.)

माघ	22 जन.
फाल्गुन	21 फर.
चैत्र	22 मार्च
वैशाख	20 अप्रैल
ज्येष्ठ	20 मई
आषाढ़	19 जून
श्रावण	18 जुलाई
भाद्रपद	17 अग.
प्र.आश्विन	15 सितं.
द्वि. (अ.) आश्विन	15 अक्तू.
कार्त्तिक	13 नवं.
मार्गशीर्ष	12 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
पौष	11 जन.
माघ	9 फर.
फाल्गुन	11 मार्च
चैत्र	9 अप्रैल

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2020 ई.)

⁂ प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा	1 सितं.
प्रतिपदा	2 सितं.
द्वितीया	3 सितं.
तृतीया	5 सितं.
चतुर्थी	6 सितं.
पंचमी/भरणी श्राद्ध	7 सितं.
षष्ठी	8 सितं.
सप्तमी	9 सितं.
अष्टमी	10 सितं.
❀ नवमी	11 सितं.
दशमी	12 सितं.
एकादशी	13 सितं.
⁂ द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	14 सितं.
त्रयोदशी/मघा श्राद्ध	15 सितं.
✳ चतुर्दशी	16 सितं.
सर्वपितृ, अमावस श्राद्ध (पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध)	17 सितं.
नाना/नानी का श्राद्ध	17 अक्तू.

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2020 ई.)

इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.
पाम सण्डे	5 अप्रैल
गुड फ्राई डे	10 अप्रैल
ईस्टर सण्डे	12 अप्रैल
क्रिस्मस डे	25 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.

⁂ "जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो, उनका महालय श्राद्ध प्रोष्ठपदी पूर्णिमा को करना चाहिए"—यह शास्त्रीय मत है। लेकिन पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय सर्वपितृ अमा को करने की लोक-परम्परा है।
❀ सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई अन्य हो।

⁂ संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई अन्य हो।
✳ शस्त्र-विष आदि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई अन्य हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु से मरने वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

फाल्गुन	6 मार्च	फाल्गुन	11 मार्च	त्रयोदशी/मघा श्राद्ध	15 सित.	नवमी में ही किया जाता है ... करना चाहिए।
चैत्र	4 अप्रैल	चैत्र	9 अप्रैल			उसकी मृत्युतिथि कोई अन्य हो।

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2020 ई. से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

जैन व्रत-पर्व (सन् 2020 ई.)

श्रीमेरुत्रयोदशी	22 जन.
मर्यादा महोत्सव	1 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	2 अप्रैल
श्रीमहावीर जयन्ती	6 अप्रैल
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	3 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	26 जून
तेरापन्थ स्थापना दिवस	5 जुलाई
चातुर्मास्य व्रत-नियम आदि-प्रारम्भ	5 जुलाई
श्रीजयाचार्य निर्वाण दिवस	16 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	16 अग.
संवत्सरी महापर्व	23 अग.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	24 अग.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	27 अग.
आचार्य भिक्षु निर्वाण दिवस	31 अग.
श्रीमहावीर निर्वाण दिवस	15 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	16 नवं.
ज्ञानपंचमी	19 नवं.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि-समाप्त	30 नवं.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	10 दिसं.
(सन् 2021 ई.)	
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा दिवस	4 जन.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	8 जन.
श्रीमेरुत्रयोदशी	9 फर.
मर्यादा महोत्सव	19 फर.

महापुरुषों के जन्मदिन (सन् 2020 ई.)

स्वामी विवेकानन्द	17 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	17 जन.
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	26 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	9 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	21 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	25 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	9 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रैल
श्रीवल्लभाचार्य	18 अप्रैल
श्रीछत्रपति शिवाजी	25 अप्रैल
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	28 अप्रैल
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	29 अप्रैल
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीमहाराणा प्रताप	25 मई
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुलाई
गोस्वामी तुलसीदास जी	27 जुलाई
स्वामी शिवानन्द जी	8 सित.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
महाराज अग्रसेन जी	17 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	26 अक्तू.
श्रीजवाहर लाल नेहरू	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.
श्रीवीर बैरागी	28 नवं.
(सन् 2021 ई.)	
श्रीनेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	4 फर.
स्वामी विवेकानन्द	4 फर.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	13 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	27 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	11 मार्च
श्रीरामकृष्ण परमहंस	15 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	28 मार्च

मुस्लिम त्योहार (सन् 2020 ई.)

जन्म श्री हज़रत अली	9 मार्च
★ शब-ए-मिराज	23 मार्च
शब-ए-बरात	9 अप्रैल
रमज़ान का पहला दिन	25 अप्रैल
शहादत-ए-हज़रत अली	15 मई
★ शब-ए-कद्र	21 मई
जमतुल-विदा	22 मई
ईद-उल-फित्र	25 मई
इदुलज्जुहा (बकरीद)	1 अग.
मुहर्रम (ताज़िया)	30 अग.
चेहल्म	8 अक्तू.
आखिरी चहार शम्बा	14 अक्तू.
शहादत-ए-इमाम हसन	16 अक्तू.
ईद-ए-मिलाद	30 अक्तू.
ईद-ए-मौलाद	4 नवं.
फतिहा यज़दहुम	27 नवं.
(सन् 2021 ई.)	
जन्म श्री हज़रत अली	26 फर.
★ शब-ए-मिराज	12 मार्च
★ शब-ए-बरात	30 मार्च

★ ये त्योहार पूर्ववर्त्ती रात्रि में मनाये जाते हैं।

सूचना—सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर सम्भव है। इसकी सूचना T.V. आदि द्वारा प्रसारित कर दी जाती है।

क्या किससे पूछें?

('श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।)—प्रियव्रत शर्मा

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त्त, व्रत-पर्व, तेजी-मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि—किससे सम्पर्क साधा जाये। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है—यह हम यहां स्पष्ट किये देते हैं—

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि-नक्षत्र-नक्षत्रचरण-प्रवेश, वक्रता-मार्गिता, उदयास्त, लोप-दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व-निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त-गणित-फलित-सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ मुझसे निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें।

उत्तर के लिए मुझे जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण मैं अपने व्यय से ही करूंगा। लेकिन मैं इसके लिए किसी तरह से बाधित नहीं हूं, यह ध्यान में रखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A., अभिजित् प्रकाशन, 59/6,
P.O. पंचकूला—134 109, Phone-0172-2565 303,

(ii) राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिक दलों के चुनाव-चक्र में जय-पराजय, राजनेताओं का उत्थान-पतन, पाक्षिक-मासिक वार्षिक फलादेश, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति-विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वगैरह की जानकारी एवं वायदा-हाज़र बाजार के चांस, सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक-मासिक-पाक्षिक-दैनिक तेज़ी मन्दी-सम्बन्धी पूछताछ के लिए हमसे सम्पर्क कीजिये—

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
जिला मोहाली (पंजाब), PIN 140 103,
Phone : 0160-2641277, 09988407010

इसके अतिरिक्त पंचांग में प्रकाशित अन्य किसी लेख आदि के विषय में अपनी शंकाओं के निवारणार्थ उस लेख के लेखक से ही सम्पर्क करना चाहिए। —सम्पादक मण्डल

सिक्ख पर्व (सं. 2077 वि.) (25 मार्च, 2020 ई. से 12 अप्रैल, 2021 ई. तक)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा [विक्रमी कैलेण्डर (तिथियों)] के अनुसार						नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (ग्रेगोरियन तारीखों के अनुसार स्थिर)		
	प्रकाश दिवस		गुरयाई मिली		जोतीजोत समाए		प्रकाश दिवस	गुरयाई मिली	जोतीजोत समाए
	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तारीख	तारीख	तारीख
श्री गुरु नानकदेव जी	कार्त्तिक शु.15	30 नवं.	—	—	आश्वि.कृ.10	12 सितं.	कार्त्तिक पू.	—	22 सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	वैशाख शु.1	24 अप्रै.	आश्वि.कृ.5	7 सितं.	चैत्र शु.4	28 मार्च	18 अप्रैल	18 सितं.	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदास जी	वैशाख शु. 14	6 मई	चैत्र शु. 1	25 मार्च	भाद्र.शु. 15	2 सितं.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितं.
श्री गुरु रामदास जी	कार्त्तिक कृ. 2	2 नवं.	भाद्र.शु. 13	31 अग.	भाद्र.शु. 3	21 अग.	9 अक्टू.	16 सितं.	16 सितं.
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	वैशाख कृ. 7	14 अप्रैल	भाद्र.शु. 2	20 अग.	ज्ये. शु.4	26 मई	2 मई	16 सितं.	16 जून
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	आषाढ़ कृ. 1	6 जून	ज्ये.कृ. 8	5 मई	चैत्र शु. 5	29 मार्च	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
श्री गुरु हरिराय जी	माघ शु. 13	25 फर.	चैत्र कृ. 13	9 अप्रैल	कार्त्ति.कृ. 9	9 नवं.	31 जन.	14 मार्च	20 अक्टू.
श्री गुरु हरकिशन जी	श्राव कृ. 9	14 जुला.	कार्त्ति. कृ. 9	9 नवं.	चैत्र शु. 14	7 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्टू.	16 अप्रैल
श्री गुरु तेगबहादुर जी	वैशाख कृ. 5	12 अप्रैल	चैत्र शु. 14	7 अप्रैल	मार्ग. शु. 5	19 दिसं.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	पौष शु. 7	20 जन.	मार्ग शु. 3	17 दिसं.	कार्त्ति. शु. 5	19 नवं.	5 जन.	24 नवं.	21 अक्टू.

ध्यान दें:— 'नानकशाही कैलेण्डर', जिसके अनुसार सभी सिक्खपर्वों का निर्णय अंग्रेजी तारीखों के आधार पर किया गया है, सन् 2003 ई. में लागू किया गया। चूंकि, सभी सिक्खपर्व विगत शताब्दियों से पुरातन परम्परा (विक्रमी कैलेण्डर/तिथियों) के अनुसार ही मनाये जाते रहे हैं, अतः कई सिक्ख सम्प्रदाय एवं पटना, नान्देड़ आदि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटियां भी सिक्खपर्वों को 'पुरातन परम्परा वाले विक्रमी कैलेण्डर' के अनुसार ही मनाने के पक्ष में हैं। इस प्रकार इस विषय में उत्पन्न मतभेद को शान्त करने के लिए सिक्ख-धर्म की सर्वोच्च संस्था S.G.P.C. (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी) अमृतसर द्वारा पर्वों के निर्णय के लिए अब पुनः विक्रमी कैलेण्डर को ही मान्यता दी गयी है—यह ध्यान देने योग्य है।

पुरातन परम्परा के अनुसार इस वर्ष (सं. 2077 वि.) की संक्रान्तियां—वैशा. 13-4-20, ज्ये. 14-5-20, आषाढ़ 14-6-20, श्रावण 16-7-20, भाद्र. 16-8-20, आश्वि. 16-9-20, कार्तिक 17-10-20, मार्ग. 15-11-20, पौष 15-12-20, माघ 14-1-21, फाल्गुन 12-2-21, चैत्र 14-3-21,

नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार संक्रान्तियां —— इस कैलेण्डर के अनुसार चैत्र की संक्रान्ति हमेशा 14 मार्च को होती है, चैत्र से श्रावण तक के पांच महीने हमेशा 31-31 दिनों के और शेष 6 महीने हमेशा 30-30 दिनों के होते हैं, लीप इयर में फाल्गुन मास के 32 दिन माने गये हैं।

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2020 ई. से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

(ध्यान दें—अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गजट की सूची से अवश्य मिला लें।)

(सन् 2020 ई.)		श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	6 अप्रैल	भारतस्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	क्रिसमस डे	25 दिसं.
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.	गुड फ्राई डे	10 अप्रैल	मुहर्रम (ताजिया)	30 अग.	(सन् 2021 ई.)	
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	15 जन.	वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रैल	ओणम (केरल)	1 सितं.	इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन.
पोंगल	15 जन.	विशु (केरल)	15 अप्रैल	जन्मदिन श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	20 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	7 मई	श्रीदुर्गाष्टमी	24 अक्तू.	पोंगल	14 जन.
भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.	जमतुल विदा	22 मई	दशहरा	25 अक्तू.	जन्मदिन श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी	20 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	9 फर.	इदुल-फित्र	25 मई	ईद-ए-मिलाद	30 अक्तू.	भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	21 फर.	रथयात्रा (पुरी)	23 जून	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	31 अक्तू.	जन्म श्री हज़रत अली	26 फर.
जन्म श्रीहज़रत अली	9 मार्च	इदुलज्जुहा	1 अग.	दीपावली	14 नवं.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	27 फर.
होला, वसन्तोत्सव	10 मार्च	रक्षाबन्धन (राखी)	3 अग.	भाईदूज	16 नवं.	श्री महाशिवरात्रि व्रत	11 मार्च
गुड़ी पड़वा	25 मार्च	श्रीगणेश चतुर्थी	7 अग.	श्री गुरुनानक जयन्ती	30 नवं.	होला, वसन्तोत्सव	28 मार्च
श्रीरामनवमी	2 अप्रैल	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	12 अग.	बलिदानदिन गुरु तेगबहादुर जी	19 दिसं.		

श्रीरामनवमी	2 अप्रैल	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	12 अग.	बलिदानदिन गुरु तेगबहादुर जी	19 दिस.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2020 ई. से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2020 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2020 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब.सं.बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
वसन्त पंचमी	29 जन.
ब.सं.बा. अतर सिंह जी (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी सन् 2020 ई.	
ज.दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा-कुराली (पं.)	7 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीपसिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़-पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	21 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी-गढ़वाल)	21 फर.
मार्च सन् 2020 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	10 मार्च
श्रीवीरमदास, बधौछी (पटियाला)	10 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	12 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	13 मार्च
ज.दि.सं.बा. अतर सिंह जी (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	22 मार्च
ज.दि.सं.बा. निधानसिंह जी (श्री हजूरसाहिब वाले, ढींडसा, लुधि.)	25 मार्च
माईसर खाना (पंजाब)	30 मार्च

नाम मेला/पर्व (सन् 2020 ई.)	तारीख
अप्रैल सन् 2020 ई.	
ज्वालामुखी (हरचोवाल-गुरदासपुर)	1 अप्रैल
मेला पीर भीखनशाह (घड़ाम, पटियाला) प्रा.	5 अप्रैल
मेला माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	6 अप्रैल
मेला माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	7 अप्रैल
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	7 अप्रैल
कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	15 अप्रैल
ज.दि. भाई दित्तसिंह ज्ञानी	21 अप्रैल
पिंजौर (हरि.)	23 अप्रैल
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	28 अप्रैल
मई सन् 2020 ई.	
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	1 मई
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
ज.दि.सं.बा. तेजासिंह जी, बदरीपुर, पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
पुण्यतिथि सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	29 मई
क्षीरभवानी (जम्मू-कश्मीर)	30 मई
जून सन् 2020 ई.	
श्रीगंगा दशहरा	1 जून
सपोर यात्रा-धारलदा (उधमपुर)	1 जून
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	2 जून
पीपलू, ऊना (हि.प्र.)	2 जून

नाम मेला/पर्व (सन् 2020 ई.)	तारीख
शुद्ध महादेवयात्रा (उधमपुर)	5 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन	14 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	14 जून
यादगारी दिवस बीबी शरणकौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	28 जून
जयन्ती सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	26 जून
शरीक भवानी (जम्मू-कश्मीर)	29 जून
जुलाई सन् 2020 ई.	
ब.सं.बा. तेजासिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/बड़ू साहिब (हि.प्र.) प्रा.	1 जुलाई
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली) पं.	5 जुलाई
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	5 जुलाई
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	6 जुलाई
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुलाई
धाटा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	16 जुलाई
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	25 जुलाई
श्रीनयना देवी (हि.प्र.)	27 जुलाई
श्री चिन्तपूर्णी (हि.प्र.)	27 जुलाई
गाड़ा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	30 जुलाई
अगस्त सन् 2020 ई.	
श्री अमरनाथ यात्रा (कश्मीर)	3 अगस्त
ब.सं.बा. निधानसिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अगस्त
ज.दि.सं.बा. ईशरसिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल पटियाला	5 अगस्त

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2020 ई. से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2020 ई.)	तारीख
बरसी सं. बाबा प्यारासिंह जी, गुरुद्वारा श्री अमरगढ़ साहिब, चमकौर साहिब प्रा.	5 अगस्त
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	12 अगस्त
कैलाशयात्रा (कश्मीर) प्रा.	17 अगस्त
ब.सं.बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अगस्त
श्रीगोसाईं आणां, कुराली (पंजाब)	20 अगस्त
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	22 अगस्त
मेला पट्ट (कश्मीर) प्रारम्भ	23 अगस्त
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	23 अगस्त
ब.सं.बा. ईशरसिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अगस्त
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	24 अगस्त
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	26 अगस्त
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	29 अगस्त
सितम्बर सन् 2020 ई.	
बाबा सोढल (जालन्धर)	1 सितं.
छपार (पं.)	1 सितं.
श्रीगोईंदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	2 सितं.
ब.भा. दित्तसिंह ज्ञानी, नन्दपुर-कलौड़ (पं.)	6 सितं.
श्री आशापति यात्रा (कश्मीर) प्रा.	16 सितं.
अक्टूबर सन् 2020 ई.	
पर्वत मेला (मण्डी-हि.प्र.)	18 अक्तू.
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	24 अक्तू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	24 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	24 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	25 अक्तू.
ब.सं.बा. गुरुचरण सिंह जी, गु. अमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	24 अक्तू.

नाम मेला/पर्व (सन् 2020 ई.)	तारीख
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	30 अक्तू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	30 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	30 अक्तू.
नवम्बर सन् 2020 ई.	
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	10 नवं.
दीपावली (अमृतसर)	14 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	25 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	25 नवं.
धनेश्वर मेला, सिरमौर (हि.प्र.)	25 नवं.
ज.दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	28 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	29 नवं.
श्रीपुष्कर राज (राज.)	29 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर-पं.)	30 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	30 नवं.
दिसम्बर सन् 2020 ई.	
ब.सं.बा. विसाखासिंह, दुदेहर सा.(तारनतारन)	4 दिसं.
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	13 दिसं.
ब. बीबी तेजकौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	23 दिसं.
ज.दि.सं.बा. किशनसिंह जी (राड़ा सा. वाले), मसीतां (सिरसा-हरि.)	24 दिसं.
ब.सं.बा.रामसिंह/बूटासिंह, नानकसर चीमा	24 दिसं.
जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	27 दिसं.
ब.सं.बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2020 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2021 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब.सं.बा. अतरसिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब.सं.बा. बख्शीशसिंह जी	26 जन.
ब.सं.बा. अतरसिंह जी (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी सन् 2021 ई.	
बलिदान दिवस बाबा दीपसिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़-पं.)	10 फर.
वसन्तपंचमी	16 फर.
ज.दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा-कुराली (पं.)	25 फर.
मार्च सन् 2021 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	11 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी-गढ़वाल)	11 मार्च
ज.दि.सं.बा. अतरसिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	29 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	30 मार्च
अप्रैल सन् 2021 ई.	
शीतला माता (कुराली) पं.	1 अप्रैल
श्री गुरु रामराय (देहारादून)	2 अप्रैल
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	10 अप्रैल

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

(भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2077 वि.), (भा. स्टैं. टा.)

नगर	चन्द्रोदय-श्री गणेशचतुर्थी													श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
														स्मार्त	वैष्णव
	11 अप्रैल 2020 घं. मि.	10 मई 2020 घं. मि.	8 जून 2020 घं. मि.	8 जुला. 2020 घं. मि.	7 अग. 2020 घं. मि.	5 सितं. 2020 घं. मि.	5 अक्तू. 2020 घं. मि.	4 नव. 2020 घं. मि.	3 दिसं. 2020 घं. मि.	2 जन. 2021 घं. मि.	31 जन. 2021 घं. मि.	2 मार्च 2021 घं. मि.	31 मार्च 2021 घं. मि.	11 अग. 2020 घं. मि.	12 अग. 2020 घं. मि.
अजमेर	22 37	22 25	22 03	22 08	21 47	20 48	20 26	20 28	20 08	20 59	20 54	21 50	21 47	23 54	– –
अमृतसर	22 47	23 34	22 14	22 15	21 48	20 46	20 17	20 15	19 54	20 49	20 48	21 53	21 55	23 45	– –
अलवर	22 32	22 20	21 57	22 02	21 40	20 40	20 17	20 18	19 57	20 49	20 45	21 43	21 41	23 44	– –
अलीगढ़	22 31	22 18	21 56	22 01	21 41	20 43	20 21	20 34	20 03	20 54	20 48	21 44	21 41	23 48	– –
अहमदाबाद	22 40	22 26	22 04	22 12	21 55	20 58	20 40	20 45	20 25	21 13	21 05	21 57	21 51	23 25	– –
अयोध्या	22 07	21 54	21 32	21 38	21 16	20 18	19 55	19 56	19 36	20 27	20 22	21 19	21 16	23 22	– –
आगरा	22 25	22 13	21 50	21 55	21 34	20 34	20 11	20 13	19 52	20 44	20 39	21 37	21 34	23 39	– –
इन्दौर	22 26	22 12	21 50	21 58	21 41	20 45	20 27	20 32	20 12	21 00	21 52	21 43	21 37	23 54	– –
इलाहाबाद	22 06	21 53	21 31	21 37	21 18	20 20	19 58	20 01	19 40	20 31	20 25	21 20	21 16	23 25	– –
उज्जैन	22 27	22 13	21 51	21 59	21 42	20 45	20 27	20 32	20 11	21 00	20 52	21 44	21 38	23 54	– –
उदयपुर (रा.)	22 36	22 24	22 02	22 06	21 44	20 45	20 21	20 22	20 01	20 53	20 49	21 48	21 46	23 48	– –
ऊना	22 42	22 31	22 08	22 09	21 43	20 40	20 12	20 09	19 48	20 43	20 42	21 47	21 49	23 40	– –
कपूरथला	22 44	22 34	22 12	22 13	21 46	20 44	20 16	20 13	19 52	20 47	20 46	21 51	21 52	23 44	– –
करनाल	22 34	22 23	22 01	22 03	21 39	20 38	20 12	20 11	19 50	20 44	20 41	21 43	21 43	23 39	– –
कांगड़ा	22 43	22 32	22 10	22 10	21 43	20 40	20 11	20 08	19 47	20 42	20 42	21 48	21 50	23 39	– –
कानपुर	22 14	22 01	21 39	21 45	21 24	20 25	20 09	20 05	19 44	20 35	20 30	21 27	21 23	23 30	– –
कुरुक्षेत्र	22 36	22 25	22 02	22 05	21 40	20 38	20 12	20 11	19 50	20 54	20 42	21 44	21 44	23 40	– –
कुल्लू	22 39	22 29	22 06	22 07	21 39	20 37	20 08	20 05	19 44	20 39	20 39	21 44	21 46	23 36	– –
कोटा	22 30	22 17	21 55	22 01	21 42	20 44	20 23	20 26	20 06	20 56	20 50	21 45	21 40	23 50	– –
कोलकाता	21 33	21 19	20 57	21 06	20 50	19 54	19 36	19 40	19 20	20 08	20 00	20 51	20 44	23 02	– –
गुरदासपुर	22 46	22 36	22 13	22 14	21 46	20 43	20 14	20 11	19 50	20 46	20 45	21 51	21 53	23 42	– –
ग्वालियर	22 23	22 10	21 48	21 53	21 33	20 34	20 12	20 14	19 54	20 45	20 39	21 36	21 32	23 40	– –
चण्डीगढ़	22 37	22 26	22 04	22 06	21 40	20 38	20 11	20 09	19 48	20 42	20 41	21 44	21 45	23 39	– –
चम्बा	22 15	22 04	21 42	21 42	21 14	20 40	20 11	20 07	19 46	20 43	20 42	21 49	21 52	23 39	– –
चूरू	22 40	22 28	22 06	22 10	21 47	20 46	20 22	20 22	20 02	20 55	20 51	21 50	21 49	23 50	– –
चेन्नई	21 50	21 33	21 12	21 27	21 20	20 30	20 22	20 33	20 14	20 56	20 41	21 19	21 05	23 47	– –
जम्मू	22 50	22 40	22 17	22 17	21 49	20 45	20 15	20 12	19 51	20 47	20 47	21 54	21 57	23 42	– –
जयपुर	22 34	22 21	21 59	22 04	21 43	20 44	20 21	20 22	20 02	20 53	20 48	21 46	21 43	23 48	– –
जालन्धर	22 45	22 35	22 12	22 13	21 47	20 44	20 16	20 14	19 53	20 48	20 47	21 51	21 53	23 44	– –
जैसलमेर	22 54	22 42	22 19	22 24	22 03	21 04	20 41	20 42	20 22	21 14	21 09	22 06	22 04	24 8	– –
जोधपुर	22 44	22 31	22 09	22 15	21 54	20 55	20 33	20 35	20 15	21 06	21 01	21 57	21 54	24 1	– –
दरभंगा	21 50	21 37	21 15	21 21	21 01	20 03	19 41	19 42	19 22	20 13	20 07	21 03	21 00	23 08	– –
दिल्ली	22 31	22 20	21 57	22 01	21 38	20 37	20 13	20 13	19 52	20 45	20 41	21 41	21 40	23 40	– –

श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

(भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2077 वि.), (भा. स्टैं. टा.)

नगर	चन्द्रोदय-श्री गणेशचतुर्थी													श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
														स्मार्त	वैष्णव
	11 अप्रैल 2020 घं. मि.	10 मई 2020 घं. मि.	8 जून 2020 घं. मि.	8 जुला. 2020 घं. मि.	7 अग. 2020 घं. मि.	5 सितं. 2020 घं. मि.	5 अक्तू. 2020 घं. मि.	4 नवं. 2020 घं. मि.	3 दिसं. 2020 घं. मि.	2 जन. 2021 घं. मि.	31 जन. 2021 घं. मि.	2 मार्च 2021 घं. मि.	31 मार्च 2021 घं. मि.	11 अग. 2020 घं. मि.	12 अग. 2020 घं. मि.
देहरादून	22 31	22 20	21 58	22 00	21 35	20 33	20 06	20 05	19 44	20 38	20 36	21 39	21 39	23 34	— —
नाहन	22 35	22 24	22 02	22 04	21 38	20 36	20 09	20 07	19 46	20 41	20 39	21 42	21 43	23 37	— —
पटना	21 52	21 39	21 17	21 24	21 04	20 06	19 44	19 47	19 26	20 17	20 10	21 06	21 02	23 12	— —
पटियाला	22 38	22 27	22 05	22 07	21 42	20 40	20 13	20 12	19 51	20 45	20 43	21 46	21 46	23 41	— —
पठानकोट	22 46	22 35	22 13	22 13	21 45	20 42	20 13	20 10	19 48	20 44	20 44	21 50	21 53	23 41	— —
पुणे	22 26	22 11	21 49	22 00	21 48	20 54	20 41	20 49	20 29	21 15	21 03	21 49	21 39	24 7	— —
फगवाड़ा	22 43	22 32	21 40	21 11	21 45	20 42	20 14	20 12	19 51	20 46	20 45	21 49	21 51	23 42	— —
फिरोजपुर	22 47	22 36	22 14	22 15	21 49	20 47	20 19	20 17	19 56	20 51	20 50	21 54	21 55	23 47	— —
बंगलौर	22 01	21 44	21 23	21 38	21 31	20 41	20 33	20 45	20 25	21 08	20 52	21 30	21 16	23 58	— —
बरेली	22 22	22 10	21 48	21 51	21 28	20 28	20 04	20 04	19 43	20 36	20 32	21 32	21 30	23 31	— —
बिलासपुर (हि.प्र.)	22 39	22 29	22 06	22 07	21 41	20 38	20 10	20 08	19 47	20 42	20 41	21 45	21 47	23 38	— —
बीकानेर	22 46	22 34	22 12	22 16	21 53	20 53	20 29	20 30	20 09	21 02	20 58	21 57	21 55	23 57	— —
बून्दी	22 31	22 19	21 56	22 03	21 43	20 45	20 24	20 27	20 06	20 57	20 50	21 46	21 42	23 51	— —
भटिण्डा	22 44	22 33	22 11	22 13	21 48	20 46	20 19	20 18	19 57	20 51	20 49	21 52	21 52	23 47	— —
भरतपुर	22 27	22 15	21 53	21 58	21 36	20 37	20 14	20 15	19 54	20 46	20 41	21 39	21 37	23 41	— —
भोपाल	22 19	22 06	21 44	21 51	21 34	20 38	20 19	20 24	20 03	20 52	20 44	21 36	21 30	23 46	— —
मण्डी (हि.प्र.)	22 39	22 29	22 06	22 07	21 40	20 37	20 09	20 06	19 45	20 40	20 39	21 45	21 46	23 37	— —
मथुरा	22 27	23 12	21 53	21 57	21 35	20 36	20 13	20 14	19 53	20 45	20 40	21 39	21 36	23 40	— —
मुम्बई	22 31	22 16	21 54	22 05	21 52	20 58	20 44	20 52	20 32	21 18	21 07	21 53	21 44	24 11	— —
रोपड़	22 39	22 28	22 06	21 38	21 11	20 39	20 12	20 10	19 49	20 43	20 42	21 46	21 47	23 40	— —
रोहतक	22 34	23 20	22 01	22 04	21 40	20 40	20 15	20 14	19 54	20 47	20 43	21 44	21 43	23 42	— —
लखनऊ	22 12	22 00	21 38	21 43	21 22	20 23	20 00	20 02	19 41	20 32	20 27	21 25	21 22	23 28	— —
लुधियाना	22 42	22 31	22 09	22 10	21 44	20 42	20 14	20 12	19 51	20 46	20 45	21 49	21 50	23 42	— —
वाराणसी	22 01	21 48	21 26	21 32	21 13	20 15	19 54	19 57	19 36	20 26	20 20	21 15	21 11	23 21	— —
शिमला	22 37	22 26	22 04	22 05	21 39	20 36	20 09	20 06	19 45	20 40	20 39	21 43	21 44	23 37	— —
श्रीनगर (क.)	22 54	22 44	22 21	22 20	21 50	20 45	20 13	20 08	19 47	20 44	20 46	21 55	22 00	23 42	— —
संगरूर	22 40	22 29	22 07	22 09	21 44	20 42	20 16	20 14	19 53	20 48	20 45	21 48	21 48	23 43	— —
सहारनपुर	22 34	22 22	22 00	22 02	21 38	20 36	20 10	20 09	19 48	20 41	20 39	21 42	21 42	23 38	— —
सीकर	22 38	22 25	22 03	22 08	21 45	20 46	20 22	20 23	20 03	20 55	20 50	21 49	21 47	23 50	— —
हरिद्वार	22 30	22 19	21 57	21 59	21 34	20 33	20 06	20 05	19 44	20 38	20 36	21 38	21 38	23 34	— —
हिसार	22 39	22 27	22 05	22 08	21 44	20 43	20 18	20 17	19 57	20 50	20 47	21 48	21 47	23 45	— —
होशियारपुर	22 43	22 32	22 09	22 11	21 44	20 41	20 13	20 11	19 50	20 05	20 44	21 49	21 50	23 41	— —

हिसार	22 39	22 27	22 05	22 08	21 44	20 43	20 18	20 17	19 37	20 30	20 47	21 48	21 47	[illegible]	[illegible]
होशियारपुर	22 43	22 32	22 09	22 11	21 44	20 41	20 13	20 11	19 50	20 05	20 44	21 49	21 50	23 41	— —

सन्दिग्ध व्रत-पर्व-व्यवस्था (सं. 2077 वि.)

लेखक—प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला(हरियाणा)—134109,

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत-पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए,—प्रियव्रत शर्मा)

(सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

संवत्सर-नाम (2077 वि.)

सर्वप्रथम नवसंवत्सर 2077 वि. के शुभारम्भ पर हम अपने (श्रीमार्त्तण्ड) पंचांग के पाठकों को शुभ कामनाएं देते हैं।

संवत्सर-नाम बारे कुछेक वर्षों के अन्तराल पर वैमत्य की स्थिति आ ही जाती है—इससे लगभग सभी पाठक भली-भांति अवगत हैं। स्थूल गणना से बतलाये जाने वाले संवत्सर-नाम व इनके प्रारम्भ/समाप्ति-क्षण मध्यम मानानुसार हैं, जबकि सूक्ष्म गणना **से** इनके प्रारम्भ/समाप्ति के क्षण अन्तरित होते ही रहते हैं। इस वर्ष सं. 2077 वि. में भी ऐसी ही स्थिति आ पड़ी है। कुछ ग्रन्थकार इस संवत् का नाम '**प्रमादी**' बतला रहे हैं, जो स्थूल मानाधारित है। सूक्ष्म मान से तो यह '**आनन्द**' नामक संवत्सर ही सिद्ध हो रहा है, अत: हमने अपने '**श्रीमार्त्तण्ड** पंचाग' में **सर्वत्र**इसी का निर्देश किया है, जो सूक्ष्म गणनया सर्वथा शुद्ध है। इस बारे में विशेष स्पष्टीकरण के लिए संवत् 2072 वि. के पृष्ठ 300 से 305 पर छपालेख '**बार्हस्पत्य (गौरव) संवत्सर-साधन**' अवश्य पढ़ना चाहिए।

25 मार्च, 2020 से 12 अप्रैल, 2021 तक '**आनन्द**' नामक संवत्सर है—यह इस लेख-विवरण से नि:सन्देह स्पष्ट हो जाता है।

श्रीसत्यनारायण व्रत (वैशाख पूर्णिमा)

यह व्रत प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है—"**सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे।**" यहां स्पष्ट कर दें कि—'**निशामुख**' '**सूर्यास्तकाल**' को कहा जाता है और इसे ही '**प्रदोषारम्भ-काल**' भी कहते हैं।

इस वर्ष यह व्रत वैशाख पूर्णिमा 6 मई, 2020 ई. को किया जायेगा, क्योंकि इसी दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी है। बेशक, पूर्णिमा 7 मई, 2020 ई. को भी है, लेकिन यह यहां प्रदोष से काफी पहले ही खत्म हो जाती है। स्पष्ट है—यह व्रत 6 मई, 2020 ई को ही शास्त्रसम्मत है।

ऋक् उपाकर्म

ऋग्वेदियों के उपाकर्म के तीन काल हैं—(i) श्रावण शुक्ल में श्रवण नक्षत्र, (ii) श्रावण शुक्ल पंचमी, (iii) श्रावण शुक्ल अन्तर्गत हस्त नक्षत्र।

इनमें श्रवण नक्षत्र इनके उपाकर्म का मुख्य काल है। यह उपाकर्म पूर्वाह्ण में किया जाता है। श्रावणी पूर्णिमा 3 अग., 2020 ई. को श्रवण नक्षत्र 7 घं. 19 मि. बाद विद्यमान है। इससे पहले यहां उ.षा. नक्षत्र है। यह उपाकर्म उ.षा. विद्ध श्रवण में कदापि नहीं किया जाये—ऐसा शास्त्रादेश है। अत: इस दिन यह उपाकर्म नहीं हो सकता।

अब श्रावण शुक्ल पंचमी, जो इस उपाकर्म का वैकल्पिक काल माना गया है, 25 जुलाई, 2020 ई. को पूर्वाह्ण में विद्यमान है। **स्पष्ट है, इसीदिन (25 जुलाई, 2020 को) पूर्वाह्ण में यह (ऋक्) उपाकर्म होगा।**

श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ (भाद्र. शुक्ल अष्टमी)

लगभग 15 दिनों तक चलने वाला यह व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को प्रारम्भ किया जाता है। क्योंकि, 25 अग., 2020 ई. को ही भाद्र. शुक्ल अष्टमी चन्द्रोदयव्यापिनी है। **अतः इस 'महालक्ष्मीव्रत' का प्रारम्भ इसी दिन (25 अग., 2020 ई.) से होगा।**

प्रोष्ठपदी (पूर्णिमा) श्राद्ध (भाद्र. शुक्ल पूर्णिमा)

यह पार्वणश्राद्ध है। अपराह्णव्यापिनी भाद्र. शुक्ल पूर्णिमा के दिन इसे करने का शास्त्रनियम है। **क्योंकि, इस वर्ष यह पूर्णिमा 1 सितं., 2020 ई. को**

अपराह्णव्यापिनी है, अत: 'प्रोष्ठपदी' पूर्णिमा का श्राद्ध इस वर्ष इसी दिन होगा।

यहां यह भी स्पष्ट कर देते हैं कि—अगले दिन (2 सितं., '20 को) यह पूर्णिमा तिथि अपराह्ण से काफी पहले ही समाप्त हो जाती है, अत: वहां पूर्णिमा श्राद्ध नहीं हो सकता।

प्रतिपदा का श्राद्ध

यह श्राद्ध अपराह्णव्यापिनी आश्विन कृष्ण प्रतिपदा में किया जाता है। **इस वर्ष 2 सितं., 2020 ई. को प्रतिपदा अपराह्णकालव्यापिनी है।** अत: इसी दिन प्रतिपदा का श्राद्ध लिखा गया है।

स्पष्ट कर दें कि—3 सितं., '20 को प्रतिपदा अपराह्ण से पूर्व 12 घं. 27 मि. पर ही समाप्त हो जाती है। इस दिन अपराह्णकाल 13 घं. 37 मि. से 16 घं. 8 मि. तक रहेगा। अत: इस दिन प्रतिपदा इसे स्पर्श भी नहीं करती।

द्वितीया का श्राद्ध

अपराह्णव्यापिनी आश्विन कृष्ण द्वितीया को यह श्राद्ध करने का शास्त्र-निर्देश है। इस वर्ष 3 सितं., 2020 ई. को 12 घं. 27 मि. से प्रारम्भ होकर यह द्वितीया तिथि 4 सितं., 2020 ई. को 14 घं. 24 मि. तक रहेगी। 3 सितं., 2020 ई. को अपराह्णकाल लगभग 13 घं. 35 मि. से 16 घं. 08 मि. तक रहेगा। अत: इस दिन यह तिथि अपराह्ण के पूर्णकाल को व्याप्त कर रही है, जबकि अगले दिन इससे काफी कम अपराह्णकाल को यह व्याप्त करेगी। **स्पष्ट है, पूर्ण अपराह्णकाल-व्यापिनी आश्विन कृष्ण द्वितीया के दिन 3 सितं., 2020 ई. को यह (द्वितीया का) श्राद्ध लिखा गया है।**

ध्यान दें—क्योंकि 4 सितं., 2020 ई. को कोई भी तिथि अपराह्णकाल-व्यापिनी नहीं है। अत: इस दिन कोई भी तिथिश्राद्ध घटित नहीं होता।

तृतीया का श्राद्ध (आश्वि. कृष्ण तृतीया)

अपराह्णव्यापिनी आश्वि. कृष्ण तृतीया के दिन यह श्राद्ध किया जाता है। बेशक, यह (तृतीया) तिथि 4 सितं., 2020 ई. को भी कुछ समय के लिए (14 घं. 24 मि. बाद) अपराह्ण में विद्यमान है, लेकिन 5 सितं., 2020 ई. को यह (तृतीया) तिथि अपराह्णकाल के पूर्ण भाग को व्याप्त कर रही है। **स्पष्ट है—तृतीया का यह श्राद्ध 5 सितं., 2020 ई. को ही होगा।**

नाना-नानी का श्राद्ध (आश्विन शुक्ल प्रतिपदा)

आश्विन अमा सर्वपितृ अमा कहलाती है। इसी दिन श्राद्ध समाप्ति मानी जाती है। इससे ठीक अगले दिन या यूं कहिये कि—अगली ही तिथि में आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को यह श्राद्ध किया जाता है। इस दिन नाना-नानी का महालय श्राद्ध पार्वणपद्धति से करने का शास्त्रनिर्देश है।

ध्यान रहे—क्योंकि इस वर्ष आश्विन मास **'अधिकमास'** है। अधिकमास में यह श्राद्ध नहीं किया जाता। अत: शुद्ध आश्विन शुक्ल पक्ष की अपराह्णव्यापिनी प्रतिपदा के दिन **17 अक्तू., 2020 ई. को यह (नाना-नानी का) श्राद्ध किया जायेगा—यह स्पष्ट है।**

नोट—उपरोक्त भाद्र. पूर्णिमा और आश्विन कृष्ण पक्ष में किये जाने वाले ये सभी श्राद्ध 'पार्वण' हैं और 'पार्वण श्राद्ध' का काल 'अपराह्ण' है, यह जान लें—"पार्वणन्त्वपराह्णके।" इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि—ये **श्राद्ध हमेशा अपराह्णव्यापिनी श्राद्धतिथि में ही किये जायें, अन्य कालव्यापिनी में नहीं।**

श्रीदुर्गाष्टमी (आश्वि. शुक्ल अष्टमी)

उदयव्यापिनी नवमीयुता आश्विन शुक्ल अष्टमी को यह 'दुर्गाष्टमी व्रत' किया जाता है। यहां अष्टमी सूर्योदयानन्तर कम से कम एक घटीव्यापिनी अवश्य होनी चाहिए—"घटिकामात्राप्यौदयिकी ग्राह्या।"—(निर्णयसिन्धु:)।

23 अक्तूबर, 2020 ई. को विद्यमान अष्टमी के साथ प्रात: सूर्योदय के समय सप्तमी का सम्पर्क होने से यहां यह (दुर्गाष्टमी) व्रत नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह व्रत सप्तमीयुता तिथि में ग्राह्य नहीं है और 24 अक्तू., 2020 ई. को यह तिथि सूर्योदयानन्तर एक घटी तक विद्यमान होने से यह (श्रीदुर्गाष्टमी) व्रत

24 अक्तू. 2020 ई. को ही लिखा गया है।

ध्यान दें—जिन प्रदेशों में यह अष्टमी दूसरे दिन, यानी 24 अक्तू., 2020 ई. को सूर्योदयानन्तर एक घटी से कम काल को व्याप्त करेगी, वहां तो यह व्रत पहले ही दिन, यानी 23 अक्तू., 2020 को ही मनाना होगा, क्योंकि ऐसी स्थिति में सप्तमी-योग शास्त्रकारों ने ग्राह्य माना है।

ध्यान रहे कि—पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में इस 'दुर्गाष्टमी' को 'महाष्टमी' नाम से भी जाना जाता है।

विजयादशमी (दशहरा)

अपराह्नव्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी के दिन 'विजयादशमी' मनायी जाती है। इस वर्ष 25 अक्तू., 2020 ई. को दशमी अपराह्नव्यापिनी है और अगले दिन 26 अक्तू. को यह त्रिमुहूर्ता बेशक है, पर अपराह्नव्यापिनी नहीं है। श्रवण नक्षत्र भी इस पर्व का निर्णायक पदार्थ है, जोकि दोनों ही दिन विद्यमान नहीं है। **स्पष्ट है—अपराह्नव्यापिनी आश्वि. शुक्ल दशमी के दिन (25 अक्तू., 2020 ई. को) ही यह 'विजयदशमी' पर्व मनाना होगा।**

वृश्चिक संक्रान्ति (वृश्चिक राशि में सूर्यप्रवेश)

इस वर्ष सूर्य निरयणगति से 16 नवं., 2020 ई. को वृश्चिक राशि में प्रात: 6 घं. 52 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर प्रवेश करेगा। सूर्य का यह संक्रमण सूर्योदय के पार्श्ववर्ती होने के कारण संदिग्ध है, अर्थात् सूर्यसंक्रान्ति रविवार में लगेगी या चन्द्रवार में यह ज्ञात करना है।

इसका स्पष्टीकरण इस तरह समझें—इस दिन यानी 16 नवं., 2020 को जिन-जिन प्रदेशों में सूर्योदय 6 घं. 52 मि. पर या इससे पहले हो जायेगा, वहां-वहां उन-उन प्रदेशों में यह संक्रान्ति 16 नवं., चन्द्रवार वाले दिन घटित मानी जायेगी और जिन-जिन नगरों/प्रदेशों में सूर्योदय 6 घं. 52 मि. (भा.स्टैं.टा.) के बाद होगा उन-उन नगरों/प्रदेशों में यह संक्रान्ति 15 नवं., '20 के दिन (रविवार को) मानी जायेगी। क्योंकि "सूर्योदयाद्वारप्रवृत्तिः"—प्रमाण के अनुसार भिन्न-भिन्न अक्षांक्षीय नगरों में वार की प्रवृत्ति (शुरुआत) भी भिन्न-भिन्न समय में स्थानीय सूर्योदय से हुआ करती है। यही स्थिति यहां इस वर्ष इस (वृश्चिक) संक्रान्ति के समय घटित हुई है, जिससे यह वृश्चिक संक्रान्ति कुछ नगर/प्रदेशों में 15 नवं., '20 रविवार के दिन और कुछ नगर/प्रदेशों में 16 नवं., सोमवार के दिन घटित हो रही है—यह स्पष्ट है।

ध्यान रहे—हमारे पंचांगस्थलीय प्रदेश चण्डीगढ़ में यह वृश्चिक-संक्रान्ति 15 नवं., 2020 के दिन रविवार को ही घटित होगी—यह भी स्पष्ट है।

संकष्ट चतुर्थी (माघ कृष्ण चतुर्थी)

चन्द्रोदयव्यापिनी माघ कृष्ण चतुर्थी को 'संकष्ट चतुर्थी (श्रीगणेश चतुर्थी) व्रत' किया जाता है। यह तिथि 31 जनवरी, 2021 ई. को ही चन्द्रोदयव्यापिनी है। भले ही अगले दिन, यानी 1 फर., 21 ई. को भी चतुर्थी तिथि विद्यमान है, लेकिन यहां यह चन्द्रोदय से काफी पहले ही समाप्त हो जाती है। **स्पष्ट है—31 जनवरी, 2021 ई. को ही श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत लिखा गया है, जोकि शास्त्रसम्मत है।**

भीष्माष्टमी (माघ शुक्ल अष्टमी)

माघ शुक्ल अष्टमी को 'भीष्माष्टमी' मनायी जाती है। इस पर्व को 'भीष्मपितामह' के एकोद्दिष्ट श्राद्धरूप में मनाने का शास्त्रनिर्देश है। क्योंकि एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्याह्न में किया जाता है, इसलिए मध्याह्नव्यापिनी माघ शुक्ल अष्टमी के दिन यह भीष्माष्टमी पर्व मनाया जाता है—**यह स्पष्ट है—"अत्र श्राद्धादेः एकोद्दिष्टत्वात् मध्याह्नव्यापिनी अष्टमी ग्राह्या"।**

(पुरुषार्थ- चिन्तामणिः)

इस वर्ष 19 फर., 2021 ई. और 20 फर., 2021 ई. को दोनों दिन यह तिथि पूर्णरूप से मध्याह्नव्यापिनी है। इस स्थिति में शास्त्रादेश है कि—इस तिथि के दो दिन मध्याह्नव्यापिनी या अव्यापिनी होने पर यह श्राद्ध दूसरे दिन ही किया जाये।

अतः स्पष्ट है, इसी दिन (20 फर., 2021 ई. को ही) भीष्माष्टमी मनायी जायेगी।

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2020 से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2020 ई.	घं.	मि.	2020 ई.	घं.	मि.	2020 ई.	घं.	मि.	2020 ई.	घं.	मि.	2020 ई.	घं.	मि.	2020 ई.	घं.	मि.	2020-21 ई.	घं.	मि.	2020-21 ई.	घं.	मि.
3 जन.	7	19	5 जन.	12	27	1 मई	1	52	2 मई	23	40	26 अग.	13	04	28 अग.	12	37	23 दिसं.	1	37	25 दिसं.	7	36
12 जन.	11	49	14 जन.	7	55	9 मई	6	33	11 मई	4	13	4 सितं.	23	28	7 सितं.	5	23	1 जन.	20	15	3 जन.	19	56
20 जन.	23	30	23 जन.	0	19	18 मई	16	57	20 मई	22	37	14 सितं.	15	52	16 सितं.	12	20	10 जन.	10	49	12 जन.	7	37
30 जन.	15	12	1 फर.	20	53	28 मई	7	26	30 मई	6	02	22 सितं.	19	18	24 सितं.	18	09	19 जन.	9	54	21 जन.	15	36
8 फर.	22	05	10 फर.	17	05	5 जून	16	43	7 जून	14	10	2 अक्तू.	5	56	4 अक्तू.	11	52	29 जन.	3	50	31 जन.	2	28
17 फर.	4	53	19 फर.	6	06	15 जून	00	21	17 जून	6	03	12 अक्तू.	1	18	13 अक्तू.	22	54	6 फर.	17	17	8 फर.	15	20
26 फर.	22	08	29 फर.	4	02	24 जून	13	10	26 जून	11	25	20 अक्तू.	3	52	22 अक्तू.	1	13	15 फर.	18	28	17 फर.	23	48
7 मार्च	9	05	9 मार्च	4	09	3 जुला.	1	13	4 जुला.	23	22	29 अक्तू.	11	59	31 अक्तू.	17	57	25 फर.	13	17	27 फर.	11	18
15 मार्च	11	23	17 मार्च	11	46	12 जुला.	8	18	14 जुला.	14	06	8 नवं.	8	45	10 नवं.	7	56	5 मार्च	22	37	7 मार्च	20	59
25 मार्च	4	18	27 मार्च	10	09	21 जुला.	20	30	23 जुला.	17	44	16 नवं.	14	36	18 नवं.	10	39	15 मार्च	2	19	17 मार्च	7	30
3 अप्रै.	18	40	5 अप्रै.	14	57	30 जुला.	7	40	1 अग.	6	48	25 नवं.	18	20	28 नवं.	0	22	24 मार्च	23	12	26 मार्च	21	39
11 अप्रै.	20	11	13 अप्रै.	19	02	8 अग.	16	11	10 अग.	22	05	5 दिसं.	14	27	7 दिसं.	14	32	2 अप्रै.	5	19	4 अप्रै.	2	38
21 अप्रै.	10	22	23 अप्रै.	16	04	18 अग.	5	43	20 अग.	2	07	14 दिसं.	1	40	15 दिसं.	21	31	11 अप्रै.	8	57	—	—	—

पंचकों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2020 से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2020 ई.	घं.	मि.	2020 ई.	घं.	मि.	2020 ई.	घं.	मि.	2020 ई.	घं.	मि.	2020-21 ई.	घं.	मि.	2020-21 ई.	घं.	मि.	2021 ई.	घं.	मि.	2021 ई.	घं.	मि.
26 जन.	17	39	31 जन.	18	09	11 जून	3	41	16 जून	3	17	25 अक्तू.	15	26	30 अक्तू.	14	57	11 मार्च	9	21	16 मार्च	4	43
23 फर.	0	28	28 फर.	1	08	8 जुलाई	12	31	13 जुला.	11	14	21 नवं.	22	25	26 नवं.	21	20	7 अप्रैल	15	00	12 अप्रैल	11	29
21 मार्च	6	20	26 मार्च	7	16	4 अग.	20	47	9 अग.	19	06	19 दिसं.	7	16	24 दिसं.	4	32	—	—	—	—	—	—
17 अप्रै.	12	17	22 अप्रै.	13	17	1 सितं.	3	48	6 सितं.	2	21	15 जन.	17	05	20 जन.	12	36						
14 मई	19	21	19 मई	19	53	28 सितं.	9	41	3 अक्तू.	8	50	12 फर.	2	10	16 फर.	20	56						

रविवार-कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2020 से 30 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

2020 ई.	रविवार की तारीखें					2020 ई.	रविवार की तारीखें					2020 ई.	रविवार की तारीखें					2021 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	5	12	19	26	—	मई	3	10	17	24	31	सितम्बर	6	13	20	27	—	जनवरी	3	10	17	24	31
फरवरी	2	9	16	23	—	जून	7	14	21	28	—	अक्टूबर	4	11	18	25	—	फरवरी	7	14	21	28	—
मार्च	1	8	15	22	29	जुलाई	5	12	19	26	—	नवम्बर	1	8	15	22	29	मार्च	7	14	21	28	—
अप्रैल	5	12	19	26	—	अगस्त	2	9	16	23	30	दिसम्बर	6	13	20	27	—	अप्रैल	4	11	18	25	—

ग्रहण-विवरण (सं. 2077 वि.)

गणक-परिलेखक—प्रियव्रत शर्मा, ग्रहणफल—इन्दुशेखर शर्मा,

[इस ग्रहणगणित में मेरे प्रिय दौहित्र चि. प्रांशु चतुर्वेदी, B.A., L.L.B.(Hons.), L.L.M., Assistant District Attorney ने पर्याप्त सहयोग दिया है, तदर्थ उसे सर्वथा सुख-समृद्धिसम्पन्न शतोत्तर आयु के लिए मेरा आत्मिक सस्नेह आशीर्वाद है—प्रियव्रत शर्मा]

इस वर्ष (सं. 2077 वि.) में भूमण्डल पर निम्नांकित दो ग्रहण घटित होंगे—

1. कंकण सूर्यग्रहण (21 जून, सन् 2020 ई.)

2. खग्रास सूर्यग्रहण (14 दिसं., सन् 2020 ई.)

इनमें से केवल 21 जून, 2020 ई. वाला 'कंकण सूर्यग्रहण' ही भारत में दिखाई देगा। इसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है—

* कंकणाकृति खण्डग्रास सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.)

यह ग्रहण 21 जून, 2020 ई. को आषाढ़ी अमावस, रविवार के दिन समस्त भारत में दिखाई देगा। कुछ स्थलों पर भारतवर्ष में इसकी कंकणाकृति भी दिखाई पड़ेगी।

अगले पृष्ठों पर भारत के प्रसिद्ध 250 नगरों तथा भारत के पड़ोसी देश नेपाल, बंगलादेश, भूटान और श्रीलंका के भी कुछ नगरों में इस ग्रहण के स्पर्श, मध्य एवं मोक्षकाल तथा परमग्रासमान दिये गये हैं। इस कोष्ठक से आप अपने किसी नजदीक स्थित नगर द्वारा अपने इष्ट स्थान पर इस सूर्यग्रहण का प्रारम्भ, मध्य और समाप्तिकाल भा.स्टैं.टा. में तुरन्त जान सकते हैं। क्योंकि, यह सूर्यग्रहण 21 जून, 2020 ई. को रविवार के दिन घटित हो रहा है, इसलिए इसे 'चूड़ामणि सूर्यग्रहण' की संज्ञा दी गयी है। 'चूड़ामणि ग्रहण' में स्नान, दान, जपादि का शास्त्रों में बहुत अधिक महत्त्व माना गया है। अत: इस विशेष योग में इस ग्रहण के दिन श्रद्धालु जनों को किसी नदी, तालाब या धार्मिक तीर्थस्थलों पर जाकर स्नान, दान व जप करके पुण्यलाभ अवश्य अर्जित करना चाहिए।

सूर्यग्रहण (21 जून, 2020 ई.) कंकणाकृति

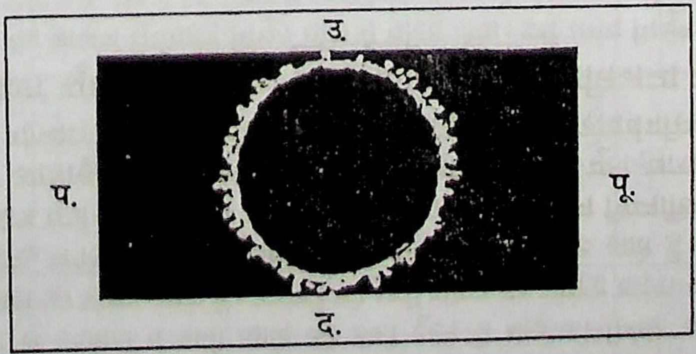

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक 20 जून, 2021 ई. को रात्रि 10 बजकर 0 मिनट पर प्रारम्भ हो जायेगा।

कंकण सूर्यग्रहण का राशिफल—यह ग्रहण मिथुन राशिस्थ मृगशिरा नक्षत्र में प्रारम्भ होकर आर्द्रा नक्षत्र में पूर्ण होगा। अत: स्पष्ट है कि—यह ग्रहण मृगशिरा एवं आर्द्रा नक्षत्र वाले व्यक्तियों के लिए विशेष कष्टप्रद रहेगा।

जन्मराशि किंवा नामराशि के अनुसार विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए

** सूर्य-चन्द्र के बिम्ब लगभग समान हैं। पृथ्वी से सूर्य और चन्द्र की दूरी व समीपता घटती-बढ़ती रहती है, जिससे हमें इनके बिम्ब छोटे-बड़े होते दीखते हैं। जब सूर्यग्रहण के समय चन्द्र-बिम्ब सूर्यबिम्ब के बराबर होता है, तब सूर्य का **पूर्णग्रास ग्रहण**, जब वह सूर्यबिम्ब से कुछ बड़ा होता है, तब **सूर्यखग्रास ग्रहण** और जब वह सूर्यबिम्ब से कुछ छोटा होता है, तब **सूर्यग्रहण कंकणाकृति** होता है। उस समय चन्द्रबिम्ब सूर्यबिम्ब को इस प्रकार ढकता है कि—सूर्यबिम्ब के लगभग मध्य में चन्द्रबिम्ब समाविष्ट होता है, जिससे उस समय सूर्यबिम्ब का अनाच्छादित बाहरी भाग चांदी के चमकते कंकण (कंगन) की तरह दिखाई देने लगता है, इसीलिए इस ग्रहण को '**कंकणाकृति ग्रहण**' कहा जाता है। यह ग्रहण 12 मिनट से अधिक नहीं टिकता।*

इस कंकण सूर्यग्रहण का फल नीचे कोष्ठक में दिया गया है इस कंकण सूर्यग्रहण का प्रारम्भ एवं मोक्ष मिथुन राशि में ही होगा। तदनुसार फल इस प्रकार है—

मिथुन-राशिस्थ कंकण सूर्यग्रहण का प्रत्येक जन्म या नामराशि वाले व्यक्तियों के लिए फल

जन्म/नाम राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	हानि	घात	हानि	लाभ	सुख	अपमान	महाकष्ट	स्त्री/पतिकष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट

नोट—कंकण सूर्यग्रहण को नंगी आंखों से भूलकर भी न देखें, नेत्र-ज्योति चली जाती है, इसका उपचार भी नहीं है, यह नोट कर लें।

कंकण सूर्यग्रहण का वारफल एवं माहात्म्य—यह ग्रहण इतवार को घटित होने से विशेष महत्त्वपूर्ण है। इस दिन स्नान-दान-मन्त्रजापादि अनुष्ठान विशेष महत्त्वपूर्ण हैं—

"बहुफलं जपदान-हुतादिके स्मृति-पुराणविदः प्रवदन्ति हि।"

मृगशिरा एवं आर्द्रा नक्षत्र वाले व्यक्ति ग्रहण को न देखें, इन नक्षत्र वाले व्यक्तियों के लिए यह ग्रहण विशेष कष्टप्रद है।

मिथुन राशिस्थ ग्रहण का फल

"सूर्या-चन्द्रमसोर्ग्रासे मिथुने च वरांगनाः।
पीडयन्ते वाल्हीका लोका यमुनातटवासिनः॥"

अर्थात्—मिथुन राशि में ग्रहण वैश्याओं, वाल्हीक-प्रान्त-वासी एवं यमुना तटवर्ती प्रान्तों के व्यक्तियों को भारी कष्ट सहना पड़े।

मृगशिरा नक्षत्र में ग्रहण का फल

"मृगशीर्षेऽपि मंजिष्ठा लक्षाक्षारः कुसुम्भकम्।
महर्घं दशमासान्ते लाभदं च यथोचितम्॥"

अर्थात्—मृगशिरा नक्षत्र में कंकण सूर्यग्रहण घटित होने से मजीठ, लाख के व्यापारी एवं कुसुंभ के व्यापारी तेजी से 10 मास के बाद विशेष लाभ प्राप्त करेंगे।

आर्द्रा नक्षत्र में सूर्यग्रहण का फल

"घृतं महर्घमार्द्रायां लाभदं मास-पंचके।"

अर्थात्—घी-तैलादि पदार्थ पांच मास में भारी तेजी से लाभ देंगे।

कंकण सूर्यग्रहण का मास फल

यह ग्रहण आषाढ़ी अमावस के दिन रविवार को घटित होगा, अतः पानी के प्रहार से नदीतटों व पानी आदि की टंकी टूटने से बाढ़ की स्थिति बनती है। पेयजल का संकट आता है। कृषकों को भारी संकट का सामना करना पड़ता है। कन्धार, जंगली प्रदेश, कश्मीर किंवा चीन में भारी संकट आते हैं। वर्ष में अनेकत्र वर्षा की कमी भी रहे। 'बृहत् संहिता' में यही फल निम्नांकित है—

**"आषाढ़-पर्वण्युदपान वप्रनदी-प्रवाहान् फल-मूल-वार्त्तान्।
गान्धार-काश्मीर-पुलिन्द-चीनान् हातान् वदेद् मण्डलवर्षमस्मिन्॥"**

कंकण सूर्यग्रहण-वेला में तात्कालिक ग्रहस्थितिजन्य प्रभाव

यह कंकण सूर्यग्रहण मिथुन राशि में घटित होगा। इस समय मिथुन राशि में सूर्य-चन्द्र बुध-राहु ये ग्रह स्थित हैं। इस समय मकर में नीचस्थ गुरु के साथ वक्र शनि का सम्बन्ध है। अतः प्रतिष्ठित व्यक्तियों, सैन्य अधिकारियों के लिए समय भयावह है। उ.कोरिया, अमेरिका में आपसी संघर्ष सम्भव है। पाक में आन्तरिक अशान्ति देश के विघटन का कारण बने। चीन, जापान, इण्डोनेशिया, पाक के विशेष भाग में प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि सम्भव है।

आगामी वर्ष (सं. 2078 वि.) में भारत में दृश्य-अदृश्य ग्रहण—

आगामी वर्ष में भूगोल पर चार ग्रहण घटित होंगे—

1. चन्द्रग्रहण (26 मई, 2021 ई.)
2. सूर्यग्रहण (10 जून, 2021 ई.)
3. चन्द्रग्रहण (19 नवं., 2021 ई.)
4. सूर्यग्रहण (4 दिसं., 2021 ई.)

नोट—इनमें से कोई भी ग्रहण भारतवर्ष में दृश्य नहीं होगा।

सूर्यग्रहण (21-06-2020) (भा. स्टैं. टा.)

नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास	नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
आवू	10	5	11	44	13	34	0.868	बीकानेर	10	11	11	49	13	37	0.963
आरा (बिहार)	10	35	12	23	14	8	0.825	बिलासपुर (हि.प्र.)	10	23	12	2	13	47	0.957
अगरतला	10	55	12	45	14	23	0.769	बिलासपुर (म.प्र.)	10	26	12	13	14	0	0.723
आगरा	10	20	12	3	13	50	0.902	बृन्दावन	10	19	12	2	13	49	0.916
अहमदाबाद	10	3	11	42	13	32	0.821	बुलन्दशहर	10	21	12	3	13	50	0.941
ऐजावल	11	0	12	49	14	26	0.769	बूंदी	10	12	11	54	13	43	0.867
आजमगढ़	10	31	12	18	14	04	0.845	केपकोमोरिन	10	17	11	42	13	15	0.328
अजमेर	10	11	11	52	13	40	0.905	चम्बा	10	23	12	1	13	44	0.917
अकोला	10	11	11	53	13	43	0.712	चण्डीगढ़	10	22	12	2	13	47	0.975
अलीगढ़	10	20	12	3	13	50	0.925	चेन्नई	10	22	11	58	13	41	0.455
इलाहाबाद	10	27	12	14	14	1	0.830	चेरापूंजी	10	57	12	46	14	24	0.816
अलमोड़ा	10	26	12	9	13	54	0.969	छपरा	10	35	12	23	14	8	0.831
अलवर	10	17	11	58	13	46	0.924	छतरपुर	10	21	12	6	13	54	0.823
अम्बाला	10	21	12	1	13	47	0.987	चित्तौड़गढ़	10	10	11	50	13	40	0.858
अमेठी (उ.प्र.)	10	28	12	14	14	1	0.851	चिटगोंग (बं.दे.)	10	58	12	47	14	25	0.723
अमरावती (म.प्र.)	10	14	11	56	13	46	0.713	चूरू	10	15	11	54	13	42	0.959
अमृतसर	10	19	11	57	13	41	0.935	कोचीन	10	10	11	38	13	17	0.397
अमरोहा (उ.प्र.)	10	23	12	5	13	52	0.953	कोयम्बटूर	10	12	11	42	13	23	0.421
अनन्तनाग (क.)	10	24	12	0	13	42	0.874	कोलम्बो (श्रीलंका)	10	29	11	51	13	19	0.274
अनूपशहर (उ.प्र.)	10	21	12	4	13	51	0.938	कटक	10	38	12	26	14	10	0.661
अर्की (हि.प्र.)	10	23	12	2	13	47	0.963	ढाका (बं.दे.)	10	52	12	42	14	22	0.764
अयोध्या	10	29	12	15	14	2	0.870	दरभंगा	10	39	12	27	14	11	0.841
वदायूं	10	23	12	6	13	5[illegible]	0.923	दार्जीलिंग	10	47	12	35	14	16	0.867
वलिया	10	34	12	21	14	7	0.831	दतिया	10	19	12	2	13	51	0.853
वालूरघाट (बं.दे.)	10	47	12	36	14	18	0.810	देहरादून	10	24	12	5	13	50	0.995
बंगलौर	10	13	11	47	13	31	0.473	दिल्ली	10	19	12	1	13	48	0.953
बांसवाड़ा	10	7	11	48	13	38	0.818	देवरिया	10	33	12	20	14	5	0.858
बाड़मेर	10	4	11	41	13	30	0.913	देवास	10	11	11	52	13	43	0.788
बट्टीकलोआ (श्रीलंका)	10	35	12	0	13	29	0.285	देवबन्द	10	22	12	3	13	49	0.982
भागलपुर	10	42	12	30	14	14	0.810	देवप्रयाग	10	25	12	6	13	52	0.991
भरतपुर	10	18	12	1	13	49	0.909	धनबाद	10	40	12	29	14	12	0.765
बठिण्डा	10	17	11	56	13	42	0.979	धनकुटा (नेपाल)	10	44	12	32	14	14	0.865
भीनमाल	10	5	11	43	13	32	0.882	धर्मशाला	10	23	12	2	13	45	0.925
भिवानी	10	18	11	59	13	46	0.963	धूरी	10	19	11	59	13	44	0.979
भोपाल	10	14	11	57	13	47	0.787	डिब्रूगढ़	11	7	12	54	14	29	0.895
भुवनेश्वर	10	38	12	26	14	9	0.654	डीडवाना	10	12	11	52	13	40	0.934
भुज	9	58	11	34	13	23	0.858	डूंगरपुर	10	6	11	46	13	36	0.835
भूसावल	10	9	11	49	13	40	0.731	द्वारिका	9	56	11	30	13	19	0.837
बीजापुर	10	7	11	45	13	34	0.606	ऐटा	10	21	12	5	13	52	0.912
बिजनौर	10	23	12	5	13	51	0.970	इटावा	10	21	12	5	13	53	0.885

सूर्यग्रहण (21-06-2020) (भा. स्टैं. टा.)

नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास	नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
फरीदाबाद	10	19	12	1	13	48	0.945	झांसी	10	19	12	3	13	52	0.846
फरीदकोट	10	17	11	56	13	41	0.962	झरिया	10	40	12	29	14	12	0.767
फाजिल्का	10	16	11	54	13	39	0.965	झुंझुनू	10	15	11	55	13	43	0.949
फिरोजपुर	10	18	11	56	13	41	0.954	जीन्द	10	19	11	59	13	46	0.979
गाले (श्रीलंका)	10	32	11	51	13	16	0.246	जोधपुर	10	8	11	47	13	36	0.914
गंगटोक	10	48	12	36	14	17	0.876	जोरहाट	11	5	12	52	14	28	0.869
गया	10	36	12	24	14	9	0.799	कैथल	10	19	12	0	13	46	0.993
गाजियाबाद	10	20	12	2	13	49	0.952	कालका	10	22	12	2	13	47	0.973
गोरखपुर	10	32	12	19	14	5	0.865	कांचीपुरम्	10	20	11	56	13	38	0.452
गुंटकल	10	11	11	49	13	36	0.541	कैंडी (श्रीलंका)	10	31	11	55	13	23	0.280
गुरदासपुर	10	21	11	59	13	43	0.926	कांगड़ा	10	23	12	1	13	45	0.930
गुरुग्राम	10	19	12	1	13	48	0.948	कन्नौज	10	24	12	8	13	56	0.888
गुआहाटी	10	57	12	45	14	24	0.844	कानपुर	10	24	12	9	13	57	0.867
ग्वालियर	10	19	12	2	13	50	0.873	कपूरथला	10	20	11	58	13	43	0.946
हांसी	10	18	11	58	13	45	0.975	कारगिल	10	27	12	3	13	43	0.857
हमीरपुर (हि.प्र.)	10	22	12	2	13	46	0.944	करनाल	10	21	12	1	13	47	0.987
हमीरपुर (उ.प्र.)	10	23	12	8	13	56	0.853	काठियावाड़	9	59	11	35	13	25	0.807
हापुड़	10	21	12	3	13	50	0.951	काठमाण्डू (नेपाल)	10	38	12	25	14	9	0.891
हरिद्वार	10	23	12	5	13	51	0.988	कठुआ (क.)	10	22	12	0	13	43	0.920
हाथरस	10	20	12	3	13	50	0.916	कटनी	10	22	12	8	13	56	0.786
हिसार	10	17	11	57	13	44	0.979	खन्ना	10	20	12	0	13	45	0.972
होशंगाबाद	10	15	11	58	13	48	0.769	खुर्जा	10	20	12	3	13	50	0.937
होशियारपुर	10	21	12	0	13	44	0.945	किशनगढ़ (राज.)	10	6	11	42	13	29	0.984
हैदराबाद	10	14	11	55	13	44	0.598	कोडैकनाल	10	14	11	44	13	23	0.393
इम्फाल	11	4	12	53	14	28	0.805	कोहिमा	11	4	12	53	14	28	0.836
इन्दौर	10	10	11	51	13	42	0.783	कोटखाई	10	24	12	4	13	49	0.967
इटानगर	11	3	12	51	14	27	0.878	कोलकाता	10	46	12	35	14	17	0.726
इटारसी	10	14	11	58	13	47	0.765	कोटा	10	12	11	54	13	43	0.857
जबलपुर	10	21	12	6	13	54	0.767	कुल्लू	10	24	12	3	13	47	0.939
जाफना (श्रीलंका)	10	24	11	54	13	30	0.355	कुराली (पं.)	10	21	12	1	13	46	0.970
जयपुर	10	14	11	56	13	44	0.910	कुरुक्षेत्र	10	21	12	1	13	47	0.997
जैसलमेर	10	5	11	42	13	29	0.952	लखनऊ	10	26	12	11	13	58	0.879
जालन्धर	10	20	11	59	13	43	0.949	लुधियाना	10	20	11	59	13	44	0.963
जालौर	10	6	11	44	13	34	0.890	मदुरै	10	17	11	46	13	24	0.379
जम्मू	10	21	11	58	13	41	0.901	महेन्द्रगढ़	10	17	11	58	13	45	0.949
जामनगर	9	58	11	34	13	23	0.830	मलेरकोटला	10	20	11	59	13	45	0.976
जमशेदपुर	10	39	12	27	14	11	0.735	मन्दसौर	10	9	11	50	13	40	0.830
जासौर (बं.दे.)	10	49	12	39	14	19	0.751	मण्डी (हि.प्र.)	10	23	12	3	13	47	0.945
झालावाड़	10	8	11	48	13	38	0.854	मानेसर	10	21	12	2	13	47	0.995
झालरापाटन	10	12	11	54	13	44	0.835	मंगलोर	10	4	11	36	13	21	0.497

सूर्यग्रहण (21-06-2020) (भा. स्टैं. टा.)

नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास	नगर	प्रारम्भ		मध्य		समाप्त		ग्रास
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.			घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
मारवाड़ (जं.)	10	8	11	48	13	37	0.891	रामेछाप (नेपाल)	10	40	12	28	14	11	0.878
मथुरा	10	19	12	2	13	49	0.914	रामेश्वरम्	10	22	11	51	13	26	0.348
मेरठ	10	21	12	3	13	49	0.961	रामपुरबुशहर	10	24	12	4	13	49	0.958
मिर्जापुर	10	29	12	16	14	2	0.818	रांची	10	36	12	25	14	9	0.753
मोगा	10	18	11	57	13	42	0.961	रतनगढ़	10	13	11	53	13	41	0.954
मुम्बई	10	0	11	37	13	28	0.699	रतलाम	10	9	11	50	13	40	0.807
मुंगेर	10	40	12	29	14	12	0.816	रीवा	10	25	12	11	13	59	0.803
मुरादाबाद	10	23	12	6	13	52	0.950	रिवाड़ी	10	18	11	59	13	47	0.943
मंसूरी	10	24	12	5	13	50	0.991	रोहतक	10	19	12	0	13	46	0.965
मुजफ्फरनगर	10	22	12	3	13	49	0.975	रोपड़	10	21	12	1	13	46	0.966
मैसूर	10	10	11	43	13	26	0.462	सागर	10	18	12	2	13	51	0.795
नाभा	10	20	12	0	13	45	0.980	सहारनपुर	10	22	12	3	13	49	0.991
नागौर	10	10	11	49	13	38	0.935	सांगानेर	10	14	11	55	13	44	0.907
नागपुर	10	17	12	1	13	50	0.710	संगरूर	10	19	11	59	13	44	0.985
नाहन	10	22	12	3	13	48	0.983	सरहिन्द	10	21	12	0	13	46	0.975
नैनीताल	10	25	12	8	13	54	0.963	सेहोर (बं.दे.)	10	49	12	38	14	19	0.745
नालागढ़	10	22	12	2	13	46	0.964	शाहदरा	10	20	12	1	13	48	0.953
नारैना	10	11	11	51	13	39	0.920	शिलांग	10	57	12	46	14	24	0.826
नारनौल	10	17	11	58	13	45	0.941	शिमला	10	23	12	3	13	48	0.966
नासिक	10	3	11	42	13	32	0.720	शोलापुर	10	7	11	46	13	35	0.629
नाथद्वारा	10	8	11	47	13	37	0.866	श्रीनगर (क.)	10	24	11	59	13	40	0.860
नवलगढ़	10	14	11	55	13	43	0.942	सीकर	10	14	11	54	13	42	0.935
नीमच	10	9	11	50	13	40	0.843	सिलीगुड़ी	10	47	12	35	14	16	0.857
पालमपुर	10	23	12	2	13	46	0.931	सिरसा	10	17	11	56	13	42	0.995
पाली	10	8	11	47	13	36	0.895	सोलन	10	23	12	3	13	48	0.971
पणजी	10	1	11	36	13	24	0.585	सूरत	10	2	11	40	13	31	0.764
पंचकूला	10	22	12	2	13	47	0.974	सूरतगढ़	10	14	11	53	13	39	0.997
पानीपत	10	20	12	1	13	48	0.978	सिलहट (बं.दे.)	10	57	12	46	14	24	0.805
पठानकोट	10	22	12	0	13	43	0.920	तंजावर	10	20	11	51	13	30	0.394
पटियाला	10	20	12	0	13	46	0.984	थानेसर	10	21	12	2	13	47	0.995
पटना	10	37	12	25	14	9	0.825	थिम्फू (भूटान)	10	51	12	39	14	19	0.884
फुलेरा	10	13	11	54	13	42	0.913	तिरुपति	10	18	11	55	13	39	0.480
पिलानी	10	16	11	56	13	43	0.956	टोंक	10	13	11	55	13	44	0.888
पोखरा (नेपाल)	10	35	12	21	14	6	0.910	त्रिवेन्द्रम्	10	14	11	39	13	14	0.347
पाण्डिचेरी	10	21	11	56	13	37	0.424	टुटीकोरिन	10	18	11	45	13	20	0.344
पुंछ	10	22	11	57	13	39	0.863	उदयपुर (राज.)	10	7	11	47	13	36	0.857
पोरबन्दर	9	56	11	32	13	21	0.809	उद्धमपुर (क.)	10	22	11	59	13	41	0.897
पोर्टब्लेयर	11	15	12	53	14	19	0.394	उज्जैन	10	10	11	51	13	42	0.797
प्रतापगढ़ (उ.प्र.)	10	28	12	14	14	1	0.843	ऊना	10	22	12	1	13	45	0.947
पूना	10	2	11	40	13	30	0.674	उन्नाव	10	25	12	10	13	57	0.870
पुरनिया	10	44	12	32	14	15	0.829	वड़ोदरा	10	4	11	43	13	33	0.793
पुरी	10	38	12	26	14	9	0.640	वाराणसी	10	30	12	17	14	4	0.821
रायपुर (छ.ग.)	10	24	12	10	13	58	0.699	वेरावल (गु.)	9	57	11	32	13	22	0.781
राजकोट	9	59	11	35	13	25	0.818	विजयवाड़ा	10	21	12	3	13	49	0.559
राजशाही (बं.दे.)	10	47	12	36	14	17	0.783	विशाखापट्टनम्	10	30	12	15	14	0	0.582

संवत् 2077 वि. की कुल जन्म-वर्ष-प्रश्न-मुहूर्त्त-कुण्डलियां

इन कुण्डलियों के श्रमसाध्य निर्माण में पूर्ण सहयोग के लिए "श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय"—कुराली (पं.) के अनुभवी कार्यकर्त्ता ग्राम सुन्हाड़—सौर, सोलन (हि.प्र.) निवासी प्रबुद्ध ज्योतिर्विद्वान् आचार्य श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य को आशीर्वाद पुरस्सर धन्यवाद दिये बिना मैं नहीं रह सकता।—प्रियव्रत शर्मा

यद्यपि जातकपद्धति एवं ताजिक ग्रन्थों में द्वादश-भाव-साधनपूर्वक बनायी गयी भावकुण्डली द्वारा भावफलादेश कहने का निर्देश है, तथापि लगभग सभी दैवज्ञ जातक-जन्मकालिक, प्रश्नकालिक, वर्षप्रवेश-कालिक तथा विवाहादि मुहूर्त्तकालिक आदि राशि-कुण्डलियों को ही फलादेशार्थ प्रयुक्त करने की परम्परा बनाये हुए हैं। जन्म, प्रश्न, वर्षप्रवेश या मुहूर्त्तकालीन लग्नराशि को प्रथम भाव-राशि तथा तदुत्तरवर्ती राशियों को क्रमशः द्वितीय आदि भावों की राशियां मानकर बनायी गयी जन्मकुण्डली द्वारा ही समस्त फलादेश कहने का बहुत बड़ा सम्प्रदाय फलित ज्योतिष में व्यापक प्रभाव बनाये हुए है। सच बात तो यह है—फलित में भावचक्र तो केवल सिद्धान्तरूप में ही दिखाई पड़ता है, इसका प्रयोगात्मक-रूप तो लगभग लुप्त-सा ही हो गया है। इसे दृष्टि में रखते हुए यहां सं. 2077 वि. में बनने वाली सभी (कुल 220) कुण्डलियां दी जा रही हैं। **"किस तारीख के कितने बजे से, किस तारीख के कितने बजे तक"**—कौन-सी कुण्डली बनती है (यानी सूर्यादि ग्रह किन-किन राशियों में स्थित हैं), यह भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम अनुसार प्रत्येक कुण्डली के ऊपर यहां निर्दिष्ट है। इन कुण्डलियों के आधार पर दैवज्ञ लोग इस वर्ष में उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली (जन्मकालिक ग्रहस्थिति—कुण्डली), इस वर्ष घटित होने वाले वर्षप्रवेश-कालानुसारी वर्षप्रवेश-कुण्डली (वर्षप्रवेश- कालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली) तथा अभीष्टकालिक प्रश्नकुण्डली (प्रश्नकालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली) एवं अभीष्ट विवाहादि मुहूर्त्तकालिक ग्रहस्थिति-कुण्डली तुरन्त जान सकेंगे और तात्कालिक स्थानीय लग्न ज्ञात कर इन ग्रहस्थिति- कुण्डलियों को लग्नकुण्डलियां अनायास ही बना सकेंगे।

ध्यान दें—यहां दी गयीं ये कुण्डलियां विवाहादि-मुहूर्त्तकालिक लग्नों के निर्णय में भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई हैं। लग्ननिर्णयार्थ अपेक्षित ग्रहस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यहां दी गयीं इन कुण्डलियों द्वारा दैवज्ञ स्वयं भी लग्न की शुद्धि-अशुद्धि का यथार्थ निर्णय अत्यन्त आसानीपूर्वक अनायास ही कर सकते हैं।

क्योंकि, ये कुण्डलियां भारतीय स्टैण्डर्ड टाईमानुसार हैं, अतः भारत में इन्हें बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जायेगा। यदि इन्हें भारत से अन्य किसी देश के लिए प्रयोग में लाना हो, तब उस देश के स्थानीय स्टैण्डर्ड टाइम को भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम में बदलकर इन्हें प्रयोग में लाइये।

स्पष्टता के लिए आगे उदाहरण दे रहे हैं। पहले भारतस्थलीय उदाहरण लेते हैं—

उदाहरण (1)—चण्डीगढ़ (U.T.) में 15 अप्रैल, 2020 ई. को 10 घं. 50 मि. (भा.स्टैं. टा.) पर उत्पन्न होने वाले/हुए जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात करनी है?

क्योंकि, इस जातक का जन्म "15 अप्रैल, 01 घं. 57 मि. से 17 अप्रैल 12 घं. 16 मि." के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक कुण्डली (ग्रहस्थिति-कुण्डली) यहां दी गयी इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। किंच—चण्डीगढ़ में 15 अप्रैल को 10 घं. 50 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर मिथुन लग्न है। अतः इस जातक की जन्मलग्न-कुण्डली यह बनी—

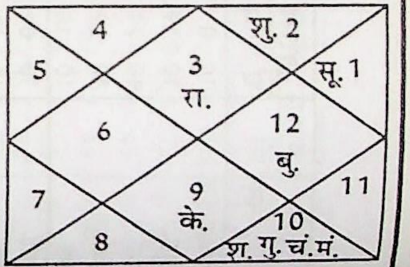

अब भारतेतर देश का उदाहरण लेते हैं—

उदाहरण (2)—15 जून, 2020 ई. को Lisbon (Por.ugal) में 08 घं. 30 मि. पर पैदा हुए/होने वाले जातक की जन्मलग्नकुण्डली ज्ञात करनी है?

Lisbon (Portugal) में D.S.T. (ग्रीष्मकालीन समय) चलता है, जो क्षेत्रीय स्टैं.टा. से एक घण्टा आगे रहता है। इन दिनों (गर्मियों में)यह लागू है। **स्पष्ट है**—इस जातक का यह जन्मसमय D.S.T. अनुसार है। अत: Portugal स्टैं.टा. अनुसार इस समय इस जातक का जन्मकाल 7 घं. 30 मि. होगा। Lisbon (Portugal) के स्टैं.टा. से भा.स्टैं.टा. 5 घं. 30 मि. आगे रहता है, अत: इस जातक की जन्मकालिक भारतीय तारीख 15 जून, 2020 ई. और जन्मकाल 13 घं. 00 मि. (भा.स्टैं.टा.) बने। क्योंकि, इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. अनुसार **"14 जून, 23 घं. 53 मि. से 16 जून 3 घं. 16 मि."** के मध्य हुआ है, अत: इसकी जन्म-कालिक-कुण्डली (ग्रहस्थिति-कुण्डली) यहां दी गयी इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**— Lisbon में इसके जन्म के समय लग्न मिथुन होगा। तदनुसार इसकी कुण्डली यह बनेगी—

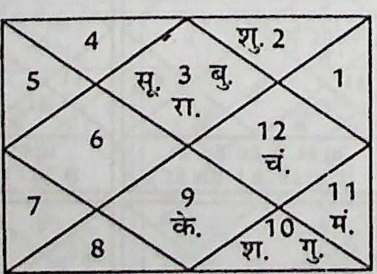

अब वर्षकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं—

उदाहरण (3)—भारत (हि.प्र.), सोलन में 15 अगस्त, 1974 ई. (गुरुवार) को 11 घं. 14 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर जन्मे एवं सम्प्रति मोहाली (पं.) में रहने वाले जातक की ई. सन् 2020-21 की वर्षकुण्डली जाननी है?

इस जातक के गताब्द यहां 46 मिले और 47वां वर्षप्रवेश 15 अगस्त, 2020 ई. (शनिवार) को प्रात: 6 घं. 15 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

क्योंकि, इस जातक का वर्षप्रवेश **"14 अगस्त 18 घं. 04 मि. से 16 अगस्त 18 घं. 24 मि."** के मध्य हुआ है, अत: इसकी वर्षकुण्डली (47वें वर्ष की) यहां दी गयी इसी कुण्डली अनुरूप होगी। **किंच**—इस जातक के निवासस्थान मोहाली (पं.) में इस समय (15 अगस्त, 2020 ई. को 6 घं. 15 मि. पर) सिंह लग्न है, अत: इस जातक की वर्षकुण्डली यह बनेगी—

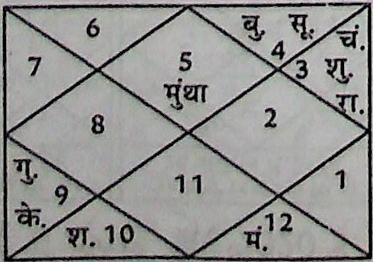

अब प्रश्नकुण्डली का उदाहरण भी ले लेते हैं—

उदाहरण (4)—मान लें, 25 मार्च, 2020 ई. को (नव संवत्सर 2077 वि. के प्रथम दिवस पर) 11 घं. 15 मि. (भा.स्टैं. टा.) पर आपके पास चण्डीगढ़ (U.T.), भारत में आकर कोई प्रश्नकर्त्ता कार्यसिद्धि/असिद्धि का प्रश्न करता है। इसकी प्रश्नकुण्डली जाननी है?

यहां प्रश्नकालिक तारीख 25 मार्च, 2020 ई. और प्रश्नकाल 11 घं. 15 मि. आगे इस स्तम्भ में दिये गये **"25 मार्च 6 घं. 25 मि. से 26 मार्च 7 घं. 15 मि."** के मध्य पड़ता है, अत: यहां यह प्रश्नकुण्डली इसी अवधि के अन्तर्गत आने वाली इस कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**—यहां प्रश्नस्थल (चण्डीगढ़) में इस समय लग्न मिथुन है, अत: यहां इस प्रश्नकर्त्ता की कुण्डली इस तरह बनेगी—

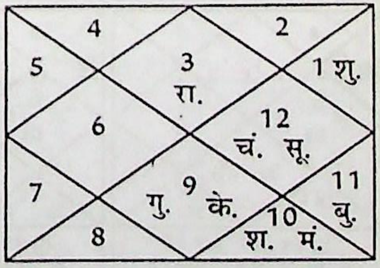

आगे मुहूर्त्तकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं—

उदाहरण (5)—हमारे इस पंचांग (श्रीमार्त्तण्ड) में 17 मई, 2020 ई. को पृष्ठ 262 पर दिये तुला लग्न वाले विवाहमुहूर्त्त की कुण्डली जाननी है?

इस लग्न (तुला) का काल इस दिन (17 मई, 2020 ई. को) चण्डीगढ़ में 16 घं. 31 मि. से 18 घं. 52 मि. तक है और यह लग्नकाल इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिये गये **"17 मई 7 घं. 14 मि. से 19 मई 19 घं. 52 मि."** के मध्य पड़ता है, अत: यह मुहूर्त्त-कुण्डली (तुला लग्न की) यहां दी इसी कुण्डली के अनुरूप इस तरह बनेगी—

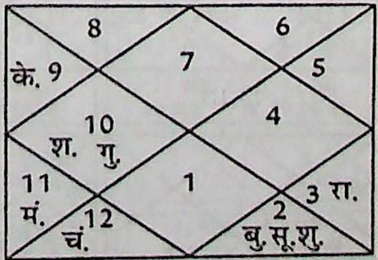

इस प्रकार पाठक समझ गये होंगे—जन्म, वर्षप्रवेश, प्रश्न, मुहूर्त्त आदि कालिक लग्नकुण्डलियां बनाना अत्यन्त सरल है।

ध्यान रहे—कुण्डली की ग्रहस्थिति (ग्रहों की राशि आदि) स्थानभेद से नहीं बदलती, केवल लग्न ही बदला करता है।

25 मार्च से 4 मई, सन् 2020 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

25 मार्च 6 घं. 25 मि. से
26 मार्च 7 घं. 15 मि.

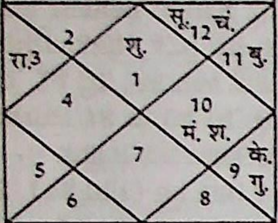

26 मार्च 7 घं. 16 मि. से
28 मार्च 15 घं. 36 मि.

28 मार्च 15 घं. 37 मि. से
28 मार्च 19 घं. 29 मि.

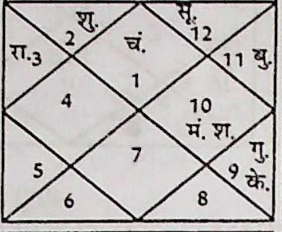

28 मार्च 19 घं. 30 मि. से
30 मार्च 03 घं. 47 मि.

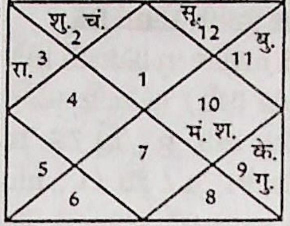

30 मार्च 3 घं. 48 मि. से
31 मार्च 6 घं. 04 मि.

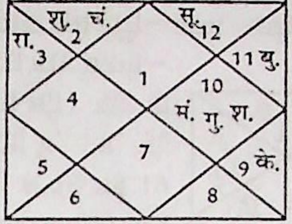

31 मार्च 6 घं. 5 मि. से
2 अप्रै. 13 घं. 31 मि.

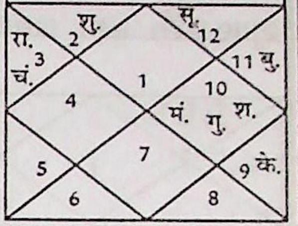

2 अप्रै. 13 घं. 32 मि. से
4 अप्रै. 17 घं. 07 मि.

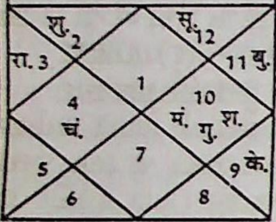

4 अप्रै. 17 घं. 08 मि. से
6 अप्रै. 17 घं. 31 मि.

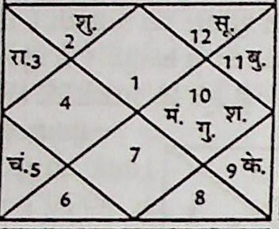

6 अप्रै. 17 घं. 32 मि. से
7 अप्रै. 14 घं. 19 मि.

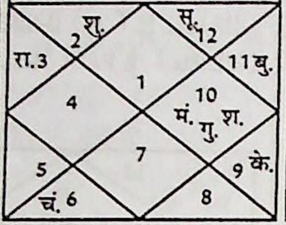

7 अप्रै. 14 घं. 20 मि. से
8 अप्रै. 16 घं. 32 मि.

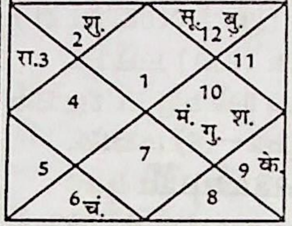

8 अप्रै. 16 घं. 33 मि. से
10 अप्रै. 16 घं. 25 मि.

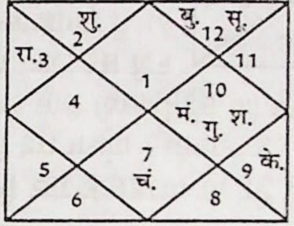

10 अप्रै. 16 घं. 26 मि. से
12 अप्रै. 19 घं. 11 मि.

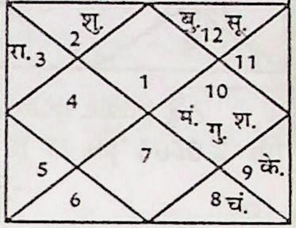

12 अप्रै. 19 घं. 12 मि. से
13 अप्रै. 20 घं. 22 मि.

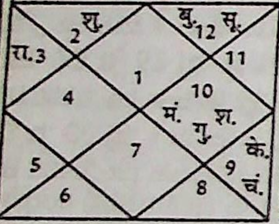

13 अप्रै. 20 घं. 23 मि. से
15 अप्रै. 1 घं. 56 मि.

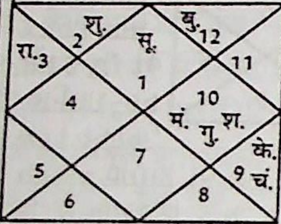

15 अप्रै. 1 घं. 57 मि. से
17 अप्रै. 12 घं. 16 मि.

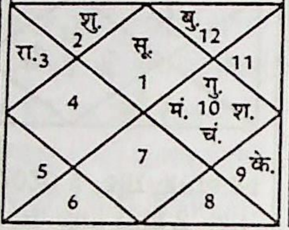

17 अप्रै. 12 घं. 17 मि. से
20 अप्रै. 0 घं. 36 मि.

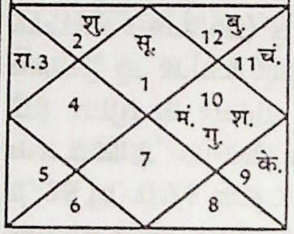

20 अप्रै. 0 घं. 37 मि. से
22 अप्रै.13 घं. 16 मि.

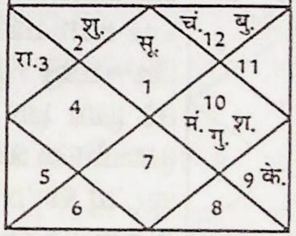

22 अप्रै. 13 घं. 17 मि. से
25 अप्रै. 1 घं. 14 मि.

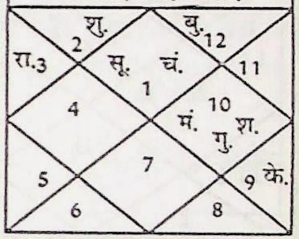

25 अप्रै. 1 घं. 15 मि. से
25 अप्रै. 2 घं. 32 मि.

25 अप्रै. 2 घं. 33 मि. से
27 अप्रै. 11 घं. 45 मि.

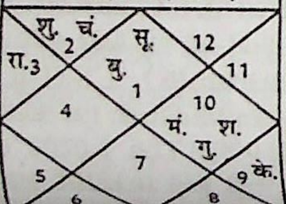

27 अप्रै. 11 घं. 46 मि. से
29 अप्रै. 19 घं. 56 मि.

29 अप्रै. 19 घं. 57 मि. से
2 मई 1 घं. 03 मि.

2 मई 1 घं. 04 मि. से
4 मई 3 घं. 07 मि.

4 मई 3 घं. 08 मि. से
4 मई 20 घं. 39 मि.

4 मई से 18 जून, सन् 2020 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

4 मई 20 घं. 40 मि. से
6 मई 3 घं. 14 मि.

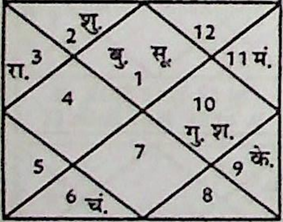

6 मई 3 घं. 15 मि. से
8 मई 3 घं. 12 मि.

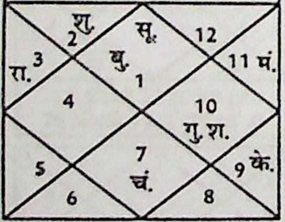

8 मई 3 घं. 13 मि. से
9 मई 9 घं. 46 मि.

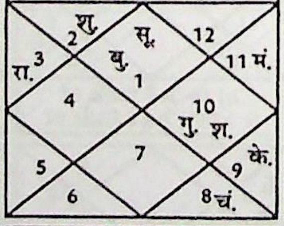

9 मई 9 घं. 47 मि. से
10 मई 5 घं. 01 मि.

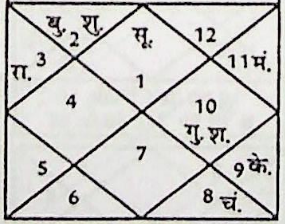

10 मई 5 घं. 02 मि. से
12 मई 10 घं. 15 मि.

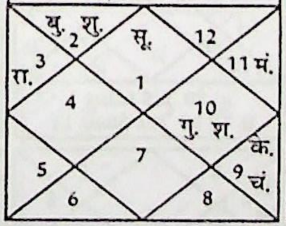

12 मई 10 घं. 16 मि. से
14 मई 17 घं. 15 मि.

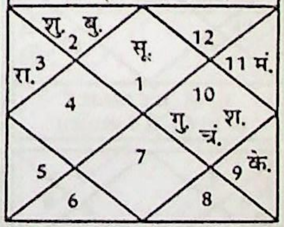

14 मई 17 घं. 16 मि. से
14 मई 19 घं. 20 मि.

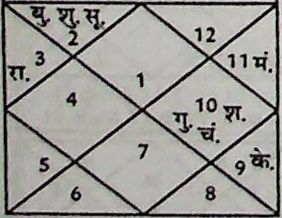

14 मई 19 घं. 21 मि. से
17 मई 7 घं. 13 मि.

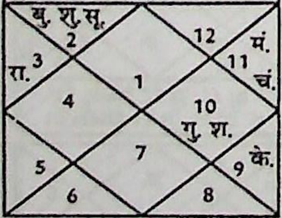

17 मई 7 घं. 14 मि. से
19 मई 19 घं. 52 मि.

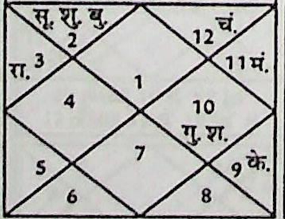

19 मई 19 घं. 53 मि. से
22 मई 7 घं. 36 मि.

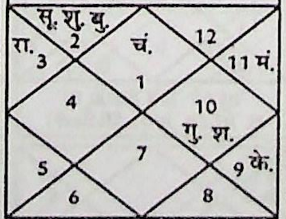

22 मई 7 घं. 37 मि. से
24 मई 17 घं. 32 मि.

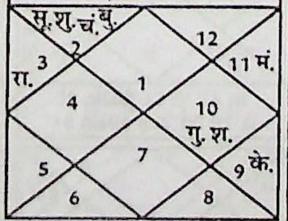

24 मई 17 घं. 33 मि. से
24 मई 23 घं. 57 मि.

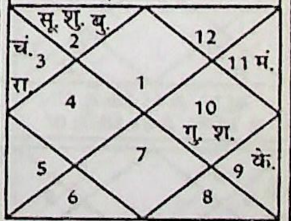

24 मई 23 घं. 58 मि. से
27 मई 1 घं. 23 मि.

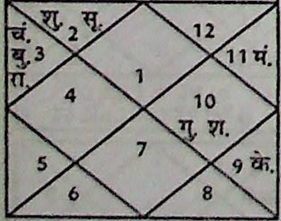

27 मई 1 घं. 24 मि. से
29 मई 6 घं. 57 मि.

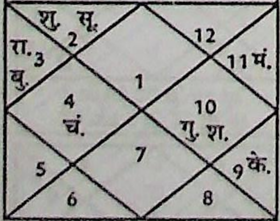

29 मई 6 घं. 58 मि. से
31 मई 10 घं. 18 मि.

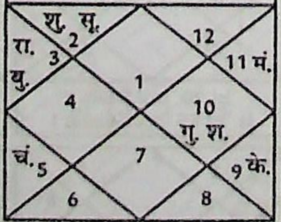

31 मई 10 घं. 19 मि. से
2 जून 11 घं. 58 मि.

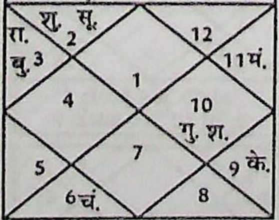

2 जून 11 घं. 59 मि. से
4 जून 13 घं. 06 मि.

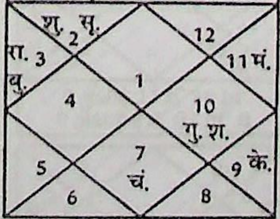

4 जून 13 घं. 07 मि. से
6 जून 15 घं. 11 मि.

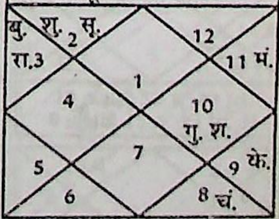

6 जून 15 घं. 12 मि. से
8 जून 19 घं. 43 मि.

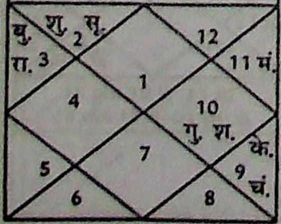

8 जून 19 घं. 44 मि. से
11 जून 3 घं. 40 मि.

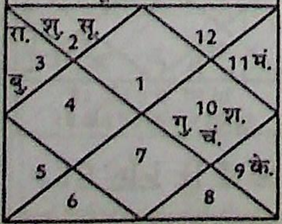

11 जून 3 घं. 41 मि. से
13 जून 14 घं. 45 मि.

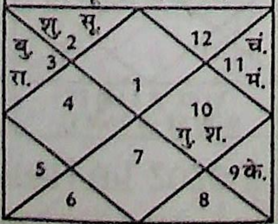

13 जून 14 घं. 46 मि. से
14 जून 23 घं. 52 मि.

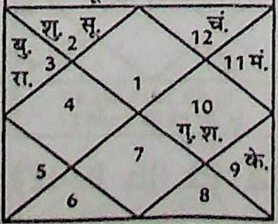

14 जून 23 घं. 53 मि. से
16 जून 3 घं. 16 मि.

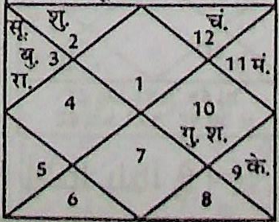

16 जून 3 घं. 17 मि. से
18 जून 15 घं. 02 मि.

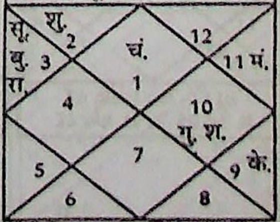

18 जून से 2 अगस्त, सन् 2020 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

18 जून 15 घं. 03 मि. से
18 जून 20 घं. 12 मि.

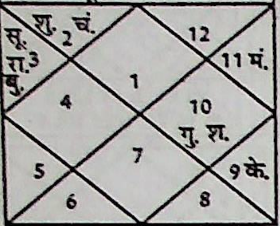

18 जून 20 घं. 13 मि. से
21 जून 0 घं. 34 मि.

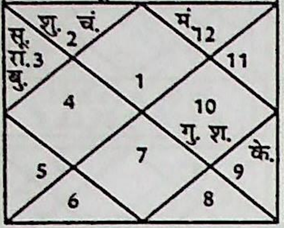

21 जून 0 घं. 35 मि. से
23 जून 7 घं. 33 मि.

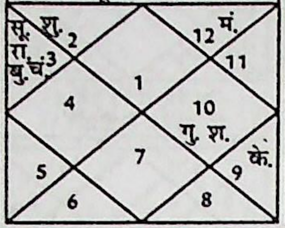

23 जून 7 घं. 34 मि. से
25 जून 12 घं. 25 मि.

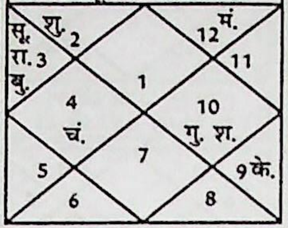

25 जून 12 घं. 26 मि. से
27 जून 15 घं. 49 मि.

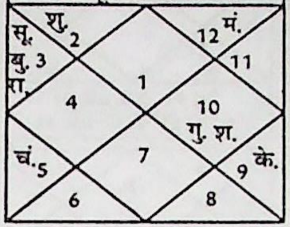

27 जून 15 घं. 50 मि. से
29 जून 18 घं. 25 मि.

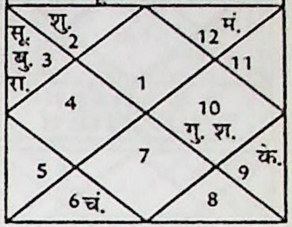

29 जून 18 घं. 26 मि. से
30 जून 5 घं. 24 मि.

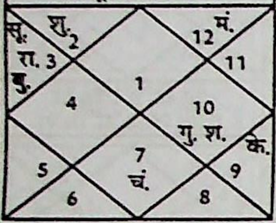

30 जून 5 घं. 25 मि. से
1 जुलाई 20 घं. 54 मि.

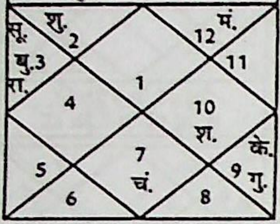

1 जुलाई 20 घं. 55 मि. से
4 जुलाई 0 घं. 06 मि.

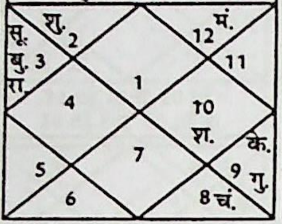

4 जुलाई 0 घं. 07 मि. से
6 जुलाई 5 घं. 00 मि.

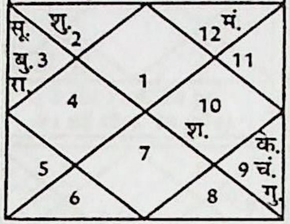

6 जुलाई 5 घं. 01 मि. से
8 जुलाई 12 घं. 30 मि.

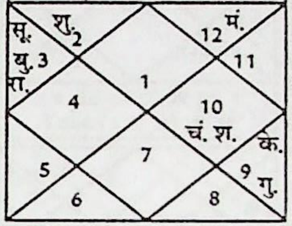

8 जुलाई 12 घं. 31 मि. से
10 जुलाई 22 घं. 53 मि.

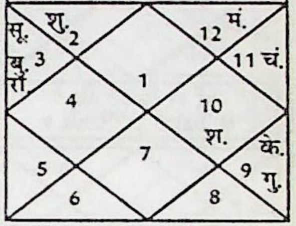

10 जुलाई 22 घं. 54 मि. से
13 जुलाई 11 घं. 13 मि.

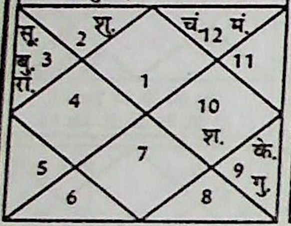

13 जुलाई 11 घं. 14 मि. से
15 जुलाई 23 घं. 17 मि.

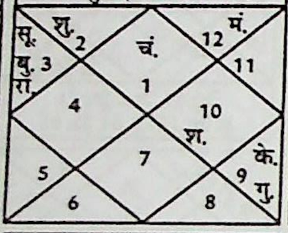

15 जुलाई 23 घं. 18 मि. से
16 जुलाई 10 घं. 46 मि.

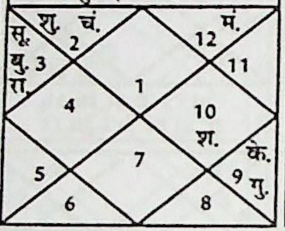

16 जुलाई 10 घं. 47 मि. से
18 जुलाई 8 घं. 59 मि.

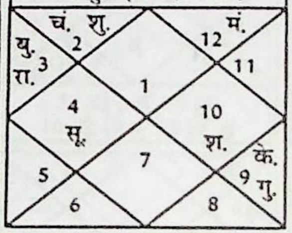

18 जुलाई 9 घं. 00 मि. से
20 जुलाई 15 घं. 27 मि.

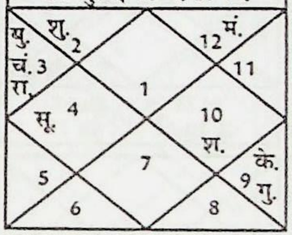

20 जुलाई 15 घं. 28 मि. से
22 जुलाई 19 घं. 14 मि.

22 जुलाई 19 घं. 15 मि. से
24 जुलाई 21 घं. 35 मि.

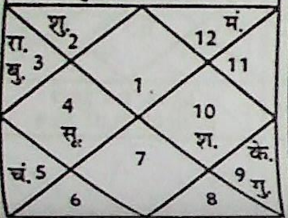

24 जुलाई 21 घं. 36 मि. से
26 जुलाई 23 घं. 48 मि.

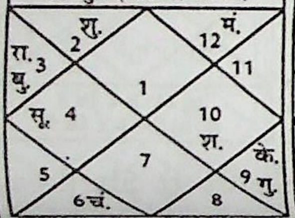

26 जुलाई 23 घं. 49 मि. से
29 जुलाई 2 घं. 47 मि.

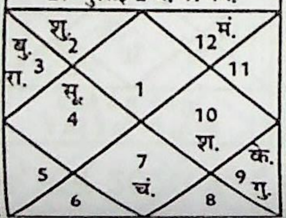

29 जुलाई 2 घं. 48 मि. से
31 जुलाई 7 घं. 04 मि.

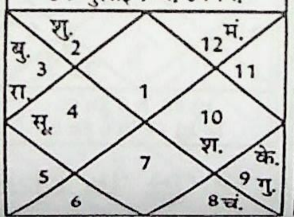

31 जुलाई 7 घं. 05 मि. से
1 अगस्त 5 घं. 08 मि.

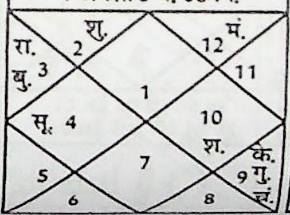

1 अगस्त 5 घं. 09 मि. से
2 अगस्त 3 घं. 29 मि.

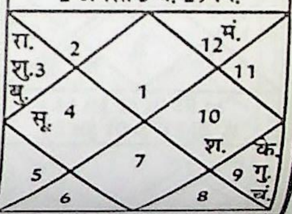

2 अगस्त से 13 सितम्बर, सन् 2020 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

2 अगस्त 3 घं. 30 मि. से 2 अगस्त 12 घं. 55 मि.

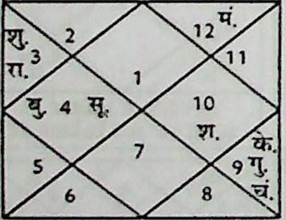

2 अगस्त 12 घं. 56 मि. से 4 अगस्त 20 घं. 46 मि.

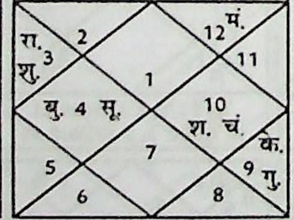

4 अगस्त 20 घं. 47 मि. से 7 अगस्त 6 घं. 56 मि.

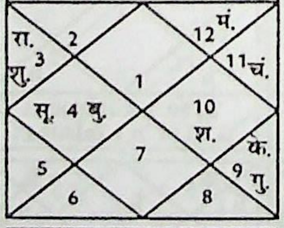

7 अगस्त 6 घं. 57 मि. से 9 अगस्त 19 घं. 05 मि.

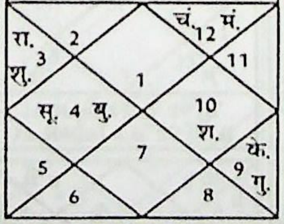

9 अगस्त 19 घं. 06 मि. से 12 अगस्त 7 घं. 35 मि.

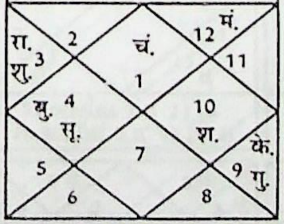

12 अगस्त 7 घं. 36 मि. से 14 अगस्त 18 घं. 03 मि.

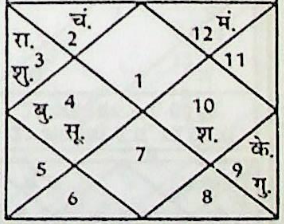

14 अगस्त 18 घं. 04 मि. से 16 अगस्त 18 घं. 24 मि.

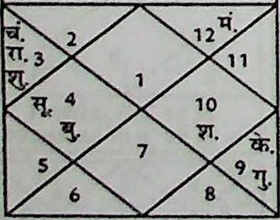

16 अगस्त 18 घं. 25 मि. से 16 अगस्त 19 घं. 10 मि.

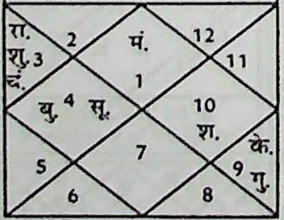

16 अगस्त 19 घं. 11 मि. से 17 अगस्त 0 घं. 51 मि.

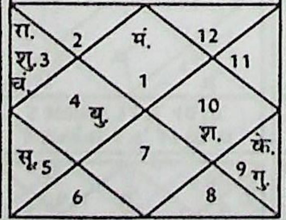

17 अगस्त 0 घं. 52 मि. से 17 अगस्त 8 घं. 28 मि.

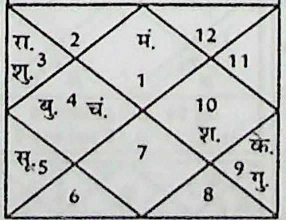

17 अगस्त 8 घं. 29 मि. से 19 अगस्त 4 घं. 07 मि.

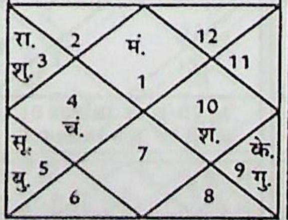

19 अगस्त 4 घं. 08 मि. से 21 अगस्त 5 घं. 14 मि.

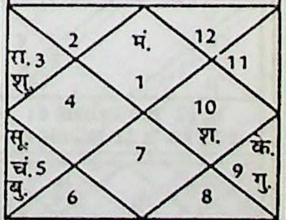

21 अगस्त 5 घं. 15 मि. से 23 अगस्त 6 घं. 05 मि.

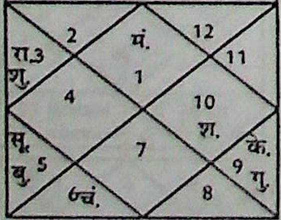

23 अगस्त 6 घं. 06 मि. से 25 अगस्त 8 घं. 15 मि.

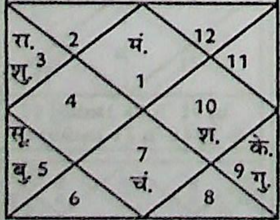

25 अगस्त 8 घं. 16 मि. से 27 अगस्त 12 घं. 36 मि.

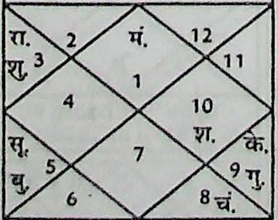

27 अगस्त 12 घं. 37 मि. से 29 अगस्त 19 घं. 11 मि.

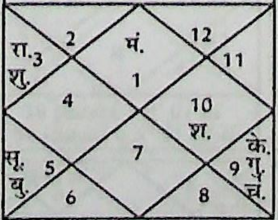

29 अगस्त 19 घं. 12 मि. से 1 सितम्बर 2 घं. 02 मि.

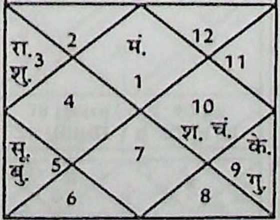

1 सितम्बर 2 घं. 03 मि. से 1 सितम्बर 3 घं. 47 मि.

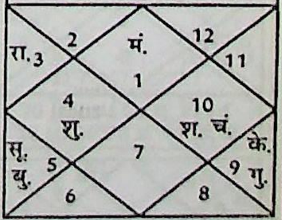

1 सितम्बर 3 घं. 48 मि. से 2 सितम्बर 12 घं. 02 मि.

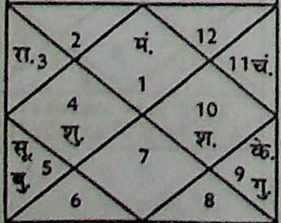

2 सितम्बर 12 घं. 03 मि. से 3 सितम्बर 14 घं. 13 मि.

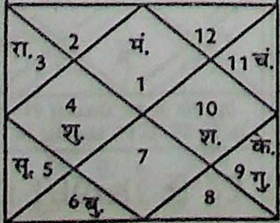

3 सितम्बर 14 घं. 14 मि. से 6 सितम्बर 2 घं. 20 मि.

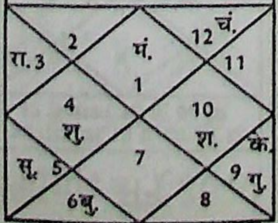

6 सितम्बर 2 घं. 21 मि. से 8 सितम्बर 15 घं. 08 मि.

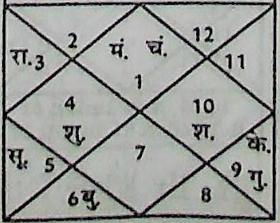

8 सितम्बर 15 घं 09 मि. से 11 सितम्बर 2 घं. 36 मि.

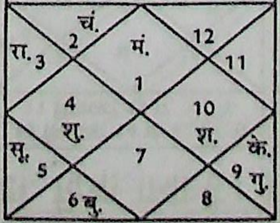

11 सितम्बर 2 घं. 37 मि. से 13 सितम्बर 10 घं. 35 मि.

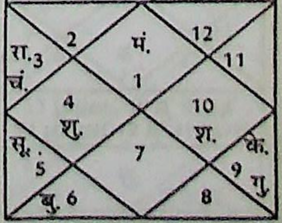

13 सितम्बर से 23 अक्तूबर, सन् 2020 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

13 सितम्बर 10 घं. 36 मि. से 15 सितम्बर 14 घं. 24 मि.

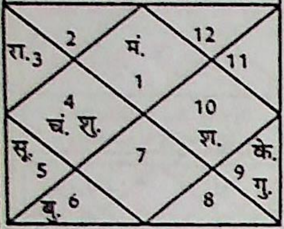

15 सितम्बर 14 घं. 25 मि. से 16 सितम्बर 19 घं. 06 मि.

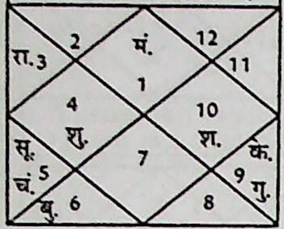

16 सितम्बर 19 घं. 07 मि. से 17 सितम्बर 15 घं. 06 मि.

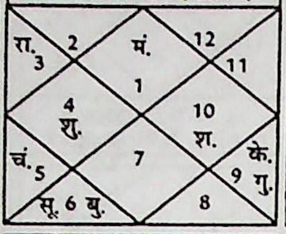

17 सितम्बर 15 घं. 07 मि. से 19 सितम्बर 14 घं. 41 मि.

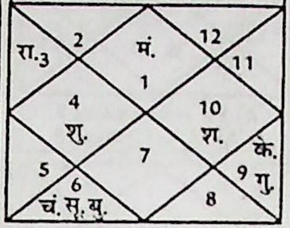

19 सितम्बर 14 घं. 42 मि. से 21 सितम्बर 15 घं. 15 मि.

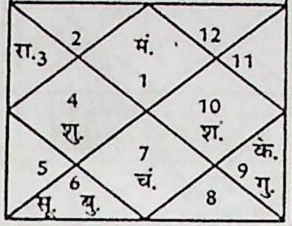

21 सितम्बर 15 घं. 16 मि. से 22 सितम्बर 16 घं. 56 मि.

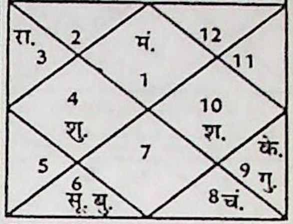

22 सितम्बर 16 घं. 57 मि. से 23 सितम्बर 12 घं. 50 मि.

23 सितम्बर 12 घं. 51 मि. से 23 सितम्बर 18 घं. 24 मि.

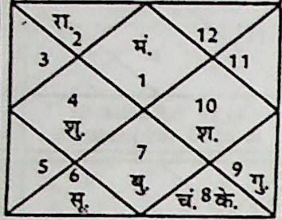

23 सितम्बर 18 घं. 25 मि. से 26 सितम्बर 0 घं. 40 मि.

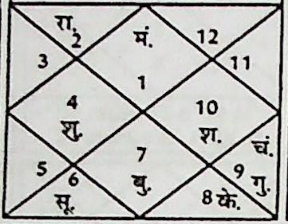

26 सितम्बर 0 घं. 41 मि. से 28 सितम्बर 1 घं. 01 मि.

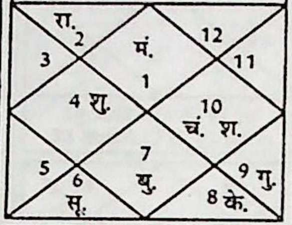

28 सितम्बर 1 घं. 02 मि. से 28 सितम्बर 9 घं. 40 मि.

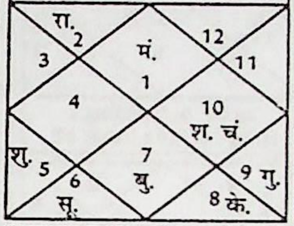

28 सितम्बर 9 घं. 41 मि. से 30 सितम्बर 20 घं. 35 मि.

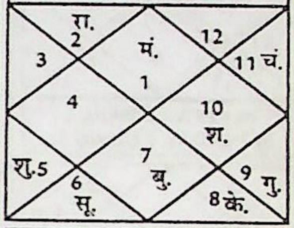

30 सितम्बर 20 घं. 36 मि. से 3 अक्तूबर 8 घं. 49 मि.

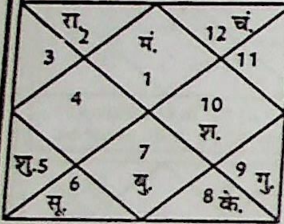

3 अक्तूबर 8 घं. 50 मि. से 5 अक्तूबर 5 घं. 30 मि.

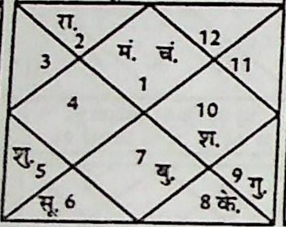

5 अक्तूबर 5 घं. 31 मि. से 5 अक्तूबर 21 घं. 40 मि.

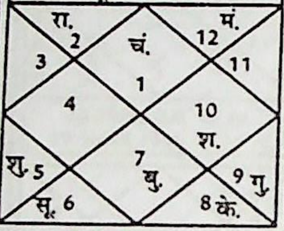

5 अक्तूबर 21 घं. 41 मि. से 8 अक्तूबर 9 घं. 45 मि.

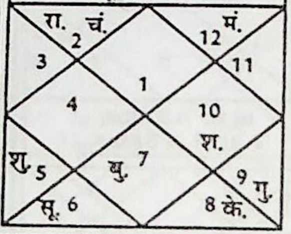

8 अक्तूबर 9 घं. 46 मि. से 10 अक्तूबर 19 घं. 08 मि.

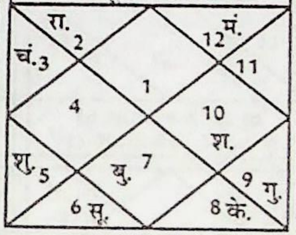

10 अक्तूबर 19 घं. 09 मि. से 13 अक्तूबर 0 घं. 28 मि.

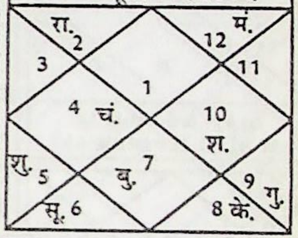

13 अक्तूबर 0 घं. 29 मि. से 15 अक्तूबर 2 घं. 01 मि.

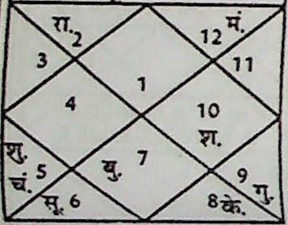

15 अक्तूबर 2 घं. 02 मि. से 17 अक्तूबर 1 घं. 23 मि.

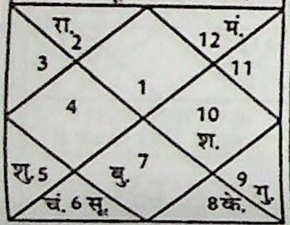

17 अक्तूबर 1 घं. 24 मि. से 17 अक्तूबर 7 घं. 04 मि.

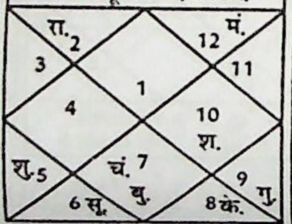

17 अक्तूबर 7 घं. 05 मि. से 19 अक्तूबर 0 घं. 46 मि.

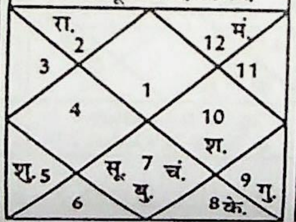

19 अक्तूबर 0 घं. 47 मि. से 21 अक्तूबर 2 घं. 11 मि.

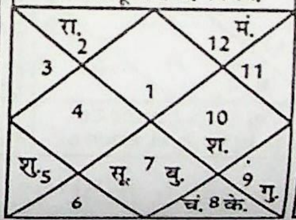

21 अक्तूबर 2 घं. 12 मि. से 23 अक्तूबर 7 घं. 00 मि.

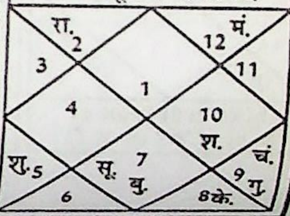

23 अक्तूबर से 6 दिसम्बर, सन् 2020 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

23 अक्तूबर 7 घं. 01 मि. से
23 अक्तूबर 10 घं. 44 मि.

23 अक्तूबर 10 घं. 45 मि. से
25 अक्तूबर 15 घं. 25 मि.

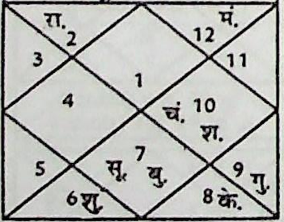

25 अक्तूबर 15 घं. 26 मि. से
28 अक्तूबर 2 घं. 29 मि.

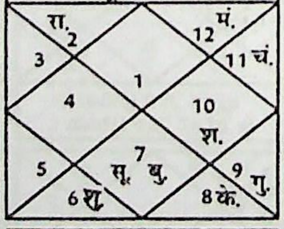

28 अक्तूबर 2 घं. 30 मि. से
30 अक्तूबर 14 घं. 56 मि.

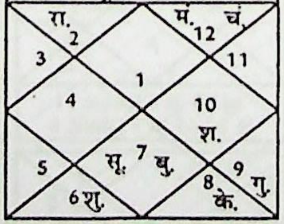

30 अक्तूबर 14 घं. 57 मि. से
2 नवम्बर 3 घं. 39 मि.

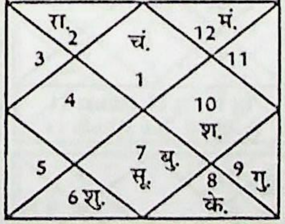

2 नवम्बर 3 घं. 40 मि. से
4 नवम्बर 15 घं. 42 मि.

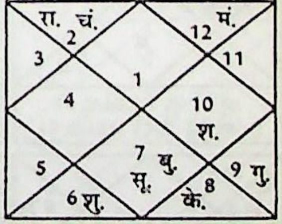

4 नवम्बर 15 घं. 43 मि. से
7 नवम्बर 1 घं. 47 मि.

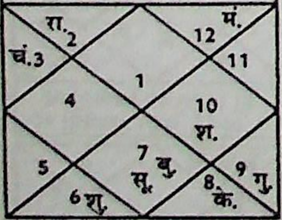

7 नवम्बर 1 घं. 48 मि. से
9 नवम्बर 8 घं. 41 मि.

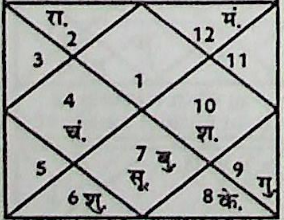

9 नवम्बर 8 घं. 42 मि. से
11 नवम्बर 11 घं. 59 मि.

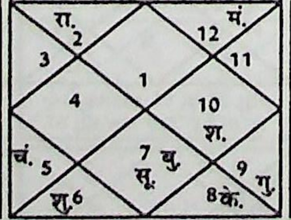

11 नवम्बर 12 घं. 00 मि. से
13 नवम्बर 12 घं. 30 मि.

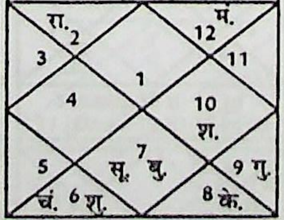

13 नवम्बर 12 घं. 31 मि. से
15 नवम्बर 11 घं. 57 मि.

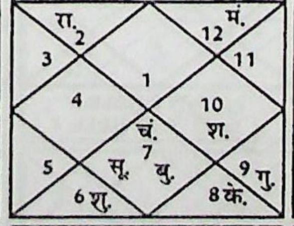

15 नवम्बर 11 घं. 58 मि. से
16 नवम्बर 6 घं. 51 मि.

16 नवम्बर 6 घं. 52 मि. से
17 नवम्बर 1 घं. 01 मि.

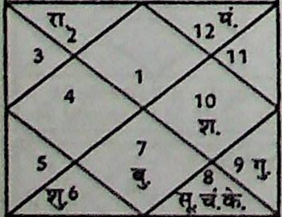

17 नवम्बर 1 घं. 02 मि. से
17 नवम्बर 12 घं. 20 मि.

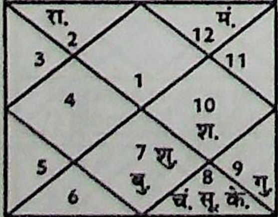

17 नवम्बर 12 घं. 21 मि. से
19 नवम्बर 15 घं. 29 मि.

19 नवम्बर 15 घं. 30 मि. से
20 नवम्बर 13 घं. 26 मि.

20 नवम्बर 13 घं. 27 मि. से
21 नवम्बर 22 घं. 24 मि.

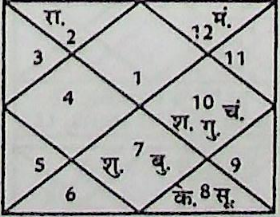

21 नवम्बर 22 घं. 25 मि. से
24 नवम्बर 8 घं. 51 मि.

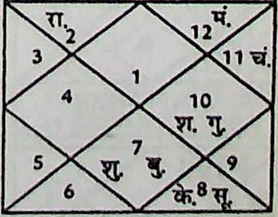

24 नवम्बर 8 घं. 52 मि. से
26 नवम्बर 21 घं. 19 मि.

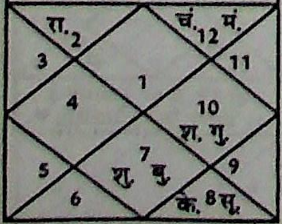

26 नवम्बर 21 घं. 20 मि. से
28 नवम्बर 7 घं. 04 मि.

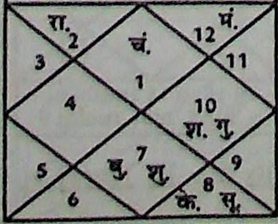

28 नवम्बर 7 घं. 05 मि. से
29 नवम्बर 10 घं. 00 मि.

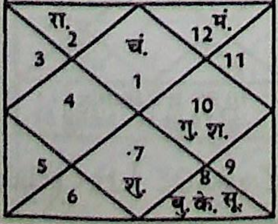

29 नवम्बर 10 घं. 01 मि. से
1 दिसम्बर 21 घं. 35 मि.

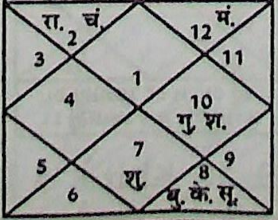

1 दिसम्बर 21 घं. 36 मि. से
4 दिसम्बर 7 घं. 21 मि.

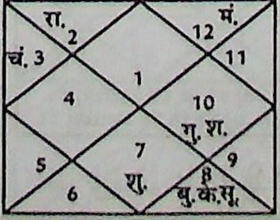

4 दिसम्बर 7 घं. 22 मि. से
6 दिसम्बर 14 घं. 45 मि.

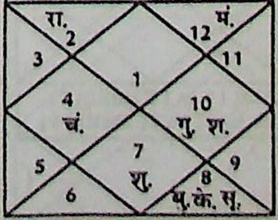

6 दिसम्बर से 14 जनवरी, सन् 2020-21 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

6 दिसम्बर 14 घं. 46 मि. से
8 दिसम्बर 19 घं. 30 मि.

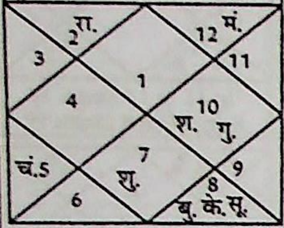

8 दिसम्बर 19 घं. 31 मि. से
10 दिसम्बर 21 घं. 51 मि.

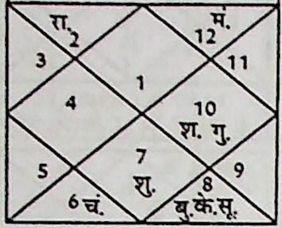

10 दिसम्बर 21 घं. 52 मि. से
11 दिसम्बर 5 घं. 15 मि.

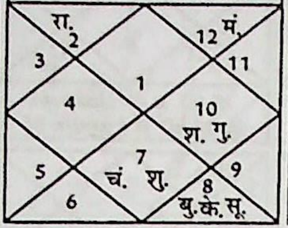

11 दिसम्बर 5 घं. 16 मि. से
12 दिसम्बर 22 घं. 40 मि.

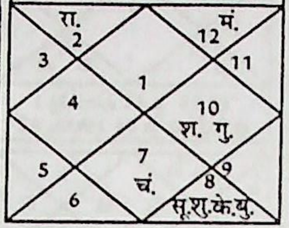

12 दिसम्बर 22 घं. 41 मि. से
14 दिसम्बर 23 घं. 24 मि.

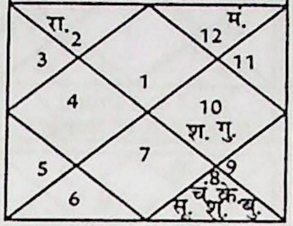

14 दिसम्बर 23 घं. 25 मि. से
15 दिसम्बर 21 घं. 31 मि.

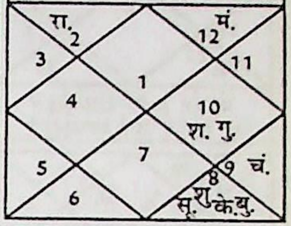

15 दिसम्बर 21 घं. 32 मि. से
17 दिसम्बर 1 घं. 46 मि.

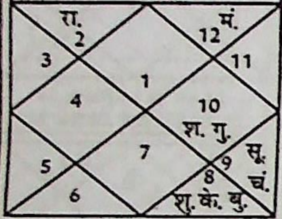

17 दिसम्बर 1 घं. 47 मि. से
17 दिसम्बर 11 घं. 36 मि.

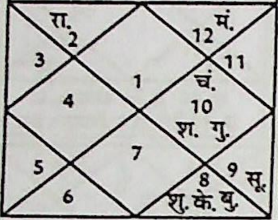

17 दिसम्बर 11 घं. 37 मि. से
19 दिसम्बर 7 घं. 15 मि.

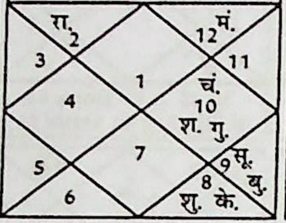

19 दिसम्बर 7 घं. 16 मि. से
21 दिसम्बर 16 घं. 28 मि.

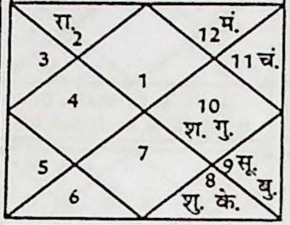

21 दिसम्बर 16 घं. 29 मि. से
24 दिसम्बर 4 घं. 31 मि.

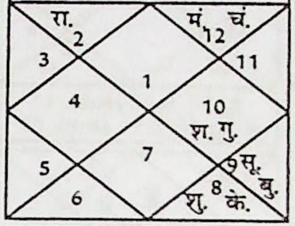

24 दिसम्बर 4 घं. 32 मि. से
24 दिसम्बर 10 घं. 20 मि.

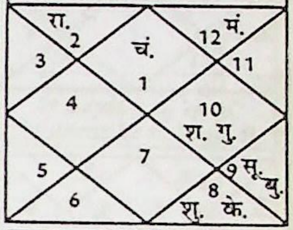

24 दिसम्बर 10 घं. 21 मि. से
26 दिसम्बर 17 घं. 17 मि.

26 दिसम्बर 17 घं. 18 मि. से
29 दिसम्बर 4 घं. 38 मि.

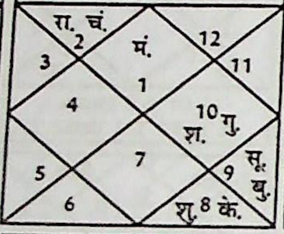

29 दिसम्बर 4 घं. 39 मि. से
31 दिसम्बर 13 घं. 37 मि.

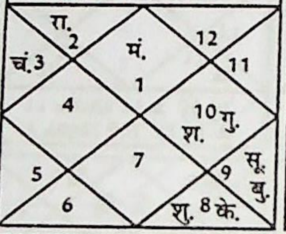

31 दिसम्बर 13 घं. 38 मि. से
2 जनवरी 20 घं. 15 मि.

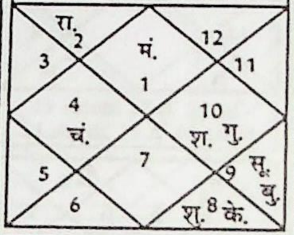

2 जनवरी 20 घं. 16 मि. से
4 जनवरी 5 घं. 02 मि.

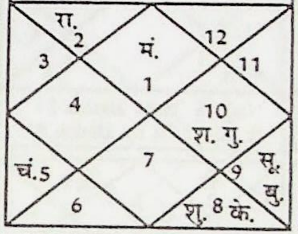

4 जनवरी 5 घं. 03 मि. से
5 जनवरी 1 घं. 03 मि.

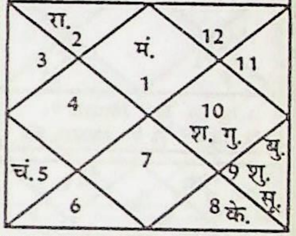

5 जनवरी 1 घं. 04 मि. से
5 जनवरी 3 घं. 55 मि.

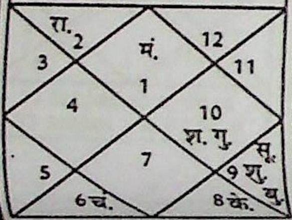

5 जनवरी 3 घं. 56 मि. से
7 जनवरी 4 घं. 28 मि.

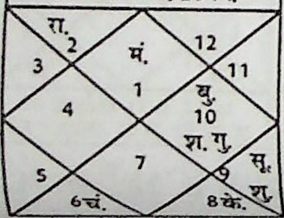

7 जनवरी 4 घं. 29 मि. से
9 जनवरी 6 घं. 56 मि.

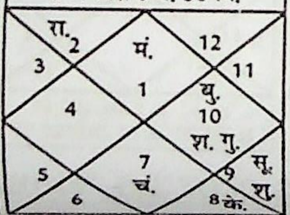

9 जनवरी 6 घं. 57 मि. से
11 जनवरी 9 घं. 08 मि.

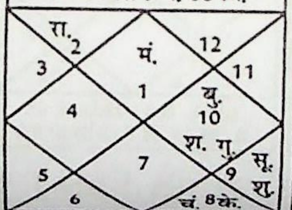

11 जनवरी 9 घं. 09 मि. से
13 जनवरी 12 घं. 04 मि.

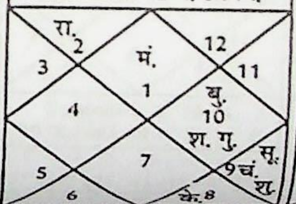

13 जनवरी 12 घं. 05 मि. से
14 जनवरी 8 घं. 14 मि.

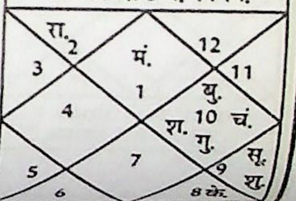

14 जनवरी से 24 फरवरी, सन् 2021 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

14 जनवरी 8 घं. 15 मि. से
15 जनवरी 17 घं. 04 मि.

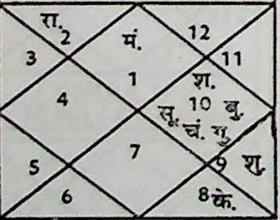

15 जनवरी 17 घं. 05 मि. से
18 जनवरी 1 घं. 14 मि.

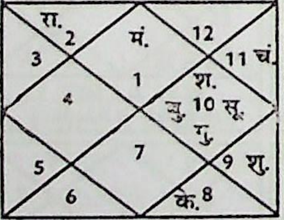

18 जनवरी 1 घं. 15 मि. से
20 जनवरी 12 घं. 35 मि.

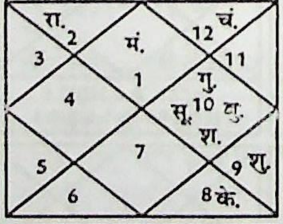

20 जनवरी 12 घं. 36 मि. से
23 जनवरी 1 घं. 23 मि.

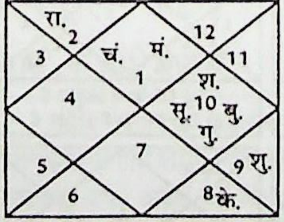

23 जनवरी 1 घं. 24 मि. से
25 जनवरी 13 घं. 01 मि.

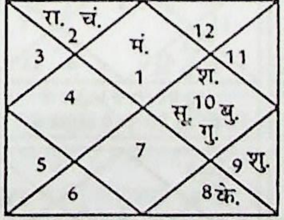

25 जनवरी 13 घं. 02 मि. से
25 जनवरी 16 घं. 54 मि.

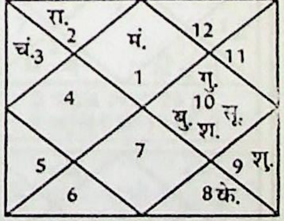

25 जनवरी 16 घं. 55 मि. से
27 जनवरी 21 घं. 42 मि.

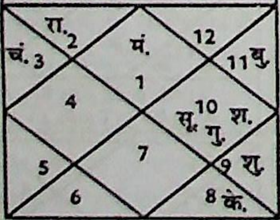

27 जनवरी 21 घं. 43 मि. से
28 जनवरी 3 घं. 28 मि.

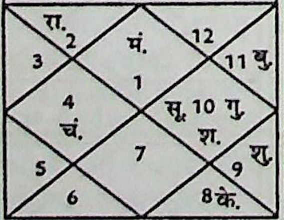

28 जनवरी 3 घं. 29 मि. से
30 जनवरी 3 घं. 20 मि.

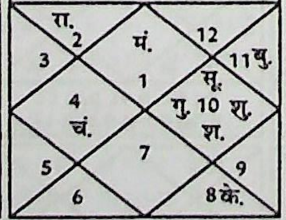

30 जनवरी 3 घं. 21 मि. से
1 फरवरी 6 घं. 57 मि.

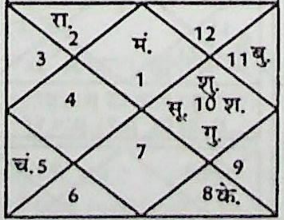

1 फरवरी 6 घं. 58 मि. से
3 फरवरी 9 घं. 48 मि.

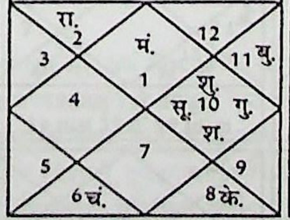

3 फरवरी 9 घं. 49 मि. से
4 फरवरी 22 घं. 39 मि.

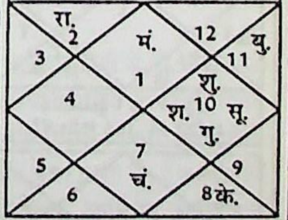

4 फरवरी 22 घं. 40 मि. से
5 फरवरी 12 घं. 45 मि.

5 फरवरी 12 घं. 46 मि. से
7 फरवरी 16 घं. 13 मि.

7 फरवरी 16 घं. 14 मि. से
9 फरवरी 20 घं. 29 मि.

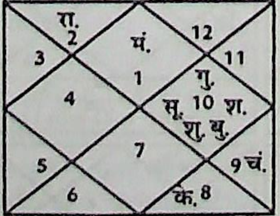

9 फरवरी 20 घं. 30 मि. से
12 फरवरी 2 घं. 09 मि.

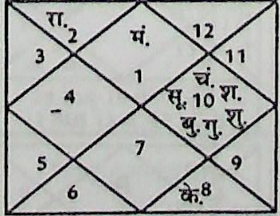

12 फरवरी 2 घं. 10 मि. से
12 फरवरी 21 घं. 11 मि.

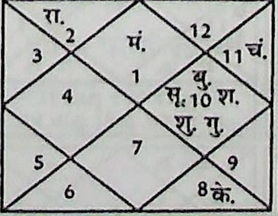

12 फरवरी 21 घं. 12 मि. से
14 फरवरी 10 घं. 08 मि.

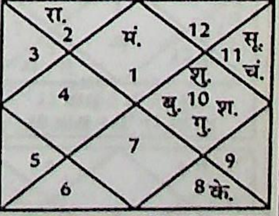

14 फरवरी 10 घं. 09 मि. से
16 फरवरी 20 घं. 55 मि.

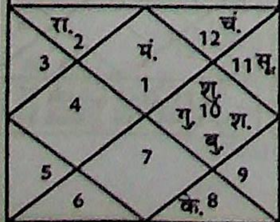

16 फरवरी 20 घं. 56 मि. से
19 फरवरी 9 घं. 39 मि.

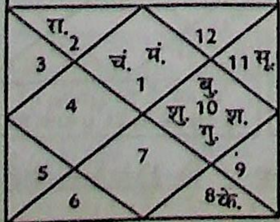

19 फरवरी 9 घं. 40 मि. से
21 फरवरी 2 घं. 21 मि.

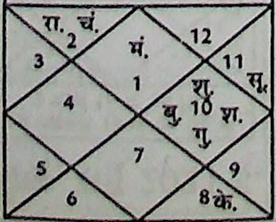

21 फरवरी 2 घं. 22 मि. से
21 फरवरी 21 घं. 54 मि.

21 फरवरी 21 घं. 55 मि. से
22 फरवरी 4 घं. 35 मि.

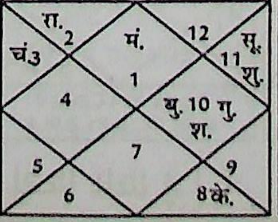

22 फरवरी 4 घं. 36 मि. से
24 फरवरी 7 घं. 09 मि.

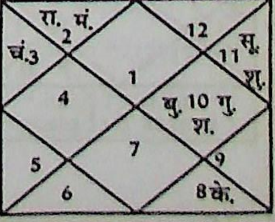

24 फरवरी से 7 अप्रैल, सन् 2021 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

24 फरवरी 7 घं. 10 मि. से
26 फरवरी 12 घं. 34 मि.

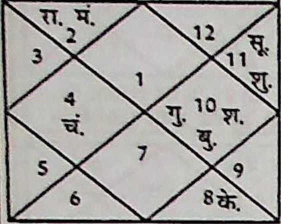

26 फरवरी 12 घं. 35 मि. से
28 फरवरी 15 घं. 05 मि.

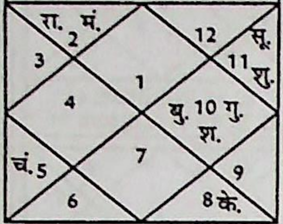

28 फरवरी 15 घं. 06 मि. से
2 मार्च 16 घं. 28 मि.

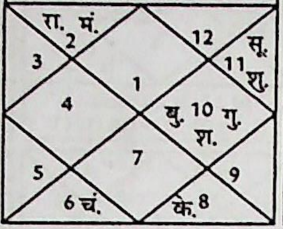

2 मार्च 16 घं. 29 मि. से
4 मार्च 18 घं. 19 मि.

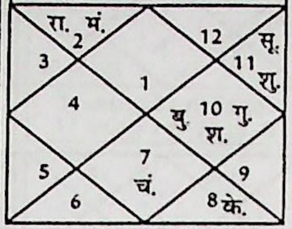

4 मार्च 18 घं. 20 मि. से
6 मार्च 21 घं. 37 मि.

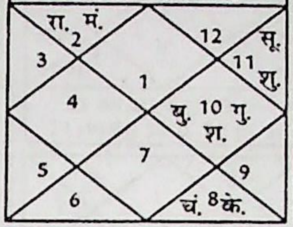

6 मार्च 21 घं. 38 मि. से
9 मार्च 2 घं. 37 मि.

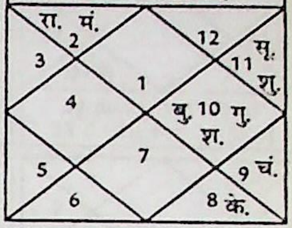

9 मार्च 2 घं. 38 मि. से
11 मार्च 9 घं. 20 मि.

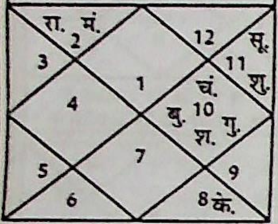

11 मार्च 9 घं. 21 मि. से
11 मार्च 12 घं. 29 मि.

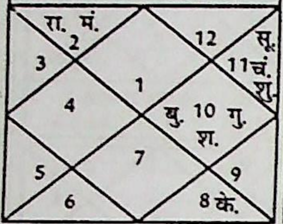

11 मार्च 12 घं. 30 मि. से
13 मार्च 17 घं. 55 मि.

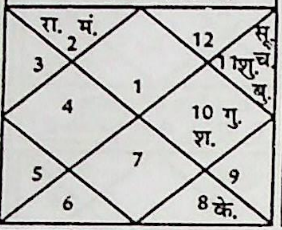

13 मार्च 17 घं. 56 मि. से
14 मार्च 18 घं. 02 मि.

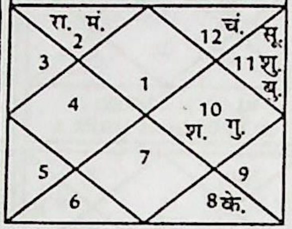

14 मार्च 18 घं. 03 मि. से
16 मार्च 4 घं. 42 मि.

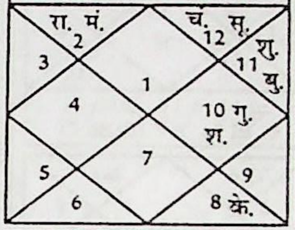

16 मार्च 4 घं. 43 मि. से
17 मार्च 2 घं. 59 मि.

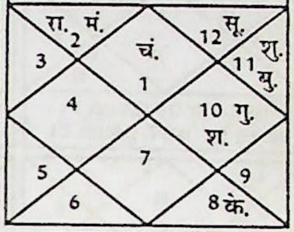

17 मार्च 3 घं. 00 मि. से
18 मार्च 17 घं. 20 मि.

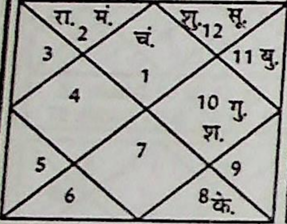

18 मार्च 17 घं. 21 मि. से
21 मार्च 6 घं. 07 मि.

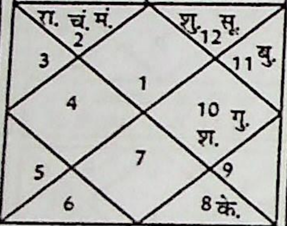

21 मार्च 6 घं. 08 मि. से
23 मार्च 16 घं. 29 मि.

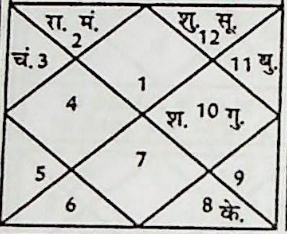

23 मार्च 16 घं. 30 मि. से
25 मार्च 22 घं. 47 मि.

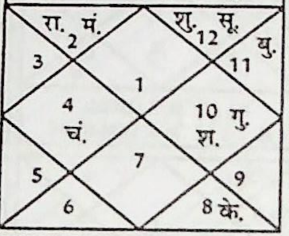

25 मार्च 22 घं. 48 मि. से
28 मार्च 1 घं. 18 मि.

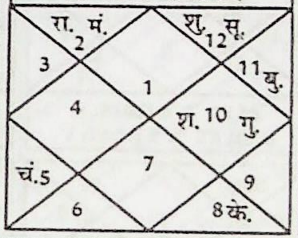

28 मार्च 1 घं. 19 मि. से
30 मार्च 1 घं. 41 मि.

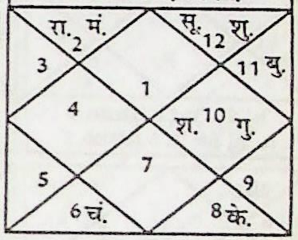

30 मार्च 1 घं. 42 मि. से
1 अप्रैल 0 घं. 40 मि.

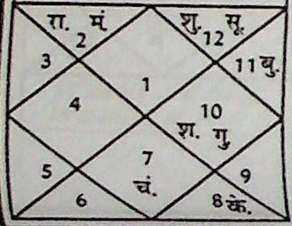

1 अप्रैल 0 घं. 41 मि. से
1 अप्रैल 1 घं. 55 मि.

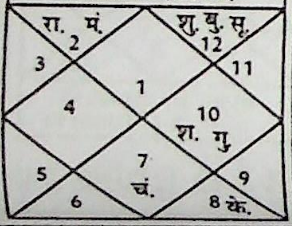

1 अप्रैल 1 घं. 56 मि. से
3 अप्रैल 3 घं. 42 मि.

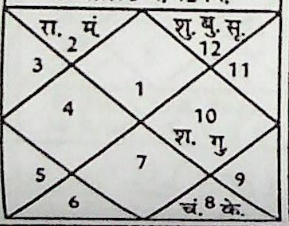

3 अप्रैल 3 घं. 43 मि. से
5 अप्रैल 8 घं. 01 मि.

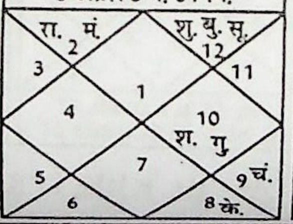

5 अप्रैल 8 घं. 02 मि. से
6 अप्रैल 0 घं. 24 मि.

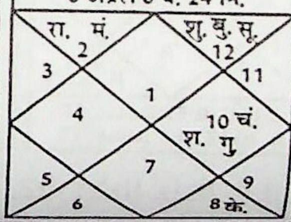

6 अप्रैल 0 घं. 25 मि. से
7 अप्रैल 14 घं. 59 मि.

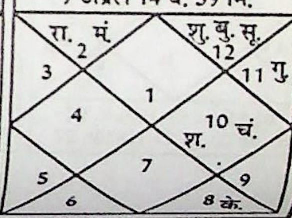

शनि की साढेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पादविचार और गुरु-राहु का गोचरफल (सं. 2077 वि.)

लेखक—इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है। शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ; कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

शनि की साढेसाती किसे कहते हैं? समझ लें—शनि की गोचर स्थिति को ध्यान में रखते हुए जब किसी व्यक्तिविशेष की जन्मराशि किंवा नामराशि से पहले, दूसरे या बारहवें स्थान में शनि हो तो गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जातक 'साढेसाती' के प्रभाव में रहता है, अर्थात् उस व्यक्ति पर साढेसाती चल रही होती है—

"द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्॥"

व्यक्तिविशेष के लिए साढेसाती का फल इस प्रकार लिखा है—

"राशौ द्वादशे मूर्ध्नि जन्महृदये पादौ द्वितीये शनिः।
नानाक्लेशकरो हि दुर्जनभयं पुत्रान् पशून् पीडयेत्॥"

"शनि की ढैय्या" किसे कहते हैं? यह भी जान लें—गोचर अनुसार किसी व्यक्तिविशेष की जन्म राशि किंवा नामराशि से जब शनिदेव चौथे या आठवें स्थान पर हों तो उस व्यक्तिविशेष पर 'शनि की ढैय्या' चल रही है, ऐसा जानें। ढैय्या का फल इस प्रकार है—

"ढैय्या तु प्रददाति वै रविसुतश्चेद्राशेश्चतुर्थाष्टमे।
व्याधिं बन्धुविरोध-विदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्॥"

ध्यान दें—शुभ एवं क्रूरग्रहविचार में गुरु-शुक्र स्थितिविशेष-विचार से शुभ एवं शनि-मंगल अशुभ फलप्रद माने गये हैं—

"तेषामतीव शुभदौ गुरु-दानवेज्यौ।
क्रूरौ दिवाकरसुत-क्षितिभौ भवेताम्॥"

—(फलितमार्त्तण्ड)

शनि के लगभग अढाई वर्ष तक एक ही राशि में संचार करने के कारण इसे 'मन्द' किंवा 'शनैश्चरति इति शनिः' की संज्ञा दी गयी है। लेकिन शनिग्रह की वक्र एवं मार्गी गति के कारण अनेकदा अपने अढाई वर्ष के काल में न्यूनाधिकता भी कर देता है। कभी-कभी शनि अपनी वक्र-मार्ग गति एवं शनि के अतिचार के कारण एक वर्ष में दो राशियों को भी स्पर्श कर लेता है, जोकि मेदिनी ज्योतिष एवं तत्तदराशि के व्यक्ति एवं देश के लिए कठिन परिस्थितियों को जन्म देता है।

अनेकदा शनि-मंगल दोनों क्रूर ग्रह वर्ष में वक्रगति से चलें या दोनों में से कोई एक वक्रगति से चलकर एकराशि-सम्बन्ध बना ले तो अधिक नेष्ट फलप्रद हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जातकविशेष को साढेसाती किंवा ढैय्या शारीरिक कष्ट, वायु-रक्त-पित्त-विकार, त्वचारोग, आर्थिक संकट, शत्रुपक्ष से मानसिक परेशानी, दुर्घटना से हानि आदि फल करते हैं। देश-विशेष के लिए राजनीतिज्ञों में विरोध, सत्तासंघर्ष, प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु, आर्थिक/ सामाजिक अव्यवस्था, असन्तोष, भूकम्प, तूफान, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति आदि आपदाएं उपस्थित करता है—"क्रूराः वक्राः महाक्रूराः"।

शनि-पादविचार

"जन्मांग-रुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दे रजतस्य पादम्।
त्रि-सप्त-दिक् ताम्रपादं वदन्ति शेषेषु राशिष्विह लौहपादम्॥"

पादफल-विचार—

"लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च काञ्चने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्॥"

शनि के राशि परिवर्तन के समय यदि चन्द्र 1, 6, 11 स्थान में हो तो स्वर्णपाद; 2, 5, 9 स्थान में हो तो रजतपाद; 3, 7, 10 स्थान में चन्द्र हो तो ताम्रपाद। यदि शनि के राशि परिवर्तन के समय चन्द्र 4, 8, 12 में हो तो लौहपाद होता है। स्वर्णपाद सभी प्रकार के दुःखों को देने वाला, रजतपाद सुख-सौभाग्यप्रद, ताम्रपाद मध्यम फलद एवं लौहपाद धन-धान्य का नाशक होता है।

मकर राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का विचार

गत संवत् 2076 वि. में 24 जनवरी, सन् 2020 ई. को उ.षा. नक्षत्र एवं मकरस्थ चन्द्र के समय 9 घं. 52 मि. पर शनिदेव मकर राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2077 वि. के अन्त तक मकर राशि में ही रहेंगे।

मकरराशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(24 जनवरी, सन् 2020 ई. से संवत् 2077 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
मिथुन	ढैय्या	लौहपाद	—	—	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री कष्ट, पुत्र किंवा पशुपीड़ा, व्यापार में हानि एवं आर्थिक संकट का सामना करना पड़े।
तुला	ढैय्या	लौहपाद	—	—	शरीर कष्ट, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र कष्ट, व्यापार में हानि, आर्थिक संकट एवं पशुपीड़ा हो।
धनु	साढेसाती	रजतपाद	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, धन-धान्य समृद्धि, सुख-सम्पदालाभ, प्रभाव क्षेत्र बढ़े। घर में मंगलकृत्य हों, राजपक्ष से सम्मान।
मकर	साढेसाती	सुवर्णपाद	हृदय	—	शत्रु प्रबल, निज-जन-विरोध, रोगभय, परिवार में क्लेश, धनहानि हो, चिन्ता आदि से कष्टप्रद समय।
कुम्भ	साढेसाती	लौहपाद	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-पशु-पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय-कष्ट, आर्थिक संकट भी रहे।

नोट—यहां दिये गये कोष्ठक में जिन राशियों का निर्देश (ज़िक्र) नहीं किया गया है, उन राशि वाले जातकों के लिए इस साल ——- मकर राशिस्थ शनि की समयावधि में साढेसाती या ढैय्या नहीं है, यह समझ लें।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का सामान्यतया अशुभ फल कब होगा—

मेष राशि वालों के बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहले अढाई वर्ष, मिथुन को अन्त के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अन्तिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारम्भ के अढाई वर्ष, मकर को पहले 5 वर्ष, उनमें भी पहले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुम्भ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषत: अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभ फल देने वाले होते हैं।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा-दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभ वेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर होगा।

शनि का बीज मन्त्र—"ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:।"

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले **"अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर-नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि-मन्त्रजापमहं करोमि"**—इस प्रकार संकल्प करके शनि-मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलि वेला में) शनि-मन्त्रजाप, स्तोत्र पाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर दान करें और सायंकाल पीपल के नीचे दीपक जलायें।

मन्त्रजाप की विधि—अनुष्ठान शनिवार को करें। सूर्यास्त-समय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर, पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अंजलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली, धूप, लाल चन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर **"ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:"**—इस मन्त्र का कुल 23 हज़ार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी, को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटा) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें—

"ॐ नम: कृष्णाय नीलाय शिति-कण्ठनिभाय च।
नम: कालाग्नि-रूपाय कृतान्ताय च ते नम:॥"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग" से नमस्कार करके घर को जायें। किसी अच्छे विद्वान् दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) 'नीली' या 'नीलम' नग धारण करना भी ठीक रहेगा।

'नीलम' रत्न का काम देने वाली वनौषधि

शनिदोष-निवारण के लिए अनेक व्यक्ति 'नीलम' धारण करते हैं, परन्तु सबको अनुकूल बैठने वाला शुद्ध 'नीलम' रत्न बहुत कम मिलता है। उसकी भले-बुरे की परीक्षा भी कठिन है और यह रत्न बहुमूल्य (महंगा) होता है। अत: सर्वसाधारण मनुष्य खरीद नहीं सकते। ऐसे व्यक्ति नीलम के अभाव में 'बिच्छू बूटी' की जड़ का प्रयोग करें। बिच्छू बूटी हिमाचल प्रदेश में बहुत होती है। कोमल कांटेदार पत्तों को स्पर्श करने से वृश्चिकदंश जैसी पीड़ा होने लगती है। अत: इसका नाम बिच्छू बूटी है। शुक्लपक्ष शनिवार को प्रात: (यदि पुष्य नक्षत्र भी मिल जाये तो अत्युत्तम) बिच्छू बूटी की जड़ उखाड़कर ले आयें। पहले दिन शुक्रवार की सन्ध्या को निमन्त्रण दे आयें। इस जड़ के टुकड़े को चांदी के ताबीज में भरकर शनिमन्त्र से धारण करें। यह हर व्यक्ति का शनिदोष निवारण करती है।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ वैदिक मन्त्र

"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्त्रवन्तु न:। शं शनये नम: ॐ॥"

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ शनैश्चर-स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच—

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥"

इस स्तोत्र का पाठ शनिवार को पीपल के नीचे बैठकर एवं अन्य दिनों में भगवान् शंकर से प्रार्थनापूर्वक शिवमन्दिर या घर में भी बैठकर प्रात: करने से साढ़ेसाती व ढैय्या की दु:खद पीड़ा नहीं होती है, अनुभूत है।

शनिजन्य नेष्टफल-परिहारार्थ तुलादान करायें—

विधि—शनि ग्रह से पीड़ित व्यक्ति अपने जन्मदिन पर या शनैश्चरी अमावस,शनिवार को दिन में लगभग 11/12 बजे गेहूं, काले चने, चावल, बाजरा, कालीदाल (माह), जौ, मूंग आदि (सात) अनाजों से अपने वजन के बराबर तौल कर दान (तुलादान) करें। साथ ही तेल में मुंह देखकर दक्षिणासहित शनि का दान लेने वाले (ढौंसी) को दे दें। बाद में तुलादान के समय पहने हुए कपड़े भी स्नान करके दान कर दें।

नोट—तुलादान से पहले यदि कोई बहुमूल्य आभूषण आदि शरीर पर धारण किया हुआ हो, वह भी पहले ही उतार दें, अन्यथा वह भी दान करना होगा।

संवत् 2077 वि. में गुरु ग्रह का गोचर फल

धनु राशि में गुरु का प्रवेश

सं. 2076 वि. में कार्तिक शुक्ल अष्टमी (तत्कालिकी नवमी) तदनुसार 5 नवम्बर, सन् 2019 ई. को धनिष्ठा नक्षत्र, गण्ड योग एवं मकरस्थ चन्द्र के समय 5 घं. 17 मि. (I.S.T.) पर गुरुदेव पुन: धनु राशि में प्रविष्ट होंगे। संवत् 2077 वि. में 30 मार्च, सन् 2020 ई. तक गुरुदेव धनु राशि में ही रहेंगे।

धनु:राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल (5 नवं., 2019 ई. से संवत् 2077 वि. में 30 मार्च, सन् 2020 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	शत्रुभय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि

धनु:राशिस्थ गुरु का सामान्य फल—

"धनु राशिस्थिते जीवे गोधूमादि महर्घता।
वर्षाकाले भवेत्तत्र समर्घं च तिलं गुडम्॥"

मकर राशि में गुरु का प्रवेश

सं. 2077 वि. में चैत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी, चन्द्रवार, तदनुसार 30 मार्च, सन् 2020 ई. को रोहिणी नक्षत्र, आयुष्मान योग एवं वृषस्थ चन्द्र के समय 3 घं. 47 मि. (I.S.T.) पर गुरुदेव मकर राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2077 वि. में 30 जून, सन् 2020 ई. तक मकर राशि में ही विचरण करेंगे।

मकर राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(30 मार्च, सन् 2020 ई. से 30 जून, सन् 2020 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनहानि	सुख	रोग	सम्मान	धनहानि	धनलाभ	धनलाभ होकर हानि	प्रगति	आधि-व्याधि	भय	धनलाभ	शरीर कष्ट

मकर राशिस्थ गुरु का विश्व पर प्रभाव

"मकरे च गुरौ चैव दुर्भिक्षं घोर–दारुणम्।
विग्रहं यान्ति राजानः त्रिमासान्ते शुभं भवेत्॥"

अर्थात्—राजनीतिज्ञों में विग्रह (वैमनस्य), कहीं घोर दुर्भिक्ष पड़े। तीन मास बाद सुभिक्ष रहे।

वक्री होकर पुनः गुरुदेव का धनु:राशि में प्रवेश

सं. 2077 वि. में आषाढ़ शुक्ल पक्ष, दशमी मंगलवार, तदनुसार 30 जून, सन् 2020 ई. को चित्रा नक्षत्र, शिव योग एवं तुलास्थ चन्द्र के समय 5 घं. 27 मि. (I.S.T.) पर गुरुदेव वक्रगति से पुनः धनु राशि में प्रविष्ट होकर 20 नवम्बर, सन् 2020 ई. तक धनु राशि में ही रहेंगे।

धनु : राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(30 जून, सन् 2020 ई. से 20 नवम्बर, सन् 2020 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	शत्रुभय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि

मार्गी गति से गुरुदेव का पुनः मकर राशि में प्रवेश

सं. 2077 वि. में कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी, शुक्रवार, तदनुसार 20 नवम्बर, सन् 2020 ई. को 13 घं. 24 मि. (I.S.T.) पर गुरुदेव पुनः मकर राशि में दाखिल होंगे। संवत् 2077 वि. में 6 अप्रैल, 2021 ई. तक मकर राशि में ही रहेंगे।

मकरस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(20 नवं, सन् 2020 ई. से 6 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनहानि	सुख	रोग	सम्मान	धननाश	धनलाभ	धनहानि	प्रगति	आधि-व्याधि	भय	धनलाभ	शरीरकष्ट

गुरुदेव का कुम्भ राशि में प्रवेश

वि. सं. 2077 में चैत्र कृष्ण नवमी मंगलवार, तदनुसार 6 अप्रैल, 2021 ई. को 0 घं. 25 मि. पर उ.षा. नक्षत्र, सिद्ध योग एवं मकरस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2077 वि. के अन्त तक कुम्भ राशि में ही रहेंगे।

कुम्भ राशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(6 अप्रैल, सन् 2021 ई. से संवत् 2077 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि

गुरुजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ उपाय

गुरुग्रह जन्मांग में या गोचर में नेष्टफलप्रद हो तो—गुरुवार को (विशेषत: गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीली वस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़, शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरु ग्रह के बीजमन्त्र का 19 हज़ार जाप करें। गुरु का जपनीय बीज मन्त्र यह है—"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।" केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला 'पुखराज' 5/7 रत्ती पुरुष दायें हाथ की एवं स्त्रियां बायें हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करें।

संवत् 2077 वि. में गोचरस्थ राहु का शुभाशुभ फल

राहु का मिथुन राशि में प्रवेश

सं. 2075 वि. में फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार, तदनुसार 7 मार्च, सन् 2019 ई. को 9 घं. 36 मि. पर पू.भा. नक्षत्र, साध्य योग एवं कुम्भस्थ चन्द्र के समय राहु मिथुन राशि में प्रविष्ट

सं. 2075 वि. में फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार, तदनुसार 7 मार्च, सन् 2019 ई. को

होगा और सं. 2077 वि. में 23 सितं., सन् 2020 ई. तक मिथुन में ही रहेगा।

मिथुन राशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(7 मार्च, सन् 2019 ई. से 23 सितं., सन् 2020 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धननाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान

सं. 2077 वि. में वृषस्थ राहु का शुभाशुभ फल

सं. 2077 वि. में आश्विन शुक्ल पक्ष सप्तमी बुधवार, तदनुसार 23 सितम्बर, सन् 2020 ई. को ज्येष्ठा नक्षत्र, आयुष्मान योग, वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय राहु 12 घं. 16 मि. (I.S.T.) पर वृष राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2077 वि. के अन्त तक वृष राशि में ही रहेगा।

वृष राशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(23 सितं. से संवत् 2077 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	विनाश	भय	कलह	सौभाग्य	अपमान	धनक्षय	महासुख	राजभय	धननाश	सुख	कलह	धनलाभ

राहु जन्मांग या गोचर में नेष्ट फलप्रद हो तो—कम्बल, तिल-तैल, नारियल, लौंग एवं काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणासहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु के बीजमन्त्र (ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवे नम:) का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहुशान्त्यर्थ 'गोमेद' नग 5/7 रत्ती भी धारण कर लेना हितकर रहेगा।

— — —

(पृष्ठ 32 का शेष)

7 अप्रैल से 13 अप्रैल, सन् 2021 ई.

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

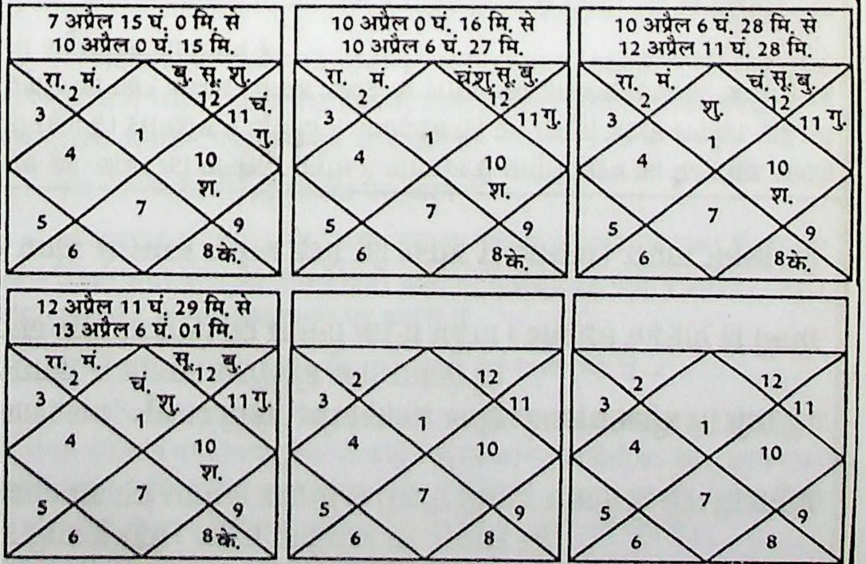

— — — — —

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2077 वि.)

(ग्रह-परिषद् एवं गोचर-ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं अन्य देशों की आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

- ★ 'आनन्द' संवत्सर होने से राजनीतिज्ञों एवं प्रजा में आनन्द-मंगल रहे। राजनीतिज्ञों की देशहितार्थ चहुंमुखी प्रगति से सर्वत्र सुख-शान्ति रहे। अशान्त क्षेत्रों पर सैन्यबल प्रयोग से सफलता मिलेगी।
- ★ बालग्रह बुध के संवत्सरेश होने से कुछ साम्प्रदायिक विषाक्त लोगों से सावधान रहना जरूरी है। कुछ आपराधिक तत्त्व जन-जीवन को भ्रमित करेंगे। परिणामस्वरूप कहीं रक्तपातभय रहे।
- ★ अन्तरिक्ष-विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति भारत को मूर्धन्य देशों की कोटि में स्थापित करेगी।
- ★ जलवायुविचार से ग्लोबल वार्मिंग से विश्व के यूरोपीय देश प्रभावित होंगे।
- ★ जगत् लग्नगत ग्रहस्थिति के अनुसार बलूचिस्तान, पाकिस्तान, ईरान, चीन, अमेरिका आदि में वातावरण अशान्त बनेगा। यमन, सीरिया, अफगानिस्तान आदि में उग्रवादजन्य भीषण अशान्ति एवं राजनैतिक विप्लव रहेंगे। भारत प्रगतिपथ पर अग्रसर रहे।
- ★ इस संवत् में 3 मई से अगस्त 2020 ई. तक की ग्रहस्थिति देश में साम्प्रदायिक एवं धार्मिक उपद्रवों से स्थिति बिगाड़ सकती है, देश के प्रमुख नेतृत्व के लिए परीक्षा की घड़ी है।
- ★ भारत की पश्चिमोत्तर-सीमाओं एवं द.भूभाग में भयंकर आपदा, जलप्रलय, भूकम्प किंवा अग्निकाण्ड आदि से जनधनहानि के योग हैं।
- ★ यूरोपीय देशों की ग्रहस्थिति सशक्त देशों की अस्मिता को भेदकर भयंकर युद्धात्मक ग्रहस्थिति बना सकती है।
- ★ मुस्लिम देशों की ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है कि—पाक में प्रधान नेता को भारी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। अघटित घटनाएं हों किंवा प्रधान नेता को अपदस्थ होना पड़े। सीमाप्रान्त अशान्त रहे।
- ★ औद्योगिक क्षेत्र, अन्तरिक्ष विज्ञान, सुशासन एवं सामरिक क्षेत्र में प्रगति से भारत मूर्धन्य देशों की कोटि में आयेगा। प्रधान नेतृत्व की कार्यशैली प्रशंसनीय रहेगी।

"विमृश्य ग्रह-संस्थितिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम्।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्य नितरामालोच्य सत्संहिताः।
राष्ट्रे राज-समाज-धर्मविषये ह्युद्भाविनी या स्थितिः।
सा शम्भोः कृपया यथामति मया प्रागेव निर्णीयते॥"

"मनुष्य जीवन अनन्त आकाशव्यापी सौरजगत् की एक क्षुद्र प्रतिकृति है"—यह तथ्य भारतीय ही नहीं, पाश्चात्त्य विद्वान् भी स्वीकार करते हैं। मानव-जीवन एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सौर जगत् के साथ एकत्व-सम्बन्ध होने से सौर जगत् के आकर्षण-विकर्षण, सिद्धान्त के अनुसार समय-समय पर मानव-जीवन एवं विश्वजनीन परिवर्तन स्वाभाविक एवं युक्तियुक्त हैं। ग्रहों की 'आकर्षण-विकर्षण' रूपी दो अदृश्य शक्तियों द्वारा प्रकृति एवं जन-जीवन की मानसिक प्रवृत्ति में परिवर्तन से सम्पूर्ण विश्व का घटनाचक्र चलता ही रहता है। इस खोज में ऋषियों ने अथाह चिन्तन एवं सम्पूर्ण जीवन लगाकर ग्रहों एवं प्रकृति का गहन अध्ययन करके 'ज्योतिष शास्त्र' का आविष्कार किया, जोकि आज भी अनुसन्धान का विषय है।

"संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाये तो विराट् ब्रह्माण्ड एकक्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे"—यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभु के एक

एवं युक्तियुक्त हैं। ग्रहों की 'आकर्षण-विकर्षण' रूपी दो अदृश्य शक्तियों द्वारा प्रकृति

प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे'—यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभु के एक

निश्चित विधान के अनुसार ही चल रहा है। इस विधान का साक्षात्कृत् धर्मा ऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणाम ही 'ज्योतिष' है।

यह वेदांगरूप ज्योतिष गुरु-शिष्यपरम्परा आज तक जीवित है। इसका प्रमाण वेदांग 'निरुक्त' में स्पष्ट है—

"साक्षात्कृतधर्माणो वै ऋषयो बभूवुः। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रददुः। उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं वेदांगानि च॥"

—*(यास्काचार्य)*

प्रत्येक ग्रह जब अपनी गति-स्थिति में अन्तर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, **"श्रीमार्त्तण्ड पंचांग"** के माध्यम से अपने प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित कर देते हैं और यह इस प्रकाशन का 93वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2077 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 92 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 93वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको ! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक, अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारण वर्ग के व्यक्ति से लेकर भारतरत्न श्रीजवाहरलाल नेहरु, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की विशेष अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल, आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों तथा ग्रहण आदि पंचांगगणित की सूक्ष्मता, शुद्धि एवं अन्य विशेष ज्योतिषीय शोध-निबन्धों के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

पाठको! 14 जून, 2016 ई. से पहले लिखी गयी भविष्यवाणियों की चर्चा हम गत वर्षों के पंचांगों में कर चुके हैं। अब उसके बाद सत्यसिद्ध भविष्यवाणियों की चर्चा हम आगामी संवत् 2077 वि. के पंचांग में कर देना युक्तिसंगत समझते हैं—

भविष्यवाणी—7 दिसम्बर, सन् 2016 ई. को श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2073 वि. में की गयी भविष्यवाणी पृ. 45, कॉलम 2 पर इन शब्दों में की गयी थी—

"1 नवम्बर से लगभग 11 दिसम्बर, सन् 2016 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि विश्व में भयंकर प्राकृतिक प्रकोप, उग्रवाद किंवा हिंसा आदि से जनधनहानि एवं दुःखद अघटित घटनाओं को जन्म देगी।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता पर ध्यान दें—

19 नवम्बर सन् 2016 के **'अमर उजाला'** के मुख्य पृष्ठ पर स्पष्ट लिखा था कि—**"(भारतीय) सेना पर सबसे बड़ा आतंकी हमला, 17 जवान शहीद, (उड़ी) जम्मू-काश्मीर में सैन्य मुख्यालय पर हमला।"**

भविष्यवाणी—सं. 2074 वि. की जगत् लग्नकुण्डली में—

जलराशि के स्वामी चन्द्र का सूर्य के साथ समसप्तक **'जलशोषक'** योग बनाता है, मंगल की शनि पर अष्टम दृष्टि भी कहीं अकाल का संकेत देती है। अतः शासन को देश में **'जल-सुविधा'** की तरफ विशेष ध्यान देना होगा, अन्यथा भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं जल-वितरणसमस्या आपसी कलह का कारण बनने का योग है।

—*(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2074 वि., पृ. 52, कॉलम 1)*

सत्यता--कावेरी जल से भड़की आग तामिलनाडु और कर्णाटक में उग्र हिंसा (13 सितम्बर, सन् 2016 ई.)-(अमर उजाला)

भविष्यवाणी—11 दिसम्बर, 2016 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि भी विश्व में भयंकर प्राकृतिक प्रकोप, उग्रवाद-हिंसा आदि से जनधनहानि एवं दुःखद अघटित घटनाओं को जन्म देगी।

—*(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2073 वि., पृ. 45, कॉलम 2)*

सत्यता—11 दिसम्बर, सन् 2016 ई. को नाइजीरिया में गिरजाघर की छत गिर गयी, 160 व्यक्ति मरे।

भविष्यवाणी—"श्री नरेन्द्र मोदी (P.M.) महोदय की नीति विदेशों से सकारात्मक मधुर सम्बन्ध बनाने में सफल रहेगी। लेकिन इस वर्ष श्री मोदी एवं अन्य प्रतिष्ठित

व्यक्तियों की सुरक्षा-व्यवस्था में ढील नहीं होनी चाहिए, क्योंकि अघटित घटना से कष्टभय का योग है। जगत्-लगनकुण्डली में भारत की प्रभावराशि मकर पर गुरु की दृष्टि है। सूर्य-शुक्र उच्चस्थ हैं, अत: भारत की प्रतिष्ठा एवं गौरव उत्तरोत्तर बढ़ेगा।"

—(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2074 वि., पृ. 52, कॉलम 1, अन्तिम पंक्तिया)

सत्यता—श्री नरेन्द्र मोदी (P.M. भारत) महाभाग ने अपनी कूटनीति से अमेरिका- इण्डोनेशिया एवं रूस आदि देशों के साथ सुदृढ़ मैत्री सम्बन्ध बनाकर एवं राष्ट्र को सशक्त बनाकर 'भारत को महाशक्ति' के रूप में स्थापित कर दिया है।

भविष्यवाणी—"13 अक्तूबर से आगे शुक्र-शनि एवं सूर्य-शनि की पोजीशन अनुसार 15 दिसम्बर तक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का योग है।"

—(श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, सं. 2073 वि., पृ. 49, कॉलम 2)

सत्यता—1. तमिलनाडु की मुख्यमन्त्री सुश्री जयललिता जी का 5 दिसम्बर को निधन हुआ।

2. दिनांक 27-11-2016 ई. को क्यूबा के राष्ट्रपति कास्त्रो का निधन हुआ।

भविष्यवाणी—सं. 2073 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में पृष्ठ 50, कॉलम 1 पर 19वीं पंक्ति से आगे पढ़ें—"श्री मोदी की दूरदर्शिता से भारत की अर्थव्यवस्था को विशेष गति मिलेगी। राजनीति की गतिमत्ता के भी दूरगामी परिणाम होंगे। यह बात विपक्षीदलों को स्वीकार्य नहीं कि—एकवर्ष का समय सरकार के काम-काज का आकलन का अन्तिम मापदण्ड नहीं है। फिर भी भारत सरकार की रीति-नीति से सरकार के वायदों का बोध तो आगे होने का संकेत ग्रहस्थिति देती है।"

पृष्ठ 50, कॉलम 2 पर 19वीं पंक्ति से आगे की भविष्यवाणी—"15 नवम्बर से सूर्य-शनि (परस्पर शत्रुग्रह) दिसम्बर तक एकराशि में चलेंगे। यह ग्रहस्थिति शासनतन्त्र के सामने सिद्धान्तवादिता, आदर्शवाद वाली व्यावहारिक मजबूरियां हाजिर करेंगी। इस दौरान भाजपा एवं विपक्ष के बीच राजनीतिक संघर्ष शुरु होगा एवं R.S.S. पर भी विपक्ष के आक्षेप आयेंगे।"

इन पंक्तियों की सत्यता—8 नवम्बर, 2016 ई. को रात्रि में नोटबन्दी की घटना से विपक्ष ने लगभग दिसम्बर तक लोकसभा को संचालित नहीं होने दिया।

चीन द्वारा तिब्बत-सिक्किम के सीमाप्रान्तों पर तनाव की भविष्यवाणी—श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2074 वि. के पृष्ठ 58, कॉलम 1 पर निम्नांकित रूप में पढ़ें—

"संवत् 2074 वि. की ग्रहस्थिति विश्व में घटित प्रमुख बातों पर भी ध्यान आकर्षित करती है। इस वर्ष अप्रैल से जून 2017 ई. तक, 27 अगस्त से 29 नवम्बर, 2017 ई. तक एवं फरवरी से मार्च, 2018 ई. तक की ग्रहस्थिति उत्तरी कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, चीन, पाकिस्तान आदि देश, अमेरिका, ब्रिटेन एवं भारत आदि देशों के लिए आगामी समय में हालात भयावह रहेंगे। जिससे विश्व के शान्तिप्रिय देश विनाश एवं अनिश्चय की ओर बढ़ेंगे। संयुक्तराष्ट्र के सामने भी यह एक समस्या बन सकती है। ऊपर निर्दिष्ट समय देश एवं विश्व के लिए अघटित घटनाओं वाले रहेंगे।"

स्पष्ट है कि—ब्रिटेन, फ्रांस आदि में उग्रवादी हमले से जनधनहानि हुई। भारत में भी छत्तीसगढ़, कश्मीर एवं अन्यत्र कई स्थानों पर उग्रवादियों द्वारा जनधनहानि से इस भविष्यवाणी की सत्यता स्पष्ट सिद्ध हुई।

बिहार में महागठबन्धन/समाजवादी पार्टी के बारे में की गयी भविष्यवाणी—सं. 2074 वि. के पंचांग में पृ. 60, कॉलम 1 पर इस प्रकार की गयी थी—

समाजवादी पाटी—कुम्भ राशि का स्वामी शनि सारे संवत् में क्रूर ग्रह से किसी न किसी दृष्टि से मेल कर रहा है, अत: भरपूर प्रयत्न के बाद भी इस पार्टी को राजनैतिक दृष्टि से प्रगतिप्रद सफलता प्राप्त करना कठिन प्रतीत होता है।

बिहार में महागठबन्धन—के बारे में इतना ही लिख सकेंगे कि—ग्रहस्थिति पार्टी में कुछ वैमत्य पैदा करेगी, लेकिन सुधारात्मक योग स्थिति को नियन्त्रित करेंगे।

आप इस घटनाक्रम को देख चुके हैं, अत: इसकी सत्यता स्पष्ट सिद्ध है।

'जम्मू-कश्मीर' के बारे में की गयी भविष्यवाणी भी अक्षरश: सत्यापित हुई, जोकि 2074 वि. के पंचांग, पृष्ठ 62, कॉलम 2 में 'जम्मू-कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ें—"इस संवत् की ग्रहस्थिति में सभी आतंकी संगठन विशेषत: I.S.I. कश्मीर पर बड़ा हमला करेगा। कश्मीर के सीमाक्षेत्र अशान्त रहेंगे एवं यहां की शासन-सत्ता इस प्रान्त में शान्ति स्थापित करने में असमर्थ रहेगी। उग्रवाद के जघन्य अपराध व पाक अधिकृत कश्मीर से आतंक की घुसपैठ जनधनहानि का कारण बनेगी। इस संवत् के उत्तरार्ध में पाक का सीमातिक्रमण संघर्ष का कारण भी बन सकता है।"

घटना से विपक्ष ने लगभग दिसम्बर तक लोकसभा को संचालित नहीं होने दिया। | इस संवत् के उत्तरार्ध में पाक का सीमातिक्रमण संघर्ष का कारण भी बन सकता है।"

सं. 2074 वि. में पृष्ठ 52, कॉलम 1 पर स्टैंजा 2 की अन्तिम पंक्तियों में आश्चर्यजनक भविष्यवाणी पढ़ें—"संवत् 2074 वि. के प्रारम्भ से जुलाई, 2017 तक की ग्रहस्थिति से भारत के कुछ प्रान्तों में I.S.I. द्वारा भारी जनधनहानि का संकेत मिलता है। इस उल्लिखित समयावधि में भारतीय सीमाप्रान्तों पर पाक-चीन-नेपाल-सीमावर्ती देशों की गतिविधियों एवं उग्रवादियों (I.S.I.) आदि से भी सावधान रहना आवश्यक है।"

आज चीन द्वारा सिक्किम एवं पाक द्वारा कश्मीर के सीमाप्रान्तों पर युद्धमय वातावरण बना दिया गया है—यह सार्वजनिक चर्चा का विषय है।

संवत् 2075 वि. एवं संवत् 2076 वि. में सफलसिद्ध कुछ भविष्यवाणियां

1. संवत् 2075 वि. के पंचांग पृष्ठ 50, कॉलम 1 पर स्पष्ट घोषणा की गयी थी कि—

"7 मार्च, सन् 2018 ई. को मंगल धनुराशि में आकर शनि के साथ 'एकराशि-सम्बन्ध' बनायेगा। यह स्थिति 30 अप्रैल, 2018 ई. तक प्रभावी रहेगी।

यह स्थिति विश्व में युद्धपरक वातावरण एवं अघटित घटनाओं, प्राकृतिक उत्पात, यान-दुर्घटनाओं एवं प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है। प्रकृति के दोहन से उपजित एवं अन्य पर्यावरण-सम्बन्धित समस्याएं विश्व में संकटमय स्थिति पर विचार करने के लिए विवश करेंगी।"

इस भविष्यवाणी के अनुसार 9 मार्च, सन् 2018 ई. को अमेरिका के 10 राज्यों में बर्फीला तूफान आया। 6 करोड़ लोग न्यूजर्सी में प्रभावित हुए और 2600 उड़ानें रद्द करनी पड़ीं। (पंजाब केसरी, 9 मार्च, 2018 ई.)

2. भारत के अन्तरिक्ष विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति की भविष्यवाणी—सं. 2075 वि. के पंचांग, पृष्ठ 52, कॉलम 1/2 पर स्पष्ट भविष्यवाणी की गयी थी कि—

"गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत इस वर्ष किंवा आगामी वर्षों में अन्तरिक्ष विज्ञान (Space-Science) में आश्चर्यजनक प्रगति करेगा। जिसमें अन्य कुछ देश भी सहायकरूप में मददगार रहेंगे।"

इस भविष्यवाणी की सत्यता को समाचारपत्रों ने इस प्रकार प्रसारित किया—

ISRO continues to make India proud

It was yet another year of jubilation for Indian Space Research Organisation (ISRO) for it achieved a historic feat of having launched a massive 104 satellites using its Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV).

इसके अतिरिक्त भारत की अन्तरिक्ष विज्ञान में प्रगति से चीन एवं पाक भी प्रभावित हुए हैं।

3. 12 अप्रैल, सन् 2018 ई. को हरिकोटा में I.R.N.S.S.-1 आई. का परीक्षण सफल, सदमे में चीन-पाक (पंजाब केसरी 13/4/18)

Space-Science की इस सफलता की भविष्यवाणी श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में 4 जून, 2017 को की गयी थी, जोकि आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध हुई।

4. पाक में शरीफ-सरकार का पतन एवं सत्ता-संघर्ष के लिए सेना के दखल की भविष्यवाणी—पंचांग पृष्ठ 51, कॉलम 1 पर पढ़ें—

"पाक की राशि कन्या में नीचाकांक्षी सूर्य की स्थिति एवं बुध का अतिचारी शुक्र के साथ मेल खराब स्थिति का संकेत देता है। प्रधान नेतृत्व पर सेना हावी रहेगी एवं सत्ता-संघर्ष से परिवर्तन के योग बनते हैं।"

5. क्षेत्रीय एवं प्रतिष्ठित राजनैतिक पार्टियों के एकीकरण की नीति एवं सत्तारूढ़ दल को अपदस्थ करने की साजिश की भविष्यवाणी—पृष्ठ 53, कॉलम 1 पर पढ़ें—

"राजनीतिक-क्षेत्रीय पार्टियों में सत्ता हथियाने की लालसा ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति को बढ़ा देगी। कुछ प्रधान पार्टियां आपसी तालमेल बनाकर आगे सत्ता के गलियारों में हलचल पैदा करेंगी।"

6. इस्लामिक आतंकवादग्रस्त देशों के बारे में की गयी भविष्यवाणी—पढ़ें पृष्ठ 51, कॉलम 1 पर—

"इस्लामिक आतंकवाद से पाक, अफगानिस्तान, इराक, लीबिया, तुर्की, सीरिया आदि में हालात बदतर होते जायेंगे। साथ ही चीन, उत्तरी कोरिया आदि कुछ प्रधान देश भी इस बुरी स्थिति के लिए कुप्रेरणा के स्रोत सिद्ध होंगे।"

यह सर्वविदित है कि—I.S.I. को समाप्त करने के लिए सीरिया पर ता. 14-4-18 को 100 से अधिक मिसाइल का प्रहार किया था, जिससे रूस आदि कुछ देशों द्वारा अघोषित युद्ध की स्थिति बन गयी थी।

7. "कश्मीर-समस्या एवं सीमा-प्रान्तों का हल, सहज सम्भव नहीं"—एतद्विषयक भविष्यवाणी पढ़ें, पृष्ठ 58, कॉलम 1 पर—

"संवत् 2075 वि. की गोचर ग्रहस्थिति कश्मीर की राशि तुला पर मंगलयुत **'शनि की दृष्टि'** होने से कश्मीर-समस्या का हल सहज सम्भव नहीं। इस जलते सीमाप्रान्त पर पाक की कुदृष्टि इस संवत् में भयावह स्थिति को जन्म दे सकती है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—तिब्बत, कश्मीर एवं अन्य सीमान्त प्रदेशों पर भारत के साथ पाक- चीन जिस स्थिति को जन्म दे रहे हैं, वह भारत एवं विश्वजनीन शान्ति के लिए भयावह सिद्ध होगी।"

8. 28 फरवरी (सन् 2018 ई.) को 'जगद्गुरु श्री जयेन्द्र सरस्वती जी' महाराज (कांचीमठ) के स्वर्गवास बारे—मार्त्तण्ड पंचांग (सं. 2075 वि.), पृष्ठ 50, कॉलम 1 पर पढ़ें—

"13 जनवरी, 2018 ई. को शुक्र मकर राशि में आयेगा एवं 14 जनवरी को सूर्य भी मकर राशि में आकर शनि एवं केतु के साथ मेल करेगा। इस समय सूर्य, शुक्र, केतु पर मंगल की दृष्टि भी है। **इस समय किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन हो।"**

9. श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2075 वि. के पृष्ठ 50, कॉलम 1 पर निम्नांकित भविष्यवाणी पर ध्यान दें—

2 मई से मंगल मकर (उच्च राशि) में आकर राहु के साथ समसप्तकयोग बनायेगा। इसी मध्य 14/15 मई से 8 जून तक शुक्र-शनि का समसप्तकयोग चलेगा। फिर लगभग 6 नवम्बर, से 23 दिसम्बर, सन् 2018 ई. के लगभग शनि अपने शत्रुग्रह मंगल पर विशेष दृष्टि रखेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि—उल्लिखित समयावधियों में विश्व के प्रमुख देशों में भारी उलट-फेर एवं अघटित घटनाओं किंवा **प्राकृतिक प्रकोप किंवा उग्रवादियों के जघन्य अपराधों से भारी अशान्ति बनेगी। इस समय जनता एवं शासकों को भी सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहना चाहिए—यह आवश्यक सूचना ग्रहगोचर के अनुसार दे देना उचित समझते हैं।**

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार 2 मई को अफगानिस्तान में 6.6 रियेक्टर का भूकम्प आया, जिसका प्रभाव उ.भारत में भी 10 मई तक अनुभव किया गया एवं इन्हीं **दिनों मई में ही मौसम-विभाग ने महावात (भयंकर तूफान) की चेतावनी भी दी थी, तदनुसार भारत के मुम्बई, उ.प्र., राजस्थान, उ.खं., गुजरात आदि एवं कुछ अन्य प्रान्तों में भी (लगभग आधे हिन्दुस्तान में) भयंकर तूफान से सैकड़ों व्यक्ति इस प्राकृतिक प्रकोप से हताहत हुए। थाईलैण्ड, ताईवान, अमेरिका, जापान, चीन आदि में भी बाढ़, अग्निप्रकोप, तूफान आदि की दुःखद घटनाएं इन दिनों सामने आईं और भारी जान-माल की हानि हुई।**

15 मई तक किंवा आगे भी इस तरह के प्राकृतिक प्रकोप का कहर, अग्निकाण्ड, वायुवेग से मकानों का ध्वस्त होना एवं वाहनों से मृत्यु आदि भयंकर परिणाम देखने को मिले। सरकारें भी इस प्रकोप को रोकने में असमर्थ रहीं।

10. श्री मार्त्तण्ड पंचांग सं. 2076 वि. पृ. 55 पर जगत् लग्नेश कुण्डली के आधार पर स्पष्ट भविष्यवाणी इस प्रकार की गयी थी—

वर्षेश लग्न में राहु एवं शनि की परिधि में ही सभी प्रभावी ग्रह हैं। अतः कुछ राष्ट्रों में प्राकृतिक आपदा (प्राकृतिक प्रकोप), अग्निकाण्ड, भयंकर तूफान, भूकम्प आदि से मई 2019 तक भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं।

तदनुसार अनेक राष्ट्रों एवं प्रान्तों में भयंकर समुद्री तूफान, जलप्रलय किंवा भयंकर प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ा।

11. श्री मार्त्तण्ड पंचांग संवत् 2076 वि. में पृष्ठ 57 पर कॉलम 1 पर कश्मीर में घटित सर्जिकल स्ट्राइक का संकेत निम्नांकित शब्दों में किया गया था एवं यूरोप में घटित प्राकृतिक आपदाओं का संकेत स्पष्ट लिखा था—

14 मार्च से संवत् 2076 वि. के अन्त तक सूर्य पर शनि-मंगल की दृष्टि एवं लगभग 22 मार्च से मकर राशि में शनि-मंगल का (लगभग 3 मई, सन् 2020 ई. तक) एक साथ रहना कहीं भयंकर युद्धाग्नि से विनाश का कारण बनेगा।

इन दिनों यूरोप में कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, अग्निकाण्ड, समुद्री तूफान आदि से जनधनहानि के योग भी बनते हैं। लगभग मार्च से मई 2020 ई. के मध्य किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का संकेत मिलता है—सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

12. श्री मार्त्तण्ड पंचांग संवत् 2076 में राजनैतिक पार्टियों के गठबन्धन के बारे में जो लिखा था वह अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ है। पढ़ें, पृष्ठ 59 पर—

7 मार्च, 2019 ई. के बाद राहु-शनि की स्थिति के कारण भारत के विपक्षी

राजनैतिक गठबन्धन में पार्टियों के शीर्ष नेतृत्व के स्वर अलग-अलग नजर आयेंगे, जिससे विपक्ष की योजनाएं निष्फल हो जाने के योग हैं। सत्तारूढ़ दल पुनः प्रभाव पकड़ेगा।

स्पष्ट है कि—भारत में गठबन्धन राजनैतिक योग बिखर गये और पुनः मोदी सरकार सत्तारूढ़ हो गयी है।

इसी भविष्यवाणी को संक्षेप में पुनः पृष्ठ 61 पर स्पष्ट किया गया था—

आपस में सिद्धान्त-विपरीत विचारधारा वाला गठबन्धन भाजपा को हानि तो पहुंचायेगा, लेकिन धराशायी न कर सकेगा, अन्ततः भाजपा सरकार बना सकेगी।

13. राजनैतिक 'महागठबन्धन' के बारे में 24 मई, 2018 ई. को श्री मार्त्तण्ड पंचांग सं. 2076 वि. में पृष्ठ 62/63 पर की गयी निम्नांकित भविष्यवाणी सटीक सत्य सिद्ध हुई। पढ़ें पृ. 62/63 पर—

बहुजन समाजपार्टी, समाजवादी पार्टी एवं बिहार के कुछ राजनैतिक दल तथा कांग्रेस—ये सब मिलकर सत्तापक्ष को घेरने के लिए 'महागठबन्धन' को प्राथमिकता देने की चर्चा में हैं। यद्यपि यह गठबन्धन सत्तापक्ष के लिए भारी मालूम देगा, लेकिन राजनैतिक मुद्दा इस महागठबन्धन के पास प्रबल न होने से तथा पार्टियों की सत्ता-लोलुपता, नेतृत्व में वरीयता आदि मुद्दे खींचतानभरे रहेंगे। आगे शनि-राहु एवं मंगल-शुक्र की स्थिति आगामी काल में शीघ्र ही मतभेद पैदा करके सत्तापक्ष को लाभ पहुंचा सकती है। क्योंकि अभी भारत में एक संघीय पार्टी का शासन सम्भव नहीं। क्योंकि मोदीविरोधी मुहीम में ठोस मुद्दे व कारगर रणनीति शनि-मंगल नहीं बनने देंगे। जोकि इनकी एकजुटता को प्रभावित करेगी।

14. श्री नरेन्द्र मोदी जी के बारे में 14 मई, 2018 में लिखित भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है। पढ़ें संफ2076 का पंचांग पृ. 63 पर—

21 जनवरी, सन् 2019 ई. से श्री मोदी जी के धनस्थान में शनि-शुक्र का योग श्री मोदी को उत्साहवर्धक रहेगा, जोकि 29 मार्च, सन् 2019 ई. तक या आगे शीघ्र ही यश एवं राजनैतिक क्षेत्र में पुनः सफलता देगा।

15. 'जम्मू-कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत कश्मीर में घटित वारदात भी सत्य घटित हो गयी है, हो भी रही है। पढ़ें सं. 2076 का पंचांग पृ. 64—

इस साल लगभग 11 अप्रैल से 10 अगस्त, 2019 ई. तक गुरु धनु राशि में वक्री चलेगा एवं 6 मई से लगभग 22 जून, 2019 ई. तक वक्र शनि का मंगल-राहु के साथ समसप्तक है। पाक-द्वारा कृत बहुत ही अशान्त स्थिति का सामना करना पड़ेगा। अनुभव होने लगेगा कि—बिना सैन्यसंघर्ष के इस समस्या का हल सम्भव नहीं है। आगे 24 सितं., 2019 ई. से संवत् 2076 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति यहां उग्रवादियों द्वारा और भी भयंकर अघोषित युद्ध जैसा वातावरण बना सकती है—भगवान् ही रक्षा करें।

इस भविष्यवाणी के अनुसार भारत सरकार को सर्जिकल स्ट्राइक करने को मजबूर होना पड़ा है; यह इस भविष्यवाणी की सत्यता का ज्वलन्त प्रमाण है।

पाठको! स्थानाभाव के कारण इस वर्ष की सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा नहीं कर पा रहे हैं, विद्वान् पाठक स्वयं ही मूल्यांकन करें।

मार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गयीं या की जा रहीं भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता-जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2077 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान 'कार्य-कारण के सिद्धान्त' को ही प्राथमिकता प्रदान करता है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक भी अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अतः सिद्धान्तों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्यसिद्धान्तों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर 'लोकतान्त्रिक राज्य' की स्थापना के लिए प्रधानमन्त्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म-स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवं शासनतन्त्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र

को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुरूप संसार में जो उलट-फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा निर्दिष्ट संकेतों के आधार एवं वि. सं. 2077 की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ आगामी घटनाओं के बारे में यहां लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

संवत् 2077 वि. में वर्षारम्भ में बार्हस्पत्य मान से 'आनन्द' नामक संवत्सर है। इस संवत् को 'विक्रम' नाम से भी जाना जाता है। इसका फल 'बृहत् संहिता' में इस प्रकार लिखा है—

"विक्रमः सकललोक-नन्दनः।"

अर्थात्—देश में जनजीवन के स्तर में प्रगति होती है। जनता में आनन्दमय वातावरण रहे। देश में चहुंमुखी प्रगति हो। 'वर्षप्रबोध' के अनुसार 'आनन्द' नामक संवत्सर का फल इस प्रकार है—

"आनन्दाब्दे त्वखिला लोकाः सर्वदानन्द - चेतसः।
राजानः सुखिनः सर्वे बहुसस्यार्घवृष्टिभिः॥"

अर्थात्—प्रजा में प्रगतिप्रद योजनाओं से आनन्द-मंगल एवं उत्साह का वातावरण रहे। शासकों (राजनेताओं) को यशोलाभ हो। वर्षा समयानुसार पर्याप्त हो। खाद्य पदार्थ सुलभ हों।

'मेघ महोदयानुसार' 'आनन्द संवत्सर' का फल इस प्रकार है—

"आनन्दे गुरुः स्वामी, वर्षा बहुला, सुभिक्षं, मार्गशीर्षे लोकानां दक्षिण-दिशिगमनम्, फाल्गुने धान्यं समर्घम्॥"

पाठको! गतवर्ष संवत् 2076 वि. के पंचांग में पृष्ठ 54, कॉलम 1 की अन्तिम पंक्तियों में घोषणा की थी कि—

संवत् 2076 वि. की प्रारम्भिक गोचर ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—स्वार्थपरक राजनीति से प्रेरित विपक्षीदल सत्तालोलुपता से ग्रस्त रहेंगे, जिससे सत्तारूढ़ दल भाजपा आदि नेतृत्व-क्षुब्ध रहेंगे। फिर भी विपक्षी दलों के लिए परिणाम आश्चर्यजनक रहेंगे; क्योंकि भारत का राजनैतिक परिदृश्य अप्रत्याशित करवट लेगा।

इस भविष्यवाणी के अनुसार विपक्षी दलों के लिए निर्वाचन-परिणाम अप्रत्याशित रहे हैं, यह सर्वविदित है।

संवत् 2077 वि. का राजा बालग्रह बुध है। इस वर्ष मायावी (मनस्यन्यत् वचस्ययन्त्) लोगों से प्रमुख नेतृत्व को सावधान रहना होगा। छल-कपट करने वाले लोगों का प्रभाव अधिक रहेगा। लेकिन शासनतन्त्र सफेदपोश गुप्त अपराधियों को उजागर करेगा। विधि-शास्त्री इस वर्ष गैरकानूनी गतिविधियों का खुलासा करेंगे। जनता-हितार्थ प्रधान नेता लुभावनी घोषणाएं करेंगे। लेकिन उन घोषणाओं एवं योजनाओं का कुछ व्यक्ति समुचित लाभ नहीं लेने देंगे। इस वर्ष राजनीति में मैत्री किंवा विरोध स्वार्थपरक लाभ से ही प्रेरित होंगे। 'वर्षप्रबोध' में संवत्सरेश 'बुध' का फल इस प्रकार लिखा है—

"बुधस्य राज्ये सजलं-महीतलम्,
गृहे गृहे तूर्य-विवाह - मंगलम्।
प्रकुर्वते दानदयां जनोऽपि-
स्वस्थं सुभिक्षं धन-धान्य-संकुलम्॥"

अर्थात्—वर्षा पर्याप्त हो। सत्पुरुष सत्कार्य में जन-हितार्थ व्यस्त रहें। जनता में बड़े उत्साहवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन हो।

संवत् 2077 वि. का मन्त्री पद चन्द्रमा को प्राप्त है। ध्यान रहे—बुध का चन्द्र शत्रु ग्रह है। लेकिन चन्द्र का बुध मित्र है। अतः इस वर्ष प्रधान नेतृत्व को कठोर पग स्वतः उठाने होंगे। चन्द्र स्त्री ग्रह एवं बुध नपुंसक ग्रह है। शासनतन्त्र को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए सर्वसम्मति से काम लेना होगा।

इस वर्ष बुध एवं चन्द्र—ये दोनों अधिकारी प्रधान राजनीतिज्ञों में अविमृश्यकारिता किंवा किंकर्तव्यविमूढ़ता की भावना पैदा करेंगे। लेकिन इस वर्ष का सस्येश गुरु एवं मेघेश सूर्य एवं धान्येश मंगल—ये सभी प्रखर शक्तिसम्पन्न ग्रह देश की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे। देश में गरीबी एवं जाति-पाति के भेदभाव को नगण्य करने में सर्वजन-हिताय एवं सर्वजन-सुखाय का वातावरण बनाने में प्रदान नेतृत्व को बल प्रदान करेंगे।

गोचर ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है कि—देश को विश्व के प्रमुख देशों की कोटी में स्थापित करने में संवत् 2077 से आगे का समय आश्चर्यजनक परिणामों वाला सिद्ध होगा।

इस वर्ष चन्द्र-बुध दोनों पदाधिकारी विरोधी पार्टियों को विपरीत बुद्धि प्रदान कर सकते हैं, परन्तु सभी विपक्षी देश के प्रमुख नेता श्री मोदी की नीति के

अनुरूप चलने पर विवश हो जायेंगे। देश के सभी राजनैतिक दल देश-हितार्थ कार्य करेंगे एवं अपना देश (भारत) प्रमुख देशों की कोटि में गिना जायेगा।

इस वर्ष रसेश शनि वर्षा की कमी से अनेक प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति बना सकता है। विशेषत: कर्णाटक, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि में पेयजल-समस्या से सरकार को विशेष चिन्तित रहना होगा।

इस संवत् का सेनाधिपति (दुर्गेश) सूर्य होने से भारत सैन्यबल को सुसमृद्ध करके सर्वोपरि प्राथमिकता-सम्पन्न सशक्त देश बनेगा। **देश अन्तरिक्ष-विज्ञान में भी आश्चर्यजनक चमत्कारों से नवीन शस्त्रास्त्रों के परीक्षण से आश्चर्यजनक प्रगति करेगा।**

नोट—इस संवत् में शनि-मंगल-सूर्य की स्थिति जून से अगस्त तक देश में सम्प्रदायिक किंवा धार्मिक विषयों को लेकर वातवरण को क्षुब्ध कर सकतीहै, अत: शासनतन्त्र को सावधान रहना चाहिए।

संवत् 2077 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत्-लग्नकुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार सांसारिक घटनाओं पर एक नज़र

वर्षेश (जगत्) लग्नकुण्डली
(संवत् 2077 वि.)

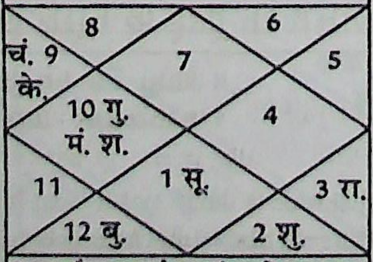

[13 अप्रै., 2020 ई., 20 घं. 21 मि. (I.S.T.)]

गतवर्ष की वर्षेश कुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार हमने स्पष्ट घोषणा की थी, जो इस प्रकार थी—

संवत् 2076 वि. की प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार कर्क लग्न में संवत् का प्रारम्भ भारत के पूर्वी प्रान्तों में सुख-समृद्धि का संकेत देता है। उत्तर दिशा में प्राकृतिक आपदा किंवा उग्रवादजन्य अशान्ति एवं कश्मीर आदि में उग्रवादजन्य परेशानी, सीमा-प्रान्तों पर युद्धात्मक स्थिति से अशान्ति रहेगी। पश्चिम में अनेकत्र दुर्भिक्ष एवं पेयजल-समस्या से शासन चिन्तित रहेगा।

गतवर्ष की इस ग्रहस्थिति का प्रभाव कश्मीर, चीनी सरहद पर सैन्यसंघर्ष आदि के रूप में स्पष्ट हो चुका है।

अब संवत् 2077 वि. की वर्षेश कुण्डली के अनुसार—वर्षेश लग्न का उदय तुला लग्न में हुआ है। लग्नेश शुक्र अष्टम भाव में वृषस्थ (अपनी राशि) में स्थित है और शुक्र पर नीच गुरु की दृष्टि भी है। अत: नये-नये प्रगतिप्रद आयामों को सफल सिद्ध करने में प्रधान नेता को कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा।

साथ ही वर्षेश कुण्डली के चतुर्थ भाव (सहयोगी राजनैतिक दलों के सहयोग सूचक भाव) में **नीच गुरु एवं शनि-मंगल की स्थिति से स्पष्ट संकेत मिलता है कि—भारत की प्रभाव राशि मकर में क्रूर ग्रहों की स्थिति काफी कठिन परिस्थितियों को उपस्थित करने वाली है। संवत् के शुरु से 3 मई सन् 2020 ई. तक एवं आगे 13 मई को गुरु के वक्रत्व काल में** लगभग अगस्त तक के समय में **धार्मिक एवं साम्प्रदायिक कलह से सचेत रहना होगा।**

वर्षेश कुण्डली में सभी ग्रह राहु एवं केतु से घिरे और संवत्सर के मन्त्री चन्द्र की परिधि में हैं। अत: **इस वर्ष कुछ राष्ट्र भूकम्प, तूफान, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदा से भयंकर जन-धनहानि की चपेट में आ सकते हैं। यह स्थिति मई से सितम्बर के मध्य सम्भव है।**

वर्षेश कुण्डली में उच्चस्थ सूर्य पर उच्च मंगल की दृष्टि आर्थिक क्षेत्र में राष्ट्रीय गरिमा की दृष्टि से **(मकर राशि प्रधान) भारत की गरिमा उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर रहेगी।**

जगत् लग्नेश (शुक्र) स्वस्थ है एवं इस पर गुरु की दृष्टि भी है, अत: मकर प्रभाव राशि भारत अनेक कठिनाइयों एवं विरोधी स्वरों के बावजूद विश्व के अग्रणी देशों में मान्यता प्राप्त करेगा;—

"निजोच्चे निजवर्गे वा शुभ: पापोऽपि वा भवेत्।
बलवान् दोषविच्छेत्ता हरिरेको यथा गजान्॥"

वर्षेश कुण्डली के अनुसार इस वर्ष आषाढ़, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष एवं माघ मास विश्व के देशों में विशेष घटनापूर्ण रहेंगे। अत: इन मासों में भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोपों एवं उग्रवादजन्य नेष्ट घटनाओं से सावधान रहना चाहिए।

जगत् लग्नकुण्डली के अनुसार उत्तर दिशा में प्राकृतिक आपदा एवं उग्रवादियों द्वारा जनधन-हानि की घटनाएं सम्भव हैं। पश्चिमी भूभाग पर अनेकत्र दुर्भिक्ष एवं पेयजल-समस्या से परेशानी रहे। पूर्वी प्रान्तों में सुख-समृद्धि रहे।

संवत् 2077 वि. में जगत् लग्नगत शनि, मंगल, राहु के विचार से भारत के

सम्बन्ध विश्व के अनेक राष्ट्रों से सुधरेंगे, लेकिन प्राकृतिक आपदाओं का भय ग्रहस्थिति के अनुसार फिर भी सम्भव ही है।

जगत् लग्न की प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति पर चिन्तन करने से भारत की प्रभाव राशि मकर का स्वामी शनि स्वस्थ तो है, लेकिन नीच गुरु एवं मंगल की सन्निधि में होने से चीन, पाक आदि के साथ सुखद सम्बन्ध बनाने में अभी समय लगेगा। **अपि च**—भारत की पश्चिमोत्तर सीमाओं एवं द.भूभाग में उग्रवाद किंवा भयंकर आपदा से जनधनहानि का भय है–

"मारिर्दक्षिण-देशे स्यात् तथा बंगेप्युपद्रवः।
लोके दुःखं विजानीयात् पश्चिमे ननु विग्रहः॥"

संवत् 2077 वि. की ग्रहस्थिति का यूरोप के देशों पर प्रभाव (एक संक्षिप्त सर्वेक्षण)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 1

(1 जनवरी से 31 दिसम्बर, सन् 2020 ई. तक)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 1 में चतुर्थ भाव में पंचग्रही योग और शनि-सूर्य-बुध-गुरु एवं केतु का राहु के साथ समसप्तकयोग यूरोपीय देशविशेष में अघटित घटनाओं को जन्म देगा। अणुशस्त्र, सीमाविवाद, शस्त्रास्त्रों की मारक क्षमताजन्य उन्माद एवं शक्ति-सम्पन्नता-प्रदर्शन से हालात बिगड़ेंगे। यूरोप के देशों में विचार- वैमनस्य से द्विधाविभक्त किंवा विशेष ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति घातक रहेगी, इससे विश्वशान्ति को भी खतरा पैदा हो सकता है।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)
(1 जन. से 31 दिसं., सन् 2020 तक)
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.)

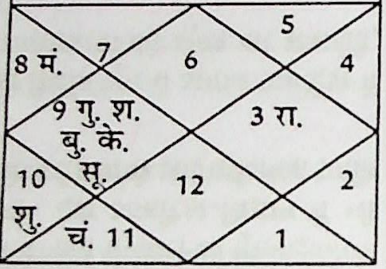

इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड, सिन्ध के भाग, अमेरिका, फ्रांस आदि में गुटबाजी एवं चीन, रूस, जर्मनी किंवा जापान आदि में परस्पर शस्त्रास्त्रों की होड़ से पंचग्रहीयोग वातावरण को खराब करेगा।

24 जनवरी, 2020 ई. से शनि-सूर्य का मकर राशि में लगभग 12 फर. तक एक साथ होना भी विश्वशान्ति के लिए भयावह है।

14 मार्च से संवत् 2076 वि. के अन्त तक सूर्य पर शनि-मंगल की दृष्टि एवं लगभग 22 मार्च से मकर राशि में शनि-मंगल का (सं. 2077 वि. में लगभग 3 मई, सन् 2020 ई. तक) एक साथ रहना कहीं भयंकर युद्धाग्नि से विनाश का कारण बनेगा—

"मकरस्थो यदा भौमः क्रूरग्रह-समन्वितः।
त्रिभागशेषा पृथिवी मांस-शोणितकर्दमैः॥"

इन दिनों यूरोप में कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, अग्निकाण्ड, समुद्री तूफान आदि से जनधनहानि के योग भी बनते हैं। लगभग मार्च से मई 2020 ई. के मध्य किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का संकेत मिलता है—सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (2)

(1 जनवरी से 31 दिसम्बर, सन् 2021 ई. तक)

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (2) की ग्रहस्थिति के अनुसार शुक्र-केतु एवं राहु के अर्धवलय में ग्रहबाहुल्य होने से सशक्त यूरोपीय देशों की अस्मिता कहीं युद्धात्मक स्थिति बना सकती है। इस कुण्डली में गुरु के क्षेत्र में **'बुधादित्य योग'** एवं शनियुत नीचस्थ गुरु की स्थिति में अशान्त वातावरण एवं उग्रवादजन्य अपराधों से मुक्त होने में अनेक राष्ट्रों का सहयोग तो प्राप्त होगा, लेकिन कुछ शस्त्रास्त्र-परीक्षण से सम्बन्धित मसले अशान्ति का कारण भी बनेंगे। जिससे विश्वव्यापी उग्रवाद के पोषक तत्त्वों को सबक भी मिलेगा।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
(1 जन. से 31 दिसं., 2021 ई. तक)
(मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.;

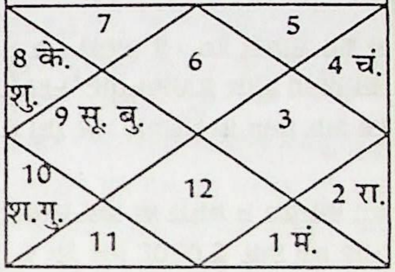

कुण्डली नं. 2 की कुछ दिन पूर्व की ग्रहस्थिति से पूर्ववर्ती वातावरण अधिक चिन्तनीय मालूम देता है। कोरिया, पाक, चीन, रूस, ईरान आदि देश अमेरिका के प्रभुत्व को क्षीण करने के लिए ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, उ.कोरिया किंवा चीन आदि द्वारा सुदूर मारक शस्त्रास्त्रों के परीक्षण से वातावरण को अशान्त कर सकते हैं। भारत की भूमिका इस क्षण में प्रशंसनीय रहेगी।

अमेरिका इस वर्ष ईरान, अफगानिस्तान आदि में संघर्षात्मक रुख अपना सकता है, लेकिन स्थिति को गुरुग्रह संयत रखेगा, फिर भी कुछ देश शस्त्रास्त्रों के निर्माण को गुप्तरूप से जारी ही रखें।

यह वर्ष कहीं युद्धात्मक स्थिति, प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, अग्निकाण्ड, तूफान व अन्यविध प्राकृतिक प्रकोप से यूरोप में जनधनहानि करे, ऐसी ग्रहस्थिति दृष्टिगोचर हो रही है।

प्रकृति के दोहन एवं पर्यावरण-सम्बन्धित समस्याएं भी विश्व के यूरोपीय देशों को संकटमय स्थिति का समाधान ढूंढ़ने के लिए विवश कर देंगी।

परिणामस्वरूप, उ. कोरिया, चीन, पाक, ईरान आदि अन्य मुस्लिम देश शस्त्रों की मारक-क्षमता को बल देने वाले हथियारों के निर्माण में लगे रहेंगे। इस कुण्डली नं. 2 के अन्तिम चरणों की ग्रहस्थिति एवं आगे की ग्रहस्थिति तो विश्वशान्ति को क्षुब्ध करने वाली ही है। सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

संवत् 2077 वि. में मुस्लिम राष्ट्रों के हालात

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 1)

हिजरी सन् 1441 (1 मुहर्रम)

भाद्रपद शुक्ल द्वितीया, रविवार, तदनुसार 1 सितम्बर, सन् 2019 ई. को मुहर्रम (मुस्लिम हिज़री सन् 1441) प्रारम्भ होगा। इस हिज़री सन् का बादशाह सूर्य है। ग्रहस्थिति के अनुसार ईरान, इराक, पाक के क्षेत्र बलूचिस्तान, पाक-अधिकृत कश्मीर आदि में भयंकर अशान्ति का वातावरण बनेगा।

मुस्लिम देशों की कुण्डली (1)
हिज़री सन् 1441 (1 मुहर्रम)

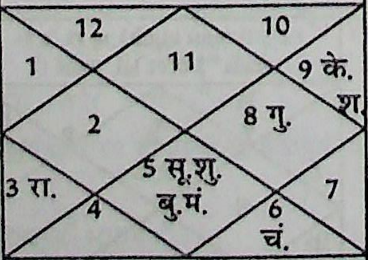

1 सितम्बर, सन् 2019 ई., रविवार, 18 घं. 42 मि. (सूर्यास्तसमय) (I.S.T.)

कन्या राशि में स्थित चन्द्र पर शनि की विशेष दृष्टि है, अतः पाकिस्तान में गणतन्त्र का स्वप्न साकार न होकर उग्रवादजन्य एवं सैन्यजनित दमनतन्त्र ही रहेगा। पाक के कुछ क्षेत्र हवाई हमलों, निर्दोषों की हत्याओं और दमन के परिणामस्वरूप पाक से अलग होने का आह्वान भी करेंगे, जिसकी कीमत पाक को आगामी कुछ ही समयावधि में चुकानी पड़ेगी।

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 1) में कुम्भ राशि पर मंगल एवं शनि की दृष्टि है, अतः सीरिया पर जो जघन्य प्रहार हो रहे हैं, उसका परिणाम अघोषित विश्वव्यापी अशान्ति के रूप में देखा जायेगा। परिणामस्वरूप, अमेरिका, ब्रिटेन, जापान एवं रूस, चीन आदि में परस्पर युद्धोन्माद पैदा होने के आसार हैं। परिणाम मानव-जीवन के लिए चिन्तनीय होगा।

17 सितम्बर, 2019 ई. तक शनि के वक्रत्वकाल में मुस्लिम-राष्ट्रों में उलझनें बढ़ेंगी।

लगभग 24 सितम्बर, 2019 ई. के बाद शनि-मंगल का दशम-चतुर्थसम्बन्ध और मिथुनस्थ राहु-चन्द्र पर शनि की दृष्टि मुस्लिम राष्ट्रों के लिए भयावह है। आश्विन शुक्ल सप्तमी शनिवारी होने से सीरिया, ईरान, पाक आदि में हत्याकाण्डों का संकेत मिलता है—

"सप्तम्यां शनियुक्तायां सिते पक्षे यदाश्विने।
मूले वा धनिष्ठायां जगतो नाशकारणम्॥"

10 नवं., सन् 2019 ई. तक शनि-मंगल का दृष्टिसम्बन्ध एवं 29 अक्तूबर, 2019 ई. से गुरु-शनि के एकत्र होने पर साऊदी अरब, अफ्रीकन देश, सीरिया, पाक-अधिकृत कुछ क्षेत्रों में भयंकर अशान्ति बढ़ेगी।

7 फरवरी, सन् 2020 ई. से आगे संवत् 2076 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति एवं आगे शनि-मंगल के एकत्र होने से मुस्लिम-राष्ट्रों में कहीं भयंकर राजनैतिक उथल-पुथल, उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड, सेना के अत्याचार आदि से अशान्ति रहे। कहीं प्रधान नेता के अपदस्थ होने या हत्या किंवा कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से जनधन-हानि के योग हैं।

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 2)

हिजरी सन् 144२ (1 मुहर्रम)

संवत् 2077 वि. में भाद्रपद शुक्ल पक्ष तृतीया, शुक्रवार, तदनुसार 21 अगस्त, सन् 2020 ई. को 1 मुहर्रम, हिजरी सन् 1442 का आगाज होगा। इसलिए इस हिजरी सन् का बादशाह शुक्र होगा।

शुक्रवारी गुर्रा होने से महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। घी, गुड़, खाण्ड आदि में विशेष तेजी रहे। जून से अगस्त के अन्त तक साम्प्रदायिक सौहार्द बिगड़ेगा। उपद्रव ग्रस्त क्षेत्रों

से जनता स्थानान्तरण करने को विवश हो। रोग एवं प्राकृतिक आपदाओं से जनजीवन त्रस्त रहे।

कुण्डली नं. (2) में लग्नेश शनि व्यय स्थान में मंगल के साथ दशम-चतुर्थ-सम्बन्ध में होने से ईरान, पाक में मौजूद उग्रवाद के स्वयंभू नेताओं के लिए भयावह स्थिति बने। भारत की प्रभाव राशि मकर में शनि स्वस्थ होने से भारत का प्रभावक्षेत्र बढ़े। मुस्लिम राष्ट्रों पर विशेष शान्त्यर्थ प्रयास होते रहेंगे।

मुस्लिम देशों की कुण्डली (2)
हिज़री सन् 1442 (1 मुहर्रम)

21 अगस्त, सन् 2020 ई., शुक्रवार,
18 घं. 54 मि. (सूर्यास्त समय) (I.S.T.)

भारत की प्रभाव राशि के प्रबल एवं मंगल के स्वस्थ होने से भारत अपने शत्रुभूत मुस्लिम राष्ट्रविशेष को हतप्रभ कर देगा। लेकिन कश्मीर के अंगभूत गिलगित, बाल्टिस्तान एवं पाक के पख्तूनिस्तान आदि में तथा सीमाप्रान्तीय विवादों पर भारत का पाक एवं चीन के साथ परस्पर विवाद उग्ररूप धारण कर सकता है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कूटनीति किंवा युद्धात्मक स्थिति से ही कश्मीर की समस्या का हल सम्भव है।

कुण्डली नं. 2 के सप्तम भाव में 'बुधादित्य योग' तो श्रेष्ठ है, लेकिन बुध पाक की प्रभावराशि कन्या का स्वामी है। कन्या राशि पर गुरु की दृष्टि भी है। अतः मुस्लिम राष्ट्रनायकों की नीति एवं भारत के साथ व्यवहार में सुधार सम्भव है।

20 फरवरी, 2020 ई. के बाद संवत् के अन्त तक की ग्रहस्थिति, षड्ग्रही योग एवं राहु-मंगल का एक-राशिसम्बन्ध पाक, अफगानिस्तान, पख्तूनिस्तान, गिलगित, कश्मीर आदि में चिन्तनीय स्थिति बनेगी। इस दौरान प्राकृतिक प्रकोप एवं अनेकत्र उग्रवादजन्य अपराधों से जनधनहानि के योग हैं।

संवत् 2077 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत-सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत-भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष जान लिये जाते हैं। हमारे ऋषियों ने वेद-चक्षु इस ज्योतिषशास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है—

**"ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्॥"—(श्रीमद्भागवतपुराण)**

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य, अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण-विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम **"भवितव्यता"** किंवा **"ईश्वरेच्छा"** कहकर स्वीकार करते हैं।

स्वतन्त्र भारत का 73वां वर्ष

(15 अगस्त, सन् 2019 ई. से 14 अगस्त 2020 तक)

स्वतन्त्र भारत के 73वें वर्ष की ग्रहस्थिति के आधार पर शनि-राहु का समसप्तक एवं सूर्य-शुक्र का शनि के साथ षडष्टकयोग देश के प्रतिष्ठित गण्यमान्य नेतृत्व के लिए परेशान करने वाला है।

स्वतन्त्र भारत का 73वां वर्ष
15 अग., 2019 ई., 11 घं. 0 मि. (I.S.T.)

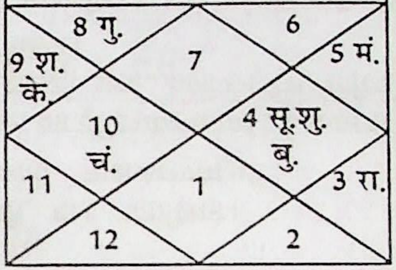

30 अगस्त, 2019 ई. के लगभग वक्री शनि पू.षा. नक्षत्र में प्रवेश करके राहु से प्रभावित होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति विशेष का पद रिक्त करे—ऐसा योग है।

10 सितम्बर, 2019 ई. को शुक्र-बुध पर शनि की विशेष दृष्टि होने से पड़ोसी देश-विशेष में शासनसत्ता में विशेष रद्दोबदल हों एवं वहां आन्तरिक अशान्ति से अघोषित सिविलवार जैसी स्थिति बन सकती है, जिससे भारत भी अशान्त रहे।

इस वर्ष भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा शनिवारी होने से कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से सत्ता में परिवर्तन के योग भी हैं—

"अथवा दैवयोगेन शनिवारो भवेद्यदि।
छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं च समादिशेत्॥"

इन दिनों लगभग 11 सितम्बर को राहु के आर्द्रा-चतुर्थ चरण में आने पर कहीं भयंकर प्राकृतिक प्रकोप (अवर्षण या अतिवर्षण आदि) से भारी हानि भी सम्भव है—

"प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।"

17 सितम्बर, सन् 2019 ई. को सूर्य कन्या में आकर मंगल, सूर्य, शनि की विशेष दृष्टि में आ रहा है। आश्विन तृतीया को मंगलवार एवं सप्तमी को शनिवार होने से कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से हानि हो एवं महंगाई उत्तरोत्तर बढ़े, पाक आदि के कुछ क्षेत्रों पर ब्लूचिस्तान, गिलगित आदि में राजनैतिक हत्याकाण्ड हो—

"आश्विने हि तृतीयायां भौमवारो यदा भवेत्।
तदा त्वग्निभयं भूम्यामन्नादीनां महर्घता॥"

किञ्च—

"सप्तभ्यां शनियुक्तायां सिते पक्षे यदाश्विने।
मूले वा धनिष्ठायां जगतो नाश-कारणम्॥"

गोचर ग्रहस्थिति-वश अगस्त/सितम्बर में भारी रोगविशेष से जनता में परेशानी भी बनेगी।

29 अक्तूबर, सन् 2019 ई. को गुरु मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आकर शनि के साथ एक-राशिसम्बन्ध बनायेगा एवं शनि-मंगल का दशम-चतुर्थसम्बन्ध 10 नवम्बर, 2019 ई. तक चलेगा। परिणामस्वरूप, अनेकत्र खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी एवं कहीं धार्मिक उन्माद, साम्प्रदायिक दंगे, सीमाप्रान्तों एवं अन्य सरहदी इलाकों में भी उग्रवादजन्य हत्याकाण्डों से हानि होने के योग हैं—

"यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद् वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूपश्चान्न-परिक्षयः॥"

21 नवम्बर, सन् 2019 ई. को शुक्र धनु राशि में आकर गुरु-शनि-केतु के साथ मेल करेगा। यह योग भी देश एवं प्रमुख शासकों के लिए कष्टप्रद रहेगा—

"गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।"

26 दिसम्बर, 2019 ई. के लगभग षड्ग्रही-योग विश्व के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए भयावह परिस्थितियों को लेकर आ रहा है—

"षड्ग्रहा घ्नन्ति समस्त-भूपान्।"

26 दिसम्बर से एक मास के अन्दर विश्व में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त एवं कहीं राजनैतिक उथल-पुथल होने का योग है।

24 जनवरी, सन् 2020 ई. को शनि मकर राशि में आकर सूर्य के साथ 12 फरवरी तक एक-राशिसम्बन्ध बनायेगा। मकरस्थ शनि का फल इस प्रकार लिखा है—

"पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णाः भवति पथिभयं सर्व-रोगाद् विनाशः।
चिन्तास्थानं नृपाणां भवति सति बले सूर्यपुत्रे मृगस्थे॥"

राजनीतिज्ञ परस्पर वैमनस्य में उलझें, रास्ते में स्नैचिंग, चोरी आदि की घटनाएं अधिक हों, अनेकविध रोगों से हानि हो। शासक प्राकृतिक आपदाओं किंवा अन्य प्रकार की समस्याओं से परेशान रहें।

जनवरी के अन्तिम सप्ताह से 15 फरवरी, सन् 2020 ई. तक कहीं वायु का प्रकोप, अग्निकाण्ड एवं शनि के उदय होने पर "नृप-युद्ध-बुद्धिः" प्रमाणानुसार कहीं युद्ध आदि से भारी हानि के योग बनते हैं।

मकर राशि भारत की प्रभाव राशि है। **इस राशि में शनि की 13 फरवरी तक स्थिति एवं लगभग 22 मार्च, सन् 2020 ई. से मई, 2020 ई. के प्रथम सप्ताह तक शनि-मंगल का एक राशि-सम्बन्धविश्वव्यापी अशान्ति का कारण बनेगा— "युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।"** इस समयावधि में कहीं व्यापक युद्ध की आहट सुनाई देने लगेगी और अनेकत्र प्राकृतिक प्रकोप, उग्रवादजन्य अशान्ति, भूकम्प किंवा दुर्भिक्ष आदि से जनता स्थानान्तरण करने को विवश होगी।

स्वतन्त्र भारत का 74वां वर्ष

(14 अगस्त, सन् 2020 ई. से सं. 2077 वि. के अन्त तक)

स्वतन्त्र भारत का 74वां वर्ष

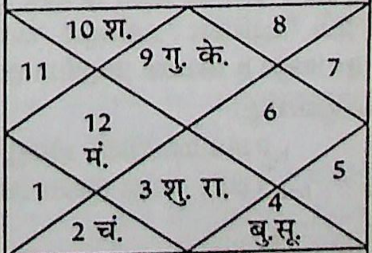

14 अग., 2020 ई.,
17 घं.9 मि. (I.S.T.).

स्वतन्त्र भारत के 74वें वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत की प्रभाव राशि मकरस्थ शनि की मीन राशिस्थ मंगल पर दृष्टि आर्थिक और सामाजिक अनेक समस्याओं को जन्म देने वाली है, लेकिन लग्नस्थ गुरु-केतु सभी समस्याओं को हल करेंगे, क्योंकि केन्द्रस्थ केतु केन्द्रेश गुरु के साथ है—

**"यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद् योगकारकौ॥"**

लेकिन गुरु-केतु का शुक्र-राहु के साथ समसप्तक होने से अनेक राष्ट्रीय समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, पुनरपि स्वतन्त्र भारत के 74वें वर्ष की कुण्डली में नवमेश सूर्य एवं दशमेश बुध का 8वें भाव में

'बुधादित्य योग' प्रधान नेता द्वारा प्रभावशाली ढंग से सभी वर्गों का विश्वास जीतकर समस्याओं का समाधान करने में सफल करता है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत के अन्तरिक्ष विज्ञान में विश्व के प्रतिष्ठित देशों में अग्रणी कोटी में आने के योग हैं। अमेरिका, जापान, चीन आदि प्रतिष्ठित देश भी भारत की प्रभुसत्ता से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे।

श्री मोदीजी के प्रधान-मन्त्रित्वकाल में भारत सबसे तेज विकास वाला प्रगति-प्रद देश रहेगा। लेकिन औद्योगिक चाल को सुचारु, सुव्यवस्थित रखने में काफी प्रयास करने होंगे। अनेक देशों द्वारा भारत में औद्योगिक निवेश से भारत में बेरोजगारी घटेगी एवं भारत एक समृद्ध एवं सशक्त देशों की कोटि में नजर आयेगा, यह गर्व की बात होगी। समर्थ शक्तिशाली देशों में भारत की स्थिति से सभी वर्ग लाभान्वित होंगे।

मकरस्थ शनि की स्वतन्त्र भारत की प्रारम्भिक अवस्था में सूर्य-बुध के साथ सम-सप्तक होने से मकरस्थ शनि का फल इस प्रकार अनुभव होगा—

" पृथ्वीशाः क्रोधपूर्णाः भवति पथिभयं सर्वरोगाद्विनाशः।
चिन्तास्थानं नृपाणां भवति सति बले सूर्यपुत्रे मृगस्थे॥"

74वें वर्ष के प्रारम्भ में विपक्षी दल शासनतन्त्र में बाधक रहें। देश में चिकित्सा-व्यवस्था को सुव्यवस्थित करना होगा। रास्ते में चोर-उचक्कों को भी नियन्त्रित करना होगा। इन स्थितियों में देश को प्राथमिक दृष्ट्या सुनियन्त्रित करना होगा।

अग. सन् 2020 ई. के लगभग से शनि-मंगल की दृष्टि और दशम-चतुर्थ-सम्बन्ध होने से भारत में हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखण्ड आदि में कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि सम्भव है, भगवान् रक्षा करें।

इस संवत् के कठिन क्षण—

इस संवत् की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार 25 मार्च से 4 मई तक एवं 18 जून, 2020 ई. से 15 अग. तक, आगे 4 अक्तू. से 24 दिसम्बर, 2020 ई. तक एवं फर., सन् 2021 ई. से संवत् 2077 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति अनेकत्र भीषण प्राकृतिक प्रकोप, सुनामी, भूकम्प एवं धार्मिक/सामाजिक उपद्रव किंवा उग्रवादजन्य हत्याकाण्ड का संकेत देती है। इस समय अनेक देशों में घटित इस घटनाचक्र से शासनतन्त्र भी असमर्थ अनुभव करेगा।

संवत् 2077 वि. की गोचर ग्रहस्थिति का भारत पर प्रभाव

पाठको! ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त ब्रह्माण्ड, देश-समाज एवं व्यक्ति की स्थिति ठीक उस तिनके की भाँति ही अनुभव की गयी है, जो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर-उधर भागता फिरता है। 'नैषधचरित' में स्पष्ट लिखा है—

"अवश्य भव्येष्वनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मना॥"

—(नैषधचरित)

यह बात भी नितान्त सत्य है कि—ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि—आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है—इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

ग्रहगतिजन्य संकेतों का अध्ययन करके हम मनीषी-महर्षियों के द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्तों के अनुसार भारत की राजनीति एवं अन्य पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्धों पर अपने विचार लिखने की चेष्टा कर रहे हैं। विद्वज्जनों के आशीर्वाद की याचना है, क्योंकि ग्रहगतिजन्य संकेतों को ठीक-ठीक पकड़ने में अनेकदा चूक भी हो सकती है। विद्वज्जन स्वयं संकेत को सुधारकर हमें आशीर्वाद दें—प्रार्थना है।

संवत् 2077 वि. की
प्रवेशकालीन कुण्डली

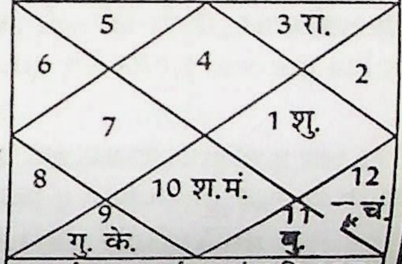

24 मार्च, सन् 2020 ई., 14 घं.58 मि. (I.S.T.)

संवत् 2076 वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, मंगलवार, तदनुसार 24 मार्च, सन् 2020 ई. को उ.भा. नक्षत्र, ब्रह्म योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय 14 घं. 58 मि. पर संवत् 2077 वि. का शुभारम्भ कर्क लग्न में होगा।

सं. 2077 वि. की वर्षप्रवेश-कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य होने से यह वर्ष कठिन परिस्थितियों वाला तो रहेगा ही, लेकिन केतु के साथ स्थित गुरु की दृष्टि राहु पर भी है एवं गुरु की नवमभावेश होकर

मीन पर विशेष (पाद) दृष्टि है। अत: तथाकथित 'कालसर्प योग' यहां नगण्य रहेगा—

"गुरु पूर्णदृष्टो ग्रहो नाऽनिष्ट-फलदः।"

कर्क लग्न पर शनि एवं मंगल की पूर्ण दृष्टि भी है। यह दृष्टिसम्बन्ध लगभग 3 मई तक प्रभावी रहेगा। यह समय देश की पुरातन एवं देशहित के विपरीत नयी परिस्थितियों को दूर करने के लिए कठिन परिस्थितियों का संकेत देता है।

भारत की प्रभाव राशि मकर में स्थित शनि की दृष्टि नवमभाव में स्थित सूर्य पर है, अत: प्रधान नेतृत्व के लिए यह समय सुरक्षा-व्यवस्था की दृष्टि से विशेष सावधानी का है।

दशमेश मंगल उच्चस्थ होने से देश में नये आयाम, नयी योजनाएं एवं विदेशी निवेश एवं भारतीय औद्योगिक प्रगति का संदेश देता है। गोचर ग्रहस्थिति से स्पष्ट है कि—भारत की राजनीति से मुस्लिम राष्ट्रविशेष की मित्रता किंवा विरोध सामयिक लाभ से ही प्रेरित रहेगा। **इस वर्ष शनि-मंगल-सूर्य एवं शुक्र की स्थिति वर्ष के मध्य उत्तर एवं दक्षिण की ओर से शत्रुदेश की गतिविधि अघोषित युद्ध जैसा वातावरण बना सकती है; भारतीय सैन्यबल सशक्त सिद्ध होगा। वर्षप्रवेश-कुण्डली में शनि की सूर्य एवं मंगल पर दृष्टि पाक में आन्तरिक क्रान्ति किंवा विभाजन का संकेत देती है।**

गोचर ग्रहस्थिति तो किसी प्रान्तविशेष में भयंकर दुर्भिक्ष, तूफान, पेयजल-समस्या किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप और भयंकर समस्याओं का संकेत देती है।

कर्क लग्न में संवत्सर-प्रवेश होने से उत्तर दिशा में प्राकृतिक प्रकोप, दक्षिण में महामारी से कष्ट रहे—

"कर्के सुखं तु पूर्वस्यामुत्तरे तु विग्रहः।
यच्वासन बलं यावत् दुर्भिक्षं पश्चिमे दिशि॥"

किञ्च—

"मारिर्दक्षिण-देशे स्यात्तथा बंगेऽप्युपद्रवः।
लोके दुःखं विजानीयात् पश्चिमे ननु विग्रहः॥"

भारतीय गणतन्त्र का 71वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र की ग्रहस्थिति
27 जन. 2020 ई., 9 घं.1 मि. (I.S.T.)

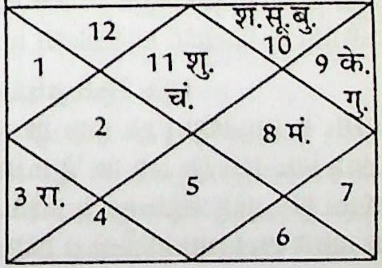

भारतीय 71वें गणतन्त्र का उदय 27 जनवरी, सन् 2020 ई. को बुधवार, पुनर्वसु नक्षत्र व मिथुनस्थ चन्द्र के समय हुआ है। मुन्थेश शनि सूर्य-बुध एवं गुरु के साथ स्वराशि (मकर) में ही है। सूर्य-शनि एक नक्षत्र में भी हैं। लग्न में लग्नेश शनि का मित्र शुक्र है। स्पष्ट भान होता है कि—भारत में अप्रत्याशित कुछ प्रान्तीय साम्प्रदायिक, राजनैतिक किंवा प्राकृतिक आपदाओं का शासनतन्त्र को सामना तो करना ही पड़ेगा। लेकिन साम्प्रदायिक एवं उग्रवादजन्य अपराधों को गुरुग्रह (प्रधान नेतृत्व) से स्थिति को कण्ट्रोल करने में समर्थ रहेगा—**"दण्डः शासति प्रजा सर्वाः दण्ड एवाभिरक्षति।"**

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत की गणना वैज्ञानिक, आर्थिक एवं सीमा पर सुरक्षा की दृष्टि से विश्व के अग्रगण्य देशों में होने लगेगी। हां, इस वर्ष 71वें वर्ष की गणतन्त्रकुण्डली में शनि-सूर्य व राहु की मंगल के साथ षडष्टक-स्थिति शुभ नहीं। सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा की दृष्टि से कश्मीर, आसाम, छत्तीसगढ़, अरुणाचल एवं राजस्थान के क्षेत्रों में सैन्यबल का प्रयोग करना पड़ेगा। देश में व्यवस्थापिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में कुछ विषयों पर परस्पर विरोध सम्भव है। परिणामस्वरूप, महामहिम राष्ट्रपति जी को विधिविशेषज्ञों से परामर्श भी करना पड़ेगा।

इस वर्ष जलवायु-वर्षाविचार से कर्नाटक, महाराष्ट्र एवं अन्य कुछ प्रान्त सूखाग्रहस्त रहने से सरकार को विशेष उपाय-संसाधन सोचने होंगे।

गणतन्त्रकुण्डली में विभिन्न राजनैतिक दल, जोकि जातिगत अस्मिता की राजनीति से प्रेरित थे, उन्हें इस विषय पर गम्भीरता से चिन्तन करना होगा, क्योंकि स्वस्थ मंगल की शत्रुस्थ चन्द्र पर दृष्टि राजनैतिक मन्थन एवं चिन्तन के लिए अवश्य प्रेरित करेगी। **शनि-मंगल की स्थिति चीन, कश्मीर (पाक-अधिकृत) एवं अन्य सन्देहास्पद सीमासुरक्षा का हल अन्ततः बलपूर्वक ही करना पड़ेगा। ऐसी ग्रहस्थिति भावी समय में संकेत देती है।**

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

भारतीय जनता पार्टी—स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल-शनि का सिंहस्थ होना भाजपा के लिए गठबन्धन की राजनीति से भयप्रद तो था, लेकिन भाजपा-कुण्डली में भाग्येश शनि एवं कर्मेश गुरु का एकत्र होना भाजपा को बहुमत प्रदान कर गया। अब आगामी गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार धनु:स्थ गुरु एवं मकरस्थ शनि भी भाजपा के सामने परीक्षा की घड़ी उपस्थित करेगा। क्योंकि समय-समय पर शनि-मंगल किंवा शनि-राहु का एक साथ रहना भारी समस्याओं को उपस्थित करेगा। इस समयावधि में प्रधान नेताओं की सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ रखना होगा। अन्तत: भाजपा देश को विश्वगुरु की पंक्ति में स्थापित कर सकेगी।

भाजपा-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति

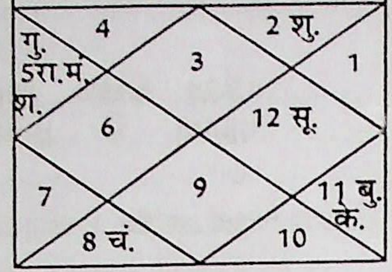

कांग्रेस पार्टी—कांग्रेस-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार कांग्रेस को पुन: गरिमामय समय देखने को मिलेगा। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सन् 2022 ई. से 2030 ई. तक अनेक प्रान्तों में कांग्रेस सत्ता प्राप्त कर सकेगी। 13 अप्रैल, 2022 ई. के बाद गुरु के मीन राशि में आने पर कांग्रेस पुन: प्रगतिपथ पर अग्रसर हो। क्योंकि इस अवधि में पार्टी अपने मन्थन द्वारा सुधारात्मक प्रक्रिया ला सकेगी।

कांग्रेस-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति

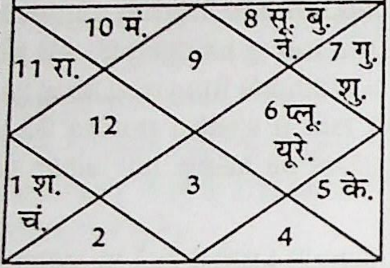

आम आदमी पार्टी (आप)—गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी शनि-मंगल आदि ग्रहों की स्थिति इस पार्टी के लिए अनुकूल नहीं। अत: पंचांगस्थ गत वर्षों की पंक्तियों को पुन: उद्धृत करना उचित समझता हूं।

"आम आदमी पार्टी—पार्टी की स्थापनागत ग्रहस्थिति के अनुसार नवमेश-दशमेश शनि द्वादश भाव में नीच है, जोकि मार्च, 2018 ई. से मई, 2018 ई. के लगभग शनि-मंगल के एकत्र होने की स्थिति में इस पार्टी के प्रभुत्व को क्षीण करेगा। लगभग $2^1/_2$ वर्ष आगे तक 'आप' पार्टी की राजनैतिक चाल कोई विशेष महत्त्वपूर्ण प्रभावी नहीं।"

कुछ प्रतिष्ठित राजतनीतिज्ञ

श्रीनरेन्द्रमोदी महाभाग—वाड नगर (Vad Nagar) (मेहसाना) गुजरात में 17-9-50 को 11 घं. 00 मि. A.M. पर श्री मोदीजी का जन्म हुआ। इस समय भाग्येश चन्द्र की महादशा में शुक्र का अन्तर 30-5-2021 तक चलेगा। शुक्र व्ययेश एवं सप्तमेश है। यह ग्रहस्थिति गोचरस्थ गुरु के मित्रस्थ (वृश्चिकस्थ) होने पर भाग्य स्थान को देखने से एवं जन्माङ्गगत गुरु की दशम भाव पर दृष्टि होने से राजयोगकारक रही है। लेकिन आगे समयावधि देशसंचालन में अपार चुनौतियों को लेकर आ रही है।

जन्माङ्गकालिक ग्रहस्थिति श्रीनरेन्द्रमोदी

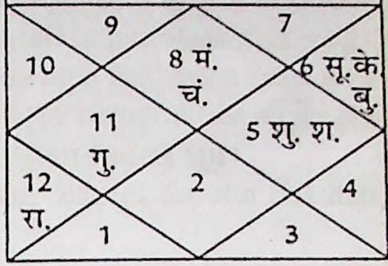

कई राज्यों की आन्तरिक सुरक्षा, नक्सलियों से निपटने की चिन्ता, पार्टी के संकल्प पत्र में जम्मू-कश्मीर में 35 A का मुद्दा, अयोध्या-विवाद, जनता के लिए रोजगार-सृजन, किसानों की स्थिति में सुधार, पंजाब में पनप रहे आतंकवाद पर लगाम लगाना—इत्यादि ज्वलन्त समस्याओं को हल करना ग्रहस्थिति के अनुसार 30-11-2021 तक तो सम्भव प्रतीत नहीं होता। क्योंकि जन्मांग में भाग्येश चन्द्र नीच है। जन्मांग में शनि-मंगल का दशमचतुर्थसम्बन्ध भी स्थिति को कठिन बना सकता है। लेकिन चतुर्थ-भाव (सहयोगी वर्ग) में मौजूद गुरु की मदद से अनेक समस्याओं को हल करने का श्रेय भी मोदी को अवश्य मिलेगा। ताकतवर देशों से सन्तुलन साधने की क्षमता से श्री मोदी को गौरव प्राप्त होगा। अपने शपथ ग्रहण में 'बिम्सटेक देशों' को न्योता विश्व में भारत की धाक जमाने का प्रथम चरण है, जो देश को यश-मान देकर प्रतिष्ठित देशों की श्रेणी में स्थापित करेगा। श्री मोदी की विदेशनीति से भारत गौरवान्वित एवं प्रगतिपथ पर अग्रसर रहेगा; इसमें सन्देह नहीं।

श्री मोदी की 30 मई को सायं 7 बजे शपथ ग्रहणकालीन ग्रहस्थिति के निरीक्षण से स्पष्ट है कि—वृश्चिक लग्नस्थ गुरु की मीनस्थ चन्द्र एवं कर्मेश सूर्य पर विशेष दृष्टि है। अत: श्री मोदी महाभाग को देश की आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं को हल करने के लिए आश्चर्यजनक सफलता मिलेगी। देश प्रतिष्ठित देशों की श्रेणी में आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से श्रेय प्राप्त करेगा।

महत्त्वपूर्ण प्रभावी नहीं।"

श्री राहुल गांधी—श्री गांधी महाभाग की जन्मकुण्डली में सप्तमेश एवं द्वादशेश मंगल की महादशा चल रही है। मंगल द्वितीय भाव में सूर्य के साथ क्षीण है, अत: यह समय निराशाजनक रहा। लेकिन आगे 18-3-20 से 27-4-21 तक की दशा श्री राहुल गांधी जी को यश एवं पुन: राजनैतिक क्षेत्र में क्षेत्रीय सफलता देने वाली है।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब—इस प्रान्त की प्रभाव राशि मीन एवं नामराशि कन्या है। संवत् 2077 वि. के आरम्भ से लगभग 4 मई, 2020 तक लग्नेश गुरु का शनि-मंगल के साथ मकर राशि में सम्बन्ध विषम परिस्थितियों वाला है। इस दौरान बाहर (कनाडा, इटली आदि) से उग्रवाद के प्रसार के लिए गुप्तरूप से धन का आयात होगा। आगे 18 जून, सन् 2020 ई. से 16 अगस्त तक यहां का वातावरण सर्वजन-हिताय नहीं रहेगा। 4 अक्तूबर, 2020 से 15 दिसम्बर, 2020 ई. तक शनि-मंगल की स्थिति यहां की शासन-सत्ता को चिन्तित कर सकती है।

जन. 2021 से संवत् के अन्त तक सीमाप्रान्तों पर बहुत सावधान रहना होगा। लेकिन श्री कैप्टन साहब की सरकार एवं केन्द्रीय सरकार देश/प्रान्तहित में पूर्ण सावधानी से वातावरण को बिगड़ने नहीं देंगे। प्रान्त में अनुशासन एवं शान्तिव्यवस्था को सुदृढ़ रखेंगे।

हरियाणा—इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवं नामराशि मिथुन है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार नववर्ष-प्रवेशकुण्डली में मिथुन राशीश बुध पर बृहस्पति की दृष्टि है। अत: यह प्रान्त आर्थिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से प्रगति करेगा। नव संवत् कुण्डली में मकर राशि में शनि-मंगल प्रान्त में कहीं उग्रवादजन्य किंवा भयंकर प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि का संकेत देते हैं।

मिथुन राशि का राहु एवं 18 जून, 2020 ई. के बाद 16 अगस्त, 2020 ई. के मध्य शनि की मंगल पर दृष्टि इस प्रान्त में दुर्घटना से जनधनहानि का योग बनाती है। लेकिन यहां शासनसत्ता प्रत्येक स्थिति को नियन्त्रण में रखेगी। अक्तूबर-नवम्बर से संवत् के अन्त तक यहां की आर्थिक स्थिति उत्तरोत्तर प्रगति पर रहेगी। कृषि एवं जनता की जागृति से इस प्रान्त को समृद्धि मिलेगी।

हिमाचल प्रदेश—इस प्रान्त की प्रभाव राशि मीन एवं नामराशि कर्क है। कर्क लग्न में ही संवत् 2077 वि. का उदय होगा। इस समय शनि-मंगल मकरस्थ हैं, अत: सीमाप्रदेश (मनाली आदि की ओर) उग्रवादजन्य उपद्रव किंवा प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि के योग हैं। लेकिन कर्क राशीश चन्द्र गुरुक्षेत्र में है एवं कर्क राशि पर गुरु की दृष्टि भी है, अत: यहां के प्रधान शासक को नयी प्रगतिप्रद योजनाओं एवं जनजीवन को सुख-सुविधा प्रदान करने के लिए यश प्राप्त होगा। अक्तूबर-नवम्बर से आगे प्राकृतिक आपदा से यहां परेशानी सम्भव है, क्योंकि शनि-मंगल की दृष्टि नेष्ट फलप्रद है। संवत् के अन्त तक कर्क राशि पर शनि की दृष्टि है, परन्तु गुरु की दृष्टि यहां वागवानी आदि एवं आकर्षक स्थलों के आकर्षण से यहां जनता लाभान्वित होगी। प्रधान नेतृत्व की देखरेख एवं केन्द्र की सहायता से यह प्रान्त प्रगतिपथ पर रहेगा।

उत्तर प्रदेश—इस प्रान्त की नाम राशि वृष एवं प्रभाव राशि धनु है। संवत् 2077 वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली में नवमेश गुरु धनु राशि में स्थित होकर कर्म स्थान को देख रहा है एवं कर्मेश मंगल भी विशेष दृष्टि से कर्म स्थान को देख रहा है—यह ग्रहस्थिति इस प्रदेश के लिए उत्तरोत्तर प्रगतिप्रद है। यहां नये-नये आयाम, विदेशी कम्पनियों का निवेश समृद्धिप्रद है।

लेकिन नववर्ष-प्रवेशकुण्डली में उच्च मंगल शनि के साथ होने से इस वर्ष इस प्राप्त में मई, 2020 ई. से शनि, शुक्र, गुरु के वक्रत्वकाल में, अगस्त तक साम्प्रदायिक/धार्मिक उपद्रवों को शान्त करने के लिए भारी सावधानी शासनतन्त्र को रखनी होगी।

इस प्रांत की प्रभाव राशि (धनु का) का स्वामी गुरु इस संवत् में तीन राशियों (धनु, मकर एवं कुम्भ राशियों) को स्पर्श करता है, अत: इस प्रान्त में एवं इस वर्ष सम्पूर्ण भारत के कुछ अन्य प्रान्तों में उपद्रवी लोग वातावरण को अशान्त करने का दुस्साहस करेंगे। एतदर्श सैन्यबल का प्रयोग भी सम्भव है—

"अब्दमध्ये यदा जीव: क्रमाद्राशित्रयं व्रजेत्।
तदा सुभट-कोटिभि: प्रेतपूर्णा वसुन्धरा॥"

इस वर्ष प्रधान शासकों को किसी भाग में उग्रवादियों की गतिविधि एवं साम्प्रदायिक उलझनों को हल करने के लिए रक्षात्मक व्यवस्था को सुदृढ़ रखना होगा। स्थानीय योजनाओं एवं शासकीय व्यवस्थाओं को सुदृढ़ रखने के लिए कठोर पग उठाने होंगे।

जम्मू-कश्मीर—इस प्रान्त की नामराशि मकर एवं प्रभावराशि तुला है। अत: संवत् 2077 के शुरु से 4 मई तक एवं 18 जून से 16 अगस्त तक एवं आगे 4 अक्तूबर से 24 दिसम्बर, सन् 2020 ई. तक की समयावधि इस प्रान्त में इस संवत् में भयंकर उपद्रवग्रस्त एवं मुस्लिम धर्म के आकाओं एवं यहां के शासकों के लिए भयंकर उपद्रव

एवं जनधनहानि वाली रहेगी। कट्टरपंथी आकाओं की केन्द्रीय शासन के साथ संघर्षात्मक स्थिति को सुव्यवस्थित एवं कण्ट्रोल रखने के लिए सैन्यबल के प्रयोग की विवशता अनुभव होगी।

इस बारे में ज्योतिषदृष्ट्या हमारा विचार निम्नांकित है—

"संवत् 2077 वि. की गोचर ग्रहस्थिति कश्मीर की राशि पर मंगलयुत 'शनि की दृष्टि' होने से कश्मीर-समस्या का हल सहज सम्भव नहीं। इस जलते सीमाप्रान्त पर पाक की कुदृष्टि इस संवत् में भयावह स्थिति को जन्म दे सकती है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—तिब्बत, कश्मीर एवं अन्य सीमान्त-प्रदेशों में भारत के साथ पाक-चीन, जिस स्थिति को जन्म दे रहे हैं, वह भारत एवं विश्वजनीन शान्ति के लिए भयावह सिद्ध होगी।"

दिल्ली—इस प्रान्त की प्रभावराशि मकर एवं नामराशि मीन है। मकर राशि का स्वामी शनि सारे वर्ष मकर में ही रहेगा। लगभग 5 अक्तूबर, 2020 ई. के बाद यहां की शासनसत्ता में अच्छा परिवर्तन आयेगा। विधानसभाई निर्वाचनों में 'आप पार्टी' को कुछ राहत मिलेगी, लेकिन भाजपा का प्रभुत्व अधिक रहेगा। गत वर्ष के श्री मार्त्तण्ड पंचांग सं. 2076 वि. के पृष्ठ 65, कॉलम 1 पर जो भविष्यवाणी की थी वह भी उद्धृत कर देना उचित समझते हैं, पढ़ें—

"जनवरी से अप्रैल, सन् 2019 तक की ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि—भारत की राजनीति पर पुनः सुयोग्य राजनीतिज्ञों का वरद हाथ रहेगा। जनता राजनीतिक वंशवाद से विमुख होती नजर आयेगी और भारत को चहुंमुखी प्रगति की ओर ले जाने वाला नेतृत्व उभरकर देशहित में काम करेगा।"

यह भविष्यवाणी लोकसभाई निर्वाचनों में अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है।

पाठको! प्रभुकृपा से भूत-भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें—

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र-परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुरः॥"

लेख पूर्ण होने की तिथि—
12 जून, सन् 2019 ई.

शुभचिन्तक—
पं. इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा

आज का दिन कैसे बीतेगा

प्रातः उठकर पंचांग से ज्ञात करो कि उस समय कौन-सा नक्षत्र है। फिर नीचे दिए गये चक्र के समान एक चक्र बनाओ। इस चक्र में जहाँ १ लिखा है, वहां उस दिन के प्रातःकालीन नक्षत्र को लिखकर उससे आगे के नक्षत्रों को २-३-४ आदि अंकों के स्थान पर लिखते हुए अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों को चक्र में लिख डालो। अब देखो कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ा है। यदि वह चक्र के भीतर है तो वह दिन सुख-शान्ति से व्यतीत होगा, उस दिन कोई शुभ समाचार मिलेगा। यदि नाम-नक्षत्र चक्र के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग प्रसन्नता से बीते और शेष भाग में चिन्ता, दुःख-शोक से चित्त खिन्न हो। यदि नाम नक्षत्र पर पड़े तो वह पूरा दिन विवाद, हानि, दुर्घटना आदि से चित्त को अशान्ति का कारण बने।

-:चक्र:-

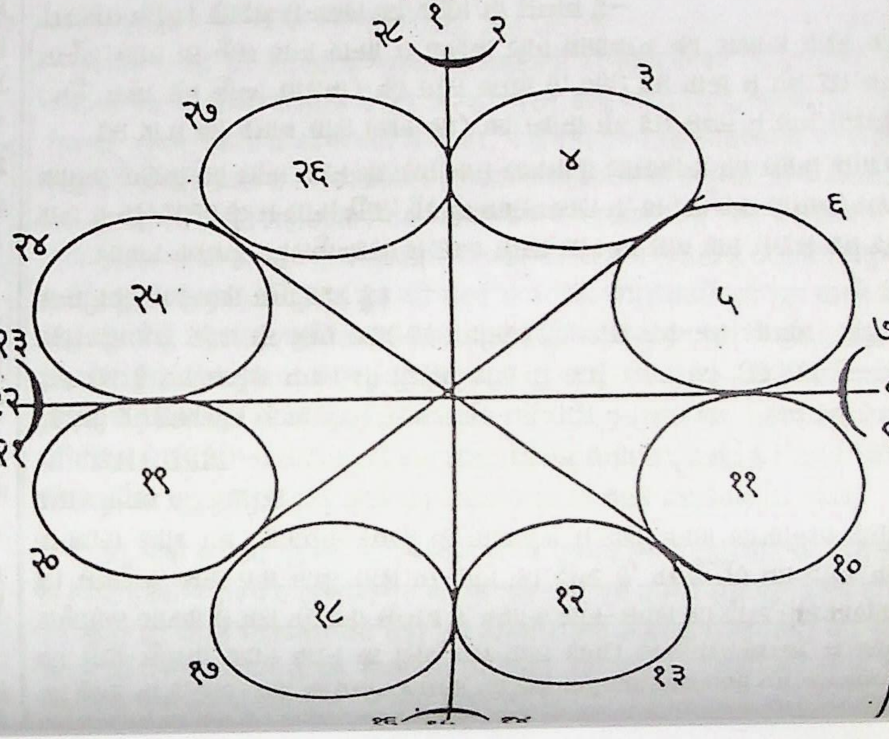

संवत् 2077 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षा-विचार

आगामी वर्षों की ग्रहस्थिति अनेक प्रान्तों में जलवायु-विचार, प्राकृतिक प्रकोप एवं पर्यावरण-विचार से भारी कठिन परिस्थिति को लेकर आ रही है;— पढ़ें इस लेख में

— संयमी शर्मा,

जलवायु एवं वर्षा-विचार के मूलभूत सिद्धान्तों, मानवीय भूलों, प्रबन्धन की अदूरदर्शिता, प्राकृतिक स्रोतों का दोहन एवं प्राकृतिक रहस्यों की उपेक्षा विश्व के लिए जल्दी ही भयावह सिद्ध होगी—इसे जनता, नेतागण एवं देश की प्रबन्धन-समितियों को गम्भीरता से अतिशीघ्र लेना होगा, अन्यथा **"यद्भावी न तद्भावी भावी चेन्न तदन्यथा"**—(जो होना है, वह होना ही है)—यह सोचकर कब तक प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर पाएंगे—यह तो भगवान् ही जानें। लेकिन ग्रहचाल के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं के भयंकर दुष्परिणाम शीघ्र ही स्थावर-जंगम जगत् को विनाश के कगार पर ले जाने वाले मालूम होते हैं। जलवायु-वर्षा-विचार के साथ इस लेख में एतत्—सम्बन्धित आधारभूत रहस्यों की चर्चा भी सूक्ष्म रूप से की गयी है।

जल, वायु, अनाज किंवा अन्य कृषि उत्पादन—ये जीवनाधायिका-चतुष्टयी ही संवत्सर के फल की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। यदि वर्ष के ये चार स्तम्भ सुदृढ़ हों तो वर्ष सुदृढ़, जनजीवन स्वस्थ एवं समृद्ध रहेगा—ऐसी मान्यता है। लेकिन "जल एवं वायु"—ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से हैं। इन्हीं के आधार पर "अन्नस्तम्भ" की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज सम्भव नहीं। अतः सं. 2077 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश नीचे दे रहे हैं। **आशा करते हैं कि—यह संक्षिप्त लेख किसानों/बागवानों के लिए एक दिशा-निर्देशक सिद्ध होगा।**

गोचर-ग्रहस्थिति के अनुसार उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव, जोकि समस्त विश्व के मौसम को स्थिर रखने में सर्वोच्च भूमिका निभाते हैं, 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण उत्तरी ध्रुव में बढ़ रहा तापमान आगे आने वाले लगभग 15/16 वर्षों की ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल, शनि, राहु एवं केतु कुछ वर्षों में ही विश्व के लिए खतरे की घण्टी बजा सकते हैं। **कहने का तात्पर्य यह है कि—"ग्लोबल वार्मिंग" विश्व के जलवायु के लिए भयंकर किंवा विपरीत परिस्थितियां बनाएगी। जिससे ध्रुवों के आसपास के देशों को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को ही दुष्परिणाम झेलने पड़ेंगे। अनेकत्र 'ऋतु-विपर्यय' अनुभव होने से वैश्विक तापमान किंवा प्रकृति में महानद और अन्य जलस्रोत सूखने लगेंगे। समुद्र एवं महानदों के तटों पर प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित होंगे। वृक्षों से ऑक्सीजन कम प्राप्त होने लगेगी—इत्यादि आश्चर्यजनक परिवर्तन होंगे, जिससे रोग बढ़ेंगे।** मौसम में इस प्रकार के उतार-चढ़ाव प्रकृति के साथ चल रहे खिलवाड़ के कारण जारी हैं। प्रकृति में हो रहे असामान्य किंवा अप्राकृतिक परिवर्तन को समझने में तो आधुनिक वैज्ञानिक भी सकते में हैं। मौसम की अनिश्चितता से कृषिक्षेत्र में सम्भावित जोखिम कम करने के लिए सरकार को व्यापक रणनीति बनानी होगी।

सभी समुदायों के धार्मिक ग्रन्थों में पर्यावरण-हितैषी बनने के लिए कहा गया है। मनुस्मृति में एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर की संज्ञा दी गयी है। कुरान कहती है कि जल ही जीवन है। 'वेद' पानी के महत्त्व की गाथाओं से भरे पड़े हैं। ईसाई समुदाय में भी प्रकृति-प्रेम को श्रेष्ठता प्रदान की गयी है। इस वर्ष की गोचर ग्रह-स्थिति के अनुसार अलनीनो गर्मी को

बढ़ायेगा, परिणामस्वरूप कहीं सूखा, कहीं भयंकर बाढ़ से जलधनहानि का संकेत मिलता है। 'अलनीनो' ऐसी प्राकृतिक घटना है, जिससे प्रशान्त महासागर का गर्म पानी उत्तर एवं दक्षिणी अमेरिका की ओर फैलता है। परिणामस्वरूप, पूरी दुनिया का तापमान बढ़ेगा। मौसम का सामान्य जलवायु-चक्र बिगड़ जायेगा, कहीं विनाशकारी बाढ़, कहीं सूखे के हालात बनेंगे। अमेरिका, चीन एवं भारत आदि में विगत कई वर्षों से बाढ़ एवं उत्तरी भारत में सूखा भी इन्हीं कारणों से सम्भव हुआ है।

आगे बर्फ के पिघलने से विश्व में समुद्री-तूफान आदि विनाशकारी लीलाएं देखने को भी मिलेंगी। आर्द्रा-प्रवेश-कालीन ग्रहगति के अनुसार जम्मू-कश्मीर, गुजरात, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, राजस्थान, मिजोरम आदि में इस वर्ष प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। महाराष्ट्र (मुम्बई) में भी प्राकृतिक प्रकोप दिखाई देगा।

समुद्रतटवर्ती महानगरों एवं विश्व के देशों में इस वर्ष (सं. 2077 वि.) से ही विशेष प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग स्पष्ट रूप से ग्रह स्थिति संकेत देती है।

भारत में वर्षा एवं वायु के योग

जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, लगभग उसी समय से भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन ग्रहगोचर के अनुसार माना गया है। ज्योतिष-शास्त्रानुसार वर्षा, वायुमण्डल, समुद्री तूफान एवं चक्रवात आदि प्राकृतिक उत्पातों का विचार भी सूर्य के आर्द्राप्रवेश, रोहिणीवास, चतुर्मेघविचार एवं गोचर ग्रहस्थिति पर निर्भर करता है। अत: सर्वप्रथम सूर्य की आर्द्रा-प्रवेशकालीन कुण्डली के आधार पर विचार करते हैं।

सं. 2077 वि. में आषाढ़ कृष्ण अमावस, रविवार (तात्कालिकी तिथि आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा, रविवार), तदनुसार 21 जून, सन् 2020 ई. को 23 घं. 27 मि. (I.S.T.) पर वृद्धि योग, आर्द्रा नक्षत्र एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य की आर्द्राप्रवेशकालीन ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

सूर्यार्द्रा प्रवेश कुण्डली

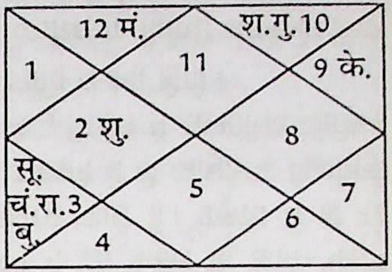

सूर्य की आर्द्रा कुण्डली में सूर्य से केन्द्र में के. मं. रा. ये क्रूर ग्रह हैं, जो कि दुर्भिक्ष से कुछ प्रान्तों में कृषि एवं पेयजल के लिए चिन्ताजनक स्थिति बनाते हैं।

आर्द्राप्रवेशकुण्डली में वृषस्थ शुक्र एवं मिथुन में बुध सूर्य-राहु चन्द्रयुत होने से कुछ प्रान्तों में भयंकर दुर्भिक्ष से परेशानी का संकेत देते हैं–

"बुध -शुक्रौ समीपस्थौ कुरुत एकार्णवां महीम्।
तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्॥"

आर्द्रा-प्रवेश-कुण्डली में जलराशिस्थ शनि की दृष्टि मीन के (जलराशिस्थ) मंगल पर है तथा अंगारक की सू. चं. रा. बु. पर भी विशेष दृष्टि होने से कुछ प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप, अनेकत्र भयंकर वायु-वर्षा एवं कुछ प्रान्तों में सूखाग्रस्त रहने से, किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भी विशेष जन-धनहानि के योग इस वर्ष 19 जून से लगभग सितम्बर तक रहेंगे। सरकार को विशेष सतर्क रहना होगा। आगे 24 दिसं., सन् 2020 ई. तक की ग्रहस्थिति देश की जलवायु एवं प्राकृतिक प्रकोप की दृष्टि से चिन्तनीय ही है।

इस संवत् में रोहिणी का वास सन्धि में होने से कहीं अधिक वर्षा, कहीं थोड़ी वर्षा से कृषि को हानि पहुंचे।

शनि की दृष्टि इस संवत् में उत्तर में और विशेषतः दक्षिणी भूभाग पर रहेगी। अतः दक्षिणी प्रान्त, देश प्राकृतिक प्रकोप से भयंकर आपदाग्रस्त रहेंगे।

ध्यान रहे—आर्द्राप्रवेशकुण्डली में मकर-मीन-वृष राशि में स्थित गु. श. शुक्र एवं आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य-चन्द्रयोग देश में भयंकर वर्षा पानी/तूफान किंवा बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसलों एवं जनजीवन को त्रस्त करेंगे;—सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

इस संवत् का राजा बालग्रह 'बुध' एवं मन्त्री बुध का शत्रु 'चन्द्र' है। अत: इस संवत् में राजनीतिज्ञ देशहित को प्रमुखता न देकर छल-कपट से काम करेंगे। गुप्त अपराधी अपना प्रभुत्व रखेंगे। पृथ्वी पर जल से अनेकत्र विप्लव की स्थिति बनेगी। संवत्सरेश एवं चन्द्र का प्रभाव कुछ प्रान्तों में भयंकर वर्षा से हानि का संकेत देता है—

"बहुजला जलदा बहुवर्षिण:।"

इस संवत् का **मेघेश सूर्य** होने से कुछ प्रान्त भयंकर अकालग्रस्त रहेंगे।

इस वर्ष चतुर्मेघों में **'आवर्तक'** नामक मेघ होने से यू.एस., इण्डोनेशिया व कुछ अन्य देशों में जून 2020 के लगभग जलप्रलय किंवा भयंकर वायुवेग, तूफान, समुद्री प्रलय आदि से जनधन-हानि के योग हैं।

किञ्च—नवमेघ-विचारणा से इस वर्ष **'संवर्त'** नामक मेघ भी बाढ़/वर्षा, तूफान से अनेक प्रान्तों में जनजीवन को त्रस्त करेगा—**"संवर्ते वायुपीड़नम्।"** स्पष्ट है कि—अनेकत्र वायुवेग से वा समुद्री तूफान से भयंकर स्थिति बन सकती है।

संवत् 2077 वि. में 'जल-स्तम्भ' एवं 'वायु-स्तम्भ' विचार से निम्नांकित संकेत मिलते हैं—

संवत् 2077 वि. मे सप्तवायु-विचार से **'विवह नामक'** वायु का प्रभाव उ.खण्ड, हि.प्र., आसाम, केरल, महाराष्ट्र, उ.प्रदेश एवं गुजरात आदि प्रान्तों में आंधी, तूफान के रूप में दिखाई देगा। कहीं यह प्रभाव भूमध्य-तरंगों के विक्षोभ से भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, समुद्री तूफान आदि के रूप में भी दिखाई देगा। कुछ प्रान्तों में 'विवह' नामक वायु बादलों को स्थानान्तरित करके फसलों की हानि एवं दुर्भिक्ष की स्थिति बनायेगी।

गर्म हवाओं का प्रकोप आज की ही समस्या नहीं। इसके दूरगामी प्रभावों के प्रति हमें सावधान अभी से रहना होगा। ग्रहगोचर के अनुसार आगामी वर्षों में तापमान दो से चार डिग्री सैल्सियस तक बढ़ सकता है। यह मानवता एवं जीवन्त सृष्टिमात्र के लिए बड़ी चुनौती है। वैज्ञानिकों को इस बारे में सावधान कर देना उचित समझते हैं। इस संवत् में 'रोहिणी' का वास 'सन्धि' में होने से कहीं खड़ी फसलें सूखेंगी, कहीं पेयजल का अभाव परेशान करेगा।

अब संवत् 2077 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत का वर्षा-विचार संक्षेप से लिखना उचित समझते हैं—

"वृष्टिमूला कृषि: सर्वा वृष्टिमूलं च जीवनम्।
तस्मादादौ प्रयत्नेन वृष्टिज्ञानं समाचरेत्॥"

—(कृषि पाराशर)

सं. 2077 वि. में प्रत्येक मास में वायु-वर्षाविचार इस प्रकार हैं;—

मार्च (सन् 2020 ई.)—28, 29, 30 एवं 31 मार्च को भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ कहीं खण्डवृष्टि हो, उ. भारत में तापमान बढ़ने लगेगा।

अप्रैल (सन् 2020 ई.)—5, 7, 8, 9, 13, 14, 17, 22 एवं 24 से 27 अप्रैल के लगभग उ. भारत में कहीं आंधी-तूफान से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। उ. भारत में गर्मी का प्रकोप बढ़े। उड़ीसा, आसाम, मुम्बई, प. राजस्थान, उ.प्र. एवं हि.प्र. के कुछ भागों में कहीं बादलचाल किंवा खण्डवृष्टि हो।

मई (सन् 2020 ई.)—1, 4, 7, 9, 11, 12, 13, 14, 15, 20, 23, 24 एवं 28 मई को महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु, जम्मू-कश्मीर, उ.प्र. के कुछ भाग, उ.खण्ड, बिहार एवं हि.प्र. में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। 15 मई के लगभग विशेष वायुवेग रहे।

जून (सन् 2020 ई.)—1, 3, 4, 7, 9, 10, 12, 14, 16, 17, 19 से 22 जून तथा 24, 25 एवं 30 जून के लगभग उ.खण्ड, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, उ.प्र. एवं उत्तरी भारत के कुछ भागों में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

नोट—19 से 22 जून के लगभग तक शनि-मंगल की पोजीशन कहीं भारी बाढ़, समुद्री तूफान, नदी प्रवाह से फसलों को हानि, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति एवं आकाशीय बिजली गिरने से पर्वतीय क्षेत्रों में अनेकत्र भूस्खलन एवं भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि के योग हैं।

जुलाई (सन् 2020 ई.)—जुलाई के प्रारम्भ के लगभग से गुरु वक्री होगा, साथ ही बुध-शुक्र भी वक्री हैं, यह योग कहीं भयंकर दुर्भिक्ष की स्थिति बना सकता है, जोकि महंगाई से जनता को परेशान करेगा। 1, 9, 10, 14, 16, 18, 19, 20, 21, 22, 23 एवं 26 जुलाई के लगभग उड़ीसा, असम, कश्मीर, चण्डीगढ़, दिल्ली एवं केरल, हि.प्र., उ.प्र., उ.खण्ड एवं उ. भारत में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। कहीं वर्षा, कहीं भयंकर सूखा रहने से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। इस मास में बुध-राहु पर शनि दृष्ट मंगल की दृष्टि एवं सूर्य-शनि का समसप्तक वायुवेग एवं अनेकत्र प्राकृतिक प्रकोप से हानिकारक मालूम देता है।

अगस्त (सन् 2020 ई.)—अगस्त 1 से 10, 15 से 18 तक तथा 20 से 23 एवं 30, 31 अगस्त के लगभग भारत के अनेक प्रान्तों में कहीं बाढ़, कहीं सूखा व दुर्भिक्ष की स्थिति बने। कश्मीर, उ.खण्ड, महाराष्ट्र, उ.प्र., चण्डीगढ़ एवं दिल्ली आदि व राजस्थान, बिहार, बंगाल एवं म.प्र. के कुछ क्षेत्रों में कहीं बादलचाल के साथ खण्डवृष्टि हो, हवा का जोर रहे।

सितम्बर (सन् 2020 ई.)—1, 2, 3, 8, 9, 13, 15, 16, 17, 18, 20 से 23, 26, 27 एवं 28, 29 सितम्बर के लगभग नेपाल, दार्जीलिंग, विन्ध्यप्रदेश, उ. प्रदेश, हि.प्र., कश्मीर एवं उत्तराखण्ड में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। हि.प्र., उ.खण्ड एवं कश्मीर के कुछ हिस्सों में हिमपात के समाचार भी मिलेंगे।

अक्तूबर (सन् 2020 ई.)—4, 9, 10, 13, 17, 19, 20, 23, 24, 27, 28, 30 एवं 31 अक्तूबर के लगभग श्रीलंका, आसाम, बंगाल, उ.प्र., किंवा भारत के पश्चिमी भागों में कहीं बादलचाल, तूफान, किंवा वायुवेग के साथ वर्षा हो। उ.भारत के तापमान में गिरावट आने लगेगी।

नवम्बर (सन् 2020 ई.)—1 से 4, 6, 11, 12, 13, 15, 16, 19 से 22 नवम्बर, 24 से 26 नवम्बर एवं 28 से 30 नवं. के लगभग कश्मीर, उ.खण्ड, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर आदि में बादलचाल रहे, कहीं भारी हिमपात से यातायात अवरुद्ध रहे। उ.भारत (हरियाणा, चण्डीगढ़ आदि) में बादलचाल, खण्डवृष्टि एवं शीतलहर व धुन्ध किंवा दिल्ली आदि में पर्यावरणविक्षोभ से यातायात बाधित हो। शीतलहर से हानि के समाचार मिलें। 20 नवं. के बाद यान-दुर्घटना से हानि सम्भव है।

दिसम्बर (सन् 2020 ई.)—दिसम्बर 2, 3, 7, 8, 10, 11, 13, 15, 16, 23, 24, 25, 26 एवं 28 दिसम्बर के लगभग, विशेषत: 24/25 दिसं. को उ.भारत में वायु, वर्षा एवं धुन्ध के कारण भयंकर शीतलहर चलेगी। धुन्ध से यातायात अवरुद्ध होगा। कश्मीर, उ.खण्ड, हि.प्र. आदि में जोरदार हिमपात हो एवं भारत के उ.भागों में कहीं खण्डवृष्टि भी हो।

जनवरी (सन् 2021 ई.)—जनवरी 2, 3, 4, 6, 7, 9, 10, 11, 14, 15, 19, 20, 21, 22 से 28 एवं 30 जनवरी को कहीं वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो। उत्तरी भारत के भयंकर शीतलहर की चपेट में आने से अनेकत्र यान-दुर्घटना आदि के अशुभ समाचार मिलेंगे। पर्वतीय प्रान्तों में हिमपात और कुछ प्रान्तों में बादलचाल एवं खण्डतृष्टि भी सम्भव है।

फरवरी (सन् 2021 ई.)—1 से 6 फरवरी, 9, 10, 12, 13, 14, 16, 18, 19, 20, 21, 22 एवं 26 फर. को हवा का जोर रहे। उ.भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल किंवा वायुवेग से कहीं खण्डवृष्टि हो। 21 फर. के करीब ऋतु (मौसम) में परिवर्तन अनुभव होने लगेगा। मंगल-राहु का 21

फर. को मेल कहीं दुर्भिक्ष का संकेत भी देता है—

"राहुरंगारकश्चैक-राशि-ऋक्षगतौ यदा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि: प्रजायते॥"

इस मास के मध्य के बाद वसन्त ऋतु से वातावरण सुहावना हो।

मार्च (सन् 2021 ई.)—मार्च 4, 8, 11, 12, 14, 16, 17, 19, 24, 26, 27 एवं 30, 31 मार्च के लगभग मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम, मुम्बई, प. राजस्थान एवं कश्मीर में कहीं तेज हवाओं के साथ खण्डवृष्टि हो। उ.भारत में वायुवेग रहे एवं गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगेगा।

अप्रैल (सन् 2021 ई.)—2, 5, 6, 9, 10, 11, 13, 16, 20, 24, 27, 29 एवं 30 अप्रैल को पू.असम, पू. बिहार, बंगाल एवं बर्मा के कुछ क्षेत्रों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। उ. भारत में गर्मी बढ़ने लगेगी।

भारत के जलवायु-वर्षाविचार में कुछ विशेष योग—

संवत् 2077 वि. के शुरु से लगभग 4 मई तक शनि-मंगल मकरस्थ (नीच) गुरु के साथ रहेंगे। यह ग्रहस्थिति देश में राजनैतिक अस्थिरता का संकेत देती है। जलवायु विचार से प्राकृतिक प्रकोप हो किंवा कुछ प्रान्त अकालग्रस्त रहेंगे;—"**युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्ष-कारकौ।**" मई में शनि, मंगल, गुरु की स्थिति कहीं अग्रिम वर्षा के कारण फसलों के लिए हानिकारक भी रहे;—"**शनैश्चर-धरापुत्रावेकस्थौ वृष्टिकारकौ।**"

11 मई से 24 जून तक श. गु. शु. की स्थिति लगभग 14 अगस्त तक (विशेषत: 19 जून से 22 अग., सन् 2020 ई. तक); शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि में एवं दोनों ग्रह जलराशि में स्थित होने से कुछ प्रान्तों में भयंकर जल-प्रलय के दृश्य उपस्थित होंगे। कहीं आकाशीय बिजली, कहीं नदियों में तूफान से भयंकर जनधनहानि हो।

अगस्त में गु.शु. का समसप्तक एवं 13 अगस्त तक सू.श. का समसप्तक भी अनेक प्रान्तों में भयंकर अनावृष्टि, दुर्भिक्ष किंवा बाढ़ आदि से खड़ी फसलों के लिए हानिकारक है—

"क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि॥"

लगभग 22 सितं. को मंगल वक्र गति से चलेगा। 13 नवं. तक हिमालय के उन्नत श्रृंगों पर हिमपात आदि से परेशानी रहेगी।

4 नवं. से 24 दिसं. तक शनि-मंगल की स्थिति प्राकृतिक आपदा, वायुवेग, भूकम्प किंवा दुर्भिक्ष आदि से हानिप्रद रहेगी।

14 जनवरी, सन् 2021 ई. से सूर्य-शनि का मकर राशि में मेल एवं इन दिनों चतुर्ग्रही योग और 6 अप्रैल से गुरु के कुम्भ में आने पर वर्षा की कमी से कृषिहानि एवं दुर्भिक्ष के योग बनते हैं—

"कुंभराशिगते जीवे मेघ: स्वल्पाम्बु वर्षति।
कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे समर्घता॥"

आगे कहीं विदेशों एवं भारतीय प्रान्तविशेष में भी जलवायुप्रकोप से समय हानिप्रद मालूम देता है—

"एक राशौ यदा यान्ति चत्वार: पञ्च-खेचरा:।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥"

21 फर. से संवत् 2077 वि. के अन्त तक मंगल-राहु की वृष राशि में स्थिति अनेकत्र कृषियोग्य वर्षा के अभाव व पेयजल की समस्या से शासन-तन्त्र को चिन्तित करेगी—

"राहुरंगारकश्चैक-राशि-ऋक्षगतोऽपि वा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टि: प्रजायते॥"

— — —

व्यापार-विमर्श (संवत् 2077 वि.)

(संवत् 2077 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवं मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक—इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियन्त्रण है और सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रहविशेष की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम 'तेज़ी-मन्दी' कहते हैं।

हम यहां **'व्यापार विमर्श'** में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी-मन्दी का मशवरा अपने ग्राहकों को देते हैं। व्यापारियो! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे।

व्यापारी सज्जनो! 1 जनवरी, सन् 2020 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी-मन्दी की रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाज़ार का चांस अर्थात् सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स, चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल-कालीमिर्च, रुई एवं कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस Rs. 5100/- (इक्यावन सौ रुपये) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से Advance भेजकर Report प्राप्त करें। एक वर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 51,000/- (इक्यावन हज़ार रुपये) है।

Note: व्यापारियों से निवेदन है कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार

संवत् 2077 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी-मन्दी का आकलन

संवत् 2077 वि. में तेज़ी-मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है—

संवत् 2077 वि. का राजा बालग्रह **'बुध'** एवं मन्त्री **'चन्द्र'** है। बुध ग्रह चन्द्र का शत्रु है एवं चन्द्र (चंचल वृत्ति का) बुध का मित्र है। पुनरपि, इन दोनों में अधिक ऐकमत्य न होने से व्यापारक्षेत्र में इस वर्ष भारी उलटफेर होंगे। कुछ देशों से व्यापारिक सम्बन्धों का नवीकरण होगा, कुछ देश व्यापारिक दृष्टि से अपने सम्बन्धों को निराकृत करेंगे। राजनैतिक परिप्रेक्ष्य से इस वर्ष में चीन, पाक, साऊदी अरब आदि देशों से व्यापारिक सम्बन्ध विशेषरूप से कमजोर होने वाली ग्रहस्थिति का संकेत मिलता है। अत: व्यापारिक बन्धुओं से अनुरोध है कि—तेल, कॉटन, बादाम, किशमिश, दालों एवं नमक आदि के व्यापारी बाजार के रुख को देखकर ही काम करें। लेकिन इस वर्ष का राजा बुध इस वर्ष का धनेश भी है, अत: यह वर्ष बहुत नये आयाम एवं नयी योजनाओं के साथ भारत देश को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध एवं महाशक्ति-सम्पन्न देशों की कोटि में मान्यता दे सकेगा।

इस संवत्सर में सूर्य को तीन पद प्राप्त हैं, जिनमें दुर्गेश प्रमुख है, अत: विश्व के कुछ प्रतिष्ठित एवं कुछ यावनदेश भयंकर युद्धाग्नि से त्रस्त रहेंगे, *जिससे शेयर बाजार एवं सभी तरह के व्यापारिक क्षेत्र प्रभावित होंगे। इस वर्ष धान्येश मंगल एवं मेघेश*

दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी।

इस संवत् में चतुर्मेघों में 'आवर्तक' नामक मेघ है। अत: इस वर्ष आंधी, तूफान, हिमस्खलन एवं हिमपात, खण्डवृष्टि, कहीं अकालिक वर्षा, कहीं सूखा आदि प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी फसलों को हानि होने से व्यापारक्षेत्र प्रभावित होंगे।

इस वर्ष नवमेघों में 'संवर्त' नामक मेघ भी "संवर्ते वायु-पीडनम्"—प्रमाणानुसार भयंकर वायुवेग, तूफान आदि से अनेक क्षेत्रों में जनजीवन एवं कृषि को भारी हानि करेगा। विशेषत: पूर्व-दक्षिण में हानि के योग बनेंगे। एक संहिता ग्रन्थ के अनुसार इस वर्ष 'वरुण' नामक मेघ है। इस वर्ष बाढ़-वर्षा से अनेक प्रान्तों में जनजीवन त्रस्त रहे एवं खेती की हानि से भारत का व्यापारक्षेत्र प्रभावित होगा;—"वरुणस्त्वर्णवाकारम्"।

व्यापारी ध्यान दें—संवत् 2077 वि. में ग्रहों के वक्र/मार्ग, युति/प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज; गुड़, दालवाना, विशेषत: रुई, कपास, नरमा, मैंथा, तेल एवं सरसों आदि तिलहन; लाल-कालीमिर्च, जीरा, लौंग, सोना, चांदी में तेजी-मन्दी के भयंकर रिएक्शन्स आएंगे। **दूर-दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आयें। आने *की* असमर्थता में सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स में से किसी भी धातु, अनाज, दालवाना, गुड़, शेयर बाज़ार या तिलहन की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस Rs. 5100/- (इक्यावन सौ रुपये) प्रतिजिन्स/ प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी-मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।**

नोट—संवत् 2077 वि. में संवत् के शुरु से 4 मई तक एवं 19 जून, 2020 ई. से 22 अग. एवं 20 सितं. से संवत् के अन्त तक भारी जलवायु-विपरीतता (वर्षा की कमी आदि किंवा प्राकृतिक प्रकोप) से भारी हानि के योग हैं, जिसका प्रभाव सं. 2077 वि. के प्रारम्भिक समय में व्यापारियों को प्रभावित करेगा। इस समय ताजा मशवरा प्राप्त करें।

ध्यान दें—सं. 2077 वि. में आप दलहन, ग्वार, चना आदि अनाज, सोना-चांदी एवं रुई में अच्छी तेजी से लाभ ले सकेंगे, सम्पर्क में रहें।

सज्जनो! इस वर्ष शनि की मंगल पर दृष्टि एवं आगे शनि-मंगल का वक्रत्व किंवा नवं. में शनि की मंगल पर दृष्टि 21 फरवरी, सन् 2021 ई. को मंगल-राहु का एक-राशिसम्बन्ध भी राजनैतिक दृष्टि से व्यापारक्षेत्र एवं शेयर बाजारों को प्रभावित करेगा। इन दिनों व्यापारी ताजा मशवरा प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

सन् 2020 ई. में संवत् 2077 वि. के प्रारम्भिक मार्च मास के कुछ अन्तिम दिनों में व्यापार के उतार-चढ़ाव के बारे में ग्रहगति के अनुसार संक्षेप में लिख देना चाहते हैं, जो कि इस प्रकार है;—

22 मार्च को मंगल शनि की राशि मकर में दाखिल होकर शनि के साथ मेल करेगा। यह योग विश्व की राजनीति को क्षुब्ध करने वाला है। कहीं व्यापक युद्धमय वातावरण बनने से भयंकर तेजी-मन्दी बनेगी, सावधान रहें। इस वक्त रुई, सोना, चांदी, तांबा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवं ऊन तेज हो। अनाज, दालबाना में भी तेजी सम्भव है। 23 मार्च तक तेजी से लाभ लेकर निकल जाएं। 24 मार्च को शुक्र कृत्तिका नक्षत्र में आकर बाजारों में मन्दी का रुख बना सकता है। हमारे विचार से इस समय जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, बिनौला, खल, रुई, सूत, ऊन, वस्त्र, चांदी, सोना, हीरा, मणि, मोती आदि जवाहरात में मन्दे का रुख रहेगा।

28 मार्च को शुक्र वृष राशि में आकर स्वगृही रहेगा। शुक्र का विशेष प्रभाव रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, तिलहन तथा चांदी के बाजारों पर देखा गया है। क्योंकि अकेला शुक्र मन्दीकारक होता है, अत: यहां घटाबढ़ी से मन्दी ही करेगा।

29 मार्च को गुरु मकर राशि में दाखिल होगा। ध्यान दें, मकर राशि में शनि-मंगल भी मौजूद हैं। यद्यपि गुरु मन्दी-प्रधान ग्रह है। यह सभी हाजर बाजारों पर जोरदार घटाबढ़ी करता है। यहां शनि-मंगल का साथ होने पर भी गुरु तेजी को रोक देता है।

मकरस्थ गुरु जलवायु को प्रभावित करता है, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं राजनैतिक स्थिति से व्यापार प्रभावित होगा—

"मकरे तु गुरौ याते दुर्भिक्षं घोर-दारुणम्।
विग्रहं यान्ति राजान: त्रिमासान्ते शुभं भवेत्॥"

लगभग 31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आकर शनि-मंगल से दृष्ट भी होगा। सूर्य का प्रभाव रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, अनाज, सोना, शेयर बाजार,

हल्दी, कालीमिर्च पर विशेष रहता है। यहां सूर्य पर शनि की नजर होने से मार्च के अन्त में तेजी मालूम देती है।

अप्रैल (सन् 2020 ई.)

मासारम्भ में गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सोना, चांदी, लोहा, तांबा, निक्कल आदि धातु एवं अनाज मन्दे रहें। चावल, सौंका एवं रुई में तेजी रहेगी।

व्यापारी ध्यान दें कि—5 अप्रैल के लगभग शनि उ.षा. नक्षत्र के चतुर्थ चरण में दाखिल होगा। इस समय अनाज, रुई, कपास, लोहा, चन्दन, मजीठ, दाख, छुहारा तेज होंगे। पहिले से स्टॉक कर लें। फिर पहिले, छठे, तीसरे मास में उत्तम लाभ मिलेगा।

7 अप्रैल को बुध मीन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। जब भी बुध-सूर्य एकत्र होते हैं तो बुध की शक्ति प्रबल हो जाती है। इस समय मकर राशिस्थ मंगलयुत शनि की इन पर विशेष दृष्टि भी है। अत: बिनौला आदि तिलहन, सीमेण्ट, सोना, चांदी आदि धातु, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी ही रहेगी। इनमें यदि कुछ घटाबढ़ी भी हो, फिर भी अन्तत: तेजी प्रधान रहेगी। क्योंकि बुध शुभ-ग्रहदृष्टियोग से मन्दी एवं पाप-ग्रहदृष्टियोग से तेजीकारक ही रहता है।

8 अप्रैल को शुक्र रोहिणी नक्षत्र में दाखिल होगा, गुरु ग्रह की इस पर इस समय विशेष दृष्टि भी है। अत: 12 दिन में सोना, चांदी आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी एवं नारियल मन्दे होंगे, स्टॉक करें। अफीम तेज रहेगी।

9 अप्रैल को बुध उ.भा. में आकर चांदी में घटाबढ़ी; रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाजों का भाव सम रखेगा। यह ट्रैंड 12 अप्रैल तक रहे।

13 अप्रैल को सूर्यदेव अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में प्रविष्ट होंगे। इस समय मकरस्थ मंगल की सूर्य पर विशेष दृष्टि भी रहेगी। यह अच्छी तेजी का योग है। अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, लाल चन्दन, नारियल, सुपारी, हींग, मेथी, लौंग, इलायची, अनाज, रुई, सूत, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बादाम, फल एवं चांदी, सोना आदि धातुएं अच्छी तेज होंगी। 16 अप्रैल तक लाभ लें।

17 अप्रैल को बुध रेवती नक्षत्र में आयेगा। लालमिर्च, लाल चन्दन एवं अन्य लाल चीजों में तेजी करे, लेकिन गुड़, खाण्ड, तिल तेल, सरसों एवं चांदी में मन्दी करेगा। यह तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज 23 अप्रैल तक रहेंगे। इस समय हमसे ताजा मशवरा करें।

22 अप्रैल के लगभग बुध पूर्व में अस्त होगा। इस समय बुध पर शनि की दृष्टि भी है। अत: रुई में घटाबढ़ी (पहिले तेज, बीच में मन्दी, फिर रुई तेज) होगी। सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। आगे घी, तेलादि में मन्दी सम्भव है।

24 अप्रैल को बुध अश्विनी- मेष में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। मंगल धनिष्ठा में है एवं चन्द्रदर्शन भी इसी दिन होगा। इस स्थिति में सूर्य-बुध पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी।

यद्यपि मेषस्थ बुध मन्दीकारक रहता है, फिर भी मौजूदा ग्रहस्थिति के अनुसार यहां चांदी, सोना, गेहूं, चना,जौ, तेल, तिलहन, सरसों, कपास, घी, गुड़, खाण्ड, दालवाना में सामान्यत: मन्दे के बाद तेजी बनेगी। पीतल, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, लोहा आदि में तेजी रहे।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी में एवं इसी दिन शुक्र मृगशिरा में दाखिल होगा। रुई, अलसी में मन्दी, सोना, चांदी, तांबा, मूंगा, पीतल, बर्तन आदि मैटल, गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, अलसी, सरसों, रुई, गुड़, खाण्ड एवं घी तेज रहें।

इस प्रकार मासान्त तक तेजी प्रधान रहेगी।

अप्रैल 7, 8, 13, 14 के लगभग शेयर बाजारों में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

मई (सन् 2020 ई.)

मई के प्रारम्भ में ही बुध भरणी नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एक राशि एवं एक-नक्षत्रसम्बन्ध बना लेता है। यह योग बाजारों में तेजी करेगा। चावल आदि मोटे अनाज, दालें एवं तेलों में 8 दिन में तेजी होगी।

4 मई को मंगल कुम्भ (शनि की) राशि में प्रवेश करेगा। इस समय मंगल की विशेष दृष्टि शुक्र पर रहेगी। यह योग रुई और चांदी में जोरदार तेजी का है। सभी अनाज, गुड़, खाण्ड, सोना भी तेजी में रहेंगे। यह तेजी 6 मई तक रहे, तुरन्त लाभ लें।

7 मई को बुध कृत्तिका नक्षत्र में आकर चांदी, अफीम में विशेष घटाबढ़ी करके मन्दी करेगा। अनाज कुछ तेज, रुई में भी तेजी हो।

9 मई के लगभग बुध वृष राशि में दाखिल होगा। इस समय बुध पर मंगल की दृष्टि भी है। 15 दिन में रुई मन्दी होकर तेज हो। सभी व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी रहे। गेहूं, चना, चावल, मटर, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल तेज रहें।

11 मई को सूर्य कृत्तिका में आयेगा एवं शनि भी इसी दिन मकर राशि में वक्री हो रहा है। यह योग सट्टा बाजार में जोरदार तेजी का रहेगा। घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, राई, सरसों, सिक्का, कली, तेल, तिलहन, तम्बाखू, सीमेण्ट तेज रहेंगे।

(शेयर बाजार भी इस मास में 9 से 14 मई तक तेज रहें।)

13 मई के लगभग बुध रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। **ध्यान दें**—13 मई को ही गुरु वक्रगति से चलने लगेगा। इस प्रकार इस समय शनि-गुरु दोनों वक्र गति में हैं। 14 मई को सूर्य वृष राशि में दाखिल होकर बुध के साथ मेल करेगा। 14 मई को शुक्र भी वक्री हो रहा है। **ध्यान दें**—11 से 14 मई के लगभग शनि, गुरु, शुक्र—ये तीनों ग्रह वक्री हो चुके हैं। अतः वायदा बाजार एवं सभी व्यापारिक वस्तुओं में जोरदार तेजी बनेगी।

हमारे विचार से 11 से 14 मई के लगभग रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, गेहूं, जौ, चना जोरदार तेज रहें।

14 मई के लगभग मंगल शतभिषा में आकर रुई, सोना, चांदी एवं अनाजों में मन्दी का झटका दे सकता है। वायदा व्यापारी सावधान रहें।

(14 मई के लगभग से वायदा व्यापार में झटके की मन्दी आ सकती है, सावधानी से काम करें।)

15 मई के लगभग बुध पश्चिम में उदित होगा। इस समय वस्त्र, रुई, शेयरों में मन्दी बनेगी। यह मन्दे का रुख 20 मई तक उत्तम-मध्यमरूप से चलेगा। क्योंकि 20 मई को बुध मृगशिर नक्षत्र में आकर रुई में तेजी एवं चांदी व अन्य व्यापारिक वस्तुओं में प्रायः मन्दी करेगा। इसी दिन अर्थात् 20 मई को ही मृग. 4 में राहु और मूल 2 में केतु का संचार होगा।

(शेयर बाजारों में 15 से 20 मई तक के लगभग मन्दा बनेगा।)

ध्यान दें—राहु-केतु का नक्षत्रचरणप्रवेश अचानक तेजी भी कर सकता है। अतः बाजार के रुख को देखकर ही काम करें।

आगे 24/25 मई का दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है। 24 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। इसी दिन बुध मिथुन में दाखिल होगा। इस समय बुध सूर्य से अलग होकर राहु के साथ मेल करेगा। मंगल की बुध-राहु पर विशेष दृष्टि भी है। अतः रुई, सोना, चांदी, सरसों, तारामीरा, तेल, तिलहन, मूंग, उड़द, मोठ, गुड़ आदि में अच्छी तेजी के झटके आयेंगे, तुरन्त लाभ लें। यह तेजी-मन्दी के झटके 27 मई तक चलेंगे।

28 मई को बुध आर्द्रा नक्षत्र में एवं वक्री शुक्र रोहिणी में दाखिल होगा। इस समय गुड़, खाण्ड, रुई, सोना, चांदी, निक्कल, जिंक आदि धातुएं तेज रहेंगी। घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दी का रुख रहे। अफीम में तेजी का रुख रहे। यह व्यापारिक तेजी-मन्दी मई मास के अन्त तक चलेगी, अतः सावधानी से काम करें।

जून (सन् 2020 ई.)

मासारम्भ में सूर्य की सन्निधि में शुक्र वृष राशि में अस्त होगा। इस समय मंगल एवं गुरु की शुक्र-सूर्य पर दृष्टि भी होगी। अतः इस समय कुछ प्रान्त भयंकर सूखाग्रस्त रहेंगे, कुछ प्रान्त भयंकर प्राकृतिक आपदा (वर्षा, बाढ़ आदि) से पीड़ित रहेंगे। लेकिन हमारे विचारानुसार उड़द, मूंग, मोठ, तिल अधिक मात्रा में होने से सस्ते रहें। गुड़, खाण्ड भारी तेजी में रहें, मोटे अनाज सस्ते रहें।

4 जून को तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, नारियल, सुपारी, रुई, सूत, सोना, चांदी तेज रहें। **क्योंकि 4 जून को मंगल पू.भा. में आयेगा। यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से**

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 11 जून तक चलेगी।

7 जून को सूर्य मृगशिर नक्षत्र में आयेगा एवं जून के दूसरे सप्ताह में लगभग 10 जून को शुक्र उदित होगा। **क्योंकि शुक्र मनुष्य गण एवं राजद्वार में उदित होगा। अत: बाजार तेजी में रहेंगे।** हमारे विचार से 11 जून तक रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी, घी, तेल, कपास, बारदाना में तेजी रहे।

12 जून को बुध पुनर्वसु नक्षत्र में आकर 8 दिन में चांदी, रुई, कपास, सूत में झटके की मन्दी करेगा।

14 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर बुध और राहु के साथ मेल करेगा। सूर्य-बुध-राहु एक साथ होने से वर्षा-वायु एवं प्राकृतिक प्रतिकूलता से व्यापारिक वस्तुओं की उपलब्धता सहज न होने से जोरदार तेजी होगी। परिणामस्वरूप, फल, सब्जियां, पाट, वारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, उड़द, मूंग, गेहूं, चना, चावल आदि अनाज तेज रहेंगे। सोना, चांदी में भी तेजी का ही रुख रहेगा।

ध्यान दें—14 से 19 जून के मध्य वायदा एवं शेयर बाजारों में जोरदार तेजी बनेगी।

16 जून को मिथुन राशि में बुध वक्री होगा। इस समय मिथुन राशि में वक्र राहु के साथ सूर्य भी है। अत: रुई, सोना, चांदी, अलसी, गेहूं एवं लाल रंग की चीजों में जोरदार तेजी बनेगी।

ध्यान दें—इस समय शनि-बुध-राहु-शुक्र-गुरु—ये पांच ग्रह वक्रगति से चल रहे हैं, अत: भयंकर प्राकृतिक आपदा से बाजारों में भारी तेजी बनेगी।

17 जून को वक्री शनि उ.षा. में आकर अनाज, रुई, कपास, मजीठ, चन्दन, दाख, छुहारा तेज करे। स्टाकिस्टों को पहिले, तीसरे, छठे मास में द्विगुणित-त्रिगुणित लाभ मिलेगा।

व्यापारी सावधान रहें—19 जून को मंगल मीन राशि में प्रविष्ट होगा। इस [illegible]

में हैं। इस समय भयंकर वर्षा, बाढ़, प्राकृतिक आपदा से फसलों को हानि पहुंचेगी, व्यापार प्रभावित होगा। इन दिनों रुई, सोना, लालमिर्च, घी, तेल, तिलहन एवं लकड़ी से बनी वस्तुएं तेज रहें। चांदी में घटाबढ़ी के साथ पहले मन्दी, फिर तेजी बने। यह चक्र 20 जून तक चल सकता है।

21 जून को वक्री बुध आर्द्रा नक्षत्र में एवं सूर्य भी इसी दिन आर्द्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। बुध अस्त भी इसी दिन के लगभग हो रहा है। इस दिन सूर्यग्रहण का प्रभाव भी व्यापार पर पड़ेगा। गेहूं, उड़द, जौ, चना, मूंग एवं मोठ मन्दे रहें। रुई में 15/20 टका की शीघ्र ही झटके से मन्दी आये। पाट, हैसियन और शेयर बाजार मन्दे हों।

(20, 21 जून को शेयर बाजारों में अचानक जोरदार मन्दा आने का योग है।)

21 जून को तिलहन एवं गुड़ तेज होंगे।

22 जून के लगभग चन्द्रदर्शन सोना, चांदी में मन्दा करे। इन दिनों गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, गेहूं, चना एवं जौ में तेजी का रुख रहेगा। 23 जून तक साधारण तेजी-मन्दी चलेगी।

24 जून के लगभग शुक्र मार्गी होगा। इस समय मंगल पर गुरु की दृष्टि भी है। अत: रुई में अचानक मन्दी बनेगी। चांदी, मोती, सोना तेज रहें। इन दिनों धान्य, गुड़, घी का स्टॉक करने से आगे अच्छा लाभ मिलेगा।

25 जून को मंगल उ.भा. में प्रविष्ट होगा। 1 मास में देवदारु, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थ, सोना, चांदी, गेहूं, रुई, जौ, चना तेज रहेंगे।

30 जून तक यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से चलेगी।

30 जून को वक्री गुरु उ.षा. 1 धनु में दाखिल होगा। इस समय धनुस्थ गुरु के साथ केतु है, बुध-राहु-सूर्य की इस पर दृष्टि भी है। अत: यह तेजी का चांस है—

"धनुराशिं गते जीवे गोधूमादि-महर्घता।
वर्षाकाले भवेत्तत्र समर्घं च तिलं गुड़म्॥"

नोट—वर्तमान ग्रहस्थिति के अनुसार गुड़, खाण्ड, शक्कर में भयंकर मन्दी

शास्त्रों में लिखी है। लेकिन हमारे विचार से मन्दी न आकर गुड़, खाण्ड, शक्कर में जोरदार तेजी सम्भव है, फिर भी बाजार का रुख देखकर काम करें।

अत: गुड़, खाण्ड में भारी तेजी सम्भव है। नमक, गेहूं आदि अन्न, पाट, सण, तिल, तेल, घी, सोना, चांदी, पीतल, लोहा, तांबा, कांसी, सिक्का आदि में जोरदार मन्दी और तेजी के झटके आयेंगे।

नोट—आगे कार्त्तिक में घी का स्टॉक करने पर चैत्र में लाभ मिलेगा।

जुलाई (सन् 2020 ई.)

मासारम्भ में बुध-गुरु-शुक्र वक्री हैं। 5 जुलाई को सूर्य पुनर्वसु में प्रविष्ट होगा। इस समय सूर्य पर शनिदृष्ट मंगल की दृष्टि भी है, सूर्य का मेल राहु व बुध के साथ है। अत: रुई, सोना, चांदी, गुड़, सण, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सज्जी, हरड़, सुपारी, माजू, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थ एवं सभी किरयाणा की वस्तुएं तेज रहेंगी।

ध्यान रहे कि—8 जुलाई तक बाजार तेज रहेंगे। आगे लगभग 9 जुलाई को बुध के पूर्व में उदित होने पर बाजारों में या तो जोरदार और भी तेजी आयेगी या बाजार मन्दे होंगे। परन्तु हमारा विचार तेजी का है।

8 जुलाई के लगभग रुई में मन्दी होकर 25 दिन में 15 टका की तेजी बनेगी। गेहूं, चना आदि अनाजों में 40 दिन में तेजी बनेगी। घी, तिल, पाट, हैसियन एवं लालमिर्च में भी तेजी रहे। 13 जुलाई तक बाजार तेज रहें।

13 जुलाई तक वायदा एवं शेयर बाजार जोरदार तेज एवं आगे 14 जुलाई से शेयर मन्दे होंगे, सावधान रहें।

14 जुलाई के लगभग बुध के मार्गी होने पर बाजार मन्दे होंगे।

14 जुलाई के लगभग बुध की स्थिति के अनुसार रुई में पहिले मन्दी, बाद में तेजी हो। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। 8 दिन में गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज होंगे। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दे का वातावरण रहे।

16 जुलाई को सूर्य कर्क राशि में दाखिल होकर शनि के साथ समसप्तकयोग बनायेगा। यह योग वायदा एवं हाजर व्यापारियों को भयंकर तेजी से लाभ देगा।

रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों आदि तिलहन, तेल, घी एवं सोना, चांदी में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। लेकिन गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल में उठापटक रहे।

18 जुलाई को रेवती नक्षत्रस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि तो रहेगी, लेकिन फिर भी बाजारों में उठापटक रहेगी। गेहूं, चना, मूंग, मोठ, जौ, ज्वार, बाजरा में कुछ मन्दी, चांदी, सोना तेज रहें। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो।

19 जुलाई को सूर्य पुष्य नक्षत्र में दाखिल होगा। तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, हींग, हल्दी, लाख, ऊनी वस्त्र, सिक्का एवं सोना, चांदी तेज रहेंगे। रुई में पहले तेजी आकर बाद में मन्दी रहे।

नोट—यद्यपि पुष्य नक्षत्र का सूर्य मन्दीकारक माना गया है, परन्तु यहां सूर्य-शनि परस्पर दृष्टिसम्बन्ध बना रहे हैं, अत: तेजी प्रधान रहेगी।

व्यापारी नोट करें कि—यदि श्रावण कृष्ण पंचमी को वर्षा हो तो उत्तम फसल होने से, बाजार मन्दे हों, यदि इस दिन हवा का जोर रहे तो भयंकर दुर्भिक्ष से जनजीवन परेशान रहता है। ऐसा शकुनशास्त्रियों का वचन है—

"श्रावण पहली पंचमी वर्षे करे निहाल।
पवन चले तो अतिबुरी पड़े हलाहल काल॥"

21 जुलाई को मृग. 3 में राहु एवं मूल 1 में केतु है और राहु के बुध के साथ होने, राहु पर मंगल की दृष्टि और मंगल पर शनि की नजर भी है। अत: वायदा एवं शेयर बाजार 19 से 21 जुलाई तक तेज रहेंगे।

22 जुलाई को बुधवार वाले दिन कर्क राशि में चन्द्रदर्शन होगा। 23 जुलाई को शुक्र के मृग. नक्षत्र एवं 26 जुलाई को बुध के पुनर्वसु नक्षत्र में प्रवेश के वक्त **व्यापारी सावधान रहें।** क्योंकि इन दिनों सोना, चांदी, रुई, सूत, वारदाना, गुड़, शक्कर,

खाण्ड मन्दे हों। कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। 23 जुलाई को गेहूं, चना, ज्वार मन्दे, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहेंगे। 26 जुलाई को आगामी 8 दिनों में चांदी, रुई में खासी मन्दी रहे। क्योंकि राहुयुत बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि भी है।

26 जुलाई को वक्री गुरु पू.षा. 4 में आकर अचानक जोरदार तेजी या मन्दी का झटका लायेगा। हमारे विचार से रुई, सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि धातुएं एवं अनाजों में जोरदार तेजी अचानक बनेगी। जुलाई मासान्त तक सभी वायदा बाजारों में जोरदार तेजी या मन्दी के झटके आयेंगे। विचारपूर्वक लाभ लेते रहें।

अगस्त (सन् 2020 ई.)

1 अगस्त को शुक्र मिथुन राशि में आयेगा। इस समय **शुक्र का मेल राहु के साथ होगा एवं शुक्र-राहु पर मंगल एवं गुरु की दृष्टि भी होगी। अत: रुई, कपास, सूत, बारदाना, एरण्ड, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि में काफी मन्दी का झटका आयेगा, सावधान रहें। मन्दी आते ही स्टॉक करें।**

2 अगस्त को बुध कर्क राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा एवं सूर्य-बुध का मेल झटके की तेजी बनायेगा। **ध्यान दें—इस समय सूर्य-बुध पर शनि की दृष्टि भी है। अत: शेयर एवं सट्टा बाजार में झटके की तेजी से लाभ मिलेगा।**

व्यापारी नोट करें कि—2 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। अत: 14 दिन में सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील के भाव में तेजी बनेगी। **नोट करें**—यद्यपि कर्क राशि का बुध रुई, चांदी, तेल, तिलहन, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी करता है, लेकिन यहां इस पर शनि की दृष्टि से सर्वत्र तेजी ही बनेगी। तुरन्त लाभ लें।

3 अगस्त को बुध पुष्य नक्षत्र में आकर 10 दिन में सोना, चांदी में झटके से मन्दी करेगा। मणि, मोती आदि जवाहरात एवं ऊनी वस्त्र तेज रहें।

4 अगस्त को वक्री शनि उ.षा. 2 में आकर सूर्य-बुध से दृष्टिसम्बन्ध बना रहा है। मंगल पर इस समय शनि की दृष्टि भी है। इन दिनों गुरु-शुक्र का समसप्तक भी चल रहा है। अत: प्राकृतिक आपदा (वर्षा की कमी, दुर्भिक्ष आदि) से व्यापार प्रभावित होंगे—

"क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि॥"

इस समय गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार मोटे अनाज, दालें, रुई, कपास, सोना, चन्दन, चांदी, लोहा, दाख, छुहारा, मजीठ, सिक्का, कली, पीपल, ज्वार, चावल, घी, तेल, तिलहन, तम्बाखू, सीमेण्ट एवं खादी वस्त्र तेज होंगे।

(4, 5 अगस्त को शेयरों में जोरदार तेजी के बाद मन्दी बनेगी।)

5 अगस्त के लगभग बुध के पूर्वास्त होने पर अनाज, घी, तेल, तिलहन में मन्दी बने। रुई एवं चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। इस प्रकार व्यापारिक तेजी मन्दी 9 अगस्त तक चल सकती है।

10 अगस्त को बुध आश्लेषा नक्षत्र में दाखिल होगा। ध्यान रहे—इस समय सूर्य भी आश्लेषा नक्षत्र में ही है। सूर्य-बुध पर शनि की दृष्टि भी है। 15 दिन में तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली आदि तिलहन, घी, दालवाना में भयंकर तेजी से लाभ मिलेगा।

नोट—10 से 17 अगस्त के मध्य वायदा एवं शेयर बाजारों में भयंकर तेजी रहे। तुरन्त लाभ लेते रहें, आखिरी समय की प्रतीक्षा न करें।

16 अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रवेश करेगा। 17 अगस्त को बुध भी मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में एकनक्षत्र एवं एकराशिसम्बन्ध बनायेगा। सिंह राशि पर बृहस्पति की दृष्टि है। अत: रुई, सोना, चांदी, मूंग, ज्वार, बाजरा, तिलहन, दाख, मिर्च, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तेल, घी एवं लाल रंग की चीजें तेज रहें। ऊनी वस्त्र भी तेज रहेंगे।

(16, 17 अगस्त को शेयर बाजारों में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।)

व्यापारिक वस्तुओं में यह तेजी 19 अगस्त तक रह सकती है।

20 अगस्त के लगभग चन्द्रदर्शन एवं 22 अगस्त को शुक्र का पुनर्वसु में

प्रवेश बाजारों में मन्दी कर सकते हैं। अतः विचारपूर्वक काम करें। लेकिन हमारे विचार से—इन दिनों रुई, सूत, रेशमी एवं ऊनी वस्त्र, सरसों, तेल, अनाजों, घी, गुड़, खाण्ड, कपास में तेजी रहे। सोना, चांदी में मन्दी सम्भव है।

22 अगस्त को मंगल अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर गुरुग्रह की दृष्टि में आ जाता है। इस दिन या एकाध दिन आगे तक ज्वार, बाजरा, चना, ऊन, मूंग, गेहूं, गुड़, खाण्ड, घी, रुई, सोना तेज रहेंगे। चांदी में मन्दी सम्भव है। यहां तेजी साधारण रहे, क्योंकि मंगल पर गुरु की दृष्टि है।

23 अगस्त को पू.फा. नक्षत्र का बुध गुड़, खाण्ड एवं गेहूं आदि अनाजों में मन्दी करेगा। 29 अगस्त तक बाजार तेजी-मन्दी के प्रभाव में रहेंगे।

30 अगस्त को पू.फा. में सूर्य एवं 31 अगस्त को बुध उ.फा. में एवं इसी दिन शुक्र कर्क राशि में प्रविष्ट होगा। अतः 30 अगस्त को जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल, ऊनी वस्त्र, रुई, सूत तेज रहेंगे।

31 अगस्त को शुक्र पर शनि एवं मंगल की दृष्टि होने से वायदा बाजार तेज रहेंगे। रुई, अलसी आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, सोना, चांदी, दालवाना में तेजी से लाभ मिलेगा।

(31 अगस्त के लगभग शेयर बाजारों में जोरदार तेजी सम्भव है। सावधानी से काम करें।)

सितम्बर (सन् 2020 ई.)

1 सितम्बर के लगभग से श्राद्ध पक्ष का प्रारम्भ सोना, चांदी के व्यापारियों के लिए मध्यम रहेगा।

2 सितम्बर को बुध कन्या राशि में आकर रुई, चांदी में मन्दी; गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड एवं घी, हल्दी में तेजी से व्यापारियों को लाभ देगा।

ध्यान दें—2 सितम्बर को बुध अपनी राशि में आकर घी, चीनी, गुड़, चावल आदि में तेजीकारक ही है।

3 सितम्बर को शुक्र पुष्य नक्षत्र में आकर रुई, सूत, रेशम, ऊन, धान तेज करेगा। लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, शिंगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी करे। यह मन्दी का प्रभाव 12 सितम्बर तक चल सकता है।

नोट करें—8 सितम्बर को हस्त नक्षत्र में बुध एवं वक्री गुरु के पू.षा. नक्षत्र में आने पर गेहूं आदि अनाज, रुई, सोना, चांदी आदि धातु—ये सब मन्दे रहेंगे। यह मन्दी 12 सितम्बर तक चलेगी।

13 सितम्बर को सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आकर रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ग्वार, ज्वार, सुपारी, मूंग, बांस, नील में तेजी बना सकता है।

15 सितम्बर को गुरु मार्गी होगा। वक्र राहु के साथ गुरु का समसप्तकयोग बन रहा है। तिल, तेल, घी, अनाज में **जोरदार तेजी-मन्दी बनेगी, सावधानी से काम करें।** पूर्वी प्रदेशों में वर्षा आदि जलवायु के अनुकूल रहने से अनाज सस्ते रहेंगे।

16 सितम्बर को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध के साथ **'एकराशिसम्बन्ध'** बनायेगा। यह बुध के साथ मिलकर तेजी की तरफ बाजारों को ले जायेगा। साथ ही 16 सितम्बर को शुक्र आश्लेषा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। **यहां ध्यान दें—यहां शुक्र-शनि का समसप्तक है एवं शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि है। अतः मन्दे की उम्मीद होने पर भी हमें आगे तेजी के ही बाजार मालूम देते हैं।** रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, चावल, अरहर एवं लाल वस्तुएं तेज रहेंगी। सोना, चांदी, हीरा आदि में भी तेजी बनेगी।

17 सितम्बर को बुध चित्रा में एवं गुरु पू.षा. 4 में प्रविष्ट होगा। बुध-सूर्य दोनों कन्या में हैं। सभी अनाज, दालवाना तेज रहें। रुई, सोना, चांदी आदि सभी धातुएं भी तेजी में रहें।

नोट—16/17 सितम्बर को शेयर बाजारों में अच्छी मन्दी का झटका आकर तेजी बनेगी।

18 सितम्बर के लगभग चन्द्रदर्शन बाजारों में मन्दीकारक रहे। सरसों, तिल, तेल,

गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र एवं ऊन में मन्दी रहे। रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी अवश्य बनेगी। इन दिनों अफीम, गुड़, खाण्ड में घटाबढ़ी एवं जौ मन्दे रहें।

अब आगे व्यापारी ध्यान दें—

20 सितम्बर को मंगल मेष राशि में वक्री हो रहा है। यद्यपि इस समय मंगल पर गुरु की दृष्टि भी है, परन्तु यह योग सभी दालों, अनाजों, रुई, सोना, चांदी, तांबा, अलसी, गेहूं एवं गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी एवं लाल चीजों में विशेषत: **तेजीकारक ही रहेगा।**

22 सितम्बर को बुध तुला राशि में दाखिल होगा। इस समय बुध पर वक्री मंगल की दृष्टि भी है। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम तेज रहेंगे। चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन में कुछ मन्दी आकर तेजी बनेगी। वायदा बाजारों में अन्तत: तेजी से ही लाभ मिलेगा। **ध्यान दें कि—22 सितम्बर को राहु मृग. 2 एवं केतु ज्येष्ठा 4 में आकर वृष एवं वृश्चिक राशियों को प्रभावित करेगा। इस समय व्यापारी नोट कर लें कि—अगर 22 सितम्बर के लगभग कांसी, लाख, मजीठ, सोंठ, मिर्च, हींग एवं घी में मन्दी बने तो खूब स्टॉक करें, आगे 6 महीनों में उत्तम लाभ मिलेगा—**

"संग्रहः सर्वधान्यानां घृतं तैलं विशेषतः।
कुंकुमं गन्धद्रव्यं च कार्पासश्च गुडस्तथा॥
मासानां षट्कं धृत्वा विक्रयं सप्तमे पुनः।
ज्ञेयश्चतुर्गुणो लाभः सत्यमेव हि नान्यथा॥"

26 सितम्बर को सूर्य हस्त नक्षत्र में दाखिल होकर 15 दिनों के मध्य गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, जूट, लकड़ी, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी **आदि में तेजी करेगा।**

27 सितम्बर को बुध स्वाती एवं शुक्र मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रविष्ट होकर गुरु की नजर में आ जाता है। गेहूं आदि अनाज, सोना, तांबा, मजीठ, लालमिर्च, घी, गुड़, चीनी तेज रहें। लेकिन चांदी में पहले 4 दिन में 2/3 टका की मन्दी होकर तेजी हो। रुई में भी मन्दी के बाद तेजी बने।

28 सितम्बर को मकर राशि में शनि मार्गी होगा। इस समय प्राय: सभी व्यापारिक वस्तुओं में उठापटक रहे। व्यापार मन्दे की तरफ बढ़ेगा। 6 दिन में रुई मन्दी होकर तेज हो। आगे 2 मास में तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च तेज होंगे। स्टॉक पहिले ही कर लें।

अक्तूबर (सन् 2020 ई.)

4 अक्तूबर को वक्री मंगल मीन में आकर शनि की दृष्टि में आ जाता है। इस समय मंगल पर सूर्य की दृष्टि भी है। अत: सोना, चांदी, तांबा, लोहा, पीतल, गुड़, खण्ड, घी, सभी तिलहन, तेल एवं दालवाना में तेजी बनेगी। यह तेजी 8 अक्तूबर तक चलेगी। आगे बाजार अचानक मन्दे होंगे।

9 अक्तूबर को शुक्र पू.फा. नक्षत्र में एवं 10 अक्तूबर को सूर्य चित्रा में आ जाता है। 14/15 दिन में गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, चना में कुछ मन्दी आये। **लेकिन यह मन्दी ठहरेगी नहीं।** क्योंकि 10 अक्तूबर को सूर्य का चित्रा में आना तेजीकारक है। अत: रुई, सूत, सोना, चांदी, मोती आदि रत्न, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर, लालमिर्च आदि में तुरन्त तेजी का रिएक्शन आयेगा।

13 अक्तूबर को बुध वक्री होगा। बुध तुला राशि में वक्री हो रहा है। बुध पर शनि-मंगल की दृष्टि भी है। अत: घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में जोरदार तेजी बनेगी। तुरन्त लाभ लें।

17 अक्तूबर को सूर्य तुला राशि में आकर वक्री बुध के साथ मेल करेगा। इन दिनों बुध-सूर्य पर शनि-मंगल की विशेष दृष्टि भी है। इस समय तेजड़िये तेजी खेलकर उत्तम लाभ लेंगे। हमारे विचार से गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, दालों, अलसी आदि तिलहन, सभी तेल, घी, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, निक्कल आदि धातुएं, चन्दन, मजीठ, सुपारी, श्रीफल एवं लालमिर्च आदि करयाणा, रुई, सूत, वस्त्र में उत्तम तेजी के झटके आयेंगे। तुरन्त लाभ लें। यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से 18 अक्तूबर तक चल

सकती है।

(13 से 18 अक्तूबर के मध्य शेयर एवं वायदा बाजार तेज रहेंगे।)

ध्यान दें—19 अक्तूबर के लगभग बुध पश्चिम में अस्त होगा। इस समय बाजारों में अचानक मन्दा बनेगा। इस समय वस्त्र, रुई, शेयर बाजारों में 15 दिन में मन्दी का असर रहेगा।

20 अक्तूबर को शुक्र उ.फा. नक्षत्र में आयेगा। इस समय शुक्र पर मंगल की दृष्टि भी है। अत: गेहूं, जौ, चना आदि अनाज, चांदी, तांबा, सोना एवं रुई में तेजी सम्भव है। इस समय ताजा मशवरा लें।

23 अक्तूबर को सूर्य स्वाती नक्षत्र में एवं शुक्र कन्या में आयेगा। ध्यान दें—कन्या राशि में स्थित शुक्र मंगल के साथ समसप्तकयोग भी बना रहा है। अत: आगामी 15 दिनों में रुई, सूत, सण, रेशम, सोना, चांदी, तांबा, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल, दालों, विशेषत: चावलों में जोरदार तेजी बनेगी। ऊनी एवं रेशमी वस्त्र की खरीदारी अधिक होगी।

27 अक्तूबर को वक्री बुध चित्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय रुई, चांदी में घटबढ़ी होकर तेजी आयेगी। घी एवं अनाजों में कुछ तेजी का झटका आयेगा।

(23 अक्तूबर से 27 अक्तूबर तक वायदा एवं शेयर बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी।)

30 अक्तूबर को गुरु उ.षा. नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। गुड़, खाण्ड में भारी तेजी बनेगी। इस समय धनु राशि का गुरु अनाजों में मन्दी कर सकता है।

31 अक्तूबर को हस्त नक्षत्र में स्थित शुक्र पर मंगल की विशेष दृष्टि है। इन दिनों अनाज, रुई, चांदी, चावल व सोना आदि मैटल तेज रहेंगे।

नोट—यदि इन दिनों अनाज मन्दे हों तो भरपूर स्टॉक करें, आगे उत्तम लाभ होगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी रहेगी।

नवम्बर (सन् 2020 ई.)

1 नवम्बर के लगभग बुध के पूर्व में उदित होने पर रुई में झटके की मन्दी के बाद तेजी बनेगी।

3 नवम्बर को बुध के मार्गी होने पर रुई और चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी। यहां तुला राशि में सूर्य-बुध पर शनि-मंगल की दृष्टि होने से गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज रहेंगे। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन, घी, काली-लालमिर्च एवं सोना, चांदी में अच्छी तेजी सम्भव है।

6 नवम्बर को सूर्य विशाखा नक्षत्र में दाखिल होगा। सभी अनाज, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिलहन, घी एवं सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। यह घटाबढ़ी 5/6 दिन चलेगी। आगे 11 नवम्बर को बुध स्वाती नक्षत्र में एवं शुक्र चित्रा नक्षत्र में दाखिल होगा। 8 दिन में रुई मन्दी हो। 12 दिनों तक सोना, चांदी एवं अनाजों के भाव सम रहें।

अब व्यापारी सावधान रहें, क्योंकि 13 नवम्बर को मंगल मार्गी होगा। नोट करें कि—भौमादि ग्रहों के मार्गी होने पर जो पदार्थ पहिले तेज होते हैं, वे मन्दे होने लगते हैं तथा जो चीजें मन्दी होती हैं, वे तेज होती हैं। हमारे विचार से यहां मंगल पर शनि एवं शुक्र की दृष्टि होने से खरीददारी जोरदार होगी एवं बाजार तेज रहेंगे। रुई में जोरदार मन्दी का झटका सम्भव है। तेल, घी, चीनी, गुड़, खाण्ड, शक्कर एवं चांदी, सोना में तेजी से लाभ मिलेगा।

15 नवम्बर को सूर्य वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होगा एवं राहु के साथ समसप्तक-योग बनायेगा। अत: रुई, सोना, चांदी, तांबा, गुड़, शक्कर, घी, तेल एवं लाल रंग की चीजों में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी रहे। इस समय ऊनी वस्त्रों में विशेष तेजी सम्भव है।

16 नवम्बर को शुक्र तुला में आकर बुध के साथ मेल करेगा। मंगल एवं शनि की इन पर विशेष दृष्टि रहेगी। अत: एक मास में रुई, चांदी और अफीम में तेजी रहे। सोना तेज एवं चांदी में घटाबढ़ी चले। गुड़, खाण्ड, चीनी एवं घी, चना में झटके की तेजी रहेगी। **क्योंकि शुक्र पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि है।** अत: सूत, ऊनी वस्त्र, नमक,

सोना, चांदी तेज रहें।

19 नवम्बर को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में आयेगा। 20 नवम्बर को गुरु उ.षा. नक्षत्र के दूसरे चरण एवं मकर राशि में दाखिल होकर शनि के साथ एक-राशि-सम्बन्ध बनायेगा। इस समय नीच गुरु की राहु पर दृष्टि भी रहेगी। राजनैतिक गतिविधि का प्रभाव व्यापार पर नजर आयेगा। इस समय ताजा मशवरा प्राप्त करें। हमारे विचार से जौ, चना आदि अनाज, सोना, चांदी आदि धातुएं तेज होंगी।

नोट करें—गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इन दिनों रुई में मन्दी होकर तेजी रहे। खासकर 5 मास के बाद 10 मास के अन्दर रुई में सवा सौ टका की घटाबढ़ी होगी। जौ, चना, गेहूं आदि और दालवाना में जोरदार तेजी से स्टॉकिस्टों को लाभ मिलेगा।

तिलहन, कपूर, तांबा, सोना, चांदी में भी उत्तम लाभ मिलेगा। गुड़, खाण्ड, घी भी तेज रहेंगे। मकर में गुरु के आने पर 15 दिन में लाभ लें, अन्यथा मन्दी से हानि में रहेंगे।

21 नवम्बर को बुध विशाखा में आकर बाजारों का रुख बदल सकता है। क्योंकि इसी दिन (21 नवम्बर को ही) शनि उ.षा. के तीसरे चरण में आ रहा है, अत: अनाजों के भाव मन्दे हों, लेकिन मन्दी में स्टॉक करने पर अनाज, रुई, कपास, लोहा, दाख, छुआरा में 1, 3, 6 मास में स्टॉकिस्टों को लाभ मिलेगा। 21 नवम्बर के लगभग रुई में धमाके की मन्दी आ सकती है, सावधान।

24 नवम्बर को मृग. 1 में राहु एवं ज्येष्ठा 3 में केतु का संचार होगा। राहु पर इस समय गुरु-मंगल एवं सूर्य की दृष्टि भी है। अत: शेयर, सट्टा बाजार में जोरदार हलचल होगी।

26 नवम्बर के लगभग बुध पूर्व में अस्त होगा तथा 28 नवम्बर को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा एवं राहु के साथ समसप्तक भी बनायेगा। 26 नवम्बर के लगभग से अनाज, घी आदि मन्दे हों। रुई में घटाबढ़ी एवं सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

30 नवम्बर को बुध अनुराधा नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकराशि एवं एक-नक्षत्र-सम्बन्ध बना रहा है। बालग्रह बुध, सूर्य के साथ मिलकर अफवाहों से बाजारों में

विशेषत: शेयरों में उठापटक करता है, सावधानी से काम करें। इस समय ऊन, सूत, सण, रुई, सोना, चांदी के व्यापारी जोरदार मन्दी या तेजी के बाजार को देखकर काम करें।

दिसम्बर (सन् 2020 ई.)

2 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा और शुक्र विशाखा में दाखिल होगा। पन्द्रह दिन में सोना, चांदी, चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड और रुई में तेजी बनेगी।

7 दिसम्बर को गुरु उ.षा. 3 में दाखिल होगा। इस समय गुरु शनि के साथ मेल कर रहा है। इसलिए गुड़, खाण्ड में भारी तेजी की उम्मीद है। यह तेजी उत्तम-मध्यम-रूप से 10 दिसम्बर तक चल सकती है।

8 दिसम्बर को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर घी, गुड़, खाण्ड, दालवाना और चावल में अच्छी तेजी करे।

10 दिसं. को शुक्र वृश्चिक राशि में दाखिल होकर सूर्य, बुध, केतु के साथ मेल करेगा, अत: रुई, शेयर बाजार, चांदी, अफीम में पहले मन्दी, बाद में तेजी बनेगी। गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में जोरदार तेजी बन सकती है, क्योंकि शुक्र का मेल क्रूर ग्रहों के साथ है।

13 दिसम्बर को शुक्र अनुराधा नक्षत्र में दाखिल होगा, जोकि 22 दिनों में गुड़, खाण्ड, चावल, नमक में मन्दी का कारण बनेगा, लेकिन बाजरा, मूंग, मोठ तेज रहेंगे।

15 दिसम्बर को सूर्य मूल नक्षत्र और धनु राशि में दाखिल होगा। साथ ही 16 दिसम्बर को बुध भी मूल/धनु में दाखिल हो जाता है। जब भी बुध का मेल सूर्य से होता है तो बाजारों में जोरदार तेजी की चाल बनती है। 15 दिन में रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, अलसी, तिल, तेल, घी में अच्छी तेजी का झटका आयेगा। यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से 22 दिसम्बर तक चल सकती है।

24 दिसम्बर को शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में दाखिल होगा। 15 दिनों में सभी अनाज कुछ तेज रहेंगे। लेकिन सोना, चांदी, सरसों, तिल, तेल और हींग में मन्दा रहेगा। 24

दिसम्बर को ही मंगल अश्विनी नक्षत्र और मेष राशि में दाखिल होगा। यह योग सोना, चांदी, पीतल, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, बाजरा, ज्वार, मूंगा, मोती, ऊन, रुई, कपास, शक्कर में अच्छी तेजी करेगा। यह तेजी 15 दिनों तक चल सकती है।

25 दिसम्बर को शनि उ.षा. 4 में दाखिल होगा। इसी दिन बुध पू.षा. में दाखिल होगा। यह योग बिनौला, अनाज, रुई, कपास, लोहा, मजीठ, दाख, छुहारा में अच्छी तेजी करेगा। इस समय सोना, चांदी में जोरदार मन्दी का योग है। संग्रहकर्त्ताओं को पहले, तीसरे और छठे महीने में उत्तम लाभ मिलेगा।

28 दिसम्बर को सूर्य पू.षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। बुध पहले ही पू.षा. में आ चुका है। 14 दिन में तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन और गुड़, खाण्ड, हल्दी, ऊनी कपड़े और चांदी में तेजी आयेगी।

(दिसम्बर 2, 10, 13, 15, 16, 24 और 25 दिसम्बर को शेयर बाजारों में जोरदार उठापटक रहेगी।)

जनवरी (सन् 2021 ई.)

नये वर्ष की व्यापारियों को शुभ कामनाएं।

(2 जन. को बुध उ.षा. नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय बुध सूर्य के साथ है, 3 जन. (सन् 2021 ई.) को शुक्र भी मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में दाखिल होकर सूर्य के साथ मेल करेगा।)

गेहूं, चना, जौ आदि अनाज, चांदी, सोना, तांबा आदि धातु एवं शेयर बाजार तेज रहें। रुई, सूत, कपास में मन्दी के बाद तेजी होगी।

4 जनवरी को बुध मकर राशि में आकर गुरु एवं शनि के साथ मेल करेगा। इस समय जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज आयेंगे। हमारे विचार से रुई, सोना, चांदी तेज होंगे। सभी अनाजों का भाव मध्यम रहेगा।

6 जन. को श्रवण नक्षत्र में गुरु के आने पर गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी तथा अनाज, दालवाना में मन्दे का रिएक्शन आये।

7 जनवरी के करीब शनि के अस्त होने पर ऊनी कपड़े, रुई, सोना, चांदी, लोहा एवं शेयर बाजारों में मन्दी बनेगी और अनाज तेज रहेंगे।

10 जनवरी को सूर्य उ.षा. और बुध श्रवण नक्षत्र में दाखिल होगा। इन दिनों उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, लाल शक्कर, कपास, चमड़ा, सरसों, अलसी में तेजी रहेगी।

ध्यान दें—10 जनवरी के लगभग बुध के पश्चिम में उदित होने पर बाजारों में मन्दी का रुख बनेगा। रुई, शेयर बाजार एवं अनाजों में अचानक मन्दा आयेगा। व्यापारी होशियार रहें।

14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में दाखिल होगा और इसी दिन शुक्र पू.षा. में आ जाता है। यह योग बाजारों में तेजी करेगा। घी, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर और रुई में तेजी बनेगी। गेहूं, मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, नमक तेज रहेंगे।

नोट करें कि—इस वक्त सूरज, बुध, शनि, गुरु—ये चारों ग्रह मकर राशि में ही हैं। इसलिए यह योग जोरदार तेजी का है। यह तेजी उत्तम-मध्यम रूप से 18 जनवरी तक चल सकती है।

19 जनवरी को बुध धनिष्ठा नक्षत्र में आयेगा। गुरु भी लगभग उसी दिन अस्त होगा। चावल, स्वांक, सोना, चांदी, रुई, अनाज एवं शेयर बाजारों में अच्छी मन्दी का रुख बन सकता है। यह मन्दी 21 जनवरी तक चल सकती है।

21 जनवरी को गुरु श्रवण नक्षत्र के दूसरे चरण में आकर गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी और अनाजों में मन्दा ही रखेगा।

22 जनवरी को मंगल भरणी नक्षत्र में आकर गेहूं आदि अनाजों व सोना, चांदी और रुई में झटके से तेजी करेगा। क्योंकि इस समय मंगल अपनी राशि (मेष) में ही है। **यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से 26 जनवरी तक चल सकती है।**

23 जनवरी को सूर्य और शनि-दोनों श्रवण नक्षत्र में दाखिल होंगे। यह योग भयंकर तेजी का मालूम देता है। व्यापारी सावधानी से काम करके 25 जनवरी से पहले ही नफा बुक कर लें तो अच्छा रहेगा, क्योंकि इस वक्त सूर्य, शनि, शुक्र, मकर

राशि में ही रहेंगे।

25 जनवरी को बुध कुम्भ राशि में दाखिल होगा। इस समय घी, तेल, गुड़, खाण्ड में तेजी आयेगी। अलसी, रुई, चांदी में मन्दे का झटका आयेगा। **इसी दिन शुक्र भी उ.षा. नक्षत्र में आयेगा**, जोकि गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड आदि में **तेजी और मन्दे के रिएक्शन करेगा। समझ से काम करें।**

26 जनवरी को राहु रोहिणी नक्षत्र के चौथे चरण में दाखिल होगा। यह योग अच्छी तेजी का है। समझ से काम करें, अच्छा लाभ होगा। रुई, सूत, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता, पीतल, तिलहन, दालों, सभी अनाज, घी, काला जीरा आदि में जोरदार तेजी बनेगी। तुरन्त लाभ लें, आखिरी वक्त का इन्तजार न करें।

27 जनवरी को शुक्र मकर राशि में दाखिल होकर सूर्य शनि और गुरु के साथ मेल करेगा। नोट करें कि—इस वक्त गुरु, शनि, सूर्य—ये तीनों श्रवण नक्षत्र में ही हैं। अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि अनाज तेज रहेंगे।

30 जनवरी को बुध वक्री होगा। यह योग मास के अन्त तक घी, गुड़, खाण्ड और शक्कर में तेजी करेगा। गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मन्दी सम्भव है।

फरवरी (सन् 2021 ई.)

मासारम्भ में ही बुध पश्चिम में अस्त होगा। **बुध कुम्भ राशि में और वक्री पोजीशन में है।** एकदम व्यापार में मन्दे का झटका आयेगा। रुई में 15-20 टका की मन्दी और पाट, हैसियन एवं शेयर बाजार भी मन्दे रहेंगे। चांदी में तेजी सम्भव है।

4 फरवरी को शुक्र श्रवण नक्षत्र में, साथ ही गुरु भी श्रवण नक्षत्र के तीसरे चरण में दाखिल होगा। इस समय शुक्र, गुरु, शनि, सूर्य—ये चारों ग्रह मकर राशि में ही हैं। चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मोठ, उड़द, तिलहन और घी में तेजी रहेगी। रुई में मन्दी के बाद तेजी सम्भव है।

5 फरवरी को सूर्य धनिष्ठा में और इस दिन वक्री बुध मकर राशि में दाखिल होगा। यह योग अच्छी तेजी का है। सोना, चांदी आदि धातु, मोती, मणि आदि जवाहरात, रुई, अलसी एवं अनाजों में अच्छी तेजी का झटका आयेगा, तुरन्त लाभ मिलेगा।

9 फरवरी को शनि उदित होगा और 10 फरवरी को वक्र बुध श्रवण नक्षत्र में दाखिल होगा। 8 दिन में रुई, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन और शेयर बाजार मन्दे होंगे। लोहा, जस्ता, सीसा, लकड़ी, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे।

12 फरवरी को सूरज कुम्भ राशि में दोखिल होगा। घी, तेल, सरसों, मूंगफली, तिल तेज रहेंगे। अनाज, गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें।

13 फरवरी को चन्द्रदर्शन होगा और इन्हीं दिनों में शुक्र पूर्व में अस्त हो जायेगा। रुई में मन्दी हो, चांदी, सोना में घटाबढ़ी होकर तेजी बनेगी। दालवाना, तेल, तिलहन में भी तेजी का झटका आयेगा।

14 फरवरी को बुध पूर्व में उदित होगा। बुध, गुरु, शुक्र, शनि के साथ मकर राशि में है। गेहूं, चना आदि में कुछ ही दिनों में तेजी बनेगी। घी, तिल और लालमिर्च भी तेज रहें। रुई में मन्दी के बाद लगभग 25 दिन में तेजी आयेगी।

15 फरवरी को शुक्र धनिष्ठा और मंगल कृत्तिका नक्षत्र में दाखिल होगा। चावल, मूंग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चांदी, सोना, रुई, कपास, तिल, तेल, सरसों, घी में तेजी बनेगी, **क्योंकि शुक्र सूर्य के साथ है और मंगल स्वस्थ होने से यह योग अच्छी तेजी का है।**

18 फरवरी को गुरु श्रवण के चौथे चरण में दाखिल होकर गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी और अनाजों में मन्दा करेगा।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। सोना, चांदी, तिलहन, तेल, घी, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं एवं गुड़ में तेजी से लाभ मिलेगा।

20 फरवरी को शुक्र कुम्भ राशि में आयेगा। इस समय शुक्र का मेल सूर्य के साथ होगा। इसी दिन के लगभग शनि श्रवण नक्षत्र के दूसरे चरण में आ जाता है। रुई, चांदी, अनाज, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा, तेल, तिलहन और विशेषत: अलसी में खासी तेजी बनेगी।

21 फरवरी को मंगल वृष राशि में आकर राहु के साथ एकराशिसम्बन्ध बना लेगा। इन पर गुरु की दृष्टि भी है, अतः यह अच्छी तेजी-मन्दी का योग है। क्योंकि प्राकृतिक प्रकोप (कहीं वर्षा की कमी आदि) से सभी अनाज, गुड़, लाल मिर्च, शक्कर, रुई, कपास, सूत, कुसुम्भ, चन्दन, कपूर, केसर, तेल, घी, सोना, चांदी, तांबा आदि धातु एवं शेयर बाजार तेज रहें—

"राहुरंगारकश्चैक-राशि-ऋक्षगतौ तथा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते॥"

22 फरवरी को बुध मार्गी हो जायेगा। इस समय बुध का मेल शनि और गुरु के साथ है। रुई और चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 8 दिन में गेहूं, जौ, चना और अनाज तेज होंगे। रेशम, अलसी, तेल, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित पदार्थ मन्दे होंगे।

26 फरवरी को शुक्र शतभिषा नक्षत्र में दाखिल होगा। क्योंकि शुक्र सूर्य के साथ मेल कर रहा है। इसलिए गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों और सोना, चांदी तेज रहेंगे। यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से मासान्त तक चलेगी।

मार्च (सन् 2021 ई.)

मार्च की प्रारम्भिक ग्रहस्थिति के अनुसार राहु-मंगल वृष में है। सूर्य-शुक्र कुम्भ राशि में है। शनि, बुध, गुरु मकर राशि में हैं। यह स्थिति व्यापार में तेजी का संकेत देती है।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. नक्षत्र में आ जाता है। 4 मार्च को ही बुध धनिष्ठा में एवं इसी दिन गुरु भी धनिष्ठा के प्रथम चरण में दाखिल होगा। 4 मार्च को सूर्य कुम्भ में शुक्र के साथ मेल करेगा। यह योग रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पिप्पलामूल और रुई में झटके के साथ बाजारों में तेजी करेगा।

नोट करें—4 मार्च को गुरु एवं बुध के धनिष्ठा नक्षत्र में आने पर रुई, स्वांक, चना, चावल, जौ एवं सोना, चांदी में मन्दी बने। अतः सावधानी से काम करें। यह तेजी-मन्दी का सिलसिला 10 मार्च तक चलेगा, बाजार के रुख को जांचकर काम करें।

8 मार्च को शुक्र पू.भा. में आकर रुई एवं चांदी में तेजी का झटका देगा। क्योंकि शुक्र सूर्य के साथ है, अतः तेजी में ही रहें।

11 मार्च को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य-शुक्र के साथ मेल करेगा। अलसी, रुई एवं चांदी में थोड़ी मन्दी होकर तेजी विशेष रहेगी। घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड तेज रहेंगे, यह ध्यान दें।

11 मार्च को ही मंगल रोहिणी नक्षत्र में आयेगा। यह योग भी तेजी करेगा। रुई, सूत, कपास, रेशम, सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, हींग और शेयर बाजार तेज रहेंगे।

(4, 8, 11 मार्च को शेयर बाजार तेज रहेंगे।)

14 मार्च को सूर्य के मीन राशि में आने पर तिलहन, घी, तेल, गुड़, शक्कर, रुई, सोना तेज रहें। सभी अनाज पहले तेज, बाद में मन्दे हों। रुई घटाबढ़ी के बाद मन्दी हो।

ध्यान दें—16 मार्च को शुक्र मीन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। शनि की इन पर दृष्टि भी है। 17 से 19 मार्च के मध्य सूर्य-शुक्र का उ.भा. नक्षत्र में मेल भी होगा। इसलिए अनाज, सारे तिलहन, गुड़, खाण्ड, रुई, चांदी, सोना, घी में **जोरदार धमाके की तेजी बनेगी। इस समय ताजा मशवरा प्राप्त करें।**

19 मार्च को गुरु के धनिष्ठा नक्षत्र में आने पर अनाजों एवं चांदी, रुई में झटके की मन्दी का योग है, सावधान रहें।

25 मार्च को बुध पू.भा. नक्षत्र में आयेगा। सोना, चांदी में घटाबढ़ी रहे। गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाजों में स्थिरता रहे।

गौर करें—26 मार्च को शनि श्रवण नक्षत्र के तीसरे चरण में प्रविष्ट होगा। गेहूं आदि अनाजों, दालवाना, घी एवं अलसी में खासी तेजी बनेगी। अनाज, गुड़, खाण्ड, नमक भी तेज रहेंगे।

30 मार्च को शुक्र रेवती में एवं राहु रोहिणी के तीसरे चरण में और केतु ज्येष्ठा के प्रथम चरण में प्रविष्ट होगा। **शुक्र पर शनि की दृष्टि भी है।** अतः सोना, चांदी, रुई,

कपास, चावल, कपूर, गुड़, खाण्ड, अनाज, घी, तेल, तिलहन में जोरदार उठापटक रहेगी, **क्योंकि यहां राहु पर गुरु की दृष्टि भी है।**

31 मार्च को सूर्य रेवती एवं बुध मीन में आयेगा। इस समय मीन राशि में स्थित शुक्र-सूर्य-बुध पर शनि की नजर भी है। अत: सभी तिलहन, घी, सभी अनाज, रुई, गुड़, खाण्ड,शक्कर, बिनौला तेज रहेंगे। सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। तुरन्त लाभ लें, आखिरी वक्त का इन्तजार न करें।

अप्रैल (सन् 2021 ई.)

2 अप्रैल को बुध उ.भा. और मंगल मृगशिर नक्षत्र में दाखिल होगा। तिल, चांदी, रुई में तेजी और अन्य व्यापारिक चीजों में मन्दा रहे।

5 अप्रैल को गुरु धनिष्ठा के तीसरे चरण और कुम्भ राशि में दाखिल होगा। गेहूं, चावल, जौ, चना में मन्दे का रुख बनेगा। रुई में 6 मास तक तेजी के बाद मन्दी होगी। रुई और सफेद चीजें खरीदकर 6 मास में बेचने से लाभ मिलेगा। तांबा, कांसी, पीतल, लोहा, सीसा, सोना में 3 मास तक मन्दी के बाद तेजी होगी। ध्यान दें—5 अप्रैल के लगभग बुध पूर्व में अस्त होगा। इस समय घी, रुई और दालवाना में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो।

9 अप्रैल को बुध रेवती नक्षत्र में दाखिल होगा। इसलिए 11 दिन में कुसुम्भ, लाल चन्दन, गेरु और लालमिर्च में तेजी बनेगी। गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, रुई और चांदी में मन्दी के आसार हैं।

10 अप्रैल को शुक्र अश्विनी नक्षत्र में दाखिल होगा। यह योग अच्छी मन्दी का मालूम होता है। अलसी, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, ऊन, जौ, चना, गेहूं, उड़द, अरहर, मूंग, मोठ में मन्दी के योग हैं। सोना, चांदी के व्यापारी पहले घटाबढ़ी के बाद अन्त में तेजी से लाभ ले सकेंगे।

॥ शुभं भूयात् ॥

— — — —

ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन

मिलानसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का पूर्ण शास्त्रीय समाधान

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्तज्योतिपाचार्य, साहित्याचार्य,

पुस्तक में छ: अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में अष्टकूट का विस्तृत विवेचन, द्वितीय में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया, चतुर्थ अध्याय में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं., भारत के किसी भी नगर का सूक्ष्म दैनिक लग्नसमाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) बतलाने वाली मौलिक सारणियां एवं सन् 1971 से 2000 ई. तक के चन्द्रसहित सूर्यादि सभी ग्रहों के सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिए गए हैं, जिनकी मदद से 30 वर्षों में (1971 से 2000 ई. तक) पैदा हुए वर / कन्याओं की जन्मकुण्डली 10-15 मिनटों में ही बनाकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पांचवें और छठे अध्याय में शोधपूर्ण 11 निबन्ध हैं।

वर / कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर 36 पृष्ठों पर फैली गुणमिलान-सारणी है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त जाने जा सकते हैं।

गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक "नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्" आदि तथा मंगलदोष के बारे में प्रचलित "चन्द्र-मंगलसंयोगे भौमदोषो न विद्यते"—आदि अनेक परिहारवाक्यों का सप्रपंच खण्डन-मण्डन किया गया है।

कुज (मंगली) दोष की मात्रा के सूक्ष्मतापूर्वक निर्णय के लिए 7 कुजदोष कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से मौखिक जोड़-घटाव द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिक मान कुछ एक मिनटों में ही जानकर, उनकी तुलना द्वारा विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय किया जा सकता है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 550/- M.O. अथवा D.D. द्वारा नीचे लिखे पते पर अपना Address साफ-साफ लिखते हुए भेजिए। V.P.P. नहीं की जाएगी। द्वितीय संस्करण उपलब्ध है।

Mrs. Veena Chaturvedi, ABHIJIT PRAKASHAN,
Kothi No.59, Sector-6,
P.O. PANCHKULA, (Haryana)- PIN-134 109,
Phone- 0172-2565303, 09041330161.

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2020 ई. से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्त-शिरोमणि' में कहा है कि क्रान्तिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाये, तो उसकी वृद्धि होती है— *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्॥"* यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2020 ई. से 12 अप्रैल, सन् 2021 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यन्त्र-तन्त्रों के निर्माण एवं मन्त्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि-साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहा-वारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी-कभी ही आते हैं।

सावधान—यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिये, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति-पुण्यकाल (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2020 ई.					
20 जन.	14	00	21 जन.	2	48
19 फर.	4	02	19 फर.	16	50
20 मार्च	2	56	20 मार्च	15	44
19 अप्रै.	13	53	20 अप्रै.	2	41
20 मई	12	56	21 मई	1	44
20 जून	20	51	21 जून	9	39
22 जुला.	7	44	22 जुला.	20	32
22 अग.	14	52	23 अग.	3	40
22 सितं.	12	38	23 सितं.	1	26
22 अक्तू.	22	06	23 अक्टू.	10	54
21 नवं.	19	47	22 नवं.	8	35
21 दिसं.	9	09	21 दिसं.	21	57
सन् 2021 ई.					
19 जन.	19	47	20 जन.	8	35
18 फर.	9	51	18 फर.	22	39
20 मार्च	8	45	20 मार्च	21	33

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भांति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यन्त्र-मन्त्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2020 ई.					
9 जन.	0	13	9 जन.	14	25
20 जन.	23	8	21 जन.	7	31
3 फर.	11	6	3 फर.	17	33
15 फर.	7	14	15 फर.	12	10
28 फर.	15	17	28 फर.	20	25
11 मार्च	21	04	12 मार्च	0	58
24 मार्च	18	20	24 मार्च	23	11
6 अप्रैल	16	08	6 अप्रैल	20	06
18 अप्रैल	22	54	19 अप्रैल	4	15
2 मई	8	58	2 मई	14	10
14 मई	6	43	14 मई	13	49
27 मई	21	25	28 मई	6	29
8 जून	20	38	9 जून	10	44
3 जुलाई	18	35	4 जुलाई	7	31
17 जुलाई	9	10	17 जुलाई	18	08
29 जुलाई	15	05	29 जुलाई	21	19
11 अगस्त	21	53	12 अगस्त	3	44
24 अगस्त	4	49	24 अगस्त	9	12
6 सितं.	5	14	6 सितं.	10	06
18 सितं.	21	54	19 सितं.	1	38

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2020-21 ई.					
14 अक्तू.	18	06	14 अक्तू.	21	57
26 अक्तू.	18	20	26 अक्तू.	23	33
9 नवं.	10	54	9 नवं.	16	20
21 नवं.	5	04	21 नवं.	12	02
5 दिसं.	1	16	5 दिसं.	10	45
17 दिसं.	6	50	17 दिसं.	18	38
28 दिसं.	16	48	29 दिसं.	5	12
10 जन.	11	50	10 जन.	19	40
23 जन.	15	33	23 जन.	22	32
5 फर.	5	40	5 फर.	10	36
18 फर.	0	54	18 फर.	6	01
2 मार्च	19	29	2 मार्च	23	23
15 मार्च	8	49	15 मार्च	13	17
9 अप्रैल	17	44	9 अप्रैल	22	17

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य-चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किये जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

वारुणी पर्व (सन् 2020 ई.) (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
22 मार्च	सूर्योदय		22 मार्च	10	08
महावारुणी पर्व (सन् 2020 ई.)					
21 मार्च	19	40	—	—	—

सूर्य-चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए सूर्य एवं चन्द्र ग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ . 17 ... देखिये।

ध्यान रहे—मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। उच्चारणादि की अशुद्धि साधक के लिए सुफलप्रद कदापि नहीं होती। मन्त्रोच्चारणादि की अशुद्धि व अनभिज्ञता स्पष्टरूप से वज्रपात-सम घातक (विनाशकारी) मानी गयी है—

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥"

यन्त्र-मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन–संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ़–निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे**– दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा 'यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों के लिए साधनाकाल' की उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र–तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र–मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,–**"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल–प्रछन्न शक्ति होती है–

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः**– मन्त्र का पुरुश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरुश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

(1) प्रज्ञावर्धन–स्तोत्र

(विद्यार्थियों की बुद्धि को सन्मार्ग पर लगाने एवं विद्या में सफलता हेतु अनुभूत पाठ)

प्रज्ञावर्धन स्तोत्र का पाठ प्रातः (सूर्योदय के लगभग) रविपुष्य या गुरुपुष्य नक्षत्र से प्रारम्भ करके आगामी पुष्यनक्षत्र तक **शिवपुत्र स्कन्द** जी का ध्यान करके पीपल वृक्ष की जड़ में आसन लगाकर प्रतिदिन 10 बार पढ़ें । 27 दिन में एक पुरश्चरण पूर्ण होगा। फिर प्रतिदिन श्रद्धानुसार पाठ करते रहें। पाठक प्रतिभा–सम्पन्न एवं विद्या–बुद्धि का धनी होकर सफलता की तरफ अग्रेसर हो जाता है। दाएं हाथ में जल लेकर विनियोग के बाद जलत्याग करके, स्तोत्रपाठ का प्रारंभ करें।

विनियोगः – ॐ अथास्य प्रज्ञावर्धन–स्तोत्रस्य भगवान् शिव–ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, स्कन्द–कुमारो देवता, प्रज्ञासिद्धयर्थ जपे विनियोगः। – (.यहां जल का त्याग करें।)

अथ स्तोत्रम्

ॐ योगेश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः।
स्कन्दः कुमार : सेनानी स्वामी शंकरसंभव :।।1।।

गाङ्गेयस्ताम्रचूड़श्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः।
तारकारिरुमापुत्रः क्रौंचारिश्च षडाननः ।। 2।।

शब्दब्रह्मसमूहश्च सिद्धः सारस्वतो गुह :।
सनत्कुमारो भगवान् भोग–मोक्षप्रदः प्रभुः।। 3।।

शरजन्मा गणाधीशः पूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्।
सर्वागम–प्रणेता च वांछितार्थप्रदर्शकः ।। 4।।

अष्टाविंशति नामानि मदीयानीति यः पठेत्।
प्रत्यूषे श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत्।। 5।।

महामन्त्रमयानीति मम नामानि कीर्तयेत् ।
महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।। 6।।

पुष्यनक्षत्रमारम्य पुनः पुष्ये समाप्य च ।
अश्वत्थमूले प्रतिदिनं दशवारं तु सम्पठेत्।। 7।।

सप्तविंश–दिनैरेकं पुरश्चरणकं भवेत्।।

।। प्रज्ञावर्धनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

(2) विद्या–बुद्धि–लाभार्थ वागीश्वरी मन्त्र

" ॐ नमः पद्मासने शब्दरूपे ऐं ह्रीं क्लीं वाग्वादिनि स्वाहा ॐ।।"

यह मन्त्र पठन–पाठन किंवा कम्पीटीशन्ज़ में संलग्न सभी आयुवर्ग के साधकों के लिए अभीष्ट फलप्रद है। विशेषकर कमज़ोर बुद्धि–छात्रों के लिए तो यह तीक्ष्ण औषध का कार्य करने वाला प्रयोग है। इसके नित्यजाप से बुद्धि में तीव्रता आती है, समझने की शक्ति प्रबल होती है किंवा अपने लक्ष्य में अच्छी स्थिति बनती है। 108 मन्त्र हररोज़ जपें। मन्दबुद्धि की स्थिति में इस मन्त्र का 5 लाख अनुष्ठान संयमपूर्वक एकाग्रता से करें। 41 दिनों में यह पुरश्चरण पूरा करें। इस अनुष्ठान के समय वागीश्वरी भगवती श्री सरस्वती मां की अन्तःकरणस्थिति सर्वथा अनिवार्य है। जाप हमेशा पूर्वोत्तर मुख व पद्मासन मुद्रा में करें–अभीष्ट प्राप्ति होगी।

(3) नेत्रज्योति को सुरक्षित रखने के लिए अद्भुत प्रयोग–"चाक्षुषी विद्या"

इस चाक्षुषी विद्या को 'चाक्षुषोपनिषद्' एवं 'कृष्ण यजुर्वेद' में 'चाक्षुषीविद्या' के नाम से जाना जाता है। इस विद्या का श्रद्धापूर्वक नियमित रूप से प्रातः सूर्य के सामने बैठकर पाठ करने से नेत्र–सम्बन्धित समस्त रोग स्वतः शान्त हो जाते हैं, औषध सद्यः फल देने लगती है। नेत्रज्योति स्थिर रहती है। जिस परिवार में इस चमत्कारी चाक्षुषी विद्या का नित्यप्रति पाठ किया जाता है, उस कुल में कोई भी व्यक्ति दैविक–प्रकोप किंवा किसी भी प्रकार के नेत्ररोग से अन्धा नहीं होता। पाठ के पूर्ण होने पर गन्ध, पुष्पादि युक्त जल से सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए और अर्घ्य देते समय जल के माध्यम से सूर्य को देखना चाहिए। आजकल नेत्ररोग एवं अन्धेपन से अनेकों लोग अपने जीवन को संकटापन्न अनुभव करते हैं, उन सभी लोगों के लिए यह निम्नांकित 'चाक्षुषीविद्या विधान' अवश्यमेव वरदान सिद्ध हो सकता है, इसमें सन्देह नहीं ।

विधान इस प्रकार है :–

विनियोगः – (जल दाएं हाथ में लेकर) " ॐ अस्याश्चाक्षुषी–विद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता, चक्षुरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।"

(इस विनियोग का उच्चारण करके सूर्य भगवान् के समक्ष जलत्याग करें।) – तत्पश्चात् निम्नांकित 'चाक्षुषी विद्या' का पाठ सूर्याभिमुख होकर करें ,–

अथ नेत्रोपनिषद्

" ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षू – रोगान् शमय–शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय–दर्शय। यथा अहम् अन्धो न स्याम् तथा कल्पय–कल्पय। कल्याणं कुरु–कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षू–प्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय–निर्मूलय। ॐ नमश्चक्षुस्तेजो–दात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमः सूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्यायाक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः। यः इमां चाक्षुष्मतीं विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते, न तस्याक्षिरोगो भवति। न तस्य कुलेऽन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति। ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी–अहोवाहिनी स्वाहा।। "

यदि इस पाठ के बाद हवन करने की इच्छा हो तो " ऊँ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी–अहोवाहिनी स्वाहा " – इस मन्त्र से कम से कम 108 आहुतियां डालें।

उल्लिखित प्रयोग अनेक विद्वान् पण्डितों एवं नेत्ररोगियों द्वारा अनुभूत एवं परीक्षित है, पाठक आवश्यकता में पाठ करके फल अनुभव करें।

(4) भूत–पिशाच बाधा से मुक्ति पाने के लिए अनुभूत मन्त्रप्रयोग

मन्त्र – " ऊँ ह्रीं दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम्।
रक्षो–भूत–पिशाचानां पठनादेव नाशनम् ह्रीं ऊँ।।

विधि :– (क) उल्लिखित मन्त्र दीपावली की रात्रि में 11 हजार बार जपने से ही सिद्ध हो जाता है। दशांश हवन करना भी अनिवार्य है।

यदि घर में नित्यकलह, अकारण भय–बाधा बनी रहे, धनहानि हो, दरिद्रता–आतंक रहे, भूत–प्रेत–पिशाच की छाया हो, किसी ने घर पर अनिष्टकारक प्रयोग किया हो तो इस चामत्कारिक मन्त्र को शुभवेला में, शुद्ध कागज पर अनार की कलम से लिखकर, मन्त्र का विधिवत् पूजन करके धूप–दीप करने के बाद दाईं भुजा में बांधने पर या लाल कपड़े में बांधकर घर में शुद्ध स्थान पर रखने से सर्वविध शान्तिलाभ होता है।

(ख) यदि सारे घर के सदस्य भूत–प्रेत–बाधा से परेशान हों तो घर में ही इस मन्त्र का जाप करावें। मन्त्रजाप पूरा होने पर दशांश हवन कराएं। हवन पूर्ण होने पर खैर की लकड़ी, 8 लोहे की कीलें, 8 पीली कौड़ी, 8 हल्दी की गांठें, डोडी वाले 8 लौंग लेकर, उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके, मन्त्रोच्चारण करते हुए आग्नेय कोण से शुरु करके आठों दिशाओं में एक–एक हाथ का गड्ढा खोदकर, इन चीजों को कौड़ी चित्त करके गाड़ें। ऐसा करने से भूत–प्रेत बाधा से घर पूर्णतया सुरक्षित रहेगा। यह प्रयोग अनेकत्र अनुभूत है। उल्लिखित मन्त्र से उपद्रवग्रस्त स्थान भी सुखद होता देखा गया है।

(5) मृतवत्सा (अठराहा) रोगनिवृत्ति–मन्त्र

मन्त्र – "ऊँ परब्रह्म परमात्मने 'अमुकी ' गर्भे दीर्घजीवि-सुतं कुरु कुरु स्वाहा।"

मृतवत्सादोष–निवारण के लिए ज्येष्ठमास की पूर्णमासी को 1008 बार मंत्र को विधिपूर्वक जपें एवं दीपावली की रात्रि अथवा ग्रहण के समय जाप से सिद्ध करें। तत्पश्चात् मन्त्र में **'अमुकी'** शब्द के स्थान पर स्त्री का नाम लिखें। मन्त्र को अष्टगंधादि से लिखकर, स्त्री अपने पास भुजा आदि पर बांधे रखे, मृतवत्सा रोग शान्त होगा।

(6) प्रेतपीड़ा या टोने आदि से बचने के लिए मन्त्र

बारह वर्ष से कम आयु की कन्या के काते हुए कच्चे सूत के सात धागे लेकर, उन पर सात गांठे लगा लें। प्रत्येक गांठ पर सात बार निम्नांकित मन्त्र को पढ़ें –

मन्त्र– " ऊँ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म – शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि।।
सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ–घोराणि तैरक्षांस्मान् तथा भुवम्।। "

यह प्रयोग अत्यन्त सफल है। गर्भावस्था में गर्भपातभय से मुक्ति एवं शत्रुकृत टोना किंवा प्रेतादि शान्ति के लिए अनुभूत है।

(7) पति–पत्नी में परस्पर मेल हो – वैदिक मन्त्र

किसी वजह से पति–पत्नी में विवाद उठ खड़ा हो, दोनों के विचार विरोधी दिशाओं में चलते हों तो निम्नमन्त्र का जाप करें। विरोध शान्त हो जाएगा और मधुरता उत्पन्न होकर पुनः मिलन होगा।

मन्त्र –"यथा नकुलो विच्छिद्य संदधात्यहिं पुनः ।
एवा कामस्य विच्छिन्नं संधेहि वीर्यावति।।

अक्ष्यौ नौ मधु संकाशे अनीक नौ समञ्जनम्।
अन्तः कृणुष्व मां हृदि मन इन्नौ महासति।।"

(8) पति–वशीकरण मन्त्र

आजकल अनेकत्र देखा गया है कि पति अन्यासक्त या क्रोधाभिभूत होने के कारण अपनी पत्नी को सम्मान नहीं देता एवं पति–पत्नी में संघर्ष रहता है। एतदर्थ हम एक अनुभूत पति–वशीकरण मन्त्र लिखते हैं,–

मन्त्र –"ऊँ क्लीं ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।। "

विधि :– उल्लिखित मन्त्र को जपने से पूर्व साधक इसप्रकार ध्यान करे कि महामाया भगवती अपने दृढ़पाश (रज्जू) से साध्य (पति) को बांधकर साधिका (मन्त्र करने वाली) के पैरों में डाल रही है, उस त्रिनेत्रों वाली भगवती के एक हाथ में तलवार है। ऐसी महामाया शक्तिरूपा दुर्गा को मैं पतिवशीकरणार्थ नमस्कार करती हूँ। इसप्रकार ध्यान करके साधिका 41 दिन (दोनों समय 1100 / 1100) मन्त्र का जाप प्रातःपूर्वाभिमुख एवं सायं को उत्तराभिमुख होकर करे। अष्टमी एवं चतुर्दशी को तीन कन्या एवं एक बटुक को खीर–पूरी का भोजन करावें। निश्चय ही साधिका पतिवशीकरण में सफल होगी।

(9) ग़ायब (खोया हुआ) व्यक्ति वापिस लौटे–

शास्त्रीय मन्त्र

मन्त्र–" ऊँ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहुसहस्रवान्।
यस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते ।।
ऊँ कार्तवीर्याय नमः 'अमुकं' शीघ्रमानय स्वाहा।।"

विधि – गायब व्यक्ति के पहिने हुए बिनाधुले वस्त्र पर केसर व लाल चन्दन की स्याही से अनार की कलम द्वारा इस उपरोक्त मन्त्र को लिखें, फिर उस कपड़े को धूप–दीप करके, दो पत्थरों (चक्की के पाटों के बीच) में दबा दें। 21 दिन तक पत्थरों में रखे कपड़े को हिलाएं नहीं, बाद में वस्त्र उठाकर, बन्दर व कुत्तों को रोटियां खिलाएं। मन्त्र में जहां ' अमुकं ' लिखा है, वहां गायब (खोए हुए) व्यक्ति का नाम लिखें।

नोट :–मन्त्र–यन्त्र लिखने के लिए, पुष्यनक्षत्र में विधिवत् वनाई अनार की कलम काम देगी। इस विधान के प्रभाव से वह व्यक्ति यदि जीवित हुआ तो आ जाएगा, अन्यथा पता चल जाएगा ।

(10) ऋणहर्तृ गणेशस्तोत्रम्

"ऊँ सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फलसिद्धये।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे ।।

त्रिपुरेस्तु वधात् पूर्वं शंभुना सम्यगर्चितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

हिरण्यकश्यपादीनां वधार्थं विष्णुनार्चितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

महिषस्य वधे देव्याः गणनाथः प्रपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

तारकस्य वधात्पूर्वं कुमारेण प्रपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

भास्करेण गणेशो हि पूजितश्छविसिद्धये।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

शशिना कान्तिवृद्ध्यर्थं पूजितो गणनायकः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

वृत्रस्य नाशनार्थाय शक्रेण परिपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

देवैः समुद्रमथने प्रारम्भे परिपूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

पालनाय च तपसां विश्वामित्रेण पूजितः।
सदैव पार्वतीपुत्रः ऋणनाशं करोतु मे।।

।। दारिद्र्यनाशकं गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णमिदम् ।।

(11) अनुभूत सिद्ध लक्ष्मीमन्त्र

'श्रीसूक्त' से उद्धृत इस मन्त्र को बिल्ववृक्ष के नीचे बैठकर श्रद्धा–विश्वासपूर्वक विधिवत् जाप करने से सद्यः सिद्धि प्राप्त होती है। इस मन्त्र का अनुष्ठान–प्रकार जनहितार्थ यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

विधिः– श्री महालक्ष्मी की मूर्ति या चित्र को सामने रखकर उसकी षोडशोपचार पूजा करके अंगन्यास, करन्यास, ध्यान, मुद्रा आदि करके नियमपूर्वक मन्त्र का जाप किया जाता है। एकान्त स्थान में धूप–दीप जलाकर पवित्र आसन पर बैठकर लक्ष्मी मन्त्र की 31,000 आवृत्ति 40 दिन के अन्दर करके हवन, तर्पण, ब्राह्मणभोजन आदि कराके उसे सिद्ध किया जाता है। सात्त्विक आहार, ब्रह्मचर्य का पालन, भूमि पर शयन के साथ–साथ सभी यमनियमों का पालन करते हुए नित्य नियम से निश्चित संख्या का जाप किया जाता है। शुद्ध घृत का अखण्ड दीपक जलाया जाता है। एकाग्रचित और श्रद्धाविश्वास के साथ विधिपूर्वक साधना करने से 31000 जप से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है और कोई न कोई अलौकिक अनुभव होता है। जैसे-दीपक की लौ पर ध्यान करते हुए मन्त्रजाप कर रहे हों तो वह ज्योति शरीर में प्रवेश करती हुई प्रतीत होती है. या महालक्ष्मी की मूर्ति अथवा चित्र 'प्रकाश व तेज से पूर्ण हो जाता है, उसमें से तेज निकल कर तुम्हारे शरीर में प्रवेश करता हुआ प्रतीत होगा, आदि–आदि। महालक्ष्मी का सिद्धमन्त्र निम्नप्रकार है:–

"ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्ताम्।
तर्पयन्तीं पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॐ।। "

उपरोक्त मन्त्र 'श्रीसूक्त' के 16 मन्त्रों में से एक प्रमुख है। इसके सिद्ध करने से न केवल दरिद्रता का नाश होता है, अपितु सुख–समृद्धि, उत्तम–बुद्धि, स्वास्थ्य आदि की भी वृद्धि होती है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर उसका नित्य जाप करते रहना चाहिए और होली, दिवाली, शिवरात्रि, ग्रहण आदि के अवसर पर भी जप, हवन आदि करते रहना चाहिए। इससे आपको धन की कमी कभी नहीं होगी। आवश्यकता के अनुसार धनार्जन के साधन बनते रहेंगे, आपकी उचित आवश्यकताओं की पूर्ति निर्विघ्न होती रहेगी। जब भी कभी [illegible]

पड़े, इस मन्त्र की कुछ मालाएं जपें, आप देखेंगे कि किस प्रकार दैवी सहायता प्राप्त होती है; अनुभूत है।

(12) आर्थिक लाभ के लिए लक्ष्मी–मन्त्रसाधना

मन्त्र-" ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मंदिरे तिष्ठ– तिष्ठ स्वाहा ॐ।।"

यह महालक्ष्मी जी का मन्त्र है। इसके पुरुश्चरण व नियमित जाप से गृह में सर्वदा लक्ष्मी का 'वास बना रहता है, आर्थिक भण्डार में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं आती। पांच लाख जपने से सिद्ध होता है। साधनाकाल में यदि गोघृत का दीपक लगातार जलता रहे तो शीघ्र लाभ किंवा सफलता के अवसर बनते हैं, लक्ष्मी जी की अपूर्व कृपा प्राप्त होती है। इस मन्त्र का जाप हमेशा पूर्वाभिमुख हो 'कमलासन' मुद्रा में करना चाहिए।

(13) नौकरी(कारोबार)प्राप्ति के लिए साबर मन्त्र

मन्त्र –"ॐ नमो आदेश गुरु का धरती में बैठ्या लोहे का पिण्ड राख लगाता गुरु गोरखनाथ आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक देत धार–धार मार–मार शब्द सांचा फुरो वाचा।"

विधि– मृगछाल (मृगचर्म) पर बिनासिला कपड़ा पहन कर बैठें। 108 बार रुद्राक्ष की माला से इस मन्त्र का जाप करके, खीर की 108 आहुतियां डालें, आहुतियां एकसप्ताह जाप करके डालें, आजीविका का साधन बन जाएगा। शुक्लपक्ष की द्वितीया से मन्त्रजाप शुरु करें।

(14) स्वप्न में कार्यसिद्धि किंवा कार्यहानि–ज्ञानार्थ मन्त्र

रात्रि में स्नान करके शुद्ध आसन पर बैठकर, कम से कम तीन माला निम्नांकित मन्त्र का जाप करके, भगवती दुर्गा का ध्यान करके शयन करें। रात्रि में स्वप्न में आपको मनोभिलषित कार्यसिद्धि किंवा असिद्धि का ज्ञान हो जाएगा, अनुभव करें ।

मन्त्र –" ॐ ह्रीं दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ह्रीं ॐ।।"

(15) भूमिलाभार्थ मन्त्रप्रयोग

भूमि, मकान आदि सुख/लाभ के लिए इस (निम्न) मन्त्रप्रयोग की साधना उपयुक्त मानी गई है। एक लाख जाप करने से इस मन्त्र की सिद्धि होती है। सिद्धि के उपरान्त जीवन में सभी भौतिक सुखों की उपलब्धि सहज हो जाती है। मन्त्र इसप्रकार है–

" ॐ नमो भगवत्यै धरण्यै धरणिधरे धरे स्वाहा ॐ।।"

(16) घर में कलह–क्लेश मिटाने हेतु प्रयोग

पति–पत्नी या परिवार में छोटे–मोटे कलह–क्लेश कई बार भयंकर रूप धारण करके सम्बन्धविच्छेद का कारण भी बन जाते हैं, एतदर्थ आप 'एक नारियल' को लाल कपड़े में बांधकर 11 दिनों तक 7 बार निम्नांकित मन्त्र पढ़ते रहें। साथ ही छोटी इलायची, लौंग, मिसरी एक बर्तन में रखें। मन्त्रजाप के बाद इनमें हाथ घुमा दें। इलायची आदि परिवार में बांटकर खा लें;– प्रेम सदभाव का वातावरण बहुत जल्दी बनेगा।

मन्त्रः– " ॐ क्रीम् क्रीम् सर्वविवाद–निवारणाय फट्।।"

प्रयोगसमाप्ति के बाद नारियल को किसी तालाब या शुद्ध जल में प्रवाहित कर दें।

(17) भुवनेश्वरी कर्णपिशाचिनी–मन्त्र

मन्त्र – "ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं भुवनेश्वरी वाग्वादिनी कर्णपिशाचिनी साधकाय सिद्धिदातायैः नमः ऊँ। "

जलप्रवाह में खड़ा होकर पांच सौ बार इस मन्त्र का जाप करें । जाप के बाद तर्पण–मार्जन– होम एवं ब्रह्मभोज कराएं, फिर यहां अंकित यन्त्र 10,000 बार जमीन पर लिखें।

–: यन्त्र :–

ह्रीं ८	ह्रीं १	ह्रीं ६
ह्रीं ३	ह्रीं ५	ह्रीं ७
हीं ४	हीं ९	हीं २

शासक भी वश में हों, जो भी वचन निकलेगा, सत्य होगा। इस मन्त्र साधना से प्राणी भूत–भविष्य एवं वर्तमान की बातें अनायास ही जान लेता है।

(18) कुछ यन्त्र

(i) मनोकामना पूर्ति यंत्रः–

सफेद कागज पर केसर, चन्दन, कपूर, गंगाजल व खस की रोशनाई बनाकर अनार की कलम से शुक्लपक्ष की दूज से प्रारम्भ करके प्रतिदिन 24 बार लिखकर, आटे की 24–24 गोलियां, 24 दिन तक बनाएं । यंत्र के नीचे अपना मनोरथ लिखें; अन्तिम रोज 576 गोलियां लेकर एक–एक करके नदी में बहा देने से जिस उद्देश्य से यंत्र लिखा होगा, ईश्वर की कृपा से पूर्ण होगा । यह सब कामों का सिद्धिदायक यंत्र है, जैसे नौकरी मिलना, परीक्षा में सफलता; मुकददमे में विजय/ निवारण आदि।

मनोकामना पूर्ति यन्त्र			
१	१४	११	८
१२	७	२	१३
६	९	१६	३
१५	४	५	१०

(ii) परीक्षा में सफलता का यंत्र

जिस विद्यार्थी को परीक्षा में सफलता प्राप्त करनी हो; वह इस यंत्र को परीक्षा के 15 दिन पूर्व केसर द्वारा भोजपत्र पर लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन 101 यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करे। सोलहवें दिन एक यंत्र को पूजा करके तावीज में मढ़वाकर अपनी दाहिनी भुजा या गले में धारण कर ले। पढ़ाई में मन लगेगा एवं परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी।

परीक्षा में सफलता का यन्त्र			
२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

(iii) विवाद या मुकद्दमे में विजयार्थ यन्त्र

सामने दिए गए यन्त्र को भोजपत्र या शुद्ध कपड़े पर लाल चन्दन, केसर एवं कस्तूरी की स्याही से शुभमुहूर्त्त में अंकित करें। यन्त्रमध्य में जहां 'अमुक' लिखा है, वहां अपने प्रतिवादी (शत्रु) किंवा विपक्ष के प्रधान व्यक्ति का नाम लिखें। प्रतिवादी के नाम (जो कि यन्त्रमध्य में लिखा है) पर थोड़ी पीली सरसों रख दें एवं पीले अकीक रत्न की माला से 5 माला निम्नांकित मन्त्रजाप करें–

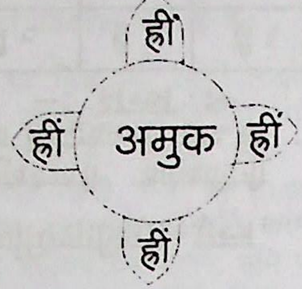

मन्त्र– "ॐ क्लीम् हीम् महामाये विजयसिद्धिं मे देहि ॐ फट्।।"

कोर्ट–कचहरी या पंचायत में जाते समय यन्त्र को धूप देकर दाएं बाजू पर लाल कपड़े से बांधकर ले जाएं, पलड़ा आपका भारी रहेगा। विजय प्राप्त होगी। 7 दिन का प्रयोग हैं।

(iv) धनधान्य–वृद्धि यन्त्रं–

इस यन्त्र को दीपावली की रात्रि में लिखकर अन्नभण्डार में रख दें, धन–धान्य समृद्धि रहेगी।

धनधान्य–वृद्धि यन्त्र		
वं	ॐ	ह्रीं
	देहि	
कं	नमः	ह्रीं

(v) शीतला माता शान्त्यर्थ यन्त्र–

इस शीतलायन्त्र को अष्टगन्ध से लिखकर सिरहाने धरें तो शीतला माता का प्रकोप शान्त हो जाएगा।

शीतला माता–शान्त्यर्थ यन्त्र			
४२०००	४८०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४०००	५११०००	४४०००	५११०००
१०००	७०	१६	६०८

(vi) रोज़ी–प्राप्ति के लिए यन्त्र– इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में कांसी या चांदी के पत्र और यदि असमर्थ हो तो भोजपत्र पर लिखकर धूप–दीप करके अपने पास रखें या तावीज़ में मढ़ाकर गंगाजल, दूध से धोकर गले में लाल धागे से धारण करें, जल्दी ही रोज़ी मिलेगी। इन्टरव्यू में सफलता मिलेगी।

रोज़ी–प्राप्ति यन्त्र		
६	७	२
१	५	९
८	३	४

(19) सिद्ध सन्तों के अनुभूत टोटके

(i) दिमाग की कमजोरी को दूर करने के लिए– दस गिरी बादाम रात को पानी में भिगोकर बारीक करके एक तोला मक्खन एवं मिसरी मिलाकर एक मास तक प्रतिदिन सेवन करें। बुद्धि में धारणाशक्ति पैदा होगी, भूलने की बीमारी न रहेगी, स्वास्थ्य भी सुन्दर होगा।

(ii) बुखार के लिए– तुलसी के पत्तों का पानी 10 तोला, छोटी इलायची के दाने 1 तोला– दोनों को खरल में बारीक करके 2–2 रत्ती की गोलियां बना लें। बुखार की हालत में 2 गोली एक साथ 1–1 घण्टे के अन्तर पर पानी के साथ लें। हर प्रकार का बुखार शांत हो जाता है।

*****

क्या आपको मालूम है कि "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" संक्षिप्तरूप में "श्री बटुक पञ्चांग" के नाम से प्रकाशित होता है ? "श्री बटुक पञ्चांग" पॉकेट साईज़ में है और इसमें प्रमुख-प्रमुख एवम् वर्गीकृत व्रत-पर्व, संदिग्ध व्रत-पर्व आदि, गण्डमूल, पंचक, ग्रहणविवरण, राशिफलादेश, वर्षराजादि फलविचार, २४ पक्ष, तिथ्यादि पंचांग, दैनिक- लग्नसारणी, विवाहादि मुहूर्त्त और मेलापक सारणी आदि वह सभी कुछ उपलब्ध है, जिसकी दैवज्ञों/आम लोगों को हर समय जरूरत रहती है।

ज्योतिष एवं कर्मकाण्ड के जिज्ञासु पण्डितों के लिए कुछ साधारण जानकारी

गुप्त नवरात्र-चर्चा

ध्यान दें कि–'गुप्त नवरात्रों' की चर्चा ज्योतिष के व्रतपर्व-निर्णायक ग्रन्थों '**धर्मसिन्धु**', '**कालमाधव**', '**तिथिनिर्णय**' किंवा '**निर्णयसिन्धु**' आदि में तो कहीं उपलब्ध नहीं है। इन गुप्त नवरात्रों का निर्देश केवल '**देवीभागवत**' में ही किया गया है।

सर्वत्र मनाये जाने वाले '**वासन्त**' एवं '**शारद**' नवरात्रों को तो सभी जानते हैं। इन गुप्त नवरात्रों का विशेष प्रचार राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि कुछ प्रान्तों में ही था, लेकिन अब जनसम्पर्क एवं टी.वी. आदि पर चर्चा से इन गुप्त नवरात्रों का प्रचार सर्वत्र होने लगा है। ये '**गुप्त नवरात्र**' निम्नांकित हैं–

आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा और माघ शुक्ल प्रतिपदा से ये गुप्त नवरात्र माने गये हैं।

नोट–इन नवरात्रों की प्रारम्भतिथियों का निर्णय ठीक उन्हीं धर्मशास्त्रीय नियमों के अनुसार होता है, जिनके आधार पर 'वासन्त-शारद' नवरात्रों की प्रारम्भ तिथियों का।

यहां विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि–इन चारों नवरात्रों में से पहले तीन नवरात्रों में अन्तर तीन-तीन मास का है, लेकिन चतुर्थ नवरात्र **(माघ मास वाला)** अपने पूर्ववर्ती नवरात्र **(आश्विन वाले)** से चौथे मास में घटित होता है, जबकि क्रमानुसार इसे पौष मास में घटित होना चाहिए। शायद धर्मशास्त्रों में पौष मास को खरमास (धनु:स्थ सूर्य वाला मास) होने से चतुर्थ नवरात्रारम्भ के लिए अनुपयुक्त माना है।

इन नवरात्रों की अधिष्ठात्री देवी भी माता दुर्गा के नवरूपों को ही स्वीकार करना होगा। इन नवरात्रों में किया जाने वाला अनुष्ठान वासन्त-शारद नवरात्रों से भिन्न नहीं है। दुर्गापूजा-अनुष्ठान आदि इन नवरात्रों में भी किये जाते हैं। ये सभी नवरात्र भगवती माता के श्रद्धालुओं के लिए बराबर महत्त्वपूर्ण हैं।

नोट–श्रावण-शुक्लपक्षीय नवरात्रदिनों, जिन्हें लोग देवी के चाले के रूप में उत्तरभारत में मानते हैं, को मनाने व निर्धारित करने के नियम भी उक्त इन नवरात्र-नियमों के समान ही हैं।

गण्डमूल का क्या अर्थ है, अश्विनी आदि छह नक्षत्रों को ही गण्डमूल क्यों माना है?

रेवती-अश्विनी, आश्लेषा-मघा एवं ज्येष्ठा-मूला–ये तीन नक्षत्र-युगल '**गण्डमूल**' नाम से जाने जाते हैं। इन नक्षत्र-युगलों के ये दो-दो नक्षत्र जहां परस्पर मिलते हैं, वहां क्रमश: मीन-मेष, कर्क-सिंह एवं वृश्चिक-धनु राशियों का मेल होता है। अर्थात् रेवती-अश्विनी की सन्धि पर मीन-मेष और आश्लेषा-मघा की सन्धि पर कर्क-सिंह और ज्येष्ठा-मूल नक्षत्र की सन्धि पर वृश्चिक-धनु की भी सन्धि होती है। यही कारण है कि–इन नक्षत्र-युगलों को '**गण्डनक्षत्र**' कहा जाता है। गण्ड शब्द का अर्थ है जोड़ (सन्धि)। सन्धिकारक नक्षत्र होने से ही इन्हें गण्डमूल नक्षत्र कहा जाता है। भाषा की दृष्टि से देखें तो संस्कृत में गण्ड शब्द का अर्थ '**जोड़**' या '**गांठ**' होता है। ध्यान रहे–इन तीन नक्षत्र-युगलों के अतिरिक्त कोई ऐसा नक्षत्र-युगल नहीं, जहां राशिसन्धि घटित होती हो।

'सूर्य सिद्धान्त' में इन गण्डमूल नामक नक्षत्र-युगलों के पूर्ववर्ती-नक्षत्रों के अन्तिम चरणों को 'भसन्धि' एवं परवर्ती-नक्षत्रों के प्रथम चरण को 'गण्डान्त' कहा जाता है। 'भसन्धि' एवं 'गण्डान्त' में जन्म जातक किंवा जातक के परिवार के लिए अशुभ होता है। किंवा इन नक्षत्रों में किया गया शुभकृत्य विफल माना गया है।

यद्यपि इन गण्डमूल नक्षत्रों के '**भसन्धि**' एवं गण्डान्त नामक चरणों में ही दोष बतलाया है, इनके शेष चरणों को निर्दोष कहा गया है, तथापि अनेक मुहूर्तशास्त्रियों का मत है कि–इनके इन शेष तीन-तीन निर्दोष चरणों में उत्पन्न जातक की भी गण्डमूल शान्ति करवा देनी चाहिए। क्योंकि दोषपूर्ण '**भसन्धि**' एवं '**गण्डान्त**' चरणों के सम्पर्क से इन चरणों में भी कुछ दोष रहता ही है, ऐसा मत है।

'**गण्डमूल नक्षत्र**' क्यों अशुभ माने गये हैं? आयुर्वेद एवं अन्य शास्त्रों में '**सन्धि-क्षेत्रों को मर्मस्थल**' माना गया है। यदि मर्मस्थलों पर चोट लगे तो सद्य: मृत्यु सम्भव है। इसी प्रकार **गण्डमूल नक्षत्र भी सन्धिस्थल माने गये हैं**, अत: शास्त्रों में

ऋषि-मुनियों ने इन गण्डमूल नक्षत्रों के दुष्परिणाम से बचने एवं जातकों की सुखी-जीवनचर्यों के लिए इन गण्डमूल नक्षत्रों की शान्ति कराना आवश्यक माना है।

गण्डमूल-शान्त्यर्थ मन्त्रप्रयोग

(i) रेवती नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व पूषा)

मन्त्र—ॐ पूषन् तव व्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्तु इहस्मसि। ॐ पूष्णे नमः। (जपसंख्या पांच हजार)।

(ii) अश्विनी नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व अश्विनीकुमार)

मन्त्र—ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्। ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः। (जपसंख्या 5000)।

(iii) मघा नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व पितर)

मन्त्र—ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्ना पित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ पितृभ्यो नमः॥ (मन्त्रजाप-संख्या 10,000)।

(iv) ज्येष्ठा नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व इन्द्र)

मन्त्र—ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुह्व शूरमिन्द्रम् हयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ शक्राय नमः॥ (जपसंख्या 5000)।

(v) आश्लेषा नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व सर्प)

मन्त्र—ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनुः, ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः॥ (जपसंख्या 10000)।

***(vi)* मूल नक्षत्रशान्ति—(स्वामित्व राक्षस)**

मन्त्र—ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमणि स्वेयोनावभारूषा। तां विश्वेदेव-ऋतुभिः संवदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नमः॥ (जपसंख्या 5000)।

नोट—ध्यान दें कि—ये सारे (छहों) गण्डमूल नक्षत्र दशा-विचारानुसार बुध एवं केतु के अन्तर्गत आते हैं अथवा यूं कहिये कि—इन छहों नक्षत्रों पर बुध व केतु की दशाएं ही होती हैं। आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्रों में जन्म होने पर बुधदशा व अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्रों में जन्म होने पर केतु की दशा होती है, अतः आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती में जन्म होने पर इनके दशा-स्वामी बुध का मन्त्र(**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**)जाप 19,000 करें। तत्पश्चात् दशांश हवन अपामार्ग या पीपल की समिधा से करें।

अश्वनी, मघा, मूल में जन्म होन पर इनके दशास्वामी केतु के—"**ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः**" मन्त्र का जाप 17000 करें। कुशा या पीपल की समिधा से दशमांश हवन करें।

अभुक्तमूल नक्षत्रविचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से ज्येष्ठा की एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की प्रारम्भिक चार घटी, विशेषतः आधी घटी—ये अभुक्तमूल नक्षत्र की अवधियां ही **अभुक्तमूल** नक्षत्रों के नाम से जानी जाती हैं। उक्त नक्षत्रों की निर्दिष्ट विशेष कालावधियों में यदि किसी बच्चे का जन्म हो तो उसका परित्याग कर दें या 8 वर्ष तक दूर रखें। लेकिन यह सम्भव नहीं है, अतः बच्चे को 6 मास अथवा 27 दिन तक तो पिता से दूर रखें, पिता बच्चे का मुख न देखे। इस बारे में शास्त्रवचन है—

"घनगण्डे दरिद्रोऽपि शान्तिं कुर्यात् स्व-शक्तितः।
अन्यथा नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः।"

गण्डमूल नक्षत्रों में जन्म का फल

मूल नक्षत्र में जन्म होने पर—

मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में यदि बालक का जन्म हो तो पिता के लिए जातक कष्टप्रद रहे। द्वितीय चरण में माता के लिए एवं तृतीय चरण में धन-ऐश्वर्य के लिए हानिकारक होता है। मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जातक शुभ फलप्रद माना गया है।

यदि मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में बालिका (कन्या) का जन्म हो तो कन्या विवाहोपरान्त ससुर, द्वितीय चरण में सास एवं तृतीय चरण में ससुर एवं पितृपक्ष (दोनों कुलों) के लिए नेष्ट फलप्रद मानी जाती है। चतुर्थ चरण में जन्म शुभ माना है।

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म होने पर—

आश्लेषा नक्षत्र का प्रथम चरण बालक के लिए शुभ, द्वितीय चरण धन-ऐश्वर्य के लिए हानिप्रद एवं तृतीय चरण माता के लिए अशुभ किंवा चतुर्थ चरण में जन्मा जातक पिता के लिए कष्टप्रद है।

यदि आश्लेषा नक्षत्र में कन्या का जन्म हो तो प्रथम चरण शुभ (सुख-समृद्धिप्रद) तथा दूसरा-तीसरा एवं चतुर्थ चरण सास के लिए विघातक (कष्टप्रद) माना है।

मघा नक्षत्र में जन्म होने पर—

मघा के **प्रथम चरण** में जन्मे जातक एवं जातिका माता को, **द्वितीय चरण** में पिता को भारी कष्टप्रद होते हैं। मघा **तृतीय चरण** में सुख-समृद्धि हो एवं **चतुर्थ चरण** में जन्मे जातक धन-धान्यसमृद्धिप्रद लिखे हैं।

ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म होने पर—

ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम चरण** में बालक का जन्म हो तो बड़े भाई के लिए नेष्ट फलप्रद है, **द्वितीय चरण** में जन्म हो तो छोटे भाई के लिए कष्टप्रद है। **तीसरे चरण** में माता के लिए एवं **चतुर्थ चरण** में जातक अपने शरीर-स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद रहे।

यदि **ज्येष्ठा नक्षत्र** के प्रथम चरण में कन्या का जन्म हो तो बड़े भाई एवं विवाहोपरान्त अपने जेठ (पति के बड़े भाई) के लिए विघातक रहे। **द्वितीय चरण** में अपने छोटे भाई किंवा देवर के लिए अशुभ रहे। **ज्येष्ठा के तृतीय चरण** में अपनी माता/सास के लिए, चतुर्थ चरण में बालिका देवर के लिए शुभ लिखी है।

ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र में जन्म का अशुभ फल प्रतिपादक शास्त्रवचन इस तरह है। देखिये—

"सुतः सुता वा नियतं श्वसुरं हन्ति मूलजः।
तदन्त्य-पादजो नैव तथाऽश्लेषान्त्य-पादजः॥"

रेवती नक्षत्र में जन्म होने पर—

रेवती नक्षत्र के प्रथम तीन चरणों में जन्मे जातक (बालक-बालिका दोनों) का फल पूर्णरूपेण शुभ, राज्यपक्ष से लाभप्रद, धन-धान्यवृद्धि देने वाला होता है। लेकिन रेवती के चतुर्थ चरण में जन्मे बच्चे अपने शरीर-स्वास्थ्य के लिए कष्टप्रद होते हैं।

अश्विनी नक्षत्र में जन्म होने पर—

अश्विनी का प्रथम चरण पिता के लिए कष्टप्रद है—**"अश्विन्याः प्रथमे पादे निश्चितं बाध्यते पिता।"** शेष तीन चरण परिवार में धन-ऐश्वर्यवृद्धि, राजपक्ष से लाभ एवं मान-सम्मानप्रद रहते हैं।

एकादशी के दिन चावल खाने निषिद्ध हैं?

"चावल या ओदन (भात) एकादशी के दिन नहीं खाने चाहिएं"—ऐसा एकादशी तिथि में एकमात्र विशेषतः चावल खाने के निषेध का तो शास्त्रों में उल्लेख नहीं। हां, एकादशी के दिन उपवास रखना (व्रती रहना), अन्न ग्रहण न करना;—एतद्विषयक वाक्य तो शास्त्रों में उपलब्ध हैं। जैसे—

"एकादश्यां न भुञ्जीत-पक्षयोरुभयोरपि।"

किञ्च—"अन्नमाश्रित्य पापानि तिष्ठन्ति हरिवासरे"—आदि वाक्य शास्त्रों में उपलब्ध हैं।

ध्यान दें—संस्कृत में '**अन्न**' शब्द का प्रयोग प्राधान्येन गेहूं, जौ, चावल, चना आदि अनाजों के लिए होता है (जैसे—"**अन्नाद-भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः**" आदि)। इसका प्रयोग '**उबले चावल**' (भात) के लिए भी किया जाता है।

'**वशिष्ठ स्मृति**' के इस वचन से और भी स्पष्ट हो जाता है—

"सस्यं क्षेत्रगतं प्रोक्तं सतुषं धान्यमुच्यते।
आमं तु वितुषं ज्ञेयं स्विन्नम् अन्नम् उदाहृतम्॥"

(अर्थात् खेत में खड़े चावल सस्य, तुषयुक्त धान्य, तुषरहित 'आम' और उबले हुए चावल अन्न कहलाते हैं।)

अतः स्पष्ट है कि—"**अन्नमाश्रित्य पापानि तिष्ठन्ति हरिवासरे।**"

इन वाक्यों में प्रयुक्त 'अन्न' शब्द से चावल (भात) ऐसा अर्थ पर्वतीय, बंगदेशीय, दक्षिण भारतीय आदि लोगों द्वारा किया गया है, जिनका प्रमुख खाद्य भात (चावल) है।

अपि च—वैदिक काल में चावल प्रमुख अन्न रहा है। वैसे भी **धर्मशास्त्र** में **अनेकों वाक्य एकादशी के दिन सर्वथा अनशन (सभी प्रकार के अनाजों के त्याग) का ही आदेश देते हैं। धर्मशास्त्र के वाक्यों में यह कहीं निर्देश नहीं कि—एकादशी के दिन (भात) चावल नहीं खाने चाहिएं।** शास्त्र तो एकादशी के दिन **व्रती रहने का ही निर्देश करते हैं—**

"एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि।"

अतः एकादशी के दिन चावल ही अभक्ष्य हैं, अन्य अन्न शास्त्रविहित हैं—यह सर्वथा भ्रान्ति है। इस दिन निराहार व्रती रहना ही शास्त्रविहित है।

नेष्टफल-शान्त्यर्थ नवग्रहों के निमित्त दान-विधान

सूर्य के लिए दान—लाल गाय, तांबे के बर्तन, गेहूं एवं लाल चन्दन का दान करने से कष्टप्रद स्थिति में सूर्य से मुक्ति का अनुभव करेंगे—

"सूर्ये धेनुश्च ताम्रं च गोधूमं रक्त-चन्दनम्।"

चन्द्रमा नेष्ट फलप्रद हो तो—शंख, सफेद चन्दन, सफेद वस्त्र एवं चावलों का दान करें—

"चन्द्रे शंखं चन्दनं च वस्त्रं च सित-तंदुलम्।"

मंगल-शान्त्यर्थ—लाल बैल, लाल वस्त्र, गुड़ एवं लाल अन्न का दान करें—

"कुजे वृषः प्रदातव्यो रक्तवस्त्रं गुडौदनम्।"

बुध ग्रह-शान्त्यर्थ—कपूर, मूंग, हल्दी एवं हरे रंग की मणि (पन्ना) दान करें—

"बुधे कर्पूर-मुद्गाश्च हरिद्रा च हरिन्मणिः।"

गुरु ग्रह-शान्त्यर्थ—हल्दी, पीले वस्त्र एवं चने की दाल किंवा पीले फलों का दान करें—

"पीतवस्त्रद्वयं जीवे हरिद्रा-चणकानि च।"

शुक्र ग्रह-शान्त्यर्थ—सफेद घोड़ा (अभावे सफेद गाय), सफेद धान्य एवं सफेद मणि का दान करें—

"अश्वः शुक्रे सितो देयः शुक्लधान्यानि यानि च।"

शनि ग्रह-शान्त्यर्थ—लोहे के बर्तन में तेल में मुंह देखकर तेलदान, काले वस्त्र में काले तिल एवं काली (कपिला) गाय का दान करें—

"शनौ तैलं तिलाः देयाः कृष्ण-गोदानमुत्तमम्।"

राहुजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ—भैंस, बकरी, उड़द, काले तिल और सरसों का दान करें—

"राहोश्च महिषी-छागौ माषाश्च तिल-सर्षपाः।"

केतु ग्रह-शान्त्यर्थ—बकरी, मेढ़ा, सतनाजा (सात प्रकार के अनाज) का दान करें—

"अजमेषौ च दातव्यौ केतौ चान्नं च मिश्रितम्।"

किञ्च—सभी ग्रह शान्त्यर्थ स्वर्णदान, गोदान, ग्रहमन्त्रजापपूर्वक ब्राह्मणों की पूजा करें—

"स्वर्ण-गो-विप्र पूजाभिः सर्वेषां शान्तिरुत्तमा।"

अन्य विशेष ज्ञातव्य—

1. पंचक-विचार (पंचकों में क्या कुछ करना निषिद्ध है?)—

ध्यान दें—धनिष्ठा से रेवती नक्षत्र तक पांच नक्षत्रों को '**पंचक**' संज्ञा दी गयी है। इन नक्षत्रों में कौन से कार्य वर्ज्य हैं—यह स्पष्ट करना प्रासंगिक है। पचंकों में (कुम्भ-मीनस्थ चन्द्र के समय) खाट बुनना, काष्ठ-संग्रह, मकान पर लकड़ी की छत डालना, लकड़ी का फर्नीचर खरीदना एवं दक्षिण-दिशा की तरफ यात्रा करना—ये सब वर्जित हैं—

"धनिष्ठा-पंचके त्याज्यस्तृणा -काष्ठादि-संग्रहः।
त्याज्या दक्षिण-दिग्यात्रा गृहाणां छादनं तथा॥"

अपि च—"शय्या-वितानं प्रेतादि-क्रियां काष्ठ-तृणार्जनम्।
याम्य-दिग्गमनं न कुर्याच्चन्द्रे कुम्भे च मीनगे॥"

2. पंचकों में मृत व्यक्ति (प्रेत) का दाह-संस्कार भी आवश्यकता में कुशा द्वारा निर्मित '**पांच पुत्तलिका**' बनाकर मृत व्यक्ति के साथ ही करना चाहिए, अन्यथा पंचकों के नियमों का उल्लंघन मुहूर्त ग्रन्थों में बहुत अशुभ लिखा है।

ध्यान रहे—विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधूप्रवेश, उपनयन, रक्षाबन्धन एवं भाईदूज आदि पर्वों/मुहूर्तों में पंचक-नक्षत्रों की विचारणा मुहूर्त-ग्रन्थकारों ने कहीं नहीं की। अतः इस बारे में भ्रान्ति में न पड़ें।

3. तिथियों के नाम—तिथियां पांच प्रकार की हैं—नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता एवं पूर्णा।

1. **नन्दा तिथियां**—प्रतिपदा, छठ, एकादशी,
2. **भद्रा तिथियां**—द्वितीया, सप्तमी एवं द्वादशी,
3. **जया तिथियां**—तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी,
4. **रिक्ता तिथियां**—चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी,
5. **पूर्णा तिथियां**—पंचमी, दशमी, पूर्णिमा एवं अमा,

नोट—उल्लिखित '**रिक्ता तिथियां**' शुभ कार्य प्रारम्भ करने में त्याज्य किंवा नेष्ट मानी गयी हैं।

त्रयस्त्रिंशद् योगावली

(वर्षफल में घटित होने वाले योगों का विवरण)

यवन-शासनकाल में फलित ज्योतिष के सिद्धहस्त 'दैवज्ञ शिरोमणि' इन योगों के लेखक थे। सं. 2075 वि. के पंचांग में जन्मपत्र में घटित होने वाले 'राजयोगों' का विवरण दिया गया था। इस वर्ष (सं. 2077 वि. में) सहारनपुर (उ.प्र.) के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीप्रभाकर जी के ग्रन्थागार से उपलब्ध **वर्षफल-सम्बन्धित** 33 योगों का विवरण दे रहे हैं। यह पुस्तिका जीर्ण-शीर्ण अवस्था में लगभग 85 वर्ष पूर्व प्राप्त हुई थी। यवनाचार्य के इन प्रयासों को विद्वज्जनों तक पहुंचाने के उद्देश्य से प्रकाशित करने का यह एक प्रयत्न है। '**फलितशास्त्र**' में रुचि रखने वाले ज्योतिषी लोग **वर्षफल में घटित** होने वाले इन योगों की प्रामाणिकता को स्वयं अनुभव करें। ध्यान रहे—व्याकरण की दृष्टि से यहां कोई Correction नहीं की जा रही है, यथालब्ध Manuscript ही प्रकाशित कर रहे हैं। इन योगों के नाम फारसी के मालूम देते हैं।—सम्पादक

'नव्वाब खानखाना कृत' वर्षफल में घटित होने वाले 'त्रयस्त्रिंशद् योगावली' के नाम इस प्रकार हैं—

1. मुक्ताविल्ल, 2. काविल्ल, 3. लालील, 4. लत्ता, 5. रिहा, 6. गेशना, 7. दोशना, 8. चीन, 9. कोशा, 10. कलावार, 11. वारा, 12. सबा, 13. सिल्ल, 14. दिल्ला, 15. स्तथाबादला, 16. मद्ला, 17. ष्ठीय, 18. कुलांब, 19. कुलाली, 20. खुशालो, 21. खुशाली, 22. फलूशा, 23. फलाशी, 24. बादरा, 25. बादरी, 26. तमाला, 27. तमाली, 28. तगी, 29. तेज, 30. तेगी, 31. जमी, 32. जीवगा, 33. खंजाब।

ये उल्लिखित वर्षफल में घटित होने वाले योग हैं। इनका भाषाटीकासहित क्रमशः विवरण यथालब्ध संस्कृत श्लोकों के साथ दे रहे हैं।

1. मुक्तावली योग

"यामित्र-मूर्त्यो खलु पापखेटा
अनुक्रमेणा यदि भावचक्रात्।
क्लेशं विवादं नृपतेर्भयं च
मुक्तावली योगकृतं च कष्टम्॥"

अर्थात्—यदि सातवें भाव से लग्न पर्यन्त सभी पापग्रह क्रमशः स्थित हों तो **'मुक्तावली योग'** क्लेश, विवाद, राजपक्ष से भय एवं शारीरिक किंवा मानसिक कष्टप्रद होता है।

2. काबिल योग

"इन्दु-ज्ञ-जीव-भृगुपुत्र गते धने च,
आपोक्लिमे च रवि-राहु-कुजार्क-पुत्राः।
लक्ष्मी-प्रवृद्धिम् कुरुते त्वतुलं च तेजो
राज्यास्पदं भवति काबिल-योगगेन॥"

अर्थात्—चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्र—ये चारों ग्रह जातक के वर्ष लग्न में धनस्थान में हों और आपोक्लिम(३, ६, ९ एवं १२वें) स्थानों में (वर्षलग्न से) सूर्य-राहु-मंगल एवं शनि स्थित हों तो जातक धनाढ्य, तेजस्वी एवं राज्याधिकार प्राप्त करता है—यह **'काबिल योग'** फल है।

3. लालील योग

"मित्रे धनस्थे यदि वा विलग्ने,
सौम्याश्च खेटा नर सौम्यवर्गे।
क्रूरा षडाये धन-धान्य-युक्तो
लालील-योगो यदि हायनेऽस्मिन्॥"

अर्थात्—वर्षलग्न के चतुर्थभाव-द्वितीय किंवा लग्न में शुभग्रह पुरुष राशि में हों और वर्षलग्न से क्रूर ग्रह छठे एवं ग्यारहवें भाव में हों तो वह वर्ष धन-धान्य-समृद्धि देने वाला (लालील योग युक्त) होता है।

4. लत्ता योग

"अरि-मदन-धनेषु क्रूर-खेटा गता स्युः,
तनुपति-व्यय-वित्ते कोऽपि सौम्यैर्न दृष्टः।
भवति रिपुविवादो मान-सौख्यं च जातो
क्षण-क्षणमपि योगो सौख्य-लत्ता समाब्दे॥"

अर्थात्—यदि वर्षफल के छठे, सातवें और दूसरे स्थान में क्रूर ग्रह हों, वर्षलग्नेश

बारहवें किंवा द्वितीय (धन) स्थान में हो और उल्लिखित योग शुभग्रह से दृष्ट वा युक्त न हों तो वह वर्ष '**लत्ता योगयुक्त**' होता है। इस वर्ष में प्रतिक्षण शत्रु से हानि, विवादभय, चिन्ता रहे। उल्लिखित स्थानों में शुभग्रह दृष्ट या प्रबल होने पर वर्ष में मान-सम्मान हो, सुख-समृद्धि मिले एवं शत्रु हतप्रभ रहें।

5. रिहा योग

"तपनमिन्दुज-सिंहज-लग्नगा
शुभ ग्रहैर्नैव विलोकिताः।
स्वजन-शोक-विनाशरते रतिं
यदि न ह्यदगते रिहयोगजः॥"

अर्थात्—सूर्य-बुध एवं राहु ये ग्रह वर्षलग्न में हों तथा इन पर शुभग्रह की दृष्टि भी न हो तो निजी प्रियबन्धु के निधन से शोक हो, कारोबार एवं नये उद्योग किंवा नये प्रोग्रामों में हानि हो—ऐसा '**रिहा**' नामक योगफल होता है।

6. गोशना योग

"छिद्रनाथो नव-पंचम-षष्ठगो वित्तनाथो क्रूर-नवांशगो।
दशन-धान्यदशा च रिपु-दशा वसन-वित्त-विनाशनगोशना॥"

अर्थात्—वर्षलग्न से आठवें स्थान का स्वामी नवम-पंचम किंवा छठे भाव में स्थित हो, किंच धनेश क्रूर ग्रह किंवा पापग्रह के नवांश में स्थित हो, किंच शत्रुग्रहों के अवान्तर में दशन (दन्त व मुख) रोग, धान्यहानि, वस्त्रादि के व्यवसाय में धन-हानिकारक '**गोशना योग**' कहा है।

7. दोशना योग

"द्वितीय-भाग्य-यमार-विधुसुतास्तनुपतिर्विबलो निधनाश्रितः।
तदप-योगकृतः खलु दोशना करणनाश-विनाशकस्तिखाशना॥"

अर्थात्—दूसरे किंवा नवम भाव में शनि-मंगल एवं बुध हों और लग्नेश निर्बल होकर मृत्यु (अष्टम) भाव में हो तो सभी प्रयासों (व्यवसायों) का ह्रास करने वाला सर्वतो भावेन दुःखप्रद '**दोशना योग**' होता है।

8. चीन योग

"शित-गुरुर्शशितो यदि तुर्यगस्तपन-पुत्र विधुनिज-लग्नगः।
[illegible]

अर्थात्—यदि (वर्षलग्न में) चन्द्र से चतुर्थ स्थान में शुक्र हो, शनि-चन्द्र (वर्ष-लग्न में) अपनी राशि मकर-कुम्भ-कर्क में स्थित हों, तो उस वर्ष में धन-धान्यसमृद्धि, हाथी, घोड़ा आदि का सुख देने वाला '**चीन योग**' होता है।

9. कोश योग

"प्रालेय-राशिर्यदि पापखेटा लग्ने-धने वा व्ययभाव-याते।
मृत्युकरं वा धनहीनतां च गतप्रतिष्ठां यदि कोशयोगः॥"

अर्थात्—(वर्षाङ्ग में) कर्कराशिस्थ पापग्रह लग्न, द्वितीय किंवा व्यय भाव में युत हों तो उस वर्ष में मृत्युतुल्य कष्ट किंवा मृत्युभय, धन-मानहानि का भय रहता है, यह '**कोश योग**' कहा है।

10. कलांवार योग

"उदय-जन्मलग्नो यदा हायनेस्मिन्
ज्वरं-कम्पकं-श्वास-कासं च कण्डुम्।
कालाम्बरो योगो यदा हायनेऽस्मिन्
अथारिष्ट-नाशो यदा केन्द्रवर्ति॥"

अर्थात्—जन्मलग्न एवं वर्षलग्न जब एक ही आ जायें (जिसे **एकोदय** किंवा **द्विजन्मा** वर्ष भी कहा जाता है) तो उस वर्ष में ज्वर, कम्पन रोग, खांसी किंवा त्वचा रोग आदि शारीरिक कष्टों से पीड़ा होती है। यदि जन्मलग्न वर्षलग्न से केन्द्र में हो तो वह सर्वारिष्ट नाशकारक होता है। यह योग '**कलाम्बर**' कहा गया है।

नोट—यदि जन्मलग्न एवं वर्षलग्न एक ही हों और नक्षत्र भी एक ही हो तो यह योग अधिक नेष्ट फलप्रद कहा है।

11. वारा योग

"झपे गुरु-शुक्र-महीसुतोऽपि
लग्ने गते वा हिबुके विलग्नात्।
हेमं च रत्नं लभते मनुष्यो
कृतस्य वारा यदि योगमब्दे॥"

अर्थात्—यदि वर्षलग्न में गुरु-शुक्र-मंगल हों अथवा लग्न से ये चतुर्थ स्थान में मीनस्थ हों तो जातक को स्वर्ण-रत्नादि का प्रचुर मात्रा में लाभ देने वाला '*वारा योग*'

12. समा योग

"जन्म-भांशगते रिपु-मृत्युगे गगन-बन्धु-तमो मृति पश्यति।
यदि करोति कफादनुश्लेष्मयोः भय समा खलु योगञ्चब्दपे॥"

अर्थात्—जन्मराशि एवं उसके नवांश की राशि छठे, आठवें स्थान में हो एवं सूर्य-राहु की अष्टम भाव पर दृष्टि हो तो कफ-वायुजन्य रोगों से कष्ट देने वाला '**समा योग**' कहा है।

13. सिल्ल योग

"शनिः कुम्भराशौ लवैर्वर्धमानः
घटांशैर्गतो मन्द मूर्तौ च मब्दे।
नरं भूपमानं विवादादिकार्यभ्,
मतं हेमलब्धिं शिला-योग-संस्थे॥"

अर्थात्—यदि कुम्भ राशि का शनि बढ़ते हुए अंश का हो एवं शनि कुम्भ के नवांश में स्थित होकर वर्षलग्न में गया हो तो जातक को राजपक्ष से सम्मान, विवाद (मुकद्दमेबाजी आदि) कार्यों में सफलता एवं यश-स्वर्ण, धन-धान्यादि-लाभ देने वाला '**शिला योग**' कहा है।

14. दिल्ला योग

"रविर्जन्म-लग्नाधिपो व्योम-भावे यदा व्योम-भावाधिपस्तुंगवर्ती।
तदा कष्टनाशं महातेजवृद्धिर्गजाश्वादि प्राप्तिर्दिला-योगमध्ये॥"

अर्थात्—यदि जन्म लग्नेश सूर्य हो और सूर्य वर्ष में दशमस्थान में बैठा हो एवं वर्षलग्न से दशम भाव का स्वामी उच्चस्थ हो तो सभी कष्टों का निवारण हो, प्रभाव क्षेत्र बढ़े, कार, घोड़ा आदि वाहन का सुख देने वाला '**दिला**' नाम योग होता है।

15. बादला योग

"धने लाभगे राहु-चन्द्रोच्च-संस्थे-
नवांशेऽपि सिंहे गुरौ वक्रभागे।
बहुलाभकारी विधु-पुत्रयुक्तो
धनं सञ्चितं बादलायोगमब्दे॥"

अर्थात्—यदि वर्षलग्न में अपनी उच्च राशि (वृष) में राहु एवं चन्द्र धन अथवा लाभ भाव में गये हों और नवांश में सिंह राशिस्थ गुरु वक्र हो तथा बुध के साथ मेल करे तो व्यवसाय में बहुत लाभ देने वाला, धनाढ्य बनाने वाला प्रभावकारी '**बादला योग**' होता है।

16. मादला योग

"तृतीय-पंचम-भाग्य तथायगे शुभा
खलाप्यथवा निजोच्चगाः।
भवति योगकृते यदि मादला
सकल-सिद्धिकरश्च जने सुखम्॥"

अर्थात्—यदि वर्षलग्न में तीसरे, पांचवें, नवमे और ग्यारहवें भाव में शुभ अथवा पापग्रह बैठे हों किंवा अपनी उच्च राशि में स्थित ग्रह उल्लिखित भावों में गये हों तो समस्त समस्याओं को हल करके सुख-समृद्धिप्रद '**मादला योग**' होता है।

नोट—पापग्रहों का तीसरे किंवा एकादश भाव में होना श्रेष्ठ है। अतः तीसरे, ग्यारहवें भाव में पापग्रह एवं नवम, पंचम भाव में शुभग्रह होने पर भी यह योग घटित होता है।

17. ष्ठीय योग

"रवौ सिंह-राशौ गुरौ चापमध्ये
महीपुत्र-लाभे यदा दक्षभागे।
धनं वस्त्रभागीमहंकारवृद्धिः
नरं तेजते जीनरेष्ठीय योगे॥"

अर्थात्—(वर्षाङ्ग में यदि) सिंहस्थ सूर्य छठे भाव में और धनुःस्थ गुरु दशम भाव में हो एवं ग्यारहवें भाव (मकर राशि का) मंगल हो तो '**ष्ठीय योग**' के कारण जातक धन-धान्यसमृद्धि युक्त, वस्त्रालंकार-लाभ, मान प्रताप प्राप्त करके अहंकारी होता है।

18. कुलाब योग

"भृगुस्त्वौज-राशौ यदा कन्यकादौ अजान्ते गुरुर्युग्मभांशे च लग्ने।
रिपु-नाशनं स्त्री-विलासं सुखं च नरं सर्वसिद्धिदं कुलावे तु योगे॥"

अर्थात्—वर्षलग्न में कन्या राशि के आगे की विषम राशि (७, ९, ११) में शुक्र गया हो और मेष राशि के अन्त की (आगे की) राशि के लग्न अथवा नवांश (२, ४, ६, ८, १०, १२) में गुरु हो तो शत्रु का नाश करने वाला, स्त्रीपक्ष से सुख, विलास, वैभव

सुख, सभी कार्यों की सिद्धि देने वाला 'कुलाब योग' होता है।

19. कुलाली योग

"ग्रहाः क्रूरा सौम्या अरिस्थे चारिष्टे सुरेज्यो विधुः सैंहिकेयस्त्रिकोणे।
नृपात् सौख्यकारी जयं शत्रुभावस्तदा द्रव्यलाभं कुलाली च योगे॥"

अर्थात्—(वर्षलग्न में) छठे भाव में क्रूर ग्रह व आठवें भाव में शुभग्रह स्थित हों, गुरु-चन्द्र-राहु ये त्रिकोण (पंचम-नवम) भाव में हों तो राजा से मान-सम्मान एवं सुख मिले, शत्रु हतप्रभ रहें किंच धनलाभ देने वाला 'कुलाली योग' होता है।

20. खुशाला योग

"अरिस्थे च क्रूरो भवेद्यस्य खेटः
भृगुज्ञो विधुश्चावरे जीववापी।
नरं ग्रामलाभं धनं धान्य-वस्त्रं
कलत्रादि-सौख्यं खुशाले तु योगे॥"

अर्थात्—छठे स्थान में क्रूर ग्रह हो, दशम भाव में गुरु, शुक्र, बुध एवं चन्द्र हों तो 'खुशाला योग' होता है। उस वर्ष में राजमान, स्थायी सम्पत्तिलाभ, धन-धान्य, वस्त्राभरणादि का लाभ होता है।

21. खुशाली योग

"तृतीये च शुक्रो गुरो सार्धचारी विधुर्मन्दयुक्तो यदा लग्नवर्ती।
प्रभुता च वृद्धि सुख-सम्पदादौ हिरण्यादि युक्तो खुशाली च योगे॥"

अर्थात्—शुक्र एवं गुरुयोग तीसरे स्थान में हो, शनियुक्त चन्द्र वर्षलग्न में विद्यमान हो तो इस 'खुशाली योग' में प्रभावक्षेत्र (प्रभुता) की वृद्धि, सुख-सम्पदा, धन-धान्य एवं स्वर्णादि की प्राप्ति होती है।

22. फलूशा योग

"लाभे व्यये लग्नते च दुष्टे विद्या-रिपुस्थे मदने च सौम्ये।
प्राप्तेऽपि लाभे फलहीनता स्यात् सर्वार्थनाशं कुरुते फलूशः॥"

अर्थात्—यदि वर्षाङ्ग के ग्यारहवें, बारहवें और लग्न में पापग्रह हों, पांचवें, छठे, सातवें घर में शुभ ग्रह हों तो हाथ में आया हुआ लाभ भी प्राप्त न हो, ऐसा सब तरह से हानिकारक 'फलूशा योग' होता है।

नोट—इस योग में शुभ और पापग्रह का प्रतियोग होता है। यदि यह प्रतियोग १८० अंश के पूर्ण अन्तर का हो तो महानेष्ट फलप्रद होता है।

23. फलाशी योग

"धने व्यये मृत्यु-रिपावस्तगे वा पापाश्च सौम्या विबलापि चक्रे।
क्लेशं विवादं पशुपीडनं च फलाशी योगे स्वजनैश्च वैरम्॥"

अर्थात्—दूसरे, बारहवें, आठवें, छठे और सातवें स्थान में पापग्रह स्थित हों और सौम्य (शुभ) ग्रह निर्बल (नीच-शत्रु किंवा अस्तंगत) हों तो 'फलाशी योग' होता है। यह योग जिस वर्ष में घटित हो रहा हो, उस वर्ष में गृहक्लेश, विवाद, पशुपीड़ा किंवा स्वजनों से विरोध होता है।

24. बदारा योग

"लग्नाधिपो भौमयुतश्च रन्ध्रे रन्ध्रादिनाथो व्ययगे रिपुस्थे।
करोति कष्टं रिपुणा विवादं शस्त्राभिघातं कुरुते बदारा॥"

अर्थात्—यदि वर्ष लग्नेश अष्टम भाव में मंगल से युत हो और अष्टमेश बारहवें या छठे भाव में हो तो 'बदारा योग' होता है। जिस वर्ष में यह योग बने तो उस वर्ष में शारीरिक-कष्ट, शत्रु बढ़ें, मुकद्दमे आदि से परेशानी रहे। शस्त्र से प्रहार का भय अथवा ऑपरेशन आदि शल्य चिकित्सा से परेशानी रहे।

25. बदारी योग

"तनुपतौ व्ययभावगते रवौ सुरपतिः रिपुगे च तथाष्टमे।
तदपि रोगकृते धनहानिदो यदिहमब्दगते च बदारीजः॥"

अर्थात्—वर्षलग्नेश सूर्य यदि (वर्षलग्न के) बारहवें भाव में स्थित हो, गुरु छठे या आठवें स्थान में बैठा हो तो धनहानि एवं अनेकविध रोगों से कष्टप्रद 'बदारी योग' होता है।

26. तमाल योग

"लग्नेश्वरो व्योम-कलत्र-तुर्ये तद्भावनाथो यदि तुर्यवर्ती।
राज्याधिपं वाहन-सौख्यमित्र-शत्रुक्षयं वाहनते तमालम्॥"

अर्थात्—यदि वर्षलग्नेश दशम, सप्तम या चतुर्थ स्थान में हो, (लग्नेश) जिस

भाव में हो उसका स्वामी यदि चतुर्थ स्थान में हो तो 'तमाल योग' होता है। उस वर्ष में राजसुख एवं वाहनसुख मिले तथा अच्छे मित्रों से मेल एवं शत्रुपक्ष हतप्रभ रहे।

27. तमाली योग

"लग्नाधिपो भवति भौमयुते च कर्मे कर्माधिपे वसति लग्नगतेऽपि द्यूने।
सन्तान-सिद्धो सुखदं नृपदत्तमानं धान्यादि भूषणधनं कुरुते तमाली॥"

अर्थात्—वर्षाङ्ग में यदि लग्नेश मंगल से युत होकर दशम स्थान में हो एवं दशमेश लग्न में अथवा सातवें स्थान में स्थित हो तो 'तमाली योग' होता है। इस वर्ष में सन्तान-प्राप्तिसुख, राजपक्ष से सम्मान, धन-धान्यलाभ एवं वस्त्राभरण-सुख भी प्राप्त हो।

28. तगी योग

"सुतेशो गुरुः ज्ञोविधुः कीट-राशौ परं भाग्यशुक्रो वृषे वाथ मीने।
तदा धर्मवृद्धिश्च सन्तान-सौख्यं धनं धान्य-वस्त्रं तगीयोग-मध्ये॥"

अर्थात्—पंचम स्थान का स्वामी, गुरु, बुध एवं चन्द्र ये सब कीट-राशि (कर्क किंवा वृश्चिक राशि) में हों और नवम स्थान में शुक्र वृष या मीन राशि में स्थित हो तो वर्षाङ्ग में 'तगी योग' होता है। उस वर्ष में धार्मिक कार्य हों, भाग्य-यशवृद्धि, सन्तति-सुख, धन-धान्यवृद्धि होती है।

29. तेज योग

"शुक्र-ज्ञ-भास्कर-विधु-क्षितिजात्म-छिद्रे
लग्ने यदा च भवति जीवयुते च दृष्टे।
नानाविधं सपरिभोग-रतिश्च लाभम्
व्यापार-वृद्धिमतुलं कुरुते च तेजः॥"

अर्थात्—शुक्र, बुध, सूर्य, चन्द्र एवं मंगल—ये ग्रह वर्षांग के पांचवें तथा आठवें भाव में स्थित हों। किंच लग्न पर गुरु की दृष्टि या गुरु लग्न में हो तो नानाविध ऐश्वर्य की प्राप्ति, सुख, धनलाभ एवं व्यापार में बहुत तरक्की देने वाला 'तेज योग' कहा गया है।

30. तेगी योग

"अरि-धर्म-लाभे व्यये पापखेटा
व्ययाज्जन्म-वर्षाधिपो केन्द्रगे वा।
तदा राज्यमानं बहु-शत्रुनाशं
सुखं सर्वभावे यदा योग-तेगी॥"

अर्थात्—वर्षलग्न में यदि छठे, नवमे, ग्यारहवें एवं बारहवें स्थान में पापग्रह स्थित हों अथवा बारहवें भाव से केन्द्र में जन्मलग्न-पति और वर्षेश्वर बैठा हो तो राजपक्ष से मान, शत्रुओं का नाश एवं सर्वविध सुख देने वाला 'तेगी' नामक योग होता है।

31. यमी योग

"भृगु-गृहे सुरराज-पुरोहिते गुरुगृहे वसति भृगु-नन्दने।
पणफरेऽपि च तेम चतुर्थगे द्विगुण लाभकृते यमि-योगगे॥"

अर्थात्—वर्षलग्न में यदि शुक्र की राशि (७ एवं २) में गुरु ग्रह हो और गुरु की राशि (९, १२) में यदि शुक्र स्थित होकर पणफर २, ५, ८, ११ तथा चतुर्थ स्थान में स्थित हो तो 'यमी योग' होता है। इसमें व्यवसाय किंवा प्रयास से जातक को दोगुणा लाभ होता है। **किंच**—गुरु की राशि मीन में यदि उच्च शुक्र हो तो धनुराशिस्थ गुरु की अपेक्षा विशेष फलप्रद समझना चाहिए।

32. जीव योग

"यदि पराक्रम-लाभगते रवौ शुभ-
खगा हिबुके च कलत्रगे।
सुत-सुखं कुरुते विपुलं धनं
महति-कीर्ति करोति च जीवगः॥"

अर्थात्—यदि वर्षाङ्ग के तीसरे अथवा ग्यारहवें भाव में सूर्य हो और शुभग्रह चौथे किंवा सातवें स्थान में स्थित हो तो पुत्र (सन्तति) लाभ, व्यवसाय में विपुल धन की प्राप्ति, सत्कीर्ति एवं समाज में प्रतिष्ठा देने वाला 'जीव योग' कहा है।

33. खंजाब योग

"लग्नेश-लाभेश वा सुतेशस्तुर्येश-कर्मेश-धनेश-संस्थे।
तद्भाव-सौख्यं बहुलं च तेजः खंजाव योगो यदि हायनेस्मिन्॥"

अर्थात्—लग्नेश, लाभेश, पंचमेश, चतुर्थेश, दशमेश एवं सप्तमेश (ये ग्रह) जिस-जिस भाव में स्थित हों तत्सम्बन्धित (उस-उस) भाव का ही विशेष फल (किंवा सुख) और तेजवृद्धि देते हैं। ये 'खंजाब योग' होता है।

— — —

प्रसूति–लग्न विचार

मेष–जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष– माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका–स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन– माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क–माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२– इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह– माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८– इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या–माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका–स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५– ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला– माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक–माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आईं, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु–माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७– इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर– माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७– इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ–माता का सिर पश्चिम को; जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर–शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका–गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन– माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका–स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८– इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह–शान्ति–हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे–अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान– (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध–शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो– इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान– प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय–तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम–षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम–नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

दो०— मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा— लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१। ४। ७। १०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्— चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०— तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित—शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नादीपवर्तिज्ञानम्— जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः— यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न—चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि— वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या—शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्यां शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०— मीन—मिथुन—सिंह—तुला—मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्— दोहा—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुहृद् भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो— प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वमयाद् गर्भमेहि माचिर—माचिर स्वाहा।।"— इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि— पहले उपरोक्त मंत्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो:— "धूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु—पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु—पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः— "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः— "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग— क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग— यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब भान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब घन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जाने सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रैह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो०– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। **स्मरण रहे कि–** यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लडका पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोड़कर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता–पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरू की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अंन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साधवी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पापग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रहः↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्परागः	हीरा	नीलमः	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्तः	लाजवर्तः

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति– बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोये और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इत्तर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दर्शनं निवासश्च तत्ररात्रौ – ''ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।''– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिभाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– ''ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसारातिनिषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखे,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं स्थानादाझया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुञ्च रक्षा कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढे पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनो किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहू का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	...गु..., लहसुन, सांप की कांचली, ...के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के ..., राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहू का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूडे, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् [illegible]	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष............" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र–कष्टावली

ज्वालामुखी योग

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद रोगदिन–संख्या 1	2	3	4	रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्मायर्येति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर–धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोरराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	गनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

नोट– इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करे। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप–दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गए गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयनाव में जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय [illegible]

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंङ्गविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	[illegible]/मूत्राशय	[illegible]/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिंडलियां	[illegible]-युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुदगान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	[illegible]	माषान्नबलि, शनिदान

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राह्वे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी,श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल' वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्धयर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :–सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से [illegible]

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट–निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही मंगलव्रत के दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; बुधव्रत के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा; गुरुव्रत के दिन भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; शुक्रव्रत के दिन इलायची, मजीठ तथा शनिव्रत के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :-........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्रृद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य- उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :-अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, [illegible]

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो

राशि→	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
नक्षत्र→ चरण ↓	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
प्रथम चरण	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो
द्वितीय चरण	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या
तृतीय चरण	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी
चतुर्थ चरण	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू

राशि→	धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– **संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।**

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि–नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करें। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये घफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

नक्षत्रचरण एवं नवांशराशि–बोधक सारणी

प्रियव्रत शर्मा

ग्रह या लग्न किस राशि, नक्षत्र एवं नक्षत्रचरण (नवांश) में विद्यमान है– यह इस सारणी से ग्रह एवं लग्न–राश्यादि द्वारा जाना जा सकता है। ध्यान रहे–यहां दिए गए राश्यादि वे हैं, जहां राशि एवं नक्षत्रचरण (नवांश) प्रारम्भ होता है। जैसे– स्पष्ट सूर्य 5 रा. 27 अं. 20 क. हो तो सारणी से ज्ञात हो जाता है कि– सूर्य कन्या राशि, चित्रा नक्षत्र–द्वितीय चरण तथा कन्या के नवांश में है। क्योंकि यहां सूर्य कन्या राशि के ही नवांश में है, अतः यह वर्गोत्तम नवांश में है। कोष्ठक में वर्गोतम नवांश के साथ स्टार (★) लगाया गया है। कन्या के नवांश का स्वामी बुध है– यह भी सारणी में निर्दिष्ट है।

इस सारणी की मदद से नवांशकुण्डली लगाना बहुत आसान है।

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण			नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण			नवांश राशि	नवांश स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण			नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण			नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
0 00 00	मेष	अश्वि.	1	★मेष	मं.	3 00 00	कर्क	पुन.	4	★कर्क	चं.	6 00 00	तुला	चित्रा	3	★तुला	शु.	9 00 00	मकर	उ. षा.	2	★मकर	श.
0 03 20	,,	,,	2	वृष	शु.	3 03 20	,,	पुष्य	1	सिंह	सू.	6 03 20	,,	,,	4	वृश्चि.	मं.	9 03 20	,,	,,	3	कुम्भ	श.
0 06 40	,,	,,	3	मिथुन	बु.	3 06 40	,,	,,	2	कन्या	बु.	6 06 40	,,	स्वाती	1	धनु	गु.	9 06 40	,,	,,	4	मीन	गु.
0 10 00	,,	,,	4	कर्क	चं.	3 10 00	,,	,,	3	तुला	शु.	6 10 00	,,	,,	2	मकर	श.	9 10 00	,,	श्रव.	1	मेष	मं.
0 13 20	,,	भर.	1	सिंह	सू.	3 13 20	,,	,,	4	वृश्चि.	मं.	6 13 20	,,	,,	3	कुम्भ	श.	9 13 20	,,	,,	2	वृष	शु.
0 16 40	,,	,,	2	कन्या	बु.	3 16 40	,,	आश्ले.	1	धनु	गु.	6 16 40	,,	,,	4	मीन	गु.	9 16 40	,,	,,	3	मिथुन	बु.
0 20 00	,,	,,	3	तुला	शु.	3 20 00	,,	,,	2	मकर	श.	6 20 00	,,	विशा.	1	मेष	मं.	9 20 00	,,	,,	4	कर्क	चं.
0 23 20	,,	,,	4	वृश्चि.	मं.	3 23 20	,,	,,	3	कुम्भ	श.	6 23 20	,,	,,	2	वृष	शु.	9 23 20	,,	धनि.	1	सिंह	सू.
0 26 40	,,	कृत्ति.	1	धनु	गु.	3 26 40	,,	,,	4	मीन	गु.	6 26 40	,,	,,	3	मिथुन	बु.	9 26 40	,,	,,	2	कन्या	बु.
1 00 00	वृष	,,	2	मकर	श.	4 00 00	सिंह	मघा	1	मेष	मं.	7 00 00	वृश्चि.	,,	4	कर्क	चं.	10 00 00	कुम्भ	,,	3	तुला	शु.
1 03 20	,,	,,	3	कुम्भ	श.	4 03 20	,,	,,	2	वृष	शु.	7 03 20	,,	अनु.	1	सिंह	सू.	10 03 20	,,	,,	4	वृश्चि.	मं.
1 06 40	,,	,,	4	मीन	गु.	4 06 40	,,	,,	3	मिथुन	बु.	7 06 40	,,	,,	2	कन्या	बु.	10 06 40	,,	शत.	1	धनु	गु.
1 10 00	,,	रोहि.	1	मेष	मं.	4 10 00	,,	,,	4	कर्क	चं.	7 10 00	,,	,,	3	तुला	शु.	10 10 00	,,	,,	2	मकर	श.
1 13 20	,,	,,	2	★वृष	शु.	4 13 20	,,	पू.फा.	1	★सिंह	सू.	7 13 20	,,	,,	4	★वृश्चि.	मं.	10 13 20	,,	,,	3	★कुम्भ	श.
1 16 40	,,	,,	3	मिथुन	बु.	4 16 40	,,	,,	2	कन्या	बु.	7 16 40	,,	ज्येष्ठा	1	धनु	गु.	10 16 40	,,	,,	4	मीन	गु.
1 20 00	,,	,,	4	कर्क	चं.	4 20 00	,,	,,	3	तुला	शु.	7 20 00	,,	,,	2	मकर	श.	10 20 00	,,	पू.भा.	1	मेष	मं.
1 23 20	,,	मृग.	1	सिंह	सू.	4 23 20	,,	,,	4	वृश्चि.	मं.	7 23 20	,,	,,	3	कुम्भ	श.	10 23 20	,,	,,	2	वृष	शु.
1 26 40	,,	,,	2	कन्या	बु.	4 26 40	,,	उ.फा.	1	धनु	गु.	7 26 40	,,	,,	4	मीन	गु.	10 26 40	,,	,,	3	मिथुन	बु.
2 00 00	मिथुन	,,	3	तुला	शु.	5 00 00	कन्या	,,	2	मकर	श.	8 00 00	धनु	मूल	1	मेष	मं.	11 00 00	मीन	,,	4	कर्क	चं.
2 03 20	,,	,,	4	वृश्चि.	मं.	5 03 20	,,	,,	3	कुम्भ	श.	8 03 20	,,	,,	2	वृष	शु.	11 03 20	,,	उ.भा.	1	सिंह	सू.
2 06 40	,,	आर्दा	1	धनु	गु.	5 06 40	,,	,,	4	मीन	गु.	8 06 40	,,	,,	3	मिथुन	बु.	11 06 40	,,	,,	2	कन्या	बु.
2 10 00	,,	,,	2	मकर	श.	5 10 00	,,	हस्त	1	मेष	मं.	8 10 00	,,	,,	4	कर्क	चं.	11 10 00	,,	,,	3	तुला	शु.
2 13 20	,,	,,	3	कुम्भ	श.	5 13 20	,,	,,	2	वृष	शु.	8 13 20	,,	पू.षा.	1	सिंह	सू.	11 13 20	,,	,,	4	वृश्चि.	मं.
2 16 40	,,	,,	4	मीन	गु.	5 16 40	,,	,,	3	मिथुन	बु.	8 16 40	,,	,,	2	कन्या	बु.	11 16 40	,,	रेव.	1	धनु	गु.
2 20 00	,,	पुन.	1	मेष	मं.	5 20 00	,,	,,	4	कर्क	चं.	8 20 00	,,	,,	3	तुला	श.	11 20 00	,,	,,	2	मकर	श.

बारह राशियों का मासिक फलादेश एवं संक्रान्ति-फलादेश (सम्वत् 2077 वि.)

वैशाख मास

मेषसंक्रान्ति (13 अप्रैल से 13 मई तक, सन् 2020 ई.)

(चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल— संवत्सरेश बुध व्ययस्थ (मीनस्थ) होने से गणतन्त्र देश की शासन-सत्ता में कुछ परिवर्तन सम्भावित है। उच्च मंगल, नीचस्थ गुरु एवं शनि-मंगल का एकत्र होना विपक्षी दलों द्वारा देश की संचालनव्यवस्था में अवरोधक मालूम देता है। शनि-मंगल की स्थिति सीमाप्रान्तों पर संघर्षात्मक-स्थिति का संकेत देती है। नयी आर्थिक, कृषि एवं व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के योग बनेंगे। गुड़, चना, दालवाना एवं सोना, चांदी में तेजी रहेगी।

वैशाख(मेष)संक्रान्ति-कुण्डली

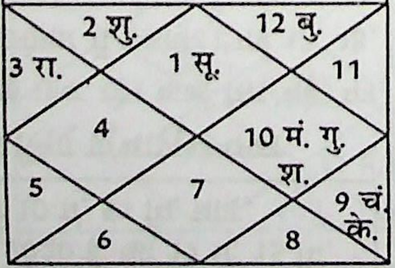

मेषसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 13 अप्रैल, सन् 2020 ई. को 20 घं. 21 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्त 30, पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर,

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष— सूर्य-मंगल उच्चस्थ हैं, सेहत ठीक रहे। शनि-मंगल एकत्र हैं, यात्रा में कष्ट-चोटभय है। मन अस्थिर, कार्यान्तर का विचार बने। **अप्रैल** 20, 21, 22, 30, **मई** 1, 8, 9 अशुभ।

वृष— शुक्र स्वराशिस्थ है, सेहत ठीक रहे। आर्थिक संकट से मन परेशान, स्त्रीपक्ष से परेशानी व गुप्त चिन्ता हो। कारोबार गड़बड़ रहे। **अप्रैल** 13, 14, 23, 24, **मई** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

मिथुन— उदरविकार, वृथा व्यय, मित्र-बन्धु से मदद, नयी योजना से लाभ, गुप्त शत्रु से सावधान, आय से व्यय अधिक हो। **अप्रैल** 15, 16, 17, 25, 26, 27, **मई** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

कर्क— कफ-वायु-विकार, कारोबार ठीक, आर्थिक लाभ, बन्धु-सुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, मासान्त में व्यय अधिक हो। **अप्रैल** 18, 19, 28, 29, **मई** 6, 7 अशुभ।

सिंह— सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानिभय, बन्धुसुख, मित्र व अच्छे लोगों से मेल, सन्तानसुख, राजपक्ष से भय, कारोबार ठीक। **अप्रैल** 20, 21, 22, 30, **मई** 1, 8, 9 अशुभ।

कन्या— वायुरोग से परेशानी, धनलाभ होकर हानि हो, बन्धुकष्ट, गुप्त शत्रु से भय, नयी योजना से हानि, कारोबार कमजोर। **अप्रैल** 13, 14, 23, 24, **मई** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

तुला— सेहत ठीक, आर्थिक संकट रहे, बन्धु से मदद, गुप्त शत्रुभय, यात्रा-कष्ट। **अप्रैल** 15, 16, 17, 25, 26, 27, **मई** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक— रक्त-पित्तविकार, वृथा व्यय, निजीजन-कष्ट, स्त्रीपक्ष से सुख। **अप्रैल** 18, 19, 28, 29, **मई** 6, 7 अशुभ।

धनु— वायुविकार, नेत्रकष्ट, निजीजन से अनबन, स्त्रीकष्ट, विरोधी कमजोर, कारोबार ठीक। **अप्रैल** 20, 21, 22, 30, **मई** 1, 8, 9 अशुभ।

मकर— वृथा झगड़े से बचें, सेहत गड़बड़, आर्थिक संकट, मित्र से मदद। **अप्रैल** 13, 14, 23, 24, **मई** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

कुम्भ— रक्त-पित्तविकार, अर्थलाभ होकर हानि, बन्धु से मदद, सन्तान-पक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। **अप्रैल** 15, 16, 17, 25, 26, 27, **मई** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

मीन— कफविकार, अर्थलाभ हो, भाई से मदद, बन्धुकष्ट, यात्रा में कष्ट, गुप्त चिन्ता। **अप्रैल** 18, 19, 28, 29, **मई** 6, 7 अशुभ।

ज्येष्ठ मास

वृषसंक्रान्ति (14 मई से 13 जून तक, सन् 2020 ई.)

(इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

वृषसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—षष्ठेश एवं लग्नेश शुक्र सूर्य से हतप्रभ है। रा. एवं श. का षडष्टक-योग कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि, कहीं यानदुर्घटना से कष्टकारक रहे। इस मास में बन रहा 'कालसर्प योग' यू.एस., रूस, चीन, उ. कोरिया एवं पाक आदि में कहीं शस्त्र-संघर्ष एवं कहीं मारक शस्त्रों के शक्तिपरीक्षण से विश्वशान्ति के लिए भयावह दृश्य उपस्थित करे। मंगल का शनिक्षेत्र में होना एवं नीच गुरु की स्थिति धातुओं, खाद्य पदार्थों में महंगाई करे। सीमाप्रान्त असुरक्षित रहें।

ज्येष्ठ(वृष)संक्रान्ति-कुण्डली

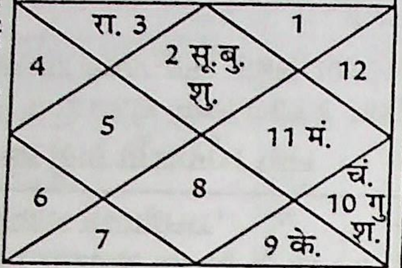

वृषसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 14 मई, सन् 2020 ई. को 17 घं. 15 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल 10 घं. 51 मि. बाद,

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सूर्य, बुध, शुक्र लग्नस्थ हैं, सेहत ठीक रहे। कर्जा सिर चढ़े, मन चिन्तित रहे, मित्र से अनबन, सन्ततिसुख, कारोबार में रुकावट। **मई** 17, 18, 19, 27, 28, **जून** 5, 6 अशुभ।

वृष—उदरविकार, धनलाभ, निजीजन-कष्ट, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्री-कष्ट, कार्यान्तर का विचार बने। **मई** 20, 21, 29, 30, **जून** 7, 8 अशुभ।

मिथुन—रक्त-पित्तविकार, राजपक्ष से भय, बन्धु से मदद, सन्ततिचिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार में सुधार हो। **मई** 14, 22, 23, 24, 31, **जून** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

कर्क—सेहत ठीक, अर्थलाभ हो, बन्धु-मित्र से मेल, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, गुप्त शत्रु से सावधान रहें। **मई** 15, 16, 25, 26, **जून** 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

सिंह—रक्त-पित्तविकार, कारोबार से लाभ, निजीजन से अनबन, सन्तान-पक्ष शुभ, कार्यान्तर का विचार बने। **मई** 17, 18, 19, 27, 28, **जून** 5, 6 अशुभ।

कन्या—चन्द्र-शनि वायुरोग-कारक हैं। अर्थलाभ हो, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कर्यान्तर का विचार हो। **मई** 20, 21, 29, 30, **जून** 7, 8 अशुभ।

तुला—रक्त-पित्तविकार, कर्जा सिर चढ़े, बन्धु-सुख, निजीजन-कष्ट, स्त्री-पक्ष से लाभ, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार बने। **मई** 14, 22, 23, 24, 31, **जून** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक—सिर व नेत्रपीड़ा, अर्थलाभ होकर विशेष खर्च, निजीजन से अनबन, कारोबार से लाभ। **मई** 15, 16, 25, 26, **जून** 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

धनु—सेहत ठीक, वृथा व्यय, कलह से बचें, निजीजन-कष्ट, शत्रुपक्ष प्रबल, अच्छे व्यक्ति से मेल हो। **मई** 17, 18, 19, 27, 28, **जून** 5, 6 अशुभ।

मकर—क्रोध से हानि, अर्थलाभ होकर हानिभय, बन्धु से सहयोग, सन्तान हेतु विशेष खर्च। **मई** 20, 21, 29, 30, **जून** 7, 8 अशुभ।

कुम्भ—कफ-वायुविकार, बन्धुसुख, सन्तानकष्ट, निजीलोगों से अनबन, कारोबार ठीक। **मई** 14, 22, 23, 24, 31, **जून** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

मीन—वृथा विवाद से बचें, कार्यान्तर से उत्तम लाभ हो। गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्रीसुख, मासान्त में कष्टभय। **मई** 15, 16, 25, 26, **जून** 3, 4, 11, [illegible]

आषाढ़ मास

मिथुनसंक्रान्ति (14 जून से 15 जुलाई तक, सन् 2020 ई.)

(क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)

मिथुनसंक्रान्ति-कालीन गोचर

आषाढ़(मिथुन)संक्रान्ति-कुण्डली

ग्रहस्थिति-फल—सूर्य-बुध एवं राहु की लग्न में स्थिति एवं नवमेश-अष्टेश होकर शनि का अष्टम भाव में गुरु के साथ मेल प्रधान नेतृत्व को राजनैतिक चक्रव्यूह में रखेगा, देशहित की योजनाओं को लागू करना सहज सम्भव न होगा। कश्मीर, पाक, बलूचिस्तान, तुर्की, सीरिया आदि में भयंकर अशान्ति रहेगी। उग्रवादजन्य घटनाएं एवं भूकम्प, विस्फोट आदि से जनधनहानि सम्भव है। अनाज, घी, गुड़, चीनी, धातुएं, शेयर बाजारों में जोरदार उठापटक रहे।

मिथुनसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 14 जून, सन् 2020 ई. को 23 घं. 52 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 45, पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर,

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—त्वचा रोग, आर्थिक लाभ हो, मित्र-बन्धुसुख, सुखद यात्रा, कारोबार में तरक्की हो। जून 14, 15, 23, 24, 25, जुलाई 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

वृष—गुप्त चिन्ता, अर्थलाभ होकर हानिभय, मित्र-बन्धुसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, कारोबार कमजोर। जून 16, 17, 18, 26, 27, जुलाई 4, 5, 14, 15 अशुभ।

मिथुन—सेहत गड़बड़, अचानक अर्थलाभ-योग, भाई से मदद, सन्तति-चिन्ता, विरोधी पक्ष कमजोर। जून 19, 20, 28, 29, जुलाई 6, 7, 8 अशुभ।

कर्क—वायुविकार, धनलाभ, खर्च अधिक, यात्राकष्ट, सन्तानपक्ष से खुशी। जून 21, 22, 30, जुलाई 1, 9, 10 अशुभ।

सिंह—सेहत कमजोर, अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, मित्र से मदद, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। जून 14, 15, 23, 24, 25, जुलाई 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

कन्या—शूगर आदि से परेशानी, सांझेदारी में हानि, क्रोध बढ़े, मित्र से मदद, कार्यान्तर का विचार। जून 16, 17, 18, 26, 27, जुलाई 4, 5, 14, 15 अशुभ।

तुला—सेहत ठीक, कार्य में रुकावट, मासान्त में वृथा व्यय, सन्ततिसुख, राजपक्ष से विजय। जून 19, 20, 28, 29, जुलाई 6, 7, 8 अशुभ।

वृश्चिक—त्वचा रोग, पित्तविकार, वृथा व्यय, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्री-पक्ष से मदद मिले, कारोबार में हानि, कार्यान्तर का विचार बने। जून 21, 22, 30, जुलाई 1, 9, 10 अशुभ।

धनु—क्रोध बढ़े, धनलाभ होकर हाथ से निकले, स्थायी सम्पत्ति का लाभ, कारोबार में रुकावट, मासान्त में हानिभय। जून 14, 15, 23, 24, 25, जुलाई 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

मकर—रक्त-पित्तविकार, अर्थहानि, गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्रीपक्ष से लाभ, मासान्त शुभ रहे। जून 16, 17, 18, 26, 27, जुलाई 4, 5, 14, 15 अशुभ।

कुम्भ—क्रोध बढ़े, धनलाभ, बन्धुसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, धर्म-कर्म में मन लगे। जून 19, 20, 28, 29, जुलाई 6, 7, 8 अशुभ।

मीन—सेहत ठीक रहे, स्थानान्तरण का योग, राजपक्ष से भय, मित्र से अर्थलाभ, सन्तति-कष्ट, कारोबार में तरक्की-योग। जून 21, 22, 30, जुलाई 1, 9, 10 अशुभ।

श्रावण मास

कर्कसंक्रान्ति (16 जुलाई से 15 अगस्त तक, सन् 2020 ई.)

(हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

कर्कसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—सूर्य-शनि का समसप्तक राजनैतिक गतिरोध पैदा करेगा। रूस, चीन आदि देश एक पृथक् गुटबाजी द्वारा अघोषित विक्षुब्ध वातावरण बनायेंगे। शनि की मंगल पर दृष्टि में सीमातिक्रमण द्वारा विरोधी देश सैन्यबल प्रयोग के लिए विवश कर सकते हैं। भारत की प्रभावराशि के आधार पर नये प्रगतिप्रद कार्यक्रमों में बाधक विपक्षीदल नगण्य रहेगा। तेल, घी, गुड़, चना तेज रहेंगे।

श्रावण(कर्क)संक्रान्ति-कुण्डली

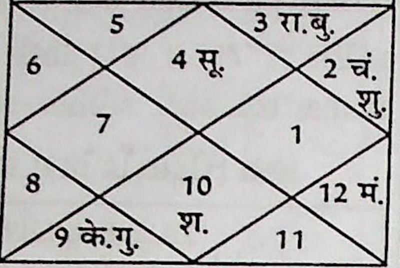

कर्कसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 16 जुलाई, सन् 2020 ई. को 10 घं. 46 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल 17 घं. 10 मि. तक,

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—उत्साह-वृद्धि, सेहत ठीक, कारोबार में तरक्की, बन्धुसुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता। **जुलाई** 21, 22, 29, 30, **अगस्त** 7, 8, 9 अशुभ।

वृष—सेहत ठीक, आर्थिक स्थिति में सुधार, बन्धुसुख, अच्छे लोगों से मेल, नयी योजना बने, यात्रासुख। **जुलाई** 23, 24, 31, **अगस्त** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मिथुन—त्वचा रोग, पुत्रपक्ष से चिन्ता, सम्पत्तिलाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति के योग। **जुलाई** 16, 17, 25, 26, **अगस्त** 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

कर्क—सेहत ठीक, सम्पत्तिलाभ, निजीजन-सहयोग, सन्तान हेतु विशेष व्यय, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। **जुलाई** 18, 19, 20, 27, 28, **अगस्त** 5, 6, 15 अशुभ।

सिंह—सेहत ठीक रहे, धनलाभ, निजीजन-कष्ट, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्री-सुख, चोटभय। **जुलाई** 21, 22, 29, 30, **अगस्त** 7, 8, 9 अशुभ।

कन्या—सेहत ठीक, राजपक्ष से लाभ, उलझे हुए मसले हल हों, मित्र-बन्धु-सुख, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक। **जुलाई** 23, 24, 31, **अगस्त** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

तुला—रुधिर-विकार, बन्धुकष्ट, वृथा विवाद से बचें, भाई-बन्धु से मेल, स्त्री से अनबन, आय से व्यय अधिक। **जुलाई** 16, 17, 25, 26, **अगस्त** 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

वृश्चिक—रक्त-पित्तविकार, क्रोध न करें, हानिभय है। मित्र-बन्धुसुख, स्त्रीपक्ष से अनबन, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **जुलाई** 18, 19, 20, 27, 28, **अगस्त** 5, 6, 15 अशुभ।

धनु—रक्तचाप (B.P.) से परेशानी, निजीजनों से अनबन, भाई से मदद, सन्तान हेतु विशेष खर्च, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। **जुलाई** 21, 22, 29, 30, **अगस्त** 7, 8, 9 अशुभ।

मकर—सेहत ठीक, कारोबार में लाभ, कर्जा चुकता हो, निजीजन-कष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ, यात्रा में कष्टभय। **जुलाई** 23, 24, 31, **अगस्त** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कुम्भ—सेहत ठीक, मन में नयी प्रेरणा से लाभ, आय-व्यय बराबर, स्त्री-पक्ष से चिन्ता, सन्तान हेतु विशेष व्यय हो। **जुलाई** 16, 17, 25, 26, **अगस्त** 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

मीन—वृथाव्यय, वृथा विवाद से बचें, बन्धु से अनबन, सन्तानपक्ष से खुशी, नीच से अपमानभय। **जुलाई** 18, 19, 20, 27, 28, **अगस्त** 5, 6, 15 अशुभ।

भाद्रपद मास

सिंहसंक्रान्ति (16 अग. से 15 सितं. तक, सन् 2020 ई.)

(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

सिंहसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—लग्नस्थ सूर्य पर गुरु की दृष्टि प्रधान नेता के प्रभावक्षेत्र की वृद्धि करेगी। लेकिन शनि की मंगल पर दृष्टि कहीं आपात स्थिति बनायेगी। शुक्र-राहु पर गुरु की दृष्टि विपरीत परिस्थितियों में सुधार का संकेत देती है। कुण्डली के सप्तम भाव पर शनि-मंगल का घेराव सीमाप्रान्तों पर चिन्ताकारक वातावरण बनाता है। किसी विशिष्ट नेता के लिए समय चिन्ताजनक व कष्टप्रद है।

भाद्रपद(सिंह) संक्रान्ति-कुण्डली

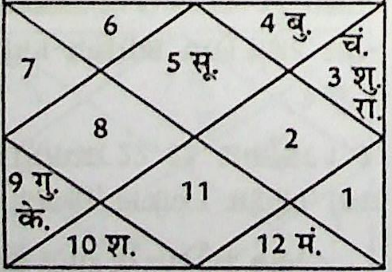

सिंहसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 16 अग., सन् 2020 ई. को 19 घं. 10 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्ती 45, पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर,

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सेहत ठीक, आय से खर्च अधिक हो, सन्तानसुख, स्त्री को कष्ट, कारोबार ठीक। **अगस्त** 17, 18, 25, 26, 27, **सितम्बर** 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।

वृष—वायुरोग, अर्थसंकट, मित्र-बन्धु से मदद, सन्तानपक्ष से खुशी, स्त्री-सुख, कार्यान्तर का विचार। **अगस्त** 19, 20, 28, 29, **सितम्बर** 6, 7, 8 अशुभ।

मिथुन—रक्त-पित्तविकार, पुराने झंझट खत्म हों, भाई व मित्र से मदद, शत्रु कमजोर, स्त्रीपक्ष से हानि, वृथा व्यय। **अगस्त** 21, 22, 30, 31, **सितम्बर** 9, 10 अशुभ।

कर्क—ब्लड-प्रेशर से परेशानी, अर्थलाभ अच्छा हो, भाई व निजीबन्धु-सुख, गुप्त चिन्ता, कार्यान्तर का योग बने। **अगस्त** 16, 23, 24, **सितम्बर** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

सिंह—सेहत ठीक रहे, लेकिन गुप्त चिन्ता से परेशानी, कारोबार ठीक, धनलाभ, अच्छे लोगों से मेल, स्त्रीसुख, यात्रा सुखद रहे। **अगस्त** 17, 18, 25, 26, 27, **सितम्बर** 4, 5, 13, 14, 15 अशुभ।

कन्या—सेहत ठीक, निजी लोगों से अनबन, शत्रु कमजोर, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **अगस्त** 19, 20, 28, 29, **सितम्बर** 6, 7, 8 अशुभ।

तुला—रक्त-पित्तविकार, कर्जा सिर चढ़े, बन्धुकष्ट, सन्तानसुख, स्त्रीकष्ट, आय से व्यय अधिक हो। **अगस्त** 21, 22, 30, 31, **सितम्बर** 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक—क्रोध बढ़े, वृथा व्यय से बचें, अचानक कष्टभय, मित्र से मदद, सन्ततिकष्ट, कारोबार ठीक। **अगस्त** 16, 23, 24, **सितम्बर** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

धनु—वायुविकार, हाथ तंग रहे, निजीजन-सहयोग, सन्तानसुख, घरेलु कलह से बचें। **अगस्त** 17, 18, 25, 26, 27, **सितम्बर** 4, 5, 13, 14, 15, अशुभ।

मकर—वायुरोग-भय, अर्थलाभ होकर हानिभय, मित्र से मिलन, पुत्रकष्ट, नये कार्य में बाधा। **अगस्त** 19, 20, 28, 29, **सितम्बर** 6, 7, 8 अशुभ।

कुम्भ—उदररोग, अचानक धनलाभ, भाई-बन्धुसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, यात्रा में कष्ट, कारोबार ठीक। **अगस्त** 21, 22, 30, 31, **सितम्बर** 9, 10 अशुभ।

मीन—सेहत ठीक रहे, अचानक धनलाभ, अच्छे लोगों से मेल, शत्रु हतप्रभ, स्त्रीसुख, कारोबार से लाभ। **अगस्त** 16, 23, 24, **सितम्बर** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

आश्विन मास

कन्यासंक्रान्ति (16 सितं. से 16 अक्तू. तक, सन् 2020 ई.)
(टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

कन्यासंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—लग्न में बुधादित्य योग प्रधान नेता के लिए शुभ है। शनि-शुक्र का समसप्तक कहीं यानदुर्घटना एवं कहीं अग्निकाण्ड से हानिकारक है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत में स्वच्छ, पारदर्शी शासन प्रशंसनीय रहेगा। खाद्य तेल, डीजल, पैट्रोल, दालवाना, घी एवं शेयर बाजार तेज रहेंगे।

आश्विन(कन्या)संक्रान्ति-कुण्डली

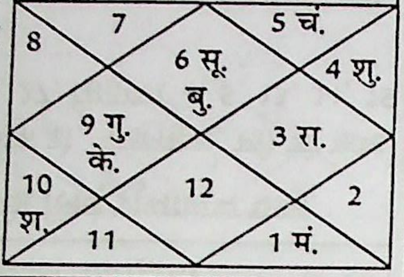

कन्यासंक्रान्ति-प्रवेशकाल 16 सितम्बर, सन् 2020 ई. को 19 घं. 6 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर,

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सेहत ठीक, कर्जा बढ़े, कारोबार कमजोर, निजीजन-सहयोग, स्थिर सम्पदा-लाभ, सन्ततिसुख, शत्रुपक्ष कमजोर। **सितम्बर 22, 23, अक्तूबर** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

वृष—वायुविकार, अचानक अर्थलाभ, मित्र-बन्धुसुख, घरेलु झंझट, स्त्री-पक्ष से मदद। **सितम्बर** 16, 17, 24, 25, **अक्तूबर** 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।

मिथुन—सेहत ठीक, कार्यान्तर से लाभ, यात्रा सुखद रहे, राजपक्ष से भय, स्त्रीसुख, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **सितम्बर 18, 19, 26, 27, अक्तूबर** 6, 7, 15, 16 अशुभ।

कर्क—पुरानी समस्याएं सुलझें, धनलाभ, निजीजन-कष्ट, मित्रमिलाप,

अक्तूबर 8, 9, 10 अशुभ।

सिंह—क्रोध से कष्टयोग, भाई-बन्धुसुख, गुप्त शत्रु से भय, स्त्रीपक्ष से लाभ, धर्म-कर्म हो, कारोबार में तरक्की। **सितम्बर 22, 23, अक्तूबर** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

कन्या—कलह-क्लेश से बचें, आर्थिक संकट रहे, भाई से मदद, सन्तति-सुख, चोटभय, कारोबार में सुधार हो। **सितम्बर 16, 17, 24, 25, अक्तूबर** 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।

तुला—कफ-वायुविकार, स्थायी सम्पदालाभ, सन्तानपक्ष से खुशी, गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रद्दोबदल। **सितम्बर** 18, 19, 26, 27, **अक्तूबर** 6, 7, 15, 16 अशुभ।

वृश्चिक—घरेलु झंझट, राजपक्ष से भय, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर व स्थानान्तर से हानि। **सितम्बर** 20, 21, 28, 29, 30, **अक्तूबर** 8, 9, 10 अशुभ।

धनु—वायुरोग, अचानक खर्च विशेष हो, बन्धु से मदद मिले, शत्रु प्रबल, स्त्री से अनबन, कारोबार में सुधार हो। सितम्बर 22, 23, अक्तूबर 1, 2, 11, 12 अशुभ।

मकर—सिर व नेत्रकष्ट, धनलाभ, मित्र-मिलाप, शत्रुपक्ष शान्त, स्त्रीसुख, कारोबार से धनलाभ। **सितम्बर** 16, 17, 24, 25, **अक्तूबर** 3, 4, 5, 13, 14 अशुभ।

कुम्भ—रुधिर-विकार, वृथा व्यय हो, स्त्री एवं बन्धुसुख, सन्तान हेतु खर्च विशेष, कारोबार में सुधार। **सितम्बर** 18, 19, 26, 27, **अक्तूबर** 6, 7, 15, 16 अशुभ।

मीन—गुप्त चिन्ता, मन अशान्त, धनलाभ होकर हानिभय, मित्र से मेल, सन्तानसुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कार्यान्तर का विचार। *सितम्बर 20, 21, 28, 29, 30, अक्तूबर 8, 9, 10 अशुभ।*

कार्त्तिक मास

तुलासंक्रान्ति (17 अक्तूबर से 14 नवं. तक, सन् 2020 ई.)

(रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

तुलासंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—शुक्र एवं सूर्य का राशि व्यत्यय तो शुभ है, लेकिन नीचस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि एवं मंगल-शुक्र का सम-सप्तक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोकसन्तप्त करेगा। सरहदी प्रान्तों पर सैन्यबल का प्रयोग अनिवार्य मालूम देता है। मकर-कुम्भ-वृष नामराशि के लिए यह मास कष्टप्रद मालूम देता है। शनि, मंगल एवं राहु की स्थिति कहीं यानदुर्घटना, प्राकृतिक प्रकोप किंवा अग्निकाण्ड से हानि का संकेत देती है। गुड़, चीनी, खाद्य तेल एवं धातुएं तेज रहें।

कार्त्तिक(तुला)संक्रान्ति-कुण्डली

तुलासंक्रान्ति-प्रवेशकाल 17 अक्तूबर, सन् 2020 ई. को 7 घं. 4 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल मध्याह्न तक,

कार्त्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—नेत्र व सिरपीड़ा, भाई-बन्धुसुख, गुप्त शत्रुभय, सम्पत्ति-विवाद, कारोबार में रुकावट, स्त्रीकष्ट। **अक्तूबर** 19, 20, 28, 29, 30, **नवम्बर** 7, 8 अशुभ।

वृष—वायुविकार, आर्थिक संकट, निजीजन से अनबन, सन्तान-स्त्रीपक्ष से सुख, कार्यान्तर का विचार। **अक्तूबर** 21, 22, 31, **नवम्बर** 1, 9, 10, 11 अशुभ।

मिथुन—सेहत ठीक, आर्थिक सुधार हो, निजीलोगों से विरोध, राजपक्ष से भय, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल। **अक्तूबर** 23, 24, 25, **नवम्बर** 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कर्क—कर्जा सिर चढ़े, सेहत ठीक, गुप्त चिन्ता, वृथा व्यय हो, कारोबार में हानि। **अक्तूबर** 17, 18, 26, 27, **नवम्बर** 5, 6, 14 अशुभ।

सिंह—गुप्त चिन्ता, मित्र-बन्धुसुख, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल से लाभ, यात्रा में चोटभय। **अक्तूबर** 19, 20, 28, 29, 30, **नवम्बर** 7, 8 अशुभ।

कन्या—सेहत ठीक, कार्यान्तर से लाभ, स्त्रीकष्ट, निजीजन-विरोध, कारोबार में सुधार। **अक्तूबर** 21, 22, 31, **नवम्बर** 1, 9, 10, 11 अशुभ।

तुला—सेहत ठीक, वृथा विवाद से बचें, गुप्त चिन्ता, आर्थिक संकट बने, स्त्री से अनबन। **अक्तूबर** 23, 24, 25, **नवम्बर** 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक—उदरविकार, मित्र-बन्धु को कष्ट, गुप्त शत्रु से भय, स्त्रीकष्ट, कारोबार में सुधार। **अक्तूबर** 17, 18, 26, 27, **नवम्बर** 5, 6, 14 अशुभ।

धनु—सेहत ठीक, अर्थलाभ, भ्रातृकष्ट, सन्तान हेतु विशेष व्यय, स्त्रीसुख, धर्म-कर्म में मन लगे। **अक्तूबर** 19, 20, 28, 29, 30, **नवम्बर** 7, 8 अशुभ।

मकर—गुप्त चिन्ता, अर्थलाभ होकर हानिभय, निजीजन-कष्ट, सन्तान हेतु विशेष खर्च, कारोबार बदले। **अक्तूबर** 21, 22, 31, **नवम्बर** 1, 9, 10, 11 अशुभ।

कुम्भ—वायुरोग से कष्ट, मित्र-बन्धु से मदद, सन्तानसुख, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ। **अक्तूबर** 23, 24, 25, **नवम्बर** 2, 3, 4, 12, 13 अशुभ।

मीन—कर्जा बढ़े, वृथा व्यय, निजीजन-कष्ट, मित्र से मदद, सन्तानसुख, शत्रु बढ़ें, कार्यान्तर का विचार बने। **अक्तूबर** 17, 18, 26, 27, **नवम्बर** 5, 6, 14 अशुभ।

मार्गशीर्ष मास

वृश्चिकसंक्रान्ति (15 नवं. से 14 दिसं. तक, सन् 2020 ई.)

(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

वृश्चिकसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—सूर्य-चन्द्र-केतु का राहु के साथ समसप्तक एवं शनि की मंगल पर दृष्टि देश की राजनीति में अघटित घटनाओं को जन्म देगी। राजनैतिक दलों में एकरूपता न होने से देश के नेता किंकर्तव्य-विमूढ़ से रहें। लेकिन गुरु-शनि की स्थिति प्रधान नेता को समस्या के समाधानार्थ प्रेरित करेगी। देश की गरिमा की रक्षा हेतु सैन्य संगठन जरूरी रहेगा। नीचस्थ चन्द्र प्राकृतिक प्रकोप का संकेत देता है। खड़ी फसलों की हानि से खाद्य पदार्थ महंगे होंगे।

मार्गशीर्ष(वृश्चिक)संक्रान्ति-कुण्डली

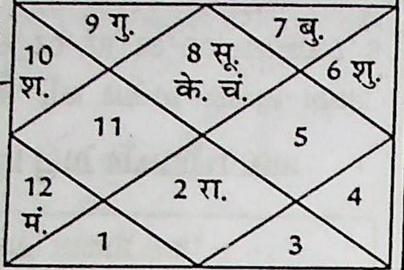

वृश्चिकसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 15/16 नवम्बर, सन् 2020 ई. को 6 घं. 52 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 305, पुण्यकाल मध्याह्न तक,

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—गुप्त चिन्ता, मन अशान्त, कार्यान्तर से लाभ, भाई-बन्धुसुख, स्त्री-कष्ट, यात्रा में चोटभय। **नवम्बर** 16, 17, 24, 25, 26, **दिसम्बर** 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।

वृष—सेहत ठीक, धनलाभ हो, गुप्त शत्रु से सावधान, मित्र-बन्धुसुख, आय से व्यय अधिक। **नवम्बर** 18, 19, 27, 28, **दिसम्बर** 7, 8 अशुभ।

मिथुन—सेहत ठीक, वृथा विवाद से बचें, भाई से मदद, सन्ततिकष्ट, गुप्त चिन्ता, कारोबार ठीक। **नवम्बर** 20, 21, 29, 30, **दिसम्बर** 1, 9, 10 अशुभ।

कर्क—वायुरोग-भय, कर्जा सिर चढ़े, बन्धुकष्ट, सन्ततिसुख, स्त्री से अनबन, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **नवम्बर** 15, 22, 23, **दिसम्बर** 2, 3, 11, 12 अशुभ।

सिंह—क्रोध बढ़े, निजीलोगों से अनबन, राजपक्ष से भय, स्त्रीसुख, कारोबार में तरक्की, मासान्त में विशेष व्यय। **नवम्बर** 16, 17, 24, 25, 26, **दिसम्बर** 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।

कन्या—क्रोध बढ़े, वृथा व्यय, शत्रु हतप्रभ, स्त्रीसुख, अच्छे लोगों से मेल हो, कारोबार ठीक रहे। **नवम्बर** 18, 19, 27, 28, **दिसम्बर** 7, 8 अशुभ।

तुला—उदरविकार, अर्थलाभ, सन्तानसुख, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक रहे। **नवम्बर** 20, 21, 29, 30, **दिसम्बर** 1, 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक—सेहत ठीक, अर्थहानि, भाई-बन्धुसुख, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल हो। **नवम्बर** 15, 22, 23, **दिसम्बर** 2, 3, 11, 12 अशुभ।

धनु—कफ-वायुविकार, वृथा व्यय हो, भ्रातृकष्ट, सन्ततिकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। **नवम्बर** 16, 17, 24, 25, 26, **दिसम्बर** 4, 5, 6, 13, 14 अशुभ।

मकर—मानसिक परेशानी, धनलाभ होकर हानिभय, मित्र-बन्धुकष्ट, नयी योजना से लाभ, आय से व्यय अधिक। **नवम्बर** 18, 19, 27, 28, **दिसम्बर** 7, 8 अशुभ।

कुम्भ—गुप्त शत्रु से सावधान, फिजूल खर्ची हो, भाई-बन्धु से अनबन, सन्तानसुख, स्त्रीसुख, कार्यान्तर का विचार। **नवम्बर** 20, 21, 29, 30, **दिसम्बर** 1, 9, 10 अशुभ।

मीन—नेत्र व सिरदर्द, कर्जा सिर चढ़े, भाई से मदद, बन्धुसुख, स्त्रीसुख, आय से व्यय अधिक हो। **नवम्बर** 15, 22, 23, **दिसम्बर** 2, 3, 11, 12 अशुभ।

पौष मास

धनुसंक्रान्ति (15 दिसं. 2020 ई. से 13 जन., सन् 2021 ई.)

(ये,यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, ले)

धनुसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—केन्द्रेश गुरु मृत्यु स्थानेश (द्वितीय भावेश) शनियुत है। किसी दुःखद घटना से परेशानी बनेगी। शनि-मंगल की स्थिति उग्रवादजन्य घटना से जनधनहानि की भी सम्भावना बनती है। व्यापारी वर्ग में असन्तोष से शासनतन्त्र के प्रति जनसाधारण असन्तुष्ट रहे। औद्योगिक क्षेत्रों के विस्तार की योजना आर्थिक संकट से जूझे। प्राकृतिक प्रकोप से पर्वतीय भूभाग में हानि के योग हैं। खाद्य पदार्थ महंगे हों।

पौष(धनु)संक्रान्ति-कुण्डली

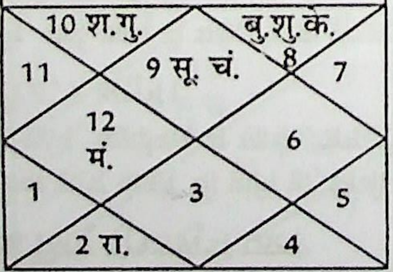

धनुसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 15 दिसम्बर, सन् 2020 ई. को 21 घं. 31 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर,

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—कफ-वायुविकार, नेत्रकष्ट, मित्र-बन्धुसुख, स्त्रीपक्ष से अनबन, वृथा व्यय, कारोबार में बाधा रहे। **दिसम्बर** 22, 23, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

वृष—सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानिभय, निजीलोगों से अनबन, सम्पत्ति-लाभ, सन्तान व स्त्रीपक्ष से चिन्ता। **दिसम्बर** 15, 16, 24, 25, 26, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

मिथुन—शरीर अस्वस्थ, धनलाभ, लेकिन खर्च विशेष, बन्धुकष्ट, सन्तान-सुख, कार्यान्तर से लाभ। **दिसम्बर** 17, 18, 27, 28, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 5, 6 अशुभ।

कर्क—क्रोध बढ़े, क़र्ज़ा बढ़े, स्थानान्तर व कार्यान्तर से लाभ हो, सम्पत्ति-विवाद, राजपक्ष शुभ रहे। **दिसम्बर** 19, 20, 21, 29, 30, 31, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 7, 8 अशुभ।

सिंह—सेहत ठीक, धनलाभ, खर्च अधिक, बन्धुकष्ट, सन्तानसुख, स्त्री-पक्ष से अनबन, कारोबार में सुधार हो। **दिसम्बर** 22, 23, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

कन्या—उदरविकार, झगड़े से बचें, फ़िजूल खर्ची अधिक हो, बन्धुसुख, स्त्रीपक्ष से अनबन, कारोबार ठीक। **दिसम्बर** 15, 16, 24, 25, 26, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

तुला—कफ-वायुविकार, धनलाभ, बन्धुसुख, सम्पत्तिविवाद, शत्रु बढ़ें, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रद्दोबदल हो। **दिसम्बर** 17, 18, 27, 28, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 5, 6 अशुभ।

वृश्चिक—नीच से अपमानभय, अर्थहानि, मित्र-बन्धुसहयोग, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में सुधार। **दिसम्बर** 19, 20, 21, 29, 30, 31, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 7, 8 अशुभ।

धनु—सेहत ठीक, कर्जा उतरे, भाई-बन्धुकष्ट, कारोबार में परिवर्तन, घरेलु झगड़े से बचें। **दिसम्बर** 22, 23, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

मकर—सेहत ठीक, भाई से मदद, अर्थलाभ, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्री-कष्ट, शुभ कार्य हो, कारोबार में प्रगति। **दिसम्बर** 15, 16, 24, 25, 26, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

कुम्भ—सेहत गड़बड़, आर्थिक संकट बढ़े, बन्धु-मित्र से मदद, सन्तति-चिन्ता, शुभ कार्य का योग, कोराबार ठीक। **दिसम्बर** 17, 18, 27, 28, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 5, 6 अशुभ।

मीन—कफ-वायुविकार, अचानक विशेष खर्च हो, कर्जा सिर चढ़े, स्त्री-पक्ष से लाभ, सम्पत्तिलाभ, मासान्त शुभ। **दिसम्बर** 19, 20, 21, 29, 30, 31, **जनवरी (सन् 2021 ई.)** 7, 8 अशुभ।

माघ मास

मकरसंक्रान्ति (14 जनवरी से 11 फरवरी तक, सन् 2021 ई.)

(भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

मकरसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—लग्न में मकरस्थ शनि-सूर्य-गुरु-बुध-चन्द्र का एकत्र होना भयंकर प्राकृतिक आपदाओं का सूचक है एवं कुछ उत्तरभागीय प्रान्तों, सीमाप्रान्तों एवं मुस्लिम राष्ट्रों में उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग हैं। महंगाई पर कण्ट्रोल पाना नेतृत्व के लिए कठिन है। कश्मीर, आसाम, उ.खण्ड एवं छत्तीसगढ़ में उग्रवादजन्य हानि का संकेत मिलता है। चावल, घी, चना, गुड़ में तेजी रहे।

माघ(मकर)संक्रान्ति-कुण्डली

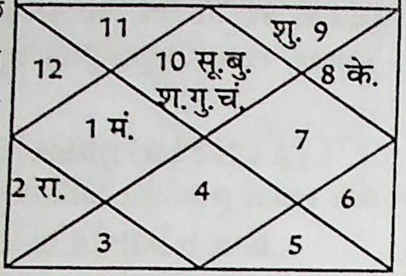

मकरसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 14 जनवरी, सन् 2021 ई. को 8 घं. 13 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 30, पुण्यकाल पूरा दिन,

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—मन अशान्त, गुप्त चिन्ता, आर्थिक लाभ होकर भी हानि हो, निजी-लोगों से अनबन, यात्रा हो, नयी योजना से हानि, कार्यान्तर से लाभ। **जनवरी (2021 ई.)** 18, 19, 20, 28, 29, **फरवरी** 6, 7 अशुभ।

वृष—कफ-वायुविकार, आर्थिक हानि, भाई-बन्धु से मदद, यात्रा सुखद, सफलता मिले, कार्यान्तर से लाभ हो। **जनवरी (2021 ई.)** 21, 22, 30, 31, **फरवरी** 8, 9 अशुभ।

मिथुन—सेहत गड़बड़, अचानक अर्थलाभ, बन्धुकष्ट, सन्ततिसुख, उलझे मसले हल हों, कारोबार ठीक। **जनवरी (2021 ई.)** 14, 15, 23, 24, 25, **फरवरी** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कर्क—सेहत ठीक, वृथा व्यय, कर्जा सिर चढ़े, मित्र-बन्धुसुख, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर व स्थानान्तर का विचार। **जनवरी (2021 ई.)** 16, 17, 26, 27, **फरवरी** 3, 4, 5 अशुभ।

सिंह—उदरविकार, आर्थिक स्थिति सुधरे, भाई-बन्धुसुख, स्त्रीकष्ट, कार्यान्तर से लाभ। **जनवरी (2021 ई.)** 18, 19, 20, 28, 29, **फरवरी** 6, 7 अशुभ।

कन्या—सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, स्त्रीसुख, धार्मिक कार्य हों, कारोबार में सुधार हो। **जनवरी (2021 ई.)** 21, 22, 30, 31, **फरवरी** 8, 9 अशुभ।

तुला—सेहत ठीक, आर्थिक संकट, नयी योजना से हानि, स्त्री से अनबन, धर्म-कर्म में मन लगे, कारोबार ठीक। **जनवरी (2021 ई.)** 14, 15, 23, 24, 25, **फरवरी** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

वृश्चिक—वायुरोग, धनलाभ, मित्र-बन्धु से अनबन, वृथा कलह, कार्यान्तर से लाभ। **जनवरी (2021 ई.)** 16, 17, 26, 27, **फरवरी** 3, 4, 5 अशुभ।

धनु—सेहत गड़बड़, कार्यान्तर एवं स्थानान्तर का विचार, आर्थिक संकट, बन्धुकष्ट, सन्ततिसुख, सुखद यात्रा। **जनवरी (2021 ई.)** 18, 19, 20, 28, 29, **फरवरी** 6, 7 अशुभ।

मकर—सिर व नेत्रकष्ट, वृथा व्यय, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, राजपक्ष से भय, कारोबार ठीक। **जनवरी (2021 ई.)** 21, 22, 30, 31, **फरवरी** 8, 9 अशुभ।

कुम्भ—वायुविकार, धनलाभ, भाई-बन्धु से मदद, शत्रु बढ़ें, स्त्रीसुख, कार्यान्तर का विचार। **जनवरी (2021 ई.)** 14, 15, 23, 24, 25, **फरवरी** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मीन—सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, अच्छे लोगों से मेल, सन्तानसुख, गुप्त शत्रु से भय, स्त्रीसुख, कार्यान्तर से लाभ। **जनवरी (2021 ई.)** 16, 17, 26, 27, **फरवरी** 3, 4, 5 अशुभ।

फाल्गुन मास

कुम्भसंक्रान्ति (12 फरवरी से 13 मार्च तक, सन् 2021 ई.)

(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

कुम्भसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—केन्द्र में राहु-केतु 'छत्रयोग' बना रहे हैं। स्वराशिस्थ मंगल की दशमस्थ केतु पर दृष्टि भी है। राजनीति किंवा शासनतन्त्र में उलटफेर देशहित के लिए होंगे। देशहित में नये आयाम, नये कर्मक्षेत्र खुलेंगे। आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। लेकिन वैज्ञानिक क्षेत्र किंवा अन्तरिक्ष अनुसन्धान में भारत उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर रहेगा। अनाज, चीनी, चांदी, तिलहन एवं शेयर बाजारों में तेजी रहे।

फाल्गुन(कुम्भ)संक्रान्ति-कुण्डली

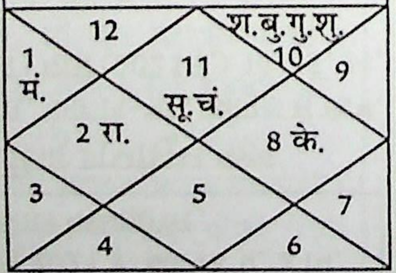

कुम्भसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 12 फरवरी, सन् 2021 ई. को 21 घं. 11 मि. (I.S.T.), मुहूर्ती 15, पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर,

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—सेहत गड़बड़, पार्टनरशिप में धोखा, कारोबार में नयी योजना से लाभ, भाई-बन्धु से मदद मिले, स्त्रीसुख। **फरवरी (2021 ई.)** 14, 15, 16, 24, 25, 26, **मार्च** 5, 6 अशुभ।

वृष—कफ-वायुविकार, अर्थलाभ होकर हानि, निजीजनों से अनबन, कारोबार में सुधार। सन्तान-स्त्रीपक्ष से लाभ। **फरवरी (2021 ई.)** 17, 18, 27, 28, **मार्च** 7, 8 अशुभ।

मिथुन—क्रोध से हानिभय, वृथा विवाद से बचें, कर्जा सिर चढ़े, शत्रु बढ़ें, स्त्री से अनबन, कार्यान्तर या स्थानान्तर का विचार। **फरवरी (2021 ई.)** 19, 20, 21, **मार्च** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

कर्क—उदरविकार, वृथा व्यय हो, बन्धु-मित्र से अनबन, कारोबार सुधरे, मासान्त में विशेष खर्च हो। **फरवरी (2021 ई.)** 12, 13, 22, 23, **मार्च** 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

सिंह—सूर्य-बुध कष्टप्रद हैं, अचानक अर्थलाभ हो, भाई-बन्धु से सहयोग, गुप्त शत्रु से सावधान, आय से व्यय अधिक हो। **फरवरी (2021 ई.)** 14, 15, 16, 24, 25, 26, **मार्च** 5, 6, अशुभ।

कन्या—नयी योजना से लाभ, मित्र-बन्धु से मदद, सन्तानकष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार में तरक्की। **फरवरी (2021 ई.)** 17, 18, 27, 28, **मार्च** 7, 8 अशुभ।

तुला—प्रभाव क्षेत्र बढ़े, आर्थिक स्थिति सुधरे, अच्छे लोगों से मेल, गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्रीकष्ट, कारोबार में वृद्धि हो। **फरवरी (2021 ई.)** 19, 20, 21, **मार्च** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक—मित्र-बन्धु से सहयोग, स्त्रीकष्ट, यात्रा में चोटभय, गुप्त शत्रु से सावधान, कार्यान्तर का विचार। **फरवरी (2021 ई.)** 12, 13, 22, 23, **मार्च** 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

धनु—सेहत ठीक रहे, कर्जा बढ़े, अच्छे लोगों से मेल हो, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से मदद, मासान्त में कारोबार में बाधा। **फरवरी (2021 ई.)** 14, 15, 16, 24, 25, 26, **मार्च** 5, 6 अशुभ।

मकर—पेट में रोगभय, वृथा व्यय, निजीलोगों से अनबन, शत्रु कमजोर, स्त्रीकष्ट, कारोबार में सुधार हो। **फरवरी (2021 ई.)** 17, 18, 27, 28, **मार्च** 7, 8 अशुभ।

कुम्भ—नेत्रकष्ट, धनहानि, नयी योजना का विचार, गुप्त शत्रुभय, मित्र व सन्तानपक्ष से मदद, कारोबार में लाभ। **फरवरी (2021 ई.)** 19, 20, 21, **मार्च** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

मीन—यात्रा में सुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल, मासान्त में नयी योजना, खर्च विशेष। **फरवरी (2021 ई.)** 12, 13, 22, 23, **मार्च** 3, 4, 11, 12, 13 अशुभ।

चैत्र मास

मीनसंक्रान्ति (14 मार्च से 12 अप्रैल तक, सन् 2021 ई.)

(दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि)

मीनसंक्रान्ति-कालीन गोचर ग्रहस्थिति-फल—लग्नेश गुरु नीचस्थ व शनि के साथ शनिक्षेत्री है, सूर्य-चन्द्र पर शनि की दृष्टि है। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होने का योग है। मंगल, राहु वृषस्थ हैं, शुक्र व्यय भाव में बुध के साथ है। वृश्चिक, तुला, मकर राशि वाले नेताओं को सुरक्षाव्यवस्था को सुदृढ़ रखना चाहिए। इस मास में यानदुर्घटना, तूफान, भूकम्प आदि किंवा उग्रवादियों से हानिभय है। सोना, चांदी आदि धातुओं, घी, चीनी, तिल आदि तिलहन में तेजी के योग हैं।

चैत्र(मीन)संक्रान्ति-कुण्डली

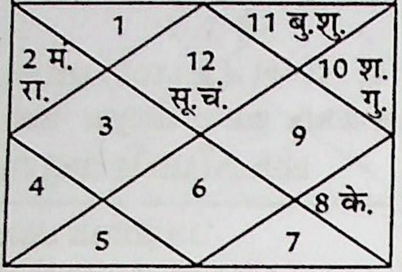

मीनसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 14 मार्च, सन् 2021 ई. को 18 घं. 2 मि. (I.S.T.), मुहूर्त्त 45, पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर,

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष—नेत्रकष्ट, चोर से हानि, वायुविकार, धनहानि-भय, स्त्रीपक्ष से लाभ, घर में शुभ कार्य का विचार, कार्यान्तर से लाभ। मार्च (2021 ई.) 14, 15, 24, 25, **अप्रैल** 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

वृष—धनलाभ, आय से व्यय अधिक, भाई-बन्धु से मदद, स्त्रीकष्ट, चोटभय, कारोबार ठीक हो। **मार्च (2021 ई.)** 16, 17, 18, 26, 27, **अप्रैल** 3, 4 अशुभ।

मिथुन—सिर व नेत्रकष्ट, धनलाभ होकर हानिभय, निजीजन से मदद, स्त्रीकष्ट, कारोबार में बाधा। **मार्च (2021 ई.)** 19, 20, 28, 29, **अप्रैल** 5, 6, 7 अशुभ।

कर्क—कर्म में मन लगे, कारोबार गड़बड़। **मार्च (2021 ई.)** 21, 22, 23, 30, 31, **अप्रैल** 8, 9 अशुभ।

सिंह—मन चिन्तित रहे, गुप्त शत्रु से सावधान, सन्ततिकष्ट, कारोबार से लाभ, आय से व्यय अधिक। **मार्च (2021 ई.)** 14, 15, 24, 25, **अप्रैल** 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

कन्या—कारोबार में सफलता, सेहत ठीक, अर्थलाभ, स्त्रीसुख, यात्रा में कष्ट। **मार्च (2021 ई.)** 16, 17, 18, 26, 27, **अप्रैल** 3, 4 अशुभ।

तुला—सेहत गड़बड़, धनलाभ हो, भाई-बन्धु से अनबन, सन्तानसुख, स्त्रीपक्ष से लाभ, राजपक्ष से भय, कारोबार ठीक। मार्च (2021 ई.) 19, 20, 28, 29, **अप्रैल** 5, 6, 7 अशुभ।

वृश्चिक—गुप्त शत्रु से सावधान, आर्थिक संकट बढ़े, मित्र-बन्धु से मदद, यात्रा में कष्ट, कारोबार ठीक। **मार्च (2021 ई.)** 21, 22, 23, 30, 31, **अप्रैल** 8, 9 अशुभ।

धनु—चोटभय, गुप्त शत्रु से भय, भाई से मदद, स्त्रीकष्ट, घर में शुभ कार्य का आयोजन, कारोबार ठीक। **मार्च (2021 ई.)** 14, 15, 24, 25, **अप्रैल** 1, 2, 10, 11, 12 अशुभ।

मकर—वायुविकार, धनलाभ होकर हानि हो, अच्छे लोगों से मेल, राजपक्ष से भय, कारोबार में सुधार। मार्च (2021 ई.) 16, 17, 18, 26, 27, अप्रैल 3, 4 अशुभ।

कुम्भ—क्रोध से हानिभय, कारोबार में सुधार, अर्थलाभ, भातृसुख, सन्तान हेतु विशेष व्यय। मार्च (2021 ई.) 19, 20, 28, 29, अप्रैल 5, 6, 7 अशुभ।

मीन—नेत्रकष्ट, कर्जा बढ़े, निजीलोगों से अनबन, अपमानभय, कार्यान्तर एवं स्थानान्तर का विचार। **मार्च (2021 ई.)** 21, 22, 23, 30, 31, **अप्रैल** 8, 9 अशुभ।

———

अथ वर्षराजादि फलादेश (संवत् 2077 वि.)

(सन् २०२०-२१ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९१२१, सृष्टि संवत् १९५५८८५१२१, श्रीविक्रम संवत् २०७७, शक संवत् १९४२, श्रीकृष्ण जन्मसंवत् ५२५६, कलि संवत् ५१२१, सप्तर्षि संवत् ५०९६, श्री जैन महावीर-निर्वाण संवत् २५४५-४६, श्रीबुद्ध संवत् २६४२-४३, हिजरी सन् १४४१-४२, फसली सन् १४२७-२८, ईस्वी सन् २०२०-२१।

संवत् 2077 वि. में वर्षारम्भ में बार्हस्पत्य मान से 'आनन्द' नामक संवत्सर है। इस संवत् को 'विक्रम' नाम से भी जाना जाता है। इसका फल 'बृहत् संहिता' में इस प्रकार लिखा है—

"विक्रमः सकललोकनन्दनः।"

अर्थात्—देश में जनजीवन के स्तर में प्रगति होती है। जनता में आनन्दमय वातावरण रहे। देश में चहुंमुखी प्रगति हो। 'वर्षप्रबोध' के अनुसार 'आनन्द' नामक संवत्सर का फल इस प्रकार है—

"आनन्दाब्दे त्वखिला लोकाः सर्वदानन्द – चेतसः।
राजानः सुखिनः सर्वे बहुसस्यार्घवृष्टिभिः॥"

अर्थात्—प्रजा में प्रगतिप्रद योजनाओं से आनन्द-मंगल एवं उत्साह का वातावरण रहे। शासकों (राजनेताओं) को यशोलाभ हो। वर्षा समयानुसार पर्याप्त हो। खाद्य पदार्थ सुलभ हों।

'मेघ महोदयानुसार' 'आनन्द संवत्सर' का फल इस प्रकार है—

"आनन्दे गुरुः स्वामी, वर्षा बहुला, सुभिक्षं, मार्गशीर्षे लोकानां दक्षिण-दिशिगमनम्, फाल्गुने धान्यं समर्घम्।।"

सं. २०७७ वि. का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) बुध, मन्त्री चन्द्र, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) गुरु, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी), भौम **मेघेश** (मौसम, वर्षा—पानी के स्वामी) सूर्य, रसेश (गुड़, खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) शनि, नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) गुरु, फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) सूर्य, धनेश (धन-दौलत एवं खजाना के स्वामी) बुध एवं दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) सूर्य हैं।

संवत् २०७७ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इस प्रकार है—

(१) संवत्सर २०७७ वि. के राजा 'बुध' का फल—

"सन्धान-दान-प्रथतः क्षितीशः स्वाध्याय-तीर्थाध्वर-भीर्द्विजौघः।
निराधिरुङ्मध्यम - सस्यवर्षो बौधः सुहृत् स्नेह-विवर्धनोऽब्दः॥"

अर्थात्—संवत्सर का राजा बुध हो तो मायावी, छल-कपट करने वाले लोगों का बोलबाला रहता है। सफेद पोश (गुप्त) अपराधियों का भण्डाफोड़ हाता है। गीतकार-संगीतकार-अभिनेता एवं विद्वानों की गैरकानूनी गतिविधियों का खुलासा होगा। नेता (शासक) किसी खास वर्ग को प्रसन्न करने के लिए लुभावनी घोषणाएं करते रहें, लेकिन उन घोषणाओं व योजनाओं का समुचित लाभ नहीं मिले। राजनीति में मित्रता किंवा विरोध तात्कालिक लाभ से ही प्रेरित रहते हैं।

'वर्ष प्रबोध' अनुसार वर्षेश बुध का फल इस प्रकार है—

बुध के राज्य में पृथ्वी पर वर्षा (जल) पर्याप्त हो, सत्पुरुषों द्वारा सत्कार्य हों। जनता में बड़े-बड़े उत्सवों का आयोजन हो।

(२) मन्त्री 'चन्द्र' का फल—

"शशिनि मन्त्रिपदं गते बहुसस्य-वत्यपिधरा सुखमण्डिता।
बहुजला जलदा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशि-समेधिता॥"

अर्थात्—चन्द्र मन्त्री हो तो खेतीबाड़ी की अच्छी पैदावार, सर्वत्र सुख का वातावरण रहे। वर्षा अधिक एवं जनता में हर्ष व आनन्द रहता है।

(३) सस्येश 'गुरु' का फल—

"भवति सस्यपतौ सुरवन्दिते सकल-सौख्य-धनागम-शालिता।
जलधरा जलदा बहुसस्यदा रस-पयांसि बहूनि धनादि च॥"

अर्थात्—सस्येश गुरु हो तो जनता में धन-सम्पदा व सुख-शान्ति का साम्राज्य रहता है। अच्छी वर्षा, अन्नादि की पैदावार, दूध व फलों की पर्याप्त उपलब्धता हो। ईख (गुड़ आदि) की अच्छी फसल तथा धन-धान्यसमृद्धि रहे।

(४) धान्येश 'मंगल' का फल—

"गोधूम-सर्षप-मुद्ग-तिल-माष — प्रवालकाः।
महर्घतां समायान्ति भौमे धान्याधिपे सति॥"

अर्थात्—मंगल धान्येश हो तो गेहूं, सरसों, दालें, तिल पदार्थ व मूंगा आदि समुद्रोत्पन्न चीजें महंगी हों।

(५) मेघेश 'सूर्य' का फल—

"रवौ मेघाधिपे जाते स्वल्पतोयप्रदा घनाः।
स्वल्पो धान्योद्भवो लोके भयाडम्बर-पीड़नम्॥"

अर्थात्—सूर्य मेघेश हो तो वर्षा पर्याप्त नहीं (कम) होती है। परिणामस्वरूप, अनाजों की पैदावार भी कम होती है। जनता भय, ढोंग, पाखण्ड से परेशान रहे।

(६) रसेश 'शनि' का फल—

"रविसुते रसपे रस-संक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः।
अज-गजाश्व-खरादि-हतिर्भवेदपि धरा रसगर्भजला नहि॥"

अर्थात्—शनि रसेश हो तो भू-गर्भगत जलस्तर में कमी अनुभव हो, वर्षा का अभाव रहे। पशुओं में रोगादि से भारी हानि होती है।

(७) नीरसेश 'गुरु' का फल—

"हरिद्रा-पीत-वस्तूनां धातुनामर्थ - वाससाम्।
नीरसेशो यदा जीवः सर्वेषां प्रीतिरुत्तमा॥"

अर्थात्—गुरु नीरसेश हो तो सोना, चांदी आदि धातुओं, हल्दी आदि मसालों, कपड़ा-व्यापार के क्षेत्र में तेजी का रुख रहता है।

(८) फलेश 'सूर्य' का फल—

"द्रुमवती फल-पुष्पवती धरा प्रमुदिता फल-भोग-विशेषिता।
बहुजलं जलदो भुवि मुञ्चति क्वचिदपि प्रमितं फलपे रवौ॥"

अर्थात्—सूर्य फलेश हो तो फल-फूलों की पैदावार अच्छी होती है। वर्षा भी अधिक हो। लेकिन कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी (या सीमित वर्षा) हो।

(९) धनेश 'बुध' का फल—

"द्रविणपे हिमरश्मिसुते तदा विविध वस्तुफलं वणिजं भवेत्।
द्विजवरा निजकर्म-परायणाः कृषकवर्ग भवेषु समोदता॥"

अर्थात्—धनेश बुध हो तो विविध वस्तुओं के व्यापार में लाभ के अवसर मिलेंगे। सभी वर्ग (जातियों) के व्यक्ति अपने-अपने कामों में व्यस्त रहेंगे, जिससे साम्प्रदायिक एवं जातीय संघर्ष की सम्भावना कमजोर रहती है। किसानों में खास खुशी का वातावरण रहता है।

(१०) दुर्गेश 'सूर्य' का फल—

"नय-विशेषकरो नृपतिस्तदा यदि च दुर्गपतिस्तरणिर्भवेत्।
गतभयाः पथिकाश्च जनास्तदा समधिकेन सुखं न भयं क्वचित्॥"

अर्थात्—सूर्य यदि दुर्गेश हो तो शासनतन्त्र नये-नये कानून बनाता है। जन-जीवन में भय, लूटपाट की घटनाओं में कमी एवं सुख-समृद्धि रहती है।

नोट—यद्यपि संवत् के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र अनुभव किया गया है, किन्तु विशेषतः राजा का फल कश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में, मन्त्री का

फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड, विदर्भ में, धान्येश

अनेक प्रान्तों में जनजीवन त्रस्त रहे।

फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में, सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में, **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में, फलेश, दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा ९, धान्य १३, तृण १३, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा १३, तृषा १३, निद्रा १३, आलस्य ७, उद्यम १३, शान्ति १३, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता ५, पाप ५, पुण्य ११, व्याधि ११, व्याधिनाश ९, आचार ९, अनाचार १५, मृत्यु १३, जन्म ५, देशोपद्रव ११, देशस्वास्थ्य १७, चौर ७, चौरनाश १७, अग्नि १५, अग्निशान्ति ९, उद्भिज्ज ५, जरायुज ३, अण्डज १५, स्वेदज १३, टिड्डी ११, तोता ११, मूषक ५, सोना ५, तांबा ७, स्वचक्र ९, परचक्र १५, वृष्टि ३, वृष्टिनाश ११ एवं संवत्-विश्वा १८ हैं।

चतुर्मेघविचार—आवर्तकादि चतुर्मेघों में सं. २०७७ वि. में '**आवर्तक**' नामक मेघ है।

फल—'**आवर्तक मेघ**' होने से आंधी-तूफान अधिक आये, कहीं खण्डवृष्टि, कहीं सूखा रहे।

नोट—मेघ-विचारणा में मेघचतुष्टय का अधिक महत्त्व है।

नवमेघविचार—इस संवत् २०७७ वि. में नवमेघों में '**संवर्त**' नामक मेघ है।

फल—**संवर्ते वायुपीड़नम्**-प्रमाणानुसार इस वर्ष भयंकर संवृष्टि वायुवेग (झंझावात) से अनेकत्र जनता एवं सम्पदा को हानि होने के योग बनेंगे। विशेषत: पूर्वी वायु का प्रकोप रहे।

नवमेघों में एक अन्य सूत्र के अनुसार 'वरुण' नामक मेघ भी आता है। जिसका फल—"**वरुणस्त्वर्णवाकारम्**" लिखा है। इस अनुसार बाढ़, वर्षा से अनेक प्रान्तों में जनजीवन त्रस्त रहे।

सं. २०७७ में आवह आदि सप्तवायु-विचार—इस संवत् में वायुसप्तक विचार से '**विवह**' नामक वायु प्रबल रहेगी।

फल—हि.प्र., उ.खण्ड, आसाम, महाराष्ट्र, उ.प्र., गुजरात आदि प्रान्तों में आंधी, तूफान से हानि का कारण '**विवह**' नामक वायु बनेगी। कहीं भूमध्यगत तरंगों के विक्षोभ से भूकम्प, ज्वालामुखी-विस्फोट आदि से हानि भी सम्भव है। उ.भारत में '**विवह**' नामक वायु बादलों को स्थानान्तरित करके फसलों को हानि पहुंचाये।

अनन्तादि अष्टनागविचार—अनन्तादि अष्टनागों में इस वर्ष '**वासुकी**' नामक नाग है।

फल—खेती के लिए वर्षा पर्याप्त रहे—"**वासुकि सस्यकर्ता च बहुसस्यकरो मत:।**" सरीसृप (सर्पादि) से अनेकत्र भयावह घटनाएं घटित हों। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को गुप्त शत्रु से भय है, सावधान रहें।

सुबुध्नादि द्वादशनागविचार—द्वादश नागों में इस वर्ष '**वृष**' नामक नाग है।

फल—"**सस्यादिकानामल्पत्वं नितरामीतितो भयम्।**"

अर्थात्—वृष नाग की स्थिति में सभी प्रकार के अनाजों की फसलों को वर्षा की कमी या वर्षा के अभाव से हानि पहुंचे। कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने। प्राकृतिक प्रकोप किंवा टिड्डी आदि से भी फसलों को हानि पहुंचे।

संवत् २०७७ वि. में संवत् (समय) का वाहन—इस संवत्सर का राजा बुध होने से संवत् (समय) का वाहन '**गीदड़**' होता है।

फल—समय का वाहन गीदड़ होने से राजनीतिज्ञ अपने वचनों पर स्थिर नहीं रहेंगे। राजनीतिक पार्टियां शासनतन्त्र की कमजोरी का लाभ उठाने की ताक में रहेंगी। जंगल कटने से जंगली जानवर त्रस्त रहेंगे। पर्यावरण में विक्षोभ पैदा होगा। भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से कुछ प्रान्तों में भारी हानि का अंदेशा रहेगा।

'**संवत्सर संहिता**' के अनुसार संवत्सर का वाहन '**दोला**' (झूला) भी लिखा है।

पृथ्वी पर आक्रान्ताओं के अपराधों या अत्याचारों से हाहाकार मचे। व्यापक दुर्भिक्ष किंवा राजनीतिज्ञों में टकराव रहे। कहीं युद्ध की स्थिति भी बने—

"यत्राब्दे वाहनं दोला हाहाभूता तु मेदिनी।
दुर्भिक्षं सर्वदेशेषु संग्रामः खण्डखण्डयोः॥"

संवत् २०७७ वि. में अधिकमास

सं. २०७७ वि. में १९ सितं. से १६ अक्टू. सन् २०२० ई. तक आश्विन (चान्द्रमास) अधिक मास रहेगा।

फल—इस संवत् में आश्विन अधिकमास होने से किसी देश पर शत्रु देश का आक्रमण होने का भय है। चोरों, उग्रवादियों और चीन एवं पाक आदि द्वारा सीमातिक्रमणादि गतिविधि द्वारा जन-जीवन (देश के नागरिकों) को भारी कष्ट सहना पड़े। दक्षिणी भूभाग में प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प किंवा दुर्भिक्ष आदि से जनधनहानि भी सम्भव है—

"आश्विने परचक्रेण तस्करैः पीड़िताः प्रजाः।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं दुर्भिक्षं दक्षिणे पथे॥"

मेघ महोदयानुसार फल—

"आश्विन द्वितये भूम्यां सैन्य-चौर-रूजां भयम्।
सुभिक्षं केचनाप्याहु दुर्भिक्षं दक्षिणे दिशि॥"

आश्विन अधिकमास होने से सीमावर्ती देश द्वारा आक्रमण से प्रायः अशान्ति रहती है। दक्षिण में दुर्भिक्ष की स्थिति बनने के आसार हैं।

दो अमावस्याओं के मध्य संक्रान्ति न होने से इसे **अधिकमास** की संज्ञा दी गयी है—**"असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्यात्।"** इसे '**पुरुषोत्तम मास**' किंवा '**मलमास**' भी कहते हैं। इसमें दान-विधान का विशेष महत्त्व लिखा है। इस **पुरुषोत्तम मास** में गृह-परिवार में सर्वविध-शान्त्यर्थ पूजा-पाठ एवं दान-विधान का अत्यधिक महत्त्व लिखा है।

संवत् २०७७ वि. के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ—(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ४९ प्रतिशत है।

(३) **वायुस्तम्भ**—(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) का अभाव है।

(४) **अन्नस्तम्भ**—(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) का अभाव है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल-क्षेम-ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं; क्योंकि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी-बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है। इन स्तम्भों को "वर्ष के मर्मस्थान" भी माना जाता है।

(१) सं. २०७७ वि. में जलस्तम्भ (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र)—'जलस्तम्भ' ४९ प्रतिशत होने से महानगरों में पेयजल की समस्या का समाधान हो। वर्षा एवं अनेकत्र बाढ़ से जन-धन की भारी हानि सम्भव है। समुद्रतटवर्ती भूभाग पर भारत किंवा भारतेतर देशों में भी कहीं समुद्री तूफान आदि से प्रलयंकारी दृश्य भी देखने को मिलेंगे। बहुजल-प्रधान अन्न ग्वार, जीरी, चावल, बाजरा आदि की उपज अच्छी हो। भूजल-स्तर में काफी उठाव हो।

(२) तृणस्तम्भ—इस वर्ष **तृणस्तम्भ (वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र)** ६९ प्रतिशत है। इस प्रकार इस वर्ष जल तथा तृणस्तम्भ सशक्त हैं। अतः इस वर्ष घास-भूसे से निकलने वाले अनाज, चावल, ज्वार, ग्वारा आदि कृषि उपज, वनस्पतियां, जड़ी-बूटियां, सब्जियां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों। इस साल कुछ प्रान्तों में मानसून अगेती आने किंवा सामयिक मानसून से पशुचारा-कृषिकर्मियों को लाभ रहे।

(३) वायुस्तम्भ—इस वर्ष (ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) का अभाव होने से 'वायुस्तम्भ' अत्यधिक चिन्तनीय है, कमजोर है। अतः भारत व तमाम दक्षिण एशिया तूफान, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप, औद्योगिक गैस-उत्सर्जन आदि से प्रभावित हो एवं हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उड़ीसा, तामिलनाडु, महाराष्ट्र आदि में कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि हो। क्योंकि पृथ्वी के भीतर सीस्मोग्राफिक (वेवस) वायु से आकाश या शून्य में विद्यमान वायु के साथ जब संघर्ष होता है तो भूगर्भान्तर्गत प्लेटें हिलने से भूकम्प आदि दुर्घटनाएं घटित होती हैं। अतः यह वर्ष वायुस्तम्भक्षीण होने से चिन्तनीय भी है।

(४) अन्नस्तम्भ—इस वर्ष (आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) का अभाव होने से इस संवत् में घरेलू उत्पाद एवं खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। जन-जीवनोपयोगी कुछ खाद्य पदार्थों का आयात भी करना पड़े।

मानसून का अन्न एवं वायुस्तम्भ के साथ गहन सम्बन्ध है, इस वर्ष इन दोनों स्तम्भों के अत्यधिक कमजोर होने से मानसून समय पर न आने से अनेकत्र खाद्यान्नों की उपलब्धता कम रहे, सरकार जन-सामान्य की आलोचना का विषय बनी रहे। अनियमित मानसून (पर्याप्त वर्षा आदि के अभाव से तमाम दक्षिण एशिया में प्राकृतिक प्रकोप व सूखा आदि) से कृषकवर्ग परेशान रहें। सरकार को बहुत-सी जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं का आयात करना पड़ेगा।

निष्कर्ष—इस साल अन्नस्तम्भ एवं वायुस्तम्भ बहुत कमजोर होने से महानगरों एवं हिमाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र में प्राकृतिक आपदा से स्थिति गम्भीर बनेगी। अनियमित मानसून एवं जनजीवन-सन्तोषार्थ भारत-शासन को चिन्तित रहना होगा। ग्रहस्थिति के अनुसार पर्यावरण किंवा मौसम-प्रणाली में उल्लेखनीय परिवर्तन आने से इन स्तम्भों के प्रतिफलन में चिन्तनीय स्थिति भी बन सकती है, यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है। क्योंकि पर्यावरण प्रकृति की प्रतिकूलता एवं ऋतु-विपर्यय को भी प्रभावित करता है।

आर्षमान विचार (सं. २०७७ वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष—(अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ६४ प्रतिशत है।

(२) द्वितीय आर्ष—(गत संवत् २०७६ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) ७७ प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष—(श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ५९ प्रतिशत है।

(४) चतुर्थ आर्ष—(कार्त्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) ६६ प्रतिशत है।

नोट—उल्लिखित चारों आर्षमान इस संवत्सर में जनजीवन एवं देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, आर्थिक समृद्धि, सामाजिक शान्ति, सर्वविध-समृद्धि किंवा नैतिक मूल्यों को सुनिश्चित करते हैं। ये संवत्सर के मर्मस्थल माने जाते हैं।

(१) प्रथम आर्ष—वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र ६४ प्रतिशत होने से प्रबल है। इस वर्ष देश की सुरक्षा, जनता में सुख-समृद्धि, कानून-व्यवस्था, सामाजिक शान्ति, नैतिक मूल्यवृद्धि एवं सुख-समृद्धि का संकेत मिलता है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् २०७७ वि. के उत्तरार्ध में कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, समुद्री तूफान एवं विस्फोट आदि से भयंकर जनधनहानि के योग कश्मीर, बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं देश के महानगरों में दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

(२) द्वितीय आर्ष—गत सं. २०७६ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र ७७ प्रतिशत है।

द्वितीय आर्ष लगभग ७७ प्रतिशत होने से देशरक्षा के लिए लाभप्रद है। सीमाप्रान्तों पर भारत का प्रभावक्षेत्र बना रहेगा। नये कार्यक्रम एवं नयी योजनाओं से लाभ होगा। देश को प्रगतिपथ पर अग्रसर करने के लिए सरकार के प्रयास प्रशस्य होंगे।

(३) तृतीय आर्ष—श्रावण तृतीया को श्रवण नक्षत्र ५९ प्रतिशत होने से यह स्तम्भ प्रबल है। अत: देश के राजनीतिज्ञ देशहित की न सोचकर आपसी प्रभावक्षेत्र बनाने में तत्पर रहेंगे।

राजनीतिज्ञों के कार्य देशहितार्थ न होकर नये-नये घोटाले उजागर होंगे। केन्द्रीय शासनतन्त्र सत्ता को बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहेगा। आर्थिक संकट देश के सामने उपस्थित होगा। कश्मीर, बंगलादेश, चीन के सीमाप्रान्त चिन्तनीय स्थिति बना सकते हैं। यह स्तम्भ देश के लिए चिन्तनीय स्थिति वाला ही है।

(४) चतुर्थ आर्ष—इस वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र ६६ प्रतिशत है।

चतुर्थ आर्ष ६६ प्रतिशत होने से भारत के लिए समृद्धिप्रद रहे। यह शासनतन्त्र की चेतना को जागृत करने वाला है। चतुर्थ आर्ष भारत की गरिमा एवं गणतन्त्र के सशक्त होने का संकेत देता है। नयी योजनाएं, नये औद्योगिक क्षेत्र एवं शासकगण देश को नयी उपलब्धियों से सुसज्जित करने के लिए सचेष्ट रहेंगे।

वर्ष के चार स्तम्भों एवं आर्षमान-विचार से यद्यपि देश की स्थिति तो भूतकालिक राजनैतिक कारणों से चिन्तनीय ही रहेगी। लेकिन नयी शासन प्रणाली इसे सुधारने के लिए सशक्त सिद्ध होगी।

दोहा—"अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्त्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै॥"

संवत् २०७७ वि. में रोहिणी का वास

(वर्षा एवं जलवायु में विशेष)

सं २०७७ वि. में **'मेष-संक्रान्ति'** १३ अप्रैल, सन् २०२० ई. को चन्द्रवार, पू.षा. नक्षत्र, शिवयोग एवं धनु:स्थ चन्द्र के समय २० घं २१ मि. पर लग रही है, अत: रोहिणी का वास **'सन्धि'** में है।

फल—"खण्डवृष्टिस्तु सन्धिषु"—अर्थात् सन्धिगत रोहिणी कहीं वर्षा, कहीं सूखा करती है। अत: **भारत के कुछ प्रान्त इस वर्ष वर्षा किंवा पेयजल के संकट का सामना करने को विवश होंगे।** लेकिन कुछ प्रान्त जलमग्न होने से क्षतिग्रस्त रहें।

समय किंवा संवत्सर का वास—रोहिणी का वास सन्धि में होने से **समय का वास 'वैश्य' के घर** में है।

फल—संवत्सर का वास 'वणिक्-गृह' में होने से देश व्यापारक्षेत्र में प्रगति करेगा। नयी योजनाएं देश को आर्थिक दृष्टि से समृद्धि की ओर अग्रसर करेंगी।

संवत् २०७७ वि. में शनि की नज़र का फल

संवत् २०७७ वि. के प्रारम्भ से अन्त तक शनि मकर राशि में ही रहेगा। अत: शनि की दृष्टि उत्तर की तरफ ही रहेगी। स्पष्ट है कि—संवत् २०७७ वि. में पश्चिमी एवं उत्तरी गोलार्ध के देशों में प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, जलाप्लाव, हिंसा, शासकों में अस्थिरता एवं राजनैतिक हत्याकाण्ड होंगे। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार अक्तूबर २०१९ के बाद गुरु-शनि के एक राशि में रहने से विश्व में व्यापक हिंसा, युद्धात्मक व भारी संकटापन्न स्थिति बन सकती है, जो कि आगे भी अशुभ स्थिति को ही दर्शाता है। धनु-मकर-वृश्चिक नाम राशि वाले शासकों (राजनायिकों) को भारी संकटापन्न स्थिति का सामना करना पड़ेगा। राजनैतिक हत्याकाण्ड सम्भव है। अत: वृश्चिक-धनु-मकर राशि वाले विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी आवश्यक है।

एवं राजनीतिज्ञों के लिए शनि-मंगल का सम्बन्ध अशुभ है। मार्च २०२० से ४ मई, सन् २०२० ई. के लगभग तक भारत को शत्रु की गतिविधि से सावधान रहना होगा, सैन्यबल को तैयार रखना होगा। मीन, कर्क, वृष, कन्या, वृश्चिक नाम राशि वाले राजनीतिज्ञों की सुरक्षा आवश्यक है—

"शनैश्चर: क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत्।
दुर्भिक्ष-देशभंगाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरै:॥"

सं. २०७७ वि. में विशेष अमावस्याएं—

(१) संवत् २०७७ वि. में सोमवती अमावस्याएं तीन हैं—
- (i) श्रावण कृष्ण पक्ष (२० जुलाई, सन् २०२०ई.)।
- (ii) मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष (१४ दिसं., सन् २०२० ई.)।
- (iii) चैत्र कृष्ण पक्ष (१२ अप्रैल, सन् २०२१ ई.)।

(२) संवत् २०७७ में शनिवारी अमावस एक ही है—
- (i) फाल्गुन कृष्णपक्ष (१३ मार्च, सन् २०२१ ई.)।

नोट—इस संवत् में भौमवती अमावस नहीं है।

नोट—सोमवती अमावस्या के दिन चावल आदि अन्न, घी, दूध का दान दक्षिणासहित करें। इस दिन गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान-दान का विशेष महत्त्व है।

शनैश्चरी अमा को तुलादान, तेलदान, काले तिल, काला कपड़ा एवं काली दाल दान करें।

ध्यान दें—उल्लिखित अमावस्याओं में दान एवं तीर्थस्थान/पूजन आदि का विशेष महत्त्व है। साथ ही अधिकाधिक पंचांगों का योग्य ब्राह्मणों को तीर्थ पर या अन्यत्र भी दान करना पुण्यप्रद लिखा है। सभी अमावस्याओं पर पूर्वजों को पिण्डदान करने का विधान है।

इस वर्ष की विशेष अमावस्याओं का माहात्म्य

1. इस वर्ष सोमवार को तीन अमावस्याएं हैं। *'स्कन्दपुराण'* के अनुसार शिव-

करके अनन्तकोटि यज्ञों का फल प्राप्त करें—

"अमा सोमेन संयुक्ता कदाचिद्यदि लभ्यते।
तस्यां सोमेश्वरं पूज्य कोटियज्ञ-फलं लभेत॥"

सोमवती अमावस्या को गंगा आदि नदियों किंवा तीर्थों पर स्नान, जप, होम, ब्रह्म-भोजन, पितृतर्पण से कुटुम्ब में वृद्धि एवं सुख-समृद्धि प्राप्त होती है—

"सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्।
तदाऽनन्तफलं श्राद्धं पितृणां दतभक्षणम्॥"

'शनैश्चरी अमा' पूर्वजन्म पापनाशनार्थ एवं ग्रहरोग-शान्त्यर्थ उपयोगी मानी गयी है।

इस दिन तिल, तेल, माह एवं शनिमन्त्र का जाप किंवा तुलादान करना श्रेयस्कर लिखा है।

संवत् २०७७ वि. में शरत् सस्य-जातकविचार

ध्यान रहे—गर्मी में बोई जाने वाली तथा सर्दी में तैयार होने पर काटी जाने वाली फसलें चावल, मूंग, ज्वार, बाजरा, कपास, अरहर, तिल, तोड़िया, सूरजमुखी, ग्वार, गन्ना, मक्का आदि **"खरीफ फसलों"** को **'शरत्सस्य'** कहा जाता है। शरत्सस्य का विचार वृषस्थ सूर्य से ही किया जाता है।

सं. २०७७ वि. में ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी/अष्टमी, गुरुवार, धनिष्ठा नक्षत्र, ब्रह्मयोग एवं **मकरस्थ चन्द्र के समय १४ मई, सन् २०२० ई. को १७ घं. १५ मि. पर सूर्यदेव वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।**

शरत्सस्यजातक कुण्डली
(१४ मई, २०२० ई.) १७ घं.१५ मि. (I.S.T.)

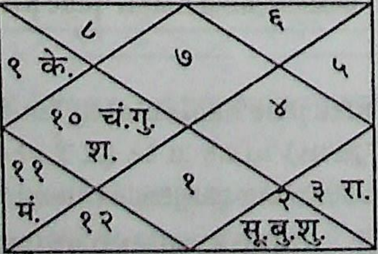

नोट—शरत् सस्यजातक-विचारार्थ तात्कालीन औदयिक लग्न से फलादेश-विचार उचित नहीं। अतः सस्यजातक-विचारार्थ यहां **सूर्य को ही लग्न मानकर फलविचार शास्त्रविहित है। तदनुसार यहां सूर्य को ही लग्न मानकर फलादेश लिखा गया है।**

फल—वृषस्थ सूर्य पर मंगल की विशेष दृष्टि है, मंगल खरीफ की फसलों को बल देता है। **'बुधादित्य योग'** भी शुभ है, लेकिन सूर्य के साथ शत्रु शुक्र का योग वर्षा-जलवायु को प्रभावित करके अनेकत्र चावल, अरहर, तिल, ग्वार, मक्का, बाजरा, कपास की फसलों को खराब करे। लेकिन मंगल-गुरु की सूर्य पर दृष्टि होने से चावल आदि की फसल उत्तम होगी। लेकिन नीचस्थ गुरु, शनि के साथ केन्द्र में होने से चावलादि शारदन्नों के भाव नीचे नहीं आयेंगे। लेकिन इस बार शारदन्नों की निष्पत्ति अधिक होगी। क्योंकि सूर्य-बुध-शुक्र पर गुरु एवं मंगल की पूर्ण दृष्टि है—

"अर्कात् सिते द्वितीये बुधेऽथवा युगपदेवा स्थितयोः।
व्यय-गतयोरपि तद्वन्निष्पत्तिरतीव गुरुदृष्ट्या॥"

संवत् २०७७ वि. में ग्रीष्मसस्य-जातकविचार

सं. २०७७ वि. में कार्त्तिक कृष्ण अमावस (तात्कालिकी कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा), **तदनुसार १५/१६ नवम्बर, सन् २०२० ई. सोमवार को अनुराधा नक्षत्र, अतिगण्ड योग एवं वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय ६ घं. ५२ मि. पर सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।**

ग्रीष्मसस्य जातक कुण्डली
(१८ नवं., २०२० ई.) ६ घं.५२ मि. (I.S.T.)

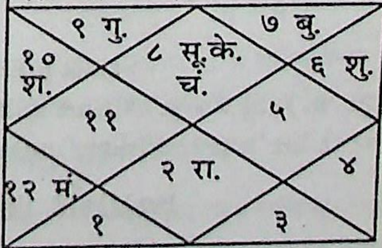

फल—वृश्चिकस्थ सूर्य नीच चन्द्र एवं केतु के साथ हैं एवं सप्तमस्थ राहु है। अतः ग्रीष्मसस्य की प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। खड़ी फसलों को वायु-वर्षा के अभाव या आकालिक वर्षा (अत्यधिक वर्षा) से नुकसान होने का योग है—

"पापसंयुतः सूर्यः सस्यं विनाशयत्यलिगः।
पापः सप्तमराशौ जातं जातं विनाशयति॥"

ग्रीष्मसस्य कुण्डली गेहूं, जौ, चना आदि की फसलों की उपज अच्छी होने पर भी नुकसान होने का संकेत देती है। ग्रीष्मान्नों के स्टॉक से व्यापारी लाभ लेंगे।

मंगल-शुक्र का समसप्तक कुछ प्रान्तों में बम्पर फसल से किसानों को उत्तम लाभ देगा।

सं. २०७७ वि. में सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश

सं. २०७७ वि. में आषाढ़ कृष्ण अमावस, रविवार (तात्कालिकी आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा), चन्द्रवार, तदनुसार २१ जून, सन् २०२० ई. को २३ घं. २७ मि. (भा.स्टैं. टा.) पर आर्द्रा नक्षत्र, वृद्धि योग एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य आर्द्रा-प्रवेशकालिक कुण्डली
२१ जून, सन् २०२० ई.,
२३ घं.२७ मि. (I.S.T.)

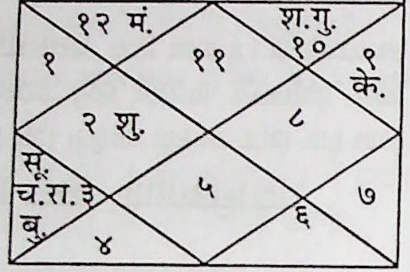

फल—आर्द्राप्रवेश-कुण्डली में स्वस्थ शनि के साथ नीचस्थ गुरु है। शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि है। गुरु की शुक्र पर दृष्टि वर्ष में कहीं भयंकर सूखा, दुर्भिक्ष की स्थिति बनाये। कहीं भयंकर बाढ़, वर्षा, तूफान, किंवा अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि हो।

लेकिन सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश रात्रि में (रात को ११ बजकर २७ मि. पर) होने से व्यापारी वर्ग के लिए सुखप्रद रहेगा—

"जगत् क्षेमकरो रात्रौ बहुसस्य-जलप्रद:।"

आर्द्राप्रवेश कुण्डली में राहु-बुध एवं चन्द्र पर शनिदृष्ट मंगल की क्रूरदृष्टि जल-शोषक है। अत: सरकार को जनहित में पर्यावरण को कण्ट्रोल करने के लिए एवं जन जीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता हेतु विशेष प्रयास करने होंगे। शनि-मंगल की स्थिति इस वर्ष सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेश की गतिविधि से युद्धात्मक स्थिति का संकेत देती है। जनधनहानि सम्भव है।

इस वर्ष आर्द्राप्रवेश अमावस में होने से राजनैतिक दृष्टि से देश के हित में नहीं है। राजनीति एवं शासनतन्त्र में उलट-फेर सम्भव है—

"अमायां पद्मिनिनाथो रौद्रनक्षत्रगो यदि।
भूमिपानां विनाश: स्यात्तस्कराणामुपद्रव:॥"

संवत् मध्य में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होने का योग है।

ध्यान दें—सूर्य, चन्द्र दोनों इस समय आर्द्रा में होने से अनेकत्र भयंकर बाढ़ व वर्षा से जनधनहानि सम्भव है।

संवत् २०७७ वि. का शुभारम्भ

सं. २०७६ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, मंगलवार, तदनुसार २४ मार्च, सन् २०२० ई. को उ.भा. नक्षत्र, ब्रह्म योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय १४ घं. ५८ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सं. २०७७ वि. का शुभारम्भ कर्क लग्न में होगा।

संवत् २०७७ वि. की प्रवेश-
कालीन कुण्डली

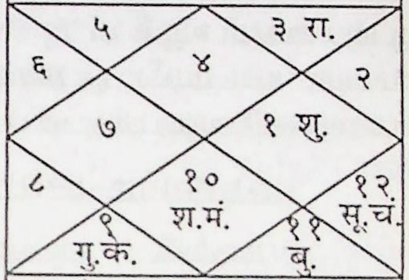

२४ मार्च, २०२० ई., १४ घं.५८ मि. (I.S.T.)

फल—संवत् २०७७ वि. का शुभारम्भ कर्क लग्न में हो रहा है। लग्न पर शनि-मंगल की पूर्ण दृष्टि है, अत: भारत की राजनीति में मित्रता किंवा विरोध सामयिक लाभ से ही प्रेरित रहेंगे। शासनतन्त्र में आश्चर्यजनक उलटफेर होंगे। उत्तर एवं दक्षिण की ओर से शत्रुदेश की गतिविधि अघोषित युद्ध की स्थिति बना सकती है। सैन्यबल को सुसन्नद्ध रहना होगा। वर्षप्रवेश कुण्डली में शनि की सूर्य-चन्द्र पर एवं मंगल की शुक्र पर दृष्टि किसी यावनदेश में आन्तरिक क्रान्ति किंवा विभाजन का संकेत देती है। भारत की प्रभाव राशि मकर की स्थिति राजनैतिक दृष्टि से प्रधान नेताओं के लिए विशेष भयावह है, सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहें।

कहीं भयंकर दुर्भिक्ष, जलप्रलय, समुद्री तूफान किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से इस वर्ष भयंकर जनधनहानि के योग बन रहे हैं। कर्क लग्न में संवत्सर का शुभारम्भ होने से उत्तर दिशा में प्राकृतिक प्रकोप, दक्षिण में महामारी आदि आपदा किंवा

"कर्के सुखं तु पूर्वस्यामुत्तरस्यां तु विग्रहः।
यच्चासन बलं यावद दुर्भिक्षं पश्चिमे दिशि॥"

किञ्च—

"मारिर्दक्षिण-देशे स्यात्तथा बंगेष्युपद्रवः।
लोके दुःखं विजानीयात् पश्चिमे ननु विग्रहः॥"

२०७७ वि. में वर्षेश(जगत्)लग्नकुण्डली

जब सूर्य निरयण मेष राशि में प्रविष्ट होता है तो तात्कालिक लग्न ही 'जगत् लग्न' कहलाता है। संवत् २०७७ वि. में वैशाख कृष्ण षष्ठी, (तात्कालिकी सप्तमी) चन्द्रवार, तदनुसार १३ अप्रैल, सन् २०२० ई. को २० घं. २१ मि. (भा.स्टैं. टा.) पर सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

वर्षेश(जगत)लग्न-कुण्डली
१३ अप्रैल, सन् २०२० ई.,
२० घं. २१ मि. (I.S.T.)

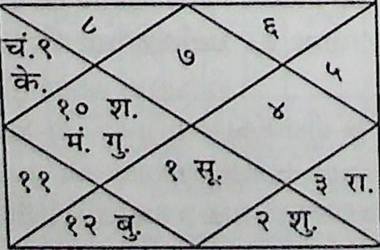

फल—इस वर्ष तुला लग्न में जगत् लग्न का उदय हुआ है। सप्तम भाव में उच्चस्थ सूर्य पर उच्च मंगल की दृष्टि भी है, अतः यह वर्ष धन-धान्य से सम्पूर्ण एवं नयी राजनैतिक पुरोगमों वाला रहेगा। **लेकिन केन्द्र में शनि-मंगल एवं नीच गुरु की स्थिति राजनैतिक वैमनस्यता के कारण देशहित में होने वाली प्रगति में बाधक अवश्य रहेगी। क्योंकि, औदयिक लग्न पर सूर्य की नीच दृष्टि भी है, अतः राजनीतिज्ञों के विचारों में विविधता एवं अनबन चिन्ताजनक रहेगी।**

भारत की प्रभावराशि मकर में शनि-मंगल का योग होने से कुछ परिस्थितिवश कहीं राष्ट्रपतिशासन भी लागू होने की सम्भावना बनती है। दक्षिण-उत्तर दिशा में कहीं सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेश की गतिविधि से सैन्यबल का प्रयोग करने का संकेत भी ग्रहस्थिति से मिलता है—

"युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्ष कारकौ।"

वर्षेश लग्न में चन्द्र-केतु एवं बुध की स्थिति कहीं भूकम्प, तूफान आदि से क्षतिकारक है। वर्षेश लग्नानुसार ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद से मार्गशीर्ष तक का समय वरिष्ठ नेतृत्व के लिए कष्टप्रद रहेगा। सुरक्षा को सुदृढ़ रखना होगा।

अपने जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत्लग्न का फल इस प्रकार जानिये—

(१) प्रथम भाव से शरीर सुख, (२) धनागम, (३) कुटुम्बवृद्धि (पारिवारिक सुख), (४) मित्र व बन्धुसुख, (५) सन्ततिसुख, (६) शत्रु की पराजय, (७) स्त्री-सुख, (८) रोगभय, मृत्युभय, (९) धर्म-कर्म में प्रवृत्ति किंवा धनलाभ, (१०) धन व सम्मानप्राप्ति, (११) लाभ किंवा अन्य सुख-साधनप्राप्ति तथा (१२) बारहवें भाव से कष्ट व आर्थिक संकट का ज्ञान प्राप्त करें—

"जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिं पुत्रे रिपौ शत्रु-पराजयःस्यात्॥
स्त्री-सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे।
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यं पदाप्तिः॥
लाभे लाभः सुख-धनचयो दुःख-दारिद्र्यमन्त्ये।
पुंसोर्मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद् विलग्ने॥"

यदि 'जगत् लग्न' अपने 'जन्मलग्न' से ६, ८ या १२वें भावों में यत्किञ्चित् भी पापी ग्रह के प्रभाव में हो तो वह वर्ष कष्टप्रद किंवा अशुभ रहेगा, ऐसा जानें।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आये, वह भाग शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश(जगत्)लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा।

इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

गुर्रा-फल (सन् २०२०-२१ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार (उसी वार से सम्बन्धित ग्रह ही) साल का राजा होता है, जो "गुर्रा" नाम से जाना जाता है।

वि.सं. २०७६ में भाद्रपद शुक्ल द्वितीया, तदनुसार १ सितम्बर, सन् २०१९ ई. इतवार को 'यकम-मुहर्रम', हिजरी सन् १४४१ शुरु हुआ है। अतः इस हिजरी सन् का बादशाह सूर्य है।

रविवारी गुर्रा का फल—वर्षा उत्तम हो, शासक सुचारु रूप से काम करें। अनाज एवं मेवाजात बहुत अच्छे रहें। पशुधन महंगा हो, घी, दूध पर्याप्त हो। प्रजा में भयंकर अग्निकाण्ड से हानि हो। वायु का प्रकोप हानिप्रद रहे। आंधी से अनेकत्र हानि हो, कपास की फसल अच्छी हो। स्त्रियों में कुचरोग से अधिक परेशानी रहे।

वि. सं. २०७७ में भाद्रपद शुक्ल तृतीया, शुक्रवार, तदनुसार २१ अगस्त, सन् २०२० ई. को १ मुहर्रम, हिजरी सन् १४४२ का आगाज होगा। इसलिए इस हिजरी सन् का बादशाह शुक्र ही होगा।

शुक्रवारी गुर्रा का फल—महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ेगी। गुड़, खाण्ड, घी आदि में विशेष तेजी रहे। साम्प्रदायिक सौहार्द बिगड़ेगा। उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों से जनता स्थानान्तरण के लिए विवश हो। रोग किंवा प्राकृतिक आपदाओं से जनजीवन त्रस्त रहे।

लाभ-व्यय चक्र (विंशोत्तरी-मतानुसार)

(संवत्सर २०७७ वि. का राजा बुध है)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
व्यय	५	११	११	५	२	११	११	५	८	११	११	८

लाभ-व्यय देखने की विधि—अपनी राशि के लाभ-व्यय-अंकों को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर शेष को ८ से भाग देने पर यदि १ बचे तो आमदन, २ बचे तो सुख-लाभ, ३ बचने पर क्लेश, ४ शेष रहने पर बीमारी से परेशानी, ५ शेष आने पर अपयश,

होगी—ऐसा जानें।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि तिथौ शुभम्।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्॥"

विशेष—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दस दिन तक नीम के कोमल पत्ते, नीम की मंजरी या निमौली का चूर्ण, सेंधा नमक, इमली, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल—ये सब कूट-पीसकर इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर में मिलाकर शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात-पित्त एवं कफजन्य कष्टों एवं कुष्टरोग से मुक्ति मिलती है।

— — —

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली (मोहाली) पंजाब के इन युवा-कर्मठ विद्वान् कार्यकर्ताओं का पंचांग-प्रकाशन में भारी सहयोग वस्तुतः प्रशंसनीय है—

"श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली" के प्रबन्धक, हमारे पूज्यपिता जी के प्रिय शिष्य चि. प्रेमचन्द शर्मा; ग्राम सुन्हाड़—सौर (सोलन) (हि.प्र.) निवासी श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य; नालाबलोग (पंचकूला) निवासी चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. एवं चि. रविसन्धु (सुपुत्र राणा रणजीत सिंह जी) श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (हिन्दी), बटुक पंचांग एवं शिरोमणि तिथपत्रिका (पंजाबी) के पाण्डु-लिपि-लेखन एवं प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी और आदरभाव से करते हैं। पंचांग के प्रकाशन-कार्य में हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व से भरे इस उत्साहपूर्ण सहयोग से काफी हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय परम-उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

—प्रियव्रत शर्मा, इन्दुशेखर शर्मा,

स्पष्ट सूर्य (२५ मार्च से ८ अप्रैल, सन् २०२० ई.)

(२५ मार्च से ८ अप्रैल, सन् २०२० ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

प्रातः बु. पूर्वक्षितिक्ष में, मं.श. पूर्वकपाल में और गु. इनसे ऊपर होगा। सायं शु. पश्चिम में दिखाई देगा। २८ मार्च को चं. शु. पश्चिम में साथ-साथ दिखाई देंगे।

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, चैत्र शुक्ल पक्ष १

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल		चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	चैत्र	मार्च	चैत्र	रजब		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	२४	१	बु.	२७	३७	रेव.	६०	०	ब्र.	२२	५९	ब.	२७	३७	१२	२५	५	२९	मीन			६	२४	१८	३३	११	१०	४०	१२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, चान्द्र संवत्सर २०७७ वि. प्रारम्भ, (A)
३०	२८	२	गु.	३३	४७	रेव.	२	१०	ऐं.	२५	१२	बा.	०	४२	१३	२६	६	शा.१	मेष	२	१०	६	२३	१८	३४	११	११	३९	४०	पंचक समाप्त २/१०, शावान मु. प्रारम्भ,
३०	३३	३	शु.	३९	३८	अश्वि.	९	२८	वै.	२७	१३	तै.	६	४२	१४	२७	७	२	मेष			६	२१	१८	३४	११	१२	३९	५	श्रीमत्स्य जयन्ती, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया,
३०	३८	४	श.	४४	५४	भर.	१६	१८	वि.	२८	५०	व.	१२	१६	१५	२८	८	३	वृष	३२	५५	६	२०	१८	३५	११	१३	३८	२८	भ. १२/१६ से ४४/५४ तक, शुक्र वृष में २३/१३,
३०	४२	५	र.	४९	१६	कृत्ति.	२२	२६	प्री.	२९	५१	ब.	१७	५	१६	२९	९	४	वृष			६	१९	१८	३६	११	१४	३७	४९	गुरु उ.षा. २ मकर में ५३/४२, श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत,
३०	४७	६	चं.	५२	२३	रोहि.	२७	२९	आ.	३०	०	कौ.	२०	४९	१७	३०	१०	५	मिथुन	५९	२९	६	१८	१८	३६	११	१५	३७	८	स्कन्द षष्ठी, आनन्द संवत्सर (देखें पृ.13)
३०	५२	७	मं.	५३	५३	मृग.	३१	८	सौ.	२९	१	ग.	२३	८	१८	३१	११	६	मिथुन			६	१६	१८	३७	११	१६	३६	२४	भ. ५३/५४ बाद, सूर्य रेव. में १/४२, बुध पू.भा. में ४/७,
३०	५६	८	बु.	५३	३३	आर्द्रा	३३	४	शो.	२६	४०	वि.	२३	४३	१९	अ.१	१२	७	मिथुन			६	१५	१८	३८	११	१७	३५	३८	भ. २३/४३ तक, श्री दुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, अप्रैल प्रारम्भ,
३१	१	९	गु.	५१	१३	पुन.	३३	६	अ.	२२	४८	बा.	२२	२३	२०	२	१३	८	कर्क	१८	१७	६	१४	१८	३८	११	१८	३४	४९	श्री रामनवमी (पुनर्वसुयुता), नवरात्र समाप्त,
३१	५	१०	शु.	४६	५४	पुष्य	३१	९	सु.	१७	२०	तै.	११	४	२१	३	१४	९	कर्क			६	१३	१८	३९	११	१९	३३	५९	शनि उ.षा. ४ में ४/६, नवरात्र-पारणा,
३१	१०	११	श.	४०	४७	आश्ले.	२७	२१	धृ.	१०	२०	व.	१३	५०	२२	४	१५	१०	सिंह	२७	२१	६	१२	१८	४०	११	२०	३३	६	भ. १३/५० से ४०/४७ तक, कामदा एकादशी व्रत (स.), दोलोत्सव,
३१	१५	१२	र.	३३	७	मघा	२१	५६	शू. गं.	१ ५२	५३ २१	ब.	६	५७	२३	५	१६	११	सिंह			६	१०	१८	४०	११	२१	३२	१०	मंगल श्रव. में ४४/३७, श्रीविष्णु-दमनोत्सव, प्रदोषव्रत,
३१	१९	१३	चं.	२४	१७	पू.फा.	१५	१६	वृ.	४१	५८	तै.	२४	१७	२४	६	१७	१२	कन्या	२८	२४	६	९	१८	४१	११	२२	३१	१३	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), अनंग त्रयोदशी, दमनक चतुर्दशी,
३१	२४	१४	मं.	१४	४३	उ.फा. हस्त	७ ५९	४७ ५६	ध्रु.	३१	७	व.	१४	४३	२५	७	१८	१३	कन्या			६	८	१८	४१	११	२३	३०	१३	भ. १४/४३ से ३९/४८ तक, बुध मीन में २०/३०, (B)
३१	२८	१५	बु.	४	५५	चित्रा	५२	११	व्या.	२०	११	ब.	४	५५	२६	८	१९	१४	तुला	२६	३	६	७	१८	४२	११	२४	२९	१२	शुक्र रोहि. में २४/४५, चैत्री पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ,(C)

(A) वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल-श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र-प्राशन, गुड़ी पड़वा, चन्द्रव्रत, (B) श्रीशिव-दमनोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, (C) श्रीहनुमान् जयन्ती (द.भा.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	९	१०	९	१	९	२	८
१७	१२	६	२१	०	३	६	९	९
३५	२५	४१	८	१५	२२	३२	१७	१७
३८	२०	२	५८	४४	४९	२२	२४	२४
५९	७८५	४१	७८	७	५५	३	३	३
१२	४२	४२	३६	२३	२५	४१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. १	आर्द्रा २	उ.षा. ४	पू.भा. १	उ.षा. २	कृत्ति. ३	उ.षा. ३	आर्द्रा १	मूल ३

कुण्डली सूर्योदय (१ अप्रै.)

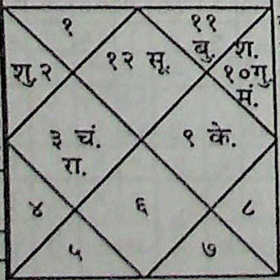

लोकभविष्य—चैत्र चान्द्रमास में शनि-मंगल मकरस्थ होकर नीच गुरु के साथ एकराशिसम्बन्ध बना रहे हैं। अतः इस चान्द्रमास में राजनैतिक दृष्टि से देश को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। कुछ प्रान्तों में साम्प्रदायिक उलझनों का सामना कठोरता से करना होगा। कहीं सीमाप्रान्त अशांत रहें एवं कुछ प्रान्तों में प्राकृतिक आपदा (वायुवेग, भूकम्प) एवं अग्निकाण्ड आदि से भयंकर हानि सम्भव है,—"युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।" किञ्च—"यमारयोः पवनहुताशजं भयम्।" इन प्रमाणों के अनुसार सरकार को आन्तरिक एवं सीमाप्रान्तीय समस्याओं से सतर्क रहना होगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—संवत् के आरम्भ में रुई में अच्छी मन्दी, सोना, चांदी में घटाबढ़ी एवं अनाजों में अच्छी तेजी से लाभ मिले। २९ मार्च से १५ दिन में तांबा, सोना, चांदी, कपूर, चन्दन, मूंगफली, सब्जों में तेजी रहे। ३१ के लगभग बाजार मन्दे, फिर पक्षान्त तक बाजार अस्थिर रहें।

आकाशलक्षण—२८, २९, ३० एवं ३१ मार्च को एवं ५, ७, ८ अप्रैल को भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षत्रों में तेज हवाओं के साथ कहीं खण्डवृष्टि हो। लेकिन उत्तरी भारत में तापमान बढ़ने लगेगा।

कुण्डली सूर्योदय (८ अप्रै.)

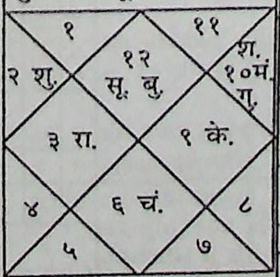

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ८ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	९	११	९	१	९	२	८
२४	२२	११	०	१	९	६	८	८
२९	५६	३२	५६	४	३७	५६	५५	५५
११	४१	५७	१४	२२	३९	२३	९	९
५८	११६	४१	१०	६	५०	३	३	३
५७	५०	४२	३८	२१	५०	५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ३	हस्त ४	श्रव. १	पू.भा. ४	उ.षा. २	कृत्ति. ४	उ.षा. ४	आर्द्रा १	मूल ३

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(९ से २३ अप्रैल, सन् २०२० ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु।

पक्षान्त में बु. पूर्व में अस्त हो जायेगा। प्रातः पूर्वकपाल में मं., इससे ऊपर श. व गु. उत्तरोत्तर ऊपर उठे होंगे। सायं शु. पश्चिम में दिखाई देगा। १५ अप्रैल को प्रातः चं. गु. परस्पर समीपस्थ होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. चैत्र	तारीखें अं. अप्रैल	तारीखें श. चैत्र	तारीखें मु. शाबान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	बु.	५५	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३१	३३	२	गु.	४६	२३	स्वा.	४५	२२	ह व.	९ ५९	३४ ३५	तै.	२०	४९	२७	९	२०	१५	तुला			६	६	१८	४३	११	२५	२८	८	बुध उ.भा. में ३३/३,
३१	३७	३	शु.	३८	३८	विशा.	३९	३४	सि.	५०	४२	व.	१२	३०	२८	१०	२१	१६	वृश्चिक	२५	५३	६	४	१८	४३	११	२६	२७	२	भ. १२/३० से ३८/३८ तक,
३१	४२	४	श.	३२	२६	अनु.	३५	१९	व्य.	४३	९	ब.	५	३२	२९	११	२२	१७	वृश्चिक			६	३	१८	४४	११	२७	२५	५५	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३१	४६	५	र.	२८	४	ज्येष्ठा	३२	५६	व.	३७	८	कौ.	०	१५	३०	१२	२३	१८	धनु	३२	५६	६	२	१८	४५	११	२८	२४	४५	
३१	५१	६	चं.	२५	४४	मूल	३२	३२	प.	३२	४६	व.	२५	४४	वै.१	१३	२४	१९	धनु			६	१	१८	४५	११	२९	२३	३४	भ. २५/४४ से ५५/३५ तक, सं. सूर्य अश्वि. मेष में (A)
३१	५५	७	मं.	२५	२९	पू.षा.	३४	११	शि.	३०	२	ब.	२५	२९	२	१४	२५	२०	मकर	४९	५४	६	०	१८	४६	०	०	२२	२१	
३१	५९	८	बु.	२७	११	उ.षा.	३७	४२	सि.	२८	५०	कौ.	२७	११	३	१५	२६	२१	मकर			५	५९	१८	४६	०	१	२१	६	
३२	४	९	गु.	३०	३५	श्रव.	४२	४९	सा.	२८	५६	ग.	३०	३५	४	१६	२७	२२	मकर			५	५८	१८	४७	०	२	१९	४९	
३२	८	१०	शु.	३५	१८	धनि.	४९	७	शु.	३०	३	व.	२	५६	५	१७	२८	२३	कुम्भ	१५	५३	५	५६	१८	४८	०	३	१८	३१	भ. २/५६ से ३५/१८ तक, पंचक प्रारम्भ १५/५३, (B)
३२	१३	११	श.	४०	५५	शत.	५६	१२	शु.	३१	५३	ब.	८	७	६	१८	२९	२४	कुम्भ			५	५५	१८	४८	०	४	१७	११	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,
३२	१७	१२	र.	४७	१	पू.भा.	६०	०	ब्र.	३४	८	कौ.	१३	५८	७	१९	३०	२५	मीन	४६	४८	५	५४	१८	४९	०	५	१५	५०	सूर्य सायन वृष में ३५/५७, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ,
३२	२१	१३	चं.	५३	१६	पू.भा.	३	४०	ऐं.	३६	३२	ग.	२०	८	८	२०	३१	२६	मीन			५	५३	१८	५०	०	६	१४	२७	भ. ५३/१६ बाद, सोमप्रदोष व्रत,
३२	२५	१४	मं.	५९	२३	उ.भा.	११	१४	वै.	३८	५३	वि.	२६	१९	९	२१	वै.१	२७	मीन			५	५२	१८	५०	०	७	१३	२	भ. २६/१९ तक, अगस्त्य अस्त, शक वैशाख प्रारम्भ,
३२	३०	३०	बु.	६०	०	रेव.	१८	३६	वि.	४१	२	च.	३२	१८	१०	२२	२	२८	मेष	१८	३६	५	५१	१८	५१	०	८	११	३५	पंचक समाप्त १८/३६,
३२	३४	३०	गु.	५	१३	अश्वि.	२५	३५	प्री.	४२	५१	ना.	५	१३	११	२३	३	२९	मेष			५	५०	१८	५२	०	९	१०	६	बुध पूर्व में अस्त ५ घं. ५० मि.,

(A) ३५/५४, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, वैशाखी (पं., हरि., हि.प्र.), (B) बुध रेव. में ३९/२१,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १५ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	९	११	९	१	९	२	८
९	१	१६	१२	९	१५	७	८	८
२१	५२	२४	४	४५	१६	१६	३२	३२
६	१९	५१	१०	३४	५३	८	५३	५३
५८	७४९	४१	१०१	५	४५	२	३	३
४३	०	४१	४६	१५	१	२८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१५ अप्रै.)

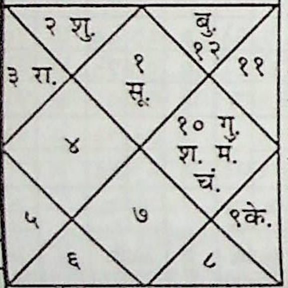

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच बुधवार एवं पांच गुरुवार हैं। शनि, मंगल, गुरु एक साथ चल रहे हैं। १३ अप्रैल से सूर्य पर मंगल की दृष्टि भी है, अतः प्रधान नेता को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। प्रान्तीय उलझनें एवं साम्प्रदायिक सौहार्द को सुव्यवस्थित रखने के लिए कहीं सेना की भी मदद लेनी पड़ेगी। सं. २०७७ वि. के प्रारम्भिक कुछ मास देश के प्रधान नेताओं के लिए विशेष कठिनताओं को लेकर उपस्थित होंगे, अतः "दण्डः शासति प्रजा सर्वाः दण्ड एवाभिरक्षति"—इस मनुनीति का अनुसरण करना होगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर में अच्छी मन्दी, सोना, चांदी में घटाबढ़ी, बिनौला तेज रहे। १३ मई के लगभग सोना, चांदी, लोहा, तांबा, तेल, तिलहन तेज, अनाजों में मन्दी रहे। पक्षान्त तक बाजार अस्थिर रहें।

कुण्डली सूर्योदय (२३ अप्रै.)

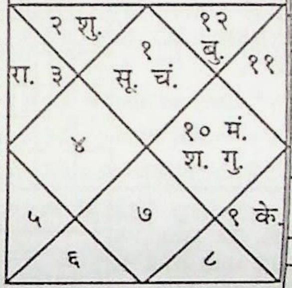

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २३ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	९	११	९	१	९	२	८
९	८	२१	२६	२	२०	७	८	८
१०	३	५७	२३	२२	४८	३३	७	७
६	३२	५८	१५	४९	१०	१५	२७	२७
५८	७२०	४१	११४	३	३६	१	३	३
३०	१०	३४	४२	५३	१६	४२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण—५, ७, ८, ९, १३, १४, १७, २२ अप्रैल के लगभग उत्तर भारत में कहीं आंधी-तूफान व वर्षा से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी। उड़ीसा, आसाम, मुम्बई, प. राजस्थान एवं हि.प्र. के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व कहीं खण्डवृष्टि हो। उ.भारत में गर्मी का प्रकोप रहे।

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(२४ अप्रैल से ७ मई, सन् २०२० ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

बु. अस्त है। प्रातः मं. पूर्वकपाल में और श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में तथा गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं शु. पश्चिम-क्षितिज में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	तारीखें अं. अप्रैल	तारीखें श. वैशाख	तारीखें मु. शाबान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३२	३८	१	शु.	१०	३०	भर.	३२	४	आ.	४४	१५	ब.	१०	३०	१२	२४	४	३०	वृष	४८	३५	५	४९	१८	५२	०	१०	८	३६	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल धनि. में ५७/३९, बुध अश्वि.(A)
३२	४२	२	श.	१५	९	कृत्ति.	३७	५२	सौ.	४५	५	कौ.	१५	९	१३	२५	५	र.१	वृष			५	४८	१८	५३	०	११	७	३	प्लूटो वक्री ४६/२२, श्रीपरशुराम जयन्ती, श्रीशिवाजी (B)
३२	४६	३	र.	१८	५९	रोहि.	४२	५१	शो.	४५	१५	ग.	१८	५९	१४	२६	६	२	वृष			५	४७	१८	५४	०	१२	५	२९	भ. ५०/२२ बाद, अक्षय तृतीया,
३२	५०	४	चं.	२१	४९	मृग.	४६	४७	अ.	४४	३४	वि.	२१	४९	१५	२७	७	३	मिथुन	१४	५९	५	४६	१८	५४	०	१३	३	५२	भ. २१/४९ तक, सूर्य भर. में १५/५४, शुक्र मृग. में २७/४२,
३२	५४	५	मं.	२३	२७	आर्द्रा	४९	२८	सु.	४२	५४	बा.	२३	२७	१६	२८	८	४	मिथुन			५	४५	१८	५५	०	१४	२	१४	श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३२	५८	६	बु.	२३	४०	पुन.	५०	४२	धृ.	४०	६	तै.	२३	४०	१७	२९	९	५	कर्क	३५	३४	५	४४	१८	५६	०	१५	०	३३	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.),
३३	२	७	गु.	२२	२०	पुष्य	५०	२२	शू.	३६	२	व.	२२	२०	१८	३०	१०	६	कर्क			५	४३	१८	५६	०	१५	५८	५०	भ. २२/२० से ५०/५० तक, श्रीगंगा जन्म,
३३	६	८	शु.	१९	२२	आश्ले.	४८	२५	गं.	३०	४०	व.	१९	२२	१९	म.१	११	७	सिंह	४८	२५	५	४२	१८	५७	०	१६	५७	५	बुध भर. में २५/४५, मई प्रारम्भ,
३३	१०	९	श.	१४	४६	मघा	४४	५६	वृ.	२४	०	कौ.	१४	४६	२०	२	१२	८	सिंह			५	४२	१८	५८	०	१७	५५	१९	श्रीजानकी जयन्ती,
३३	१४	१०	र.	८	४२	पू.फा.	४०	४	ध्रु.	१६	८	ग.	८	४२	२१	३	१३	९	कन्या	५३	३९	५	४१	१८	५८	०	१८	५३	३०	भ. २७/३० बाद, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मा.),
३३	१८	११	चं.	१	२०	उ.फा.	३४	८	व्या.	७	१७	वि.	१	२०	२२	४	१४	१०	कन्या			५	४०	१८	५९	०	१९	५१	३९	भ. १/२० तक, मंगल कुम्भ में ३७/३०, मोहिनी एकादशी(C)
									ह.	५७	४०																			
अवम		१२	चं.	५३	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
३३	२२	१३	मं.	४४	१६	हस्त	२७	२९	व.	४७	३७	कौ.	१८	४०	२३	५	१५	११	तुला	५३	५९	५	३९	१९	०	०	२०	४९	४६	भौमप्रदोष व्रत,
३३	२५	१४	बु.	३५	१७	चित्रा	२०	३२	सि.	३७	२९	ग.	९	४६	२४	६	१६	१२	तुला			५	३८	१९	०	०	२१	४७	५२	भ. ३५/१७ बाद, श्रीनृसिंह जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D)
३३	२९	१५	गु.	२६	३४	स्वाती	१३	४४	व्य.	२७	३५	वि.	०	५५	२५	७	१७	१३	वृश्चिक	५३	५८	५	३७	१९	१	०	२२	४५	५६	भ. ०/५५ तक, बुध कृत्ति. में ३८/४, वैशाखी पूर्णिमा,(E)

(A) मेष में ५१/५०, (B) जयन्ती, रमजान मु. प्रारम्भ, (C) व्रत (वै.), त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (D) (देखें पृ. 13), (E) श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा (श्रीबुद्ध जयन्ती), वैशाखस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	९	०	९	१	९	२	८
१६	१८	२७	१२	२	२४	७	७	७
५७	४३	२९	२४	४८	५८	४४	४२	४२
६	३९	५१	३६	५३	५९	१४	१	१
५८	८३१	४१	१२६	२	२४	०	३	३
१३	२३	२३	३२	२७	२१	५६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. २	आश्ले. १	धनि. २	अश्वि. ४	उ.षा. २	मृग. १	उ.षा. ४	आर्द्रा १	मूल ३

कुण्डली सूर्योदय (१ मई)

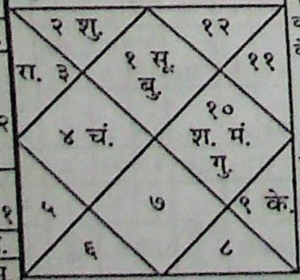

लोकभविष्य—४ मई के लगभग मंगल की शुक्र पर दृष्टि होने से कहीं-कहीं वायुप्रदूषण की समस्या से जनता परेशान हो। कहीं प्रथित व्यक्ति के निधन से सत्तापरिवर्तन के आसार बनें। वैशाख शु. अष्टमी के दिन शुक्रवार एवं शनिवार अशुभ लिखे हैं–

"वैशाख-धवलाष्टम्यां शुक्रवारो यदा भवेत्।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभंगं तदादिशेत्॥"

अतः वैशाख में कहीं प्राकृतिक आपदा किंवा पेय एवं कृषिकर्म के लिए जलाभाव रहे, राजनैतिक उलटफेर भी कहीं हों।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ (२४ अप्रैल) के लगभग सभी अनाज, दालवाना, तेल, तिलहन में जोरदार तेजी या मन्दी बनेगी। गुड़, शक्कर, सोना, चांदी मन्दे रहें, तुरन्त स्टॉक से धातु, तेल तिलहन, गुड़, घी, रुई, चांदी, तांबा, सोना में अच्छी तेजी से ४ मई तक लाभ मिलेगा।

आकाशलक्षण—२४ से २७ अप्रैल तक एवं मई १, ४, ७ को महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, जम्मू-कश्मीर, यू.पी. के कुछ भागों एवं उ.खण्ड, बिहार व हि.प्र. में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (७ मई)

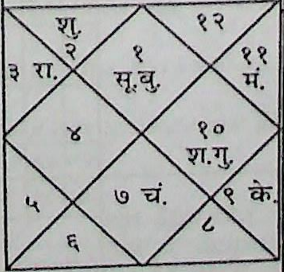

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ७ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	१०	०	९	१	९	२	८
२२	१६	१	२५	३	२६	७	७	७
४५	२९	३७	१६	०	५७	४८	२२	२२
५५	१७	४३	४३	४८	२९	२५	५७	५७
५८	८१५	४१	१३७	१	१२	०	३	३
२	१६	१३	१३	२१	५३	२१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ३	स्वा. ३	धनि. ३	भर. ४	उ.षा. २	मृग. २	उ.षा. ४	आर्द्रा १	मूल ३

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४															तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(८ से २२ मई, सन् २०२० ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. वैशाख	अं. मई	श. वैशाख	मु. रमजान				सूर्योदय		सूर्यास्त						१६ मई से बु. सायं पश्चिम में दृश्य हो जायेगा। प्रातः मं. यम्योत्तरवृत्त में और श. गु. इससे पश्चिम की ओर होंगे। सायं शु. पश्चिम-क्षितिजासन्न होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	३२	१	शु.	१८	३३	विशा.	७	३२	व.	१८	१६	कौ.	१८	३३	२६	८	१८	१४	वृश्चिक			५	३७	१९	२	०	२३	४३	५८	
३३	३६	२	श.	११	३८	अनु. ज्येष्ठा	२ ५८	२० ३५	प.	९	५३	ग.	११	३८	२७	९	१९	१५	धनु	५८	३५	५	३६	१९	२	०	२४	४१	५८	भ. ३८/५५ बाद, बुध वृष में १०/२७,
३३	३९	३	र.	६	१२	मूल	५६	३४	शि. सि.	२ ५६	४० ५५	वि.	६	१२	२८	१०	२०	१६	धनु			५	३५	१९	३	०	२५	३९	५७	भ. ६/१२ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३३	४३	४	चं.	२	३०	पू.षा.	५६	२८	सा.	५२	४४	बा.	२	३०	२९	११	२१	१७	धनु			५	३४	१९	४	०	२६	३७	५४	सूर्य कृत्ति. में २/०, शनि वक्री १०/१२, यूरेनस भर. १ में ४४/३१,
३३	४६	५	मं.	०	४७	उ.षा.	५८	२०	शु.	५०	९	तै.	०	४७	३०	१२	२२	१८	मकर	११	४६	५	३४	१९	४	०	२७	३५	५०	
३३	५०	६	बु.	१	४	श्रव.	६०	०	शु.	४९	४	व.	१	४	३१	१३	२३	१९	मकर			५	३३	१९	५	०	२८	३३	४५	भ. १/४ से ३२/१० तक, बुध रोहि. में ५३/२५, शुक्र वक्री १६/४५,
३३	५३	७	गु.	३	१५	श्रव.	२	३	ब्र.	४९	२०	ब.	३	१५	ज्ये.१	१४	२४	२०	कुम्भ	३४	३४	५	३२	१९	५	०	२९	३१	३८	पंचक प्रारम्भ ३४/३४, सं. सूर्य वृष में २९/२१, मु. ३०, (A)
३३	५६	८	शु.	७	६	धनि.	७	२४	ऐं.	५०	३८	कौ.	७	६	२	१५	२५	२१	कुम्भ			५	३२	१९	६	१	०	२९	३०	
३३	५९	९	श.	१२	१०	शत.	१३	५५	वै.	५२	३९	ग.	१२	१०	३	१६	२६	२२	कुम्भ			५	३१	१९	७	१	१	२७	२१	भ. ४५/१ बाद, बुध पश्चिम में उदित १९ घं. ७ मि.,
३४	२	१०	र.	१८	०	पू.भा.	२१	९	वि.	५५	२	वि.	१८	०	४	१७	२७	२३	मीन	४	१७	५	३०	१९	७	१	२	२५	११	भ. १८/० तक,
३४	५	११	चं.	२४	६	उ.भा.	२८	३९	प्री.	५७	२६	बा.	२४	६	५	१८	२८	२४	मीन			५	३०	१९	८	१	३	२३	०	अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.),
३४	८	१२	मं.	३०	५	रेव.	३५	५९	आ.	५९	३५	तै.	३०	५	६	१९	२९	२५	मेष	३५	५९	५	२९	१९	९	१	४	२०	४७	पंचक समाप्त ३५/५९,
३४	११	१३	बु.	३५	३४	अश्वि.	४२	४९	सौ.	६०	०	ग.	२	४९	७	२०	३०	२६	मेष			५	२९	१९	९	१	५	१८	३३	भ. ३५/३४ बाद, बुध मृग. में ४७/५१, राहु मृग. ४, केतु (B)
३४	१४	१४	गु.	४०	१९	भर.	४८	५७	सौ.	१	१७	वि.	७	५७	८	२१	३१	२७	मेष			५	२८	१९	१०	१	६	१६	१८	भ. ७/५७ तक,
३४	१७	३०	शु.	४४	११	कृत्ति.	५४	१२	शो.	२	२२	च.	१२	१५	९	२२	ज्ये.१	२८	वृष	५	२२	५	२८	१९	११	१	७	१४	२	वट सावित्री व्रत (अमापक्ष), भावुका अमा, शनैश्चर जयन्ती, (C)

(A) पुण्यकाल १० घं. ५२ मि. बाद, मंगल शत. में २१/१०, गुरु वक्री ३६/१८, (B) मूल २ में ३०/२८, सूर्य सायन मिथुन में ३४/३७, प्रदोपव्रत, (C) शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १५ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१०	१	९	१	९	२	८
०	५	७	१२	३	२७	७	६	६
२९	९	६	१६	६	३८	४८	५७	५७
३०	१८	२७	६	१५	४०	३०	३१	३१
५७	७२३	४०	१२०	०	५	०	३	३
५१	४१	५५	३५	११	१८	२५	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१५ मई)

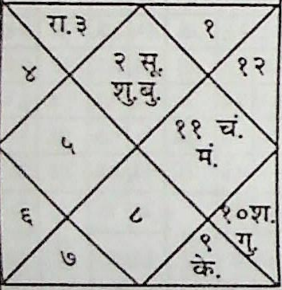

लोकभविष्य—शनि-गुरु एवं शुक्र वक्र स्थिति में हैं। कुम्भ राशिस्थ मंगल की सूर्य-शुक्र पर दृष्टि है, अतः किसी मुस्लिम देश एवं भारत के उत्तरी किंवा पश्चिमी प्रान्तों में कहीं भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक आपदा से हानि का भय है। महाराष्ट्र एवं अन्य समुद्रतटवर्ती प्रदेशों में इस पक्ष की प्रतिपदा शुक्रवारी होने से भयंकर जलप्रलय का दृश्य भी कष्टप्रद रहेगा—

"सैषा प्रतिपदा-युक्ता गुर्विन्दु-शुक्रवासरे।
जलमध्ये भवेत् पृथ्वी पारावार-समाकुला॥"

सूर्य-शुक्र-बुध एकत्र होने से कुछ प्रान्त दुर्भिक्षग्रस्त भी रहेंगे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—९ से १४ मई के मध्य रुई, घी, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, घी, तेल, तिलहन, सीमेण्ट तेज रहें। १४ मई के बाद पक्षान्त तक वायदा बाजार नीचे जा सकते हैं—सावधान रहें।

आकाशलक्षण—मई ९, ११, १२, १३, १४, १५ एवं २० मई के लगभग महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, जम्मू-कश्मीर, यू.पी. के कुछ भाग, उ.खण्ड, बिहार, हि.प्र. में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं। १५ मई के लगभग आंधी तूफान की सम्भावना है।

कुण्डली सूर्योदय (२२ मई)

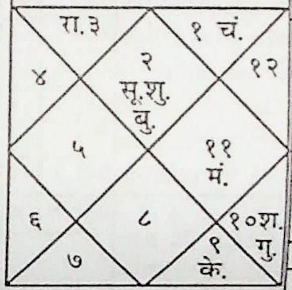

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	०	१०	१	९	१	९	२	८
७	२८	११	२५	३	२६	७	६	६
१४	५५	५१	२६	१	११	४३	३५	३५
२	३२	४३	२८	२	११	३०	१५	१५
५७	७३७	४०	१०४	१	२१	१	३	३
४३	१२	३१	३६	३०	५२	६	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(२३ मई से ५ जून, सन् २०२० ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

३१ मई को शु. पश्चिम में लुप्त हो जायेगा। प्रातः मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा श. गु. इससे पश्चिम की ओर होंगे। सायं बु. को पश्चिम क्षितिज में देखें।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. मई	श. ज्येष्ठ	मु. रमजान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	११	१	श.	४७	४	रोहि.	५८	२९	अ.	२	४५	किं.	१५	३७	१०	२३	२	२९	वृष			५	२७	११	११	१	८	११	४५	
३४	२२	२	र.	४८	५४	मृग.	६०	०	सु.	२	२१	बा.	१७	५९	११	२४	३	३०	मिथुन	३०	१६	५	२७	११	१२	१	९	९	२६	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य रोहि. में ५२/४५, बुध मिथुन में ४६/१८,
३४	२५	३	चं.	४९	३९	मृग.	१	४५	धृ.	१	७	तै.	१९	१६	१२	२५	४	श.१	मिथुन			५	२७	११	१२	१	१०	७	६	रम्भा तृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती (राज.),शव्वाल मु. प्रारम्भ, **शुक्र अस्त ३१ मई**
									शू.	५९	३																			
३४	२७	४	मं.	४९	१७	आर्द्रा	३	५८	गं.	५६	५	व.	११	२८	१३	२६	५	२	कर्क	४९	५४	५	२६	११	१३	१	११	४	४४	भ. ११/२८ से ४९/१७ तक, बलिदानदिन श्री गुरु अर्जुन देव जी,
३४	२९	५	बु.	४७	४५	पुन.	५	४	वृ.	५२	१२	ब.	१८	१	१४	२७	६	३	कर्क			५	२६	११	१४	१	१२	२	२१	
३४	३२	६	गु.	४५	५	पुष्य	५	१	ध्रु.	४७	२४	कौ.	१६	२५	१५	२८	७	४	कर्क			५	२५	११	१४	१	१२	५९	५७	वक्री शुक्र रोहि. में १७/४५, विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य(A)
३४	३४	७	शु.	४१	१५	आश्ले.	३	५१	व्या.	४१	४०	ग.	१३	१०	१६	२९	८	५	सिंह	३	५१	५	२५	११	१५	१	१३	५७	३१	भ. ४१/१५ बाद, बुध आर्द्रा में २१/४२,
३४	३६	८	श.	३६	२२	मघा	१	३३	ह.	३५	४	वि.	८	४९	१७	३०	९	६	सिंह			५	२५	११	१५	१	१४	५५	३	भ. ८/४९ तक, नेप्च्यून पू.भा. ३ में ८/७,
						पू.फा.	५८	१३																						
३४	३८	९	र.	३०	३१	उ.फा.	५४	०	व.	२७	४१	बा.	३	२६	१८	३१	१०	७	कन्या	१२	१५	५	२५	११	१६	१	१५	५२	३५	शुक्र पश्चिम में अस्त ११ घं. १६ मि.,
३४	४०	१०	चं.	२३	५३	हस्त	४९	६	सि.	१९	३९	ग.	२३	५३	१९	जू.१	११	८	कन्या			५	२४	११	१६	१	१६	५०	५	भ. ५०/१८ बाद, श्रीगंगा दशहरा, जून प्रारम्भ,
३४	४२	११	मं.	१६	४१	चित्रा	४३	४५	व्य.	११	८	वि.	१६	४१	२०	२	१२	९	तुला	१६	२६	५	२४	११	१७	१	१७	४७	३४	भ. १६/४१ तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.),
३४	४४	१२	बु.	९	१३	स्वाती	३८	१७	व.	२	२१	बा.	९	१३	२१	३	१३	१०	तुला			५	२४	११	१७	१	१८	४५	१	मंगल पू.भा. में १०/३७, चम्पा द्वादशी, प्रदोषव्रत,
									प.	५३	३४																			
३४	४५	१३	गु.	१	४५	विशा.	३३	१	शि.	४५	१	तै.	१	४५	२२	४	१४	११	वृश्चिक	११	१६	५	२४	११	१८	१	१९	४२	२७	भ. ५४/४० बाद,
अवम		१४	गु.	५४	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३४	४७	१५	शु.	४८	१६	अनु.	२८	१८	सि.	३७	१	वि.	२१	२८	२३	५	१५	१२	वृश्चिक			५	२४	११	१८	१	२०	३९	५३	भ. २१/२८ तक, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष), (B)

(A) षष्ठी, शुक्र-वार्धाक्य प्रारम्भ ११ घं. १६ मि., (B) श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१०	२	९	१	९	२	८
१४	१३	१७	७	२	२२	७	६	६
५५	१	१३	३०	४३	२१	३२	९	९
४	५	५३	४७	४८	५९	७	४९	४९
५७	८४७	३१	७५	२	३५	१	३	३
३१	१३	५६	४८	५८	३५	५०	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	४	४	१	२	४	४	४	२
रोहि.	मघा	शत.	आर्द्रा	उ.षा.	रोहि.	उ.षा.	मृग.	मूल

कुण्डली सूर्योदय (३० मई)

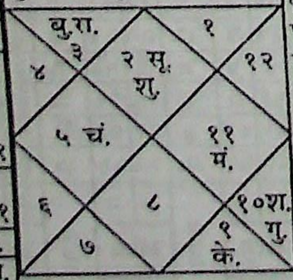

लोकभविष्य—इस पक्ष में सूर्य-शुक्र पर शनियुत नीच गुरु की दृष्टि है एवं प्रतिपदा शनिवारी होने से कहीं दुर्भिक्ष, कहीं दक्षिण-पश्चिम भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप, कहीं मुस्लिम देश में सत्ता-हस्तान्तरण हो—

"ज्येष्ठ-शुक्ल-प्रतिपदि यदि स्यान्मन्दवासरः।
छत्रभंगं प्रजापीड़ां दुर्भिक्षं वा समादिशेत्॥"

शनि-राहु का षडष्टक कहीं वायुवेग से हानि करे एवं खड़ी फसलों की हानि होने से महंगाई से जनता परेशान रहे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२४ मई के लगभग तिल, तेल, अलसी, एरण्ड, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, मिर्च, गुड़, सोना, चांदी तेज रहें। २८ मई को बाजार नीचे गिर सकते हैं। पक्षान्त में बाजार कमजोर ही रहें।

आकाशलक्षण—मई २४, २५, २८, २९, जून १ एवं ४ जून को उ.खण्ड, हि.प्र., जम्मू-कश्मीर, यू.पी. एवं उ.भारत के कुछ भागों में वायुवेग के साथ वर्षा हो। कहीं आकाशीय बिजली गिरने व पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन आदि से हानि के योग भी हैं।

कुण्डली सूर्योदय (५ जून)

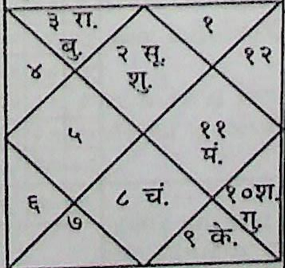

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१०	२	९	१	९	२	८
२०	९	२१	१४	२	१८	७	५	५
३९	५५	१२	१३	२३	३९	११	५०	५०
५२	३२	१६	७	२१	४४	५०	४४	४४
५७	८६१	३९	५४	४	३७	२	३	३
२५	१३	२६	२०	१	२३	२१	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
४	४	१	३	२	३	४	४	२
रोहि.	अनु.	पू.भा.	आर्द्रा	उ.षा.	रोहि.	उ.षा.	मृग.	मूल

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(६ से २१ जून, सन् २०२० ई.)
उत्तर-दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म-वर्षाऋतु।

८ जून को शु. पूर्व में उदित हो जायेगा। प्रातः मं. यम्योत्तरवृत्त में और श. गु. इससे पश्चिम की ओर दिखाई देंगे। सायं बु. पश्चिम-क्षितिजासन्न होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. ग्रव्वाल	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४८	१	श.	४२	५३	ज्ये.	२४	३१	सा.	२९	४८	बा.	१५	३४	२४	६	१६	१३	धनु	२४	३१	५	२४	१९	१९	१	२१	३७	१७	
३४	५०	२	र.	३८	५०	मूल	२१	५७	शु.	२३	३७	तै.	१०	५१	२५	७	१७	१४	धनु			५	२३	१९	१९	१	२२	३४	४०	सूर्य मृग. में ४७/४३,
३४	५१	३	चं.	३६	२२	पू.षा.	२०	५३	शु.	१८	४०	व.	७	३६	२६	८	१८	१५	मकर	३५	५३	५	२३	१९	२०	१	२३	३२	३	भ. ७/३६ से ३६/२२ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (A)
३४	५२	४	मं.	३५	३९	उ.षा.	२१	३१	ब्र.	१५	६	ब.	६	१	२७	९	१९	१६	मकर			५	२३	१९	२०	१	२४	२९	२५	शुक्र उदित ८ जून
३४	५३	५	बु.	३६	४३	श्रवण	२३	५४	ऐं.	१२	५७	कौ.	६	११	२८	१०	२०	१७	कुम्भ	५५	४५	५	२३	१९	२१	१	२५	२६	४६	पंचक प्रारम्भ ५५/४५,
३४	५४	६	गु.	३९	२९	धनि.	२७	५९	वै.	१२	११	ग.	६	३६	२९	११	२१	१८	कुम्भ			५	२३	१९	२१	१	२६	२४	६	भ. ३९/३० बाद, शुक्र-बाल्य समाप्त ५ घं. २३ मि.,
३४	५५	७	शु.	४३	४२	शत.	३३	३२	वि.	१२	३८	वि.	११	३५	३०	१२	२२	१९	कुम्भ			५	२३	१९	२१	१	२७	२१	२६	भ. ११/३५ तक,
३४	५६	८	श.	४८	५९	पू.भा.	४०	१०	प्री.	१४	५	बा.	१६	२०	३१	१३	२३	२०	मीन	२३	२७	५	२३	१९	२२	१	२८	१८	४६	
३४	५७	९	र.	५४	५०	उ.भा.	४७	२४	आ.	१६	९	तै.	२१	५४	आ.१	१४	२४	२१	मीन			५	२३	१९	२२	१	२९	१६	५	सं. सूर्य मिथुन में ४६/१५, मु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न (B)
३४	५७	१०	चं.	६०	०	रेव.	५४	४४	सौ.	१८	३०	व.	२७	४६	२	१५	२५	२२	मेष	५४	४४	५	२३	१९	२२	२	०	१३	२४	भ. २७/४६ बाद, पंचक समाप्त ५४/४४,
३४	५८	१०	मं.	०	४२	अश्वि.	६०	०	शो.	२०	४३	वि.	०	४२	३	१६	२६	२३	मेष			५	२४	१९	२३	२	१	१०	४२	भ. ०/४२ तक,
३४	५८	११	बु.	६	६	अश्वि.	१	३९	अ.	२२	२९	बा.	६	६	४	१७	२७	२४	मेष			५	२४	१९	२३	२	२	८	१	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	५९	१२	गु.	१०	३९	भर.	७	४६	सु.	२३	३१	तै.	१०	३९	५	१८	२८	२५	वृष	२४	८	५	२४	१९	२३	२	३	५	१८	मंगल मीन में ३७/३, बुध वक्री १२/४०, प्रदोषव्रत,
३४	५९	१३	शु.	१४	३	कृत्ति.	१२	४७	धृ.	२३	३८	व.	१४	३	६	१९	२९	२६	वृष			५	२४	१९	२४	२	४	२	३६	भ. १४/३ से ४५/७ तक, वक्री शनि उ.षा. ३ में ०/१५,
३४	५९	१४	श.	१६	१०	रोहि.	१६	३३	शू.	२२	४५	श.	१६	१०	७	२०	३०	२७	मिथुन	४७	५७	५	२४	१९	२४	२	४	५९	५३	सूर्य सायन कर्क में ५४/३७, दक्षिणायन एवं वर्षा ऋतु (C)
३४	५९	३०	र.	१६	५७	मृग.	१९	१	गं.	२०	४९	ना.	१६	५७	८	२१	३१	२८	मिथुन			५	२४	१९	२४	२	५	५७	९	सूर्य आर्द्रा में ४५/७, सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य) (चूड़ामणि- (D)

(A) शुक्र पूर्व में उदित ५ घं. २३ मि., (B) बाद, बुध पुन. में ९/५१, (C) प्रारम्भ, ग्रहणवेध, (D) योग सूर्यग्रहण) (देखें पृ. 17),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१०	२	९	१	९	२	८
२८	२५	२६	१९	१	१४	६	५	५
१८	२२	२४	३५	४६	८	५८	२५	२५
४५	२३	५८	५९	४६	३०	५२	१७	१७
५७	७१७	३८	२१	५	२७	२	३	३
२०	२२	३७	२०	१६	४	५८	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१३ जून)

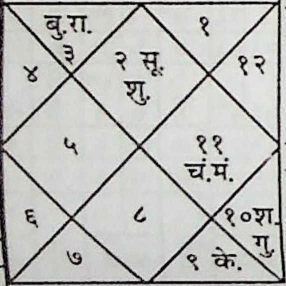

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच शनिवार एवं पांच रविवार हैं। शनि-मंगल दोनों जलराशि में होने से कहीं जलप्रलय से जनधनहानि होगी। कहीं दुर्भिक्ष, अग्निकाण्ड से विनाश के योग हैं। कहीं भूकम्प से भी हानि सम्भव है–

"शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी।
ईशानदेश-भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥"

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जूनमध्य के बाद प्राकृतिक आपदा, वर्षा, बाढ़, तूफान आदि से भारी हानि सम्भव है, सरकार को सावधान रहना होगा।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—७ से ९ जून के मध्य रुई, सूत, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी, घी, तेल, तिलहन में तेजी का उछला आये। १० से १३ जून तक वायदा बाजार मन्दे रहें, सावधान। लेकिन हाजर बाजार ऊपर-नीचे रहें। १४ से २० जून तक सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, घी एवं अनाजों में अच्छी तेजी से लाभ मिले।

आकाशलक्षण—जून ७, १०, १४ से २१ जून के लगभग उ.खण्ड, हि.प्र., उ.प्रदेश, जम्मू-कश्मीर एवं उ.भारत के कुछ भागों में बादलचाल एवं वायुवेग के साथ वर्षा हो। महाराष्ट्र, आसाम, मेघालय में भी जोरदार वर्षा हो। गोचर ग्रहस्थिति इस चान्द्रमास में कहीं आकाशीय बिजली एवं कहीं

कुण्डली सूर्योदय (२१ जून)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २१ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	११	२	९	१	९	२	८
५	२	१	२०	१	११	६	४	४
५७	३७	३०	२०	०	३३	३३	५९	५९
९	३८	५	११	४३	२०	१०	५१	५१
५७	७७१	३७	१४	६	८	३	३	३
१६	०	३०	२०	२०	५५	३०	११	११
		मा.	व.	व.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७															तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२२ जून से ५ जुलाई, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. आषाढ़	अं. जून	श. आषाढ़	मु. जिल्काद				सूर्योदय		सूर्यास्त						पक्षारम्भ में ही बु. पश्चिम में अदृश्य हो जायेगा। प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में, मं. यम्योत्तरवृत्त में और श. गु. पश्चिमकपाल में होंगे। ६ जुलाई को प्रातः चं. गु. श. पश्चिम में परस्पर समीपस्थ होंगे।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५९	१	चं.	१६	२७	आर्द्रा	२०	१५	वृ.	१७	५२	व.	१६	२७	९	२२	१	२९	मिथुन			५	२५	११	२४	२	६	५४	२६	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, वक्री बुध आर्द्रा में ११/११, बुध (A)
३४	५९	२	मं.	१४	४६	पुन.	२०	११	ध्रु.	१३	५९	कौ.	१४	४६	१०	२३	२	जि.१	कर्क	५	२३	५	२५	११	२४	२	७	५१	४१	मंगल उ.भा. में ५६/४९, नेप्च्यून वक्री ११/४२, (B)
३४	५८	३	बु.	१२	३	पुष्य	११	२१	व्या.	९	१६	ग.	१२	३	११	२४	३	२	कर्क			५	२५	११	२५	२	८	४८	५६	भ. ४०/१५ बाद, ग्रहणवेध,
३४	५८	४	गु.	८	२५	आश्ले.	१७	३२	ह.	३	४९	वि.	८	२५	१२	२५	४	३	सिंह	१७	३२	५	२५	११	२५	२	९	४६	११	भ. ८/२५ तक, शुक्र मार्गी १७/१२,
									व.	५७	४६																			
३४	५८	५	शु.	४	४	मघा	१४	५९	सि.	५१	१०	बा.	४	४	१३	२६	५	४	सिंह			५	२६	११	२५	२	१०	४३	२५	कुमार षष्ठी,
अवम		६	शु.	५९	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
३४	५७	७	श.	५३	३९	पू.फा.	११	५१	व्य.	४४	११	ग.	२६	२२	१४	२७	६	५	कन्या	२६	०	५	२६	११	२५	२	११	४०	३८	भ. ५३/३९ बाद, विवस्वत सप्तमी,
३४	५६	८	र.	४७	५३	उ.फा.	८	१८	व.	३६	५५	वि.	२०	४६	१५	२८	७	६	कन्या			५	२६	११	२५	२	१२	३७	५१	भ. २०/४६ तक, वक्री प्लूटो उ.षा. १ धनु में ३१/१५,
३४	५५	९	चं.	४१	५६	हस्त	४	२८	प.	२९	२८	बा.	१४	५४	१६	२९	८	७	तुला	३२	२८	५	२७	११	२५	२	१३	३५	४	वक्री गुरु उ.षा. १ धनु में ५९/५५, आषाढ़ गुप्त नवरात्र समाप्त,
३४	५५	१०	मं.	३५	५६	चित्रा	०	२९	शि.	२१	५८	तै.	८	५६	१७	३०	९	८	तुला			५	२७	११	२५	२	१४	३२	१६	नवरात्र-पारणा,
						स्वाती	५६	३१																						
३४	५४	११	बु.	३०	५	विशा.	५२	४५	सि.	१४	३२	व.	३	०	१८	जु.१	१०	९	वृश्चिक	३८	३९	५	२८	११	२५	२	१५	२९	२८	भ. ३/० से ३०/५ तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), (C)
३४	५३	१२	गु.	२४	३२	अनु.	४९	२३	सा.	७	११	बा.	२४	३२	१९	२	११	१०	वृश्चिक			५	२८	११	२५	२	१६	२६	३९	प्रदोष व्रत,
३४	५१	१३	शु.	१९	३१	ज्ये.	४६	३८	शु.	०	२९	तै.	१९	३१	२०	३	१२	११	धनु	४६	३८	५	२८	११	२५	२	१७	२३	५०	
									शु.	५४	१०																			
३४	५०	१४	श.	१५	१३	मूल	४४	४२	ब्र.	४८	३४	व.	१५	१३	२१	४	१३	१२	धनु			५	२९	११	२५	२	१८	२१	१	भ. १५/१३ से ४३/३३ तक, श्रीशिव-शयनोत्सव, (D)
३४	४९	१५	र.	११	५२	पू.षा.	४३	५१	ऐं.	४३	५१	ब.	११	५२	२२	५	१४	१३	मकर	५८	४९	५	२९	११	२५	२	१९	१८	१२	सूर्य पुन. में ४३/५५, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा (E)

(A) पश्चिम में अस्त १९ घं. २४ मि., आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, शक आषाढ़ प्रारम्भ, ग्रहणवेध, (B) रथयात्रा (पुरी), श्रीजगदीश रथोत्सव, ग्रहणवेध, जिल्काद मु. प्रारम्भ, (C) श्रीविष्णु-शयनोत्सव, जुलाई प्रारम्भ, (D) श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, (E) (व्यास पूजा), चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २८ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	११	२	९	१	९	२	८
१२	८	५	१७	०	११	६	४	४
३७	४	४९	२७	१४	२०	७	३७	३७
५९	८	४	१५	८	११	२७	३५	३५
५७	८५४	३६	३४	७	७	३	३	३
१३	१०	१८	४५	२	११	५३	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	४	१	४	२	१	३	४	२
आर्द्रा	उ.फा.	उ.भा.	आर्द्रा	उ.षा.	रोहि.	उ.षा.	मृग.	मूल

कुण्डली सूर्योदय (२८ जून)

लोकभविष्य—प्राकृतिक आपदा-नियन्त्रणार्थ सरकार को भारी प्रयत्न करने होंगे। शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि होने से कश्मीर, पाक, चीन आदि से सीमाप्रान्तों पर सैन्यबल को तैनात करना अनिवार्य होगा। धनु राशिस्थ गुरु कहीं खड़ी फसलों को हानि करे एवं महंगाई से जनता परेशान रहे—

"धनुराशिगते जीवे गोधूमादि-महर्घता।
वर्षाकाले भवेत्तत्र समर्घं च तिलं गुड़म्॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२४ से ३० जुलाई तक चीनी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, अनाज, तेल, तिलहन व सोना, चांदी आदि धातु मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेज रहें। आगे ५ जुलाई को बेचने पर उत्तम लाभ मिलेगा।

कुण्डली सूर्योदय (५ जुला.)

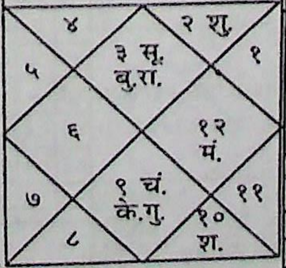

आकाशलक्षण—जून २४, २५, ३० एवं १ से ५ जुलाई तक कहीं भयंकर बाढ़, तूफान रहे, कुछ प्रान्तों में भयंकर सूखा रहने के योग भी हैं। लेकिन कश्मीर, चण्डीगढ़, दिल्ली, उड़ीसा, असम, केरल, हि.प्र. एवं उ.भारत में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	११	२	८	१	९	२	८
१९	१६	९	१३	२९	१२	५	४	४
१८	४८	५९	२४	२३	५३	३९	१५	१५
११	५७	१३	२१	२०	३१	११	११	११
५७	८०७	३४	२८	७	२१	४	३	३
११	७	५६	५८	३१	०	१०	११	११
		मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४	२	२	३	१	१	३	४	२
आर्द्रा	पू.षा.	उ.भा.	आर्द्रा	उ.षा.	रोहि.	उ.षा.	मृग.	मूल

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, श्रावण कृष्ण पक्ष ८																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(६ से २० जुलाई, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. आषाढ़	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. ज़िल्काद				सूर्योदय		सूर्यास्त						१० जुलाई को बु. पूर्व में उदित होगा। प्रातः शु. पूर्व में, मं. पश्चिमकपाल में और श. पश्चिम में दिखाई देगा। गु. सायं पूर्व में उदय होकर पूरी रात दिखेगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४७	१	चं.	९	४१	उ.षा.	४४	१४	वै.	४०	९	कौ.	९	४१	२३	६	१५	१४	मकर			५	३०	१९	२५	२	२०	१५	२२	
३४	४६	२	मं.	८	५१	श्रव.	४६	३	वि.	३७	३५	ग.	८	५१	२४	७	१६	१५	मकर			५	३०	१९	२४	२	२१	१२	३३	भ. ३९/१२ बाद, अशून्य शयन व्रत,
३४	४४	३	बु.	९	३०	धनि.	४९	२०	प्री.	३६	१३	वि.	९	३०	२५	८	१७	१६	कुम्भ	१७	३०	५	३१	१९	२४	२	२२	९	४४	भ. ९/३० तक, पंचक प्रारम्भ १७/३०, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
३४	४२	४	गु.	११	४०	शत.	५४	४	आ.	३६	१	बा.	११	४०	२६	९	१८	१७	कुम्भ			५	३१	१९	२४	२	२३	६	५५	
३४	४०	५	शु.	१५	१६	पू.भा.	६०	०	सौ.	३६	५२	तै.	१५	१६	२७	१०	१९	१८	मीन	४३	२७	५	३२	१९	२४	२	२४	४	६	बुध पूर्व में उदित ५ घं. ३२ मि.,
३४	३९	६	श.	२०	३	पू.भा.	०	२	शो.	३८	३३	व.	२०	३	२८	११	२०	१९	मीन			५	३२	१९	२४	२	२५	१	१८	भ. २०/३ से ५२/५१ तक,
३४	३७	७	र.	२५	३८	उ.भा.	६	५३	अ.	४०	४४	ब.	२५	३८	२९	१२	२१	२०	मीन			५	३३	१९	२३	२	२५	५८	३०	बुध मार्गी २१/३३,
३४	३४	८	चं.	३१	३१	रेव.	१४	१२	सु.	४३	३	कौ.	३१	३१	३०	१३	२२	२१	मेष	१४	१२	५	३३	१९	२३	२	२६	५५	४३	पंचक समाप्त १४/१२,
३४	३२	९	मं.	३७	७	अश्वि.	२१	२१	धृ.	४५	४	तै.	४	१९	३१	१४	२३	२२	मेष			५	३४	१९	२३	२	२७	५२	५७	
३४	३०	१०	बु.	४१	५४	भर.	२७	५२	शू.	४६	२५	व.	९	३१	३२	१५	२४	२३	वृष	४४	२१	५	३४	१९	२२	२	२८	५०	११	भ. ९/३१ से ४१/५४ तक,
३४	२८	११	गु.	४५	२६	कृत्ति.	३३	१४	गं.	४६	४७	ब.	१३	४०	श्रा.१	१६	२५	२४	वृष			५	३५	१९	२२	२	२९	४७	२५	सं. सूर्य कर्क में १३/०, मु. ३०, पुण्यकाल १७ घं. ११ मि. (A)
३४	२५	१२	शु.	४७	२५	रोहि.	३७	१०	वृ.	४५	५६	कौ.	१६	२५	२	१७	२६	२५	वृष			५	३५	१९	२१	३	०	४४	४०	वक्री नेप्च्यून पू.भा. २ में २०/५८,
३४	२३	१३	श.	४७	४४	मृग.	३९	२८	ध्रु.	४३	४६	ग.	१७	३४	३	१८	२७	२६	मिथुन	८	३०	५	३६	१९	२१	३	१	४१	५६	भ. ४७/४४ बाद, शनिप्रदोष व्रत,
३४	२०	१४	र.	४६	२४	आर्द्रा.	४०	८	व्या.	४०	१७	वि.	१७	४	४	१९	२८	२७	मिथुन			५	३६	१९	२१	३	२	३९	१२	भ. १७/४ तक, सूर्य पुष्य में ४२/३०, श्रावण-शिवरात्रि,
३४	१८	३०	चं.	४३	३४	पुन.	३९	१८	ह.	३५	३५	च.	१४	५९	५	२०	२९	२८	कर्क	२४	३७	५	३७	१९	२०	३	३	३६	२९	सोमवती अमा, हरियाली अमा,

(A) तक, मंगल रेव. में ५४/५१, कामिका एकादशी व्रत (स.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	११	२	८	१	९	२	८
२६	२७	१४	११	२८	१६	५	३	३
५५	९	३२	२२	२२	२७	५	४९	४९
४२	५९	१६	१८	१५	६	९	५३	५३
५७	७१३	३३	६	७	३३	४	३	३
१४	२०	१	३	४४	२१	२३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१३ जुला.)

लोकभविष्य—श्रावण कृ. नवमी को क्रूर वार मंगल होने से कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से कार्तिक में शोक व्याप्त हो—

"श्रावणे नवमीयुक्तो भौमः सन्तापकारकः।
छत्रभंगं विजानीयादाश्विनान्ते न संशयः॥"

कहीं उग्रवाद से जनधनहानि हो।

शनि की मंगल पर एवं राहु पर मंगल की दृष्टि भी उग्रवादजन्य विस्फोट आदि से कहीं अशान्ति एवं जनधनहानि का संकेत देती है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—९ से १५ जुलाई तक रुई में मन्दी के बाद तेजी हो। घी, तिल, लालमिर्च, गेहूं, चना, सोना, चांदी तेज रहें। १६ से १८ जुलाई तक अनाज, घी, तेल, तिलहन, जौ, ज्वार, बाजरा, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी बने। पक्षान्त में बाजार अस्थिर रहें।

कुण्डली सूर्योदय (२० जुला.)

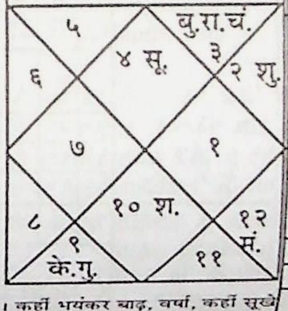

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	११	२	८	१	९	२	८
३	२४	१८	१३	२७	२०	४	३	३
३६	२२	१७	५८	२८	४६	३४	२७	२७
२८	३९	१७	५६	१३	६	१४	३७	३७
५७	८१७	३०	४४	७	४१	४	३	३
१७	२३	५५	१५	३९	२६	२६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण—जुलाई ९, १४ से २० जुलाई के मध्य की ग्रहस्थिति जल-वायुविचार से चिन्तनीय है। कहीं भयंकर बाढ़, वर्षा, कहीं सूखे व दुर्भिक्ष से परेशानी रहे। कुछ प्रान्त भयंकर बाढ़ की चपेट में रहें, कहीं प्राकृतिक प्रकोप से विनाश का दृश्य रहे—

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, श्रावण शुक्ल पक्ष ९																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२१ जुलाई से ३ अगस्त, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. श्रावण	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. ज़िल्काद				सूर्योदय		सूर्यास्त						प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में और इससे ऊपर शु. होगा। इस समय मं. यम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और श. पश्चिमक्षितिक्ष के पास दिखेगा। गु. सायं पूर्व में होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	१५	१	मं.	३९	२७	पुष्य	३७	११	व.	२९	४९	किं.	११	३१		६	२१	३०	२९	कर्क			५	३८	११	२०	३	४	३३	४६	
३४	१२	२	बु.	३४	२०	आश्ले.	३४	२	सि.	२३	११	बा.	६	५३		७	२२	३१	३०	सिंह	३४	२	५	३८	११	११	३	५	३१	४	चन्द्रदर्शन, मु. १५, राहु मृग. ३, केतु मूल १ में २३/३०,(A)
३४	९	३	गु.	२८	३१	मघा	३०	१२	व्य.	१५	५५	तै.	१	२५		८	२३	श्रा.१	ज़ि.१	सिंह			५	३९	११	११	३	६	२८	२२	भ. ५५/२५ बाद, शुक्र मृग. में ३५/५७, मधुस्त्रवा तृतीया (B)
३४	६	४	शु.	२२	१७	पू.फा.	२५	५७	व.	८	१६	वि.	२२	१७		९	२४	२	२	कन्या	३९	५१	५	३९	११	१८	३	७	२५	४१	भ. २२/१७ तक,
३४	४	५	श.	१५	५५	उ.फा.	२१	३५	प.	०	२८	बा.	१५	५५		१०	२५	३	३	कन्या			५	४०	११	१७	३	८	२३	०	नागपंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती, ऋक् उपाकर्म (देखें पृ.13),
									शि.	५२	४०																				
३४	०	६	र.	९	३९	हस्त	१७	२०	सि.	४५	४	तै.	९	३९		११	२६	४	४	तुला	४५	२०	५	४१	११	१७	३	९	२०	११	बुध पुन. में १२/१५, वक्री गुरु पू.षा. ४ में २३/५८,
३३	५७	७	चं.	३	४२	चित्रा	१३	२५	सा.	३७	४८	व.	३	४२		१२	२७	५	५	तुला			५	४१	११	१६	३	१०	१७	३९	भ. ३/४२ से ३०/५८ तक, गोस्वामी श्री तुलसीदास जयन्ती, (C)
अवम		८	चं.	५८	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
३३	५४	९	मं.	५३	१३	स्वाती	९	५८	शू.	३०	५८	बा.	२५	४२		१३	२८	६	६	वृश्चिक	५२	४६	५	४२	११	१६	३	११	१५	०	
३३	५१	१०	बु.	४८	५४	विशा.	७	५	शु.	२४	३७	तै.	२१	४		१४	२९	७	७	वृश्चिक			५	४२	११	१५	३	१२	१२	२०	
३३	४८	११	गु.	४५	१७	अनु.	४	५२	ब्र.	१८	५०	व.	१७	५		१५	३०	८	८	वृश्चिक			५	४३	११	१४	३	१३	९	४२	भ. १७/५ से ४५/१७ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३३	४४	१२	शु.	४२	२६	ज्ये.	३	२४	ऐं.	१३	३९	ब.	१३	५१		१६	३१	९	९	धनु	३	२४	५	४४	११	१३	३	१४	७	३	शुक्र मिथुन में ५८/३३,
३३	४१	१३	श.	४०	२५	मूल	२	४१	वै.	९	६	कौ.	११	२५		१७	अ.१	१०	१०	धनु			५	४४	११	१३	३	१५	४	२६	बुध कर्क में ५४/२५, शनिप्रदोष व्रत, अगस्त प्रारम्भ,
३३	३८	१४	र.	३९	२०	पू.षा.	२	४९	वि.	५	१५	ग.	९	५२		१८	२	११	११	मकर	१७	५८	५	४५	११	१२	३	१६	१	४९	भ. ३९/२० बाद, सूर्य आश्ले. में ३९/१८,
३३	३४	१५	चं.	३९	१७	उ.षा.	३	५४	प्री.	२	१३	वि.	९	१८		१९	३	१२	१२	मकर			५	४६	११	११	३	१६	५९	१३	भ. ९/१८ तक, बुध पुष्य में ४६/३९, श्रावणी पूर्णिमा,(D)
									आ.	५९	५९																				

(A) सूर्य सायन सिंह में २१/१५, (B) (संधारा तीज), शक श्रावण प्रारम्भ, जिल्हिज्ज मु. प्रारम्भ, (C) श्रीदुर्गाष्टमी, (D) रक्षाबन्धन (राखी) (९ घं. २८ मि. बाद), श्री अमरनाथ यात्रा (जम्मू-कश्मीर), श्रीसत्यनारायण व्रत, शुक्ल-कृष्ण यजु उपाकर्म,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	११	२	८	१	९	२	८
१०	३	२१	२०	२६	२५	४	३	३
१७	२२	४६	५९	३५	५५	३	५	५
३९	३०	२३	२९	३९	३०	१३	२२	२२
५७	८५०	२८	८०	७	४७	४	३	३
२०	७	२५	२०	१७	३५	२३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२७ जुला.)

लोकभविष्य—इस (श्रावण शुक्ल) पक्ष में अष्टमी तिथि का क्षय होने से कार्तिक मास में किसी विशिष्ट नेता के निधन से शोक व्याप्त हो—

"श्रावणे शुक्लपक्षे च क्षीणाकापि तिथिर्भवेत्।
तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगस्तदा भवेत्॥"

इस पक्ष में सूर्य-शनि का एवं अग. के प्रारम्भ में गुरु-शुक्र का समसप्तक योग कुछ प्रान्तों में दुर्भिक्ष किंवा पेयजल-समस्या से जनसन्तापकारक है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२१ से २५ जुलाई तक घी, तेल, सोना, चांदी में जोरदार तेजी रहे। २६ जुलाई को बाजार डगमगा सकते हैं। १, २ अग. को रुई, कपास, सूत, बारदाना, तिलहन, घी, चीनी, ग्वार, गेहूं, जौ, चना में घटाबढ़ी के बाद जोरदार तेजी बनेगी।

आकाशलक्षण—जुलाई २१, २३, २६ एवं अगस्त १ से ३ के लगभग उ.भारत के चण्डीगढ़, दिल्ली एवं पंजाब आदि क्षेत्रों में कहीं अत्यधिक वर्षा, कहीं सूखा की स्थिति बने। कश्मीर, उ.खण्ड, बिहार, आसाम, केरल, बंगाल, महाराष्ट्र, यू.पी., हि.प्र. में बाढ़, वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (३ अग.)

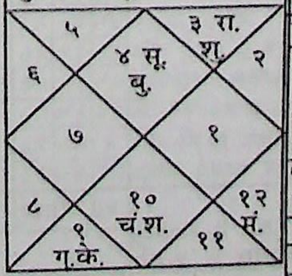

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	११	३	८	२	९	२	८
१६	९	२४	१	२५	१	३	२	२
५९	१	५६	५४	४६	४३	३२	४३	४३
१२	१४	५५	४	२६	३७	५३	६	६
५७	७७३	२५	१०८	६	५२	४	३	३
२४	२३	३३	५५	३९	२३	१४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०

(४ से १९ अगस्त, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

५ अग. को बु. पूर्व में लुप्त हो जायेगा। प्रातः शु. पूर्व में, मं. यम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और श. पश्चिम-क्षितिज में डूबने को होगा। सायं गु. को पूर्व में देखें।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. ज़िल्हिज्जा	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३३	३१	१	मं.	४०	२२	श्रव.	६	१	सौ.	५८	४१	बा.	९	४९	२०	४	१३	१३	कुम्भ	३७	३१	५	४६	१९	१०	३	१७	५६	३७	पंचक प्रारम्भ ३७/३१,
३३	२७	२	बु.	४२	३९	धनि.	९	१८	शो.	५८	१९	तै.	११	३१	२१	५	१४	१४	कुम्भ			५	४७	१९	१०	३	१८	५४	३	बुध पूर्व में अस्त ५ घं. ४७ मि.,
३३	२३	३	गु.	४६	९	शत.	१३	४६	अ.	५८	५३	व.	१४	२४	२२	६	१५	१५	कुम्भ			५	४७	१९	९	३	१९	५१	३०	भ. १४/२४ से ४६/९ तक, वक्री शनि उ.पा. २ में ३/२१,
३३	२०	४	शु.	५०	४६	पू.भा.	१९	२२	सु.	६०	०	ब.	१८	२८	२३	७	१६	१६	मीन	२	५३	५	४८	१९	८	३	२०	४८	५७	श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ. 11),(A)
३३	१६	५	श.	५६	१५	उ.भा.	२५	५७	सु.	०	१७	कौ.	२३	३१	२४	८	१७	१७	मीन			५	४९	१९	७	३	२१	४६	२६	शुक्र आर्द्रा में ३०/२२,
३३	१२	६	र.	६०	०	रेव.	३३	१३	धृ.	२	१८	ग.	२९	१४	२५	९	१८	१८	मेष	३३	१३	५	४९	१९	६	३	२२	४३	५६	पंचक समाप्त ३३/१३,
३३	८	६	चं.	२	१४	अश्वि.	४०	३८	शू.	४	३९	व.	२	१४	२६	१०	१९	१९	मेष			५	५०	१९	५	३	२३	४१	२८	भ. २/१४ से ३५/१३ तक, बुध आश्ले. में ३४/५८,
३३	४	७	मं.	८	११	भर.	४७	४५	गं.	६	५९	ब.	८	११	२७	११	२०	२०	मेष			५	५०	१९	४	३	२४	३९	१	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11),
३३	१	८	बु.	१३	३४	कृत्ति.	५३	५७	वृ.	८	५३	कौ.	१३	३४	२८	१२	२१	२१	वृष	४	२३	५	५१	१९	३	३	२५	३६	३५	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.), गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव),
३२	५७	९	गु.	१७	४७	रोहि.	५८	४५	ध्रु.	९	५५	ग.	१७	४७	२९	१३	२२	२२	वृष			५	५२	१९	२	३	२६	३४	११	भ. ४९/४ बाद, श्रीगुग्गा नवमी,
३२	५३	१०	शु.	२०	२५	मृग.	६०	०	व्या.	९	४४	वि.	२०	२५	३०	१४	२३	२३	मिथुन	३०	३१	५	५२	१९	१	३	२७	३१	४८	भ. २०/२५ तक,
३२	४९	११	श.	२१	८	मृग.	१	४८	ह.	८	७	बा.	२१	८	३१	१५	२४	२४	मिथुन			५	५३	१९	०	३	२८	२९	२७	यूरेनस वक्री ३५/१३, अजा एकादशी व्रत (स.), (B)
३२	४५	१२	र.	१९	५३	आर्द्रा	२	५४	व.	४	५५	तै.	१९	५३	भा.१	१६	२५	२५	कर्क	४७	२७	५	५३	१८	५९	३	२९	२७	७	सं. सूर्य मघा सिंह में ३३/१५, मु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न(C)
३२	४१	१३	चं.	१६	४३	पुन. पुष्य	२ ५९	५ ३२	सि. व्य.	० ५४	१२ १	व.	१६	४३	२	१७	२६	२६	कर्क			५	५४	१८	५८	४	०	२४	४९	भ. १६/४३ से ४४/१९ तक, बुध मघा सिंह में ६/२७,
३२	३६	१४	मं.	११	५३	आश्ले.	५५	३३	व.	४६	३८	श.	११	५३	३	१८	२७	२७	सिंह	५५	३३	५	५५	१८	५७	४	१	२२	३२	
३२	३२	३०	बु.	५	४०	मघा	५०	२९	प.	३८	१९	ना.	५	४०	४	१९	२८	२८	सिंह			५	५५	१८	५६	४	२	२०	१६	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा,

(A) बहुला चतुर्थी, (B) भारत स्वतन्त्रता दिवस, (C) बाद, मंगल अश्वि. मेष में ३१/२१, प्रदोषव्रत, पर्युषण पर्व प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १२ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	११	३	८	२	९	२	८
२५	२८	२८	११	२४	९	२	२	२
३६	५६	२९	३२	५०	५५	५६	१४	१४
३४	४१	२४	१६	३९	१२	४	२९	२९
५७	७२६	२१	१२३	५	५७	३	३	३
३६	२०	०	६	३४	९	५३	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१२ अग.)

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच मंगल एवं पांच बुधवार होने से कहीं शुभ फल अनुभव होगा, कहीं अशान्ति का वातावरण रहेगा—**"पंचभौमे महद्भयं शेषा वारा शुभावहाः।"** लेकिन वक्री शनि की सूर्य-बुध पर दृष्टि एवं शनि-शुक्र के षडष्टकयोग में कुछ प्रान्त अवर्षण के कारण दुर्भिक्षग्रस्त होंगे—

"क्रूराणां सह सौम्यैश्च यदि स्यात् समसप्तकम्।
अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोकपीड़ा महत्यपि॥"

१६ अगस्त के बाद सूर्य-बुध का वक्री शनि के साथ षडष्टक कहीं साम्प्रदायिक उपद्रव का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में अनाज, रुई, कपास, सोना, चांदी, मजीठ, दाख, छुहारा, सिक्का, ज्वार, चावल, घी, तेल, तिलहन तेज रहें, तुरन्त लाभ लें। ५ से ९ अग. के मध्य बाजार मन्दे रहें, स्टॉक करें। १० से १६ अगस्त के मध्य सभी बाजार जोरदार तेज रहें, बाद में उथलपटक रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१९ अग.)

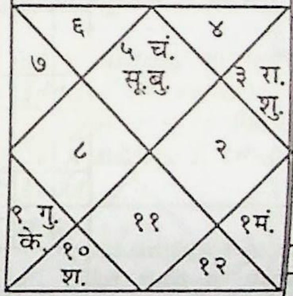

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १९ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	०	४	८	२	९	२	८
२	०	०	३	२४	१६	२	१	१
२०	४९	४३	४५	१४	४४	२९	५२	५२
१५	२८	५२	३०	४८	८	५६	१४	१४
५७	८७४	१६	११८	४	५९	३	३	३
४६	४२	४१	४२	३०	५९	३०	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण—अगस्त ४, ५, ८, ९, १०, ११, १५, १६ एवं १७ अगस्त को भारत के कुछ प्रान्त बाढ़ग्रस्त रहेंगे, कुछ प्रान्त सूखा एवं दुर्भिक्ष की चपेट में रहें। कश्मीर, उ.खण्ड, महाराष्ट्र, उ.प्र., चण्डीगढ़ एवं दिल्ली आदि में अच्छी वर्षा के योग हैं। राजस्थान, बिहार, बंगाल एवं म.प्र. के कुछ [illegible]

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२० अगस्त से २ सितम्बर, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा-शरद् ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. जिलहिज				सूर्योदय		सूर्यास्त						१ सितं. को बु. पश्चिम में उदित हो जायेगा। प्रातः शु. पूर्व में और मं. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं श. पूर्व में और गु. इससे ऊपर उठा होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	बु.	५८	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिक्षिक्षय,
३२	२८	२	गु.	५०	४३	पू.फा.	४४	४६	शि.	२१	२३	बा.	२४	३७		५	२०	२९	२९	कन्या	५८	१७	५	५६	१८	५५	४	३	१८	२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मेला श्री डेराबाबा गुसाई आणां (कुराली)पं.,
३२	२४	३	श.	४२	४६	उ.फा.	३८	५०	सि.	२०	९	तै.	१६	४४		६	२१	३०	मु.१	कन्या			५	५६	१८	५४	४	४	१५	४१	हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, श्रीवराह जयन्ती, (A)
३२	२०	४	श.	३५	१	हस्त	३३	४	सा.	१०	५८	व.	८	५३		७	२२	३१	२	कन्या			५	५७	१८	५३	४	५	१३	३७	भ. ८/५३ से ३५/१ तक, शुक्र पुन. में १३/३०, सूर्य (B)
३२	१६	५	र.	२७	४७	चित्रा	२७	५०	शु. शु.	२ ५३	७ ४९	ब.	१	२४		८	२३	भा.१	३	तुला	०	२३	५	५८	१८	५२	४	६	११	२७	बुध पू.फा. में ५५/७, ऋषि पंचमी, शक भाद्रपद प्रारम्भ, (C)
३२	११	६	चं.	२१	२२	स्वाती	२३	२४	ब्र.	४६	१६	तै.	२१	२२		९	२४	२	४	तुला			५	५८	१८	५१	४	७	९	१७	सूर्यषष्ठी व्रत,
३२	७	७	मं.	१५	५८	विशा.	१९	५९	ऐं.	३९	३५	व.	१५	५८		१०	२५	३	५	वृश्चिक	५	४४	५	५९	१८	५०	४	८	७	९	भ. १५/५८ से ४३/५१ तक, दूर्वाष्टमी, श्रीराधाष्टमी, (D)
३२	३	८	बु.	११	४०	अनु.	१७	४१	वै.	३३	५०	व.	११	४०		११	२६	४	६	वृश्चिक			५	५९	१८	४८	४	९	५	२	
३१	५८	९	गु.	८	३३	ज्ये.	१६	३२	वि.	२९	२	कौ.	८	३३		१२	२७	५	७	धनु	१६	३२	६	०	१८	४७	४	१०	२	५७	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३१	५४	१०	शु.	६	३४	मूल	१६	३१	प्री.	२५	७	ग.	६	३४		१३	२८	६	८	धनु			६	०	१८	४६	४	११	०	५३	भ. ३६/१० बाद,
३१	५०	११	श.	५	४१	पू.षा.	१७	३३	आ.	२२	४	वि.	५	४१		१४	२९	७	९	मकर	३२	५९	६	१	१८	४५	४	११	५८	५०	भ. ५/४१ तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.), श्रीवामन जयन्ती,
३१	४५	१२	र.	५	५०	उ.षा.	१९	३५	सौ.	१९	४८	बा.	५	५०		१५	३०	८	१०	मकर			६	२	१८	४४	४	१२	५६	४८	सूर्य पू.फा. में २२/४०, प्रदोषव्रत,
३१	४१	१३	चं.	६	५६	श्रव.	२२	३३	शो.	१८	१७	तै.	६	५६		१६	३१	९	११	कुम्भ	५४	२४	६	२	१८	४३	४	१३	५४	४८	पंचक प्रारम्भ ५४/२४, बुध उ.फा. में १७/५१, शुक्र (E)
३१	३६	१४	मं.	९	०	धनि.	२६	२६	अ.	१७	३१	व.	९	०		१७	सि.१	१०	१२	कुम्भ			६	३	१८	४१	४	१४	५२	४९	भ. ९/० से ४०/३३ तक, बुध पश्चिम में उदित १८ घं. ४१ मि., (F)
३१	३२	१५	बु.	१२	०	शत.	३१	१४	सु.	१७	२८	ब.	१२	०		१८	२	११	१३	कुम्भ			६	३	१८	४०	४	१५	५०	५१	बुध कन्या में १५/०, प्रतिपदा का श्राद्ध (देखें पृ. 14)

(A) मुहर्रम (हिजरी सन् १४४२) मु. प्रारम्भ, (B) सायन कन्या में ३८/१८, शरद् ऋतु प्रारम्भ, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त २१ घं. २६ मि.), साम उपाकर्म, श्रीसिद्धि विनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, (C) संवत्सरी महापर्व (जैन), (D) श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ (देखें पृ. 13), मुक्तभरण (सन्तान) सप्तमी व्रत, (E) कर्क में ५०/३, (F) श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत, पितृपक्ष (महालय) प्रारम्भ, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, पूर्णिमा का महालय श्राद्ध, (देखें पृ. 13), सितम्बर प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	०	४	८	२	९	२	८
९	१२	२	१७	२३	२३	२	१	१
५	११	२६	१०	४६	५१	६	२९	२९
२	४२	२०	४५	५१	१०	५१	५९	५९
५७	८२०	११	१०९	३	६२	३	३	३
५४	१६	४७	५२	१७	१७	२	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३ मघा	३ अनु.	१ अश्वि.	२ पू.फा.	४ पू.षा.	२ पुन.	२ उ.षा.	३ मृग.	१ मूल

कुण्डली सूर्योदय (२६ अग.)

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच मंगलवारों का विशेष फल लगभग ३१ अगस्त के बाद नेष्टफलप्रद रहेगा। इस समय शुक्र पर मंगल-शनि की दृष्टि पश्चिमी देशों के लिए अशुभ एवं किसी राजनयिक के निधन से कष्टकारक रहेगी। मन्त्रिमण्डल में कहीं कुछ परिवर्तन हो। मुस्लिम राष्ट्रविशेष में कहीं राजनैतिक उलटफेर हो।

भारत के पुराने कुछ उलझे हुए मसलात को लेकर कहीं साम्प्रदायिक तनाव भी सम्भव है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में सूत, ऊन, सरसों, तेल, घी तेज रहें। २२ अगस्त को झटके से बाजार मन्दे होकर तेज हों। २३ अगस्त को सभी धातुएं, शेयरों में जोरदार तेजी से तुरन्त लाभ लें। ३०/३१ अगस्त को दालवाना, सभी अनाज, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी तेज, चांदी मन्दी रहे। २ सितं. को बाजार तेज रहें।

आकाशलक्षण—अग. २०, २२, २३, २४, २९ से ३१ अगस्त एवं २ सितं. के लगभग उ.प्र., हि.प्र. एवं उ.खण्ड आदि में कहीं भयंकर वर्षा, कहीं बादलचाल रहे। कश्मीर आदि में उन्नत शृंगों पर कहीं हिमपात के समाचार भी मिलें।

कुण्डली सूर्योदय (२ सितं.)

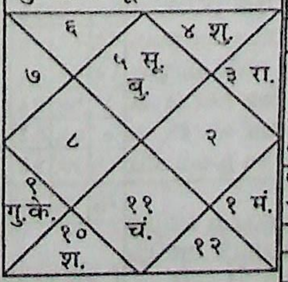

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	०	४	८	३	९	२	८
१५	१३	३	२९	२३	१	१	१	१
५०	१८	३२	३२	२७	१३	४७	७	७
५१	४१	५२	२७	३६	८	१५	४४	४४
५८	७३५	६	१००	२	६४	२	३	३
४	४५	२१	५२	१	१४	२९	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१ पू.फा.	२ शत.	१ अश्वि.	१ उ.फा.	४ पू.षा.	४ पुन.	२ उ.षा.	३ मृग.	१ मूल

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, प्र.आश्विन कृष्ण पक्ष १२

(३ से १७ सितम्बर, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

प्रातः शु. पूर्व में और मं. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर होगा। सायं गु. श. पूर्व में और बु. पश्चिम-क्षितिज में दिखेगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	तारीखें अं. सितम्बर	तारीखें श. भाद्रपद	तारीखें मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३१	२८	१	गु.	१५	५७	पू.भा.	३६	५६	धृ.	१८	८	कौ.	१५	५७	१९	३	१२	१४	मीन	२०	२६	६	४	१८	३९	४	१६	४८	५६	शुक्र पुष्य में ५६/५२, द्वितीया का श्राद्ध (देखें पृ. 14)(A)
३१	२३	२	शु.	२०	४८	उ.भा.	४३	२८	शू.	१९	२८	ग.	२०	४८	२०	४	१३	१५	मीन			६	४	१८	३८	४	१७	४७	२	भ. ५३/३७ बाद, (इस दिन कोई भी तिथिश्राद्ध नहीं है) (B)
३१	१९	३	श.	२६	२४	रेव.	५०	४०	गं.	२१	२४	वि.	२६	२४	२१	५	१४	१६	मेष	५०	४०	६	५	१८	३६	४	१८	४५	१	भ. २६/२४ तक, पंचक समाप्त ५०/४०, तृतीया का (C)
३१	१४	४	र.	३२	३३	अश्वि.	५८	१४	वृ.	२३	४५	बा.	३२	३३	२२	६	१५	१७	मेष			६	६	१८	३५	४	१९	४३	१९	वक्री गुरु पू.षा. ३ में २९/४५, चतुर्थी का श्राद्ध,
३१	१०	५	चं.	३८	५१	भर.	६०	०	ध्रु.	२६	१५	कौ.	५	४२	२३	७	१६	१८	मेष			६	६	१८	३४	४	२०	४१	३०	पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
३१	५	६	मं.	४४	५०	भर.	५	४७	व्या.	२८	३५	ग.	११	५०	२४	८	१७	१९	वृष	२२	३८	६	७	१८	३३	४	२१	३९	४४	भ. ४४/४९ बाद, बुध हस्त में २४/२२, षष्ठी का श्राद्ध, (D)
३१	१	७	बु.	४९	५६	कृत्ति.	१२	४९	ह.	३०	२१	वि.	१७	२३	२५	९	१८	२०	वृष			६	७	१८	३१	४	२२	३८	०	भ. १७/२३ तक, मंगल वक्री ५४/२४, सप्तमी का श्राद्ध,
३०	५६	८	गु.	५३	३८	रोहि.	१८	४७	व.	३१	९	बा.	२१	४७	२६	१०	१९	२१	मिथुन	५१	१४	६	८	१८	३०	४	२३	३६	१७	अष्टमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,
३०	५१	९	शु.	५५	२८	मृग.	२३	११	सि.	३०	३८	तै.	२४	३३	२७	११	२०	२२	मिथुन			६	८	१८	२९	४	२४	३४	३७	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
३०	४७	१०	श.	५५	१३	आर्द्रा	२५	३८	व्य.	२८	३२	व.	२५	२०	२८	१२	२१	२३	मिथुन			६	९	१८	२८	४	२५	३२	५९	भ. २५/२० से ५५/१३ तक, दशमी का श्राद्ध,
३०	४२	११	र.	५२	४७	पुन.	२५	५९	व.	२४	४३	ब.	२४	०	२९	१३	२२	२४	कर्क	११	६	६	९	१८	२६	४	२६	३१	२३	सूर्य उ.फा. में ७/१५, गुरु मार्गी ०/७, एकादशी का श्राद्ध, (E)
३०	३८	१२	चं.	४८	१९	पुष्य	२४	१५	प.	१९	१३	कौ.	२०	३३	३०	१४	२३	२५	कर्क			६	१०	१८	२५	४	२७	२९	४९	द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध,
३०	३३	१३	मं.	४२	४	आश्ले.	२०	३६	शि.	१२	७	ग.	१५	११	३१	१५	२४	२६	सिंह	२०	३६	६	११	१८	२४	४	२८	२८	१७	भ. ४२/४ बाद, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, भौमप्रदोष व्रत,
३०	२९	१४	बु.	३४	२४	मघा	१५	२२	सि.	३	४२	वि.	८	१४	आ.१	१६	२५	२७	सिंह			६	११	१८	२३	४	२९	२६	४७	भ. ८/१४ तक, सं. सूर्य कन्या में ३२/२१, मु. ३०, (F)
									सा.	५४	१६																			
३०	२४	३०	गु.	२५	४५	पू.फा.	९	०	शु.	४४	९	च.	०	४	२	१७	२६	२८	कन्या	२२	१५	६	१२	१८	२१	५	०	२५	११	बुध चित्रा में २६/२५, सर्वपितृ अमा, चतुर्दशी/अमा/ (G)

(A) अगस्त्य उदित, (B) (देखें पृ.), (C) श्राद्ध (देखें पृ.), श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (D) चन्द्रषष्ठी व्रत, (E) इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), (F) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, शुक्र आश्ले. में ३/५५, चतुर्दशी (अपमृत्यु वालों का) श्राद्ध, (G) अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, महालय (पितृपक्ष) समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	०	५	८	३	९	२	८
२३	१९	४	१२	२३	९	१	०	०
३६	११	०	२५	१६	५३	२९	४२	४२
१७	२२	२	४६	४८	५०	४४	१८	१८
५८	७३८	०	९१	०	६६	१	३	३
२०	१४	३०	२३	३०	८	४८	११	११
		व.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१० सितं.)

लोकभविष्य—प्र. आश्विन कृष्ण तृतीया को शनिवार होने से कहीं अग्निकाण्ड से भारी हानि सम्भव है, कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति भी बने—

"आश्विने हि तृतीयायां यदि भौम-शनैश्चरौ।
तदा त्वग्निभयं विद्यादथवान्- महर्घता॥"

मकर प्रभावराशि प्रधान देश भारत आदि में स्थिति एवं शासन-व्यवस्था को सुयश प्राप्त हो।

अफगानिस्तान, अरब राष्ट्र एवं अमेरिका आदि में कहीं प्राकृतिक प्रकोप एवं उग्रवाद से इस पक्ष में हानि के योग बनते हैं।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—३ से १२ सितं. तक बाजार ऊपर-नीचे रहें, लेकिन मन्दी प्रधान रहेगी। १३/१४ सितं. को तेजी प्रधान रहे। १५ सितं. को मन्दी का झटका आये। १६ सितं. को नारियल, सुपारी, तिलहन, तेल, घी में कुछ तेजी होकर आगे बाजार अस्थिर रहें।

आकाशलक्षण—सितम्बर ३, ८, १३ से १७ के मध्य उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में बादलचाल एवं खण्डवृष्टि हो। कश्मीर एवं हिमाचल के कुछ भागों में हिमपात भी हो।

कुण्डली सूर्योदय (१७ सितं.)

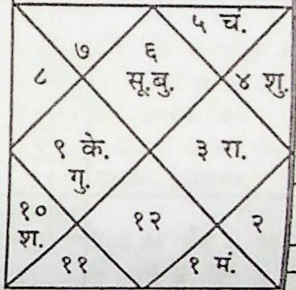

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १७ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	०	५	८	३	९	२	८
०	२३	३	२२	२३	१७	१	०	०
२५	५८	३७	४१	१७	४१	१९	२०	२०
१९	४२	५१	०	२५	२	४	३	३
५८	१०४	६	८३	०	६७	१	३	३
३४	५०	४१	६	५२	३०	९	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, प्र.(अ.)आश्विन शुक्ल पक्ष १३															तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१८ सितम्बर से १ अक्तूबर, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिणगोल, शरद् ऋतु। प्रातः शु. पूर्व में और मं. पश्चिम-कपाल में होगा। सायं श. यम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और इससे ऊपर गु. और बु. पश्चिम में होगा।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. आश्विन	अं. सितम्बर	श. भाद्रपद	मु. मुहर्रम				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	११	१	शु.	१६	३६	उ.फा.	१	५९	शु.	३३	४३	ब.	१६	३६	३	१८	२७	२९	कन्या			६	१२	१८	२०	५	१	२३	५३	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, अधिक (मल) मास प्रारम्भ,
						हस्त	५४	४५																						
३०	१५	२	श.	७	२३	चित्रा	४७	४८	ब्र.	२३	२३	कौ.	७	२३	४	१९	२८	स.१	तुला	२१	१०	६	१३	१८	१९	५	२	२२	२९	गुरु पू.षा. ४ में ३१/१५, सफर मु. प्रारम्भ,
अवम		३	श.	५८	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
३०	१०	४	र.	५०	३४	स्वा.	४१	३४	ऐं.	१३	२९	व.	२४	३४	५	२०	२९	२	तुला			६	१३	१८	१७	५	३	२१	६	भ. २४/३४ से ५०/३४ तक,
३०	५	५	चं.	४३	४०	विशा.	३६	२५	वै.	४	११	ब.	१७	७	६	२१	३०	३	वृश्चिक	२२	३५	६	१४	१८	१६	५	४	१९	४६	
									वि.	५६	११																			
३०	१	६	मं.	३८	११	अनु.	३२	३८	प्री.	४९	१२	कौ.	१०	५५	७	२२	३१	४	वृश्चिक			६	१५	१८	१५	५	५	१८	२७	बुध तुला में २६/४५, सूर्य सायन तुला में ३१/५७, (A)
२९	५६	७	बु.	३४	१५	ज्येष्ठा	३०	२४	आ.	४३	३०	ग.	६	१३	८	२३	आ.१	५	धनु	३०	२४	६	१५	१८	१४	५	६	१७	१०	भ. ३४/१५ बाद, राहु मृग. २ वृष, केतु ज्ये. ४ वृश्चिक (B)
२९	५२	८	गु.	३१	५५	मूल	२९	४४	सौ.	३९	४	वि.	३	५	९	२४	२	६	धनु			६	१६	१८	१२	५	७	१५	५५	भ. ३/५ तक,
२९	४७	९	शु.	३१	८	पू.षा.	३०	३५	शो.	३५	५१	बा.	१	३१	१०	२५	३	७	मकर	४६	३	६	१६	१८	११	५	८	१४	४१	
२९	४२	१०	श.	३१	४७	उ.षा.	३२	५१	अ.	३३	४५	तै.	१	२७	११	२६	४	८	मकर			६	१७	१८	१०	५	९	१३	२९	सूर्य हस्त में ४५/३०,
२९	३८	११	र.	३३	४२	श्रव.	३६	११	सु.	३२	३७	व.	२	४४	१२	२७	५	९	मकर			६	१७	१८	९	५	१०	१२	१९	भ. २/४४ से ३३/४२ तक, शुक्र मघा सिंह में ४६/५२, (C)
२९	३३	१२	चं.	३६	४२	धनि.	४०	४९	धृ.	३२	११	ब.	५	१२	१३	२८	६	१०	कुम्भ	८	२७	६	१८	१८	७	५	११	११	१०	पंचक प्रारम्भ ८/२७, बुध स्वा. में ०/१९,
२९	२८	१३	मं.	४०	३६	शत.	४६	१२	शू.	३२	४३	कौ.	८	३९	१४	२९	७	११	कुम्भ			६	१९	१८	६	५	१२	१०	३	शनि मार्गी ११/०, भौमप्रदोष व्रत,
२९	२४	१४	बु.	४५	१७	पू.भा.	५२	१८	गं.	३३	४२	ग.	१२	५६	१५	३०	८	१२	मीन	३५	४२	६	१९	१८	५	५	१३	८	५९	भ. ४५/१७ बाद,
२९	१९	१५	गु.	५०	३७	उ.भा.	५९	१	वृ.	३५	१२	वि.	१७	५७	१६	अ.१	९	१३	मीन			६	२०	१८	४	५	१४	७	५५	भ. १७/५७ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, अक्तूबर प्रारम्भ,

(A) दक्षिण गोल प्रारम्भ, विषुवदिन, (B) में १६/३०, शक आश्विन प्रारम्भ, (C) पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ सितम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	०	६	८	३	९	१	७
७	६	२	१	२३	२५	१	२९	२९
१५	१६	३३	५४	२७	३७	१३	५७	५७
५५	१४	४६	५०	३१	१३	३	४८	४८
५८	७३८	१२	७३	२	६८	०	३	३
४६	५०	१५	१७	१२	४१	२८	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ४	मूल २	अश्वि. १	चित्रा ३	पू.षा. ४	आश्ले. ३	उ.षा. २	मृग. २	ज्ये. ४

कुण्डली सूर्योदय (२४ सितं.)

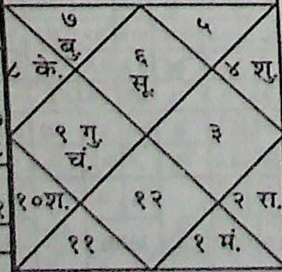

लोकभविष्य—लगभग २० से २८ सितं. तक शनि-मंगल का वक्रत्वकाल एवं प्र. (अ.)आश्वि. शुक्ल दशमी को शनिवार होने से कहीं शासनसत्ता में परिवर्तन के योग बनते हैं—"दशम्यां च शनौ तत्र छत्रभंगस्य कारणम्। नगर-ग्रामभंगः स्याद् वैरिचौराद्युपद्रवाः॥" सिंहस्थ-शुक्र 'जलशोषण कारकः' होने से कुछ प्रान्तों में पेयजल एवं कृषिकर्म के लिए जलाभाव का संकेत देता है। लगभग २३ सितम्बर से राहु की स्थिति जनजीवनोपयोगी खाद्य पदार्थों में भारी अभाव का कारण बनेगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में अनाज, रुई में मन्दी रहे। २० से २६ सितं. तक रुई, सोना, चांदी, अलसी, गेहूं, तांबा, सोना, गुड़, खाण्ड, अफीम में उत्तम-मध्यम रूप से तेजी रहेगी। २७ सितं. को लालमिर्च, सोना, तांबा, घी, गुड़ आदि में तेजी, चांदी मन्दी रहे। २८ सितं. को बाजार मन्दे रहें।

आकाशलक्षण—सितं. १८, २०, २१, २२, २६, २७, २८ एवं २९ सितम्बर को पश्चिमी भारत में कहीं बादलचाल रहें एवं कहीं वायुवेग से वर्षा हो। उ.भारत का तापमान गिरेगा।

कुण्डली सूर्योदय (१ अक्तू.)

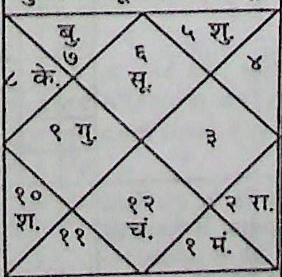

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	०	६	८	४	९	१	७
१४	४	०	९	२३	३	१	२९	२९
७	२७	५४	४८	४६	४१	११	३५	३५
५६	५९	१८	२५	५४	१२	५२	३३	३३
५८	७१८	१६	५८	३	६१	०	३	३
५९	५६	३१	५१	३०	४४	१३	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त २	उ.भा. १	अश्वि. १	स्वा. १	पू.षा. ४	मघा २	उ.षा. २	मृग. २	ज्ये. ४

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, द्वि.(अ.)आश्विन कृष्ण पक्ष १४ | तारीखें | चन्द्रराशि-प्रवेशकाल | चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) | स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)

(२ से १६ अक्तूबर, सन् २०२० ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु।

प्रातः शु. पूर्व में और मं. पश्चिम में दिखेगा। सायं श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और गु. इससे कुछ पश्चिम में होगा। इस समय बु. पश्चिमक्षितिजासन्न देखा जा सकता है। १४ अक्तू. को चं. शु. प्रातः पूर्व में परस्पर समीपस्थ होंगे।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. आश्वि.	अं. अक्तूबर	श. आश्वि.	मु. सफर	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			सूर्योदय		सूर्यास्त		रा.	अं.	क.	वि.	
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.					
२९	१५	१	शु.	५६	३०	रेव.	६०	०	धृ.	३७	८	बा.	२३	३४	१७	२	१०	१४	मीन			६	२०	१८	२	५	१५	६	५४	
२९	१०	२	श.	६०	०	रेव.	६	१२	व्या.	३९	२३	तै.	२९	३८	१८	३	११	१५	मेष	६	१२	६	२१	१८	१	५	१६	५	५५	पंचक समाप्त ६/१२,
२९	५	२	र.	२	४६	अश्वि.	१३	४५	ह.	४१	४९	ग.	२	४६	१९	४	१२	१६	मेष			६	२२	१८	०	५	१७	४	५८	भ. ३५/५७ बाद, वक्री मंगल रेव. मीन में ५७/५२, (A)
२९	१	३	चं.	९	९	भर.	२१	२३	व.	४४	१२	वि.	९	९	२०	५	१३	१७	वृष	३८	१८	६	२२	१७	५९	५	१८	४	३	भ. ९/९ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२८	५६	४	मं.	१५	२२	कृत्ति.	२८	४६	सि.	४६	१७	बा.	१५	२२	२१	६	१४	१८	वृष			६	२३	१७	५७	५	१९	३	११	
२८	५२	५	बु.	२०	५९	रोहि.	३५	२९	व्य.	४७	४५	तै.	२०	५९	२२	७	१५	१९	वृष			६	२४	१७	५६	५	२०	२	२०	
२८	४७	६	गु.	२५	३१	मृग.	४१	३	व.	४८	१४	व.	२५	३१	२३	८	१६	२०	मिथुन	८	२६	६	२४	१७	५५	५	२१	१	३२	भ. २५/३१ से ५७/३ तक,
२८	४२	७	शु.	२८	३१	आर्द्रा	४५	३	प.	४७	२६	ब.	२८	३१	२४	९	१७	२१	मिथुन			६	२५	१७	५४	५	२२	०	४७	शुक्र पू.षा. में १२/१२,
२८	३८	८	श.	२९	३८	पुन.	४७	९	शि.	४५	६	कौ.	२९	३८	२५	१०	१८	२२	कर्क	३१	५०	६	२५	१७	५३	५	२३	०	३	सूर्य चित्रा में १७/५२,
२८	३३	९	र.	२८	३८	पुष्य	४७	१०	सि.	४१	५	ग.	२८	३८	२६	११	१९	२३	कर्क			६	२६	१७	५१	५	२३	५९	२२	भ. ५७/६ बाद,
२८	२९	१०	चं.	२५	३०	आश्ले.	४५	६	सा.	३५	२३	वि.	२५	३०	२७	१२	२०	२४	सिंह	४५	६	६	२७	१७	५०	५	२४	५८	४४	भ. २५/३० तक,
२८	२४	११	मं.	२०	२१	मघा	४१	७	शु.	२८	५	बा.	२०	२१	२८	१३	२१	२५	सिंह			६	२७	१७	४९	५	२५	५८	७	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
२८	२०	१२	बु.	१३	२७	पू.फा.	३५	३१	शु.	१९	२३	तै.	१३	२७	२९	१४	२२	२६	कन्या	४८	५३	६	२८	१७	४८	५	२६	५७	३३	बुध वक्री ०/१५, प्रदोषव्रत,
२८	१५	१३	गु.	५	११	उ.फा.	२८	४३	ब्र. ऐं	९ ५९	३६ ५	व.	५	११	३०	१५	२३	२७	कन्या			६	२९	१७	४७	५	२७	५७	१	भ. ५/११ से ३०/३६ तक,
अवम		१४	गु.	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२८	११	३०	शु.	४६	१८	हस्त	२१	१०	वै.	४८	९	च.	२१	९	३१	१६	२४	२८	तुला	४७	१५	६	२९	१७	४६	५	२८	५६	३१	अधिक(मल)मास समाप्त,

(A) प्लूटो मार्गी ३१/३४,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	११	६	८	४	९	१	७
२३	२२	२८	१६	२४	१४	१	२९	२९
०	४०	१२	३६	२४	१३	१७	६	६
४	५१	२५	९	५२	४२	२८	५६	५६
५९	७७७	११	२३	५	७०	१	३	३
११	२४	१०	१७	५	५६	७	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१० अक्तू.)

लोकभविष्य—इस पक्ष के प्रारम्भ में वक्री मंगल मीन राशि में आकर शनि की दृष्टि में आ जाता है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इण्डोनेशिया आदि मुस्लिम देशों में उग्रवाद किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग हैं। कहीं आन्तरिक साम्प्रदायिक झगड़े अशान्ति का कारण बनेंगे। भारतीय गणराज्य में राजनीतिक पार्टियां देशहितार्थ न सोचकर अपनी सत्ताप्राप्ति के हित को प्रधान रखेंगी। कई जगह राष्ट्रपति शासन भी लगाना पड़े।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में ४ से १३ अक्तूबर तक रुई, सूत, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, गेहूं, चना, तिल, नारियल आदि में तेजी प्रधान रहे। ध्यान रहे—९ अक्तूबर के लगभग गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, चना आदि में मन्दी का झटका आ सकता है।

आकाशलक्षण—अक्तूबर ३, ४, ५, ८, ९, १०, १३ एवं १४ अक्तूबर के लगभग श्रीलंका, आसाम, बंगाल, उ.प्र., हि.प्र. के कुछ भागों में [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१६ अक्तू.)

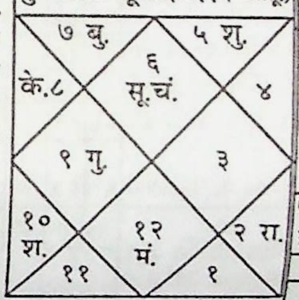

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	११	६	८	४	९	१	७
२८	१७	२६	१७	२४	२१	१	२८	२८
५६	१८	१७	१६	५७	२०	२५	४७	४७
३२	३८	४३	५३	५६	५९	४०	५१	५१
५९	११४	१८	१९	६	७१	१	३	३
३२	६	४२	३८	६	३६	४३	११	११
		व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, द्वि.(शु.)आश्विन शुक्ल पक्ष १५																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१७ से ३१ अक्तूबर, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. कार्तिक	अं. अक्तूबर	श. आश्विन	मु. सफर				सूर्योदय		सूर्यास्त						२० अक्तू. को बु. पश्चिम में अस्त हो जायेगा। प्रातः शु. पूर्व में होगा। सायं मं. पूर्वक्षितिज में, श. यम्योत्तरवृत्त के पास और गु. इससे पश्चिम की ओर होगा। २३ अक्तू. को प्रातः चं. श. परस्पर समीपस्थ देखे जा सकते हैं।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	६	१	श.	३६	३६	चित्रा	१३	२३	वि.	३७	१४	किं.	११	२७	१	१७	२५	२९	तुला			६	३०	१७	४५	५	२९	५६	३	सं. सूर्य तुला में १/२७, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न तक,(A)
२८	२	२	र.	२७	२२	स्वा. विशा.	५ ५९	५० २	प्री.	२६	४२	बा.	१	५९	२	१८	२६	३०	वृश्चिक	४५	३८	६	३१	१७	४४	६	०	५५	३७	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
२७	५७	३	चं.	१९	०	अनु.	५३	२१	आ.	१६	५४	ग.	१९	०	३	१९	२७	र.१	वृश्चिक			६	३२	१७	४३	६	१	५५	१३	भ. ४५/२८ बाद, रवि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२७	५३	४	मं.	११	५६	ज्येष्ठा	४९	९	सौ.	८	८	वि.	११	५६	४	२०	२८	२	धनु	४१	९	६	३२	१७	४१	६	२	५४	५१	भ. ११/५६ तक, शुक्र उ.फा. में २४/७, श्री उपांगललिता(B)
२७	४९	५	बु.	६	२६	मूल	४६	३९	शो. अ.	० ५४	४० ३६	बा.	६	२६	५	२१	२९	३	धनु			६	३३	१७	४०	६	३	५४	३१	सरस्वती आवाहन,
२७	४४	६	गु.	२	४५	पू.षा.	४६	१	सु.	५०	२	तै.	२	४५	६	२२	३०	४	धनु			६	३४	१७	३९	६	४	५४	१३	सूर्य सायन वृश्चिक में ५४/५०, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, सरस्वती पूजन,
२७	४०	७	शु.	०	५८	उ.षा.	४७	१२	धृ.	४६	५७	व.	०	५८	७	२३	का.१	५	मकर	१	९	६	३४	१७	३८	६	५	५३	५७	भ. ०/५८ से ३१/० तक, सूर्य स्वा. में ४३/३४, शुक्र (C)
२७	३६	८	श.	१	१	श्रव.	५०	५	शू.	४५	१२	ब.	१	१	८	२४	२	६	मकर			६	३५	१७	३७	६	६	५३	४२	सरस्वती विसर्जन, श्री दुर्गाष्टमी (देखें पृ. 14), महाष्टमी,(D)
२७	३१	९	र.	२	४५	धनि.	५४	२६	गं.	४४	३८	कौ.	२	४५	९	२५	३	७	कुम्भ	२२	६	६	३६	१७	३६	६	७	५३	२९	पंचक प्रारम्भ २२/६ महानवमी (बलिदान के लिए), (E)
२७	२७	१०	चं.	५	५८	शत.	५९	५८	वृ.	४५	३	ग.	५	५८	१०	२६	४	८	कुम्भ			६	३७	१७	३५	६	८	५३	१७	भ. ३८/९ बाद, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, भरत मिलाप,
२७	२३	११	मं.	१०	२२	पू.भा.	६०	०	ध्रु.	४६	१२	वि.	१०	२२	११	२७	५	९	मीन	४९	४२	६	३७	१७	३५	६	९	५३	७	भ. १०/२२ तक, वक्री बुध चित्रा में १९/४९, पापांकुशा (F)
२७	१८	१२	बु.	१५	३९	पू.भा.	६	२१	व्या.	४७	५३	बा.	१५	३९	१२	२८	६	१०	मीन			६	३८	१७	३४	६	१०	५२	५९	प्रदोष व्रत,
२७	१४	१३	गु.	२१	३२	उ.भा.	१३	२१	ह.	४९	५५	तै.	२१	३२	१३	२९	७	११	मीन			६	३९	१७	३३	६	११	५२	५३	
२७	१०	१४	शु.	२७	४५	रेव.	२०	४३	व.	५२	७	व.	२७	४५	१४	३०	८	१२	मेष	२०	४३	६	४०	१७	३२	६	१२	५२	४८	भ. २७/४५ बाद, पंचक समाप्त २०/४३, गुरु उ.षा. १ में(G)
२७	६	१५	श.	३४	५	अश्वि.	२८	१२	सि.	५४	२१	वि.	०	५५	१५	३१	९	१३	मेष			६	४१	१७	३१	६	१३	५२	४५	भ. ०/५५ तक, शुक्र हस्त में २५/५२, शरत् पूर्णिमा, (H)

(A) नाना-नानी का श्राद्ध (देखें पृ.), शारदीय (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, (B) व्रत, बुध पश्चिम में अस्त १७ घं. ४१ मि., (C) कन्या में १०/२७, सरस्वती के लिए बलिदान, शक कार्तिक प्रारम्भ, (D) महानवमी (पूजा एवं उपवास के लिए), (E) नवरात्र समाप्त, नवरात्र-पारणा, विजयादशमी (दशहरा) (देखें पृ. 15), आयुधपूजा, अपराजिता-पूजन, सीमोल्लंघन, (F) एकादशी व्रत (स.), (G) १६/१६, कोजागर व्रत (लक्ष्मी-इन्द्रपूजा), (H) श्रीसत्यनारायण व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २४ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	११	६	८	५	९	१	७
६	१२	२३	१०	२५	०	१	२८	२८
५३	९	५८	५२	५१	५६	४२	२२	२२
४३	५२	४	४३	९	२७	४	२५	२५
५९	७६०	१५	७५	७	७२	२	३	३
४७	१९	२०	११	२०	२१	२९	११	११
		व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
१	१	३	२	४	२	२	२	४
स्वा.	श्रव.	रे.	स्वाति	पू.षा.	उ.फा.	उ.षा.	मृ.	पु.

कुण्डली सूर्योदय (२४ अक्तू.)

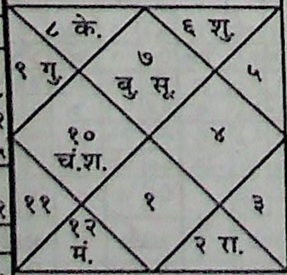

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास की प्रतिपदा एवं पूर्णिमा—दोनों शनिवारी हैं। पांच शनिवारों का इस चान्द्रमास में होना राष्ट्रविशेष में भयंकर प्राकृतिक (भूकम्प, जल-वायु)प्रकोप से जनधनहानि का संकेत देता है। कहीं यानदुर्घटना से भारी हानि भी हो—

"शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी।
ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥"

उत्तर-पश्चिमी भूभाग पर कहीं अग्निकाण्ड से हानि के योग भी हैं। शनि-मंगल की नीच सूर्य पर दृष्टि प्रधान नेता के लिए कष्टप्रद है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, सूत, सोना,चांदी, तेल, तिलहन एवं अनाजों में अच्छी तेजी के बाद १९ अक्तू. के लगभग मन्दी का झटका आये। २० से २७ अक्तू. के मध्य अनाज, सोना, चांदी, रुई, गुड़, शक्कर, मिर्च, तिलहन में तेजी से लाभ लें। मासान्त में बाजार ऊपर-नीचे चलेंगे।

आकाशलक्षण—अक्तू. १७ से २४ तक एवं २७, ३०, ३१ अक्तूबर को बादलचाल एवं वायुवेग के साथ उ.भारत में कहीं वर्षा हो। हि.प्र., कश्मीर, उ. खण्ड में हिमपात हो।

कुण्डली सूर्योदय (३१ अक्तू.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३१ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	११	६	८	५	९	१	७
१३	७	२२	३	२६	९	२	२८	२८
५२	११	२४	५	४५	२४	१	०	०
४६	७	२	४३	३६	३७	२१	१०	१०
५९	७१०	१०	३७	८	७२	३	३	३
५९	५१	४०	११	२०	५५	७	११	११
		व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
३	३	२	३	१	४	२	२	४
स्वा.	अश्वि.	रे.	चित्रा	उ.षा.	उ.फा.	उ.षा.	मृ.	पु.

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, कार्तिक कृष्ण पक्ष १६																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१ से १५ नवम्बर, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						पक्षारम्भ में ही बुध पूर्व में दृश्य हो जाता है। प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में होगा। सायं मं. पूर्व में, श. याम्योत्तरवृत्तासन्न और गु. पश्चिमकपाल में होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	कार्तिक	नवम्बर	कार्तिक	र.उ.अ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	२	१	र.	४०	२१	भर.	३५	३८	व्य.	५६	२९	बा.	७	१३	१६	१	१०	१४	वृष	५२	२८	६	४१	१७	३०	६	१४	५२	४४	नवम्बर प्रारम्भ, बुध पूर्व में उदित ६ घं. ४१ मि.,
२६	५८	२	चं.	४६	११	कृत्ति.	४२	४७	व.	५८	२०	तै.	१३	२०	१७	२	११	१५	वृष			६	४२	१७	२९	६	१५	५२	४५	
२६	५४	३	मं.	५१	४३	रोहि.	४९	२६	प.	५९	४४	व.	१९	१	१८	३	१२	१६	वृष			६	४३	१७	२८	६	१६	५२	४८	भ. १९/१ से ५१/४३ तक, बुध मार्गी ४१/३०,
२६	५०	४	बु.	५६	१७	मृग.	५५	१६	शि.	६०	०	ब.	२४	०	१९	४	१३	१७	मिथुन	२२	२८	६	४४	१७	२८	६	१७	५२	५२	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ) (A)
२६	४६	५	गु.	५९	४०	आर्द्रा	५९	५९	शि.	०	२७	कौ.	२७	५८	२०	५	१४	१८	मिथुन			६	४५	१७	२७	६	१८	५२	५९	
२६	४२	६	शु.	६०	०	पुन.	६०	०	सि. सा.	० ५८	१६ ५७	ग.	३०	३७	२१	६	१५	१९	कर्क	४७	३७	६	४५	१७	२६	६	१९	५३	८	सूर्य विशा. में ३/४२,
२६	३८	६	श.	१	३५	पुन.	३	१६	शु.	५६	२०	व.	१	३५	२२	७	१६	२०	कर्क			६	४६	१७	२५	६	२०	५३	१९	भ. १/३५ से ३१/३९ तक,
२६	३४	७	र.	१	४७	पुष्य	४	५५	शु.	५२	१६	ब.	१	४७	२३	८	१७	२१	कर्क			६	४७	१७	२५	६	२१	५३	३३	अहोई अष्टमी (पंजाब-हरि.),
२६	३१	८	चं.	०	९	आश्ले.	४	४५	ब्र.	४६	४४	कौ.	०	९	२४	९	१८	२२	सिंह	४	४५	६	४८	१७	२४	६	२२	५३	४८	
अवम		९	चं.	५६	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी तिथिक्षय,
२६	२७	१०	मं.	५१	२५	मघा पू.फा.	२ ५९	४७ ८	ऐं.	३९	४७	व.	२४	२	२५	१०	१९	२३	सिंह			६	४९	१७	२३	६	२३	५४	५	भ. २४/२ से ५१/२४ तक,
२६	२३	११	बु.	४४	३९	उ.फा.	५३	५८	वै.	३१	३२	ब.	१८	२	२६	११	२०	२४	कन्या	१२	५५	६	५०	१७	२३	६	२४	५४	२४	बुध स्वा. में ३६/४५, शुक्र चित्रा में २०/२८, रमा (B)
२६	२०	१२	गु.	३६	३९	हस्त	४७	३९	वि.	२२	१४	कौ.	१०	३९	२७	१२	२१	२५	कन्या			६	५०	१७	२२	६	२५	५४	४५	गोवत्स द्वादशी,
२६	१६	१३	शु.	२७	५०	चित्रा	४०	३५	प्री.	१२	८	ग.	२	१४	२८	१३	२२	२६	तुला	१४	८	६	५१	१७	२२	६	२६	५५	८	भ. २७/५० से ५३/१२ तक, मंगल मार्गी ५८/१०, (C)
२६	१३	१४	श.	१८	३४	स्वाती	३३	१२	आ. सौ.	१ ५०	३५ ५७	श.	१८	३४	२९	१४	२३	२७	तुला			६	५२	१७	२१	६	२७	५५	३३	नरक चतुर्दशी (पूर्व अरुणोदय वाली), दीपावली, (D)
२६	९	३०	र.	९	११	विशा.	२५	५६	शो.	४०	३१	ना.	९	११	मा.१	१५	२४	२८	वृश्चिक	१२	४०	६	५३	१७	२१	६	२८	५५	५९	सं. सूर्य वृश्चिक में ५९/५८ (देखें पृ. 15), मु. ३०, (E)

(A) (चन्द्रोदय देखें पृ.), (B) एकादशी व्रत (स.), (C) धन त्रयोदशी, श्री हनुमान् जयन्ती (उ.भा.), प्रदोषव्रत, यमप्रीत्यर्थ दीपदान, (D) श्रीमहालक्ष्मी पूजन, (E) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, शुक्र तुला में ४५/२२, बलिपूजा, गोक्रीड़ा, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ९ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	११	६	८	५	९	१	७
२२	२८	२१	४	२८	२०	२	२७	२७
५३	११	१५	४	५	२३	३२	३१	३१
४९	३६	३४	५६	२५	३६	३२	३३	३३
६०	८२३	३	५२	९	७३	३	३	३
१७	३९	३९	४८	३१	३४	५४	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (९ नवं.)

लोकभविष्य—कार्तिक कृ. प्रतिपदा एवं अमा रविवारी हैं एवं इस चान्द्रमास में पांच रविवार एवं पांच चन्द्रवार भी हैं। अतः कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं सत्ताहस्तान्तरण हो, लेकिन भारत में धन-धान्यसमृद्धि रहे—

"यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदा स्याद्धि महद्भयम्॥"

भारत के लिए (भारत की प्रभावराशि मकर) मकरस्थ शनि शुभ है। शनि की मंगल पर दृष्टि एवं शनि-मंगल की नीचस्थ सूर्य पर दृष्टि होने से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के जीवन को भय है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१ नवं. को रुई में मन्दी के बाद ३ नवं. से अच्छी तेजी बने। चांदी, अनाज, तेल, तिलहन एवं घी में तेजी के बाद मन्दी हो। ६ से १२ नवं. तक तेल, तिलहन, सोना, चांदी, घी एवं दालवाना में तेजी हो।

आकाशलक्षण—नवम्बर १ से ६, ११, १२, १३ एवं १५ नवं. को पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, कश्मीर एवं उ. खण्ड में वायुवेग के साथ कहीं खण्डवृष्टि, कहीं बादलवाल हो। अनेकत्र धुन्ध एवं शीतलहर से यातायात बाधित होगा।

कुण्डली सूर्योदय (१५ नवं.)

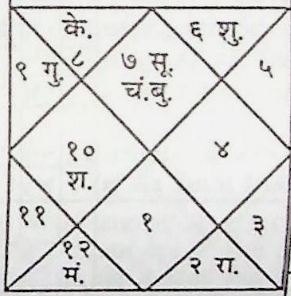

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १५ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	११	६	८	५	९	१	७
२८	२५	२१	१०	२९	२७	२	२७	२७
५६	५५	५	४१	४	४५	५७	१२	१२
१	५	४५	१६	१६	५४	५	२९	२९
६०	१०५	१	७९	१०	७३	४	३	३
२८	१४	११	५६	१३	५५	२२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, कार्तिक शुक्ल पक्ष १७																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१६ से ३० नवम्बर, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						२७ नवं. को बु. पूर्व में दिखाई देना बन्द हो जायेगा। प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में दिखाई देगा। सायं मं. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और गु. श. पश्चिमकपाल में होंगे। १९ नवं. को सायं चं. गु. श. परस्पर समीपस्थ दिखाई देंगे।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	मार्गं.	नवम्बर	कार्तिक	र.उ.अ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	६	१	चं.	०	३३	अनु.	११	१६	अ.	३०	३९	ब.	०	३३	२	१६	२५	२९	वृश्चिक			६	५४	१७	२०	६	२९	५६	२७	चन्द्रदर्शन, मु. १५, यम द्वितीया (भाई दूज), श्रीविश्वकर्मा पूजा,
अवम		२	चं.	५२	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
२६	३	३	मं.	४५	५७	ज्येष्ठा	१३	३६	सु.	२१	४२	तै.	११	१७	३	१७	२६	र.१	धनु	१३	३६	६	५५	१७	२०	७	०	५६	५७	रवि-उल-सानी मु. प्रारम्भ,
२५	५९	४	बु.	४०	५१	मूल	९	११	धृ.	१३	५५	व.	१३	२४	४	१८	२७	२	धनु			६	५६	१७	१९	७	१	५७	२८	भ. १३/२४ से ४०/५१ तक,
२५	५६	५	गु.	३७	३७	पू.षा.	६	४४	शू.	७	३१	ब.	९	१४	५	१९	२८	३	मकर	२१	२३	६	५६	१७	१९	७	२	५८	१	सूर्य अनु. में १८/१०, ज्ञानपंचमी (जैन),
२५	५३	६	शु.	३६	२१	उ.षा.	६	२	गं. वृ.	२ ५९	३९ २३	कौ.	६	५९	६	२०	२९	४	मकर			६	५७	१७	१८	७	३	५८	३५	गुरु उ.षा. २ मकर में १६/१५, शनि उ.षा. ३ में ०/१५,(A)
२५	५०	७	श.	३७	५	श्रव.	७	१७	ध्रु.	५७	३५	ग.	६	४३	७	२१	३०	५	कुम्भ	३८	३९	६	५८	१७	१८	७	४	५९	१०	भ. ३७/५ बाद, पंचक प्रारम्भ ३८/३९, बुध विशा. में(B)
२५	४७	८	र.	३९	४१	धनि.	१०	२४	व्या.	५७	८	वि.	८	२३	८	२२	मा.१	६	कुम्भ			६	५९	१७	१८	७	५	५९	४७	भ. ८/२३ तक, शुक्र स्वा. में ९/०, गोपाष्टमी, शक (C)
२५	४४	९	चं.	४३	५१	शत.	१५	११	ह.	५७	४९	बा.	११	४६	९	२३	२	७	कुम्भ			७	००	१७	१८	७	७	०	२५	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
२५	४१	१०	मं.	४९	१३	पू.भा.	२१	१६	व.	५९	१९	तै.	१६	३२	१०	२४	३	८	मीन	४	३८	७	१	१७	१७	७	८	१	३	
२५	३९	११	बु.	५५	२२	उ.भा.	२८	१६	सि.	६०	०	व.	२२	१३	११	२५	४	९	मीन			७	२	१७	१७	७	९	१	४३	भ. २२/१३ से ५५/२२ तक, राहु मृग. १, केतु ज्ये. ३ (D)
२५	३६	१२	गु.	६०	०	रेव.	३५	४५	सि.	१	१८	ब.	२८	३५	१२	२६	५	१०	मेष	३५	४५	७	२	१७	१७	७	१०	२	२४	पंचक समाप्त ३५/४५, तुलसी विवाह, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त,
२५	३४	१२	शु.	१	४८	अश्वि.	४३	१७	व्य.	३	३२	बा.	१	४८	१३	२७	६	११	मेष			७	३	१७	१७	७	११	३	६	प्रदोष व्रत, बुध पूर्व में अस्त ७ घं. ३ मि.,
२५	३१	१३	श.	८	१३	भर.	५०	३६	व.	५	४३	तै.	८	१३	१४	२८	७	१२	मेष			७	४	१७	१६	७	१२	३	४९	बुध वृश्चिक में ०/२, नेप्च्यून मार्गी ५७/४२, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
२५	२९	१४	र.	१४	१७	कृत्ति.	५७	२४	प.	७	३८	व.	१४	१७	१५	२९	८	१३	वृष	७	२०	७	५	१७	१६	७	१३	४	३३	भ. १४/१७ से ४७/० तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E)
२५	२६	१५	चं.	१९	४४	रोहि.	६०	०	शि.	९	७	ब.	१९	४४	१६	३०	९	१४	वृष			७	६	१७	१६	७	१४	५	१९	बुध अनु. में ८/३३, कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरुनानक जयन्ती, (F)

(A) सूर्य षष्ठी (छठ)-बिहार, (B) २८/४५, सूर्य सायन धनु में ४८/२, (C) मार्गशीर्ष प्रारम्भ, (D) में ८/५५, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), हरि-प्रबोधोत्सव, भीष्म पंचक प्रारम्भ, (E) भीष्म पंचक समाप्त, त्रिपुरोत्सव, मेला पुष्करराज (राज.), (F) कार्त्तिकस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	११	६	९	६	९	१	७
५	३	२१	२०	०	६	३	२६	२६
५९	४३	३०	४१	१८	२४	२९	५०	५०
४८	७	२८	२१	४	१७	१५	१३	१३
६०	७४५	६	१०	१०	७४	४	३	३
३८	८	३५	४९	५८	१३	५४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. १	धनि. ४	रेव. २	विशा. १	उ.षा. २	चित्रा ४	उ.षा. ३	मृग. २	ज्ये. ४

कुण्डली सूर्योदय (२२ नवं.)

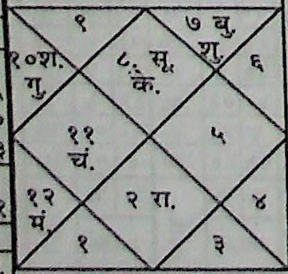

लोकभविष्य—शनि-मंगल की शुक्र-बुध पर दृष्टि है, सूर्य-राहु का समसप्तकयोग भी चल रहा है। यावन देशों एवं अमेरिका आदि में कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। कार्तिक शुक्ल सप्तमी को शनिवार होने से कहीं खड़ी फसलों को हानि हो—"कार्त्तिके सप्तमी शुक्ला शनौ धान्यार्थनाशिनी।" भारत के कुछ प्रान्तों में कहीं साम्प्रदायिक उलझनें पेश आयें। सरकार को कुछ प्रान्तों में शान्त्यर्थ कठोर पग उठाने पड़ें।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में रुई, चांदी, सोना में मन्दी के बाद तेजी। गुड़, खाण्ड, चीनी, दालवाना, अनाज तेज हों। २० नवं. से रुई स्टॉक करें, आगे ६ मास बाद उत्तम लाभ रहे। जौ, चना, गेहूं आदि अनाजों के स्टॉकिस्टों को इस समय उत्तम लाभ मिले। तेल, तिलहन, सोना, चांदी में १५ दिन में लाभ हो। २६ नवं. के बाद वायदा व्यापारी मन्दे में रहे।

आकाशलक्षण—नवं. १६, १७, १९, २०, २१, २२, २४, २५, २६, २८ से ३० नवम्बर के मध्य शनि, मंगल एवं सूर्य, बुध, राहु की स्थिति पर्वतीय भूभाग पर हिमपात एवं उ.भारत में धुन्ध से अनेकत्र दुर्घटनाएं करे। उ.भारत शीत लहर की चपेट में आ जायेगा।

कुण्डली सूर्योदय (३० नवं.)

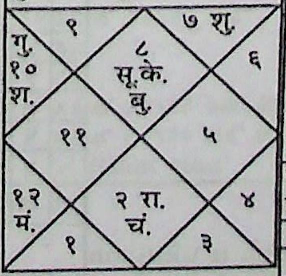

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	११	७	९	६	९	१	७
१४	९	२२	३	१	१६	४	२६	२६
५	४३	४२	०	४८	११	१०	२४	२४
२०	३५	३३	२७	२५	९	१४	४७	४७
६०	७२५	१२	९३	११	७४	५	३	३
४७	६	२	२८	४३	३२	२५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ४	कृत्ति. ४	रेव. २	विशा. ४	उ.षा. २	स्वा. ३	उ.षा. ३	मृग. १	ज्ये. ३

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १८

(१ से १४ दिसम्बर, सन् २०२० ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

बु. अस्त है। प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में होगा। सायं मं. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और गु.श. पश्चिम में होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. मार्गशीर्ष	तारीखें अं. दिसम्बर	तारीखें श. मार्गशीर्ष	तारीखें मु. र.उ.सा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२४	१	मं.	२४	२३	रोहि.	३	२९	सि.	१०	२	कौ.	२४	२३	१७	१	१०	१५	मिथुन	३६	१५	७	७	१७	१६	७	१५	६	५	दिसम्बर प्रारम्भ,
२५	२२	२	बु.	२८	६	मृग.	८	४५	सा.	१०	१५	ग.	२८	६	१८	२	११	१६	मिथुन			७	७	१७	१६	७	१६	६	५३	भ. ५९/३० बाद, सूर्य ज्ये. में २८/३४, शुक्र विशा. में(A)
२५	२०	३	गु.	३०	४६	आर्द्रा	१३	२	शु.	९	४२	वि.	३०	४६	१९	३	१२	१७	मिथुन			७	८	१७	१६	७	१७	७	४३	भ. ३०/४६ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
२५	१८	४	शु.	३२	१७	पुन.	१६	१४	शु.	८	१८	ब.	१	३१	२०	४	१३	१८	कर्क	०	३४	७	९	१७	१६	७	१८	८	३३	
२५	१६	५	श.	३२	३१	पुष्य	१८	१४	ब्र.	५	५७	कौ.	२	२४	२१	५	१४	१९	कर्क			७	१०	१७	१६	७	१९	९	२५	
२५	१५	६	र.	३१	२६	आश्ले	१८	५८	ऐं. वै.	२ ५८	३६ १३	ग.	१	५८	२२	६	१५	२०	सिंह	१८	५८	७	१०	१७	१६	७	२०	१०	१८	भ. ३१/२७ बाद,
२५	१३	७	चं.	२९	०	मघा	१८	२२	वि.	५२	४४	वि.	०	१३	२३	७	१६	२१	सिंह			७	११	१७	१६	७	२१	११	१३	भ. ०/१३ तक, गुरु उ.षा. ३ में ३४/२५,
२५	१२	८	मं.	२५	१३	पू.फा.	१६	२८	प्री.	४६	१४	कौ.	२५	१३	२४	८	१७	२२	कन्या	३०	४७	७	१२	१७	१७	७	२२	१२	९	बुध ज्ये. में ४०/४५, श्रीभैरवाष्टमी (कालाष्टमी),
२५	१०	९	बु.	२०	१२	उ.फा.	१३	११	आ.	३८	४५	ग.	२०	१२	२५	९	१८	२३	कन्या			७	१३	१७	१७	७	२३	१३	६	भ. ४७/७ बाद,
२५	९	१०	गु.	१४	५	हस्त	९	३	सौ.	३०	२७	वि.	१४	५	२६	१०	१९	२४	तुला	३६	३४	७	१३	१७	१७	७	२४	१४	४	भ. १४/५ तक, शुक्र वृश्चिक में ५५/७,
२५	८	११	शु.	७	५	चित्रा स्वाती	३ ५८	५४ ९	शो.	२१	३०	बा.	७	५	२७	११	२०	२५	तुला			७	१४	१७	१७	७	२५	१५	३	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
अवम		१२	शु.	५९	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२५	७	१३	श.	५१	३५	विशा.	५२	३	अ.	१२	६	ग.	२५	३२	२८	१२	२१	२६	वृश्चिक	३८	३३	७	१५	१७	१७	७	२६	१६	३	भ. ५१/३५ बाद, शनिप्रदोष व्रत,
२५	६	१४	र.	४३	४३	अनु.	४६	०	सु धृ.	२ ५३	३२ ५	वि.	१७	३९	२९	१३	२२	२७	वृश्चिक			७	१५	१७	१८	७	२७	१७	५	भ. १७/३९ तक, शुक्र अनु. में ३५/१९,
२५	५	३०	चं.	३६	१५	ज्ये.	४०	२३	शू.	४३	५९	च.	९	५९	३०	१४	२३	२८	धनु	४०	२३	७	१६	१७	१८	७	२८	१८	७	सोमवती अमा,

(A) ५३/३९, वक्री यूरेनस अश्वि. ४ में ६/४,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ८ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	११	७	९	६	९	१	७
२२	२१	२४	१५	३	२६	४	२५	२५
१२	५२	३४	२९	२४	१६	५५	५९	५९
१०	५१	४५	४१	२३	१७	१३	२०	२०
६०	८३७	१६	९३	१२	७४	५	३	३
५७	५३	३१	४७	२१	४७	५३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (८ दिसं.)

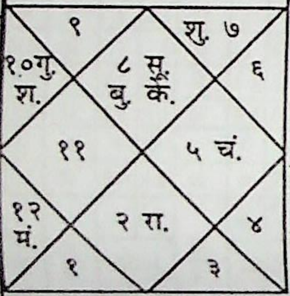

लोकभविष्य—बुध-सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में शुक्र के साथ वृश्चिकस्थ हैं, अतः वर्षा एवं वायु की विषमता से खड़ी फसलों को हानि होने से कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं उग्रवाद से हानि भी सम्भव है—

"एक राशिगता ह्येते सौम्य-शुक्र-दिनाधिपाः।
सर्वधान्य-महर्घत्वं तदा भय-विवर्धनाः॥"

इस पक्ष में नीचस्थ गुरु शनि के साथ है। अतः कहीं साम्प्रदायिक दंगे एवं अनाजों की कमी भी रहे।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१ से १० दिसम्बर के मध्य सोना, चांदी, बाजरा, मूंग, मोठ, चावल, गेहूं, जौ, चना, घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी आयेगी। १३ दिसं. के लगभग बाजार नीचे जा सकते हैं।

कुण्डली सूर्योदय (१४ दिसं.)

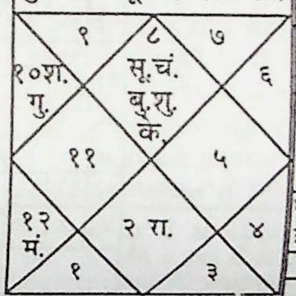

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १४ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	११	७	९	७	९	१	७
२८	१९	२६	२४	४	३	५	२५	२५
१८	१	२१	५३	३९	४५	३१	४०	४०
९	४१	२५	२०	३५	२१	१६	१५	१५
६१	८७१	११	९४	१२	७४	६	३	३
३	४८	२८	९	४७	५५	११	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण—दिसं. २, ३ एवं ७ से १३ दिसं. के लगभग हरियाणा, चण्डीगढ़ में वायुवेग के साथ कहीं खण्डवृष्टि हो। कश्मीर, उ.खण्ड [illegible]

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १९																	तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१५ से ३० दिसम्बर, सन् २०२० ई.) दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु। बु. अस्त है। प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज में होगा। सायं मं. याम्योत्तरवृत्त में और गु. श. पश्चिम-क्षितिज में होंगे।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल				प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.			पौष	दिसम्बर	मार्गशीर्ष	र.उ.स.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४	१	मं.	२९	३४	मूल	३५	३४	गं.	३५	३४	किं.	२	५५			१	१५	२४	२९	धनु			७	१७	१७	१८	७	२९	११	११	स. सूर्य मूल धनु में ३५/३७, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,
२५	३	२	बु.	२४	२	पू.षा.	३१	५५	वृ.	२८	७	कौ.	२४	२			२	१६	२५	३०	मकर	४६	१४	७	१७	१७	१९	८	०	२०	१४	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
२५	३	३	गु.	११	५९	उ.षा.	२९	४६	ध्रु.	२१	५१	ग.	११	५९			३	१७	२६	ज.१	मकर			७	१८	१७	१९	८	१	२१	१९	भ. ४८/४९ बाद, बुध मूल धनु में १०/४८, जमद-उल-(A)
२५	२	४	शु.	१७	४१	श्रव.	२९	२२	व्या.	१६	५१	वि.	१७	४१			४	१८	२७	२	कुम्भ	५१	५३	७	१९	१७	२०	८	२	२२	२४	भ. १७/४१ तक, पंचक प्रारम्भ ५१/५३,
२५	२	५	श.	१७	१८	धनि.	३०	५१	ह.	१३	३६	बा.	१७	१८			५	१९	२८	३	कुम्भ			७	१९	१७	२०	८	३	२३	३०	बलिदानदिन श्री गुरु तेगबहादुर जी,
२५	२	६	र.	१८	५२	शत.	३४	१२	व.	११	४३	तै.	१८	५२			६	२०	२९	४	कुम्भ			७	२०	१७	२०	८	४	२४	३६	गुह/स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी,
२५	२	७	चं.	२२	१७	पू.भा.	३९	१६	सि.	११	१६	व.	२२	१७			७	२१	३०	५	मीन	२२	५२	७	२०	१७	२१	८	५	२५	४२	भ. २२/१७ से ५४/४५ तक, सूर्य सायन मकर में २०/३३(B)
२५	२	८	मं.	२७	१४	उ.भा.	४५	४०	व्य.	१२	०	ब.	२७	१४			८	२२	पौ.१	६	मीन			७	२१	१७	२१	८	६	२६	४९	शक पौष प्रारम्भ,
२५	२	९	बु.	३३	१६	रेव.	५२	५८	व.	१३	३८	बा.	०	१५			९	२३	२	७	मेष	५२	५८	७	२१	१७	२२	८	७	२७	५५	पंचक समाप्त ५२/५८, गुरु उ.षा. ४ में ९/५२,
२५	२	१०	गु.	३९	४९	अश्वि.	६०	०	प.	१५	४७	तै.	६	३२			१०	२४	३	८	मेष			७	२२	१७	२३	८	८	२९	२	मंगल अश्वि. मेष में ७/२७, शुक्र ज्ये. में १५/७, शनि (C)
२५	३	११	शु.	४६	२०	अश्वि.	०	३५	शि.	१८	३	व.	१३	४			११	२५	४	९	मेष			७	२२	१७	२३	८	९	३०	९	भ. १३/४ से ४६/२० तक, बुध पू.षा. में ३४/५४, (D)
२५	३	१२	श.	५२	२०	भर.	८	१	सि.	२०	४	ब.	१९	२०			१२	२६	५	१०	वृष	२४	४९	७	२२	१७	२४	८	१०	३१	१६	जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहब (पं.),
२५	४	१३	र.	५७	२४	कृत्ति.	१४	४९	सा.	२१	३२	कौ.	२४	५२			१३	२७	६	११	वृष			७	२३	१७	२४	८	११	३२	२३	प्रदोषव्रत,
२५	४	१४	चं.	६०	०	रोहि.	२०	४०	शु.	२२	१३	ग.	२९	२०			१४	२८	७	१२	मिथुन	५३	१०	७	२३	१७	२५	८	१२	३३	३०	सूर्य पू.षा. में ४०/५५,
२५	५	१४	मं.	१	१७	मृग.	२५	२१	शु.	२१	५९	व.	१	१७			१५	२९	८	१३	मिथुन			७	२३	१७	२६	८	१३	३४	३७	भ. १/१७ से ३२/४० तक, श्रीदत्त जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत,
२५	६	१५	बु.	३	५५	आर्द्रा	२८	४७	ब्र.	२०	४७	ब.	३	५५			१६	३०	९	१४	मिथुन			७	२४	१७	२६	८	१४	३५	४५	

(A) अव्वल मु. प्रारम्भ, (B) उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ, मित्र सप्तमी, (C) उ.षा. ४ में ४०/१६, (D) मोक्षदा एकादशी व्रत(स.), श्रीगीता जयन्ती, क्रिस्मस डे,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	११	८	९	७	९	१	७
६	६	२९	७	६	१३	६	२५	२५
२६	३५	९	२९	२३	४५	२१	१४	१४
५०	४२	१८	५६	३२	९	५९	४९	४९
६१	७२०	२२	९५	१३	७५	६	३	३
७	१३	४८	२१	१५	२	३१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मूल २	उ.भा. १	रेव. ४	मूल ३	उ.षा. ३	अनु. ४	उ.षा. ३	मृग. १	ज्ये. ३

कुण्डली सूर्योदय (२२ दिसं.)

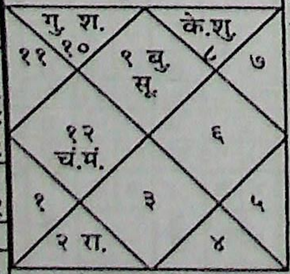

लोकभविष्य—लगभग २४ दिसं. तक शनि की मंगल पर दृष्टि रहेगी। शनि-गुरु मकर राशि में चल रहे हैं, अतः प्रजा में रोग किंवा प्राकृतिक कष्टों, उपद्रवों से भारी कष्ट हो। कहीं दुर्भिक्ष किंवा रोग-विशेष, अवर्षण किंवा अतिवर्षण से अनाजों की फसलों को हानि पहुंचे—

"यदा जीवयुतो मन्दो जीवाद् वा सप्तमे स्थितः।
तदा प्रजा विनश्यन्ति भूयश्चान्न-परिक्षयः॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१५ दिसं. को रुई, कपास, ऊन, सूत, तिल, तेल, सोना, चांदी, अलसी में तेजी क बाद अनाज, सोना, चांदी में उथलपटक रहे। २३ दिसं. को गुड़, खाण्ड में भारी तेजी का झटका आये एवं तेल, तिलहन, सोना, चांदी मन्दे हों। २४, २५ एवं २८ दिसं. को बाजारों में जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आयेंगे।

आकाशलक्षण—दिसम्बर १५ से १७ एवं २३ से २९ दिसं. तक उ. भारत जोरदार शीतलहर की चपेट में रहे। कहीं बादल-वर्षा भी सम्भव है। धुन्ध से अनेकत्र यातायात बाधित होगा। पर्वतीय भूभाग हिमपात से कटे रहेंगे। राजस्थान किंवा उ.प्र., मध्य प्रदेश में खण्डवृष्टि सम्भव है।

कुण्डली सूर्योदय (३० दिसं.)

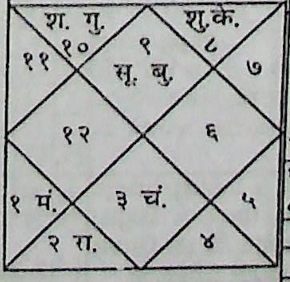

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	०	८	९	७	९	१	७
१४	१२	२	२०	८	२३	७	२४	२४
३५	५५	२१	१९	१०	४५	१५	४९	४९
४६	१९	२८	१६	५५	४८	८	२२	२२
६१	७६३	२५	९७	१३	७५	६	३	३
८	३	२८	१८	३७	७	४७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. १	आर्द्रा २	अश्वि. १	पू.षा. ३	उ.षा. ४	ज्ये. ३	उ.षा. ४	मृग. १	ज्ये. ३

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, पौष कृष्ण पक्ष २०

(३१ दिसम्बर, २०२० से १३ जनवरी, २०२१ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु ।

७ जनवरी को श. पश्चिम में अस्त हो जायेगा। ११ जनवरी को बु. पश्चिम में उदित होगा। प्रातः शु. पूर्व-क्षितिज में होगा। सायं मं. यम्योत्तरवृत्त में और गु. पश्चिम-क्षितिज में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. पौष	अं. दिसम्बर	श. पौष	मु. ज.उ.अ.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चंण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	७	१	गु.	५	१५	पुन.	३१	१	ऐं.	१८	३६	कौ.	५	१५	१७	३१	१०	१५	कर्क	१५	३४	७	२४	१७	२७	८	१५	३६	५३	
२५	८	२	शु.	५	२३	पुष्य	३२	६	वै.	१५	३१	ग.	५	२३	१८	ज.१	११	१६	कर्क			७	२४	१७	२८	८	१६	३८	१	भ. ३४/५५ बाद, जनवरी (इंग्लिश नववर्ष २०२१ ई.) प्रारम्भ,
२५	१०	३	श.	४	२३	आश्ले	३२	१०	वि.	११	३४	वि.	४	२३	१९	२	१२	१७	सिंह	३२	१०	७	२४	१७	२८	८	१७	३९	१	भ. ४/२३ तक, बुध उ.षा. में ४९/१२, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
२५	११	४	र.	२	२४	मघा	३१	१९	प्रीं.	६	५१	बा.	२	२४	२०	३	१३	१८	सिंह			७	२५	१७	२९	८	१८	४०	१७	शुक्र मूल धनु में ५४/४,
अवम		५	र.	५९	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
२५	१३	६	चं.	५५	५५	पू.फा.	२९	३९	आ. सौ.	१ ५५	२८ २८	ग.	२७	४४	२१	४	१४	१९	कन्या	४४	८	७	२५	१७	३०	८	१९	४१	२६	भ. ५५/५५ बाद, बुध मकर में ५१/१६,
२५	१४	७	मं.	५१	३७	उ.फा.	२७	१८	शो.	४८	५६	वि.	२३	४६	२२	५	१५	२०	कन्या			७	२५	१७	३१	८	२०	४२	३५	भ. २३/४६ तक,
२५	१६	८	बु.	४६	४४	हस्त	२४	२०	अ.	४१	५७	बा.	११	१०	२३	६	१६	२१	तुला	५२	३९	७	२५	१७	३१	८	२१	४३	४४	गुरु श्रव. १ में ५०/५७,
२५	१८	९	गु.	४१	२२	चित्रा	२०	५१	सु.	३४	३३	तै.	१२	३३	२४	७	१७	२२	तुला			७	२५	१७	३२	८	२२	४४	५३	शनि अस्त १७ घं. ३२ मि.,
२५	२०	१०	शु.	३५	३७	स्वाती	१६	५७	धृ.	२६	५१	व.	८	२९	२५	८	१८	२३	वृश्चिक	५८	५०	७	२५	१७	३३	८	२३	४६	३	भ. ८/२९ से ३५/३७ तक,
२५	२२	११	श.	२९	३९	विशा.	१२	४६	शू.	१८	५७	ब.	६	५३	२६	९	१९	२४	वृश्चिक			७	२५	१७	३४	८	२४	४७	१२	सफला एकादशी व्रत (स.),
२५	२४	१२	र.	२३	३९	अनु.	८	३०	गं.	१०	५८	तै.	२३	३९	२७	१०	२०	२५	वृश्चिक			७	२५	१७	३५	८	२५	४८	२२	सूर्य उ.षा. में ४५/५२, बुध श्रव. में ५७/१९, प्रदोष व्रत,
२५	२६	१३	चं.	१७	४८	ज्येष्ठा	४	१९	वृ. धु.	३ ५५	५ ३०	व.	१७	४८	२८	११	२१	२६	धनु	४	११	७	२५	१७	३६	८	२६	४९	३१	भ. १७/४८ से ४५/७ तक, बुध पश्चिम में उदित (A)
२५	२८	१४	मं.	१२	२३	मूल पू.षा.	० ५७	३० २०	व्या.	४८	२४	श.	१२	२३	२९	१२	२२	२७	धनु			७	२५	१७	३६	८	२७	५०	४१	
२५	३१	३०	बु.	७	४२	उ.षा.	५५	६	ह.	४२	२	ना.	७	४२	३०	१३	२३	२८	मकर	११	४०	७	२५	१७	३७	८	२८	५१	५०	लोहड़ी (पं., हरि., हि.प्र., ज.क.),

(A) १७ घं. ३६ मि.,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	०	९	९	८	९	१	७
२१	१६	५	१	९	२	८	२४	२४
४३	३०	२५	४४	४७	३१	३	२७	२७
४५	२६	३७	५५	६	४५	१२	६	६
६१	८४५	२७	९८	१३	७५	६	३	३
१०	४३	२२	३२	५३	११	५७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (६ जन.)

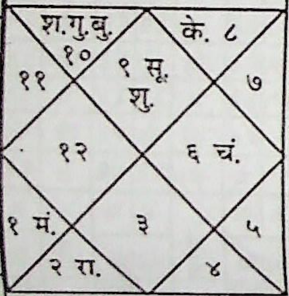

लोकभविष्य—गुरु-शनि एवं बुध मकरस्थ हैं, सूर्य-शुक्र धनु-राशि में हैं, अतः राजनैतिक दृष्टि से समय नयी योजनाओं को कार्यान्वित करने का रहेगा। यद्यपि देश में आर्थिक संकट की स्थिति तो बनेगी, पुनरपि देश में प्रगतिप्रद योजनाओं को मर्तरूप मिलेगा। कृषकवर्ग के हित एवं देश में आयात-निर्यात से प्रगति होगी।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में (३ जन., सन् २०२१ ई.) से रुई और चना आदि अनाज, सोना, चांदी, तांबा आदि धातुएं तेज हों। शेयर बाजारों मे भी तेजी का रुख रहे। ६, ७ जन. को मन्दे का रुख बनेगा। १० जन. को चना, चावल, दालें आदि सभी अनाज, गुड़, खाण्ड तेज रहें। बाद में बाजार अस्थिर रहें।

कुण्डली सूर्योदय (१३ जन.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	०	९	९	८	९	१	७
२८	२६	८	१३	११	११	८	२४	२४
५१	१०	४२	१०	२४	१८	५२	४	४
५२	१२	१५	४९	५५	१०	१९	५१	५१
६१	८३१	२९	९५	१४	७५	७	३	३
८	९	०	५५	५	१३	५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण—जनवरी (सन् २०२१ ई.) ३ से १० जनवरी को उ.भारत शीतलहर की चपेट में रहेगा। कहीं धुन्ध, हिमशिखरों पर हिमपात से यातायात बाधित रहे।

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, पौष शुक्ल पक्ष २१																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१४ से २८ जनवरी, २०२१ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						श. अस्त है। गु. भी १७ जनवरी को अस्त हो जायेगा। प्रातः शु. पूर्व-क्षितिज में देखा जा सकता है। सायं मं. को याम्योत्तरवृत्त में और बु. को पश्चिम-क्षितिज में देखा जा सकता है।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	जनवरी	पौष	ज.उ.अ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३३	१	गु.	४	१	श्रव.	५४	७	व.	३६	३८	ब.	४	१	१	१४	२४	२९	मकर			७	२५	१७	३८	८	२९	५२	५९	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सं. सूर्य मकर में २/४, मु. ३०, (A)
२५	३६	२	शु.	१	४०	धनि.	५४	३९	सि.	३२	२२	कौ.	१	४०	२	१५	२५	ज.१	कुम्भ	२४	११	७	२५	१७	३९	९	०	५४	८	पंचक प्रारम्भ २४/११, मट्टु पोंगल, जमद-उल-सानी मु. प्रारम्भ,
२५	३८	३	श.	०	५२	शत.	५६	५१	व्य.	२९	२५	ग.	०	५२	३	१६	२६	२	कुम्भ			७	२५	१७	४०	९	१	५५	१६	भ. ३१/१९ बाद, गुरु अस्त १७ जनवरी
२५	४१	४	र.	१	५०	पू.भा.	६०	०	व.	२७	५०	वि.	१	५०	४	१७	२७	३	मीन	४४	३८	७	२४	१७	४१	९	२	५६	२३	भ. १/५० तक, गुरु अस्त १७ घं. ४१ मि.,
२५	४४	५	चं.	४	३४	पू.भा.	०	४६	प.	२७	३४	बा.	४	३४	५	१८	२८	४	मीन			७	२४	१७	४२	९	३	५७	३०	
२५	४७	६	मं.	८	५७	उ.भा.	६	१५	शि.	२८	२८	तै.	८	५७	६	१९	२९	५	मीन			७	२४	१७	४३	९	४	५८	३६	बुध धनि. में ३६/१०, सूर्य सायन कुम्भ में ४६/५७,
२५	५०	७	बु.	१४	३८	रेव.	१३	२	सि.	३०	१४	व.	१४	३८	७	२०	३०	६	मेष	१३	२	७	२४	१७	४३	९	५	५९	४०	भ. १४/३८ से ४७/४९ तक, पंचक समाप्त १३/२, (B)
२५	५३	८	गु.	२१	७	अश्वि.	२०	३१	सा.	३२	२९	ब.	२१	७	८	२१	मा.१	७	मेष			७	२३	१७	४४	९	७	०	४५	गुरु श्रव. २ में ३/२८, शक माघ प्रारम्भ,
२५	५६	९	शु.	२७	४५	भर.	२८	१२	शु.	३४	४७	कौ.	२७	४५	९	२२	२	८	वृष	४५	४	७	२३	१७	४५	९	८	१	४८	मंगल भर. में १४/७, शनि श्रव. १ में २५/५२,
२५	५९	१०	श.	३३	५४	कृत्ति.	३५	२४	शु.	३६	३९	तै.	०	४९	१०	२३	३	९	वृष			७	२३	१७	४६	९	९	२	५०	सूर्य श्रव. में ५१/३०,
२६	२	११	र.	३८	५९	रोहि.	४१	३५	ब्र.	३७	४४	व.	६	२६	११	२४	४	१०	वृष			७	२२	१७	४७	९	१०	३	५१	भ. ६/२६ से ३८/५९ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
२६	६	१२	चं.	४२	३७	मृग.	४६	२३	ऐं.	३७	४४	ब.	१०	४८	१२	२५	५	११	मिथुन	१४	१२	७	२२	१७	४८	९	११	४	५१	बुध कुम्भ में २३/५२, शुक्र उ.षा. में १०/४२,
२६	९	१३	मं.	४४	३५	आर्द्रा	४९	३५	वै.	३६	२९	कौ.	१३	३६	१३	२६	६	१२	मिथुन			७	२१	१७	४९	९	१२	५	५०	भौमप्रदोष व्रत, भारत गणतन्त्र दिवस,
२६	१२	१४	बु.	४४	५१	पुन.	५१	१०	वि.	३३	५६	ग.	१४	४३	१४	२७	७	१३	कर्क	३५	५५	७	२१	१७	५०	९	१३	६	४८	भ. ४४/५१ बाद, शुक्र मकर में ५०/१९, राहु रोहि. ४,(C)
२६	१६	१५	गु.	४३	३४	पुष्य	५१	१४	प्री.	३०	९	वि.	१४	१३	१५	२८	८	१४	कर्क			७	२०	१७	५१	९	१४	७	४५	भ. १४/१३ तक, पौषी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D)

(A) पुण्यकाल सारा दिन, शुक्र पू.षा. में ३२/२२, गुरु-वार्धक्य प्रारम्भ १७ घं. ४१ मि., यूरेनस मार्गी १६/४६, मकर संक्रान्ति, पोंगल (द.भा.), (B) जन्मदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी, (C) केतु ज्ये. २ में १/३०, (D) माघस्नान प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २१ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	०	९	९	८	९	१	७
७	८	१२	२५	१३	२१	९	२३	२३
०	२१	३९	६	१८	११	४९	३९	३९
४५	२४	५१	३९	४	५५	१३	२४	२४
६१	७०९	३०	७५	१४	७५	७	३	३
३	१८	३२	११	१२	१२	९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
४ उ.षा.	३ अश्वि.	४ अश्वि.	१ धनि.	१ श्रव.	३ पू.षा.	४ उ.षा.	१ मृग.	३ ज्ये.

कुण्डली सूर्योदय (२१ जन.)

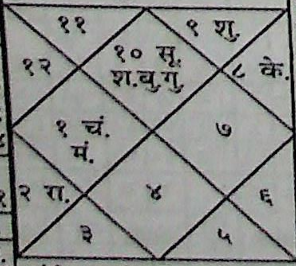

लोकभविष्य—इस पक्ष में मकरस्थ शनि, सूर्य-शुक्र एवं नीच गुरु का एकराशिसम्बन्ध राजनेताओं के लिए संघर्षपूर्ण स्थिति बनाता है। प्रधान नेताओं को देश की धार्मिक एवं साम्प्रदायिक कठिन समस्याओं से निपटने के लिए कठिन पग उठाने पड़ेंगे। कहीं रक्तपात से अशान्ति, कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि हो—

"एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में घी, तेल, तिलहन, गुड़, चीनी, रुई, ऊनी वस्त्र तेज रहें। दालवाना, नमक एवं मोटे अनाज मन्दे रहें। १९ से २१ जन. तक सोना आदि के बाजार मन्दे रहें। २२ से २७ जन. तक मूंग, मोठ, उड़द, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, घी, तेल एवं सभी अनाजों में तेजी रहे।

आकाशलक्षण—जनवरी १४, १५ एवं १९ से २८ जनवरी तक भी शीतलहर से उत्तरी भारत ठिठुरेगा। पर्वतीय प्रान्तों में हिमपात, कुछ प्रान्तों में बादलचाल व खण्डवृष्टि के बाद मौसम में कुछ परिवर्तन अनुभव होगा।

कुण्डली सूर्योदय (२८ जन.)

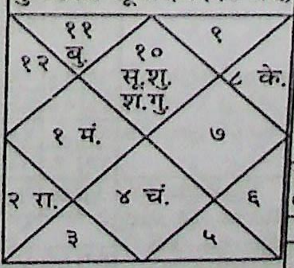

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २८ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	०	१०	९	९	९	१	७
१४	४	१६	१	१४	०	१०	२३	२३
७	१५	१६	४२	५७	६	३९	१७	१७
४६	३४	५५	८	४०	१८	१३	९	९
६०	८००	३१	२३	१४	७५	७	३	३
५७	३२	३५	१८	१५	११	८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
२ श्रव.	१ पुष्य	१ भर.	३ धनि.	२ श्रव.	२ उ.षा.	१ श्रव.	४ रोहि.	२ ज्ये.

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, माघ कृष्ण पक्ष २२

(२९ जनवरी से ११ फरवरी, सन् २०२१ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

गु. अस्त रहेगा। श. १० फर. को उदित होगा। बु. १ फर. को पश्चिम में और शु. ९ फर. को पूर्व में अस्त हो जायेगा। सायं मं. को यम्योत्तरवृत्त के पास देख सकते हैं।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल प.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. माघ	तारीखें अं. जनवरी	तारीखें श. माघ	तारीखें मु. ज.उ.मा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२६	१९	१	शु.	४०	५६	आश्ले	५०	३	आ.	२५	१६	बा.	१२	१५	१६	२९	९	१५	सिंह	५०	३	७	२०	१७	५२	९	१५	८	४१	
२६	२३	२	श.	३७	१३	मघा	४७	५१	सौ.	१९	३०	तै.	९	४	१७	३०	१०	१६	सिंह			७	१९	१७	५२	९	१६	९	३७	बुध वक्री ३५/७,
२६	२७	३	र.	३२	४५	पू.फा.	४४	५७	शो.	१३	२	व.	४	५९	१८	३१	११	१७	कन्या	५९	८	७	१९	१७	५३	९	१७	१०	३१	भ. ४/५९ से ३२/४५ तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी (A)
२६	३१	४	चं.	२७	४७	उ.फा.	४१	३७	अ. सु.	६ ५८	६ ५२	ब.	०	१६	१९	फ.१	१२	१८	कन्या			७	१८	१७	५४	९	१८	११	२५	बुध पश्चिम में अस्त १७ घं. ५४ मि., फरवरी प्रारम्भ,
२६	३४	५	मं.	२२	३४	हस्त	३८	६	धृ.	५१	३४	तै.	२२	३४	२०	२	१३	१९	कन्या			७	१७	१७	५५	९	१९	१२	१८	
२६	३८	६	बु.	१७	१९	चित्रा	३४	३५	शू.	४४	१८	व.	१७	१९	२१	३	१४	२०	तुला	६	२१	७	१७	१७	५६	९	२०	१३	१०	भ. १७/१९ से ४४/४५ तक,
२६	४२	७	गु.	१२	९	स्वा.	३१	१२	गं.	३७	८	ब.	१२	९	२२	४	१५	२१	तुला			७	१६	१७	५७	९	२१	१४	१	वक्री बुध मकर में ३८/३०, गुरु श्रव. ३ में ५/४२, शुक्र (B)
२६	४६	८	शु.	७	१०	विशा.	२८	१	वृ.	३०	१०	कौ.	७	१०	२३	५	१६	२२	वृश्चिक	१३	४८	७	१५	१७	५८	९	२२	१४	५२	सूर्य धनि. में ५९/५२,
२६	५०	९	श.	२	२६	अनु.	२५	७	ध्रु.	२३	२४	ग.	२	२६	२४	६	१७	२३	वृश्चिक			७	१५	१७	५९	९	२३	१५	४१	भ. ३०/१० से ५७/५९ तक, शुक्र-वार्धक्य प्रारम्भ ७ घं. १२ मि.,
अवम		१०	श.	५७	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी तिथिक्षय, **शुक्र अस्त ९ फरवरी**
२६	५४	११	र.	५३	५४	ज्येष्ठा	२२	३१	व्या.	१६	५४	ब.	२५	५६	२५	७	१८	२४	धनु	२२	३१	७	१४	१७	५९	९	२४	१६	२९	षट्तिला एकादशी व्रत (स्मा.),
२६	५८	१२	चं.	५०	१६	मूल	२०	१८	ह.	१०	४२	कौ.	२२	५	२६	८	१९	२५	धनु			७	१३	१८	०	९	२५	१७	१७	षट्तिला एकादशी व्रत (वै.),
२७	२	१३	मं.	४७	१३	पू.षा.	१८	३५	व. सि.	४ ५९	५३ ३१	ग.	१८	४४	२७	९	२०	२६	मकर	३३	१३	७	१२	१८	१	९	२६	१८	३	भ. ४७/१३ बाद, शुक्र पूर्व में अस्त ७ घं. १२ मि., (C)
२७	६	१४	बु.	४४	५३	उ.षा.	१७	३०	व्य.	५४	४९	वि.	१६	३	२८	१०	२१	२७	मकर			७	११	१८	२	९	२७	१८	४९	भ. १६/३ तक, वक्री बुध श्रव. में ३८/५८, शनि उदित(D)
२७	१०	३०	गु.	४३	३१	श्रव.	१७	१५	व.	५०	५२	च.	१४	१२	२९	११	२२	२८	कुम्भ	४७	२८	७	११	१८	३	९	२८	११	३३	पंचक प्रारम्भ ४७/२८, मौनी अमावस,

(A) व्रत (देखें पृ. 15) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (B) श्रव. में ५४/२२, जन्मदिन स्वामी विवेकानन्द जी, (C) भौमप्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन), (D) ७ घं. ११ मि.,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	०	९	९	९	९	१	७
२२	२५	२०	२९	१६	१०	११	२२	२२
१४	४३	३३	४५	५१	७	३६	५१	५१
५३	४८	१७	२९	३८	४६	४	४२	४२
६०	८४३	३२	५८	१४	७५	७	३	३
४९	२८	३६	४२	१३	१०	३	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.
४	२	३	२	३	१	१	४	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (५ फर.)

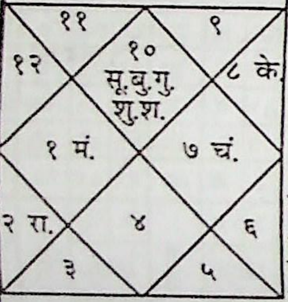

लोकभविष्य—इस चान्द्रमास में पांच शुक्र एवं पांच शनिवार हैं। साथ ही पंचग्रही एवं षड्ग्रहीयोग भी इस पक्ष में बन रहे हैं। परिणाम नेष्टफलप्रद हैं, किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन किंवा उग्रवादजन्य उपद्रव व भूकम्प, तूफान, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदा से देश में कष्टप्रद स्थिति बने–

"शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणी।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—२९ जनवरी से ४ फर. के मध्य घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चांदी, सोना, तिल, तेल आदि में तेजी। गेहूं, चना, जौ, दालवाना एवं शेयरों में मन्दी रहे। ४ फर. के लगभग बाजार अस्थिर रहें। ५ से १० फर. तक सोना, चांदी, अनाज, घी, तिलहन में उठापटक रहे।

कुण्डली सूर्योदय (११फर.)

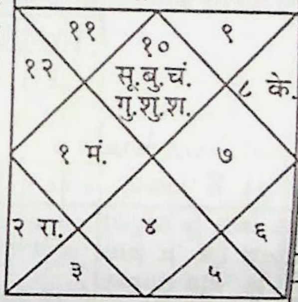

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	०	९	९	९	९	१	७
२८	१८	२३	२३	१८	१७	१२	२२	२२
११	३४	५०	०	१६	३८	१८	५२	५२
३५	१०	३१	२६	५०	४५	११	३८	३८
६०	७१५	३३	६६	१४	७५	६	३	३
४३	११	१५	२९	९	९	५७	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.
२	३	४	४	३	३	१	४	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण—जनवरी २९, ३०, फरवरी १, ४, ५, ६, ९, १० एवं ११ फर. को उ. भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल किंवा खण्डवृष्टि हो। मौसम में परिवर्तन अनुभव होगा।

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, माघ शुक्ल पक्ष २३ | तारीखें | चन्द्रराशि | चण्डीगढ़ | स्पष्ट सूर्य | (१२ से २७ फरवरी, सन् २०२१ ई.) 149

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, माघ शुक्ल पक्ष २३																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१२ से २७ फरवरी, सन् २०२१ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						शु. अस्त है। बु. और गु. १५ फर. को पूर्व में दिखाई देने आरम्भ हो जायेंगे। प्रातः श. पूर्व क्षितिज पर देखा जा सकता है। सायं मं. पश्चिमकपाल में होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	फाल्गुन	फरवरी	माघ	ज.उ.स.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	१५	१	श.	४३	११	धनि.	१८	२	प.	४७	५२	किं.	१३	२५	१	१२	२३	२९	कुम्भ			७	१०	१८	४	९	२९	२०	१६	सं. सूर्य कुम्भ में ३५/४, मु. १५, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (A)
२७	११	२	श.	४४	२९	शत.	२०	४	शि.	४५	५५	बा.	१३	५४	२	१३	२४	३०	कुम्भ			७	९	१८	५	१०	०	२०	५८	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **गुरु उदित १५ फरवरी**
२७	२३	३	र.	४७	७	पू.भा.	२३	३०	सि.	४५	७	तै.	१५	४८	३	१४	२५	र.१	मीन	७	३२	७	८	१८	५	१०	१	२१	३८	गौरी तृतीया (गोंतरी), रजब मु., प्रारम्भ,
२७	२८	४	चं.	५१	१४	उ.भा.	२८	२३	सा.	४५	२६	व.	११	१०	४	१५	२६	२	मीन			७	७	१८	६	१०	२	२२	१७	भ. ११/१० से ५१/१४ तक, शुक्र धनि. में २८/३०, (B)
२७	३२	५	मं.	५६	४०	रेव.	३४	३५	शु.	४६	४५	व.	२३	५७	५	१६	२७	३	मेष	३४	३५	७	६	१८	७	१०	३	२२	५४	पंचक समाप्त ३४/३५, मंगल कृत्ति. में ०/३, श्री पंचमी,(C)
२७	३६	६	बु.	६०	०	अश्वि.	४१	४७	शु.	४८	४१	कौ.	२९	५२	६	१७	२८	४	मेष			७	५	१८	८	१०	४	२३	३०	
२७	४१	६	गु.	३	३	भर.	४९	३३	ब्र.	५१	१६	तै.	३	३	७	१८	२९	५	मेष			७	४	१८	९	१०	५	२४	३	गुरु श्रव. ४ में १५/३०, सूर्य सायन मीन में २२/५७, (D)
२७	४५	७	शु.	९	४७	कृत्ति.	५७	१४	ऐं.	५३	३९	व.	९	४७	८	१९	३०	६	वृष	६	३३	७	३	१८	९	१०	६	२४	३५	भ. ९/४७ से ४३/० तक, सूर्य शत. में ११/२५, शनि (E)
२७	४९	८	श.	१६	१३	रोहि.	६०	०	वै.	५५	२९	ब.	१६	१३	९	२०	फा.१	७	वृष			७	२	१८	१०	१०	७	२५	५	बुध मार्गी ५८/१८, शुक्र कुम्भ में ४८/२१, भीष्माष्टमी (F)
२७	५४	९	र.	२१	४२	रोहि.	४	१४	वि.	५६	२०	कौ.	२१	४२	१०	२१	२	८	मिथुन	३७	१५	७	१	१८	११	१०	८	२५	३३	मंगल वृष में ५३/५७, माघ गुप्त नवरात्र समाप्त,
२७	५८	१०	चं.	२५	४०	मृग.	९	५३	प्री.	५५	५४	ग.	२५	४०	११	२२	३	९	मिथुन			७	०	१८	१२	१०	९	२५	५९	भ. ५६/४० बाद, नवरात्र-पारणा,
२८	३	११	मं.	२७	४५	आर्द्रा	१३	४८	आ.	५३	५६	वि.	२७	४५	१२	२३	४	१०	मिथुन			६	५९	१८	१२	१०	१०	२६	२३	भ. २७/४५ तक, जया एकादशी व्रत (स.),
२८	७	१२	बु.	२७	४८	पुन.	१५	४६	सौ.	५०	२५	बा.	२७	४८	१३	२४	५	११	कर्क	०	२६	६	५८	१८	१३	१०	११	२६	४६	भीष्म द्वादशी, प्रदोषव्रत,
२८	१२	१३	गु.	२५	५४	पुष्य	१५	४९	शो.	४५	२४	तै.	२५	५४	१४	२५	६	१२	कर्क			६	५७	१८	१४	१०	१२	२७	६	यूरेनस भर. १ में ३५/४२,
२८	१७	१४	शु.	२२	१४	आश्ले	१४	६	अ.	३९	६	व.	२२	१४	१५	२६	७	१३	सिंह	१४	६	६	५६	१८	१५	१०	१३	२७	२५	भ. २२/१४ से ४९/४३ तक, शुक्र शत. में ८/३०, श्रीसत्यनारायण व्रत,
२८	२१	१५	श.	१७	९	मघा	१०	५७	सु.	३१	४४	ब.	१७	९	१६	२७	८	१४	सिंह			६	५५	१८	१५	१०	१४	२७	४२	माघी पूर्णिमा, श्री गुरु रविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्त,

(A) माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (B) बुध पूर्व में उदित ७ घं. ७ मि., गुरु उदित ७ घं. ७ मि., तिल-वरद-कुन्द चतुर्थी, (C) लक्ष्मी पंचमी, वसन्त पंचमी, श्रीलक्ष्मी-सरस्वती पूजन, (D) गुरु-बाल्य समाप्त ७ घं. ७ मि., वसन्त ऋतु प्रारम्भ, आरोग्य सप्तमी, रथ सप्तमी, (E) श्रव. २ में ५६/५७, मर्यादा महोत्सव (जैन), (F) (देखें पृ. 15), शक फाल्गुन प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	०	९	९	९	९	१	७
७	९	२८	१६	२०	२८	१३	२२	२२
२५	४६	५३	५६	२३	५४	११	४	४
६	३६	७	१६	२६	४४	५४	१	१
६०	७१६	३४	३	१३	७५	६	३	३
२८	३१	२	४५	५६	३	४३	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
शत. १	कृत्ति. ४	कृत्ति. १	श्रव. ३	श्रव. ४	धनि. २	श्रव. १	रोहि. ४	ज्ये. २

कुण्डली सूर्योदय (२० फर.)

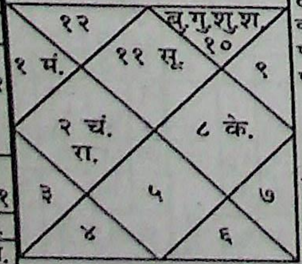

लोकभविष्य—इस पक्ष में शनि-शुक्र-गुरु-बुध मकर राशि में हैं। लगभग २१ फर. को राहु-मंगल का योग अप्रत्याशित घटनाओं का संकेत देता है। कहीं भयंकर दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं खड़ी फसलों के सूखने से महंगाई से जनता परेशान हो। रोगविशेष से भी परेशानी रहे—

"राहुरंगारकश्चैक-राशि-ऋक्षगतोऽपि . वा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१२, १३ फर. को घी, तेल, नमक, रुई, सूत, तिलहन, चांदी, सोना में घटाबढ़ी होकर तेजी हो, अनाज, दालवाना में भी तेजी रहे। २०, २१ फरवरी को सभी बाजार एवं शेयरों में तेजी रहे। फरवरी १४, १५ एवं २२ फरवरी को बाजारों में अचानक मन्दी रहे।

आकाशलक्षण—फरवरी १२ से १६ एवं १८ से २३ फरवरी तक उ.भारत में हवा का जोर रहे, कहीं बादलचाल एवं खण्डवृष्टि हो। वसन्त के आगमन पर मौसम सुहावना रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२७ फर.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	१	९	९	१०	९	१	७
१४	९	२	१८	२२	७	१४	२१	२१
२७	५४	५२	४०	०	३९	६	४१	४१
४३	९	५३	४७	२१	५२	१४	४६	४६
६०	८५८	३४	३६	१३	७४	६	३	३
५	१७	३१	१२	४२	५९	२८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
शत. ३	मघा ३	कृत्ति. २	श्रव. ३	श्रव. ४	शत. १	श्रव. २	रोहि. ४	ज्ये. २

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २४																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२८ फरवरी से १३ मार्च, सन् २०२१ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु। शु. अस्त है। प्रातः बु. गु. श. पूर्व में होंगे। सायं मं. पश्चिमकपाल में दिखाई देगा।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. फाल्गुन	अं. फरवरी	श. फाल्गुन	मु. रजब				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	२६	१	र.	११	२	पू.फा.	६	४३	धृ.	२३	३७	कौ.	११	२	१७	२८	९	१५	कन्या	२०	३०	६	५४	१८	१६	१०	१५	२७	५७	
२८	३०	२	चं.	४	१७	उ.फा. हस्त	१ ५६	४९ ३६	शू.	१५	३	ग.	४	१७	१८	मा.१	१०	१६	कन्या			६	५३	१८	१७	१०	१६	२८	११	भ. ३०/४५ से ५७/१३ तक, मार्च प्रारम्भ,
अवम		३	चं.	५७	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
२८	३५	४	मं.	५०	१९	चित्रा	५१	३२	गं. वृ.	६ ५७	२२ ४५	ब.	२३	४६	१९	२	११	१७	तुला	२४	२	६	५२	१८	१८	१०	१७	२८	२३	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२८	४०	५	बु.	४३	४८	स्वाती	४६	५२	धु.	४९	३२	कौ.	१७	४	२०	३	१२	१८	तुला			६	५१	१८	१८	१०	१८	२८	३४	
२८	४४	६	गु.	३७	५३	विशा.	४२	४९	व्या.	४१	५०	ग.	१०	५०	२१	४	१३	१९	वृश्चिक	२८	४६	६	४९	१८	१९	१०	१९	२८	४२	भ. ३७/५३ बाद, सूर्य पू.भा. में २७/५४, गुरु धनि. १ (A)
२८	४९	७	शु.	३२	४५	अनु.	३९	३२	ह.	३४	४६	वि.	५	१९	२२	५	१४	२०	वृश्चिक			६	४८	१८	२०	१०	२०	२८	५०	भ. ५/१९ तक, बुध धनि. में १/४,
२८	५३	८	श.	२८	२८	ज्येष्ठा	३७	६	व.	२८	२३	बा.	०	३७	२३	६	१५	२१	धनु	३७	६	६	४७	१८	२१	१०	२१	२८	५५	
२८	५८	९	र.	२५	३	मूल	३५	३१	सि.	२२	४१	ग.	२५	३	२४	७	१६	२२	धनु			६	४६	१८	२१	१०	२२	२८	५९	भ. ५३/४२ बाद,
२९	३	१०	चं.	२२	२९	पू.षा.	३४	४८	व्य.	१७	४२	वि.	२२	२९	२५	८	१७	२३	मकर	४९	४४	६	४५	१८	२२	१०	२३	२९	२	भ. २२/२९ तक, शुक्र पू.भा. में ४९/३३,
२९	७	११	मं.	२०	४६	उ.षा.	३४	५३	व.	१३	२२	बा.	२०	४६	२६	९	१८	२४	मकर			६	४४	१८	२३	१०	२४	२९	२	विजया एकादशी व्रत (स.),
२९	१२	१२	बु.	१९	५४	श्रव.	३५	५०	प.	९	४३	तै.	१९	५४	२७	१०	१९	२५	मकर			६	४२	१८	२३	१०	२५	२९	२	प्रदोषव्रत,
२९	१७	१३	गु.	१९	५६	धनि.	३७	३९	शि.	६	४५	व.	१९	५६	२८	११	२०	२६	कुम्भ	६	३९	६	४१	१८	२४	१०	२६	२८	५९	भ. १९/५६ से ५०/२८ तक, पंचक प्रारम्भ ६/३९, (B)
२९	२२	१४	शु.	२०	५६	शत.	४०	२६	सि.	४	३१	श.	२०	५६	२९	१२	२१	२७	कुम्भ			६	४०	१८	२५	१०	२७	२८	५५	
२९	२६	३०	श.	२२	५९	पू.भा.	४४	१६	सा.	३	६	ना.	२२	५९	३०	१३	२२	२८	मीन	२८	१३	६	३९	१८	२५	१०	२८	२८	४९	शनैश्चरी अमा,

(A) में ४७/५२, (B) मंगल रोहि. में १२/४८, बुध कुम्भ में १४/३३, श्री महाशिवरात्रि व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१	९	९	१०	९	१	७
२१	२०	६	२४	२३	१६	१४	२१	२१
२८	४०	५५	१३	३५	२४	५०	१९	१९
५६	२६	४१	२२	२६	२९	४२	३१	३१
६०	८३०	३४	६०	१३	७४	६	३	३
४	३५	५५	१६	२५	५४	१०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (६ मार्च)

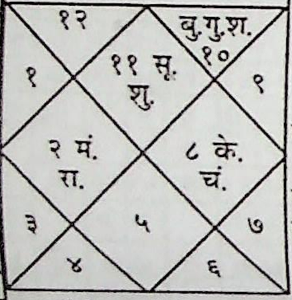

लोकभविष्य—इस चन्द्रमास में पांच रविवार हैं। कुछ प्रान्तों में भारी दुर्भिक्ष की स्थिति का सामना करना पड़ेगा—

"यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच-संततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंगं वा क्वचिदुपद्रव-सम्भवः॥"

कहीं शासनसत्ता में अकस्मात् परिवर्तन, कहीं उग्रवाद से अशान्ति हो।

मंगल-राहु वृषस्थ हैं। सूर्य-शुक्र कुम्भस्थ हैं, शनि, गुरु, बुध व्ययस्थ हैं, अतः वृश्चिक तुला एवं कुम्भ राशि वाले नेताओं के लिए कठिन समय है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में ८ मार्च तक तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, रुई, रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना आदि अनाजों में घटाबढ़ी के साथ तेजी रहे। ११ मार्च के लगभग घी, तेल, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, सूत, शेयर, लालमिर्च एवं हींग में तेजी रहे।

आकाशलक्षण—मार्च ४, ५, ८, ९, ११, १२ एवं १३ मार्च को गुरु, शुक्र एवं मंगल, राहु की स्थिति म.प्र., बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलपात व बूंदाबादी करे। उ भारत में वायुवेग रहे एवं मौसम में कुछ गर्मी अनुभव होने लगे।

कुण्डली सूर्योदय (१३ मार्च)

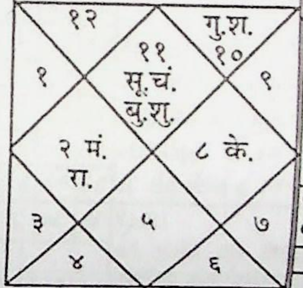

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १३ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१	१०	९	१०	९	१	७
२८	२३	११	२	२५	२५	१५	२०	२०
२८	३०	१	४	८	८	३२	५७	५७
५०	५	१०	२९	१६	३५	५६	१५	१५
५९	७४१	३५	७५	१३	७४	५	३	३
५३	३०	१६	३२	३	४९	५०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५ | तारीखें | चण्डीगढ़ | स्पष्ट सूर्य | (१४ से २८ मार्च, सन् २०२१ ई.) 151

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २५																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(१४ से २८ मार्च, सन् २०२१ ई.) उत्तरायण, दक्षिण-उत्तरगोल, वसन्त ऋतु। शु. अस्त रहेगा। प्रातः बु. पूर्व-क्षितिज में, इससे ऊपर गु. और इससे ऊपर पूर्वकपाल में श. दिखाई देगा। सायं मं. को पश्चिमकपाल में देख सकते हैं।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. रजब				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	३१	१	र.	२६	११	उ.भा.	४९	१३	शु.	२	३२	ब.	२६	११	१	१४	२३	२९	मीन			६	३८	१८	२६	१०	२९	२८	४१	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, सं. सूर्य मीन में २८/३३, मु. ४५, (A)
२९	३६	२	चं.	३०	३३	रेव.	५५	१७	शु.	२	५२	कौ.	३०	३३	२	१५	२४	शा.१	मेष	५५	१७	६	३६	१८	२७	११	०	२८	३२	पंचक समाप्त ५५/१७, नेप्च्यून पू.भा. ३ में ४६/३, (B)
२९	४०	३	मं.	३५	५१	अश्वि.	६०	०	ब्र.	४	४	तै.	३	१६	३	१६	२५	२	मेष			६	३५	१८	२७	११	१	२८	२०	बुध शत. में २९/५१, शुक्र मीन में ५१/३,
२९	४५	४	बु.	४२	१७	अश्वि.	२	२१	ऐं.	६	०	व.	९	५	४	१७	२६	३	मेष			६	३४	१८	२८	११	२	२८	६	भ. ९/५ से ४२/१७ तक, सूर्य उ.भा. में ४९/२७,
२९	५०	५	गु.	४९	२	भर.	१०	३	वै.	८	२७	ब.	१५	३९	५	१८	२७	४	वृष	२७	३	६	३३	१८	२९	११	३	२७	४९	
२९	५४	६	शु.	५५	४२	कृत्ति.	१८	०	वि.	११	७	कौ.	२२	२२	६	१९	२८	५	वृष			६	३१	१८	२९	११	४	२७	३१	शुक्र उ.भा. में ३१/४६,
२९	५९	७	श.	६०	०	रोहि.	२५	३७	प्री.	१३	३५	ग.	२८	४१	७	२०	२९	६	मिथुन	५९	५	६	३०	१८	३०	११	५	२७	१०	गुरु धनि. २ में ५/३३, सूर्य सायन मेष में २१/३७, (C)
३०	४	७	र.	१	४०	मृग.	३२	१८	आ.	१५	२३	व.	१	४०	८	२१	३०	७	मिथुन			६	२९	१८	३१	११	६	२६	४७	भ. १/४० से ३४/० तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
३०	८	८	चं.	६	२१	आर्द्रा	३७	२९	सौ.	१६	७	ब.	६	२१	९	२२	चै.१	८	मिथुन			६	२८	१८	३१	११	७	२६	२२	शक चैत्र (शक संवत् १९४३) प्रारंभ,
३०	१३	९	मं.	९	१२	पुन.	४०	४६	शो.	१५	२६	कौ.	९	१२	१०	२३	२	९	कर्क	२५	१०	६	२७	१८	३२	११	८	२५	५४	**होलाष्टक २१ से २८ मार्च**
३०	१८	१०	बु.	९	५५	पुष्य	४१	५६	अ.	१३	७	ग.	९	५५	११	२४	३	१०	कर्क			६	२५	१८	३२	११	९	२५	२४	भ. ३९/९ बाद,
३०	२३	११	गु.	८	२८	आश्ले.	४१	१	सु.	९	५	वि.	८	२८	१२	२५	४	११	सिंह	४१	१	६	२४	१८	३३	११	१०	२४	५२	भ. ८/२८ तक, बुध पू.भा. में ३८/५५, शनि श्रव. ३ (D)
३०	२७	१२	शु.	४	५६	मघा	३८	१०	धृ. शू.	३ ५६	२५ १३	बा.	४	५६	१३	२६	५	१२	सिंह			६	२३	१८	३४	११	११	२४	१७	प्रदोष व्रत,
अवम		१३	श.	५९	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३०	३२	१४	श.	५२	४४	पू.फा.	३३	४४	गं.	४७	५३	ग.	२६	८	१४	२७	६	१३	कन्या	४७	२३	६	२२	१८	३४	११	१२	२३	४१	भ. ५२/४४ बाद,
३०	३७	१५	र.	४४	५४	उ.फा.	२८	७	वृ.	३८	४०	वि.	१८	४९	१५	२८	७	१४	कन्या			६	२०	१८	३५	११	१३	२३	२	भ. १८/४९ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, होलिका दहन (E)

(A) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (B) अवतार दिन श्रीरामकृष्ण परमहंस, शाबान मु. प्रारम्भ, (C) उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुव दिन, (D) में ८/२७, आमलकी एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी, (E) (प्रदोष में), होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	१	१०	९	११	९	१	७
७	११	१६	१४	२७	६	१६	२०	२०
२६	४७	२०	२२	३	२१	२३	२८	२८
२२	३३	७	५४	२७	२१	२२	३९	३९
५९	७४४	३५	८९	१२	७४	५	३	३
३३	७	३७	३३	२८	४०	१८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. २	आर्द्रा २	रोहि. २	शत. ३	धनि. २	उ.भा. १	श्रव. २	रोहि. ४	ज्ये. २

कुण्डली सूर्योदय (२२ मार्च)

लोकभविष्य—सूर्य-शुक्र मीन राशि में आकर पाकराशि (कन्या) पर दृष्टिपात करते हैं। कन्या राशीश बुध व्यय स्थान में है। शनि की सूर्य-शुक्र पर दृष्टि है। यह ग्रहस्थिति सीमाप्रान्तों पर कश्मीर, राजस्थान, आसाम एवं चीन की ओर से आक्रामक स्थिति एवं सीमातिक्रमण से अशान्ति का संकेत देती है।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—१४ से १९ मार्च के मध्य तिलहन, गुड़, शक्कर, रुई, सोना, सभी अनाज, चांदी में अच्छी तेजी के झटके से लाभ लें। आगे लगभग २५ मार्च तक बाजार ऊपर-नीचे रहेंगे। २५/२६ मार्च को अनाज, अलसी, गुड़, खाण्ड, नमक में तेजी से लाभ लें।

आकाशलक्षण—मार्च १४ से २० एवं २५, २६ मार्च को म.प्रदेश, बंगाल, आसाम आदि में कहीं बादलचाल और बूंदाबांदी हो। उ. भारत में वायुवेग रहे और गर्मी अनुभव होने लगे।

कुण्डली सूर्योदय (२८ मार्च)

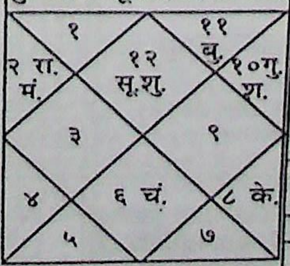

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २८ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१	१०	९	११	९	१	७
१३	२	१९	२३	२८	१३	१६	२०	२०
२३	३३	५४	४०	१७	४९	५४	९	९
३	१५	११	५६	९	३	१३	३५	३५
५९	८१०	३५	९७	१२	७४	४	३	३
११	११	४८	४९	२	५३	५५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ४	उ.फा. २	रोहि. ३	पू.भा. २	धनि. २	उ.भा. ४	श्रव. ३	रोहि. ४	ज्ये. २

श्री वि.सं. २०७७, शाक १९४२, चैत्र कृष्ण पक्ष २६																तारीखें				चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२९ मार्च से १२ अप्रैल, सन् २०२१ ई.) उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु। शु. अस्त रहेगा। बु. भी ६ अप्रै. को पूर्व में अदृश्य हो जायेगा। प्रातः गु. पूर्वकपाल में और इससे ऊपर श. दिखाई देगा। सायं मं. पश्चिमकपाल में होगा।
दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	प्र. चैत्र	अं. मार्च	श. चैत्र	मु. शाबान		घ.	प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	४१	१	चं.	३६	२८	हस्त	२१	४६	धृ.	२८	५५	बा.	१०	४१	१६	२९	८	१५	तुला	४८	२५	६	१९	१८	३६	११	१४	२२	२१	वसन्तोत्सव, होला महल्ला श्रीआनन्दपुर साहब (पं.),
३०	४६	२	मं.	२७	५३	चित्रा	१५	८	व्या.	१८	५९	तै.	२	१०	१७	३०	९	१६	तुला			६	१८	१८	३६	११	१५	२१	३८	भ. ५३/४२ बाद, शुक्र रेव. में १५/३४, राहु रोहि. ३, (A)
३०	५०	३	बु.	१९	३४	स्वा.	८	४०	ह. व.	९ ५९	१३ ५१	वि.	१९	३४	१८	३१	१०	१७	वृश्चिक	४९	६	६	१७	१८	३७	११	१६	२०	५४	भ. १९/३४ तक, सूर्य रेव. में १७/२२, बुध मीन में (B)
३०	५५	४	गु.	११	५१	विशा. अनु.	२ ५७	४१ ३८	सि.	५१	१४	बा.	११	५१	१९	अ.१	११	१८	वृश्चिक			६	१५	१८	३७	११	१७	२०	७	मेला श्रीशीतला माता-कुराली (पं.), अप्रैल प्रारम्भ,
३१	०	५	शु.	५	३	ज्येष्ठा	५३	४२	व्य.	४३	३१	तै.	५	३	२०	२	१२	१९	धनु	५३	४२	६	१४	१८	३८	११	१८	१९	१८	भ. ५९/२१ बाद, मंगल मृग. में ४२/१८, बुध उ.भा. में ४१/५१,
अवम		६	शु.	५९	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथिक्षय,
३१	४	७	श.	५४	५९	मूल	५१	२	व.	३६	५१	वि.	२७	१०	२१	३	१३	२०	धनु			६	१३	१८	३९	११	१९	१८	२८	भ. २७/१० तक,
३१	९	८	र.	५१	५९	पू.षा.	४९	४३	प.	३१	१५	बा.	२३	२९	२२	४	१४	२१	धनु			६	१२	१८	३९	११	२०	१७	३६	श्रीशीतलाष्टमी,
३१	१३	९	चं.	५०	२०	उ.षा.	४९	४४	शि.	२६	४५	तै.	२१	९	२३	५	१५	२२	मकर	४	३८	६	११	१८	४०	११	२१	१६	४२	गुरु धनि. ३ कुम्भ में ४५/३६,
३१	१८	१०	मं.	४९	५९	श्रव.	५१	२	सि.	२३	१८	व.	२०	९	२४	६	१६	२३	मकर			६	९	१८	४१	११	२२	१५	४६	भ. २०/९ से ४९/५९ तक, बुध पूर्व में अस्त ६ घं. ९ मि.,
३१	२३	११	बु.	५०	५२	धनि.	५३	३०	सा.	२०	५०	ब.	२०	२५	२५	७	१७	२४	कुम्भ	२२	९	६	८	१८	४१	११	२३	१४	४९	पंचक प्रारम्भ २२/९, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
३१	२७	१२	गु.	५२	५२	शत.	५७	४	शु.	१९	१७	कौ.	२१	५२	२६	८	१८	२५	कुम्भ			६	७	१८	४२	११	२४	१३	४९	
३१	३२	१३	शु.	५५	५४	पू.भा.	६०	०	शु.	१८	३५	ग.	२४	२३	२७	९	१९	२६	मीन	४५	२६	६	६	१८	४२	११	२५	१२	४८	भ. ५५/५४ बाद, बुध रेव. में ५७/३३, प्रदोषव्रत,
३१	३६	१४	श.	५९	५६	पू.भा.	१	३९	ब्र.	१८	४१	वि.	२७	५५	२८	१०	२०	२७	मीन			६	५	१८	४३	११	२६	११	४६	भ. २७/५५ तक, शुक्र अश्वि. मेष में ०/५८, मेला (C)
३१	४१	३०	र.	६०	०	उ.भा.	७	१३	ऐं.	१९	३०	च.	३२	२५	२९	११	२१	२८	मीन			६	३	१८	४४	११	२७	१०	४१	
३१	४५	३०	चं.	४	५५	रेव.	१३	३७	वै.	२०	५९	ना.	४	५५	३०	१२	२२	२९	मेष	१३	३७	६	२	१८	४४	११	२८	९	३४	पंचक समाप्त १३/३७, सोमवती अमा, चान्द्र संवत्सर २०७७ वि.पूर्ण,

(A) केतु ज्ये. १ में ५८/४२, (B) ४६/०, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (C) पिहोवा तीर्थ (हरि.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ४ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१	११	९	११	९	१	७
२०	१४	२४	५	२९	२२	१७	१९	१९
१७	५८	५	३४	३९	३०	२७	४७	४७
३६	४२	२८	४०	३६	३४	८	१९	१९
५९	८१६	३५	१०७	११	७४	४	३	३
६	१६	५९	३५	२६	२६	२५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (४ अप्रै.)

लोकभविष्य—इस पक्ष में मीन राशिस्थ सूर्य-शुक्र-बुध पर शनि की दृष्टि है एवं शुक्र संवतान्त के लगभग अश्विनी नक्षत्र एवं मेष में आकर कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बनायेगा—"दैत्यगुरुर्यदा मेषे सर्वधान्य-महर्घता।" कुम्भ राशि का गुरु भी जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में भारी महंगाई करे—

"कुम्भराशिं गते जीवे मेघः स्वल्पाम्बुवर्षति।
कृषिनाशं च दुर्भिक्षं पूर्वदेशे समर्घता॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख—पक्षारम्भ में ३०, ३१ मार्च को शेयर एवं सभी अनाज, रुई, सोना में जोरदार घटाबढ़ी रहे। ४ से ९ अप्रैल तक लालमिर्च, सोना, चांदी, मजीठ, लाल चन्दन तेज हों। रुई, कपास, सोना, चांदी में घटःबढ़ी रहे। गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन मन्दे रहें। ५ से ८ अप्रैल तक बाजार अस्थिर एवं १० अप्रैल तक शेयर बाजार एवं किरयाणा तेज रहें।

कुण्डली सूर्योदय (१२ अप्रै.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १२ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	१	११	१०	०	९	१	७
२८	२७	२८	२०	१	२	१८	१९	१९
९	०	५४	३५	८	२५	०	२१	२१
३५	२७	३	४५	३१	३८	१७	५३	५३
५९	७१७	३६	१११	१०	७४	३	३	३
२	३८	११	६	४०	१८	४७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

आकाशलक्षण—मार्च ३०, ३१ एवं अप्रैल १, २, ३, ५, ६, ९, १० एवं ११ अप्रैल को असम, मुम्बई, प. राजस्थान एवं कश्मीर में तेज हवाओं के साथ खण्डवृष्टि हो। उ. भारत में गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगे।

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष शुक्ल	1	6	बु.	18	27	पू.भा.	28	22	व्य.	21	49	मीन	21	38	7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	47	17	15	1	इंग्लिश नववर्ष (सन् 2020 ई.) प्रारम्भ,
	2	7	गु.	21	0	उ.भा.	31	19	व.	22	39	मीन			7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	2	भ. 21/0 बाद, बुध पू.षा. में 28/18, जन्मदिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी,
	3	8	शु.	23	26	रेवती	—	—	प.	23	24	मीन			7	25	17	29	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	3	भ. 10/13 तक, शुक्र धनि. में 17/22,
	4	9	श.	25	32	रेवती	10	5	शि.	23	53	मेष	10	5	7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	4	पंचक समाप्त 10/5, गुरु पू.षा. 1 में 16/22,
	5	10	र.	27	7	अश्वि.	12	27	सि.	23	59	मेष			7	25	17	30	7	19	17	34	7	21	17	43	6	48	17	17	5	
	6	11	चं.	28	2	भरणी	14	15	सा.	23	37	वृष	20	36	7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	44	6	49	17	18	6	भ. 15/34 से 28/2 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	7	12	मं.	28	14	कृत्ति.	15	24	शु.	22	42	वृष			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	7	गुरु उदित 10 जनवरी
	8	13	बु.	27	44	रोहि.	15	51	शु.	21	14	मिथुन	27	49	7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	शुक्र कुम्भ में 28/22, प्रदोष व्रत,
	9	14	गु.	26	34	मृग.	15	37	ब्र.	19	14	मिथुन			7	25	17	33	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	20	9	भ. 26/34 बाद,
	10	15	शु.	24	51	आर्द्रा	14	48	ऐं.	16	46	मिथुन			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	47	6	49	17	21	10	भ. 13/43 तक, यूरेनस मार्गी 31/19, गुरु पूर्व में उदित 7/25, (A)
माघ कृष्ण	11	1	श.	22	41	पुन.	13	30	वै.	13	54	कर्क	7	52	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	11	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, सूर्य उ.षा. में 19/35, बुध उ.षा. में 10/59
	12	2	र.	20	12	पुष्य	11	49	वि./	10	45	कर्क			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	23	12	भ. 30/52 बाद,
									प्री.	31	24																					
	13	3	चं.	17	32	आश्ले.	9	55	आ.	27	58	सिंह	9	55	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	13	भ. 17/32 तक, बुध मकर में 11/34, गुरुबाल्य समाप्त 7/25, (B)
	14	4	मं.	14	49	मघा/	7	55	सौ.	24	32	सिंह			7	25	17	37	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 26/7, मु. 30, पुण्यकाल अगला सारा दिन, (C)
						पू.फा.	29	56																								
	15	5	बु.	12	10	उ.फा.	28	6	शो.	21	12	कन्या	11	28	7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	15	राहु आर्द्रा 2, केतु मूल 4 में 22/3,
	16	6	गु.	9	42	हस्त	26	30	अ.	18	2	कन्या			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	26	16	भ. 9/42 से 20/36 तक, मट्टु पोंगल,
	17	7/	शु.	7	28	चित्रा	25	12	सु.	15	5	तुला	13	49	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	17	जन्मदिन स्वामी श्रीविवेकानन्द जी,
		8		29	33																											अष्टमी तिथिक्षय,
	18	9	श.	28	1	स्वाती	24	15	धृ.	12	25	तुला			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	18	गुरु पू.षा. 2 में 31/1,
	19	10	र.	26	51	विशा.	23	41	शू.	10	2	वृश्चिक	17	47	7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	भ. 15/26 से 26/51 तक, मंगल ज्येष्ठा में 14/32, बुध श्रव. में 10/41,
	20	11	चं.	26	6	अनु.	23	30	गं./	7	58	वृश्चिक			7	24	17	43	7	18	17	46	7	21	17	54	6	49	17	29	20	सूर्य सायन कुम्भ में 20/24, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
									वृ.	30	12																					
	21	12	मं.	25	45	ज्येष्ठा	23	43	ध्रु.	28	46	धनु	23	43	7	23	17	44	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	21	
	22	13	बु.	25	49	मूल	24	19	व्या.	27	39	धनु			7	23	17	45	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	22	भ. 25/49 बाद, प्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
	23	14	गु.	26	17	पू.षा.	25	20	ह.	26	52	धनु			7	23	17	45	7	17	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	23	भ. 14/3 तक,
	24	30	शु.	27	12	उ.षा.	26	45	व.	26	23	मकर	7	39	7	22	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रव. में 21/51, शनि उ.षा. 2 मकर में 9/54, मौनी अमा,
माघ शुक्ल	25	1	श.	28	31	श्रवण	28	35	सि.	26	14	मकर			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	25	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पू.भा. में 17/7, माघ गुप्त नवरात्र प्रा.,
	26	2	र.	30	15	धनि.	30	48	व्य.	26	24	कुम्भ	17	39	7	22	17	48	7	16	17	51	7	19	17	59	6	47	17	33	26	चन्द्रदर्शन, मु. 30, पंचक प्रारम्भ 17/39, बुध धनि. में 29/4, (D)
	27	3	चं.	—	—	शत.	—	—	व.	26	51	कुम्भ			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	27	
	28	3	मं.	8	22	शत.	9	22	प.	27	31	मीन	29	29	7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	28	भ. 21/34 बाद, गौरी तृतीया (गोंतरी) तिल- (E)
	29	4	बु.	10	46	पू.भा.	12	13	शि.	28	21	मीन			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	35	29	भ. 10/46 तक, श्रीलक्ष्मी पंचमी/वसन्त पंचमी , (F)
	30	5	गु.	13	19	उ.भा.	15	12	सि.	29	12	मीन			7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	2	6	46	17	36	30	बुध कुम्भ में 26/53, बुध पश्चिम में उदित 17/52, शनि पूर्व (G)
	31	6	शु.	15	52	रेवती	18	9	सा.	29	58	मेष	18	9	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	31	पंचक समाप्त 18/9,

(A) पौषी पूर्णिमा, माघ स्नान प्रारम्भ, श्री सत्यनारायण व्रत, (B) लोहड़ी (पं., हि.प्र., हरि., ज. क.), श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत , (C) शुक्र शत. मे 15/57,
मकरसंक्रान्ति, (D) भारत गणतन्त्र दिवस, (E) कुन्द-वरद चतुर्थी, (F) श्री लक्ष्मी/सरस्वती-पूजन, (G) में उदित 7/20,

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
माघ शुक्ल	1	7	श.	18	11	अश्वि.	20	53	शु.	30	29	मेष			7	18	17	54	7	14	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	भ. 18/11 से 31/7 तक, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), (A)
	2	8	र.	20	4	भरणी	23	11	शु.	30	36	वृष	29	40	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	2	शुक्र मीन में 26/17, भीष्माष्टमी,
	3	9	चं.	21	19	कृत्ति.	24	52	ब्र.	30	12	वृष			7	17	17	55	7	12	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	बुध शत. में 29/25, गुरु पू.षा. 3 में 8/54, नवरात्र समाप्त,
	4	10	मं.	21	50	रोहि.	25	49	ऐं.	29	13	वृष			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	4	नवरात्र-पारणा (देखें पृ. 18),
	5	11	बु.	21	31	मृग.	25	58	वै.	27	35	मिथुन	13	59	7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	भ. 9/40 से 21/31 तक, शुक्र उ.भा. में 21/55, जया एकादशी व्रत (स.),
	6	12	गु.	20	24	आर्द्रा	25	21	वि.	25	19	मिथुन			7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	सूर्य धनि. में 24/57, भीष्म द्वादशी,
	7	13	शु.	18	32	पुन.	24	0	प्री.	22	29	कर्क	18	24	7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	मंगल मूल धनु में 27/52, प्रदोष व्रत,
	8	14	श.	16	2	पुष्य	22	5	आ.	19	10	कर्क			7	14	18	0	7	9	18	1	7	12	18	9	6	41	17	43	8	भ. 16/2 से 26/32 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	9	15	र.	13	3	आश्ले.	19	43	सौ.	15	28	सिंह	19	43	7	13	18	1	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	9	श्री गुरु रविदास जयन्ती, माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त,
फाल्गुन कृष्ण	10	1/	चं.	9	45	मघा	17	5	शो.	11	31	सिंह			7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
		2		30	18																											द्वितीया तिथिक्षय,
	11	3	मं.	26	53	पू.फा.	14	23	अ./	7	28	कन्या	19	43	7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	40	17	45	11	भ. 16/35 से 26/53 तक,
									सु.	27	27																					
	12	4	बु.	23	39	उ.फा.	11	46	धृ.	23	36	कन्या			7	10	18	3	7	6	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	12	नेप्च्यून पू.भा. 2 में 16/44, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत,
	13	5	गु.	20	46	हस्त	9	25	शू.	20	2	तुला	20	22	7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	सं. सूर्य कुम्भ में 15/3, मु. 30, पुण्यकाल 8/39 बाद,
	14	6	शु.	18	21	चित्रा/	7	27	गं.	16	50	तुला			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	38	17	47	14	भ. 18/21 से 29/25 तक,
						स्वाती	30	1																								
	15	7	श.	16	29	विशा.	29	9	वृ.	14	4	वृश्चिक	23	18	7	8	18	6	7	4	18	7	7	7	18	14	6	37	17	47	15	
	16	8	र.	15	14	अनु.	28	53	धृ.	11	48	वृश्चिक			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	16	बुध वक्री 30/23,
	17	9	चं.	14	35	ज्येष्ठा	29	13	व्या.	10	1	धनु	29	13	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	भ. 26/34 बाद, शुक्र रेवती में 8/3,
	18	10	मं.	14	33	मूल	30	6	ह.	8	42	धनु			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	18	भ. 14/33 तक,
	19	11	बु.	15	2	पू.षा.	—	—	व.	7	49	धनु			7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	सूर्य शत. में 29/29, गुरु पू.षा.4 में 9/43, सूर्य सायन मीन में (B)
	20	12	गु.	16	0	पू.षा.	7	27	सि.	7	19	मकर	13	52	7	3	18	10	7	0	18	10	7	3	18	18	6	33	17	50	20	प्रदोष व्रत,
	21	13	शु.	17	21	उ.षा.	9	13	व्य.	7	7	मकर			7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	21	भ. 17/21 से 30/12 तक, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
	22	14	श.	19	3	श्रवण	11	19	व.	7	12	कुम्भ	24	28	7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	31	17	52	22	पंचक प्रारम्भ 24/28, शनि उ.षा. 3 में 30/34,
	23	30	र.	21	2	धनि.	13	42	प.	7	32	कुम्भ			7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	31	17	52	23	
फाल्गुन शु.	24	1	चं.	23	15	शत.	16	20	शि.	8	3	कुम्भ			6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	25	2	मं.	25	40	पू.भा.	19	10	सि.	8	44	मीन	12	26	6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	25	चन्द्रदर्शन, मु. 30, प्लूटो उ.षा. 2 मकर में 7/41, जन्मदिन (C)
	26	3	बु.	28	12	उ.भा.	22	8	सा.	9	33	मीन			6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	
	27	4	गु.	30	44	रेवती	25	8	शु.	10	26	मेष	25	8	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 17/28 से 30/44 तक, पंचक समाप्त 25/8, मंगल पू.षा. में 13/11,
	28	5	शु.	—	—	अश्वि.	28	2	शु.	11	18	मेष			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	शुक्र अश्वि. मेष में 25/32,
	29	5	श.	9	9	भरणी	30	42	ब्र.	12	4	मेष			6	54	18	16	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	29	

(A) आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव, (B) 10/26, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, बुध पश्चिम में अस्त 18/9, विजया एकादशी व्रत (स.), (C) श्रीरामकृष्ण परमहंस.

(A) आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव, (B) 10/26, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, बुध पश्चिम में अस्त 18/9, विजया एकादशी व्रत (स.), (C) श्रीरामकृष्ण परमहंस.

मास पक्ष	[illegible]	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन शुक्ल	1	6	र.	11	16	कृत्ति.	—	—	ऐं.	12	35	वृष	13	18	6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	1	
	2	7	चं.	12	53	कृत्ति.	8	55	वैं.	12	43	वृष			6	51	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	2	भ. 12/53 से 25/22 तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
	3	8	मं.	13	50	रोहि.	10	31	वि.	12	22	मिथुन	23	3	6	50	18	19	6	48	18	19	6	52	18	25	6	23	17	57	3	वक्री बुध धनि. में 13/21, बुध पूर्व में उदित 6/50,
	4	9	बु.	14	0	मृग.	11	23	प्री.	11	24	मिथुन			6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	सूर्य पू.भा. में 11/42,
	5	10	गु.	13	19	आर्द्रा	11	26	आ.	9	47	कर्क	28	54	6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	भ. 24/33 बाद,
	6	11	शु.	11	47	पुन.	10	38	सौ./	7	30	कर्क			6	47	18	21	6	44	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	भ. 11/47 तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी,
									शो.	28	35																					
	7	12/	श.	9	29	पुष्य	9	5	अ.	25	6	कर्क			6	46	18	21	6	43	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	गुरु उ.पा. 1 में 30/7, शनिप्रदोष व्रत,
		13		30	31																											त्रयोदशी तिथिक्षय,
	8	14	र.	27	4	आश्ले./	6	52	सु.	21	11	सिंह	6	52	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	0	8	भ. 27/4 बाद,
						मघा	28	9																								
	9	15	चं.	23	17	पू.फा.	25	8	धृ.	16	57	कन्या	30	21	6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	भ. 13/10 तक, होलिका-दहन (प्रदोष में), होलाष्टक समाप्त, (A)
चैत्र कृष्ण	10	1	मं.	19	23	उ.फा.	22	1	शू.	12	34	कन्या			6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध मार्गी 9/19, वसन्तोत्सव, होला (B)
	11	2	बु.	15	33	हस्त	18	59	गं./	8	11	तुला	29	34	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	30	6	15	18	1	11	भ. 25/46 बाद, शुक्र भर. में 30/18, यूरेनस अश्वि. 4 में 16/11,
									वृ.	27	58																					
	12	3	गु.	11	59	चित्रा	16	15	ध्रु.	24	3	तुला			6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	भ. 11/59 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, मेला श्रीशीतला माता (कुराली) पं.
	13	4/	शु.	8	51	स्वाती	13	59	व्या.	20	34	तुला			6	39	18	25	6	37	18	25	6	42	18	31	6	13	18	2	13	
		5		30	17																											पंचमी तिथिक्षय,
	14	6	श.	28	25	विशा.	12	20	ह.	17	37	वृश्चिक	6	41	6	37	18	26	6	35	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	भ. 28/25 बाद, स. सूर्य मीन में 11/53, मु. 45, पुण्यकाल 18/17 तक,
	15	7	र.	27	19	अनु.	11	23	व.	15	15	वृश्चिक			6	36	18	27	6	34	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	भ. 15/52 तक,
	16	8	चं.	27	0	ज्येष्ठा	11	12	सि.	13	31	धनु	11	12	6	35	18	27	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	4	16	श्रीशीतला पूजन, श्रीशीतलाष्टमी,
	17	9	मं.	27	24	मूल	11	46	व्य.	12	22	धनु			6	34	18	28	6	32	18	27	6	37	18	33	6	9	18	4	17	सूर्य उ.भा. में 20/13, मंगल उ.षा. में 19/29, बुध शत. में 21/10,
	18	10	बु.	28	26	पू.षा.	13	0	व.	11	46	मकर	19	24	6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	18	भ. 15/55 से 28/26 तक, राहु आर्द्रा 1, केतु मूल 3 में 19/50,
	19	11	गु.	29	59	उ.षा.	14	49	प.	11	38	मकर			6	31	18	29	6	30	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	19	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.),
	20	12	शु.	—	—	श्रव.	17	5	शि.	11	51	कुम्भ	30	20	6	30	18	30	6	29	18	29	6	34	18	34	6	5	18	5	20	पंचक प्रारम्भ 30/20, सूर्य सायन मेष में 9/20, उत्तरगोल प्रारम्भ, (C)
	21	12	श.	7	56	धनि.	19	39	सि.	12	21	कुम्भ			6	29	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	21	महावारुणी पर्व (19/40 बाद), शनि प्रदोष व्रत, शक संवत्सर 1942 प्रा.,
	22	13	र.	10	8	शत.	22	26	सा.	13	2	कुम्भ			6	27	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	22	भ. 10/8 से 23/19 तक, मंगल मकर में 14/40, वारुणी पर्व (D)
	23	14	चं.	12	30	पू.भा.	25	21	शु.	13	50	मीन	18	36	6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	23	
	24	30	मं.	14	58	उ.भा.	28	18	श.	14	42	मीन			6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	24	शुक्र कृत्ति. में 29/27, भौमवती अमा, चान्द्र संवत्सर 2076 वि. पूर्ण,
चैत्र शुक्ल	25	1	बु.	17	27	रेव.	—	—	ब्र.	15	36	मीन			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	चैत्र शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, चान्द्र संवत्सर 2077 वि. (E)
	26	2	गु.	19	53	रेव.	7	16	ऐं.	16	27	मेष	7	16	6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	पंचक समाप्त 7/16,
	27	3	शु.	22	13	अश्वि.	10	9	वैं.	17	14	मेष			6	21	18	34	6	20	18	33	6	26	18	38	5	58	18	9	27	श्रीमत्स्य जयन्ती, गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया,
	28	4	श.	24	18	भर.	12	52	वि.	17	52	वृष	19	30	6	20	18	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	28	भ. 11/16 से 24/18 तक, शुक्र वृष में 15/37,
	29	5	र.	26	1	कृत्ति.	15	17	प्रि.	18	15	वृष			6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	9	29	गुरु उ.पा. 2 मकर में 27/48, श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग पंचमी, हयव्रत,
	30	6	चं.	27	15	रोहि.	17	17	आ.	18	18	मिथुन	30	5	6	18	18	36	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	30	स्कन्द षष्ठी,
	31	7	मं.	27	50	मृग.	18	43	सौ.	17	53	मिथुन			6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	भ. 27/50 बाद, सूर्य रेवती में 6/57, बुध पू.भा. में 7/55,

होलाष्टक
2 से 9 मार्च

(A) श्रीसत्यनारायण व्रत, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, (B) महल्ला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (C) महाविषुव-दिन, पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.), (D) (10/8 तक), मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
(E) प्रारम्भ, वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र-प्राशन, गुड़ी पड़वा, चन्द्रव्रत.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र शुक्ल	1	8	बु.	27	40	आर्द्रा	19	29	शो.	16	55	मिथुन			6	15	18	38	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	भ. 15/45 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी,
	2	9	गु.	26	43	पुन.	19	28	अ.	15	21	कर्क	13	32	6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	श्रीरामनवमी (पुनर्वसुयुता), नवरात्र समाप्त,
	3	10	शु.	24	59	पुष्य	18	40	सु.	13	9	कर्क			6	13	18	39	6	12	18	36	6	19	18	41	5	51	18	12	3	शनि उ.षा. 4 में 7/52, नवरात्र-पारणा,
	4	11	श.	22	30	आश्ले.	17	8	धृ.	10	20	सिंह	17	8	6	12	18	40	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	भ. 11/44 से 22/30 तक, कामदा एकादशी व्रत (स.), दोलोत्सव
	5	12	र.	19	25	मघा	14	57	शू./	6	57	सिंह			6	10	18	40	6	10	18	38	6	17	18	42	5	49	18	12	5	मंगल श्रव. में 24/1, श्री विष्णुदमनोत्सव, प्रदोष व्रत,
									गं.	27	7																					
	6	13	चं.	15	52	पू.फा.	12	16	वृ.	22	56	कन्या	17	32	6	9	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), अनंग त्रयोदशी, दमनक चतुर्दशी,
	7	14	मं.	12	1	उ.फा./	9	15	ध्रु.	18	35	कन्या			6	8	18	41	6	8	18	39	6	15	18	43	5	47	18	13	7	भ. 12/1 से 22/3 तक, बुध मीन में 14/20, श्रीशिव दमनोत्सव,(A)
						हस्त	30	6																								
	8	15	बु.	8	5	चित्रा	27	2	व्या.	14	11	तुला	16	33	6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	44	5	46	18	14	8	शुक्र रोहि. में 16/1, चैत्री पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्रीहनुमान (B)
वैशाख कृष्ण		1		28	13																											वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	9	2	गु.	24	39	स्वाती	24	14	ह./	9	55	तुला			6	6	18	43	6	6	18	40	6	13	18	44	5	45	18	14	9	बुध उ.भा. में 19/19,
									व.	29	56																					
	10	3	शु.	21	32	विशा.	21	54	सि.	26	21	वृश्चिक	16	26	6	4	18	43	6	5	18	40	6	11	18	45	5	44	18	15	10	भ. 11/5 से 21/32 तक,
	11	4	श.	19	2	अनु.	20	11	व्य.	23	19	वृश्चिक			6	3	18	44	6	4	18	41	6	10	18	45	5	43	18	15	11	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	12	5	र.	17	16	ज्येष्ठा	19	12	व.	20	53	धनु	19	12	6	2	18	45	6	2	18	41	6	9	18	46	5	42	18	16	12	
	13	6	चं.	16	19	मूल	19	2	प.	19	7	धनु			6	1	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	41	18	16	13	भ. 16/19 से 28/15 तक, सं. सूर्य अश्वि. मेष में 20/23, मु. 30, (C)
	14	7	मं.	16	11	पू.षा.	19	40	शि.	18	1	मकर	25	57	6	0	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	40	18	17	14	
	15	8	बु.	16	51	उ.षा.	21	4	सि.	17	31	मकर			5	59	18	46	5	59	18	43	6	6	18	47	5	39	18	17	15	
	16	9	गु.	18	12	श्रव.	23	5	सा.	17	32	मकर			5	58	18	47	5	58	18	44	6	5	18	48	5	38	18	17	16	
	17	10	शु.	20	4	धनि.	25	35	शु.	17	58	कुम्भ	12	17	5	56	18	48	5	57	18	44	6	4	18	48	5	37	18	18	17	भ. 7/8 से 20/4 तक, पंचक प्रारम्भ 12/17, बुध रेव. में 21/40,
	18	11	श.	22	17	शत.	28	24	शु.	18	41	कुम्भ			5	55	18	48	5	56	18	45	6	3	18	49	5	36	18	18	18	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,
	19	12	र.	24	43	पू.भा.	—	—	ब्र.	19	33	मीन	24	37	5	54	18	49	5	55	18	45	6	3	18	49	5	35	18	19	19	सूर्य सायन वृष में 20/17, ग्रीष्मऋतु प्रारम्भ,
	20	13	चं.	27	12	पू.भा.	7	22	ऐं.	20	30	मीन			5	53	18	50	5	54	18	46	6	2	18	50	5	34	18	19	20	भ. 27/12 बाद, सोमप्रदोष व्रत,
	21	14	मं.	29	38	उ.भा.	10	22	वै.	21	25	मीन			5	52	18	50	5	53	18	47	6	1	18	50	5	34	18	20	21	भ. 16/25 तक, अगस्त्य अस्त,
	22	30	बु.	—	—	रेवती	13	17	वि.	22	16	मेष	13	17	5	51	18	51	5	52	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	पंचक समाप्त 13/17,
	23	30	गु.	7	55	अश्वि.	16	4	प्री.	22	59	मेष			5	50	18	52	5	51	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	23	बुध पूर्व में अस्त 5/50,
वैशाख शुक्ल	24	1	शु.	10	1	भरणी	18	39	आ.	23	31	वृष	25	15	5	49	18	52	5	50	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, मंगल धनि. में 28/53, (D)
	25	2	श.	11	52	कृत्ति.	20	57	सौ.	23	50	वृष			5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	52	5	30	18	22	25	प्लूटो वक्री 24/21, श्रीपरशुराम जयन्ती, श्री शिवाजी जयन्ती,
	26	3	र.	13	23	रोहि.	22	55	शो.	23	53	वृष			5	47	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	22	26	भ. 25/56 बाद, अक्षय तृतीया,
	27	4	चं.	14	30	मृग.	24	29	अ.	23	36	मिथुन	11	46	5	46	18	54	5	48	18	50	5	55	18	53	5	29	18	23	27	भ. 14/30 तक, सूर्य भर. में 12/8, शुक्र मृग. में 16/51,
	28	5	मं.	15	8	आर्द्रा	25	32	सु.	22	55	मिथुन			5	45	18	55	5	47	18	51	5	55	18	54	5	28	18	23	28	श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	29	6	बु.	15	12	पुन.	26	1	धृ.	21	47	कर्क	19	57	5	41	18	56	5	46	18	51	5	54	18	55	5	27	18	24	29	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.),
	30	7	गु.	14	39	पुष्य	25	52	शू.	20	8	कर्क			5	43	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	30	भ. 14/39 से 26/3 तक, श्रीगंगा जन्म,

(A) श्रीसत्यनारायण व्रत, (B) जयन्ती (द.भा.), (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, वैशाखी (पंजाब, हरियाणा, हि.प्र.), (D) बुध अश्वि. मेष में 26/33,

(A) श्रीसत्यनारायण व्रत, (B) जयन्ती (द.भा.), (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, वैशाखी (पंजाब, हरियाणा, हि.प्र.), (D) बुध अश्वि. मेष में 26/33,

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
वैशाख शुक्ल	1	8	शु.	13	27	आश्ले.	25	4	ग.	17	58	सिंह	25	4	5	42	18	57	5	44	18	52	5	52	18	56	5	25	18	25	1	बुध भर. में 16/0,
	2	9	श.	11	36	मघा	23	40	वृ.	15	17	सिंह			5	42	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	25	18	25	2	श्रीजानकी जयन्ती,
	3	10	र.	9	9	पू.फा.	21	42	ध्रु.	12	8	कन्या	27	8	5	41	18	58	5	42	18	54	5	51	18	57	5	24	18	26	3	भ. 19/41 बाद, मोहिनी एकादशी व्रत (स्मा.),
	4	11/	चं.	6	13	उ.फा.	19	19	व्या./	8	35	कन्या			5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	4	भ. 6/13 तक, मंगल कुम्भ में 20/40, मोहिनी एकादशी व्रत(वै.), (A)
		12		26	54				ह.	28	44																					द्वादशी तिथिक्षय,
	5	13	मं.	23	21	हस्त	16	39	व.	24	42	तुला	27	15	5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	5	भौमप्रदोष व्रत,
	6	14	बु.	19	45	चित्रा	13	51	सि.	20	38	तुला			5	38	19	0	5	40	18	55	5	48	18	58	5	22	18	27	6	भ. 19/45 बाद, श्रीनृसिंह जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ.13),
	7	15	गु.	16	15	स्वाती	11	7	व्य.	16	39	वृश्चिक	27	13	5	37	19	1	5	39	18	56	5	48	18	59	5	21	18	28	7	भ. 6/0 तक, बुध कृत्ति. में 20/51, वैशाखी पूर्णिमा, श्रीकूर्म (B)
ज्येष्ठ कृष्ण	8	1	शु.	13	2	विशा.	8	38	व.	12	55	वृश्चिक			5	37	19	2	5	39	18	57	5	47	18	59	5	21	18	28	8	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	9	2	श.	10	15	अनु./	6	33	प.	9	33	धनु	29	2	5	36	19	2	5	38	18	57	5	46	19	0	5	20	18	29	9	भ. 21/10 बाद, बुध वृष में 9/47,
						ज्येष्ठा	29	2																								
	10	3	र.	8	4	मूल	28	13	शि./	6	40	धनु			5	35	19	3	5	37	18	58	5	46	19	1	5	20	18	29	10	भ. 8/4 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
									सि.	28	21																					
	11	4	चं.	6	35	पू.षा.	28	9	सा.	26	40	धनु			5	34	19	4	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	30	11	सूर्य कृत्ति. में 6/22, शनि वक्री 9/39, यूरेनस भर. 1 में 23/23,
	12	5	मं.	5	53	उ.षा.	28	54	शु.	25	37	मकर	10	16	5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	2	5	18	18	30	12	
	13	6	बु.	5	59	श्रव.	—	—	शु.	25	11	मकर			5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	13	भ. 5/59 से 18/25 तक, बुध रोहि. में 26/55, शुक्र वक्री 12/15,
	14	7	गु.	6	51	श्रव.	6	22	ब्र.	25	16	कुम्भ	19	21	5	32	19	5	5	35	19	0	5	43	19	3	5	17	18	31	14	पंचक प्रारम्भ 19/21, सं. सूर्य वृष में 17/16, मु. 30, पुण्यकाल (C)
	15	8	शु.	8	22	धनि.	8	29	ऐं.	25	47	कुम्भ			5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	
	16	9	श.	10	23	शत.	11	5	वै.	26	35	कुम्भ			5	31	19	7	5	34	19	1	5	42	19	4	5	16	18	32	16	भ. 23/32 बाद, बुध पश्चिम में उदित 19/7,
	17	10	र.	12	42	पू.भा.	13	58	वि.	27	31	मीन	7	14	5	30	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	भ. 12/42 तक,
	18	11	चं.	15	9	उ.भा.	16	57	प्री.	28	28	मीन			5	30	19	8	5	33	19	3	5	41	19	5	5	15	18	33	18	अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली एकादशी (पं.),
	19	12	मं.	17	31	रेवती	19	53	आ.	29	20	मेष	19	53	5	29	19	9	5	32	19	3	5	41	19	6	5	15	18	34	19	पंचक समाप्त 19/53,
	20	13	बु.	19	43	अश्वि.	22	37	सौ.	—	—	मेष			5	29	19	9	5	32	19	4	5	40	19	6	5	15	18	34	20	भ. 19/43 बाद, बुध मृग. में 24/37, राहु मृग. 4, केतु मूल 2 (D)
	21	14	गु.	21	36	भरणी	25	3	सौ.	6	0	मेष			5	28	19	10	5	31	19	4	5	40	19	7	5	14	18	35	21	भ. 8/40 तक,
	22	30	शु.	23	8	कृत्ति.	27	9	शो.	6	25	वृष	7	37	5	28	19	11	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष), भावुका अमा, शनैश्चर जयन्ती,
ज्येष्ठ शुक्ल	23	1	श.	24	17	रोहि.	28	51	अ.	6	34	वृष			5	27	19	11	5	30	19	6	5	39	19	8	5	14	18	36	23	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	24	2	र.	25	1	मृग.	—	—	सु.	6	24	मिथुन	17	33	5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य रोहि. में 26/33, बुध मिथुन में 23/58,
	25	3	चं.	25	18	मृग.	6	9	धृ./	5	54	मिथुन			5	27	19	12	5	30	19	7	5	39	19	9	5	13	18	37	25	रम्भा तृतीया, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.),
									शू.	29	4																					शुक्र अस्त 31 मई
	26	4	मं.	25	9	आर्द्रा	7	2	ग.	27	52	कर्क	25	24	5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	भ. 13/13 से 25/9 तक, बलिदानदिन श्रीगुरु अर्जुन देव जी,
	27	5	बु.	24	32	पुन.	7	28	वृ.	26	19	कर्क			5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	27	
	28	6	गु.	23	27	पुष्य	7	26	ध्रु.	24	23	कर्क			5	25	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	वक्री शुक्र रोहि. में 12/31, शुक्र-वार्धक्य प्रारम्भ 19/16, (E)
	29	7	शु.	21	55	आश्ले.	6	58	व्या.	22	5	सिंह	6	58	5	25	19	15	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	भ. 21/55 बाद, बुध आर्द्रा में 14/06,
	30	8	श.	19	58	मघा/	6	2	ह.	19	27	सिंह			5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	भ. 8/57 तक, नेप्च्यून पू.भा. 3 में 8/40,
						पू.फा.	28	42																								
	31	9	र.	17	37	उ.फा.	27	1	व.	16	29	कन्या	10	19	5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	31	शुक्र पश्चिम में अस्त 19/16,

(A) त्रिस्पृशा महाद्वादशी, (B) जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त, (C) 10/52 बाद, मंगल शत. में 14/0, गुरु वक्री 20/3, (D) में 17/40, सूर्य सायन मिथुन में 19/20, प्रदोषव्रत, (E) विन्ध्यवासिनी-पूजा, अरण्य षष्ठी,

श्री वि. सं. 2077 तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) जून, सन् 2020 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्येष्ठ शुक्ल	1	10	चं.	14	58	हस्त	25	3	सि.	13	16	कन्या			5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	भ. 25/31 बाद, श्रीगंगा दशहरा,
	2	11	मं.	12	5	चित्रा	22	54	व्य.	9	51	तुला	11	59	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	2	भ. 12/5 तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.),
	3	12	बु.	9	5	स्वाती	20	43	व./	6	21	तुला			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	मंगल पू.भा. में 9/39, चम्पा द्वादशी, प्रदोष व्रत,
									प.	26	49																					
	4	13/	गु.	6	6	विशा.	18	36	शि.	23	24	वृश्चिक	13	7	5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	41	4	भ. 27/16 बाद,
		14		27	16																											चतुर्दशी तिथिक्षय,
	5	15	शु.	24	42	अनु.	16	43	सि.	20	12	वृश्चिक			5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	भ. 13/59 तक, वट सावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष), श्रीसत्यनारायण व्रत,
आषाढ़ कृष्ण	6	1	श.	22	33	ज्येष्ठा	15	12	सा.	17	19	धनु	15	12	5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	42	6	आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	7	2	र.	20	56	मूल	14	10	शु.	14	50	धनु			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	सूर्य मृग. में 24/28,
	8	3	चं.	19	56	पू.षा.	13	45	शु.	12	52	मकर	19	44	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	15	5	11	18	43	8	भ. 8/26 से 19/56 तक, शुक्र पूर्व में उदित 5/23, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	9	4	मं.	19	39	उ.षा.	14	0	ब्र.	11	26	मकर			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	
	10	5	बु.	20	4	श्रव.	14	57	ऐं.	10	34	कुम्भ	27	41	5	23	19	21	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	पंचक प्रारम्भ 27/41,
	11	6	गु.	21	11	धनि.	16	35	वै.	10	16	कुम्भ			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	44	11	भ. 21/11 बाद, शुक्र-बाल्य समाप्त 5/23,
	12	7	शु.	22	52	शत.	18	48	वि.	10	27	कुम्भ			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	12	भ. 10/2 तक,
	13	8	श.	24	59	पू.भा.	21	27	प्री.	11	1	मीन	14	46	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	13	
	14	9	र.	27	19	उ.भा.	24	21	आ.	11	51	मीन			5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	18	5	11	18	45	14	सं. सूर्य मिथुन में 23/53, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, बुध पुन. में 9/19,
	15	10	चं.	—	—	रेवती	27	17	सौ.	12	47	मेष	27	17	5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	15	भ. 16/29 बाद, पंचक समाप्त 27/17,
	16	10	मं.	5	40	अश्वि.	—	—	शो.	13	41	मेष			5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	भ. 5/40 तक,
	17	11	बु.	7	50	अश्वि.	6	3	अ.	14	23	मेष			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	12	18	46	17	योगिनी एकादशी व्रत (स.),
	18	12	गु.	9	39	भरणी	8	30	सु.	14	48	वृष	15	3	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	मंगल मीन में 20/13, बुध वक्री 10/28, प्रदोष व्रत,
	19	13	शु.	11	1	कृत्ति.	10	31	धृ.	14	51	वृष			5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	19	भ. 11/1 से 23/27 तक, वक्री शनि. उ.षा. 3 में 5/30,
	20	14	श.	11	52	रोहि.	12	1	शू.	14	30	मिथुन	24	35	5	24	19	24	5	28	19	18	5	37	19	19	5	12	18	47	20	सूर्य सायन कर्क में 27/15, दक्षिणायन एवं वर्षा ऋतु प्रारम्भ, ग्रहणवेध,
	21	30	र.	12	11	मृग.	13	1	गं.	13	44	मिथुन			5	24	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	21	सूर्य आर्द्रा में 23/27, सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य), चूड़ामणि योग (A)
आषाढ़ शुक्ल	22	1	चं.	11	59	आर्द्रा	13	31	वृ.	12	34	मिथुन			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	22	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, वक्री बुध आर्द्रा (B)
	23	2	मं.	11	19	पुन.	13	32	ध्रु.	11	1	कर्क	7	34	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	मंगल उ.भा. में 28/9, नेप्च्यून वक्री 10/6, रथयात्रा (पुरी), (C)
	24	3	बु.	10	14	पुष्य	13	10	व्या.	9	8	कर्क			5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	भ. 21/31 बाद, ग्रहणवेध,
	25	4	गु.	8	48	आश्ले.	12	26	ह./	6	57	सिंह	12	26	5	25	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	13	48	25	भ. 8/48 तक, शुक्र मार्गी 12/18,
									व.	28	31																					
	26	5/	शु.	7	3	मघा	11	25	सि.	25	54	सिंह			5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	26	कुमार षष्ठी,
		6		29	4																											षष्ठी तिथिक्षय,
	27	7	श.	26	54	पू.फा.	10	11	व्य.	23	6	कन्या	15	50	5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	भ. 26/54 बाद, विवस्वत् सप्तमी,
	28	8	र.	24	36	उ.फा.	8	46	व.	20	12	कन्या			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	भ. 13/45 तक, वक्री प्लूटो उ.षा. 1 धनु में 17/56,
	29	9	चं.	22	13	हस्त	7	14	प.	17	14	तुला	18	26	5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	वक्री गुरु उ.षा. 1 धनु में 29/25, आषाढ़ गुप्त नवरात्र समाप्त,
	30	10	मं.	19	50	चित्रा/	5	38	शि.	14	14	तुला			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	नवरात्रा-पारणा,
						स्वाती	28	4																								

शुक्र उदित 8 जून

चूड़ामणियोग सूर्यग्रहण 21 जून

(A) सूर्यग्रहण) (देखें पृ. 17). (B) में 13/9, बुध पश्चिम में अस्त 19/24, आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, ग्रहणवेध, (C) श्रीजगदीश रथोत्सव, ग्रहणवेध,

श्री वि. सं. 2077 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जुलाई, सन् 2020 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आषाढ़ शुक्ल	1	11	बु.	17	30	विशा.	26	34	सि.	11	16	वृश्चिक	20	55	5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	15	18	48	1	भ. 6/40 से 17/30 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), (A)
	2	12	गु.	15	17	अनु.	25	13	सा.	8	23	वृश्चिक			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	2	प्रदोप व्रत,
	3	13	शु.	13	17	ज्येष्ठा	24	7	शु./	5	40	धनु	24	7	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	20	5	16	18	48	3	
									शु.	27	9																					
	4	14	श.	11	34	मूल	23	22	ब्र.	24	55	धनु			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	4	भ. 11/34 से 22/54 तक, श्रीशिव शयनोत्सव, श्रीसत्यनारायण (B)
	5	15	र.	10	14	पू.षा.	23	2	ऐं.	23	2	मकर	29	1	5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	5	सूर्य पुन. में 23/3, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा (व्यास-पूजा), (C)
श्रावण कृष्ण	6	1	चं.	9	22	उ.षा.	23	11	वै.	21	33	मकर			5	30	19	25	5	33	19	18	5	42	19	20	5	17	18	48	6	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	7	2	मं.	9	3	श्रव.	23	55	वि.	20	32	मकर			5	30	19	24	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	भ. 21/11 बाद, अशून्य शयन व्रत,
	8	3	बु.	9	19	धनि.	25	15	प्री.	20	0	कुम्भ	12	31	5	31	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	भ. 9/19 तक, पंचक प्रारम्भ 12/31, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	9	4	गु.	10	11	शत.	27	9	आ.	19	56	कुम्भ			5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	9	
	10	5	शु.	11	38	पू.भा.	—	—	सौ.	20	17	मीन	22	54	5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	10	बुध पूर्व में उदित 5/32,
	11	6	श.	13	33	पू.भा.	5	33	शो.	20	57	मीन			5	32	19	24	5	35	19	18	5	45	19	20	5	19	18	47	11	भ. 13/33 से 26/40 तक,
	12	7	र.	15	48	उ.भा.	8	18	अ.	21	50	मीन			5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	12	बुध मार्गी 13/57,
	13	8	चं.	18	9	रेवती	11	14	सु.	22	46	मेष	11	14	5	33	19	23	5	36	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	13	पंचक समाप्त 11/14,
	14	9	मं.	20	24	अश्वि.	14	6	धृ.	23	35	मेष			5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	
	15	10	बु.	22	20	भरणी	16	43	शू.	24	8	वृष	23	18	5	34	19	22	5	37	19	16	5	47	19	19	5	21	18	47	15	भ. 9/22 से 22/20 तक,
	16	11	गु.	23	45	कृत्ति.	18	53	गं.	24	18	वृष			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	16	सं. सूर्य कर्क में 10/47, मु. 30, पुण्यकाल 17/11 तक, (D)
	17	12	शु.	24	33	रोहि.	20	27	वृ.	23	58	वृष			5	35	19	21	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	वक्री नेप्च्यून पू.भा. 2 में 13/58,
	18	13	श.	24	42	मृग.	21	23	ध्रु.	23	6	मिथुन	9	0	5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	18	5	22	18	46	18	भ. 24/42 बाद, शनिप्रदोष व्रत,
	19	14	र.	24	10	आर्द्रा	21	40	व्या.	21	44	मिथुन			5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	23	18	45	19	भ. 12/26 तक, सूर्य पुष्य में 22/36, श्रावण-शिवरात्रि,
	20	30	चं.	23	3	पुन.	21	20	ह.	19	51	कर्क	15	28	5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	सोमवती अमा, हरियाली अमा,
श्रावण शुक्ल	21	1	मं.	21	25	पुष्य	20	30	व.	17	33	कर्क			5	38	19	20	5	41	19	14	5	49	19	16	5	24	18	45	21	श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,
	22	2	बु.	19	22	आश्ले.	19	15	सि.	14	55	सिंह	19	15	5	38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	चन्द्रदर्शन, मु. 15, राहु मृग. 3, केतु मूल 1 में 15/2, सूर्य सायन (E)
	23	3	गु.	17	3	मघा	17	44	व्य.	12	1	सिंह			5	39	19	19	5	42	19	13	5	50	19	15	5	25	18	44	23	भ. 27/49 बाद, शुक्र मृग. में 20/2, मधुस्रवा तृतीया (संधारा तीज),
	24	4	शु.	14	34	पू.फा.	16	2	व.	8	58	कन्या	21	36	5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	43	24	भ. 14/34 तक,
	25	5	श.	12	2	उ.फा.	14	18	प./	5	51	कन्या			5	40	19	17	5	43	19	12	5	52	19	15	5	26	18	43	25	नागपंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती, ऋक् उपाकर्म (देखें पृ. 13),
									शि.	26	44																					
	26	6	र.	9	32	हस्त	12	37	सि.	23	42	तुला	23	49	5	41	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	42	26	बुध पुन. में 10/35, वक्री गुरु पू.षा. 4 में 15/16,
	27	7/	चं.	7	10	चित्रा	11	3	सा.	20	49	तुला			5	41	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	27	भ. 7/10 से 18/4 तक, गोस्वामी श्रीतुलसीदास जयन्ती, श्रीदुर्गाष्टमी, अष्टमी तिथिक्षय,
		8		28	58																											
	28	9	मं.	26	59	स्वाती	9	41	शु.	18	5	वृश्चिक	26	48	5	42	19	16	5	44	19	10	5	53	19	13	5	27	18	41	28	
	29	10	बु.	25	16	विशा.	8	33	शु.	15	33	वृश्चिक			5	42	19	15	5	45	19	10	5	54	19	12	5	27	18	41	29	
	30	11	गु.	23	50	अनु.	7	40	ब्र.	13	15	वृश्चिक			5	43	19	14	5	45	19	9	5	54	19	12	5	28	18	40	30	भ. 12/33 से 23/50 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
	31	12	शु.	22	42	ज्येष्ठा	7	5	ऐं.	11	11	धनु	7	5	5	44	19	13	5	46	19	8	5	55	19	11	5	28	18	40	31	शुक्र मिथुन में 29/9,

(A) श्रीविष्णु शयनोत्सव, (B) व्रत, कोकिला व्रत, (C) चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, (D) मंगल रेव. में 27/31, कामिका एकादशी व्रत (स.), (E) सिंह में 14/08,

श्री वि. सं. 2077 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अगस्त, सन् 2020 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि-	प्रवेशकाल घं.	प्रवेशकाल मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	दिल्ली सूर्योदय मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	दिल्ली सूर्यास्त मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	जयपुर सूर्योदय मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	जयपुर सूर्यास्त मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	वाराणसी सूर्योदय मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	वाराणसी सूर्यास्त मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्रा.शु.	1	13	श.	21	55	मूल	6	48	वै.	9	23	धनु			5	44	19	13	5	47	19	8	5	55	19	10	5	29	18	39	1	बुध कर्क में 27/30, शनिप्रदोष व्रत,
	2	14	र.	21	29	पू.षा.	6	52	वि.	7	51	मकर	12	56	5	45	19	12	5	47	19	7	5	56	19	10	5	29	18	38	2	भ. 21/29 बाद, सूर्य आश्ले. में 21/28,
	3	15	चं.	21	28	उ.षा.	7	19	प्री./	6	38	मकर			5	46	19	11	5	48	19	6	5	56	19	9	5	30	18	38	3	भ. 9/28 तक, बुध पुष्य में 24/26, श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन (A)
									आ.	29	45																					
भाद्रपद कृष्ण	4	1	मं.	21	55	श्रव.	8	11	सौ.	29	14	कुम्भ	20	47	5	46	19	10	5	48	19	6	5	57	19	8	5	30	18	37	4	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 20/47,
	5	2	बु.	22	50	धनि.	9	30	शो.	29	6	कुम्भ			5	47	19	10	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	37	5	बुध पूर्व में अस्त 5/47,
	6	3	गु.	24	15	शत.	11	18	अ.	29	21	कुम्भ			5	47	19	9	5	49	19	4	5	58	19	7	5	31	18	36	6	भ. 11/32 से 24/15 तक, वक्री शनि उ.षा. 2 में 7/7,
	7	4	शु.	26	6	पू.भा.	13	33	सु.	—	—	मीन	6	57	5	48	19	8	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	7	श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृ.11), बहुला चतुर्थी,
	8	5	श.	28	19	उ.भा.	16	11	सु.	5	55	मीन			5	49	19	7	5	50	19	2	5	59	19	5	5	32	18	34	8	शुक्र आर्द्रा में 17/58,
	9	6	र.	—	—	रेवती	19	6	धृ.	6	44	मेष	19	6	5	49	19	6	5	51	19	2	5	59	19	5	5	33	18	34	9	पंचक समाप्त 19/6,
	10	6	चं.	6	43	अश्वि.	22	5	शू.	7	41	मेष			5	50	19	5	5	52	19	1	6	0	19	4	5	33	18	33	10	भ. 6/43 से 19/55 तक, बुध आश्ले. में 19/49,
	11	7	मं.	9	7	भरणी	24	56	गं.	8	38	मेष			5	50	19	4	5	52	19	0	6	0	19	3	5	34	18	32	11	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11),
	12	8	बु.	11	17	कृत्ति.	27	26	वृ.	9	24	वृष	7	36	5	51	19	3	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	31	12	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.), गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव),
	13	9	गु.	12	59	रोहि.	29	22	ध्रु.	9	50	वृष			5	52	19	2	5	53	18	58	6	1	19	1	5	34	18	31	13	भ. 25/30 बाद, श्री गुग्गा नवमी,
	14	10	शु.	14	2	मृग.	—	—	व्या.	9	46	मिथुन	18	4	5	52	19	1	5	54	18	57	6	2	19	1	5	35	18	30	14	भ. 14/2 तक,
	15	11	श.	14	20	मृग.	6	35	ह.	9	8	मिथुन			5	53	19	0	5	54	18	56	6	2	19	0	5	35	18	29	15	यूरेनस वक्री 19/58, अजा एकादशी व्रत (स.), भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	12	र.	13	51	आर्द्रा	7	3	व.	7	52	कर्क	24	52	5	53	18	59	5	55	18	55	6	3	18	59	5	36	18	28	16	सं. सूर्य मघा सिंह में 19/11, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (B)
	17	13	चं.	12	35	पुन./	6	44	सि./	5	58	कर्क			5	54	18	58	5	55	18	54	6	3	18	58	5	36	18	27	17	भ. 12/35 से 23/38 तक, बुध मघा सिंह में 8/29,
						पुष्य	29	43	व्य.	27	31																					
	18	14	मं.	10	40	आश्ले.	28	8	व.	24	34	सिंह	28	8	5	55	18	57	5	56	18	53	6	4	18	57	5	37	18	26	18	
	19	30/	बु.	8	11	मघा	26	7	प.	21	15	सिंह			5	55	18	56	5	56	18	52	6	4	18	56	5	37	18	25	19	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा,
भाद्रपद शुक्ल		1		29	19																											भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	20	2	गु.	26	13	पू.फा.	23	50	शि.	17	41	कन्या	29	15	5	56	18	55	5	57	18	51	6	4	18	55	5	37	18	25	20	चन्द्रदर्शन, मु. 30, मेला श्रीडेरा बाबा गोसाई आणां (कुराली) पंजाब,
	21	3	शु.	23	3	उ.फा.	21	29	सि.	14	0	कन्या			5	56	18	54	5	57	18	50	6	5	18	54	5	38	18	24	21	हिजरी सन् 1442 प्रारम्भ, हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया, श्रीवराह जयन्ती,
	22	4	श.	19	57	हस्त	19	11	सा.	10	20	कन्या			5	57	18	53	5	58	18	49	6	5	18	53	5	38	18	23	22	भ. 9/30 से 19/57 तक, शुक्र पुन. में 11/21, सूर्य सायन कन्या (C)
	23	5	र.	17	5	चित्रा	17	6	शु./	6	48	तुला	6	6	5	58	18	52	5	58	18	48	6	6	18	52	5	39	18	22	23	बुध पू.फा. में 28/1, ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
									शु.	27	29																					
	24	6	चं.	14	31	स्वाती	15	20	ब्र.	24	29	तुला			5	58	18	51	5	59	18	47	6	6	18	51	5	39	18	21	24	सूर्यषष्ठी व्रत,
	25	7	मं.	12	22	विशा.	13	58	ऐं.	21	49	वृश्चिक	8	16	5	59	18	50	5	59	18	46	6	7	18	50	5	39	18	20	25	भ. 12/22 से 23/31 तक, मुक्ताभरण (सन्तान) सप्तमी व्रत, (D)
	26	8	बु.	10	40	अनु.	13	4	वै.	19	32	वृश्चिक			5	59	18	48	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	19	26	
	27	9	गु.	9	25	ज्येष्ठा	12	37	वि.	17	37	धनु	12	37	6	0	18	47	6	1	18	44	6	8	18	48	5	40	18	18	27	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
	28	10	शु.	8	38	मूल	12	37	प्री.	16	4	धनु			6	0	18	46	6	1	18	43	6	8	18	47	5	41	18	17	28	भ. 20/28 बाद,
	29	11	श.	8	18	पू.षा.	13	2	आ.	14	51	मकर	19	12	6	1	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	29	भ. 8/18 तक, पद्मा एकादशी व्रत (स.), श्रीवामन जयन्ती,
	30	12	र.	8	22	उ.षा.	13	52	सौ.	13	57	मकर			6	2	18	44	6	2	18	41	6	9	18	45	5	41	18	15	30	सूर्य पू.फा. में 15/6, प्रदोष व्रत,
	31	13	चं.	8	49	श्रव.	15	4	शो.	13	21	कुम्भ	27	48	6	2	18	43	6	3	18	40	6	9	18	44	5	42	18	14	31	पंचक प्रारम्भ 27/48, बुध उ.फा. में 13/10, शुक्र कर्क में 26/3,

(A) (राखी) (9/28 बाद), श्री अमरनाथ यात्रा (ज.क.), श्री सत्यनारायण व्रत, शुक्ल-कृष्ण-यजु-उपाकर्म, ——— (B) मंगल अश्वि. मेष में 18/25, प्रदोष व्रत, पर्युषण पर्व प्रारम्भ, (C) में 21/16, शरद् ऋतु प्रारम्भ, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 21/26), साम-उपाकर्म, श्री सिद्धि विनायक व्रत, हरितालिका चतुर्थी, (D) दूर्वाष्टमी, श्री राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ (देखें पृ. 13).

श्री वि. सं. 2077												तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)																				सितम्बर, सन् 2020 ई.
मास पक्ष	[illegible]	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
भा. शु.	1	14	मं.	9	39	धनि.	16	37	अ.	13	3	कुम्भ			6	3	18	41	6	3	18	38	6	10	18	43	5	42	18	13	1	भ. 9/39 से 22/16 तक, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, श्री सत्यनारायण (A)
	2	15	बु.	10	52	शत.	18	33	सु.	13	2	कुम्भ			6	3	18	40	6	3	18	37	6	10	18	42	5	43	18	12	2	बुध कन्या में 12/3, प्रतिपदा का श्राद्ध (देखें पृ. 14)
प्र. आश्विन कृष्ण	3	1	गु.	12	27	पू.भा.	20	50	धृ.	13	19	मीन	14	14	6	4	18	39	6	4	18	36	6	11	18	41	5	43	18	11	3	प्रथम आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र पुष्य मे 28/49, द्वितीया (B)
	4	2	शु.	14	24	उ.भा.	23	28	शू.	13	52	मीन			6	4	18	38	6	4	18	35	6	11	18	40	5	43	18	10	4	भ. 27/31 बाद, (इस दिन कोई तिथिश्राद्ध नहीं है) (देखें पृ.14),
	5	3	श.	16	39	रेवती	26	21	गं.	14	39	मेष	26	21	6	5	18	36	6	5	18	34	6	12	18	38	5	44	18	9	5	भ. 16/39 तक, पंचक समाप्त 26/21, तृतीया का श्राद्ध (देखें पृ14), (C)
	6	4	र.	19	7	अश्वि.	29	23	वृ.	15	36	मेष			6	6	18	35	6	5	18	33	6	12	18	37	5	44	18	8	6	वक्री गुरु पू.षा. 3 में 18/0, चतुर्थी का श्राद्ध,
	7	5	चं.	21	39	भरणी	—	—	ध्रु.	16	36	मेष			6	6	18	34	6	6	18	31	6	12	18	36	5	44	18	7	7	पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
	8	6	मं.	24	3	भरणी	8	25	व्या.	17	33	वृष	15	9	6	7	18	33	6	6	18	30	6	13	18	35	5	45	18	6	8	भ. 24/3 बाद, बुध हस्त में 15/52, षष्ठी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत,
	9	7	बु.	26	6	कृत्ति.	11	15	ह.	18	16	वृष			6	7	18	31	6	7	18	29	6	13	18	34	5	45	18	4	9	भ. 13/5 तक, मंगल वक्री 27/53, सप्तमी का श्राद्ध,
	10	8	गु.	27	35	रोहि.	13	39	व.	18	35	मिथुन	26	37	6	8	18	30	6	7	18	28	6	14	18	33	5	46	18	3	10	अष्टमी का श्राद्ध, श्री महालक्ष्मी व्रत समाप्त,
	11	9	शु.	28	20	मृग.	15	25	सि.	18	24	मिथुन			6	8	18	29	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	2	11	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
	12	10	श.	28	14	आर्द्रा	16	24	व्य.	17	34	मिथुन			6	9	18	28	6	8	18	26	6	15	18	31	5	46	18	1	12	भ. 16/17 से 28/14 तक, दशमी का श्राद्ध,
	13	11	र.	27	16	पुन.	16	33	व.	16	3	कर्क	10	36	6	9	18	26	6	9	18	24	6	15	18	29	5	47	18	0	13	सूर्य उ.फा. में 9/3, गुरु मार्गी 6/12, एकादशी का श्राद्ध, (D)
	14	12	चं.	25	30	पुष्य	15	52	प.	13	51	कर्क			6	10	18	25	6	9	18	23	6	15	18	28	5	47	17	59	14	द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध,
	15	13	मं.	23	0	आश्ले.	14	25	शि.	11	2	सिंह	14	25	6	11	18	24	6	10	18	22	6	16	18	27	5	47	17	58	15	भ. 23/0 बाद, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, भौम प्रदोप व्रत,
	16	14	बु.	19	57	मघा	12	20	सि./ सा.	7 27	40 54	सिंह			6	11	18	23	6	10	18	21	6	16	18	26	5	48	17	57	16	भ. 9/29 तक, सं. सूर्य कन्या में 19/7, मु. 30, पुण्यकाल (E)
	17	30	गु.	16	30	पू.फा.	9	48	शु.	23	51	कन्या	15	7	6	12	18	21	6	11	18	20	6	17	18	25	5	48	17	56	17	बुध चित्रा में 16/46, सर्वपितृ अमा, चतुर्दशी/अमा/अज्ञात मृत्युतिथि (F)
प्र.(अ.) आश्विन शुक्ल	18	1	शु.	12	51	उ.फा./ हस्त	6 28	59 6	शु.	19	42	कन्या			6	12	18	20	6	11	18	18	6	17	18	24	5	49	17	55	18	प्र. (अधिक) आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, (G)
	19	2/ 3	श.	9 29	10 39	चित्रा	25	20	ब्र.	15	34	तुला	14	42	6	13	18	19	6	12	18	17	6	18	18	23	5	49	17	54	19	गुरु पू.षा. 4 में 18/43, तृतीया तिथिक्षय,
	20	4	र.	26	27	स्वाती	22	51	ऐं.	11	37	तुला			6	13	18	17	6	12	18	16	6	18	18	21	5	49	17	53	20	भ. 16/3 से 26/27 तक,
	21	5	चं.	23	42	विशा.	20	48	वै./ वि.	7 28	58 43	वृश्चिक	15	16	6	14	18	16	6	13	18	15	6	18	18	20	5	50	17	51	21	
	22	6	मं.	21	31	अनु.	19	18	प्री.	25	56	वृश्चिक			6	15	18	15	6	13	18	14	6	19	18	19	5	50	17	50	22	बुध तुला में 16/57, सूर्य सायन, तुला में 19/02, दक्षिण गोल (H)
	23	7	बु.	19	57	ज्येष्ठा	18	25	आ.	23	39	धनु	18	25	6	15	18	14	6	14	18	12	6	19	18	18	5	51	17	49	23	भ. 19/57 बाद, राहु मृग. 2 वृष, केतु ज्ये. 4 वृश्चिक में 12/51,
	24	8	गु.	19	2	मूल	18	9	सौ.	21	53	धनु			6	16	18	12	6	14	18	11	6	20	18	17	5	51	17	48	24	भ. 7/29 तक,
	25	9	शु.	18	44	पू.षा.	18	31	शो.	20	37	मकर	24	41	6	16	18	11	6	15	18	10	6	20	18	16	5	51	17	47	25	
	26	10	श.	19	0	उ.षा.	19	25	अ.	19	47	मकर			6	17	18	10	6	15	18	9	6	21	18	15	5	52	17	46	26	सूर्य हस्त में 24/29,
	27	11	र.	19	46	श्रवण	20	49	सु.	19	20	मकर			6	17	18	9	6	16	18	8	6	21	18	13	5	52	17	45	27	भ. 7/23 से 19/46 तक, शुक्र मघा सिंह में 25/2, पुरुपोत्तमा (I)
	28	12	चं.	20	59	धनि.	22	38	धृ.	19	14	कुम्भ	9	41	6	18	18	7	6	16	18	6	6	22	18	12	5	52	17	44	28	पंचक प्रारम्भ 9/41, बुध स्वा. में 6/26,
	29	13	मं.	22	33	शत.	24	47	शू.	19	24	कुम्भ			6	19	18	6	6	17	18	5	6	22	18	11	5	53	17	43	29	शनि मार्गी 10/43, भौमप्रदोष व्रत,
	30	14	बु.	24	26	पू.भा.	27	14	गं.	19	48	मीन	20	36	6	19	18	5	6	17	18	4	6	22	18	10	5	53	17	42	30	भ. 24/26 बाद,

(A) व्रत, प्रोष्ठ पदी श्राद्ध/पूर्णिमा का महालय श्राद्ध (देखें पृ. 13), बुध पश्चिम में उदित 18/41, महालय प्रारम्भ ... ... (B) का श्राद्ध (देखें पृ. 14), अगस्त्य उदित, (C) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (D) इन्दिरा एकादशी व्रत (स.), (E) मध्याह्न बाद, शुक्र आश्ले. में 7/45, चतुर्दशी (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (F) वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, महालय (पितृपक्ष) समाप्त, (G) अधिक (मल) मास प्रारम्भ, (H) प्रारम्भ, विपुवदिन, (I) एकादशी व्रत (स.),

श्री वि. सं. 2077 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अक्तूबर, सन् 2020 ई.

मास पक्ष	अक्टूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
[illegible]	1	15	गु.	26	35	उ.भा.	29	56	वृ.	20	25	मीन			6	20	18	4	6	18	18	3	6	23	18	9	5	54	17	41	1	भ. 13/31 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
द्वि(अ.) आश्विन कृष्ण	2	1	शु.	28	57	रेवती	—	—	ध्रु.	21	12	मीन			6	20	18	2	6	18	18	2	6	23	18	8	5	54	17	40	2	द्वि. (अधिक) आश्विन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	3	2	श.	—	—	रेवती	8	50	व्या.	22	7	मेष	8	50	6	21	18	1	6	19	18	1	6	24	18	7	5	55	17	39	3	पंचक समाप्त 8/50,
	4	2	र.	7	28	अश्वि.	11	52	ह.	23	5	मेष			6	22	18	0	6	19	17	59	6	24	18	6	5	55	17	38	4	भ. 20/45 बाद, वक्री मंगल रेवती मीन में 29/31, प्लूटो मार्गी 19/00,
	5	3	चं.	10	2	भरणी	14	56	व.	24	3	वृष	21	41	6	22	17	59	6	20	17	58	6	25	18	5	5	55	17	37	5	भ. 10/2 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	6	4	मं.	12	32	कृत्ति.	17	54	सि.	24	54	वृष			6	23	17	57	6	21	17	57	6	25	18	4	5	56	17	36	6	
	7	5	बु.	14	47	रोहि.	20	35	व्य.	25	30	वृष			6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	2	5	56	17	34	7	
	8	6	गु.	16	37	मृग.	22	50	व.	25	42	मिथुन	9	46	6	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	1	5	57	17	33	8	भ. 16/37 से 29/13 तक,
	9	7	शु.	17	49	आर्द्रा	24	26	प.	25	23	मिथुन			6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	0	5	57	17	32	9	शुक्र पू.फा. में 11/18,
	10	8	श.	18	17	पुन.	25	17	शि.	24	28	कर्क	19	9	6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	17	59	5	58	17	31	10	सूर्य चित्रा में 13/34,
	11	9	र.	17	54	पुष्य	25	18	सि.	22	52	कर्क			6	26	17	51	6	23	17	52	6	28	17	58	5	58	17	31	11	भ. 29/16 बाद,
	12	10	चं.	16	39	आश्ले.	24	29	सा.	20	36	सिंह	24	29	6	27	17	50	6	24	17	50	6	28	17	57	5	59	17	30	12	भ. 16/39 तक,
	13	11	मं.	14	36	मघा	22	54	शु.	17	41	सिंह			6	27	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	29	13	पुरुषोत्तमा एकादशी व्रत (स.),
	14	12	बु.	11	51	पू.फा.	20	41	शु.	14	13	कन्या	26	2	6	28	17	48	6	25	17	48	6	29	17	55	6	0	17	28	14	बुध वक्री 6/34, प्रदोष व्रत,
	15	13/	गु.	8	33	उ.फा.	17	58	ब्र./	10	19	कन्या			6	29	17	47	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	27	15	भ. 8/33 से 18/43 तक,
		14		28	53				ऐं.	30	7																					चतुर्दशी तिथिक्षय,
	16	30	शु.	25	1	हस्त	14	58	वै.	25	45	तुला	25	24	6	29	17	46	6	26	17	46	6	31	17	53	6	1	17	26	16	अधिक (मल) मास समाप्त,
द्वि.(शु.) आश्विन शुक्ल	17	1	श.	21	9	चित्रा	11	51	वि.	21	24	तुला			6	30	17	45	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	25	17	द्वि. (शुद्ध) आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सं. सूर्य तुला में 7/5, (A)
	18	2	र.	17	28	स्वाती/	8	51	प्री.	17	12	वृश्चिक	24	47	6	31	17	44	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24	18	चन्द्रदर्शन, मु. 15,
						विशा.	30	8																								
	19	3	चं.	14	8	अनु.	27	52	आ.	13	17	वृश्चिक			6	32	17	43	6	28	17	43	6	32	17	50	6	2	17	23	19	भ. 24/43 बाद,
	20	4	मं.	11	19	ज्येष्ठा	26	12	सौ.	9	47	धनु	26	12	6	32	17	41	6	29	17	42	6	33	17	49	6	3	17	22	20	भ. 11/19 तक, शुक्र उ.फा. में 16/11, श्रीउपांगललिता व्रत, (B)
	21	5	बु.	9	8	मूल	25	13	शो./	6	48	धनु			6	33	17	40	6	30	17	41	6	33	17	49	6	3	17	21	21	सरस्वती आवाहन,
									अ.	28	24																					
	22	6	गु.	7	40	पू.षा.	24	58	सु.	26	35	धनु			6	34	17	39	6	30	17	40	6	34	17	48	6	4	17	21	22	सूर्य सायन वृश्चिक में 28/30, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, सरस्वती-पूजन,
	23	7	शु.	6	57	उ.षा.	25	28	धृ.	25	21	मकर	7	1	6	34	17	38	6	31	17	39	6	35	17	47	6	4	17	20	23	भ. 6/57 से 18/58 तक, सूर्य स्वा. में 24/0, शुक्र कन्या में 10/45, (C)
	24	8	श.	6	59	श्रवण	26	37	शू.	24	40	मकर			6	35	17	37	6	32	17	38	6	35	17	46	6	5	17	19	24	सरस्वती विसर्जन, श्री दुर्गाष्टमी (देखें पृ. 14), महाष्टमी, (D)
	25	9	र.	7	42	धनि.	28	23	गं.	24	27	कुम्भ	15	26	6	36	17	36	6	32	17	38	6	36	17	45	6	5	17	18	25	पंचक प्रारम्भ 15/26, महानवमी (बलिदान के लिए), नवरात्र (E)
	26	10	चं.	9	0	शत.	30	36	वृ.	24	38	कुम्भ			6	37	17	35	6	33	17	37	6	37	17	44	6	6	17	17	26	भ. 21/53 बाद, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, भरत मिलाप,
	27	11	मं.	10	47	पू.भा.	—	—	ध्रु.	25	6	मीन	26	30	6	37	17	35	6	34	17	36	6	37	17	43	6	6	17	17	27	भ. 10/47 तक, वक्री बुध चित्रा में 14/33, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.)
	28	12	बु.	12	54	पू.भा.	9	11	व्या.	25	48	मीन			6	38	17	34	6	34	17	35	6	38	17	43	6	7	17	16	28	प्रदोष व्रत,
	29	13	गु.	15	16	उ.भा.	11	59	ह.	26	37	मीन			6	39	17	33	6	35	17	34	6	38	17	42	6	8	17	15	29	
	30	14	शु.	17	46	रेवती	14	57	व.	27	31	मेष	14	57	6	40	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	8	17	14	30	भ. 17/46 बाद, पंचक समाप्त 14/57, गुरु उ.षा. 1 में 13/11, (F)
	31	15	श.	20	19	अश्वि.	17	57	सि.	28	25	मेष			6	41	17	31	6	36	17	32	6	40	17	40	6	9	17	14	31	भ. 7/5 तक, शुक्र हस्त में 17/9, शरत् पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण (G)

(A) मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न तक, नाना-नानी का श्राद्ध (देखें पृ. 14), शारद (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, (B) बुध पश्चिम में अस्त 17/41, (C) सरस्वती के लिए बलिदान, (D) महानवमी (पूजा एवं उपवास के लिए), (E) समाप्त, नवरात्र-पारणा, विजयादशमी (दशहरा) (देखें पृ. 15), आयुध-पूजा, अपराजिता-पूजन, सीमोल्लंघन, (F) कोजगार व्रत (लक्ष्मी-इन्द्र पूजा), (G) व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिकस्नान प्रारम्भ.

(A) मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न तक, नाना-नानी का श्राद्ध (देखें पृ. 14), शारद (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, (B) बुध पश्चिम में अस्त 17/41, (C) सरस्वती के लिए बलिदान, (D) महानवमी (पूजा एवं उपवास के लिए), (E) समाप्त, नवरात्र-पारणा, विजयादशमी (दशहरा) (देखें पृ. 15), आयुध-पूजा, अपराजिता-पूजन, सीमोल्लंघन, (F) कोजगार व्रत (लक्ष्मी-इन्द्र पूजा), (G) व्रत, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिकस्नान प्रारम्भ.

मास पक्ष	नवम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
कार्तिक कृष्ण	1	1	र.	22	50	भरणी	20	57	व्य.	29	17	वृष	27	40	6	41	17	30	6	37	17	32	6	40	17	40	6	10	17	13	1	कार्त्तिक कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध पूर्व में उदित 6/41,
	2	2	चं.	25	14	कृत्ति.	23	49	व.	30	2	वृष			6	42	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	2	
	3	3	मं.	27	24	रोहि.	26	29	प.	30	37	वृष			6	43	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	3	भ. 14/19 से 27/24 तक, बुध मार्गी 23/19,
	4	4	बु.	29	15	मृग.	28	50	शि.	—	—	मिथुन	15	43	6	44	17	28	6	39	17	29	6	42	17	38	6	11	17	11	4	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय (A)
	5	5	गु.	30	37	आर्द्रा	30	44	शि.	6	55	मिथुन			6	45	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	10	5	
	6	6	शु.	—	—	पुन.	—	—	सि./	6	51	कर्क	25	48	6	45	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	6	सूर्य विशा. में 8/14,
									सा.	30	20																					
	7	6	श.	7	23	पुन.	8	5	शु.	29	18	कर्क			6	46	17	25	6	42	17	27	6	45	17	36	6	13	17	9	7	भ. 7/23 से 19/26 तक,
	8	7	र.	7	29	पुष्य	8	45	शु.	27	42	कर्क			6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	8	अहोई अष्टमी (पंजाब-हरियाणा),
	9	8/	चं.	6	51	आश्ले.	8	42	ब्र.	25	30	सिंह	8	42	6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	8	9	
		9		29	28																											नवमी तिथिक्षय,
	10	10	मं.	27	23	मघा/	7	56	ऐं.	22	43	सिंह			6	49	17	23	6	44	17	26	6	47	17	34	6	15	17	8	10	भ. 16/25 से 27/23 तक,
						पू.फा.	30	28																								
	11	11	बु.	24	41	उ.फा.	28	25	वै.	19	26	कन्या	12	0	6	50	17	23	6	45	17	25	6	47	17	34	6	16	17	7	11	बुध स्वा. में 21/32, शुक्र चित्रा में 15/1, रमा एकादशी व्रत (स.),
	12	12	गु.	21	30	हस्त	25	54	वि.	15	44	कन्या			6	50	17	22	6	45	17	25	6	48	17	33	6	17	17	7	12	गोवत्स द्वादशी,
	13	13	शु.	17	59	चित्रा	23	5	प्री.	11	43	तुला	12	31	6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	18	17	6	13	भ. 17/59 से 28/8 तक, मंगल मार्गी 30/7, धन त्रयोदशी, (B)
	14	14	श.	14	18	स्वाती	20	9	आ./	7	30	तुला			6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	6	14	नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली), दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन,
									सौ.	27	15																					
	15	30	र.	10	37	विशा.	17	15	शो.	23	5	वृश्चिक	11	58	6	53	17	21	6	48	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	सं. सूर्य वृश्चिक में 30/52 (देखें पृ. 15), मु. 30, पुण्यकाल (C)
कार्तिक शुक्ल	16	1/	चं.	7	6	अनु.	14	36	अ.	19	10	वृश्चिक			6	54	17	20	6	49	17	23	6	51	17	31	6	20	17	5	16	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, शुक्र तुला में 25/2, (D)
		2		27	57																											द्वितीया तिथिक्षय,
	17	3	मं.	25	17	ज्येष्ठा	12	21	सु.	15	35	धनु	12	21	6	55	17	20	6	49	17	22	6	52	17	31	6	20	17	5	17	
	18	4	बु.	23	16	मूल	10	39	धृ.	12	29	धनु			6	56	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	18	भ. 12/16 से 23/16 तक,
	19	5	गु.	21	59	पू.षा.	9	38	शू.	9	57	मकर	15	30	6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	30	6	22	17	4	19	सूर्य अनु. में 14/12, ज्ञानपंचमी (जैन),
	20	6	शु.	21	30	उ.षा.	9	22	गं./	8	1	मकर			6	57	17	18	6	52	17	21	6	54	17	30	6	23	17	4	20	गुरु उ.षा. 2 मकर में 13/27, शनि उ.षा. 3 में 7/3, सूर्य षष्ठी (E)
									वृ.	30	42																					
	21	7	श.	21	48	श्रव.	9	53	ध्रु.	30	0	कुम्भ	22	25	6	58	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	भ. 21/48 बाद, पंचक प्रारम्भ 22/25, बुध विशा. में 18/28, सूर्य (F)
	22	8	र.	22	51	धनि.	11	9	व्या.	29	50	कुम्भ			6	59	17	18	6	53	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	22	भ. 10/20 तक, शुक्र स्वा. में 10/35, गोपाष्टमी,
	23	9	चं.	24	32	शत.	13	4	ह.	30	8	कुम्भ			7	0	17	18	6	54	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	23	अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
	24	10	मं.	26	42	पू.भा.	15	31	व.	30	44	मीन	8	52	7	1	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	3	24	
	25	11	बु.	29	10	उ.भा.	18	20	सि.	—	—	मीन			7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	भ. 15/56 से 29/10 तक, राहु मृग. 1, केतु ज्ये. 3 में 10/36, (G)
	26	12	गु.	—	—	रेवती	21	20	सि.	7	34	मेष	21	20	7	2	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	26	पंचक समाप्त 21/20, तुलसी विवाह, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त,
	27	12	शु.	7	47	अश्वि.	24	22	व्य.	8	28	मेष			7	3	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	27	प्रदोष व्रत, बुध पूर्व में अस्त 7/3,
	28	13	श.	10	22	भरणी	27	19	व.	9	21	मेष			7	4	17	16	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	बुध वृश्चिक में 7/5, नेप्च्यून मार्गी 30/9, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
	29	14	र.	12	48	कृत्ति.	30	3	प.	10	8	वृष	10	1	7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	भ. 12/48 से 25/53 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, भीष्म पंचक (H)
	30	15	चं.	14	59	रोहि.	—	—	शि.	10	45	वृष			7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	30	बुध अनु. में 10/31, कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरुनानक जयन्ती, (I)

(A) देखें पृ. 11), (B) श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.), प्रदोषव्रत, यम-प्रीत्यर्थ दीपदान, (C) अगले दिन मध्याह्न तक, बलिपूजा, गोक्रीड़ा, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), (D) यम द्वितीया, भाई दूज, श्रीविश्वकर्मा पूजा, (E) (छठ) बिहार, (F) सायन धनु में 26/11, (G) देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स.), हरिप्रबोधोत्सव, भीष्मपंचक प्रारम्भ, (H) समाप्त, त्रिपुरोत्सव, मेला पुष्कर राज (राज.), (I) कार्तिकस्नान समाप्त.

श्री वि. सं. 2077 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — दिसम्बर, सन् 2020 ई.

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्राशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मार्गशीर्ष कृष्ण	1	1	मं.	16	52	रोहि.	8	30	सि.	11	7	मिथुन	21	36	7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	1	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	2	2	बु.	18	22	मृग.	10	37	सा.	11	13	मिथुन			7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	भ. 30/55 बाद, सूर्य ज्ये. में 18/33, शुक्र विशा. में 28/35, (A)
	3	3	गु.	19	27	आर्द्रा	12	21	शु.	11	1	मिथुन			7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	3	भ. 19/27 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, ●
	4	4	शु.	20	4	पुन.	13	38	शु.	10	28	कर्क	7	22	7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	4	
	5	5	श.	20	10	पुष्य	14	27	ब्र.	9	33	कर्क			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	33	17	3	5	
	6	6	र.	19	45	आश्ले.	14	46	ऐं./	8	13	सिंह	14	46	7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	भ. 19/45 बाद,
									वै.	30	28																					
	7	7	चं.	18	47	मघा	14	32	वि.	28	17	सिंह			7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	7	भ. 7/16 तक, गुरु उ.षा. 3 में 20/57,
	8	8	मं.	17	17	पू.फा.	13	47	प्री.	25	42	कन्या	19	31	7	12	17	17	7	6	17	20	7	8	17	29	6	35	17	4	8	बुध ज्ये. में 23/30, श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी),
	9	9	बु.	15	18	उ.फा.	12	32	आ.	22	43	कन्या			7	13	17	17	7	7	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	भ. 26/4 बाद,
	10	10	गु.	12	51	हस्त	10	51	सौ.	19	24	तुला	21	52	7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	37	17	5	10	भ. 12/51 तक, शुक्र वृश्चिक में 29/16,
	11	11/	शु.	10	4	चित्रा/	8	48	शो.	15	50	तुला			7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	37	17	5	11	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
		12		31	2	स्वाती	30	30																								द्वादशी तिथिक्षय,
	12	13	श.	27	53	विशा.	28	4	अ.	12	5	वृश्चिक	22	41	7	15	17	17	7	9	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	भ. 27/53 बाद, शनिप्रदोष व्रत,
	13	14	र.	24	45	अनु.	25	40	सु./	8	16	वृश्चिक			7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	39	17	5	13	भ. 14/19 तक, शुक्र अनु. में 21/23,
									धृ.	28	29																					
	14	30	चं.	21	46	ज्येष्ठा	23	25	शू.	24	52	धनु	23	25	7	16	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	39	17	6	14	सोमवती अमा,
मार्गशीर्ष शुक्ल	15	1	मं.	19	7	मूल	21	31	ग.	21	31	धनु			7	17	17	18	7	11	17	22	7	12	17	31	6	40	17	6	15	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सं. सूर्य मूल धनु में 21/32, मु. 30, (B)
	16	2	बु.	16	54	पू.षा.	20	4	वृ.	18	32	मकर	25	47	7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	40	17	7	16	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	17	3	गु.	15	18	उ.षा.	19	13	ध्रु.	16	3	मकर			7	18	17	19	7	12	17	23	7	13	17	32	6	41	17	7	17	भ. 26/50 बाद, बुध मूल धनु में 11/37,
	18	4	शु.	14	23	श्रवण	19	4	व्या.	14	6	कुम्भ	31	16	7	19	17	20	7	12	17	23	7	14	17	33	6	42	17	7	18	भ. 14/23 तक, पंचक प्रारम्भ 31/16,
	19	5	श.	14	14	धनि.	19	40	ह.	12	45	कुम्भ			7	19	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	42	17	8	19	बलिदान दिन श्रीगुरु तेगबहादुर जी,
	20	6	र.	14	53	शत.	21	1	व.	12	1	कुम्भ			7	20	17	20	7	13	17	24	7	15	17	34	6	43	17	8	20	गुह/स्कन्द षष्ठी, चम्पा षष्ठी,
	21	7	चं.	16	15	पू.भा.	23	3	सि.	11	51	मीन	16	29	7	20	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	43	17	9	21	भ. 16/15 से 29/14 तक, सूर्य सायन मकर में 15/33, (C)
	22	8	मं.	18	14	उ.भा.	25	37	व्य.	12	9	मीन			7	21	17	21	7	14	17	25	7	16	17	35	6	44	17	9	22	
	23	9	बु.	20	39	रेवती	28	32	व.	12	48	मेष	28	32	7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	44	17	10	23	पंचक समाप्त 28/32, गुरु उ.षा. 4 में 11/18,
	24	10	गु.	23	17	अश्वि.	—	—	प.	13	40	मेष			7	22	17	23	7	15	17	26	7	17	17	36	6	45	17	10	24	मंगल अश्वि. मेष में 10/21, शुक्र ज्ये. में 13/25, शनि उ.षा. (D)
	25	11	शु.	25	54	अश्वि.	7	36	शि.	14	35	मेष			7	22	17	23	7	16	17	27	7	17	17	36	6	45	17	11	25	भ. 12/35 से 25/54 तक, बुध पू.षा. में 21/20, मोक्षदा (E)
	26	12	श.	28	18	भरणी	10	35	सि.	15	24	वृष	17	18	7	22	17	24	7	16	17	27	7	18	17	37	6	46	17	11	26	जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहब (पं.),
	27	13	र.	30	20	कृत्ति.	13	19	सा.	16	0	वृष			7	23	17	24	7	17	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	प्रदोष व्रत,
	28	14	चं.	—	—	रोहि.	15	39	शु.	16	16	मिथुन	28	39	7	23	17	25	7	17	17	28	7	19	17	38	6	46	17	13	28	सूर्य पू.षा. में 23/45,
	29	14	मं.	7	54	मृग.	17	32	शु.	16	11	मिथुन			7	23	17	26	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	13	29	भ. 7/54 से 20/27 तक, श्रीदत्त जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	30	15	बु.	8	58	आर्द्रा	18	55	ब्र.	15	43	मिथुन			7	24	17	26	7	18	17	30	7	19	17	39	6	47	17	14	30	
पौ.कृ.	31	1	गु.	9	30	पुन.	19	48	ऐं.	14	51	कर्क	13	38	7	24	17	27	7	18	17	30	7	20	17	40	6	47	17	15	31	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,

(A) [illegible] अश्वि. 4 में 9/33, (B) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (C) उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ, मित्र सप्तमी, (D) 4 में 23/29, (E) एकादशी व्रत (स.), श्री गीता जयन्ती, क्रिसमस डे,

30	15	च.	8	58	आर्द्रा	18	55	ब्र.	15	43	मिथुन			7	24	17	26	7	18	17	30	7	19	17	39	6	47	17	14	30	
पौ.कृ. 31	1	गु.	9	30	पुन.	19	48	ऐं.	14	51	कर्क	13	38	7	24	17	27	7	18	17	30	7	20	17	40	6	47	17	15	31	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,

(A) वक्री फ्रूटेनस अविश्व. 4 में 9/33, (B) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (C) उत्तरायण एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ, चित्र सप्तमी, (D) 4 में 23/29, (E) एकादशी व्रत (स.), श्री गीता जयन्ती, क्रिसमस डे,

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष कृष्ण	1	2	शु.	9	34	पुष्य	20	15	वै.	13	37	कर्क			7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	1	भ. 21/22 बाद, इंग्लिश नववर्ष (2021 ई.) प्रारम्भ,
	2	3	श.	9	10	आश्ले.	20	16	वि.	12	2	सिंह	20	16	7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 9/10 तक, बुध उ.षा. में 27/5, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	3	4/	र.	8	22	मघा	19	56	प्री.	10	9	सिंह			7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	3	शुक्र मूल धनु में 29/3,
		5		31	14																											पंचमी तिथिक्षय,
	4	6	चं.	29	47	पू.फा.	19	17	आ./	8	0	कन्या	25	4	7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	भ. 29/47 बाद, बुध मकर में 27/56,
									सौ.	29	36																					
	5	7	मं.	28	4	उ.फा.	18	20	शो.	27	0	कन्या			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	भ. 16/56 तक,
	6	8	बु.	26	7	हस्त	17	9	अ.	24	12	तुला	28	29	7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	गुरु श्रव. 1 में 27/48,
	7	9	गु.	23	58	चित्रा	15	45	सु.	21	14	तुला			7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	19	7	शनि अस्त 17/32,
	8	10	शु.	21	40	स्वाती	14	12	धृ.	18	10	वृश्चिक	30	57	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	46	6	49	17	20	8	भ. 10/49 से 21/40 तक,
	9	11	श.	19	17	विशा.	12	32	शू.	15	0	वृश्चिक			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	सफला एकादशी व्रत (स.),
	10	12	र.	16	53	अनु.	10	49	गं.	11	49	वृश्चिक			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	10	सूर्य उ.षा. में 25/45, बुध श्रव. में 30/21, प्रदोष व्रत,
	11	13	चं.	14	33	ज्येष्ठा	9	9	वृ./	8	39	धनु	9	9	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	भ. 14/33 से 25/28 तक, बुध पश्चिम में उदित 17/36,
									ध्रु.	29	37																					
	12	14	मं.	12	23	मूल/	7	37	व्या.	26	47	धनु			7	25	17	36	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	12	
						पू.षा.	30	21																								
	13	30	बु.	10	30	उ.षा.	29	28	ह.	24	14	मकर	12	5	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	50	6	49	17	24	13	लोहड़ी (पंजाब-हरि.-हि.प्र., ज.क.),
पौष शुक्ल	14	1	गु.	9	1	श्रवण	29	4	व.	22	4	मकर			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	14	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, सं. सूर्य मकर में 8/15,(A)
	15	2	शु.	8	5	धनि.	29	16	सि.	20	22	कुम्भ	17	5	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	पंचक प्रारम्भ 17/5, मट्टु पोंगल,
	16	3	श.	7	46	शत.	30	9	व्य.	19	11	कुम्भ			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	भ. 19/57 बाद,
	17	4	र.	8	8	पू.भा.	—	—	व.	18	32	मीन	25	15	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	17	भ. 8/8 तक, गुरु अस्त 17/41,
	18	5	चं.	9	14	पू.भा.	7	43	प.	18	26	मीन			7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	53	6	49	17	28	18	
	19	6	मं.	10	59	उ.भा.	9	54	शि.	18	47	मीन			7	24	17	43	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	बुध धनि. में 21/52, सूर्य सायन कुम्भ में 26/11,
	20	7	बु.	13	15	रेवती	12	36	सि.	19	29	मेष	12	36	7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	भ. 13/15 से 26/32 तक, पंचक समाप्त 12/36, जन्मदिन (B)
	21	8	गु.	15	50	अश्वि.	15	36	सा.	20	23	मेष			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	21	गुरु श्रव. 2 में 8/46,
	22	9	शु.	18	29	भरणी	18	40	शु.	21	18	वृष	25	24	7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	22	मंगल भर. में 13/2, शनि श्रव. 1 में 17/44,
	23	10	श.	20	56	कृत्ति.	21	32	शु.	22	2	वृष			7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	23	सूर्य श्रव. में 27/59,
	24	11	र.	22	58	रोहि.	24	0	ब्र.	22	28	वृष			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	24	भ. 9/57 से 22/58 तक, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	25	12	चं.	24	25	मृग.	25	55	ऐं.	22	27	मिथुन	13	2	7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	47	17	33	25	बुध कुम्भ में 16/55, शुक्र उ.षा. में 11/39,
	26	13	मं.	25	11	आर्द्रा	27	11	वै.	21	57	मिथुन			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भारत गणतन्त्र दिवस, भौमप्रदोष व्रत,
	27	14	बु.	25	17	पुन.	27	49	वि.	20	55	कर्क	21	43	7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	27	भ. 25/17 बाद, शुक्र मकर में 27/29, राहु रोहि. 4, केतु ज्ये. (C)
	28	15	गु.	24	46	पुष्य	27	50	प्री.	19	24	कर्क			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	1	6	46	17	35	28	भ. 13/2 तक, पौषी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघस्नान प्रारम्भ,
मा. कृ.	29	1	शु.	23	42	आश्ले.	27	21	आ.	17	26	सिंह	27	21	7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	2	6	46	17	36	29	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	30	2	श.	22	13	मघा	26	28	सौ.	15	7	सिंह			7	19	17	52	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	30	बुध वक्री 21/22,
	31	3	र.	20	25	पू.फा.	25	17	शो.	12	31	कन्या	30	58	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	38	31	भ. 9/19 से 20/25 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (D)

गुरु अस्त 17 जनवरी

(A) मु. 30, पुण्यकाल सारा दिन, गुरु वार्धक्य प्रारम्भ 17/41, शुक्र पू.षा. में 20/22, यूरेनस मार्गी 14/8, मकर संक्रान्ति, पोंगल (द.भा.), (B) श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी, (C) 2 में 7/57,
(D) (देखें पृ. 15), (चन्द्रोदय देखें पृ. 11),

श्री वि. सं. 2077 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — फरवरी, सन् 2021 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं.	प्रवेशकाल मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	दिल्ली सूर्योदय मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	दिल्ली सूर्यास्त मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	जयपुर सूर्योदय मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	जयपुर सूर्यास्त मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	वाराणसी सूर्योदय मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	वाराणसी सूर्यास्त मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ कृष्ण	1	4	चं.	18	25	उ.फा.	23	57	अ./	9	44	कन्या			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	1	बुध पश्चिम में अस्त 17/54,
									सु.	30	51																					
	2	5	मं.	16	19	हस्त	22	32	धृ.	27	55	कन्या			7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	
	3	6	बु.	14	12	चित्रा	21	7	शू.	25	0	तुला	9	49	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	भ. 14/12 से 25/11 तक,
	4	7	गु.	12	8	स्वाती	19	45	गं.	22	7	तुला			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	40	4	वक्री बुध मकर में 22/40, गुरु श्रव. 3 में 9/53, शुक्र श्रव. में (A)
	5	8	शु.	10	7	विशा.	18	28	वृ.	19	19	वृश्चिक	12	46	7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	5	सूर्य धनि. में 31/12,
	6	9/	श.	8	13	अनु.	17	17	ध्रु.	16	36	वृश्चिक			7	15	17	59	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	भ. 19/19 से 30/26 तक, शुक्र-वार्धक्य प्रारमभ 7/12,
		10		30	26																											दशमी तिथिक्षय,
	7	11	र.	28	48	ज्येष्ठा	16	14	व्या.	14	0	धनु	16	14	7	14	17	59	7	9	18	1	7	13	18	9	6	42	17	43	7	पट्तिला एकादशी व्रत (स्मा.),
	8	12	चं.	27	20	मूल	15	20	ह.	11	30	धनु			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	पट्तिला एकादशी व्रत (वै.),
	9	13	मं.	26	5	पू.षा.	14	38	व./	9	10	मकर	20	30	7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	9	भ. 26/5 बाद, भौमप्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन), शुक्र पूर्व (B)
									सि.	31	1																					
	10	14	बु.	25	9	उ.षा.	14	12	व्य.	29	7	मकर			7	11	18	2	7	7	18	3	7	11	18	11	6	40	17	45	10	भ. 13/37 तक, वक्री बुध श्रव. में 22/46, शनि उदित 7/11,
	11	30	गु.	24	35	श्रवण	14	5	व.	27	32	कुम्भ	26	10	7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	पंचक प्रारम्भ 26/10, मौनी अमा,
माघ शुक्ल	12	1	शु.	24	30	धनि.	14	23	प.	26	19	कुम्भ			7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	12	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सं. सूर्य कुम्भ में 21/12, मु. 15, (C)
	13	2	श.	24	56	शत.	15	11	शि.	25	31	कुम्भ			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	13	6	38	17	47	13	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	14	3	र.	25	59	पू.भा.	16	32	सि.	25	11	मीन	10	9	7	8	18	5	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	14	गौरी तृतीया (गोंतरी),
	15	4	चं.	27	37	उ.भा.	18	28	सा.	25	18	मीन			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	15	भ. 14/48 से 27/37 तक, शुक्र धनि. में 18/31, तिल-वरद-कुन्द (D)
	16	5	मं.	29	46	रेवती	20	56	शु.	25	48	मेष	20	56	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	36	17	48	16	पंचक समाप्त 20/56, मंगल कृत्ति. में 7/7, श्रीपंचमी, लक्ष्मी पंचमी, (E)
	17	6	बु.	—	—	अश्वि.	23	48	शु.	26	37	मेष			7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	17	
	18	6	गु.	8	18	भरणी	26	54	ब्र.	27	35	मेष			7	4	18	9	7	1	18	9	7	4	18	17	6	34	17	50	18	गुरु श्रव. 4 में 13/16, सूर्य सायन मीन में 16/15, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (F)
	19	7	शु.	10	58	कृत्ति.	29	57	ऐं.	28	31	वृष	9	40	7	3	18	9	7	0	18	10	7	4	18	18	6	33	17	50	19	भ. 10/58 से 24/15 तक, सूर्य शत. में 11/37, शनि श्रव. 2 में (G)
	20	8	श.	13	32	रोहि.	—	—	वै.	29	14	वृष			7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	20	बुध मार्गी 30/21, शुक्र कुम्भ में 26/22, भीष्माष्टमी (देखें पृ15),
	21	9	र.	15	42	रोहि.	8	43	वि.	29	34	मिथुन	21	55	7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	32	17	52	21	मंगल वृष में 28/36, माघ गुप्त नवरात्र समाप्त,
	22	10	चं.	17	16	मृग.	10	57	प्री.	29	22	मिथुन			7	0	18	12	6	57	18	12	7	1	18	20	6	31	17	52	22	भ. 29/40 बाद, नवरात्र-पारणा,
	23	11	मं.	18	5	आर्द्रा	12	30	आ.	28	34	मिथुन			6	59	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	भ. 18/5 तक, जया एकादशी व्रत (स.),
	24	12	बु.	18	6	पुन.	13	17	सौ.	27	8	कर्क	7	10	6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	भीष्म द्वादशी, प्रदोष व्रत,
	25	13	गु.	17	19	पुष्य	13	17	शो.	25	7	कर्क			6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	यूरेनस भर. 1 में 21/14,
	26	14	शु.	15	50	आश्ले.	12	35	अ.	22	34	सिंह	12	35	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	54	26	भ. 15/50 से 26/49 तक, शुक्र शत. में 10/20, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	27	15	श.	13	47	मघा	11	18	सु.	19	37	सिंह			6	55	18	15	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	27	माघी पूर्णिमा, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्त,
फा.कृ.	28	1	र.	11	19	पू.फा.	9	35	धृ.	16	21	कन्या	15	6	6	54	18	16	6	51	18	16	6	55	18	23	6	26	17	55	28	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,

शुक्र अस्त 9 फरवरी

गुरु उदित 15 फरवरी

(A) 27/1, जन्मदिन स्वामी विवेकानन्दजी, (B) में अस्त 7/12, (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (D) चतुर्थी, बुध पूर्व में उदित 7/7, गुरु उदित 7/7, (E) वसन्त पंचमी, श्री लक्ष्मी-सरस्वती पूजन, (F) आरोग्य सप्तमी, रथ सप्तमी, गुरु-वाल्य समाप्त 7/7, (G) 29/50, मर्यादा महोत्सव (जैन).

फा.कृ.	28	1	र.	11	19	पू.फा.	9	35	धृ.	16	21	कन्या	15	6	6	54	18	16	6	51	18	16	6	55	18	23	6	26	17	55	28 फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,

(A) 27/1, जन्मदिन स्वामी विवेकानन्दजी, (B) में अस्त 7/12, (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (D) चतुर्थी, बुध पूर्व में उदित 7/7, गुरु उदित 7/7, (E) वसन्त पंचमी, श्री लक्ष्मी-सरस्वती पूजन, (F) आरोग्य सप्तमी, रथ सप्तमी, गुरु-बाल्य समाप्त 7/7, (G) 29/50, मर्यादा महोत्सव (जैन).

मास पक्ष	[illegible]	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
फाल्गुन कृष्ण	1	2/	च.	8	36	उ.फा./	7	36	शू.	12	54	कन्या			6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	25	17	56	1	भ. 19/11 से 29/46 तक,
		3		29	46	हस्त	29	31																								तृतीया तिथिक्षय,
	2	4	मं.	26	59	चित्रा	27	29	गं./	9	24	तुला	16	29	6	52	18	18	6	49	18	18	6	53	18	24	6	24	17	57	2	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
									वृ.	29	58																					
	3	5	बु.	24	22	स्वाती	25	35	ध्रु.	26	39	तुला			6	51	18	18	6	48	18	18	6	52	18	25	6	23	17	57	3	
	4	6	गु.	21	59	विशा.	23	57	व्या.	23	33	वृश्चिक	18	20	6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	भ. 21/59 बाद, सूर्य पू.भा. में 17/59, गुरु धनि. 1 में 25/58,
	5	7	शु.	19	54	अनु.	22	37	ह.	20	43	वृश्चिक			6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	भ. 8/57 तक, बुध धनि. में 7/14,
	6	8	श.	18	10	ज्येष्ठा	21	38	व.	18	8	धनु	21	38	6	47	18	21	6	45	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	
	7	9	र.	16	47	मूल	20	59	सि.	15	51	धनु			6	46	18	21	6	44	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	भ. 28/15 बाद,
	8	10	चं.	15	44	पू.षा.	20	40	व्य.	13	49	मकर	26	38	6	45	18	22	6	42	18	21	6	47	18	28	6	18	18	0	8	भ. 15/44 तक, शुक्र पू.भा. में 26/34,
	9	11	मं.	15	2	उ.षा.	20	41	व.	12	4	मकर			6	44	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	विजया एकादशी व्रत, (स.),
	10	12	बु.	14	40	श्रव.	21	2	प.	10	36	मकर			6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	प्रदोष व्रत,
	11	13	गु.	14	40	धनि.	21	45	शि.	9	23	कुम्भ	9	21	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	भ. 14/40 से 26/52 तक, पंचक प्रारम्भ 9/21, मंगल रोहि. में (A)
	12	14	शु.	15	3	शत.	22	50	सि.	8	29	कुम्भ			6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	
	13	30	श.	15	51	पू.भा.	24	21	सा.	7	53	मीन	17	56	6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	शनैश्चरी अमा,
फाल्गुन शुक्ल	14	1	र.	17	6	उ.भा.	26	19	शु.	7	39	मीन			6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, सं. सूर्य मीन में (B)
	15	2	चं.	18	50	रेवती	28	43	शु.	7	45	मेष	28	43	6	36	18	27	6	35	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	पंचक समाप्त 28/43, नेप्च्यून पू.भा. 3 में 25/1, अवतारदिन (C)
	16	3	मं.	20	59	अश्वि.	—	—	ब्र.	8	13	मेष			6	35	18	27	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	बुध शत. में 18/31, शुक्र मीन में 27/0,
	17	4	बु.	23	29	अश्वि.	7	30	ऐं.	8	58	मेष			6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	भ. 10/14 से 23/29 तक, सूर्य उ.भा. में 26/21,
	18	5	गु.	26	10	भरणी	10	34	वै.	9	56	वृष	17	21	6	33	18	29	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	
	19	6	शु.	28	48	कृत्ति.	13	44	वि.	10	58	वृष			6	31	18	29	6	30	18	28	6	36	18	34	6	7	18	5	19	शुक्र उ.भा. में 19/14,
	20	7	श.	—	—	रोहि.	16	45	प्री.	11	56	मिथुन	30	8	6	30	18	30	6	29	18	29	6	34	18	34	6	6	18	5	20	गुरु धनि. 2 में 8/43, सूर्य सायन मेष में 15/09, उत्तर गोल प्रारम्भ, (D)
	21	7	र.	7	10	मृग.	19	24	आ.	12	38	मिथुन			6	29	18	31	6	28	18	29	6	33	18	35	6	5	18	6	21	भ. 7/10 से 20/5 तक, होलाष्टक प्रारम्भ,
	22	8	चं.	9	0	आर्द्रा	21	27	सौ.	12	55	मिथुन			6	28	18	31	6	27	18	30	6	32	18	35	6	4	18	6	22	शक सम्वत् 1943 प्रारम्भ,
	23	9	मं.	10	7	पुन.	22	45	शो.	12	37	कर्क	16	30	6	27	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	3	18	7	23	
	24	10	बु.	10	24	पुष्य	23	12	अ.	11	40	कर्क			6	25	18	32	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	24	भ. 22/5 बाद,
	25	11	गु.	9	47	आश्ले.	22	48	सु.	10	2	सिंह	22	48	6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	भ. 9/47 तक, बुध पू.भा. में 21/58, शनि श्रव. 3 में 9/47, (E)
	26	12/	शु.	8	21	मघा	21	39	धृ./	7	45	सिंह			6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	प्रदोष व्रत,
		13		30	12				शू.	28	52																					त्रयोदशी तिथिक्षय,
	27	14	श.	27	27	पू.फा.	19	51	गं.	25	31	कन्या	25	19	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	38	5	58	18	8	27	भ. 27/27 बाद,
	28	15	र.	24	18	उ.फा.	17	35	वृ.	21	48	कन्या			6	20	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	57	18	9	28	भ. 13/53 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, होलिकादहन (प्रदोष में), (F)
चै. कृ.	29	1	च.	20	54	हस्त	15	2	ध्रु.	17	53	तुला	25	42	6	19	18	36	6	18	18	34	6	25	18	39	5	56	18	9	29	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला महल्ला श्री आनन्दपुर साहब (पं.),
	30	2	मं.	17	27	चित्रा	12	21	व्या.	13	54	तुला			6	18	18	36	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	30	भ. 27/47 बाद, शुक्र रेव. में 12/32, राहु रोहि. 3, केतु ज्ये. 1 में 29/47,
	31	3	बु.	14	6	स्वाती	9	45	ह./	9	58	वृश्चिक	25	56	6	17	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	भ. 14/6 तक, सूर्य रेव. में 13/14, बुध मीन में 24/41, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
									व	30	13																					

होलाष्टक
21 से 28 मार्च

(A) 11/48, बुध कुम्भ में 12/30, श्री महाशिवरात्रि व्रत, (B) 18/3, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, (C) श्रीरामकृष्ण परमहंस, (D) महाविषुव दिन, (E) आमलकी एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी, (F) होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु,

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चैत्र कृष्ण	1	4	गु.	11	0	विशा./	7	21	सि.	26	45	वृश्चिक			6	15	18	37	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	मेला श्री शीतला माता (कुराली) पंजाब,
						अनु.	29	19																								
	2	5/	शु.	8	15	ज्येष्ठा	27	43	व्य.	23	39	धनु	27	43	6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	भ. 29/59 बाद, मंगल मृग. में 23/9, बुध उ.भा. में 22/58,
		6		29	59																											षष्ठी तिथिक्षय,
	3	7	श.	28	13	मूल	26	38	व.	20	57	धनु			6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	11	3	भ. 17/6 तक,
	4	8	र.	27	0	पू.षा.	26	5	प.	18	42	धनु			6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	शीशीतलाष्टमी,
	5	9	चं.	26	19	उ.षा.	26	4	शि.	16	52	मकर	8	2	6	11	18	40	6	10	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	गुरु धनि. 3 कुम्भ में 24/25,
	6	10	मं.	26	9	श्रव.	26	34	सि.	15	28	मकर			6	9	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	भ. 14/14 से 26/9 तक, बुध पूर्व में अस्त 6/9,
	7	11	बु.	26	29	धनि.	27	32	सा.	14	28	कुम्भ	15	0	6	8	18	41	6	8	18	39	6	15	18	43	5	47	18	13	7	पंचक प्रारम्भ 15/0, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	8	12	गु.	27	16	शत.	28	57	शु.	13	50	कुम्भ			6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	44	5	46	18	14	8	
	9	13	शु.	28	28	पू.भा.	—	—	शु.	13	32	मीन	24	16	6	6	18	42	6	6	18	40	6	13	18	44	5	45	18	14	9	भ. 28/28 बाद, बुध रेव. में 29/7, प्रदोष व्रत,
	10	14	श.	30	3	पू.भा.	6	46	ब्र.	13	33	मीन			6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	45	5	44	18	15	10	भ. 17/16 तक, शुक्र अश्वि. मेष में 6/28, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),
	11	30	र.	—	—	उ.भा.	8	57	ऐं.	13	52	मीन			6	3	18	44	6	4	18	41	6	11	18	45	5	43	18	15	11	
	12	30	चं.	8	0	रेव.	11	29	वै.	14	26	मेष	11	29	6	2	18	44	6	3	18	41	6	10	18	46	5	42	18	15	12	पंचक समाप्त 11/29, सोमवती अमा, चान्द्र संवत्सर 2077 वि. पूर्ण.,

ग्रहणादर्श

लेखक—प्रियव्रत शर्मा

(सन् 2016 से 2050 ई. तक भारत में दृश्य सूर्य-चन्द्र ग्रहणों का सांगोपांग विवरण)

इस पुस्तक में सन् 2016 से 2050 ई. तक (35 वर्षों में) भारतभूमि पर दिखलायी पड़ने वाले सभी सूर्य-चन्द्र ग्रहणों का सर्वाङ्गीण विवेचन है। चन्द्रग्रहण के स्पर्श, मध्य, मोक्ष और खग्रासारम्भ-समाप्ति के सेकण्ड तक शुद्ध काल, ग्रासमान तथा ग्रस्तोदय, ग्रस्तास्त ग्रहण वाले भारतीय स्थलों के अक्षांश-रेखांश निर्दिष्ट हैं।

इस 35 वर्षीय अवधि में भारतीय क्षेत्र में घटित होने वाले सूर्यग्रहणों के विभिन्न अक्षांश-रेखांशीय स्थलों के स्पर्श, मध्य, मोक्ष के सेकण्ड तक शुद्ध काल तथा परमग्रासमान पृथक्-पृथक् कोष्ठकों में दिये गये हैं। सूर्यग्रहण के ग्रस्तोदयास्त वाले स्थलों के अक्षांश-रेखांशों को भी पृथक् कोष्ठकों में दिया गया है। खग्रास एवं कंकण सूर्यग्रहणों के प्रारम्भ-समाप्तिकाल तथा खग्रास-कंकण ग्रहण के पथ (पट्टी) की दक्षिणोत्तरी सीमाओं के अक्षांश, रेखांश किंच खग्रास-कंकणग्रहण के मार्ग (पट्टी) की मध्यवर्त्ती रेखाओं के अक्षांश- रेखांश भी दिये गये हैं, जिनकी मदद से यह अनायास जाना जा सकता है कि— भारत में अमुक खग्रास या कंकण ग्रहण कहां-कहां, कब-कब दिखाई देगा तथा किन स्थलों पर खग्रास, कंकण ग्रहण की अवधि कितनी होगी ? इसके साथ ही भारत के प्रसिद्ध 225 नगरों में प्रत्येक सूर्यग्रहण के स्पर्श, मोक्ष आदि काल भी पृथक् कोष्ठक में प्रदर्शित हैं।

यहां दिये गये सूर्यग्रहण के विभिन्न अक्षांश-रेखांशीय स्पर्श-मोक्षादि के कालों द्वारा कोई भी व्यक्ति भारत-मानचित्र पर स्पर्श-मोक्षादिदर्शक रेखाएं भी आसानी से अंकित कर सकता है और उनसे किसी भी नगर/ग्राम में उस सूर्यग्रहण के स्पर्शादि काल एक ही दृष्टि में तुरन्त जान सकता है।

ग्रहण विश्व के अन्य किन-किन देशों में दृश्य होगा, इसका निर्देश करने वाले भूगोल-चित्र भी दिये गये हैं। भारतीय भूभाग पर दृश्य सूर्य-चन्द्रग्रहणों के सभी खगोलीय चमत्कारों (Celestial Phenomona) का इसके सदृश स्पष्ट एवं परिपूर्ण विवेचन आपको अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा, यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

भारतीय पंचांगकारों के लिए तो यह प्रकाशन वरदान सिद्ध होगा।

पुस्तक मिलने का पता—

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित प्रकाशन', कोठी नं. 59, सैक्टर 6, P.O. पंचकूला (हरियाणा)-134 109,
Phone : 0172-2565 303, (M.) 09041330161

भारतीय पंचांगकारों के लिए तो यह प्रकाशन वरदान सिद्ध होगा।

पुस्तक मिलने का पता—
श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन', कोठी नं. 59, सैक्टर 6, P.O. पंचकूला (हरियाणा)-134 109,
Phone : 0172-2565 303, (M.) 09041330161

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पू.भा.	1	27	8	10	14	54	21	38
2/3	उ.भा.	4	22	11	7	17	51	0	35
3/4	रेव.	7	19	14	2	20	44	3	25
4/5	अश्वि.	10	5	16	43	23	19	5	54
5/6	भर.	12	27	18	57	1	25	7	51
6/7	कृत्ति.	14	15	20	36	2	54	9	10
7/8	रोहि.	15	23	21	34	3	42	9	48
8/9	मृग.	15	50	21	51	3	49	9	44
9/10	आर्द्रा	15	37	21	28	3	17	9	3
10/11	पुन.	14	48	20	31	2	12	7	52
11/12	पुष्य	13	30	19	6	0	42	6	16
12/13	आश्ले.	11	49	17	22	22	53	4	24
13/14	मघा	9	55	15	25	20	55	2	25
14/15	पू.फा.	7	55	13	25	18	55	0	26
15	उ.फा.	5	56	11	28	17	0	22	33
16	हस्त	4	6	9	41	15	16	20	53
17	चित्रा	2	30	8	9	13	49	19	30
18	स्वाती	1	12	6	56	12	41	18	27
19	विशा.	0	15	6	4	11	55	17	47
19/20	अनु.	23	41	5	36	11	32	17	30
20/21	ज्येष्ठा	23	30	5	31	11	33	17	37
21/22	मूल	23	43	5	49	11	58	18	8
23	पू.षा.	0	19	6	32	12	47	19	3
24	उ.षा.	1	20	7	39	14	0	20	22
25	श्रव.	2	45	9	10	15	37	22	5
26/27	धनि.	4	35	11	6	17	39	0	13
27/28	शत.	6	48	13	25	20	3	2	42
28/29	पू.भा.	9	22	16	4	22	46	5	29
29/30	उ.भा.	12	13	18	57	1	42	8	27
30/31	रेव.	15	12	21	57	4	41	11	26

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	अश्वि.	18	9	0	52	7	34	14	14
1/2	भर.	20	53	3	30	10	6	16	39
2/3	कृत्ति.	23	11	5	40	12	6	18	30
4	रोहि.	0	52	7	10	13	26	19	39
5	मृग.	1	49	7	56	13	59	20	0
6	आर्द्रा	1	58	7	53	13	45	19	34
7	पुन.	1	20	7	4	12	45	18	24
8	पुष्य	0	0	5	34	11	6	16	36
8/9	आश्ले.	22	5	3	31	8	56	14	20
9/10	मघा	19	43	1	5	6	25	11	45
10/11	पू.फा.	17	5	22	25	3	44	9	3
11/12	उ.फा.	14	23	19	43	1	3	6	24
12/13	हस्त	11	46	17	9	22	33	3	58
13/14	चित्रा	9	24	14	53	20	22	1	54
14/15	स्वाती	7	27	13	2	18	40	0	19
15	विशा.	6	0	11	44	17	30	23	18
16	अनु.	5	9	11	1	16	56	22	54
17	ज्येष्ठा	4	53	10	55	16	59	23	5
18	मूल	5	13	11	23	17	36	23	50
19/20	पू.षा.	6	6	12	24	18	43	1	4
20/21	उ.षा.	7	27	13	52	20	17	2	44
21/22	श्रव.	9	13	15	43	22	13	4	46
22/23	धनि.	11	19	17	53	0	28	7	5
23/24	शत.	13	42	20	20	2	59	9	39
24/25	पू.भा.	16	20	23	2	5	44	12	26
25/26	उ.भा.	19	10	1	54	8	38	15	23
26/27	रेव.	22	8	4	53	11	38	18	23
28	अश्वि.	1	8	7	52	14	36	21	20

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
29/1	भर.	4	2	10	44	17	24	0	4
1/2	कृत्ति.	6	42	13	18	19	52	2	24
2/3	रोहि.	8	55	15	22	21	48	4	11
3/4	मृग.	10	31	16	48	23	3	5	14
4/5	आर्द्रा	11	23	17	28	23	30	5	30
5/6	पुन.	11	25	17	18	23	8	4	54
6/7	पुष्य	10	38	16	19	21	57	3	32
7/8	आश्ले.	9	4	14	34	20	2	1	28
8	मघा	6	52	12	13	17	33	22	52
9	पू.फा.	4	9	9	25	14	40	19	55
10	उ.फा.	1	8	6	21	11	34	16	48
10/11	हस्त	22	1	3	15	8	29	13	43
11/12	चित्रा	18	59	0	16	5	34	10	54
12/13	स्वाती	16	15	21	38	3	3	8	30
13/14	विशा.	13	59	19	31	1	4	6	41
14/15	अनु.	12	20	18	1	23	46	5	33
15/16	ज्येष्ठा	11	23	17	16	23	12	5	10
16/17	मूल	11	12	17	16	23	23	5	33
17/18	पू.षा.	11	46	18	1	0	18	6	38
18/19	उ.षा.	13	0	19	24	1	51	8	19
19/20	श्रव.	14	49	21	21	3	54	10	29
20/21	धनि.	17	4	23	42	6	20	12	59
21/22	शत.	19	39	2	20	9	1	15	43
22/23	पू.भा.	22	26	5	9	11	53	18	36
24	उ.भा.	1	20	8	5	14	49	21	34
25/26	रेव.	4	18	11	3	17	47	0	32
26/27	अश्वि.	7	16	14	0	20	43	3	26
27/28	भर.	10	9	16	51	23	32	6	12
28/29	कृत्ति.	12	52	19	30	2	7	8	43
29/30	रोहि.	15	17	21	50	4	21	10	50
30/31	मृग.	17	17	23	42	6	5	12	25

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	आर्द्रा	18	43	00	59	7	11	13	21
1/2	पुन.	19	28	1	33	7	34	13	32
2/3	पुष्य	19	28	1	20	7	10	12	56
3/4	आश्ले.	18	40	0	21	5	59	11	35
4/5	मघा	17	8	22	38	4	7	9	33
5/6	पू.फा.	14	57	20	19	1	39	6	58
6/7	उ.फा.	12	16	17	32	22	47	4	1
7/8	हस्त	9	15	14	28	19	41	0	54
8	चित्रा	6	6	11	19	16	33	21	47
9	स्वाती	3	2	8	18	13	36	18	54
10	विशा.	0	14	5	36	11	0	16	26
10/11	अनु.	21	54	3	24	8	57	14	33
11/12	ज्येष्ठा	20	11	1	52	7	36	13	22
12/13	मूल	19	12	1	5	7	1	13	00
13/14	पू.षा.	19	2	1	7	7	15	13	26
14/15	उ.षा.	19	40	1	57	8	17	14	39
15/16	श्रव.	21	4	3	31	20	0	16	32
16/17	धनि.	23	5	5	40	12	17	18	56
18	शत.	1	35	8	16	14	58	21	41
19/20	पू.भा.	4	24	11	8	17	53	0	37
20/21	उ.भा.	7	22	14	7	20	52	3	37
21/22	रेव.	10	22	17	6	23	51	6	34
22/23	अश्वि.	13	17	20	0	2	42	9	24
23/24	भर.	16	4	22	44	5	23	12	1
24/25	कृत्ति.	18	39	1	15	7	50	14	24
25/26	रोहि.	20	57	3	29	9	59	16	28
26/27	मृग.	22	55	5	21	11	46	18	8
28	आर्द्रा	0	29	6	48	13	5	19	19
29	पुन.	1	32	7	43	13	51	19	57
30	पुष्य	2	1	8	2	14	1	19	58

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	आश्ले.	1	52	7	44	13	33	19	20
2	मघा	1	4	6	47	12	26	18	4
2/3	पू.फा.	23	40	5	13	10	45	16	14
3/4	उ.फा.	21	42	3	8	8	33	13	57
4/5	हस्त	19	19	0	40	6	0	11	20
5/6	चित्रा	16	38	21	57	3	15	8	33
6/7	स्वाती	13	51	19	9	0	28	5	47
7/8	विशा.	11	7	16	28	21	50	3	13
8/9	अनु.	8	37	14	3	19	31	1	1
9	ज्येष्ठा	6	33	12	6	17	42	23	21
10	मूल	5	2	10	45	16	32	22	21
11	पू.षा.	4	13	10	7	16	5	22	6
12	उ.षा.	4	9	10	16	16	26	22	36
13	श्रव.	4	54	11	12	17	33	23	56
14/15	धनि.	6	22	12	51	19	22	1	54
15/16	शत.	8	29	15	6	21	44	4	24
16/17	पू.भा.	11	5	17	47	0	30	7	14
17/18	उ.भा.	13	58	20	43	3	28	10	13
18/19	रेव.	16	57	23	42	6	26	13	10
19/20	अश्वि.	19	53	2	35	9	17	15	57
20/21	भर.	22	37	5	15	11	52	18	28
22	कृत्ति.	1	3	7	37	14	9	20	39
23	रोहि.	3	9	9	37	16	3	22	28
24	मृग.	4	51	11	13	17	33	23	52
25/26	आर्द्रा	6	9	12	25	18	39	0	51
26/27	पुन.	7	2	13	11	19	18	1	24
27/28	पुष्य	7	28	13	30	19	30	1	29
28/29	आश्ले.	7	26	13	22	19	15	1	7
29/30	मघा	6	58	12	46	18	33	0	18
30	पू.फा.	6	3	11	44	17	25	23	4
31	उ.फा.	4	42	10	19	15	54	21	28

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	हस्त	3	1	8	32	14	3	19	33
2	चित्रा	1	2	6	31	11	59	17	27
2/3	स्वाती	22	54	4	21	9	48	15	15
3/4	विशा.	20	42	2	10	7	38	13	7
4/5	अनु.	18	36	0	6	5	37	11	9
5/6	ज्येष्ठा	16	43	22	18	3	54	9	32
6/7	मूल	15	12	20	53	2	37	8	22
7/8	पू.षा.	14	10	20	0	1	52	7	47
8/9	उ.षा.	13	45	19	44	1	47	7	52
9/10	श्रव.	14	0	20	10	2	23	8	39
10/11	धनि.	14	57	21	18	3	41	10	7
11/12	शत.	16	35	23	5	5	38	12	12
12/13	पू.भा.	18	48	1	26	8	5	14	46
13/14	उ.भा.	21	27	4	10	10	53	17	37
15	रेव.	0	21	7	5	13	50	20	34
16	अश्वि.	3	17	10	0	16	42	23	23
17/18	भर.	6	3	12	42	19	20	1	56
18/19	कृत्ति.	8	30	15	3	21	34	4	3
19/20	रोहि.	10	31	16	56	23	20	5	42
20/21	मृग.	12	1	18	19	0	35	6	49
21/22	आर्द्रा	13	1	19	11	1	19	7	26
22/23	पुन.	13	30	19	33	1	35	7	34
23/24	पुष्य	13	32	19	29	1	24	7	17
24/25	आश्ले.	13	10	19	1	0	50	6	39
25/26	मघा	12	26	18	12	23	58	5	42
26/27	पू.फा.	11	25	17	8	22	49	4	30
27/28	उ.फा.	10	10	15	50	21	29	3	8
28/29	हस्त	8	45	14	23	20	0	1	37
29/30	चित्रा	7	14	12	50	18	26	0	2
30	स्वाती	5	38	11	14	16	50	22	27

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	विशा.	4	3	9	40	15	17	20	55
2	अनु.	2	33	8	42	13	52	19	32
3	ज्येष्ठा	1	13	6	55	12	38	18	22
4	मूल	0	7	5	54	11	42	17	31
4/5	पू.षा.	23	22	5	14	11	8	17	4
5/6	उ.षा.	23	1	5	1	11	2	17	6
6/7	श्रव.	23	11	5	19	11	29	17	41
7/8	धनि.	23	55	6	12	12	30	18	51
9	शत.	1	15	7	40	14	8	20	37
10	पू.भा.	3	9	9	42	16	17	22	54
11/12	उ.भा.	5	32	12	12	18	53	1	35
12/13	रेव.	8	18	15	1	21	45	4	29
13/14	अश्वि.	11	13	17	57	0	41	7	24
14/15	भर.	14	6	20	47	3	27	10	6
15/16	कृत्ति.	16	43	23	18	5	52	12	23
16/17	रोहि.	18	53	1	20	7	45	14	7
17/18	मृग.	20	27	2	45	9	0	15	13
18/19	आर्द्रा	21	23	3	31	9	36	15	39
19/20	पुन.	21	40	3	38	9	34	15	28
20/21	पुष्य	21	20	3	10	8	58	14	45
21/22	आश्ले.	20	30	2	13	7	55	13	36
22/23	मघा	19	15	0	53	6	31	12	7
23/24	पू.फा.	17	43	23	19	4	53	10	28
24/25	उ.फा.	16	2	21	36	3	10	8	44
25/26	हस्त	14	18	19	52	1	26	7	1
26/27	चित्रा	12	37	18	12	23	49	5	25
27/28	स्वाती	11	3	16	41	22	20	4	0
28/29	विशा.	9	41	15	22	21	5	2	48
29/30	अनु.	8	32	14	18	20	4	1	51
30/31	ज्ये.	7	40	13	29	19	20	1	13
31	मूल	7	4	12	58	18	54	0	50

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	पू.षा.	5	48	12	47	18	47	0	49
2/3	उ.षा.	6	52	12	56	19	2	1	9
3/4	श्रव.	7	18	13	29	19	41	1	55
4/5	धनि.	8	10	14	28	20	46	3	7
5/6	शत.	9	30	15	54	22	20	4	48
6/7	पू.भा.	11	18	17	49	0	22	6	57
7/8	उ.भा.	13	33	20	10	2	49	9	30
8/9	रेव.	16	11	22	54	5	37	12	21
9/10	अश्वि.	19	6	1	50	8	35	15	20
10/11	भर.	22	5	4	49	11	32	18	15
12	कृत्ति.	0	56	7	36	14	15	20	51
13	रोहि.	3	26	9	58	16	29	22	56
14/15	मृग.	5	22	11	44	18	4	0	21
15/16	आर्द्रा	6	35	12	46	18	55	1	0
16/17	पुन.	7	2	13	2	18	58	0	52
17/18	पुष्य	6	43	12	32	18	18	0	1
18	आश्ले.	5	43	11	22	16	59	22	34
19	मघा	4	7	9	39	15	10	20	39
20	पू.फा.	2	7	7	34	13	0	18	25
20/21	उ.फा.	23	50	5	15	10	39	16	4
21/22	हस्त	21	28	2	53	8	18	13	44
22/23	चित्रा	19	11	0	38	6	6	11	35
23/24	स्वाती	17	5	22	37	4	10	9	44
24/25	विशा.	15	20	30	57	2	36	8	16
25/26	अनु.	13	58	19	42	1	27	7	15
26/27	ज्येष्ठा	13	3	18	54	0	47	6	41
27/28	मूल	12	37	18	34	0	33	6	34
28/29	पू.षा.	12	37	18	41	0	46	6	54
29/30	उ.षा.	13	2	19	12	1	24	7	37
30/31	श्रव.	13	52	20	7	2	25	8	43
31	धनि.	15	3	21	25	3	48	10	12

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितम्बर 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	शत.	16	37	23	4	5	32	12	2
2/3	पू.भा.	18	33	1	5	7	39	14	14
3/4	उ.भा.	20	50	3	28	10	6	16	46
4/5	रेव.	23	27	6	9	12	52	19	36
6	अश्वि.	2	20	9	6	15	51	22	37
7/8	भर.	5	23	12	9	18	55	1	40
8/9	कृत्ति.	8	25	15	9	21	52	4	34
9/10	रोहि.	11	15	17	53	0	31	7	6
10/11	मृग.	13	38	20	9	2	37	9	2
11/12	आर्द्रा	15	24	21	44	4	0	10	14
12/13	पुन.	16	24	22	31	4	35	10	36
13/14	पुष्य	16	33	22	27	4	18	10	7
14/15	आश्ले.	15	52	21	34	3	13	8	50
15/16	मघा	14	25	19	57	1	26	6	54
16/17	पू.फा.	12	20	17	44	23	6	4	28
17/18	उ.फा.	9	47	15	6	20	25	1	42
18	हस्त	6	59	12	16	17	32	22	49
19	चित्रा	4	6	9	23	14	41	20	0
20	स्वाती	1	20	6	41	12	3	17	26
20/21	विशा.	22	51	4	17	9	46	15	16
21/22	अनु.	20	48	2	22	7	58	13	37
22/23	ज्येष्ठा	19	18	1	1	6	46	22	34
23/24	मूल	18	24	0	17	6	12	12	9
24/25	पू.षा.	18	9	0	11	6	15	12	22
25/26	उ.षा.	18	30	0	41	6	54	13	8
26/27	श्रव.	19	25	1	43	8	4	14	26
27/28	धनि.	20	49	3	14	9	41	16	8
28/29	शत.	22	38	5	8	11	40	18	13
30	पू.भा.	0	47	7	22	13	59	20	36

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	उ.भा.	3	14	9	53	16	33	23	14
2/3	रेव.	5	56	12	39	19	22	2	5
3/4	अश्वि.	8	50	15	35	22	20	5	6
4/5	भर.	11	52	18	38	1	24	8	10
5/6	कृत्ति.	14	55	21	41	4	26	11	10
6/7	रोहि.	17	53	0	36	7	17	13	57
7/8	मृग.	20	35	3	12	9	46	16	19
8/9	आर्द्रा	22	49	5	17	11	43	18	6
10	पुन.	0	26	6	43	12	58	19	9
11	पुष्य	1	17	7	22	13	24	19	23
12	आश्ले.	1	18	7	10	13	0	18	46
13	मघा	0	29	6	9	11	47	17	22
13/14	पू.फा.	22	54	4	24	9	51	15	17
14/15	उ.फा.	20	40	2	2	7	22	12	40
15/16	हस्त	17	57	23	14	4	29	9	43
16/17	चित्रा	14	57	20	11	1	24	6	37
17/18	स्वाती	11	51	17	5	22	19	3	34
18/19	विशा.	8	51	14	8	19	26	0	46
19	अनु.	6	7	11	31	16	56	22	23
20	ज्येष्ठा	3	52	9	23	14	57	20	33
21	मूल	2	11	7	53	13	37	19	23
22	पू.षा.	1	13	7	5	13	0	18	56
23	उ.षा.	0	58	7	1	13	7	19	16
24	श्रव.	1	27	7	41	13	57	20	16
25	धनि.	2	37	9	0	15	26	21	53
26/27	शत.	4	22	10	53	17	26	0	0
27/28	पू.भा.	6	36	13	13	19	51	2	30
28/29	उ.भा.	9	11	15	52	22	34	5	16
29/30	रेव.	11	59	18	43	1	27	8	12
30/31	अश्वि.	14	57	21	42	4	27	11	12

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवम्बर 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	भर.	17	57	0	42	7	27	14	12
1/2	कृत्ति.	20	56	3	40	10	24	17	7
2/3	रोहि.	23	49	6	30	13	11	19	51
4	मृग.	2	29	9	6	15	42	22	17
5/6	आर्द्रा	4	50	11	21	17	51	0	19
6/7	पुन.	6	44	13	8	19	29	1	48
7/8	पुष्य	8	4	14	18	20	30	2	39
8/9	आश्ले.	8	45	14	48	20	49	2	47
9/10	मघा	8	42	14	34	20	24	2	11
10/11	पू.फा.	7	55	13	37	19	16	0	53
11	उ.फा.	6	28	12	0	17	30	22	58
12	हस्त	4	25	9	49	15	12	20	34
13	चित्रा	1	54	7	13	12	31	17	48
13/14	स्वाती	23	5	4	21	9	37	14	53
14/15	विशा.	20	8	1	24	6	41	11	58
15/16	अनु.	17	15	22	34	3	53	9	14
16/17	ज्येष्ठा	14	36	19	59	1	25	6	52
17/18	मूल	12	21	17	52	23	25	5	1
18/19	पू.षा.	10	39	16	20	22	3	3	49
19/20	उ.षा.	9	38	15	29	21	24	3	21
20/21	श्रव.	9	22	15	25	21	31	3	41
21/22	धनि.	9	53	16	08	22	25	4	46
22/23	शत.	11	9	17	34	0	2	6	32
23/24	पू.भा.	13	4	19	38	2	14	8	52
24/25	उ.भा.	15	31	22	12	4	53	11	36
25/26	रेव.	18	20	1	4	7	49	14	34
26/27	अश्वि.	21	20	4	6	10	51	17	37
28	भर.	0	22	7	7	13	51	20	35
29	कृत्ति.	3	18	10	1	16	42	23	23
30/1	रोहि.	6	3	12	41	19	19	1	55

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसम्बर 2020 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	मृग.	8	30	15	4	21	36	4	7
2/3	आर्द्रा	10	37	17	5	23	32	5	57
3/4	पुन.	12	21	18	43	1	3	7	21
4/5	पुष्य	13	38	19	53	2	6	8	18
5/6	आश्ले.	14	27	20	35	2	40	8	44
6/7	मघा	14	45	20	45	2	43	8	38
7/8	पू.फा.	14	32	20	24	2	13	8	1
8/9	उ.फा.	13	47	19	31	1	13	6	53
9/10	हस्त	12	32	18	9	23	44	5	18
10/11	चित्रा	10	51	16	22	21	51	3	20
11/12	स्वाती	8	48	14	14	19	40	1	5
12	विशा.	6	29	11	53	17	17	22	40
13	अनु.	4	4	9	27	14	51	20	15
14	ज्येष्ठा	1	39	7	5	12	30	17	57
14/15	मूल	23	25	4	54	10	25	15	57
15/16	पू.षा.	21	30	3	6	8	43	14	22
16/17	उ.षा.	20	3	1	47	7	33	13	21
17/18	श्रव.	19	12	1	6	7	2	13	1
18/19	धनि.	19	3	1	8	7	16	13	26
19/20	शत.	19	39	1	56	8	15	14	36
20/21	पू.भा.	21	1	3	28	9	57	16	29
21/22	उ.भा.	23	2	5	38	12	16	18	56
23	रेव.	1	37	8	19	15	3	21	47
24/25	अश्वि.	4	32	11	18	18	4	0	50
25/26	भर.	7	36	14	21	21	7	3	51
26/27	कृत्ति.	10	35	17	18	0	0	6	39
27/28	रोहि.	13	19	19	56	2	32	9	6
28/29	मृग.	15	39	22	10	4	39	11	6
29/30	आर्द्रा	17	32	23	55	6	17	12	37
30/31	पुन.	18	55	1	11	7	25	13	38

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	पुष्य	19	48	1	57	8	5	14	11
1/2	आश्ले.	20	15	2	17	8	18	14	18
2/3	मघा	20	16	2	13	8	9	14	3
3/4	पू.फा.	19	56	1	48	7	38	13	28
4/5	उ.फा.	19	16	1	4	6	50	12	36
5/6	हस्त	18	20	0	3	5	46	11	28
6/7	चित्रा	17	9	22	49	4	28	10	7
7/8	स्वाती	15	45	21	23	3	0	8	36
8/9	विशा.	14	12	19	47	1	22	6	57
9/10	अनु.	12	32	18	6	23	40	5	15
10/11	ज्येष्ठा	10	49	16	23	21	58	3	33
11/12	मूल	9	9	14	45	20	21	1	59
12/13	पू.षा.	7	37	13	16	18	57	0	38
13	उ.षा.	6	21	12	5	17	51	23	38
14	श्रव.	5	27	11	18	17	11	23	6
15	धनि.	5	4	11	3	17	5	23	9
16	शत.	5	16	11	25	17	37	23	52
17/18	पू.भा.	6	9	12	28	18	51	1	15
18/19	उ.भा.	7	42	14	12	20	44	3	18
19/20	रेव.	9	54	16	32	23	12	5	53
20/21	अश्वि.	12	36	19	20	2	4	8	50
21/22	भर.	15	36	22	22	5	8	11	54
22/23	कृत्ति.	18	39	1	24	8	8	14	51
23/24	रोहि.	21	32	4	12	10	50	17	26
25	मृग.	0	0	6	32	13	2	19	30
26	आर्द्रा	1	55	8	18	14	38	20	56
27	पुन.	3	11	9	24	15	35	21	43
28	पुष्य	3	49	9	52	15	53	21	53
29	आश्ले.	3	50	9	45	15	39	21	30
30	मघा	3	21	9	9	14	57	20	43
31	पू.फा.	2	27	8	11	13	54	19	36

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	उ.फा.	1	18	6	58	12	38	18	18
1/2	हस्त	23	57	5	36	11	15	16	53
2/3	चित्रा	22	32	4	10	9	49	15	28
3/4	स्वाती	21	7	2	46	8	25	14	5
4/5	विशा.	19	45	1	25	7	5	12	46
5/6	अनु.	18	28	0	9	5	52	11	34
6/7	ज्येष्ठा	17	17	23	1	4	45	10	29
7/8	मूल	16	14	22	0	3	46	9	33
8/9	पू.षा.	15	20	21	9	2	58	8	47
9/10	उ.षा.	14	38	20	30	2	23	8	16
10/11	श्रव.	14	11	20	8	2	5	8	4
11/12	धनि.	14	4	20	6	2	10	8	15
12/13	शत.	14	22	20	31	2	42	8	55
13/14	पू.भा.	15	11	21	28	3	47	10	8
14/15	उ.भा.	16	32	22	58	5	26	11	56
15/16	रेव.	18	28	1	2	7	38	14	16
16/17	अश्वि.	20	56	3	37	10	20	17	3
17/18	भर.	23	46	6	34	13	20	20	7
19	कृत्ति.	2	54	9	39	16	26	23	12
20/21	रोहि.	5	57	12	41	19	23	2	4
21/22	मृग.	8	43	15	20	21	55	4	27
22/23	आर्द्रा	10	57	17	25	23	49	6	11
23/24	पुन.	12	30	18	46	0	59	7	9
24/25	पुष्य	13	17	19	21	1	22	7	21
25/26	आश्ले.	13	17	19	10	1	0	6	49
26/27	मघा	12	35	18	18	0	0	5	40
27/28	पू.फा.	11	18	16	54	22	29	4	2
28/1	उ.फा.	9	35	15	6	20	37	2	7

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1/2	हस्त	7	36	13	5	18	34	0	3
2	चित्रा	5	31	11	0	16	29	21	58
3	स्वाती	3	28	8	59	14	30	20	2
4	विशा.	1	35	7	9	12	44	18	20
4/5	अनु.	23	57	5	35	11	14	16	55
5/6	ज्येष्ठा	22	37	4	20	10	5	15	50
6/7	मूल	21	37	3	26	9	15	15	6
7/8	पू.षा.	20	58	2	52	8	47	14	43
8/9	उ.षा.	20	40	2	38	8	38	14	39
9/10	श्रव.	20	41	2	44	8	49	14	55
10/11	धनि.	21	2	3	11	9	21	15	32
11/12	शत.	21	45	3	59	10	14	16	32
12/13	पू.भा.	22	50	5	11	11	32	17	56
14	उ.भा.	0	21	6	48	13	17	19	47
15	रेव.	2	19	8	52	15	28	22	5
16/17	अश्वि.	4	43	11	23	18	4	0	47
17/18	भर.	7	30	14	15	21	1	3	47
18/19	कृत्ति.	10	34	17	21	0	9	6	56
19/20	रोहि.	13	44	20	30	3	16	10	1
20/21	मृग.	16	45	23	28	6	8	12	47
21/22	आर्द्रा	19	24	1	59	8	31	15	0
22/23	पुन.	21	27	3	51	10	12	16	30
23/24	पुष्य	22	45	4	56	11	5	17	10
24/25	आश्ले.	23	12	5	10	11	6	16	59
25/26	मघा	22	48	4	35	10	19	16	0
26/27	पू.फा.	21	39	3	15	8	49	14	21
27/28	उ.फा.	19	51	1	19	6	46	12	11
28/29	हस्त	17	35	22	58	4	20	9	41
29/30	चित्रा	15	1	20	22	1	41	7	1
30/31	स्वाती	12	21	14	41	23	2	4	23
31/1	विशा.	9	45	15	7	20	31	1	55

(शेष पृष्ठ 198 पर)

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 जनवरी 2020 ई. को अयनांश 24° 7' 55''

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	6	40	29	8	15	52	41	10	22	0	36	7	4	15	11	8	10	15	9
2	6	44	26	8	16	53	51	11	3	53	28	7	4	55	32	8	11	49	48
3	6	48	23	8	17	55	1	11	15	45	49	7	5	35	54	8	13	24	45
4	6	52	19	8	18	56	10	11	27	42	20	7	6	16	17	8	15	0	2
5	6	56	16	8	19	57	19	0	9	47	45	7	6	56	42	8	16	35	40
6	7	0	12	8	20	58	28	0	22	6	32	7	7	37	7	8	18	11	40
7	7	4	9	8	21	59	37	1	4	42	34	7	8	17	34	8	19	48	2
8	7	8	5	8	23	0	45	1	17	38	48	7	8	58	3	8	21	24	47
9	7	12	2	8	24	1	53	2	0	56	50	7	9	38	32	8	23	1	56
10	7	15	58	8	25	3	1	2	14	36	38	7	10	19	3	8	24	39	31
11	7	19	55	8	26	4	8	2	28	36	22	7	10	59	35	8	26	17	31
12	7	23	52	8	27	5	15	3	12	52	24	7	11	40	8	8	27	55	58
13	7	27	48	8	28	6	22	3	27	19	38	7	12	20	43	8	29	34	52
14	7	31	45	8	29	7	29	4	11	52	9	7	13	1	19	9	1	14	14
15	7	35	41	9	0	8	36	4	26	24	0	7	13	41	56	9	2	54	4
16	7	39	38	9	1	9	42	5	10	49	59	7	14	22	35	9	4	34	21
17	7	43	34	9	2	10	49	5	25	6	9	7	15	3	15	9	6	15	6
18	7	47	31	9	3	11	55	6	9	10	0	7	15	43	57	9	7	56	18
19	7	51	27	9	4	13	1	6	23	0	17	7	16	24	40	9	9	37	57
20	7	55	24	9	5	14	6	7	6	36	43	7	17	5	24	9	11	20	0
21	7	59	21	9	6	15	12	7	19	59	33	7	17	46	9	9	13	2	26
22	8	3	17	8	7	16	17	8	3	9	21	7	18	26	55	9	14	45	13
23	8	7	14	9	8	17	21	8	16	6	38	7	19	7	43	9	16	28	17
24	8	11	10	9	9	18	25	8	28	51	54	7	19	48	32	9	18	11	34
25	8	15	7	9	10	19	28	9	11	25	33	7	20	29	22	9	19	55	1
26	8	19	3	9	11	20	30	9	23	48	9	7	21	10	13	9	21	38	29
27	8	23	0	9	12	21	32	10	6	0	29	7	21	51	5	9	23	21	52
28	8	26	56	9	13	22	32	10	18	3	56	7	22	31	58	9	25	5	1
29	8	30	53	8	14	23	32	11	0	0	26	7	23	12	51	9	26	47	45
30	8	34	50	9	15	24	30	11	11	52	40	7	23	53	46	9	28	29	50
31	8	38	46	9	16	25	28	11	23	43	58	7	24	34	42	10	0	11	2

जनवरी	गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु			
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	8	12	32	18	9	20	16	41	8	27	15	48	2	14	6	43
2	8	12	46	8	9	21	30	12	8	27	22	49	2	14	3	32
3	8	12	59	57	9	22	43	41	8	27	29	51	2	14	0	21
4	8	13	13	45	9	23	57	6	8	27	36	54	2	13	57	10
5	8	13	27	33	9	25	10	28	8	27	43	58	2	13	54	0
6	8	13	41	21	9	26	23	48	8	27	51	2	2	13	50	49
7	8	13	55	7	9	27	37	4	8	27	58	7	2	13	47	38
8	8	14	8	53	9	28	50	17	8	28	5	12	2	13	44	27
9	8	14	22	38	10	0	3	26	8	28	12	17	2	13	41	16
10	8	14	36	23	10	1	16	32	8	28	19	23	2	13	38	6
11	8	14	50	6	10	2	29	34	8	28	26	29	2	13	34	55
12	8	15	3	48	10	3	42	32	8	28	33	35	2	13	31	44
13	8	15	17	29	10	4	55	27	8	28	40	42	2	13	28	33
14	8	15	31	9	10	6	8	18	8	28	47	48	2	13	25	22
15	8	15	44	48	10	7	21	6	8	28	54	55	2	13	22	12
16	8	15	58	26	10	8	33	49	8	29	2	1	2	13	19	1
17	8	16	12	2	10	9	46	28	8	29	9	8	2	13	15	50
18	8	16	25	36	10	10	59	4	8	29	16	14	2	13	12	39
19	8	16	39	9	10	12	11	35	8	29	23	20	2	13	9	28
20	8	16	52	40	10	13	24	2	8	29	30	25	2	13	6	18
21	8	17	6	10	10	14	36	24	8	29	37	30	2	13	3	7
22	8	17	19	37	10	15	48	42	8	29	44	35	2	12	59	56
23	8	17	33	3	10	17	0	56	8	29	51	39	2	12	56	45
24	8	17	46	27	10	18	13	5	8	29	58	42	2	12	53	34
25	8	17	59	48	10	19	25	8	9	0	5	45	2	12	50	24
26	8	18	13	7	10	20	37	7	9	0	12	47	2	12	47	13
27	8	18	26	24	10	21	49	1	9	0	19	48	2	12	44	2
28	8	18	39	39	10	23	0	49	9	0	26	48	2	12	40	51
29	8	18	52	51	10	24	12	31	9	0	33	47	2	12	37	40
30	8	19	6	0	10	25	24	8	9	0	40	45	2	12	34	30
31	8	19	19	7	10	26	35	38	9	0	47	42	2	12	31	19

जनवरी	स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	2	14	15	35	-23	4	-9	58	-4	54
2	2	14	15	27	-22	59	-5	33	-5	12
3	2	14	15	23	-22	53	-0	56	-5	17
4	2	14	15	29	-22	48	3	44	-5	8
5	2	14	15	50	-22	41	8	20	-4	46
6	2	14	16	27	-22	35	12	41	-4	11
7	2	14	17	15	-22	28	16	36	-3	22
8	2	14	18	6	-22	20	19	51	-2	22
9	2	14	18	47	-22	12	22	7	-1	13
10	2	14	19	4	-22	4	23	11	0	2
11	2	14	18	47	-21	55	22	48	1	18
12	2	14	17	50	-21	46	20	58	2	32
13	2	14	16	17	-21	36	17	45	3	36
14	2	14	14	21	-21	26	13	26	4	27
15	2	14	12	23	-21	15	8	21	5	1
16	2	14	10	45	-21	5	2	51	5	15
17	2	14	9	47	-20	53	-2	45	5	10
18	2	14	9	40	-20	41	-8	7	4	46
19	2	14	10	24	-20	29	-13	1	4	6
20	2	14	11	44	-20	17	-17	10	3	13
21	2	14	13	14	-20	4	-20	21	2	10
22	2	14	14	23	-19	51	-22	24	1	1
23	2	14	14	42	-19	37	-23	13	-0	10
24	2	14	13	46	-19	23	-22	47	-1	19
25	2	14	11	25	-19	9	-21	12	-2	24
26	2	14	7	42	-18	54	-18	37	-3	20
27	2	14	2	54	-18	39	-15	16	-4	6
28	2	13	57	31	-13	23	-11	18	-4	41
29	2	13	52	6	-18	8	-6	58	-5	3
30	2	13	47	17	-17	52	-2	23	-5	12
31	2	13	43	33	-17	35	2	16	-5	7

													23	12	31	9	26	47	45	8	18	52	51	10	24	12	31	9	0	33	47	2	12	37	40	2	13	52	6	-18	8	-6	58	-5	3
30	8	34	50	9	15	24	30	11	11	52	40	7	23	53	46	9	28	29	50	8	19	6	0	10	25	24	8	9	0	40	.45	2	12	34	30	2	13	47	17	-17	52	-2	23	-5	12
31	8	38	46	9	16	25	28	11	23	43	58	7	24	34	42	10	0	11	2	8	19	19	7	10	26	35	38	9	0	47	42	2	12	31	19	2	13	43	33	-17	35	2	16	-5	7

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 फरवरी 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 0"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	42	43	9	17	26	24	0	5	38	23	7	25	15	39	10	1	51	3	8	19	32	11	10	27	47	2	9	0	54	38	2	12	28	8	2	13	41	14	-17	19	6	52	-4	49
2	8	46	39	9	18	27	18	0	17	40	25	7	25	56	37	10	3	29	33	8	19	45	12	10	28	58	20	9	1	1	32	2	12	24	57	2	13	40	27	-17	2	11	16	-4	19
3	8	50	36	9	19	28	11	0	29	54	57	7	26	37	36	10	5	6	7	8	19	58	10	11	0	9	31	9	1	8	25	2	12	21	47	2	13	41	0	-16	44	15	17	-3	36
4	8	54	32	9	20	29	3	1	12	26	47	7	27	18	36	10	6	40	19	8	20	11	5	11	1	20	35	9	1	15	17	2	12	18	36	2	13	42	25	-16	27	18	45	-2	42
5	8	58	29	9	21	29	54	1	25	20	22	7	27	59	37	10	8	11	39	8	20	23	57	11	2	31	32	9	1	22	7	2	12	15	25	2	13	44	1	-16	9	21	23	-1	38
6	9	2	25	9	22	30	43	2	8	39	9	7	28	40	40	10	9	39	34	8	20	36	46	11	3	42	22	9	1	28	56	2	12	12	14	2	13	45	1	-15	51	22	57	-0	28
7	9	6	22	9	23	31	31	2	22	24	58	7	29	21	43	10	11	3	26	8	20	49	31	11	4	53	4	9	1	35	43	2	12	9	4	2	13	44	43	-15	32	23	11	0	47
8	9	10	19	9	24	32	18	3	6	37	20	8	0	2	48	10	12	22	36	8	21	2	13	11	6	3	38	9	1	42	28	2	12	5	53	2	13	42	36	-15	14	21	57	2	1
9	9	14	15	9	25	33	3	3	21	12	54	8	0	43	53	10	13	36	21	8	21	14	52	11	7	14	5	9	1	49	12	2	12	2	42	2	13	38	31	-14	55	19	14	3	9
10	9	18	12	9	26	33	47	4	6	5	26	8	1	25	0	10	14	43	57	8	21	27	27	11	8	24	24	9	1	55	53	2	11	59	31	2	13	32	44	-14	36	15	13	4	5
11	9	22	8	9	27	34	30	4	21	6	24	8	2	6	8	10	15	44	37	8	21	39	59	11	9	34	35	9	2	2	33	2	11	56	20	2	13	25	53	-14	16	10	12	4	45
12	9	26	5	9	28	35	11	5	6	6	21	8	2	47	18	10	16	37	38	8	21	52	27	11	10	44	37	9	2	9	11	2	11	53	10	2	13	18	52	-13	56	4	35	5	6
13	9	30	1	9	29	35	52	5	20	56	26	8	3	28	28	10	17	22	17	8	22	4	52	11	11	54	31	9	2	15	47	2	11	49	59	2	13	12	38	-13	37	-1	14	5	5
14	9	33	58	10	0	36	31	6	5	29	45	8	4	9	40	10	17	57	53	8	22	17	12	11	13	4	17	9	2	22	21	2	11	46	48	2	13	7	58	-13	16	-6	53	4	45
15	9	37	54	10	1	37	9	6	19	42	7	8	4	50	53	10	18	23	52	8	22	29	29	11	14	13	53	9	2	28	53	2	11	43	37	2	13	5	17	-12	56	-12	3	4	8
16	9	41	51	10	2	37	46	7	3	32	5	8	5	32	7	10	18	39	48	8	22	41	41	11	15	23	21	9	2	35	23	2	11	40	27	2	13	4	32	-12	35	-16	27	3	17
17	9	45	48	10	3	38	22	7	17	0	21	8	6	13	22	10	18	45	23	8	22	53	50	11	16	32	40	9	2	41	50	2	11	37	16	2	13	5	11	-12	15	-19	52	2	16
18	9	49	44	10	4	38	56	8	0	9	1	8	6	54	38	10	18	40	32	8	23	5	54	11	17	41	49	9	2	48	15	2	11	34	5	2	13	6	22	-11	54	-22	10	1	9
19	9	53	41	10	5	39	30	8	13	0	52	8	7	35	56	10	18	25	21	8	23	17	54	11	18	50	49	9	2	54	38	2	11	30	54	2	13	7	1	-11	33	-23	14	0	1
20	9	57	37	10	6	40	2	8	25	38	46	8	8	17	14	10	18	0	13	8	23	29	50	11	19	59	39	9	3	0	58	2	11	27	44	2	13	6	9	-11	11	-23	5	-1	7
21	10	1	34	10	7	40	32	9	8	5	17	8	8	58	33	10	17	25	44	8	23	41	41	11	21	8	19	9	3	7	16	2	11	24	33	2	13	3	0	-10	50	-21	46	-2	10
22	10	5	30	10	8	41	2	9	20	22	32	8	9	39	53	10	16	42	47	8	23	53	27	11	22	16	49	9	3	13	31	2	11	21	22	2	12	57	11	-10	28	-19	26	-3	6
23	10	9	27	10	9	41	29	10	2	32	7	8	10	21	14	10	15	52	30	8	24	5	9	11	23	25	8	9	3	19	43	2	11	18	11	2	12	48	47	-10	6	-16	16	-3	52
24	10	13	23	10	10	41	56	10	14	35	17	8	11	2	36	10	14	56	13	8	24	16	46	11	24	33	17	9	3	25	53	2	11	15	1	2	12	38	18	-9	44	-12	26	-4	28
25	10	17	20	10	11	42	20	10	26	33	9	8	11	43	58	10	13	55	27	8	24	28	18	11	25	41	14	9	3	32	0	2	11	11	50	2	12	26	32	-9	22	-8	9	-4	52
26	10	21	17	10	12	42	43	11	8	26	59	8	12	25	22	10	12	51	46	8	24	39	45	11	26	49	0	9	3	38	4	2	11	8	39	2	12	14	31	-9	0	-3	36	-5	2
27	10	25	13	10	13	43	4	11	20	18	24	8	13	6	45	10	11	46	51	8	24	51	7	11	27	56	34	9	3	44	5	2	11	5	28	2	12	3	18	-8	37	1	5	-5	0
28	10	29	10	10	14	43	23	0	2	9	39	8	13	48	10	10	10	42	15	8	25	2	24	11	29	3	55	9	3	50	3	2	11	2	18	2	11	53	48	-8	15	5	43	-4	45
29	10	33	6	10	15	43	40	0	14	3	36	8	14	29	35	10	9	39	29	8	25	13	35	0	0	11	4	9	3	55	58	2	10	59	7	2	11	46	41	-7	52	10	11	-4	17

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा.स्टै.टा.), 1 मार्च 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 3"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्रक्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	10	37	3	10	16	43	55	0	26	3	56	8	15	11	1	10	8	39	52	8	25	24	41	0	1	18	0	9	4	1	50	2	10	55	56	2	11	42	12	-7	29	14	18	-3	38
2	10	40	59	10	17	44	8	1	8	14	57	8	15	52	28	10	7	44	34	8	25	35	41	0	2	24	43	9	4	7	38	2	10	52	46	2	11	40	7	-7	7	17	54	-2	48
3	10	44	56	10	18	44	19	1	20	41	27	8	16	33	56	10	6	54	28	8	25	46	36	0	3	31	11	9	4	13	24	2	10	49	35	2	11	39	48	-6	44	20	46	-1	49
4	10	48	52	10	19	44	27	2	3	28	21	8	17	15	24	10	6	10	16	8	25	57	25	0	4	37	25	9	4	19	6	2	10	46	24	2	11	40	14	-6	21	22	42	-0	43
5	10	52	49	10	20	44	34	2	16	40	12	8	17	56	53	10	5	32	29	8	26	8	9	0	5	43	25	9	4	24	44	2	10	43	13	2	11	40	15	-5	57	23	26	0	27
6	10	56	46	10	21	44	39	3	0	20	31	8	18	38	23	10	5	1	23	8	26	18	47	0	6	49	9	9	4	30	20	2	10	40	3	2	11	38	43	-5	34	22	49	1	37
7	11	0	42	10	22	44	41	3	14	30	45	8	19	19	53	10	4	37	7	8	26	29	18	0	7	54	38	9	4	35	51	2	10	36	52	2	11	34	49	-5	11	20	45	2	45
8	11	4	39	10	23	44	42	3	29	9	20	8	20	1	25	10	4	19	40	8	26	39	44	0	8	59	51	9	4	41	19	2	10	33	41	2	11	28	15	-4	47	17	16	3	44
9	11	8	35	10	24	44	40	4	14	11	1	8	20	42	57	10	4	8	57	8	26	50	4	0	10	4	47	9	4	46	44	2	10	30	30	2	11	19	16	-4	24	12	36	4	28
10	11	12	32	10	25	44	37	4	29	27	1	8	21	24	30	10	4	4	47	8	27	0	17	0	11	9	26	9	4	52	5	2	10	27	20	2	11	8	42	-4	0	7	3	4	55
11	11	16	28	10	26	44	32	5	14	46	15	8	22	6	4	10	4	6	54	8	27	10	24	0	12	13	48	9	4	57	22	2	10	24	9	2	10	57	44	-3	37	1	4	5	0
12	11	20	25	10	27	44	25	5	29	57	13	8	22	47	39	10	4	15	3	8	27	20	25	0	13	17	53	9	5	2	36	2	10	20	58	2	10	47	38	-3	13	-4	56	4	45
13	11	24	21	10	28	44	16	6	14	50	3	8	23	29	14	10	4	28	54	8	27	30	19	0	14	21	39	9	5	7	45	2	10	17	47	2	10	39	30	-2	50	-10	32	4	10
14	11	28	18	10	29	44	5	6	29	18	6	8	24	10	51	10	4	48	9	8	27	40	7	0	15	25	7	9	5	12	51	2	10	14	37	2	10	33	56	-2	26	-15	25	3	19
15	11	32	15	11	0	43	53	7	13	18	18	8	24	52	28	10	5	12	31	8	27	49	48	0	16	28	15	9	5	17	53	2	10	11	26	2	10	30	59	-2	2	-19	16	2	19
16	11	36	11	11	1	43	38	7	26	50	51	8	25	34	6	10	5	41	39	8	27	59	23	0	17	31	4	9	5	22	51	2	10	8	15	2	10	30	3	-1	39	-21	56	1	12
17	11	40	8	11	2	43	23	8	9	58	13	8	26	15	44	10	6	15	17	8	28	8	50	0	18	33	33	9	5	27	44	2	10	5	5	2	10	30	7	-1	15	-23	20	0	3
18	11	44	4	11	3	43	5	8	22	44	11	8	26	57	23	10	6	53	9	8	28	18	11	0	19	35	41	9	5	32	34	2	10	1	54	2	10	29	53	-0	51	-23	26	-1	4
19	11	48	1	11	4	42	46	9	5	12	58	8	27	39	3	10	7	34	57	8	28	27	24	0	20	37	28	9	5	37	19	2	9	58	43	2	10	28	6	-0	28	-22	21	-2	7
20	11	51	57	11	5	42	25	9	17	28	41	8	28	20	43	10	8	20	28	8	28	36	31	0	21	38	53	9	5	42	1	2	9	55	32	2	10	23	50	-0	4	-20	13	-3	2
21	11	55	54	11	6	42	2	9	29	34	57	8	29	2	24	10	9	9	29	8	28	45	30	0	22	39	56	9	5	46	37	2	9	52	22	2	10	16	33	0	20	-17	12	-3	48
22	11	59	50	11	7	41	38	10	11	34	43	8	29	44	5	10	10	1	45	8	28	54	21	0	23	40	36	9	5	51	10	2	9	49	11	2	10	6	16	0	44	-13	30	-4	24
23	12	3	47	11	8	41	11	10	23	30	17	9	0	25	46	10	10	57	6	8	29	3	5	0	24	40	51	9	5	55	38	2	9	46	0	2	9	53	28	1	7	-9	17	-4	47
24	12	7	44	11	9	40	43	11	5	23	23	9	1	7	27	10	11	55	21	8	29	11	41	0	25	40	42	9	6	0	2	2	9	42	50	2	9	39	5	1	31	-4	45	-4	58
25	12	11	40	11	10	40	12	11	17	15	23	9	1	49	9	10	12	56	20	8	29	20	10	0	26	40	8	9	6	4	21	2	9	39	39	2	9	24	14	1	55	-0	2	-4	56
26	12	15	37	11	11	39	40	11	29	7	35	9	2	30	51	10	13	59	54	8	29	28	31	0	27	39	7	9	6	8	35	2	9	36	28	2	9	10	10	2	18	4	40	-4	42
27	12	19	33	11	12	39	5	0	11	1	27	9	3	12	32	10	15	5	55	8	29	36	43	0	28	37	38	9	6	12	45	2	9	33	17	2	8	57	58	2	42	9	14	-4	14
28	12	23	30	11	13	38	28	0	22	58	54	9	3	54	14	10	16	14	16	8	29	44	48	0	29	35	41	9	6	16	50	2	9	30	7	2	8	48	27	3	5	13	29	-3	36
29	12	27	26	11	14	37	49	1	5	2	29	9	4	35	56	10	17	24	50	8	29	52	45	1	0	33	15	9	6	20	50	2	9	26	56	2	8	41	58	3	28	17	15	-2	47
30	12	31	23	11	15	37	8	1	17	15	25	9	5	17	38	10	18	37	32	9	0	0	33	1	1	30	18	9	6	24	46	2	9	23	45	2	8	38	24	3	52	20	19	-1	50
31	12	35	19	11	16	36	24	1	29	41	35	9	5	59	20	10	19	52	16	9	0	8	13	1	2	26	50	9	6	28	36	2	9	20	34	2	8	37	8	4	15	22	31	-0	47

29	12	27	26	11	14	37	49	1	5	2	29	9	4	35	56	10	17	24	50	8	29	52	45	1	0	33	15	9	6	20	50	2	9	26	56	2	8	41	58	3	28	17	15	-2	47
30	12	31	23	11	15	37	8	1	17	15	25	9	5	17	38	10	18	37	32	9	0	0	33	1	1	30	18	9	6	24	46	2	9	23	45	2	8	38	24	3	52	20	19	-1	50
31	12	35	19	11	16	36	24	1	29	41	35	9	5	59	20	10	19	52	16	9	0	8	13	1	2	26	50	9	6	28	36	2	9	20	34	2	8	37	8	4	15	22	31	-0	47

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 6"

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	12	39	16	11	17	35	38	2	12	25	20	9	6	41	2	10	21	8	58	9	0	15	44	1	3	22	49	9	6	32	22	2	9	17	24	2	8	37	6	4	38	23	37	0	20
2	12	43	13	11	18	34	50	2	25	31	2	9	7	22	44	10	22	27	34	9	0	23	7	1	4	18	14	9	6	36	3	2	9	14	13	2	8	37	4	5	1	23	27	1	28
3	12	47	9	11	19	33	59	3	9	2	35	9	8	4	26	10	23	48	0	9	0	30	22	1	5	13	4	9	6	39	39	2	9	11	2	2	8	35	48	5	24	21	56	2	34
4	12	51	6	11	20	33	6	3	23	2	31	9	8	46	8	10	25	10	13	9	0	37	27	1	6	7	17	9	6	43	10	2	9	7	52	2	8	32	23	5	47	19	3	3	32
5	12	55	2	11	21	32	11	4	7	30	55	9	9	27	50	10	26	34	12	9	0	44	25	1	7	0	52	9	6	46	36	2	9	4	41	2	8	26	22	6	10	14	55	4	19
6	12	58	59	11	22	31	13	4	22	24	34	9	10	9	33	10	27	59	53	9	0	51	13	1	7	53	49	9	6	49	56	2	9	1	30	2	8	17	56	6	33	9	45	4	50
7	13	2	55	11	23	30	13	5	7	36	30	9	10	51	15	10	29	27	14	9	0	57	52	1	8	46	5	9	6	53	12	2	8	58	19	2	8	7	50	6	55	3	55	5	1
8	13	6	52	11	24	29	11	5	22	56	41	9	11	32	57	11	0	56	14	9	1	4	22	1	9	37	39	9	6	56	23	2	8	55	9	2	7	57	12	7	18	- 2	13	4	51
9	13	10	48	11	25	28	8	6	8	13	31	9	12	14	39	11	2	26	52	9	1	10	43	1	10	28	29	9	6	59	28	2	8	51	58	2	7	47	16	7	40	- 8	13	4	20
10	13	14	45	11	26	27	2	6	23	15	59	9	12	56	22	11	3	59	7	9	1	16	55	1	11	18	35	9	7	2	28	2	8	48	47	2	7	39	9	8	2	-13	38	3	32
11	13	18	42	11	27	25	54	7	7	55	31	9	13	38	4	11	5	32	57	9	1	22	58	1	12	7	54	9	7	5	23	2	8	45	36	2	7	33	29	8	24	-18	7	2	30
12	13	22	38	11	28	24	45	7	22	7	2	9	14	19	46	11	7	8	23	9	1	28	51	1	12	56	25	9	7	8	12	2	8	42	26	2	7	30	25	8	46	-21	23	1	21
13	13	26	35	11	29	23	33	8	5	49	3	9	15	1	28	11	8	45	23	9	1	34	35	1	13	44	6	9	7	10	56	2	8	39	15	2	7	29	27	9	8	-23	17	0	9
14	13	30	31	0	0	22	20	8	19	3	2	9	15	43	9	11	10	23	59	9	1	40	9	1	14	30	56	9	7	13	35	2	8	36	4	2	7	29	42	9	30	-23	48	- 1	1
15	13	34	28	0	1	21	6	9	1	52	19	9	16	24	51	11	12	4	10	9	1	45	34	1	15	16	53	9	7	16	8	2	8	32	53	2	7	30	1	9	51	-23	0	- 2	6
16	13	38	24	0	2	19	49	9	14	21	19	9	17	6	32	11	13	45	56	9	1	50	49	1	16	1	54	9	7	18	36	2	8	29	43	2	7	29	18	10	13	-21	5	- 3	3
17	13	42	21	0	3	18	31	9	26	34	45	9	17	48	12	11	15	29	17	9	1	55	53	1	16	45	58	9	7	20	59	2	8	26	32	2	7	26	39	10	34	-18	13	- 3	50
18	13	46	17	0	4	17	11	10	8	37	9	9	18	29	52	11	17	14	14	9	2	0	48	1	17	29	2	9	7	23	15	2	8	23	21	2	7	21	34	10	55	-14	38	- 4	26
19	13	50	14	0	5	15	50	10	20	32	37	9	19	11	31	11	19	0	48	9	2	5	33	1	18	11	5	9	7	25	27	2	8	20	10	2	7	13	59	11	16	-10	30	- 4	51
20	13	54	11	0	6	14	27	11	2	24	32	9	19	53	9	11	20	48	58	9	2	10	7	1	18	52	4	9	7	27	32	2	8	17	0	2	7	4	16	11	36	- 6	0	- 5	2
21	13	58	7	0	7	13	2	11	14	15	40	9	20	34	47	11	22	38	46	9	2	14	32	1	19	31	56	9	7	29	32	2	8	13	49	2	6	53	9	11	57	- 1	17	- 5	1
22	14	2	4	0	8	11	35	11	26	8	6	9	21	16	23	11	24	30	12	9	2	18	46	1	20	10	39	9	7	31	26	2	8	10	38	2	6	41	33	12	17	3	30	- 4	46
23	14	6	0	0	9	10	6	0	8	3	32	9	21	57	58	11	26	23	15	9	2	22	49	1	20	48	10	9	7	33	15	2	8	7	27	2	6	30	29	12	37	8	10	- 4	19
24	14	9	57	0	10	8	36	0	20	3	22	9	22	39	32	11	28	17	57	9	2	26	42	1	21	24	26	9	7	34	57	2	8	4	17	2	6	20	54	12	57	12	35	- 3	40
25	14	13	53	0	11	7	3	1	2	8	59	9	23	21	5	0	0	14	15	9	2	30	25	1	21	59	24	9	7	36	34	2	8	1	6	2	6	13	29	13	16	16	32	- 2	51
26	14	17	50	0	12	5	29	1	14	22	1	9	24	2	36	0	2	12	11	9	2	33	56	1	22	33	2	9	7	38	5	2	7	57	55	2	6	8	37	13	36	19	51	- 1	54
27	14	21	46	0	13	3	52	1	26	44	27	9	24	44	6	0	4	11	42	9	2	37	17	1	23	5	15	9	7	39	31	2	7	54	44	2	6	6	15	13	55	22	17	- 0	50
28	14	25	43	0	14	2	14	2	9	18	49	9	25	25	35	0	6	12	45	9	2	40	28	1	23	36	1	9	7	40	50	2	7	51	34	2	6	5	55	14	14	23	41	0	17
29	14	29	40	0	15	0	33	2	22	8	5	9	26	7	2	0	8	15	18	9	2	43	27	1	24	5	16	9	7	42	4	2	7	48	23	2	6	6	50	14	33	23	51	1	25
30	14	33	36	0	15	58	50	3	5	15	22	9	26	48	27	0	10	19	17	9	2	46	16	1	24	32	57	9	7	43	12	2	7	45	12	2	6	8	0	14	51	22	44	2	30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मई 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 9"

मई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	14	37	33	0	16	57	6	3	18	43	39	9	27	29	51	0	12	24	36	9	2	48	53	1	24	58	59	9	7	44	14	2	7	42	1	2	6	8	27	15	9	20	17	3	29
2	14	41	29	0	17	55	19	4	2	35	2	9	28	11	14	0	14	31	8	9	2	51	20	1	25	23	20	9	7	45	10	2	7	38	51	2	6	7	25	15	27	16	38	4	17
3	14	45	26	0	18	53	30	4	16	50	4	9	28	52	35	0	16	38	47	9	2	53	36	1	25	45	55	9	7	46	1	2	7	35	40	2	6	4	31	15	45	11	56	4	51
4	14	49	22	0	19	51	39	5	1	26	58	9	29	33	54	0	18	47	21	9	2	55	41	1	26	6	41	9	7	46	45	2	7	32	29	2	5	59	48	16	2	6	27	5	7
5	14	53	19	0	20	49	46	5	16	21	2	10	0	15	12	0	20	56	41	9	2	57	34	1	26	25	35	9	7	47	24	2	7	29	18	2	5	53	46	16	19	0	30	5	3
6	14	57	15	0	21	47	52	6	1	24	54	10	0	56	28	0	23	6	33	9	2	59	17	1	26	42	32	9	7	47	57	2	7	26	8	2	5	47	14	16	36	-5	33	4	38
7	15	1	12	0	22	45	55	6	16	29	17	10	1	37	43	0	25	16	43	9	3	0	48	1	26	57	29	9	7	48	24	2	7	22	57	2	5	41	6	16	53	-11	18	3	54
8	15	5	9	0	23	43	57	7	1	24	33	10	2	18	56	0	27	26	56	9	3	2	9	1	27	10	22	9	7	48	45	2	7	19	46	2	5	36	11	17	9	-16	20	2	54
9	15	9	5	0	24	41	58	7	16	2	14	10	3	0	6	0	29	36	55	9	3	3	18	1	27	21	9	9	7	49	1	2	7	16	35	2	5	32	58	17	25	-20	16	1	44
10	15	13	2	0	25	39	56	8	0	16	18	10	3	41	15	1	1	46	24	9	3	4	16	1	27	29	45	9	7	49	10	2	7	13	25	2	5	31	34	17	41	-22	51	0	28
11	15	16	58	0	26	37	54	8	14	3	40	10	4	22	22	1	3	55	4	9	3	5	2	1	27	36	9	9	7	49	14	2	7	10	14	2	5	31	45	17	57	-23	57	-0	46
12	15	20	55	0	27	35	50	8	27	24	2	10	5	3	27	1	6	2	39	9	3	5	37	1	27	40	16	9	7	49	12	2	7	7	3	2	5	32	56	18	12	-23	38	-1	56
13	15	24	51	0	28	33	44	9	10	19	20	10	5	44	29	1	8	8	51	9	3	6	1	1	27	42	5	9	7	49	4	2	7	3	52	2	5	34	23	18	27	-22	1	-2	58
14	15	28	48	0	29	31	38	9	22	52	59	10	6	25	29	1	10	13	25	9	3	6	14	1	27	41	34	9	7	48	50	2	7	0	41	2	5	35	23	18	41	-19	22	-3	49
15	15	32	44	1	0	29	30	10	5	9	18	10	7	6	27	1	12	16	6	9	3	6	15	1	27	38	40	9	7	48	30	2	6	57	31	2	5	35	21	18	55	-15	55	-4	29
16	15	36	41	1	1	27	21	10	17	12	59	10	7	47	22	1	14	16	41	9	3	6	4	1	27	33	22	9	7	48	5	2	6	54	20	2	5	33	56	19	9	-11	52	-4	56
17	15	40	38	1	2	25	11	10	29	8	36	10	8	28	13	1	16	14	57	9	3	5	43	1	27	25	40	9	7	47	33	2	6	51	9	2	5	31	5	19	23	-7	24	-5	10
18	15	44	34	1	3	23	0	11	11	0	25	10	9	9	2	1	18	10	44	9	3	5	9	1	27	15	32	9	7	46	56	2	6	47	58	2	5	26	58	19	36	-2	42	-5	10
19	15	48	31	1	4	20	47	11	22	52	11	10	9	49	48	1	20	3	54	9	3	4	25	1	27	3	0	9	7	46	13	2	6	44	47	2	5	22	0	19	49	2	6	-4	57
20	15	52	27	1	5	18	33	0	4	47	1	10	10	30	30	1	21	54	18	9	3	3	29	1	26	48	5	9	7	45	24	2	6	41	37	2	5	16	40	20	2	6	51	-4	32
21	15	56	24	1	6	16	18	0	16	47	28	10	11	11	8	1	23	41	51	9	3	2	21	1	26	30	47	9	7	44	30	2	6	38	26	2	5	11	35	20	14	11	24	-3	54
22	16	0	20	1	7	14	2	0	28	55	32	10	11	51	43	1	25	26	28	9	3	1	2	1	26	11	11	9	7	43	30	2	6	35	15	2	5	7	14	20	26	15	33	-3	5
23	16	4	17	1	8	11	45	1	11	12	44	10	12	32	14	1	27	8	4	9	2	59	32	1	25	49	19	9	7	42	24	2	6	32	4	2	5	4	3	20	38	19	7	-2	7
24	16	8	13	1	9	9	26	1	23	40	16	10	13	12	41	1	28	46	36	9	2	57	51	1	25	25	17	9	7	41	12	2	6	28	54	2	5	2	13	20	49	21	51	-1	2
25	16	12	10	1	10	7	6	2	6	19	9	10	13	53	4	2	0	22	0	9	2	55	58	1	24	59	10	9	7	39	55	2	6	25	43	2	5	1	44	21	0	23	33	0	7
26	16	16	7	1	11	4	44	2	19	10	26	10	14	33	23	2	1	54	15	9	2	53	54	1	24	31	5	9	7	38	32	2	6	22	32	2	5	2	21	21	10	24	3	1	17
27	16	20	3	1	12	2	21	3	2	15	13	10	15	13	37	2	3	23	18	9	2	51	39	1	24	1	9	9	7	37	4	2	6	19	21	2	5	3	40	21	20	23	14	2	24
28	16	24	0	1	12	59	57	3	15	34	40	10	15	53	47	2	4	49	5	9	2	49	13	1	23	29	33	9	7	35	30	2	6	16	10	2	5	5	10	21	30	21	6	3	25
29	16	27	56	1	13	57	31	3	29	9	47	10	16	33	52	2	6	11	36	9	2	46	36	1	22	56	25	9	7	33	51	2	6	13	0	2	5	6	22	21	39	17	46	4	15
30	16	31	53	1	14	55	4	4	13	1	5	10	17	13	53	2	7	30	47	9	2	43	48	1	22	21	59	9	7	32	7	2	6	9	49	2	5	6	54	21	48	13	24	4	52
31	16	35	49	1	15	52	35	4	27	8	18	10	17	53	49	2	8	46	35	9	2	40	50	1	21	46	24	9	7	30	17	2	6	6	38	2	5	6	33	21	57	8	14	5	12

29	16	27	56	1	13	57	31	3	29	9	47	10	16	33	52	2	6	11	36	9	2	46	36	1	22	56	25	9	7	33	51	2	6	13	0	2	5	6	22	21	39	17	46	4	15
30	16	31	53	1	14	55	4	4	13	1	5	10	17	13	53	2	7	30	47	9	2	43	48	1	22	21	59	9	7	32	7	2	6	9	49	2	5	6	54	21	48	13	24	4	52
31	16	35	49	1	15	52	35	4	27	8	18	10	17	53	49	2	8	46	35	9	2	40	50	1	21	46	24	9	7	30	17	2	6	6	38	2	5	6	33	21	57	8	14	5	12

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जून 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 14"

तिथि	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ	मि	से	रा	अ	क	वि	रा.	अ.	क.	वि	रा	अ	क	वि	रा.	अ.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि	रा.	अ.	क.	वि	रा.	अं	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अ.	क.
1	16	39	46	1	16	50	5	5	11	29	52	10	18	33	40	2	9	58	59	9	2	37	41	1	21	9	56	9	7	28	22	2	6	3	27	2	5	5	23	22	5	2	33	5	13
2	16	43	42	1	17	47	34	5	26	2	41	10	19	13	27	2	11	7	53	9	2	34	21	1	20	32	47	9	7	26	22	2	6	0	16	2	5	3	38	22	13	- 3	20	4	54
3	16	47	39	1	18	45	1	6	10	42	0	10	19	53	8	2	12	13	15	9	2	30	51	1	19	55	13	9	7	24	16	2	5	57	5	2	5	1	38	22	20	- 9	6	4	16
4	16	51	36	1	19	42	27	6	25	21	50	10	20	32	45	2	13	15	1	9	2	27	11	1	19	17	27	9	7	22	6	2	5	53	55	2	4	59	48	22	28	-14	22	3	22
5	16	55	32	1	20	39	52	7	9	55	32	10	21	12	16	2	14	13	7	9	2	23	21	1	18	39	44	9	7	19	50	2	5	50	44	2	4	58	25	22	34	-18	46	2	14
6	16	59	29	1	21	37	17	7	24	16	45	10	21	51	42	2	15	7	27	9	2	19	20	1	18	2	21	9	7	17	29	2	5	47	33	2	4	57	41	22	41	-21	57	0	59
7	17	3	25	1	22	34	40	8	8	20	18	10	22	31	2	2	15	57	59	9	2	15	10	1	17	25	30	9	7	15	4	2	5	44	22	2	4	57	37	22	46	-23	44	- 0	19
8	17	7	22	1	23	32	2	8	22	2	41	10	23	10	17	2	16	44	36	9	2	10	49	1	16	49	27	9	7	12	34	2	5	41	11	2	4	58	5	22	52	-24	0	- 1	33
9	17	11	18	1	24	29	24	9	5	22	22	10	23	49	26	2	17	27	13	9	2	6	20	1	16	14	26	9	7	9	59	2	5	38	1	2	4	58	53	22	57	-22	52	- 2	41
10	17	15	15	1	25	26	45	9	18	19	42	10	24	28	29	2	18	5	45	9	2	1	40	1	15	40	38	9	7	7	19	2	5	34	50	2	4	59	46	23	2	-20	32	- 3	38
11	17	19	11	1	26	24	6	10	0	56	34	10	25	7	25	2	18	40	7	9	1	56	51	1	15	8	15	9	7	4	34	2	5	31	39	2	5	0	30	23	6	-17	17	- 4	23
12	17	23	8	1	27	21	26	10	13	16	9	10	25	46	15	2	19	10	13	9	1	51	53	1	14	37	30	9	7	1	45	2	5	28	28	2	5	0	58	23	10	-13	20	- 4	54
13	17	27	5	1	28	18	45	10	25	22	23	10	26	24	58	2	19	35	59	9	1	46	46	1	14	8	30	9	6	58	52	2	5	25	17	2	5	1	6	23	13	- 8	56	- 5	12
14	17	31	1	1	29	16	5	11	7	19	45	10	27	3	35	2	19	57	19	9	1	41	30	1	13	41	26	9	6	55	54	2	5	22	7	2	5	0	57	23	16	- 4	15	- 5	16
15	17	34	58	2	0	13	24	11	19	12	47	10	27	42	3	2	20	14	11	9	1	36	5	1	13	16	23	9	6	52	51	2	5	18	56	2	5	0	34	23	19	0	33	- 5	7
16	17	38	54	2	1	10	42	0	1	5	56	10	28	20	24	2	20	26	30	9	1	30	31	1	12	53	29	9	6	49	45	2	5	15	45	2	5	0	7	23	21	5	21	- 4	45
17	17	42	51	2	2	8	0	0	13	3	19	10	28	58	37	2	20	34	16	9	1	24	49	1	12	32	48	9	6	46	34	2	5	12	34	2	4	59	41	23	23	9	59	- 4	10
18	17	46	47	2	3	5	18	0	25	8	32	10	29	36	42	2	20	37	28	9	1	18	59	1	12	14	24	9	6	43	19	2	5	9	23	2	4	59	23	23	24	14	17	- 3	23
19	17	50	44	2	4	2	35	1	7	24	38	11	0	14	39	2	20	36	8	9	1	13	2	1	11	58	21	9	6	40	0	2	5	6	12	2	4	59	14	23	25	18	4	- 2	27
20	17	54	40	2	4	59	52	1	19	53	50	11	0	52	26	2	20	30	20	9	1	6	56	1	11	44	39	9	6	36	37	2	5	3	2	2	4	59	14	23	26	21	7	- 1	23
21	17	58	37	2	5	57	9	2	2	37	38	11	1	30	5	2	20	20	11	9	1	0	43	1	11	33	20	9	6	33	10	2	4	59	51	2	4	59	18	23	26	23	11	- 0	13
22	18	2	34	2	6	54	25	2	15	36	38	11	2	7	35	2	20	5	51	9	0	54	23	1	11	24	25	9	6	29	40	2	4	56	40	2	4	59	21	23	26	24	3	0	59
23	18	6	30	2	7	51	41	2	28	50	42	11	2	44	54	2	19	47	31	9	0	47	56	1	11	17	53	9	6	26	6	2	4	53	29	2	4	59	15	23	25	23	35	2	8
24	18	10	27	2	8	48	56	3	12	19	4	11	3	22	5	2	19	25	28	9	0	41	23	1	11	13	44	9	6	22	29	2	4	50	18	2	4	58	59	23	24	21	46	3	12
25	18	14	23	2	9	46	11	3	26	0	24	11	3	59	5	2	19	0	0	9	0	34	43	1	11	11	54	9	6	18	48	2	4	47	8	2	4	58	31	23	23	18	40	4	6
26	18	18	20	2	10	43	25	4	9	53	0	11	4	35	55	2	18	31	31	9	0	27	57	1	11	12	24	9	6	15	4	2	4	43	57	2	4	57	57	23	21	14	29	4	47
27	18	22	16	2	11	40	38	4	23	54	57	11	5	12	35	2	18	0	26	9	0	21	5	1	11	15	10	9	6	11	16	2	4	40	46	2	4	57	24	23	19	9	29	5	11
28	18	26	13	2	12	37	51	5	8	4	8	11	5	49	4	2	17	27	15	9	0	14	8	1	11	20	11	9	6	7	26	2	4	37	35	2	4	57	4	23	16	3	57	5	16
29	18	30	9	2	13	35	4	5	22	18	18	11	6	25	22	2	16	52	30	9	0	7	6	1	11	27	22	9	6	3	33	2	4	34	24	2	4	57	3	23	13	- 1	49	5	2
30	18	34	6	2	14	32	16	6	6	34	56	11	7	1	29	2	16	16	44	8	29	59	59	1	11	36	42	9	5	59	37	2	4	31	13	2	4	57	26	23	9	- 7	30	4	30

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 19"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	18	38	3	2	15	29	27	6	20	51	13	11	7	37	25	2	15	40	35	8	29	52	47	1	11	48	7	9	5	55	38	2	4	28	3	2	4	58	7	23	5	-12	49	3	41
2	18	41	59	2	16	26	39	7	5	4	5	11	8	13	10	2	15	4	39	8	29	45	.31	1	12	1	33	9	5	51	37	2	4	24	52	2	4	58	58	23	1	-17	24	2	38
3	18	45	56	2	17	23	50	7	19	10	11	11	8	48	43	2	14	29	33	8	29	38	11	1	12	16	59	9	5	47	33	2	4	21	41	2	4	59	43	22	56	-20	58	1	26
4	18	49	52	2	18	21	0	8	3	6	10	11	9	24	4	2	13	55	56	8	29	30	47	1	12	34	19	9	5	43	27	2	4	18	30	2	5	0	4	22	51	-23	14	0	10
5	18	53	49	2	19	18	11	8	16	48	57	11	9	59	13	2	13	24	21	8	29	23	20	1	12	53	31	9	5	39	19	2	4	15	19	2	4	59	48	22	45	-24	4	-1	5
6	18	57	45	2	20	15	22	9	0	16	4	11	10	34	9	2	12	55	23	8	29	15	49	1	13	14	31	9	5	35	9	2	4	12	9	2	4	58	48	22	40	-23	27	-2	15
7	19	1	42	2	21	12	32	9	13	25	51	11	11	8	52	2	12	29	32	8	29	8	16	1	13	37	15	9	5	30	57	2	4	8	58	2	4	57	5	22	33	-21	32	-3	16
8	19	5	38	2	22	9	43	9	26	17	47	11	11	43	22	2	12	7	16	8	29	0	40	1	14	1	41	9	5	26	43	2	4	5	47	2	4	54	48	22	27	-18	34	-4	6
9	19	9	35	2	23	6	54	10	8	52	32	11	12	17	38	2	11	49	0	8	28	53	3	1	14	27	44	9	5	22	27	2	4	2	36	2	4	52	14	22	19	-14	48	-4	43
10	19	13	32	2	24	4	6	10	21	11	53	11	12	51	40	2	11	35	6	8	28	45	23	1	14	55	22	9	5	18	10	2	3	59	25	2	4	49	44	22	12	-10	29	-5	6
11	19	17	28	2	25	1	17	11	3	18	42	11	13	25	27	2	11	25	51	8	28	37	42	1	15	24	30	9	5	13	51	2	3	56	15	2	4	47	39	22	4	-5	49	-5	15
12	19	21	25	2	25	58	30	11	15	16	39	11	13	59	0	2	11	21	32	8	28	29	59	1	15	55	6	9	5	9	30	2	3	53	4	2	4	46	15	21	56	-1	1	-5	9
13	19	25	21	2	26	55	42	11	27	9	59	11	14	32	16	2	11	22	18	8	28	22	15	1	16	27	6	9	5	5	9	2	3	49	53	2	4	45	42	21	47	3	48	-4	51
14	19	29	18	2	27	52	56	0	9	3	19	11	15	5	17	2	11	28	21	8	28	14	31	1	17	0	27	9	5	0	46	2	3	46	42	2	4	46	2	21	38	8	30	-4	20
15	19	33	14	2	28	50	10	0	21	1	25	11	15	38	1	2	11	39	45	8	28	6	47	1	17	35	6	9	4	56	22	2	3	43	31	2	4	47	6	21	29	12	54	-3	38
16	19	37	11	2	29	47	24	1	3	8	52	11	16	10	29	2	11	56	36	8	27	59	3	1	18	11	0	9	4	51	58	2	3	40	21	2	4	48	35	21	19	16	52	-2	45
17	19	41	7	3	0	44	39	1	15	29	51	11	16	42	38	2	12	18	57	8	27	51	19	1	18	48	6	9	4	47	33	2	3	37	10	2	4	50	6	21	9	20	10	-1	44
18	19	45	4	3	1	41	55	1	28	7	47	11	17	14	30	2	12	46	47	8	27	43	36	1	19	26	20	9	4	43	7	2	3	33	59	2	4	51	8	20	59	22	36	-0	37
19	19	49	1	3	2	39	11	2	11	5	3	11	17	46	3	2	13	20	7	8	27	35	54	1	20	5	41	9	4	38	41	2	3	30	48	2	4	51	15	20	48	23	54	0	34
20	19	52	57	3	3	36	28	2	24	22	39	11	18	17	17	2	13	58	56	8	27	28	13	1	20	46	6	9	4	34	14	2	3	27	37	2	4	50	8	20	37	23	53	1	45
21	19	56	54	3	4	33	45	3	8	0	2	11	18	48	12	2	14	43	11	8	27	20	34	1	21	27	32	9	4	29	48	2	3	24	27	2	4	47	40	20	25	22	28	2	51
22	20	0	50	3	5	31	3	3	21	54	58	11	19	18	46	2	15	32	50	8	27	12	58	1	22	9	57	9	4	25	21	2	3	21	16	2	4	44	1	20	13	19	40	3	49
23	20	4	47	3	6	28	21	4	6	3	45	11	19	49	0	2	16	27	48	8	27	5	24	1	22	53	19	9	4	20	55	2	3	18	5	2	4	39	36	20	1	15	40	4	34
24	20	8	43	3	7	25	40	4	20	21	42	11	20	18	53	2	17	28	3	8	26	57	52	1	23	37	35	9	4	16	29	2	3	14	54	2	4	35	3	19	49	10	44	5	2
25	20	12	40	3	8	22	59	5	4	43	46	11	20	48	25	2	18	33	28	8	26	50	24	1	24	22	43	9	4	12	3	2	3	11	43	2	4	31	1	19	36	5	13	5	11
26	20	16	36	3	9	20	19	5	19	5	18	11	21	17	35	2	19	43	59	8	26	43	0	1	25	8	42	9	4	7	38	2	3	8	33	2	4	28	6	19	22	-0	36	5	1
27	20	20	33	3	10	17	39	6	3	22	30	11	21	46	23	2	20	59	29	8	26	35	39	1	25	55	30	9	4	3	13	2	3	5	22	2	4	26	38	19	9	-6	20	4	33
28	20	24	30	3	11	14	59	6	17	32	37	11	22	14	48	2	22	19	49	8	26	28	22	1	26	43	5	9	3	58	50	2	3	2	11	2	4	26	35	18	55	-11	43	3	48
29	20	28	26	3	12	12	20	7	1	33	54	11	22	42	50	2	23	44	52	8	26	21	10	1	27	31	25	9	3	54	27	2	2	59	0	2	4	27	37	18	41	-16	26	2	49
30	20	32	23	3	13	9	41	7	15	25	22	11	23	10	29	2	25	14	28	8	26	14	3	1	28	20	29	9	3	50	6	2	2	55	49	2	4	29	2	18	27	-20	12	1	42
31	20	36	19	3	14	7	3	7	29	6	23	11	23	37	43	2	26	48	24	8	26	7	0	1	29	10	16	9	3	45	45	2	2	52	38	2	4	30	3	18	12	-22	47	0	29

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 25"

अगस्त	साम्पातिक काल 0 0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		न-दशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	20	40	16	3	15	4	25	8	12	36	26	11	24	4	33	2	28	26	29	8	26	0	3	2	0	0	44	9	3	41	26	2	2	49	28	2	4	29	52	17	57	-24	0	-0	44
2	20	44	12	3	16	1	48	8	25	54	57	11	24	30	57	3	0	8	28	8	25	53	12	2	0	51	51	9	3	37	9	2	2	46	17	2	4	27	56	17	42	-23	49	-1	53
3	20	48	9	3	16	59	12	9	9	1	14	11	24	56	55	3	1	54	4	8	25	46	26	2	1	43	37	9	3	32	53	2	2	43	6	2	4	23	57	17	26	-22	18	-2	56
4	20	52	5	3	17	56	36	9	21	54	37	11	25	22	28	3	3	42	59	8	25	39	47	2	2	36	0	9	3	28	39	2	2	39	56	2	4	18	4	17	10	-19	39	-3	48
5	20	56	2	3	18	54	2	10	4	34	40	11	25	47	33	3	5	34	54	8	25	33	13	2	3	28	59	9	3	24	27	2	2	36	45	2	4	10	42	16	54	-16	6	-4	28
6	20	59	59	3	19	51	29	10	17	1	31	11	26	12	10	3	7	29	28	8	25	26	47	2	4	22	33	9	3	20	17	2	2	33	34	2	4	2	33	16	38	-11	54	-4	54
7	21	3	55	3	20	48	56	10	29	16	5	11	26	36	18	3	9	26	20	8	25	20	27	2	5	16	41	9	3	16	9	2	2	30	23	2	3	54	26	16	21	-7	18	-5	6
8	21	7	52	3	21	46	25	11	11	20	9	11	26	59	57	3	11	25	7	8	25	14	14	2	6	11	22	9	3	12	3	2	2	27	12	2	3	47	9	16	4	-2	29	-5	5
9	21	11	48	3	22	43	55	11	23	16	24	11	27	23	6	3	13	25	27	8	25	8	9	2	7	6	35	9	3	7	59	2	2	24	2	2	3	41	18	15	47	2	22	-4	50
10	21	15	45	3	23	41	27	0	5	8	19	11	27	45	44	3	15	26	59	8	25	2	11	2	8	2	18	9	3	3	58	2	2	20	51	2	3	37	17	15	29	7	7	-4	22
11	21	19	41	3	24	39	0	0	17	0	9	11	28	7	50	3	17	29	22	8	24	56	21	2	8	58	30	9	3	0	0	2	2	17	40	2	3	35	11	15	11	11	37	-3	44
12	21	23	38	3	25	36	34	0	28	56	41	11	28	29	24	3	19	32	16	8	24	50	39	2	9	55	12	9	2	56	4	2	2	14	29	2	3	34	43	14	53	15	43	-2	55
13	21	27	34	3	26	34	10	1	11	3	1	11	28	50	24	3	21	35	22	8	24	45	5	2	10	52	21	9	2	52	11	2	2	11	19	2	3	35	21	14	35	19	14	-1	58
14	21	31	31	3	27	31	47	1	23	24	13	11	29	10	49	3	23	38	26	8	24	39	40	2	11	49	57	9	2	48	21	2	2	8	8	2	3	36	17	14	17	21	57	-0	55
15	21	35	28	3	28	29	26	2	6	4	54	11	29	30	40	3	25	41	12	8	24	34	23	2	12	47	58	9	2	44	34	2	2	4	57	2	3	36	35	13	58	23	39	0	13
16	21	39	24	3	29	27	6	2	19	8	45	11	29	49	54	3	27	43	27	8	24	29	16	2	13	46	25	9	2	40	50	2	2	1	46	2	3	35	26	13	39	24	8	1	22
17	21	43	21	4	0	24	48	3	2	37	53	0	0	8	31	3	29	45	1	8	24	24	17	2	14	45	16	9	2	37	9	2	1	58	36	2	3	32	15	13	20	23	14	2	29
18	21	47	17	4	1	22	31	3	16	32	19	0	0	26	31	4	1	45	44	8	24	19	28	2	15	44	31	9	2	33	32	2	1	55	25	2	3	26	47	13	1	20	54	3	29
19	21	51	14	4	2	20	15	4	0	49	28	0	0	43	52	4	3	45	30	8	24	14	48	2	16	44	8	9	2	29	58	2	1	52	14	2	3	19	17	12	41	17	14	4	17
20	21	55	10	4	3	18	1	4	15	24	10	0	1	0	33	4	5	44	12	8	24	10	18	2	17	44	7	9	2	26	28	2	1	49	3	2	3	10	28	12	22	12	27	4	49
21	21	59	7	4	4	15	48	5	0	9	10	0	1	16	35	4	7	41	46	8	24	5	58	2	18	44	28	9	2	23	2	2	1	45	53	2	3	1	19	12	2	6	54	5	3
22	22	3	3	4	5	13	36	5	14	56	20	0	1	31	56	4	9	38	7	8	24	1	48	2	19	45	9	9	2	19	40	2	1	42	42	2	2	52	57	11	42	0	57	4	57
23	22	7	0	4	6	11	26	5	29	37	57	0	1	46	36	4	11	33	13	8	23	57	48	2	20	46	10	9	2	16	21	2	1	39	31	2	2	46	19	11	21	-5	1	4	31
24	22	10	57	4	7	9	17	6	14	7	56	0	2	0	33	4	13	27	2	8	23	53	59	2	21	47	31	9	2	13	7	2	1	36	20	2	2	41	58	11	1	-10	39	3	48
25	22	14	53	4	8	7	9	6	28	22	24	0	2	13	48	4	15	19	33	8	23	50	20	2	22	49	11	9	2	9	57	2	1	33	10	2	2	39	55	10	40	-15	38	2	52
26	22	18	50	4	9	5	2	7	12	19	42	0	2	26	20	4	17	10	45	8	23	46	51	2	23	51	10	9	2	6	51	2	1	29	59	2	2	39	38	10	19	-19	39	1	46
27	22	22	46	4	10	2	56	7	25	59	58	0	2	38	7	4	19	0	37	8	23	43	34	2	24	53	27	9	2	3	49	2	1	26	48	2	2	40	9	9	58	-22	29	0	35
28	22	26	43	4	11	0	52	8	9	24	20	0	2	49	10	4	20	49	10	8	23	40	27	2	25	56	1	9	2	0	52	2	1	23	37	2	2	40	14	9	37	-23	59	-0	36
29	22	30	39	4	11	58	49	8	22	34	27	0	2	59	28	4	22	36	24	8	23	37	30	2	26	58	53	9	1	58	0	2	1	20	27	2	2	38	45	9	16	-24	6	-1	44
30	22	34	36	4	12	56	47	9	5	31	53	0	3	8	59	4	24	22	20	8	23	34	45	2	28	2	2	9	1	55	12	2	1	17	16	2	2	34	47	8	54	-22	54	-2	45
31	22	38	32	4	13	54	47	9	18	17	53	0	3	17	44	4	26	6	59	8	23	32	11	2	29	5	28	9	1	52	28	2	1	14	5	2	2	27	56	8	33	-20	32	-3	37

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 29"

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	22	42	29	4	14	52	48	10	0	53	19	0	3	25	42	4	27	50	21	8	23	29	48	3	0	9	10	9	1	49	49	2	1	10	54	2	2	18	18	8	11	-17	13	-4	17
2	22	46	26	4	15	50	51	10	13	18	41	0	3	32	52	4	29	32	27	8	23	27	36	3	1	13	8	9	1	47	15	2	1	7	44	2	2	6	28	7	49	-13	10	-4	45
3	22	50	22	4	16	48	55	10	25	34	26	0	3	39	13	5	1	13	19	8	23	25	35	3	2	17	22	9	1	44	46	2	1	4	33	2	1	53	23	7	27	-8	39	-4	59
4	22	54	19	4	17	47	1	11	7	41	16	0	3	44	44	5	2	52	57	8	23	23	46	3	3	21	51	9	1	42	22	2	1	1	22	2	1	40	11	7	5	-3	51	-4	59
5	22	58	15	4	18	45	9	11	19	40	20	0	3	49	26	5	4	31	23	8	23	22	8	3	4	26	35	9	1	40	3	2	0	58	11	2	1	27	59	6	43	1	3	-4	46
6	23	2	12	4	19	43	19	0	1	33	28	0	3	53	17	5	6	8	36	8	23	20	41	3	5	31	34	9	1	37	49	2	0	55	1	2	1	17	42	6	21	5	53	-4	20
7	23	6	8	4	20	41	30	0	13	23	18	0	3	56	16	5	7	44	39	8	23	19	25	3	6	36	47	9	1	35	40	2	0	51	50	2	1	9	57	5	58	10	30	-3	44
8	23	10	5	4	21	39	44	0	25	13	18	0	3	58	24	5	9	19	31	8	23	18	21	3	7	42	14	9	1	33	36	2	0	48	39	2	1	4	54	5	36	14	43	-2	57
9	23	14	1	4	22	37	59	1	7	7	42	0	3	59	40	5	10	53	13	8	23	17	29	3	8	47	55	9	1	31	37	2	0	45	29	2	1	2	18	5	13	18	24	-2	3
10	23	17	58	4	23	36	17	1	19	11	22	0	4	0	2	5	12	25	46	8	23	16	48	3	9	53	50	9	1	29	44	2	0	42	18	2	1	1	29	4	51	21	22	-1	2
11	23	21	55	4	24	34	37	2	1	29	36	0	3	59	32	5	13	57	9	8	23	16	18	3	10	59	58	9	1	27	56	2	0	39	7	2	1	1	26	4	28	23	24	0	3
12	23	25	51	4	25	32	58	2	14	7	39	0	3	58	8	5	15	27	23	8	23	16	0	3	12	6	18	9	1	26	13	2	0	35	56	2	1	1	0	4	5	24	19	1	9
13	23	29	48	4	26	31	22	2	27	10	14	0	3	55	51	5	16	56	28	8	23	15	54	3	13	12	51	9	1	24	36	2	0	32	46	2	0	59	6	3	42	23	57	2	14
14	23	33	44	4	27	29	48	3	10	40	49	0	3	52	41	5	18	24	22	8	23	15	59	3	14	19	36	9	1	23	5	2	0	29	35	2	0	54	56	3	19	22	11	3	13
15	23	37	41	4	28	28	17	3	24	40	44	0	3	48	37	5	19	51	6	8	23	16	16	3	15	26	33	9	1	21	39	2	0	26	24	2	0	48	8	2	56	19	2	4	3
16	23	41	37	4	29	26	47	4	9	8	23	0	3	43	40	5	21	16	39	8	23	16	45	3	16	33	42	9	1	20	18	2	0	23	13	2	0	38	57	2	33	14	39	4	40
17	23	45	34	5	0	25	19	4	23	58	42	0	3	37	51	5	22	41	0	8	23	17	25	3	17	41	2	9	1	19	4	2	0	20	3	2	0	28	6	2	10	9	16	4	58
18	23	49	30	5	1	23	53	5	9	3	32	0	3	31	10	5	24	4	6	8	23	18	17	3	18	48	32	9	1	17	55	2	0	16	52	2	0	16	46	1	46	3	16	4	57
19	23	53	27	5	2	22	29	5	24	12	42	0	3	23	38	5	25	25	57	8	23	19	20	3	19	56	14	9	1	16	52	2	0	13	41	2	0	6	14	1	23	-2	58	4	34
20	23	57	24	5	3	21	6	6	9	15	49	0	3	15	16	5	26	46	31	8	23	20	35	3	21	4	6	9	1	15	54	2	0	10	31	1	29	57	36	1	0	-9	0	3	53
21	0	1	20	5	4	19	46	6	24	4	8	0	3	6	4	5	28	5	44	8	23	22	2	3	22	12	8	9	1	15	3	2	0	7	20	1	29	51	34	0	36	-14	25	2	57
22	0	5	17	5	5	18	27	7	8	31	41	0	2	56	4	5	29	23	34	8	23	23	40	3	23	20	20	9	1	14	17	2	0	4	9	1	29	48	15	0	13	-18	54	1	50
23	0	9	13	5	6	17	10	7	22	35	43	0	2	45	18	6	0	39	57	8	23	25	30	3	24	28	42	9	1	13	37	2	0	0	58	1	29	47	5	-0	10	-22	9	0	38
24	0	13	10	5	7	15	55	8	6	16	14	0	2	33	46	6	1	54	50	8	23	27	31	3	25	37	13	9	1	13	3	1	29	57	48	1	29	47	4	-0	34	-24	0	-0	34
25	0	17	6	5	8	14	41	8	19	35	4	0	2	21	31	6	3	8	7	8	23	29	43	3	26	45	54	9	1	12	35	1	29	54	37	1	29	46	54	-0	57	-24	26	-1	43
26	0	21	3	5	9	13	29	9	2	35	1	0	2	8	33	6	4	19	43	8	23	32	7	3	27	54	45	9	1	12	13	1	29	51	26	1	29	45	19	-1	20	-23	29	-2	44
27	0	24	59	5	10	12	19	9	15	19	9	0	1	54	55	6	5	29	32	8	23	34	42	3	29	3	44	9	1	11	57	1	29	48	15	1	29	41	20	-1	44	-21	21	-3	36
28	0	28	56	5	11	11	10	9	27	50	21	0	1	40	39	6	6	37	27	8	23	37	29	4	0	12	53	9	1	11	47	1	29	45	5	1	29	34	27	-2	7	-18	13	-4	16
29	0	32	53	5	12	10	4	10	10	11	1	0	1	25	46	6	7	43	21	8	23	40	26	4	1	22	10	9	1	11	42	1	29	41	54	1	29	24	42	-2	30	-14	20	-4	44

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 31"

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	0	40	46	5	14	7	56	11	4	27	59	0	0	54	18	6	9	48	25	8	23	46	54	4	3	41	12	9	1	11	52	1	29	35	33	1	28	59	11	-3	17	-5	8	-4	59
2	0	44	42	5	15	6	55	11	16	26	55	0	0	37	47	6	10	47	16	8	23	50	24	4	4	50	56	9	1	12	5	1	29	32	22	1	28	45	31	-3	40	-0	12	-4	47
3	0	48	39	5	16	5	56	11	28	21	3	0	0	20	48	6	11	43	22	8	23	54	6	4	6	0	48	9	1	12	25	1	29	29	11	1	28	32	47	-4	3	4	42	-4	22
4	0	52	35	5	17	4	59	0	10	11	50	0	0	3	24	6	12	36	30	8	23	57	58	4	7	10	49	9	1	12	50	1	29	26	0	1	28	21	57	-4	26	9	26	-3	45
5	0	56	32	5	18	4	4	0	22	1	10	11	29	45	37	6	13	26	24	8	24	2	0	4	8	20	58	9	1	13	22	1	29	22	50	1	28	13	43	-4	50	13	49	-2	59
6	1	0	28	5	19	3	11	1	3	51	38	11	29	27	28	6	14	12	46	8	24	6	14	4	9	31	15	9	1	13	59	1	29	19	39	1	28	8	19	-5	13	17	41	-2	5
7	1	4	25	5	20	2	21	1	15	46	32	11	29	9	2	6	14	55	18	8	24	10	37	4	10	41	40	9	1	14	42	1	29	16	28	1	28	5	34	-5	36	20	52	-1	5
8	1	8	22	5	21	1	33	1	27	49	54	11	28	50	21	6	15	33	39	8	24	15	12	4	11	52	13	9	1	15	32	1	29	13	17	1	28	4	52	-5	58	23	10	-0	1
9	1	12	18	5	22	0	47	2	10	6	21	11	28	31	28	6	16	7	24	8	24	19	57	4	13	2	54	9	1	16	27	1	29	10	7	1	28	5	17	-6	21	24	26	1	4
10	1	16	15	5	23	0	4	2	22	40	51	11	28	12	25	6	16	36	9	8	24	24	52	4	14	13	42	9	1	17	28	1	29	6	56	1	28	5	42	-6	44	24	29	2	7
11	1	20	11	5	23	59	23	3	5	38	15	11	27	53	15	6	16	59	26	8	24	29	57	4	15	24	38	9	1	18	35	1	29	3	45	1	28	5	4	-7	7	23	14	3	6
12	1	24	8	5	24	58	44	3	19	2	40	11	27	34	3	6	17	16	47	8	24	35	13	4	16	35	40	9	1	19	48	1	29	0	34	1	28	2	32	-7	29	20	39	3	57
13	1	28	4	5	25	58	8	4	2	56	39	11	27	14	50	6	17	27	43	8	24	40	39	4	17	46	50	9	1	21	7	1	28	57	24	1	27	57	43	-7	52	16	48	4	36
14	1	32	1	5	26	57	33	4	17	20	9	11	26	55	40	6	17	31	41	8	24	46	15	4	18	58	6	9	1	22	32	1	28	54	13	1	27	50	44	-8	14	11	52	4	59
15	1	35	57	5	27	57	1	5	2	9	48	11	26	36	37	6	17	28	14	8	24	52	1	4	20	9	29	9	1	24	3	1	28	51	2	1	27	42	11	-8	36	6	7	5	4
16	1	39	54	5	28	56	32	5	17	18	38	11	26	17	43	6	17	16	53	8	24	57	56	4	21	20	59	9	1	25	40	1	28	47	51	1	27	33	4	-8	58	-0	8	4	47
17	1	43	51	5	29	56	4	6	2	36	44	11	25	59	1	6	16	57	15	8	25	4	2	4	22	32	35	9	1	27	23	1	28	44	41	1	27	24	29	-9	20	-6	26	4	9
18	1	47	47	6	0	55	38	6	17	52	53	11	25	40	35	6	16	29	3	8	25	10	18	4	23	44	16	9	1	29	11	1	28	41	30	1	27	17	27	-9	42	-12	21	3	14
19	1	51	44	6	1	55	14	7	2	56	28	11	25	22	27	6	15	52	12	8	25	16	43	4	24	56	4	9	1	31	6	1	28	38	19	1	27	12	37	-10	4	-17	27	2	6
20	1	55	40	6	2	54	52	7	17	39	15	11	25	4	41	6	15	6	47	8	25	23	17	4	26	7	58	9	1	33	6	1	28	35	8	1	27	10	9	-10	25	-21	22	0	51
21	1	59	37	6	3	54	32	8	1	56	20	11	24	47	20	6	14	13	12	8	25	30	1	4	27	19	57	9	1	35	12	1	28	31	58	1	27	9	41	-10	47	-23	48	-0	26
22	2	3	33	6	4	54	14	8	15	46	8	11	24	30	25	6	13	12	12	8	25	36	54	4	28	32	2	9	1	37	24	1	28	28	47	1	27	10	26	-11	8	-24	42	-1	38
23	2	7	30	6	5	53	58	8	29	9	43	11	24	13	59	6	12	4	53	8	25	43	57	4	29	44	12	9	1	39	41	1	28	25	36	1	27	11	23	-11	29	-24	7	-2	43
24	2	11	26	6	6	53	43	9	12	9	52	11	23	58	4	6	10	52	43	8	25	51	9	5	0	56	27	9	1	42	4	1	28	22	25	1	27	11	31	-11	50	-22	13	-3	38
25	2	15	23	6	7	53	30	9	24	50	11	11	23	42	44	6	9	37	32	8	25	58	29	5	2	8	48	9	1	44	33	1	28	19	15	1	27	10	1	-12	11	-19	15	-4	20
26	2	19	20	6	8	53	18	10	7	14	33	11	23	27	59	6	8	21	28	8	26	5	59	5	3	21	14	9	1	47	7	1	28	16	4	1	27	6	26	-12	31	-15	29	-4	50
27	2	23	16	6	9	53	8	10	19	26	39	11	23	13	51	6	7	6	47	8	26	13	37	5	4	33	44	9	1	49	47	1	28	12	53	1	27	0	43	-12	52	-11	9	-5	5
28	2	27	13	6	10	53	0	11	1	29	49	11	23	0	22	6	5	55	48	8	26	21	24	5	5	46	20	9	1	52	33	1	28	9	42	1	26	53	14	-13	12	-6	25	-5	7
29	2	31	9	6	11	52	54	11	13	26	49	11	22	47	34	6	4	50	44	8	26	29	20	5	6	59	1	9	1	55	23	1	28	6	32	1	26	44	38	-13	32	-1	30	-4	55
30	2	35	6	6	12	52	49	11	25	19	58	11	22	35	27	6	3	53	30	8	26	37	23	5	8	11	47	9	1	58	20	1	28	3	21	1	26	35	47	-13	51	3	27	-4	30
31	2	39	2	6	13	52	46	0	7	11	7	11	22	24	2	6	3	5	43	8	26	45	36	5	9	24	37	9	2	1	21	1	28	0	10	1	26	27	29	-14	11	8	16	-3	54

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 35"

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ:	मि:	से:	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	2	42	59	6	14	52	45	0	19	1	58	11	22	13	22	6	2	28	32	8	26	53	56	5	10	37	32	9	2	4	28	1	27	56	59	1	26	20	31	-14	30	12	48	-3	8
2	2	46	55	6	15	52	46	1	0	54	13	11	22	3	26	6	2	2	39	8	27	2	25	5	11	50	32	9	2	7	41	1	27	53	49	1	26	15	23	-14	49	16	52	-2	13
3	2	50	52	6	16	52	49	1	12	49	44	11	21	54	15	6	1	48	22	8	27	11	1	5	13	3	37	9	2	10	58	1	27	50	38	1	26	12	19	-15	8	20	17	-1	12
4	2	54	49	6	17	52	54	1	24	50	49	11	21	45	50	6	1	45	37	8	27	19	46	5	14	16	46	9	2	14	21	1	27	47	27	1	26	11	14	-15	27	22	52	-0	7
5	2	58	45	6	18	53	1	2	7	0	14	11	21	38	12	6	1	54	0	8	27	28	39	5	15	29	59	9	2	17	49	1	27	44	16	1	26	11	44	-15	45	24	25	0	59
6	3	2	42	6	19	53	10	2	19	21	18	11	21	31	21	6	2	12	56	8	27	37	39	5	16	43	17	9	2	21	22	1	27	41	6	1	26	13	12	-16	3	24	48	2	3
7	3	6	38	6	20	53	21	3	1	57	43	11	21	25	17	6	2	41	38	8	27	46	47	5	17	56	39	9	2	25	1	1	27	37	55	1	26	14	54	-16	21	23	55	3	3
8	3	10	35	6	21	53	34	3	14	53	18	11	21	20	2	6	3	19	16	8	27	56	2	5	19	10	6	9	2	28	44	1	27	34	44	1	26	16	3	-16	38	21	46	3	55
9	3	14	31	6	22	53	49	3	28	11	36	11	21	15	34	6	4	4	56	8	28	5	25	5	20	23	36	9	2	32	32	1	27	31	33	1	26	16	7	-16	55	18	25	4	36
10	3	18	28	6	23	54	6	4	11	55	15	11	21	11	55	6	4	57	44	8	28	14	56	5	21	37	10	9	2	36	26	1	27	28	22	1	26	14	46	-17	12	13	59	5	3
11	3	22	24	6	24	54	25	4	26	5	12	11	21	9	4	6	5	56	51	8	28	24	34	5	22	50	48	9	2	40	24	1	27	25	12	1	26	12	2	-17	29	8	40	5	13
12	3	26	21	6	25	54	47	5	10	40	0	11	21	7	2	6	7	1	28	8	28	34	19	5	24	4	29	9	2	44	27	1	27	22	1	1	26	8	17	-17	45	2	43	5	3
13	3	30	18	6	26	55	10	5	25	35	9	11	21	5	48	6	8	10	50	8	28	44	11	5	25	18	14	9	2	48	35	1	27	18	50	1	26	4	3	-18	1	-3	30	4	33
14	3	34	14	6	27	55	34	6	10	43	20	11	21	5	22	6	9	24	18	8	28	54	10	5	26	32	3	9	2	52	48	1	27	15	39	1	26	0	2	-18	17	-9	38	3	43
15	3	38	11	6	28	56	1	6	25	55	5	11	21	5	45	6	10	41	16	8	29	4	16	5	27	45	54	9	2	57	5	1	27	12	29	1	25	56	50	-18	32	-15	14	2	37
16	3	42	7	6	29	56	29	7	11	0	19	11	21	6	56	6	12	1	12	8	29	14	29	5	28	59	49	9	3	1	27	1	27	9	18	1	25	54	49	-18	47	-19	50	1	21
17	3	46	4	7	0	56	59	7	25	49	56	11	21	8	55	6	13	23	39	8	29	24	49	6	0	13	47	9	3	5	54	1	27	6	7	1	25	54	8	-19	2	-23	3	0	0
18	3	50	0	7	1	57	30	8	10	17	6	11	21	11	41	6	14	48	13	8	29	35	15	6	1	27	48	9	3	10	26	1	27	2	56	1	25	54	36	-19	17	-24	40	-1	18
19	3	53	57	7	2	58	3	8	24	17	55	11	21	15	14	6	16	14	33	8	29	45	48	6	2	41	51	9	3	15	1	1	26	59	45	1	25	55	50	-19	31	-24	39	-2	30
20	3	57	53	7	3	58	37	9	7	51	23	11	21	19	34	6	17	42	21	8	29	56	27	6	3	55	57	9	3	19	42	1	26	56	35	1	25	57	20	-19	44	-23	8	-3	31
21	4	1	50	7	4	59	12	9	20	58	48	11	21	24	38	6	19	11	21	9	0	7	12	6	5	10	6	9	3	24	26	1	26	53	24	1	25	58	34	-19	58	-20	25	-4	19
22	4	5	47	7	5	59	48	10	3	43	7	11	21	30	28	6	20	41	21	9	0	18	4	6	6	24	17	9	3	29	15	1	26	50	13	1	25	59	11	-20	11	-16	47	-4	52
23	4	9	43	7	7	0	26	10	16	8	15	11	21	37	3	6	22	12	10	9	0	29	2	6	7	38	30	9	3	34	9	1	26	47	2	1	25	58	56	-20	23	-12	30	-5	11
24	4	13	40	7	8	1	5	10	28	18	28	11	21	44	20	6	23	43	39	9	0	40	5	6	8	52	46	9	3	39	6	1	26	43	51	1	25	57	47	-20	36	-7	49	-5	15
25	4	17	36	7	9	1	44	11	10	18	8	11	21	52	21	6	25	15	39	9	0	51	15	6	10	7	4	9	3	44	7	1	26	40	41	1	25	55	54	-20	47	-2	55	-5	6
26	4	21	33	7	10	2	25	11	22	11	17	11	22	1	3	6	26	48	5	9	1	2	30	6	11	21	25	9	3	49	13	1	26	37	30	1	25	53	33	-20	59	2	4	-4	43
27	4	25	29	7	11	3	7	0	4	1	32	11	22	10	26	6	28	20	50	9	1	13	50	6	12	35	48	9	3	54	22	1	26	34	19	1	25	51	4	-21	10	6	57	-4	9
28	4	29	26	7	12	3	51	0	15	52	0	11	22	20	30	6	29	53	52	9	1	25	17	6	13	50	13	9	3	59	36	1	26	31	8	1	25	48	47	-21	21	11	36	-3	23
29	4	33	22	7	13	4	35	0	27	45	18	11	22	31	12	7	1	27	5	9	1	36	48	6	15	4	40	9	4	4	53	1	26	27	57	1	25	46	57	-21	31	15	50	-2	29
30	4	37	19	7	14	5	20	1	9	43	35	11	22	42	33	7	3	0	27	9	1	48	25	6	16	19	9	9	4	10	14	1	26	24	47	1	25	45	44	-21	41	19	29	-1	28

27	4	25	29	7	11	3	7	0	4	1	32	11	22	10	26	6	28	20	50	9	1	13	30	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
28	4	29	26	7	12	3	51	0	15	52	0	11	22	20	30	6	29	53	52	9	1	25	17	6	13	50	13	9	3	59	36	1	26	31	8	1	25	48	47	-21	21	11	36	-3	23
29	4	33	22	7	13	4	35	0	27	45	18	11	22	31	12	7	1	27	5	9	1	36	48	6	15	4	40	9	4	4	53	1	26	27	57	1	25	46	57	-21	31	15	50	-2	29
30	4	37	19	7	14	5	20	1	9	43	35	11	22	42	33	7	3	0	27	9	1	48	25	6	16	19	9	9	4	10	14	1	26	24	47	1	25	45	44	-21	41	19	29	-1	28

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2020 ई. को अयनांश 24° 8' 39"

दिनांक	साम्पातिक काल 00h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	41	16	7	15	6	7	1	21	48	41	11	22	54	31	7	4	33	55	9	2	0	8	6	17	33	41	9	4	15	39	1	26	21	36	1	25	45	11	-21	50	22	20	-0	22
2	4	45	12	7	16	6	55	2	4	2	13	11	23	7	6	7	6	7	29	9	2	11	55	6	18	48	14	9	4	21	8	1	26	18	25	1	25	45	14	-21	59	24	11	0	46
3	4	49	9	7	17	7	44	2	16	25	45	11	23	20	17	7	7	41	6	9	2	23	48	6	20	2	50	9	4	26	40	1	26	15	14	1	25	45	43	-22	8	24	53	1	52
4	4	53	5	7	18	8	35	2	29	0	54	11	23	34	3	7	9	14	46	9	2	35	45	6	21	17	28	9	4	32	16	1	26	12	3	1	25	46	26	-22	16	24	19	2	54
5	4	57	2	7	19	9	27	3	11	49	26	11	23	48	24	7	10	48	27	9	2	47	47	6	22	32	7	9	4	37	55	1	26	8	52	1	25	47	9	-22	24	22	28	3	49
6	5	0	58	7	20	10	20	3	24	53	11	11	24	3	18	7	12	22	10	9	2	59	55	6	23	46	49	9	4	43	38	1	26	5	42	1	25	47	42	-22	31	19	26	4	33
7	5	4	55	7	21	11	14	4	8	13	51	11	24	18	45	7	13	55	55	9	3	12	6	6	25	1	32	9	4	49	24	1	26	2	31	1	25	48	0	-22	38	15	20	5	3
8	5	8	51	7	22	12	10	4	21	52	51	11	24	34	45	7	15	29	41	9	3	24	23	6	26	16	17	9	4	55	13	1	25	59	20	1	25	48	4	-22	44	10	22	5	17
9	5	12	48	7	23	13	7	5	5	50	44	11	24	51	16	7	17	3	28	9	3	36	44	6	27	31	4	9	5	1	6	1	25	56	9	1	25	47	57	-22	50	4	47	5	13
10	5	16	45	7	24	14	5	5	20	6	55	11	25	8	18	7	18	37	18	9	3	49	10	6	28	45	53	9	5	7	2	1	25	52	58	1	25	47	47	-22	56	-1	10	4	50
11	5	20	41	7	25	15	5	6	4	39	7	11	25	25	51	7	20	11	11	9	4	1	40	7	0	0	42	9	5	13	1	1	25	49	48	1	25	47	40	-23	1	-7	11	4	8
12	5	24	38	7	26	16	5	6	19	23	9	11	25	43	53	7	21	45	7	9	4	14	14	7	1	15	34	9	5	19	3	1	25	46	37	1	25	47	40	-23	5	-12	54	3	9
13	5	28	34	7	27	17	7	7	4	13	4	11	26	2	25	7	23	19	6	9	4	26	53	7	2	30	27	9	5	25	8	1	25	43	26	1	25	47	47	-23	10	-17	53	1	57
14	5	32	31	7	28	18	9	7	19	1	41	11	26	21	25	7	24	53	10	9	4	39	35	7	3	45	21	9	5	31	16	1	25	40	15	1	25	47	54	-23	13	-21	45	0	38
15	5	36	27	7	29	19	12	8	3	41	29	11	26	40	53	7	26	27	19	9	4	52	22	7	5	0	16	9	5	37	27	1	25	37	4	1	25	47	55	-23	17	-24	9	-0	44
16	5	40	24	8	0	20	16	8	18	5	37	11	27	0	48	7	28	1	33	9	5	5	13	7	6	15	12	9	5	43	41	1	25	33	53	1	25	47	43	-23	19	-24	53	-2	1
17	5	44	20	8	1	21	21	9	2	8	53	11	27	21	10	7	29	35	55	9	5	18	7	7	7	30	10	9	5	49	58	1	25	30	43	1	25	47	15	-23	22	-23	58	-3	8
18	5	48	17	8	2	22	26	9	15	48	9	11	27	41	58	8	1	10	24	9	5	31	5	7	8	45	8	9	5	56	17	1	25	27	32	1	25	46	32	-23	23	-21	39	-4	3
19	5	52	14	8	3	23	31	9	29	2	32	11	28	3	12	8	2	45	2	9	5	44	7	7	10	0	7	9	6	2	39	1	25	24	21	1	25	45	40	-23	25	-18	15	-4	43
20	5	56	10	8	4	24	37	10	11	53	13	11	28	24	50	8	4	19	49	9	5	57	12	7	11	15	7	9	6	9	3	1	25	21	10	1	25	44	50	-23	26	-14	4	-5	8
21	6	0	7	8	5	25	43	10	24	22	58	11	28	46	52	8	5	54	47	9	6	10	20	7	12	30	7	9	6	15	30	1	25	17	59	1	25	44	13	-23	26	-9	24	-5	17
22	6	4	3	8	6	26	50	11	6	35	42	11	29	9	18	8	7	29	56	9	6	23	32	7	13	45	9	9	6	21	59	1	25	14	49	1	25	44	1	-23	26	-4	28	-5	12
23	6	8	0	8	7	27	57	11	18	35	55	11	29	32	6	8	9	5	17	9	6	36	47	7	15	0	11	9	6	28	30	1	25	11	38	1	25	44	20	-23	26	0	33	-4	52
24	6	11	56	8	8	29	3	0	0	28	25	11	29	55	17	8	10	40	51	9	6	50	5	7	16	15	13	9	6	35	4	1	25	8	27	1	25	45	10	-23	25	5	29	-4	21
25	6	15	53	8	9	30	10	0	12	17	56	0	0	18	49	8	12	16	39	9	7	3	27	7	17	30	17	9	6	41	39	1	25	5	16	1	25	46	24	-23	23	10	14	-3	38
26	6	19	49	8	10	31	17	0	24	8	51	0	0	42	41	8	13	52	40	9	7	16	51	7	18	45	21	9	6	48	17	1	25	2	5	1	25	47	50	-23	21	14	36	-2	47
27	6	23	46	8	11	32	24	1	6	5	8	0	1	6	54	8	15	28	56	9	7	30	18	7	20	0	25	9	6	54	57	1	24	58	54	1	25	49	10	-23	19	18	27	-1	47
28	6	27	43	8	12	33	32	1	18	10	4	0	1	31	26	8	17	5	28	9	7	43	47	7	21	15	30	9	7	1	39	1	24	55	44	1	25	50	3	-23	16	21	34	-0	42
29	6	31	39	8	13	34	39	2	0	26	13	0	1	56	18	8	18	42	14	9	7	57	20	7	22	30	36	9	7	8	22	1	24	52	33	1	25	50	11	-23	13	23	45	0	25
30	6	35	36	8	14	35	46	2	12	55	19	0	2	21	28	8	20	19	16	9	8	10	55	7	23	45	43	9	7	15	8	1	24	49.	22	1	25	49	21	-23	9	24	48	1	3[illegible]
31	6	39	32	8	15	36	54	2	25	38	22	0	2	46	56	8	21	56	34	9	8	24	32	7	25	0	50	9	7	21	55	1	24	46	11	1	25	47	29	-23	5	24	34	2	[illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2021 ई. को अयनांश 24° 8' 45"

जनवरी	साम्पातिक काल 00h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	43	29	8	16	38	2	3	8	35	32	0	3	12	41	8	23	34	6	9	8	38	12	7	26	15	57	9	7	28	44	1	24	43	0	1	25	44	40	-23	0	23	1	3	34
2	6	47	25	8	17	39	10	3	21	46	30	0	3	38	44	8	25	11	53	9	8	51	55	7	27	31	6	9	7	35	34	1	24	39	50	1	25	41	15	-22	55	20	13	4	21
3	6	51	22	8	18	40	19	4	5	10	29	0	4	5	3	8	26	49	53	9	9	5	39	7	28	46	15	9	7	42	27	1	24	36	39	1	25	37	41	-22	49	16	18	4	55
4	6	55	18	8	19	41	27	4	18	46	30	0	4	31	39	8	28	28	5	9	9	19	26	8	0	1	24	9	7	49	20	1	24	33	28	1	25	34	30	-22	43	11	30	5	12
5	6	59	15	8	20	42	36	5	2	33	30	0	4	58	30	9	0	6	26	9	9	33	15	8	1	16	34	9	7	56	15	1	24	30	17	1	25	32	12	-22	37	6	5	5	12
6	7	3	12	8	21	43	45	5	16	30	26	0	5	25	37	9	1	44	55	9	9	47	6	8	2	31	45	9	8	3	12	1	24	27	6	1	25	31	4	-22	30	0	17	4	53
7	7	7	8	8	22	44	55	6	0	36	9	0	5	52	59	9	3	23	27	9	10	0	59	8	3	46	56	9	8	10	9	1	24	23	56	1	25	31	9	-22	22	-5	35	4	17
8	7	11	5	8	23	46	4	6	14	49	15	0	6	20	36	9	5	1	58	9	10	14	54	8	5	2	7	9	8	17	8	1	24	20	45	1	25	32	13	-22	14	-11	14	3	25
9	7	15	1	8	24	47	14	6	29	7	46	0	6	48	28	9	6	40	25	9	10	28	51	8	6	17	19	9	8	24	8	1	24	17	34	1	25	33	43	-22	6	-16	20	2	20
10	7	18	58	8	25	48	23	7	13	29	2	0	7	16	34	9	8	18	39	9	10	42	50	8	7	32	32	9	8	31	9	1	24	14	23	1	25	34	58	-21	57	-20	30	1	6
11	7	22	54	8	26	49	33	7	27	49	28	0	7	44	54	9	9	56	34	9	10	56	50	8	8	47	44	9	8	38	12	1	24	11	12	1	25	35	18	-21	48	-23	24	-0	12
12	7	26	51	8	27	50	42	8	12	4	45	0	8	13	28	9	11	34	1	9	11	10	52	8	10	2	57	9	8	45	15	1	24	8	1	1	25	34	10	-21	38	-24	46	-1	29
13	7	30	47	8	28	51	52	8	26	10	12	0	8	42	15	9	13	10	49	9	11	24	55	8	11	18	10	9	8	52	19	1	24	4	51	1	25	31	17	-21	28	-24	32	-2	39
14	7	34	44	8	29	53	0	9	10	1	21	0	9	11	15	9	14	46	44	9	11	39	0	8	12	33	23	9	8	59	24	1	24	1	40	1	25	26	45	-21	18	-22	45	-3	39
15	7	38	41	9	0	54	9	9	23	34	30	0	9	40	27	9	16	21	33	9	11	53	6	8	13	48	37	9	9	6	29	1	23	58	29	1	25	20	58	-21	7	-19	43	-4	25
16	7	42	37	9	1	55	17	10	6	47	23	0	10	9	52	9	17	54	56	9	12	7	13	8	15	3	50	9	9	13	35	1	23	55	18	1	25	14	35	-20	56	-15	44	-4	55
17	7	46	34	9	2	56	24	10	19	39	24	0	10	39	30	9	19	26	34	9	12	21	21	8	16	19	3	9	9	20	42	1	23	52	7	1	25	8	22	-20	44	-11	7	-5	9
18	7	50	30	9	3	57	31	11	2	11	38	0	11	9	18	9	20	56	2	9	12	35	31	8	17	34	16	9	9	27	49	1	23	48	57	1	25	3	1	-20	32	-6	10	-5	8
19	7	54	27	9	4	58	36	11	14	26	43	0	11	39	18	9	22	22	53	9	12	49	41	8	18	49	29	9	9	34	57	1	23	45	46	1	24	59	5	-20	20	-1	5	-4	53
20	7	58	23	9	5	59	41	11	26	28	26	0	12	9	30	9	23	46	37	9	13	3	52	8	20	4	42	9	9	42	5	1	23	42	35	1	24	56	51	-20	7	3	57	-4	25
21	8	2	20	9	7	0	45	0	8	21	24	0	12	39	51	9	25	6	39	9	13	18	4	8	21	19	55	9	9	49	13	1	23	39	24	1	24	56	17	-19	54	8	48	-3	46
22	8	6	16	9	8	1	48	0	20	10	42	0	13	10	23	9	26	22	20	9	13	32	16	8	22	35	7	9	9	56	22	1	23	36	13	1	24	57	2	-19	40	13	19	-2	57
23	8	10	13	9	9	2	51	1	2	1	34	0	13	41	5	9	27	32	57	9	13	46	29	8	23	50	19	9	10	3	30	1	23	33	3	1	24	58	31	-19	26	17	20	-2	1
24	8	14	10	9	10	3	52	1	13	59	8	0	14	11	57	9	28	37	44	9	14	0	43	8	25	5	31	9	10	10	39	1	23	29	52	1	24	59	56	-19	12	20	41	-0	59
25	8	18	6	9	11	4	52	1	26	8	2	0	14	42	58	9	29	35	54	9	14	14	57	8	26	20	43	9	10	17	47	1	23	26	41	1	25	0	28	-18	58	23	11	0	6
26	8	22	3	9	12	5	51	2	8	32	8	0	15	14	8	10	0	26	34	9	14	29	11	8	27	35	55	9	10	24	56	1	23	23	30	1	24	59	23	-18	43	24	37	1	13
27	8	25	59	9	13	6	49	2	21	14	11	0	15	45	27	10	1	8	55	9	14	43	26	8	28	51	7	9	10	32	4	1	23	20	19	1	24	56	10	-18	27	24	49	2	17
28	8	29	56	9	14	7	46	3	4	15	34	0	16	16	55	10	1	42	8	9	14	57	40	9	0	6	18	9	10	39	13	1	23	17	9	1	24	50	40	-18	12	23	40	3	15
29	8	33	52	9	15	8	43	3	17	36	6	0	16	48	30	10	2	5	26	9	15	11	55	9	1	21	29	9	10	46	21	1	23	13	58	1	24	43	9	-17	56	21	11	4	5
30	8	37	49	9	16	9	38	4	1	13	58	0	17	20	14	10	2	18	13	9	15	26	10	9	2	36	40	9	10	53	28	1	23	10	47	1	24	34	17	-17	39	17	28	4	41
31	8	41	45	9	17	10	33	4	15	6	0	0	17	52	6	10	2	20	0	9	15	40	25	9	3	51	52	9	11	0	35	1	23	7	36	1	24	25	2	-17	23	12	46	5	2

29	8	33	52	9	15	8	43	3	17	36	6	0	16	48	30	10	2	5	26	9	15	11	55	9	1	21	29	9	10	46	21	1	23	13	58	1	24	43	9	-17	56	21	11	4	5
30	8	37	49	9	16	9	38	4	1	13	58	0	17	20	14	10	2	18	13	9	15	26	10	9	2	36	40	9	10	53	28	1	23	10	47	1	24	34	17	-17	39	17	28	4	41
31	8	41	45	9	17	10	33	4	15	6	0	0	17	52	6	10	2	20	0	9	15	40	25	9	3	51	52	9	11	0	35	1	23	7	36	1	24	25	2	-17	23	12	46	5	2

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2021 ई. को अयनांश 24° 8' 50"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	45	42	9	18	11	26	4	29	8	13	0	18	24	5	10	2	10	31	9	15	54	40	9	5	7	3	9	11	7	42	1	23	4	26	1	24	16	28	-17	6	7	20	5	5
2	8	49	39	9	19	12	19	5	13	16	24	0	18	56	12	10	1	49	49	9	16	8	55	9	6	22	13	9	11	14	49	1	23	1	15	1	24	9	33	-16	49	1	29	4	49
3	8	53	35	9	20	13	11	5	27	26	50	0	19	28	27	10	1	18	13	9	16	23	10	9	7	37	24	9	11	21	54	1	22	58	4	1	24	4	54	-16	31	-4	28	4	16
4	8	57	32	9	21	14	2	6	11	36	36	0	20	0	48	10	0	36	26	9	16	37	24	9	8	52	35	9	11	28	59	1	22	54	53	1	24	2	38	-16	13	-10	11	3	27
5	9	1	28	9	22	14	53	6	25	43	48	0	20	33	17	9	29	45	29	9	16	51	38	9	10	7	46	9	11	36	4	1	22	51	42	1	24	2	18	-15	55	-15	22	2	25
6	9	5	25	9	23	15	42	7	9	47	16	0	21	5	53	9	28	46	47	9	17	5	51	9	11	22	56	9	11	43	7	1	22	48	32	1	24	2	59	-15	37	-19	42	1	16
7	9	9	21	9	24	16	31	7	23	46	15	0	21	38	35	9	27	41	59	9	17	20	4	9	12	38	6	9	11	50	10	1	22	45	21	1	24	3	30	-15	18	-22	52	0	2
8	9	13	18	9	25	17	18	8	7	39	56	0	22	11	25	9	26	32	58	9	17	34	17	9	13	53	16	9	11	57	12	1	22	42	10	1	24	2	39	-14	59	-24	38	-1	12
9	9	17	14	9	26	18	5	8	21	27	5	0	22	44	20	9	25	21	44	9	17	48	29	9	15	8	26	9	12	4	13	1	22	38	59	1	23	59	27	-14	40	-24	51	-2	21
10	9	21	11	9	27	18	50	9	5	5	55	0	23	17	23	9	24	10	15	9	18	2	40	9	16	23	36	9	12	11	12	1	22	35	49	1	23	53	26	-14	21	-23	34	-3	20
11	9	25	8	9	28	19	35	9	18	34	10	0	23	50	31	9	23	0	26	9	18	16	50	9	17	38	45	9	12	18	11	1	22	32	38	1	23	44	40	-14	1	-20	57	-4	8
12	9	29	4	9	29	20	18	10	1	49	29	0	24	23	46	9	21	53	57	9	18	30	59	9	18	53	54	9	12	25	8	1	22	29	27	1	23	33	42	-13	41	-17	16	-4	41
13	9	33	1	10	0	20	59	10	14	49	48	0	24	57	7	9	20	52	15	9	18	45	7	9	20	9	2	9	12	32	4	1	22	26	16	1	23	21	31	-13	21	-12	49	-4	59
14	9	36	57	10	1	21	40	10	27	33	58	0	25	30	34	9	19	56	29	9	18	59	14	9	21	24	10	9	12	38	59	1	22	23	6	1	23	9	18	-13	1	-7	54	-5	1
15	9	40	54	10	2	22	18	11	10	1	59	0	26	4	6	9	19	7	30	9	19	13	19	9	22	39	17	9	12	45	52	1	22	19	55	1	22	58	10	-12	40	-2	46	-4	49
16	9	44	50	10	3	22	55	11	22	15	10	0	26	37	44	9	18	25	52	9	19	27	24	9	23	54	24	9	12	52	44	1	22	16	44	1	22	49	2	-12	20	2	23	-4	24
17	9	48	47	10	4	23	30	0	4	16	6	0	27	11	27	9	17	51	55	9	19	41	27	9	25	9	30	9	12	59	34	1	22	13	33	1	22	42	24	-11	59	7	22	-3	47
18	9	52	43	10	5	24	4	0	16	8	29	0	27	45	15	9	17	25	43	9	19	55	28	9	26	24	35	9	13	6	23	1	22	10	23	1	22	38	23	-11	38	12	3	-3	1
19	9	56	40	10	6	24	36	0	27	56	54	0	28	19	9	9	17	7	14	9	20	9	28	9	27	39	40	9	13	13	9	1	22	7	12	1	22	36	36	-11	16	16	15	-2	7
20	10	0	37	10	7	25	6	1	9	46	36	0	28	53	7	9	16	56	16	9	20	23	26	9	28	54	44	9	13	19	54	1	22	4	1	1	22	36	18	-10	55	19	50	-1	8
21	10	4	33	10	8	25	34	1	21	43	7	0	29	27	9	9	16	52	31	9	20	37	22	10	0	9	47	9	13	26	37	1	22	0	50	1	22	36	27	-10	33	22	37	-0	5
22	10	8	30	10	9	26	0	2	3	51	58	1	0	1	16	9	16	55	40	9	20	51	17	10	1	24	50	9	13	33	19	1	21	57	40	1	22	35	56	-10	12	24	25	1	0
23	10	12	26	10	10	26	24	2	16	18	12	1	0	35	28	9	17	5	17	9	21	5	10	10	2	39	52	9	13	39	58	1	21	54	29	1	22	33	43	-9	50	25	3	2	2
24	10	16	23	10	11	26	47	2	29	5	57	1	1	9	43	9	17	21	1	9	21	19	1	10	3	54	53	9	13	46	35	1	21	51	18	1	22	29	2	-9	28	24	24	3	0
25	10	20	19	10	12	27	7	3	12	17	51	1	1	44	2	9	17	42	26	9	21	32	49	10	5	9	53	9	13	53	10	1	21	48	7	1	22	21	34	-9	5	22	23	3	51
26	10	24	16	10	13	27	26	3	25	54	32	1	2	18	26	9	18	9	9	9	21	46	36	10	6	24	53	9	13	59	43	1	21	44	57	1	22	11	33	-8	43	19	3	4	30
27	10	28	12	10	14	27	43	4	9	54	9	1	2	52	53	9	18	40	47	9	22	0	21	10	7	39	52	9	14	6	14	1	21	41	46	1	21	59	45	-8	20	14	35	4	54
28	10	32	9	10	15	27	58	4	24	12	26	1	3	27	24	9	19	16	59	9	22	14	3	10	8	54	51	9	14	12	42	1	21	38	35	1	21	47	20	-7	58	9	12	5	0

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2021 ई. को अयनांश 24° 8' 54"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घ	मि	से	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि
1	10	36	6	10	16	28	12	5	8	43	8	1	4	1	58	9	19	57	26
2	10	40	2	10	17	28	24	5	23	19	7	1	4	36	36	9	20	41	49
3	10	43	59	10	18	28	34	6	7	53	28	1	5	11	17	9	21	29	50
4	10	47	55	10	19	28	43	6	22	20	37	1	5	46	2	9	22	21	15
5	10	51	52	10	20	28	51	7	6	36	52	1	6	20	50	9	23	15	50
6	10	55	48	10	21	28	56	7	20	40	26	1	6	55	41	9	24	13	22
7	10	59	45	10	22	29	0	8	4	31	1	1	7	30	36	9	25	13	38
8	11	3	41	10	23	29	3	8	18	9	7	1	8	5	34	9	26	16	30
9	11	7	38	10	24	29	4	9	1	35	32	1	8	40	35	9	27	21	47
10	11	11	35	10	25	29	3	9	14	50	53	1	9	15	39	9	28	29	20
11	11	15	31	10	26	29	1	9	27	55	17	1	9	50	46	9	29	39	3
12	11	19	28	10	27	28	56	10	10	48	31	1	10	25	57	10	0	50	48
13	11	23	24	10	28	28	50	10	23	30	5	1	11	1	10	10	2	4	29
14	11	27	21	10	29	28	43	11	5	59	35	1	11	36	26	10	3	20	1
15	11	31	17	11	0	28	33	11	18	17	7	1	12	11	45	10	4	37	18
16	11	35	14	11	1	28	21	0	0	23	28	1	12	47	7	10	5	56	18
17	11	39	10	11	2	28	7	0	12	20	23	1	13	22	31	10	7	16	55
18	11	43	7	11	3	27	50	0	24	10	33	1	13	57	57	10	8	39	7
19	11	47	4	11	4	27	32	1	5	57	35	1	14	33	26	10	10	2	50
20	11	51	0	11	5	27	11	1	17	45	58	1	15	8	58	10	11	28	4
21	11	54	57	11	6	26	48	1	29	40	48	1	15	44	31	10	12	54	46
22	11	58	53	11	7	26	22	2	11	47	33	1	16	20	7	10	14	22	54
23	12	2	50	11	8	25	55	2	24	11	40	1	16	55	44	10	15	52	27
24	12	6	46	11	9	25	25	3	6	58	8	1	17	31	23	10	17	23	23
25	12	10	43	11	10	24	53	3	20	10	49	1	18	7	5	10	18	55	43
26	12	14	39	11	11	24	18	4	3	51	47	1	18	42	48	10	20	29	25
27	12	18	36	11	12	23	41	4	18	0	28	1	19	18	33	10	22	4	30
28	12	22	33	11	13	23	3	5	2	33	15	1	19	54	19	10	23	40	56
29	12	26	29	11	14	22	22	5	17	23	34	1	20	30	7	10	25	18	45
30	12	30	26	11	15	21	39	6	2	22	48	1	21	5	57	10	26	57	56
31	12	34	22	11	16	20	54	6	17	21	39	1	21	41	48	10	28	38	29

मार्च	गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	रा	अं	क	वि	अं	क	अं	क	अं	क
1	9	22	27	43	10	10	9	49	9	14	19	8	1	21	35	24	1	21	35	37	-7	35	3	15	4	47
2	9	22	41	21	10	11	24	46	9	14	25	32	1	21	32	14	1	21	25	48	-7	12	-2	55	4	16
3	9	22	54	56	10	12	39	43	9	14	31	53	1	21	29	3	1	21	18	43	-6	49	-8	56	3	27
4	9	23	8	29	10	13	54	39	9	14	38	12	1	21	25	52	1	21	14	33	-6	26	-14	26	2	26
5	9	23	21	59	10	15	9	34	9	14	44	28	1	21	22	41	1	21	12	53	-6	3	-19	4	1	16
6	9	23	35	26	10	16	24	29	9	14	50	42	1	21	19	31	1	21	12	41	-5	40	-22	32	0	3
7	9	23	48	51	10	17	39	23	9	14	56	52	1	21	16	20	1	21	12	37	-5	17	-24	36	-1	10
8	9	24	2	13	10	18	54	17	9	15	3	0	1	21	13	9	1	21	11	18	-4	53	-25	9	-2	17
9	9	24	15	32	10	20	9	10	9	15	9	6	1	21	9	58	1	21	7	35	-4	30	-24	12	-3	16
10	9	24	28	48	10	21	24	2	9	15	15	8	1	21	6	48	1	21	0	52	-4	6	-21	55	-4	3
11	9	24	42	0	10	22	38	54	9	15	21	7	1	21	3	37	1	20	51	7	-3	43	-18	31	-4	37
12	9	24	55	10	10	23	53	45	9	15	27	3	1	21	0	26	1	20	38	54	-3	19	-14	16	-4	56
13	9	25	8	16	10	25	8	35	9	15	32	56	1	20	57	15	1	20	25	13	-2	55	-9	28	-5	0
14	9	25	21	19	10	26	23	24	9	15	38	46	1	20	54	5	1	20	11	20	-2	32	-4	22	-4	49
15	9	25	34	18	10	27	38	12	9	15	44	33	1	20	50	54	1	19	58	27	-2	8	0	51	-4	25
16	9	25	47	14	10	28	52	59	9	15	50	16	1	20	47	43	1	19	47	35	-1	44	5	57	-3	49
17	9	26	0	6	11	0	7	46	9	15	55	56	1	20	44	33	1	19	39	23	-1	21	10	48	-3	3
18	9	26	12	54	11	1	22	31	9	16	1	32	1	20	41	22	1	19	34	4	-0	57	15	12	-2	10
19	9	26	25	38	11	2	37	15	9	16	7	5	1	20	38	11	1	19	31	20	-0	33	19	1	-1	11
20	9	26	38	18	11	3	51	58	9	16	12	34	1	20	35	0	1	19	30	32	-0	9	22	4	-0	9
21	9	26	50	55	11	5	6	40	9	16	18	0	1	20	31	50	1	19	30	41	0	14	24	11	0	54
22	9	27	3	27	11	6	21	21	9	16	23	22	1	20	28	39	1	19	30	41	0	38	25	14	1	56
23	9	27	15	55	11	7	36	1	9	16	28	40	1	20	25	28	1	19	29	29	1	2	25	3	2	53
24	9	27	28	19	11	8	50	40	9	16	33	54	1	20	22	17	1	19	26	15	1	25	23	33	3	44
25	9	27	40	38	11	10	5	17	9	16	39	5	1	20	19	7	1	19	20	35	1	49	20	45	4	25
26	9	27	52	53	11	11	19	53	9	16	44	12	1	20	15	56	1	19	12	36	2	12	16	44	4	52
27	9	28	5	3	11	12	34	29	9	16	49	14	1	20	12	45	1	19	2	53	2	36	11	40	5	3
28	9	28	17	9	11	13	49	3	9	16	54	13	1	20	9	35	1	18	52	28	2	59	5	49	4	55
29	9	28	29	11	11	15	3	36	9	16	59	8	1	20	6	24	1	18	42	31	3	23	-0	29	4	26
30	9	28	41	7	11	16	18	8	9	17	3	58	1	20	3	13	1	18	34	9	3	46	-6	49	3	40
31	9	28	52	59	11	17	32	39	9	17	8	45	1	20	0	2	1	18	28	8	4	9	-12	47	2	38

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2021 ई. को अयनांश 24° 8' 57''

अप्रैल	साम्पातिक काल 0 0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध			
	घ.	मि.	सं.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	12	38	19	11	17	20	7	7	2	11	42	1	22	17	41	11	0	20	26
2	12	42	15	11	18	19	19	7	16	46	40	1	22	53	35	11	2	3	46
3	12	46	12	11	19	18	28	8	1	2	46	1	23	29	31	11	3	48	31
4	12	50	8	11	20	17	36	8	14	58	42	1	24	5	28	11	5	34	40
5	12	54	5	11	21	16	42	8	28	34	54	1	24	41	27	11	7	22	15
6	12	58	2	11	22	15	47	9	11	52	54	1	25	17	28	11	9	11	15
7	13	1	58	11	23	14	49	9	24	54	40	1	25	53	30	11	11	1	43
8	13	5	55	11	24	13	50	10	7	42	11	1	26	29	34	11	12	53	37
9	13	9	51	11	25	12	49	10	20	17	13	1	27	5	39	11	14	46	59
10	13	13	48	11	26	11	47	11	2	41	11	1	27	41	46	11	16	41	48
11	13	17	44	11	27	10	42	11	14	55	13	1	28	17	54	11	18	38	3
12	13	21	41	11	28	9	35	11	27	0	27	1	28	54	3	11	20	35	45
13	13	25	37	11	29	8	27	0	8	58	5	1	29	30	14	11	22	34	51
14	13	29	34	0	0	7	16	0	20	49	42	2	0	6	26	11	24	35	19
15	13	33	31	0	1	6	3	1	2	37	26	2	0	42	40	11	26	37	6
16	13	37	27	0	2	4	48	1	14	24	2	2	1	18	55	11	28	40	7
17	13	41	24	0	3	3	31	1	26	12	58	2	1	55	10	0	0	44	19
18	13	45	20	0	4	2	12	2	8	8	19	2	2	31	27	0	2	49	32
19	13	49	17	0	5	0	50	2	20	14	42	2	3	7	45	0	4	55	41
20	13	53	13	0	5	59	27	3	2	37	0	2	3	44	4	0	7	2	36
21	13	57	10	0	6	58	1	3	15	20	3	2	4	20	24	0	9	10	4
22	14	1	6	0	7	56	32	3	28	28	6	2	4	56	45	0	11	17	54
23	14	5	3	0	8	55	2	4	12	4	7	2	5	33	6	0	13	25	52
24	14	9	0	0	9	53	30	4	26	9	4	2	6	9	28	0	15	33	40
25	14	12	56	0	10	51	55	5	10	41	3	2	6	45	51	0	17	41	3
26	14	16	53	0	11	50	19	5	25	35	6	2	7	22	15	0	19	47	42
27	14	20	49	0	12	48	40	6	10	43	20	2	7	58	40	0	21	53	18
28	14	24	46	0	13	47	0	6	25	56	7	2	8	35	5	0	23	57	32
29	14	28	42	0	14	45	18	7	11	3	31	2	9	11	31	0	26	0	7
30	14	32	39	0	15	43	35	7	25	56	53	2	9	47	58	0	28	0	44

अप्रैल	गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	9	29	4	46	11	18	47	9	9	17	13	27	1	19	56	52	1	18	24	43	4	33	-17	57	1	25
2	9	29	16	28	11	20	1	38	9	17	18	5	1	19	53	41	1	18	23	37	4	56	-21	56	0	9
3	9	29	28	4	11	21	16	7	9	17	22	39	1	19	50	30	1	18	23	59	5	19	-24	28	-1	7
4	9	29	39	36	11	22	30	34	9	17	27	8	1	19	47	19	1	18	24	44	5	42	-25	24	-2	17
5	9	29	51	2	11	23	45	0	9	17	31	33	1	19	44	9	1	18	24	42	6	4	-24	47	-3	18
6	10	0	2	23	11	24	59	26	9	17	35	53	1	19	40	58	1	18	22	54	6	27	-22	44	-4	6
7	10	0	13	39	11	26	13	50	9	17	40	9	1	19	37	47	1	18	18	48	6	50	-19	33	-4	41
8	10	0	24	49	11	27	28	14	9	17	44	20	1	19	34	36	1	18	12	20	7	12	-15	29	-5	1
9	10	0	35	53	11	28	42	36	9	17	48	26	1	19	31	26	1	18	3	54	7	35	-10	49	-5	6
10	10	0	46	52	11	29	56	58	9	17	52	28	1	19	28	15	1	17	54	15	7	57	-5	47	-4	56
11	10	0	57	44	0	1	11	18	9	17	56	25	1	19	25	4	1	17	44	21	8	19	-0	35	-4	33
12	10	1	8	31	0	2	25	38	9	18	0	17	1	19	21	53	1	17	35	9	8	41	4	35	-3	57
13	10	1	19	11	0	3	39	56	9	18	4	4	1	19	18	43	1	17	27	27	9	3	9	33	-3	12
14	10	1	29	46	0	4	54	13	9	18	7	47	1	19	15	32	1	17	21	48	9	25	14	8	-2	18
15	10	1	40	14	0	6	8	29	9	18	11	24	1	19	12	21	1	17	18	23	9	46	18	10	-1	19
16	10	1	50	36	0	7	22	44	9	18	14	56	1	19	9	11	1	17	17	5	10	7	21	28	-0	16
17	10	2	0	51	0	8	36	57	9	18	18	24	1	19	6	0	1	17	17	25	10	29	23	53	0	48
18	10	2	10	59	0	9	51	10	9	18	21	46	1	19	2	49	1	17	18	45	10	50	25	16	1	51
19	10	2	21	1	0	11	5	21	9	18	25	3	1	18	59	38	1	17	20	15	11	11	25	28	2	49
20	10	2	30	56	0	12	19	30	9	18	28	15	1	18	56	28	1	17	21	10	11	31	24	25	3	41
21	10	2	40	45	0	13	33	39	9	18	31	21	1	18	53	17	1	17	20	52	11	52	22	7	4	24
22	10	2	50	26	0	14	47	46	9	18	34	22	1	18	50	6	1	17	19	0	12	12	18	37	4	55
23	10	3	0	1	0	16	1	51	9	18	37	19	1	18	46	55	1	17	15	33	12	32	14	1	5	10
24	10	3	9	28	0	17	15	56	9	18	40	9	1	18	43	44	1	17	10	53	12	52	8	33	5	7
25	10	3	18	48	0	18	29	59	9	18	42	55	1	18	40	34	1	17	5	36	13	12	2	27	4	45
26	10	3	28	1	0	19	44	1	9	18	45	35	1	18	37	23	1	17	0	29	13	31	-3	57	4	4
27	10	3	37	7	0	20	58	2	9	18	48	9	1	18	34	12	1	16	56	13	13	50	-10	15	3	5
28	10	3	46	5	0	22	12	1	9	18	50	39	1	18	31	1	1	16	53	21	14	9	-15	58	1	52
29	10	3	54	56	0	23	26	0	9	18	53	2	1	18	27	51	1	16	52	3	14	28	-20	39	0	32
30	10	4	3	39	0	24	39	57	9	18	55	21	1	18	24	40	1	16	52	11	14	46	-23	54	-0	50

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें (सं. 2077 वि.)

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	प्र.आश्वि.	द्वि.आश्वि.	कार्त्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2020 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)	चन्द्रदर्शन (2021 ई.)
+ 5°	25 मार्च	24 अप्रैल	24 मई	22 जून	22 जुलाई	20 अगस्त	18 सितं.	18 अक्तू.	16 नवं.	16 दिसं.	14 जनवरी	13 फरवरी	14 मार्च
+ 15°	25 मार्च	24 अप्रैल	24 मई	22 जून	22 जुलाई	20 अगस्त	18 सितं.	18 अक्तू.	16 नवं.	16 दिसं.	14 जनवरी	13 फरवरी	14 मार्च
+ 25°	25 मार्च	24 अप्रैल	24 मई	22 जून	22 जुलाई	20 अगस्त	18 सितं.	18 अक्तू.	16 नवं.	16 दिसं.	14 जनवरी	13 फरवरी	14 मार्च
+ 35°	25 मार्च	24 अप्रैल	24 मई	22 जून	22 जुलाई	20 अगस्त	18 सितं.	18 अक्तू.	16 नवं.	16 दिसं.	14 जनवरी	13 फरवरी	15 मार्च

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, सम्पादक—'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांगम्' द्वारा लिखित संग्रहणीय प्रकाशन

भारतीय लग्ननिर्णय

भारत के सभी (31) प्रदेशों के प्रसिद्ध लगभग 1000 नगर, उपनगरों में अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ-समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस पुस्तक से केवल तीन सामान्य मौखिक जोड़-घटाव द्वारा ही तुरन्त (30-40 सेकण्डों में ही) जाना जा सकता है। यहां एक ऐसा सहायक कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी सहायता से भारत के अन्य किसी भी नगर, ग्राम में आप अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ-समाप्तिकाल तुरन्त जान सकते हैं। यह पुस्तक हमारी 'लघु लग्नसारणी' का ही एक भाग है।

पुस्तक का मूल्य Rs. 75/- + डाकव्यय Rs. 35/- है। हमारी अन्य किसी भी पुस्तक के साथ इसे मंगवाने पर इसका डाकव्ययसहित मूल्य केवल Rs. 65/- ही लिया जाएगा।

पता:—श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., कोठी नं. 59, सैक्टर-6, P.O. पंचकूला-(हरियाणा)

Pin-134 109, PHONE-0172-2565303, 09041330161

ध्यान दें—आगामी वर्ष सं. 2078 वि. में हरिद्वार में महाकुम्भ का योग है। यह महाकुम्भ वर्षारम्भ में ही 13 अप्रैल 2021 ई. के दिन (वासन्त नवरात्रारम्भ वाले दिन) घटित हो रहा है। पुण्याभिलाषी जन एतदर्थ तैयार रहें।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

तारीख	जनवरी 2020				फरवरी 2020				मार्च 2020				अप्रैल 2020			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	11	31	23	12	11	29	—	—	10	33	—	—	11	25	1	01
2	12	01	—	—	12	01	0	35	11	10	0	17	12	23	1	57
3	12	30	0	05	12	36	1	30	11	53	1	14	13	25	2	49
4	12	59	0	57	13	16	2	28	12	41	2	13	14	32	3	38
5	13	31	1	51	14	02	3	27	13	37	3	11	15	41	4	22
6	14	04	2	46	14	56	4	27	14	39	4	07	16	50	5	04
7	14	43	3	44	15	56	5	24	15	46	5	00	18	00	5	43
8	15	26	4	44	17	02	6	23	16	55	5	48	19	10	6	21
9	16	17	5	45	18	11	7	14	18	06	6	32	20	20	7	00
10	17	14	6	46	19	22	8	01	19	16	7	13	21	30	7	41
11	18	17	7	44	20	31	8	43	20	26	7	52	22	37	8	26
12	19	24	8	37	21	39	9	22	21	35	8	31	23	42	9	14
13	20	32	9	25	22	43	9	59	22	45	9	10	—	—	10	06
14	21	40	10	08	23	50	10	36	23	48	9	51	0	40	11	01
15	22	46	10	48	—	—	—	—	—	—	10	35	1	33	11	57
16	23	51	11	24	0	55	11	55	0	52	11	23	2	19	12	55
17	—	—	12	00	1	58	12	39	1	52	12	14	3	00	13	51
18	0	54	12	36	2	59	13	27	2	47	13	09	3	35	14	46
19	1	58	13	15	3	56	14	19	3	36	14	04	4	07	15	40
20	3	01	13	56	4	49	15	13	4	20	15	01	4	37	16	32
21	4	04	14	41	5	37	16	09	4	58	15	56	5	06	17	25
22	5	04	15	31	6	19	17	06	5	33	16	51	5	35	18	18
23	6	01	16	24	6	57	18	01	6	04	17	44	6	04	19	11
24	6	53	17	20	7	31	18	56	6	34	18	37	6	35	20	06
25	7	39	18	17	8	02	19	49	7	03	19	30	7	10	21	03
26	8	21	19	13	8	32	20	42	7	32	20	22	7	48	22	00
27	8	57	20	09	9	00	21	34	8	02	21	16	8	31	22	57
28	9	30	21	03	9	30	22	27	8	34	22	11	9	20	23	52
29	10	01	21	56	10	00	23	21	9	09	23	07	10	15	—	—
30	10	30	22	48					9	49	—	—	11	14	0	45
31	10	59	23	41					10	34	0	05				

मई 2020				जून 2020				जुलाई 2020				अगस्त 2020				तारीख
उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
12	18	1	33	14	30	2	12	15	38	2	02	17	42	3	04	1
13	23	2	18	15	36	2	48	16	45	2	42	18	35	4	01	2
14	30	2	58	16	44	3	25	17	51	3	28	19	22	5	01	3
15	38	3	37	17	53	4	05	18	54	4	18	20	02	6	01	4
16	46	4	14	19	01	4	48	19	52	5	14	20	38	7	00	5
17	55	4	52	20	07	5	37	20	43	6	13	21	10	7	57	6
19	05	5	31	21	09	6	31	21	27	7	14	21	40	8	52	7
20	15	6	13	22	04	7	29	22	06	8	14	22	09	9	46	8
21	23	7	00	22	52	8	29	22	40	9	12	22	37	10	38	9
22	26	7	51	23	33	9	29	23	11	10	08	23	07	11	31	10
23	24	8	47	—	—	10	27	23	40	11	02	23	39	12	25	11
—	—	9	45	0	09	11	24	—	—	11	55	—	—	13	20	12
0	14	10	44	0	41	12	18	0	08	12	47	0	14	14	17	13
0	58	11	42	1	11	13	11	0	37	13	41	0	54	15	15	14
1	36	12	38	1	39	14	04	1	08	14	35	1	41	16	12	15
2	09	13	33	2	08	14	57	1	41	15	32	2	34	17	08	16
2	40	14	26	2	37	15	51	2	19	16	30	3	33	18	01	17
3	09	15	19	3	09	16	47	3	03	17	29	4	38	18	49	18
3	38	16	12	3	45	17	44	3	52	18	26	5	45	19	32	19
4	07	17	05	4	25	18	43	4	49	19	21	6	54	20	12	20
4	37	18	00	5	11	19	41	5	51	20	11	8	02	20	49	21
5	10	18	56	6	03	20	37	6	56	20	57	9	09	21	26	22
5	47	19	54	7	01	21	29	8	03	21	38	10	16	22	02	23
6	29	20	52	8	03	22	17	9	09	22	15	11	22	22	41	24
7	16	21	49	9	08	22	59	10	15	22	51	12	29	23	23	25
8	10	22	42	10	13	23	38	11	20	23	26	13	34	—	—	26
9	08	23	32	11	17	—	—	12	24	—	—	14	37	0	09	27
10	10	—	—	12	22	0	14	13	30	0	02	15	37	1	00	28
11	14	0	17	13	26	0	49	14	35	0	41	16	31	1	55	29
12	19	0	58	14	31	1	24	15	40	1	24	17	19	2	53	30
13	24	1	36					16	43	2	12	18	01	3	52	31

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2020 ई.

तारीख	सितम्बर 2020				अक्तूबर 2020				नवम्बर 2020				दिसम्बर 2020				जनवरी 2021				फरवरी 2021				मार्च 2021				अप्रैल 2021				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	18	37	4	51	18	12	5	32	18	12	7	00	18	07	7	41	19	40	9	07	21	45	9	43	20	38	8	16	22	56	8	42	1
2	19	10	5	48	18	40	6	25	18	47	7	55	18	54	8	38	20	42	9	52	22	49	10	17	21	44	8	51	—	—	9	29	2
3	19	41	6	44	19	09	7	18	19	25	8	51	19	48	9	32	21	46	10	31	23	54	10	51	22	52	9	27	0	05	10	22	3
4	20	10	7	38	19	39	8	11	20	09	9	47	20	46	10	23	22	49	11	08	—	—	11	27	23	59	10	05	1	09	11	20	4
5	20	38	8	31	20	11	9	05	20	58	10	42	21	46	11	09	23	52	11	42	1	00	12	06	—	—	10	48	2	06	12	21	5
6	21	07	9	24	20	46	10	00	21	53	11	35	22	49	11	52	—	—	12	15	2	07	12	49	1	07	11	35	2	56	13	24	6
7	21	38	10	17	21	27	10	56	22	52	12	25	23	52	12	30	0	56	12	50	3	14	13	39	2	13	12	28	3	39	14	25	7
8	22	11	11	11	22	12	11	52	23	54	13	10	—	—	13	06	2	01	13	27	4	18	14	34	3	14	13	27	4	16	15	24	8
9	22	49	12	07	23	04	12	47	—	—	13	52	0	56	13	40	3	08	14	07	5	18	15	34	4	08	14	28	4	49	16	21	9
10	23	31	13	03	—	—	13	40	0	58	14	30	2	00	14	15	4	17	14	54	6	12	16	37	4	56	15	30	5	19	17	17	10
11	—	—	14	00	0	01	14	29	2	03	15	07	3	06	14	51	5	25	15	47	6	59	17	40	5	38	16	31	5	47	18	11	11
12	0	20	14	55	1	03	15	14	3	10	15	43	4	15	15	31	6	30	16	46	7	39	18	42	6	14	17	31	6	15	19	05	12
13	1	16	15	48	2	09	15	56	4	18	16	19	5	25	16	15	7	30	17	49	8	15	19	41	6	46	18	28	6	44	19	59	13
14	2	17	16	39	3	16	16	35	5	28	16	58	6	36	17	06	8	22	18	53	8	47	20	38	7	16	19	23	7	14	20	54	14
15	3	23	17	23	4	24	17	13	6	39	17	42	7	45	18	03	9	06	19	56	9	16	21	33	7	45	20	18	7	47	21	49	15
16	4	31	18	04	5	33	17	50	7	51	18	30	8	49	19	05	9	44	20	57	9	45	22	27	8	13	21	12	8	23	22	45	16
17	5	40	18	43	6	44	18	28	9	02	19	24	9	45	20	09	10	18	21	55	10	13	23	21	8	42	22	06	9	05	23	39	17
18	6	49	19	21	7	55	19	10	10	08	20	23	10	33	21	13	10	48	22	50	10	43	—	—	9	14	23	01	9	51	—	—	18
19	7	58	19	58	9	06	19	55	11	07	21	25	11	14	22	13	11	17	23	44	11	15	0	15	9	48	23	56	10	43	0	32	19
20	9	08	20	37	10	16	20	45	11	57	22	27	11	49	23	11	11	45	—	—	11	51	1	10	10	26	—	—	11	40	1	22	20
21	10	17	21	19	11	22	21	40	12	40	23	28	12	20	—	—	12	14	0	37	12	32	2	06	11	09	0	52	12	40	2	07	21
22	11	25	22	05	12	23	22	39	13	17	—	—	12	49	0	07	12	45	1	31	13	19	3	02	11	59	1	46	13	43	2	49	22
23	12	31	22	55	13	16	23	39	13	50	0	26	13	17	1	00	13	19	2	25	14	11	3	57	12	54	2	39	14	48	3	28	23
24	13	33	23	49	14	02	—	—	14	19	1	21	13	45	1	53	13	57	3	21	15	10	4	49	13	54	3	28	15	54	4	04	24
25	14	29	—	—	14	41	0	39	14	47	2	15	14	15	2	46	14	41	4	18	16	13	5	38	14	57	4	14	17	01	4	39	25
26	15	18	0	47	15	16	1	37	15	15	3	08	14	46	3	40	15	30	5	14	17	18	6	22	16	03	4	55	18	10	5	14	26
27	16	01	1	46	15	47	2	33	15	44	4	01	15	22	4	36	16	26	6	09	18	25	7	03	17	10	5	34	19	21	5	51	27
28	16	39	2	45	16	16	3	27	16	14	4	54	16	03	5	33	17	27	7	00	19	31	7	40	18	17	6	10	20	34	6	32	28
29	17	13	3	42	16	44	4	21	16	47	5	49	16	49	6	30	18	31	7	47					19	25	6	45	21	47	7	18	29
30	17	43	4	38	17	12	5	13	17	24	6	44	17	41	7	25	19	36	8	29					20	35	7	22	22	56	8	10	30
31					17	41	6	06					18	38	8	19	20	41	9	08					21	45	8	00					31

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2020 ई.) (प्रातः 5 घ. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2020 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जनवरी 1	0	8	34	10	22	8	8	28	15	-19 27	0 22	-24 38	-1 16	-23 11	0 5	-18 16	-1 50	-21 41	0 3	11 57	-0 30	-6 22	-1 2	-22 13	-0 39
4	0	8	32	10	22	12	8	28	21	-19 55	0 20	-24 38	-1 31	-23 9	0 5	-17 8	-1 48	-21 38	0 3	11 56	-0 30	-6 20	-1 2	-22 12	-0 39
7	0	8	32	10	22	15	8	28	27	-20 21	0 18	-24 26	-1 44	-23 7	0 5	-15 55	-1 46	-21 35	0 3	11 56	-0 29	-6 19	-1 1	-22 12	-0 40
10	0	8	31	10	22	20	8	28	33	-20 46	0 16	-24 0	-1 54	-23 4	0 4	-14 39	-1 42	-21 32	0 2	11 56	-0 29	-6 17	-1 1	-22 11	-0 40
13	0	8	31	10	22	24	8	28	39	-21 9	0 14	-23 21	-2 1	-23 2	0 4	-13 20	-1 38	-21 28	0 2	11 56	-0 29	-6 15	-1 1	-22 10	-0 40
16	0	8	32	10	22	29	8	28	45	-21 31	0 12	-22 28	-2 5	-22 59	0 4	-11 57	-1 33	-21 25	0 2	11 56	-0 29	-6 14	-1 1	-22 10	-0 40
19	0	8	33	10	22	33	8	28	51	-21 52	0 10	-21 21	-2 6	-22 56	0 4	-10 32	-1 27	-21 22	0 2	11 57	-0 29	-6 12	-1 1	-22 9	-0 41
22	0	8	34	10	22	38	8	28	57	-22 10	0 8	-20 0	-2 2	-22 53	0 3	-9 5	-1 20	-21 18	0 2	11 57	-0 29	-6 10	-1 1	-22 8	-0 41
25	0	8	36	10	22	44	8	29	3	-22 27	0 6	-18 26	-1 54	-22 50	0 3	-7 35	-1 13	-21 15	0 1	11 58	-0 29	-6 8	-1 1	-22 7	-0 41
28	0	8	38	10	22	49	8	29	9	-22 43	0 4	-16 39	-1 40	-22 46	0 3	-6 4	-1 5	-21 11	0 1	11 59	-0 29	-6 5	-1 1	-22 7	-0 42
31	0	8	41	10	22	55	8	29	15	-22 56	0 1	-14 41	-1 20	-22 43	0 3	-4 32	-0 56	-21 8	0 1	12 0	-0 29	-6 3	-1 1	-22 6	-0 42
फरवरी 1	0	8	42	10	22	57	8	29	17	-23 0	0 1	-13 59	-1 12	-22 42	0 2	-4 1	-0 53	-21 6	0 1	12 0	-0 29	-6 2	-1 1	-22 6	-0 42
4	0	8	46	10	23	3	8	29	23	-23 11	-0 2	-11 52	-0 43	-22 38	0 2	-2 27	-0 43	-21 3	0 1	12 2	-0 29	-6 0	-1 1	-22 5	-0 42
7	0	8	50	10	23	9	8	29	28	-23 21	-0 4	-9 43	-0 7	-22 34	0 2	-0 53	-0 32	-20 59	0 0	12 3	-0 28	-5 58	-1 1	-22 4	-0 42
10	0	8	54	10	23	15	8	29	34	-23 28	-0 7	-7 42	0 35	-22 30	0 2	0 41	-0 21	-20 56	0 0	12 5	-0 28	-5 55	-1 1	-22 4	-0 43
13	0	8	59	10	23	21	8	29	39	-23 34	-0 9	-5 59	1 22	-22 26	0 1	2 16	-0 9	-20 52	0 0	12 6	-0 28	-5 53	-1 1	-22 3	-0 43
16	0	9	4	10	23	28	8	29	45	-23 38	-0 12	-4 45	2 10	-22 22	0 1	3 49	0 3	-20 49	-0 0	12 8	-0 28	-5 50	-1 1	-22 2	-0 43
19	0	9	10	10	23	34	8	29	50	-23 40	-0 14	-4 10	2 54	-22 17	0 1	5 22	0 16	-20 45	-0 0	12 10	-0 28	-5 48	-1 1	-22 2	-0 44
22	0	9	16	10	23	41	8	29	55	-23 40	-0 17	-4 18	3 27	-22 13	0 0	6 54	0 29	-20 42	-0 1	12 12	-0 28	-5 45	-1 1	-22 1	-0 44
25	0	9	22	10	23	47	9	0	0	-23 38	-0 20	-5 6	3 42	-22 9	0 0	8 25	0 43	-20 38	-0 1	12 15	-0 28	-5 42	-1 1	-22 1	-0 44
28	0	9	29	10	23	54	9	0	5	-23 35	-0 23	-6 21	3 38	-22 4	-0 0	9 54	0 57	-20 35	-0 1	12 17	-0 28	-5 40	-1 1	-22 0	-0 45
मार्च 1	0	9	33	10	23	59	9	0	8	-23 31	-0 25	-7 17	3 25	-22 1	-0 0	10 52	1 7	-20 33	-0 1	12 19	-0 28	-5 38	-1 1	-22 0	-0 45
4	0	9	41	10	24	5	9	0	12	-23 24	-0 28	-8 39	2 54	-21 57	-0 1	12 18	1 21	-20 30	-0 1	12 21	-0 28	-5 35	-1 1	-21 59	-0 45
7	0	9	48	10	24	12	9	0	16	-23 16	-0 31	-9 49	2 14	-21 52	-0 1	13 41	1 36	-20 26	-0 2	12 24	-0 28	-5 33	-1 1	-21 59	-0 45
10	0	9	56	10	24	19	9	0	20	-23 5	-0 34	-10 40	1 32	-21 48	-0 1	15 1	1 51	-20 23	-0 2	12 26	-0 28	-5 30	-1 1	-21 59	-0 46
13	0	10	4	10	24	26	9	0	24	-22 53	-0 37	-11 11	0 50	-21 43	-0 2	16 19	2 6	-20 20	-0 2	12 29	-0 27	-5 27	-1 1	-21 58	-0 46
16	0	10	13	10	24	33	9	0	27	-22 39	-0 40	-11 22	0 10	-21 39	-0 2	17 33	2 20	-20 17	-0 2	12 32	-0 27	-5 25	-1 1	-21 58	-0 46
19	0	10	21	10	24	39	9	0	31	-22 23	-0 43	-11 15	-0 25	-21 35	-0 2	18 44	2 35	-20 15	-0 3	12 35	-0 27	-5 22	-1 1	-21 58	-0 47
22	0	10	30	10	24	46	9	0	34	-22 6	-0 47	-10 52	-0 57	-21 31	-0 3	19 51	2 50	-20 12	-0 3	12 38	-0 27	-5 20	-1 1	-21 57	-0 47
25	0	10	40	10	24	53	9	0	37	-21 46	-0 50	-10 12	-1 23	-21 27	-0 3	20 54	3 4	-20 9	-0 3	12 41	-0 27	-5 17	-1 1	-21 57	-0 47
28	0	10	49	10	24	59	9	0	39	-21 26	-0 54	-9 19	-1 46	-21 23	-0 3	21 54	3 18	-20 7	-0 3	12 45	-0 27	-5 15	-1 1	-21 57	-0 48
31	0	10	58	10	25	6	9	0	42	-21 3	-0 57	-8 12	-2 4	-21 19	-0 4	22 49	3 31	-20 5	-0 4	12 48	-0 27	-5 12	-1 1	-21 57	-0 48

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2020 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्		यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
											क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2020 ई.		रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल	1	0	11	02	10	25	08	9	0	42	-20 55	-0 58	-7 47	-2 09	-21 18	-0 04	23 06	3 35	-20 04	-0 04	12 49	-0 27	-5 11	-1 1	-21 57	-0 48
	4	0	11	11	10	25	14	9	0	44	-20 31	-1 02	-6 23	-2 21	-21 15	-0 04	23 55	3 48	-20 02	-0 04	12 52	-0 27	-5 09	-1 1	-21 57	-0 49
	7	0	11	21	10	25	21	9	0	46	-20 05	-1 06	-4 49	-2 28	-21 11	-0 05	24 39	4 00	-20 00	-0 04	12 56	-0 27	-5 06	-1 1	-21 57	-0 49
	10	0	11	31	10	25	27	9	0	48	-19 37	-1 09	-3 03	-2 31	-21 08	-0 05	25 19	4 11	-19 58	-0 04	12 59	-0 27	-5 04	-1 2	-21 57	-0 49
	13	0	11	41	10	25	33	9	0	49	-19 08	-1 13	-1 08	-2 30	-21 05	-0 05	25 54	4 21	-19 56	-0 05	13 02	-0 27	-5 02	-1 2	-21 57	-0 50
	16	0	11	52	10	25	39	9	0	50	-18 38	-1 17	0 56	-2 23	-21 03	-0 06	26 25	4 29	-19 55	-0 05	13 06	-0 27	-5 00	-1 2	-21 57	-0 50
	19	0	12	02	10	25	44	9	0	51	-18 07	-1 21	3 09	-2 13	-21 00	-0 06	26 50	4 37	-19 54	-0 05	13 09	-0 27	-4 57	-1 2	-21 58	-0 50
	22	0	12	12	10	25	50	9	0	51	-17 34	-1 25	5 30	-1 57	-20 58	-0 07	27 11	4 43	-19 53	-0 05	13 13	-0 27	-4 55	-1 2	-21 58	-0 51
	25	0	12	23	10	25	55	9	0	51	-17 00	-1 29	7 56	-1 38	-20 56	-0 07	27 28	4 47	-19 52	-0 06	13 16	-0 27	-4 53	-1 2	-21 58	-0 51
	28	0	12	33	10	26	00	9	0	51	-16 25	-1 33	10 27	-1 14	-20 55	-0 07	27 40	4 49	-19 51	-0 06	13 19	-0 27	-4 51	-1 2	-21 58	-0 51
मई	1	0	12	43	10	26	05	9	0	51	-15 50	-1 37	12 58	-0 46	-20 54	-0 08	27 47	4 48	-19 51	-0 06	13 23	-0 27	-4 50	-1 2	-21 59	-0 52
	4	0	12	54	10	26	10	9	0	50	-15 13	-1 41	15 28	-0 16	-20 53	-0 08	27 49	4 45	-19 50	-0 07	13 26	-0 27	-4 48	-1 2	-21 59	-0 52
	7	0	13	04	10	26	14	9	0	49	-14 35	-1 46	17 50	0 16	-20 52	-0 09	27 47	4 39	-19 50	-0 07	13 30	-0 27	-4 46	-1 2	-22 00	-0 52
	10	0	13	14	10	26	18	9	0	48	-13 57	-1 50	19 59	0 47	-20 52	-0 09	27 39	4 29	-19 50	-0 07	13 33	-0 27	-4 45	-1 2	-22 00	-0 53
	13	0	13	24	10	26	22	9	0	47	-13 18	-1 54	21 51	1 16	-20 52	-0 10	27 26	4 16	-19 51	-0 07	13 36	-0 27	-4 43	-1 3	-22 01	-0 53
	16	0	13	34	10	26	26	9	0	45	-12 38	-1 59	23 21	1 40	-20 53	-0 10	27 08	3 58	-19 51	-0 08	13 39	-0 27	-4 42	-1 3	-22 02	-0 54
	19	0	13	44	10	26	29	9	0	43	-11 58	-2 03	24 28	1 59	-20 53	-0 11	26 44	3 36	-19 52	-0 08	13 43	-0 27	-4 41	-1 3	-22 02	-0 54
	22	0	13	54	10	26	33	9	0	41	-11 17	-2 08	25 12	2 11	-20 54	-0 11	26 13	3 09	-19 53	-0 08	13 46	-0 27	-4 39	-1 3	-22 03	-0 54
	25	0	14	04	10	26	36	9	0	39	-10 36	-2 12	25 35	2 16	-20 56	-0 12	25 36	2 37	-19 54	-0 09	13 49	-0 27	-4 38	-1 3	-22 04	-0 55
	28	0	14	13	10	26	38	9	0	37	-9 55	-2 17	25 39	2 13	-20 58	-0 12	24 52	2 01	-19 55	-0 09	13 52	-0 27	-4 37	-1 3	-22 05	-0 55
	31	0	14	22	10	26	41	9	0	34	-9 13	-2 21	25 27	2 03	-21 00	-0 13	24 02	1 21	-19 56	-0 09	13 55	-0 27	-4 37	-1 3	-22 05	-0 55
जून	1	0	14	25	10	26	41	9	0	33	-8 59	-2 23	25 20	1 58	-21 01	-0 13	23 45	1 08	-19 57	-0 09	13 56	-0 27	-4 36	-1 3	-22 06	-0 55
	4	0	14	34	10	26	43	9	0	30	-8 18	-2 27	24 52	1 38	-21 03	-0 13	22 50	0 25	-19 59	-0 09	13 59	-0 27	-4 36	-1 4	-22 06	-0 56
	7	0	14	43	10	26	45	9	0	27	-7 36	-2 32	24 14	1 11	-21 06	-0 14	21 53	-0 17	-20 00	-0 10	14 02	-0 27	-4 35	-1 4	-22 07	-0 56
	10	0	14	52	10	26	47	9	0	23	-6 54	-2 36	23 29	0 37	-21 09	-0 14	20 57	-0 58	-20 02	-0 10	14 04	-0 27	-4 35	-1 4	-22 08	-0 56
	13	0	15	00	10	26	48	9	0	20	-6 12	-2 41	22 41	-0 03	-21 12	-0 15	20 05	-1 37	-20 05	-0 10	14 07	-0 27	-4 34	-1 4	-22 09	-0 57
	16	0	15	08	10	26	49	9	0	16	-5 31	-2 45	21 51	-0 48	-21 16	-0 15	19 18	-2 13	-20 07	-0 11	14 09	-0 27	-4 34	-1 4	-22 10	-0 57
	19	0	15	16	10	26	49	9	0	13	-4 50	-2 50	21 01	-1 37	-21 19	-0 16	18 38	-2 44	-20 09	-0 11	14 12	-0 27	-4 34	-1 4	-22 11	-0 57
	22	0	15	23	10	26	49	9	0	09	-4 09	-2 54	20 15	-2 26	-21 23	-0 16	18 06	-3 11	-20 12	-0 11	14 14	-0 27	-4 34	-1 4	-22 12	-0 58
	25	0	15	30	10	26	49	9	0	05	-3 29	-2 59	19 35	-3 14	-21 27	-0 17	17 41	-3 33	-20 14	-0 12	14 16	-0 27	-4 34	-1 4	-22 13	-0 58
	28	0	15	37	10	26	49	9	0	01	-2 49	-3 03	19 02	-3 55	-21 31	-0 17	17 25	-3 52	-20 17	-0 12	14 18	-0 27	-4 35	-1 5	-22 14	-0 58

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2020 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2020 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	0	15	43	10	26	48	8	29	57	-2 10	-3 8	18 39	-4 26	-21 36	-0 18	17 15	-4 06	-20 20	-0 12	14 20	-0 27	-4 35	-1 5	-22 15	-0 59
4	0	15	50	10	26	47	8	29	52	-1 32	-3 12	18 28	-4 44	-21 40	-0 18	17 13	-4 17	-20 23	-0 12	14 22	-0 27	-4 35	-1 5	-22 16	-0 59
7	0	15	55	10	26	46	8	29	48	-0 55	-3 17	18 28	-4 49	-21 44	-0 19	17 15	-4 24	-20 26	-0 13	14 24	-0 27	-4 36	-1 5	-22 17	-0 59
10	0	16	01	10	26	45	8	29	44	-0 18	-3 21	18 40	-4 39	-21 48	-0 19	17 23	-4 29	-20 29	-0 13	14 26	-0 27	-4 37	-1 5	-22 18	-1 0
13	0	16	06	10	26	43	8	29	39	0 18	-3 25	19 02	-4 18	-21 53	-0 19	17 34	-4 31	-20 32	-0 13	14 27	-0 27	-4 37	-1 5	-22 19	-1 0
16	0	16	10	10	26	41	8	29	35	0 52	-3 30	19 31	-3 47	-21 57	-0 20	17 48	-4 31	-20 35	-0 13	14 29	-0 27	-4 38	-1 5	-22 20	-1 0
19	0	16	15	10	26	39	8	29	31	1 26	-3 34	20 04	-3 10	-22 01	-0 20	18 03	-4 29	-20 38	-0 14	14 30	-0 27	-4 39	-1 6	-22 21	-1 0
22	0	16	18	10	26	36	8	29	26	1 58	-3 38	20 37	-2 28	-22 05	-0 21	18 20	-4 25	-20 41	-0 14	14 31	-0 27	-4 40	-1 6	-22 22	-1 1
25	0	16	22	10	26	33	8	29	22	2 29	-3 42	21 06	-1 45	-22 09	-0 21	18 38	-4 19	-20 43	-0 14	14 32	-0 27	-4 42	-1 6	-22 23	-1 1
28	0	16	25	10	26	30	8	29	18	2 58	-3 46	21 25	-1 01	-22 13	-0 21	18 55	-4 13	-20 46	-0 15	14 33	-0 27	-4 43	-1 6	-22 24	-1 1
31	0	16	27	10	26	27	8	29	13	3 26	-3 49	21 29	-0 19	-22 16	-0 22	19 12	-4 04	-20 49	-0 15	14 34	-0 28	-4 44	-1 6	-22 25	-1 1
अगस्त 1	0	16	28	10	26	26	8	29	12	3 35	-3 51	21 27	-0 06	-22 17	-0 22	19 17	-4 02	-20 50	-0 15	14 34	-0 28	-4 45	-1 6	-22 26	-1 2
4	0	16	30	10	26	23	8	29	08	4 01	-3 54	21 05	0 30	-22 21	-0 22	19 32	-3 52	-20 53	-0 15	14 35	-0 28	-4 46	-1 6	-22 27	-1 2
7	0	16	31	10	26	19	8	29	04	4 26	-3 58	20 19	1 00	-22 24	-0 23	19 44	-3 42	-20 56	-0 15	14 35	-0 28	-4 48	-1 6	-22 28	-1 2
10	0	16	32	10	26	15	8	29	00	4 48	-4 01	19 10	1 22	-22 27	-0 23	19 55	-3 31	-20 58	-0 16	14 35	-0 28	-4 49	-1 6	-22 29	-1 2
13	0	16	33	10	26	11	8	28	56	5 10	-4 04	17 40	1 37	-22 29	-0 23	20 02	-3 19	-21 01	-0 16	14 35	-0 28	-4 51	-1 6	-22 29	-1 2
16	0	16	33	10	26	07	8	28	52	5 29	-4 06	15 52	1 44	-22 32	-0 23	20 06	-3 06	-21 03	-0 16	14 35	-0 28	-4 53	-1 6	-22 30	-1 3
19	0	16	33	10	26	02	8	28	49	5 46	-4 09	13 51	1 45	-22 34	-0 24	20 06	-2 54	-21 05	-0 16	14 35	-0 28	-4 55	-1 7	-22 31	-1 3
22	0	16	32	10	25	58	8	28	46	6 01	-4 11	11 41	1 40	-22 36	-0 24	20 03	-2 40	-21 08	-0 16	14 35	-0 28	-4 56	-1 7	-22 32	-1 3
25	0	16	31	10	25	53	8	28	42	6 15	-4 13	09 25	1 31	-22 38	-0 24	19 56	-2 27	-21 10	-0 17	14 35	-0 28	-4 58	-1 7	-22 33	-1 3
28	0	16	29	10	25	49	8	28	39	6 26	-4 14	07 07	1 17	-22 39	-0 24	19 44	-2 13	-21 12	-0 17	14 34	-0 28	-5 00	-1 7	-22 33	-1 4
31	0	16	27	10	25	44	8	28	37	6 35	-4 15	04 47	1 01	-22 40	-0 24	19 29	-1 59	-21 13	-0 17	14 33	-0 28	-5 02	-1 7	-22 34	-1 4
सितम्बर 1	0	16	26	10	25	42	8	28	36	6 38	-4 15	04 01	0 54	-22 41	-0 25	19 22	-1 55	-21 14	-0 17	14 33	-0 28	-5 03	-1 7	-22 34	-1 4
4	0	16	24	10	25	37	8	28	33	6 44	-4 16	01 43	0 35	-22 42	-0 25	19 01	-1 41	-21 15	-0 17	14 32	-0 28	-5 05	-1 7	-22 35	-1 4
7	0	16	21	10	25	32	8	28	31	6 49	-4 15	-0 33	0 13	-22 42	-0 25	18 34	-1 27	-21 17	-0 18	14 31	-0 28	-5 07	-1 7	-22 35	-1 4
10	0	16	17	10	25	27	8	28	29	6 51	-4 14	-2 45	-0 09	-22 43	-0 25	18 04	-1 13	-21 18	-0 18	14 30	-0 28	-5 09	-1 7	-22 36	-1 5
13	0	16	14	10	25	22	8	28	27	6 51	-4 12	-4 53	-0 33	-22 43	-0 25	17 28	-0 59	-21 19	-0 18	14 29	-0 28	-5 11	-1 7	-22 37	-1 5
16	0	16	09	10	25	17	8	28	25	6 49	-4 10	-06 56	-0 57	-22 43	-0 25	16 49	-0 46	-21 20	-0 18	14 28	-0 28	-5 13	-1 7	-22 37	-1 5
19	0	16	05	10	25	12	8	28	23	6 46	-4 06	-08 54	-1 20	-22 43	-0 25	16 05	-0 33	-21 21	-0 18	14 26	-0 28	-5 15	-1 7	-22 37	-1 5
22	0	16	00	10	25	08	8	28	22	6 40	-4 02	-10 45	-1 44	-22 43	-0 26	15 16	-0 20	-21 22	-0 18	14 25	-0 28	-5 16	-1 7	-22 38	-1 5
25	0	15	55	10	25	03	8	28	21	6 33	-3 57	-12 28	-2 06	-22 42	-0 26	14 24	-0 08	-21 22	-0 19	14 23	-0 28	-5 18	-1 7	-22 38	-1 5
28	0	15	49	10	24	58	8	28	21	6 24	-3 50	-14 02	-2 27	-22 41	-0 26	13 28	-0 04	-21 22	-0 19	14 21	-0 28	-5 20	-1 7	-22 38	-1 6

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2020 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2020 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्टूबर 1	0	15	43	10	24	53	8	28	20	6 14	-3 43	-15 27	-2 47	-22 40	-0 26	12 28	0 16	-21 23	-0 19	14 19	-0 28	-5 22	-1 7	-22 39	-1 6
4	0	15	37	10	24	49	8	28	20	6 04	-3 34	-16 39	-3 03	-22 39	-0 26	11 25	0 27	-21 23	-0 19	14 17	-0 28	-5 24	-1 7	-22 39	-1 6
7	0	15	31	10	24	44	8	28	20	5 53	-3 25	-17 36	-3 16	-22 37	-0 26	10 19	0 37	-21 22	-0 19	14 15	-0 28	-5 26	-1 7	-22 39	-1 6
10	0	15	24	10	24	40	8	28	20	5 41	-3 15	-18 15	-3 23	-22 35	-0 26	9 09	0 47	-21 22	-0 19	14 13	-0 28	-5 27	-1 7	-22 39	-1 6
13	0	15	17	10	24	36	8	28	21	5 30	-3 04	-18 31	-3 22	-22 33	-0 26	7 57	0 56	-21 21	-0 19	14 11	-0 28	-5 29	-1 7	-22 39	-1 7
16	0	15	10	10	24	32	8	28	22	5 20	-2 52	-18 17	-3 11	-22 31	-0 26	6 42	1 04	-21 21	-0 20	14 09	-0 28	-5 30	-1 7	-22 39	-1 7
19	0	15	03	10	24	28	8	28	23	5 10	-2 40	-17 21	-2 46	-22 28	-0 26	5 25	1 12	-21 20	-0 20	14 07	-0 28	-5 32	-1 7	-22 39	-1 7
22	0	14	56	10	24	25	8	28	25	5 02	-2 27	-15 56	-2 06	-22 25	-0 27	4 07	1 19	-21 19	-0 20	14 04	-0 28	-5 33	-1 7	-22 39	-1 7
25	0	14	49	10	24	21	8	28	26	4 56	-2 14	-13 53	-1 11	-22 22	-0 27	2 46	1 25	-21 18	-0 20	14 02	-0 28	-5 34	-1 7	-22 39	-1 7
28	0	14	41	10	24	18	8	28	28	4 52	-2 02	-11 38	-0 09	-22 19	-0 27	1 25	1 30	-21 16	-0 20	14 00	-0 28	-5 36	-1 7	-22 39	-1 7
31	0	14	34	10	24	15	8	28	30	4 50	-1 49	-9 44	0 48	-22 15	-0 27	0 02	1 35	-21 15	-0 20	13 57	-0 28	-5 37	-1 7	-22 39	-1 8
नवम्बर 1	0	14	32	10	24	14	8	28	31	4 49	-1 45	-9 15	1 05	-22 14	-0 27	-0 25	1 36	-21 14	-0 20	13 57	-0 28	-5 37	-1 7	-22 39	-1 8
4	0	14	24	10	24	12	8	28	34	4 50	-1 32	-8 23	1 44	-22 10	-0 27	-1 49	1 40	-21 12	-0 20	13 54	-0 28	-5 38	-1 6	-22 38	-1 8
7	0	14	17	10	24	09	8	28	37	4 53	-1 20	-8 22	2 07	-22 06	-0 27	-3 12	1 43	-21 11	-0 21	13 52	-0 28	-5 39	-1 6	-22 38	-1 8
10	0	14	09	10	24	07	8	28	40	4 59	-1 09	-9 01	2 17	-22 01	-0 27	-4 35	1 45	-21 09	-0 21	13 50	-0 28	-5 39	-1 6	-22 38	-1 8
13	0	14	02	10	24	06	8	28	43	5 07	-0 58	-10 10	2 15	-21 57	-0 27	-5 38	1 46	-21 06	-0 21	13 47	-0 28	-5 40	-1 6	-22 37	-1 8
16	0	13	55	10	24	04	8	28	46	5 17	-0 47	-11 35	2 06	-21 52	-0 27	-7 20	1 47	-21 04	-0 21	13 45	-0 28	-5 41	-1 6	-22 37	-1 8
19	0	13	48	10	24	03	8	28	50	5 29	-0 37	-13 09	1 52	-21 46	-0 27	-8 41	1 47	-21 01	-0 21	13 43	-0 28	-5 41	-1 6	-22 36	-1 9
22	0	13	41	10	24	02	8	28	54	5 44	-0 28	-14 46	1 35	-21 41	-0 28	-10 01	1 46	-20 59	-0 21	13 41	-0 28	-5 41	-1 6	-22 36	-1 9
25	0	13	35	10	24	01	8	28	58	6 01	-0 19	-16 22	1 15	-21 35	-0 28	-11 18	1 44	-20 56	-0 21	13 39	-0 28	-5 41	-1 6	-22 35	-1 9
28	0	13	28	10	24	01	8	29	03	6 19	-0 11	-17 54	0 55	-21 29	-0 28	-12 34	1 42	-20 53	-0 22	13 37	-0 28	-5 41	-1 6	-22 35	-1 9
दिसम्बर 1	0	13	22	10	24	01	8	29	07	6 39	-0 03	-19 20	0 33	-21 22	-0 28	-13 47	1 39	-20 50	-0 22	13 35	-0 28	-5 41	-1 6	-22 34	-1 9
4	0	13	16	10	24	02	8	29	12	7 01	0 04	-20 38	0 12	-21 16	-0 28	-14 57	1 35	-20 47	-0 22	13 33	-0 28	-5 41	-1 6	-22 34	-1 10
7	0	13	11	10	24	02	8	29	17	7 24	0 11	-21 48	-0 09	-21 09	-0 28	-16 03	1 31	-20 43	-0 22	13 31	-0 28	-5 41	-1 6	-22 33	-1 10
10	0	13	06	10	24	03	8	29	22	7 49	0 18	-22 48	-0 29	-21 02	-0 28	-17 06	1 26	-20 40	-0 22	13 30	-0 28	-5 40	-1 5	-22 32	-1 10
13	0	13	01	10	24	04	8	29	27	8 15	0 24	-23 38	-0 48	-20 54	-0 28	-18 05	1 21	-20 36	-0 22	13 28	-0 28	-5 40	-1 5	-22 32	-1 10
16	0	12	56	10	24	06	8	29	32	8 42	0 29	-24 17	-1 05	-20 46	-0 29	-19 00	1 16	-20 32	-0 22	13 27	-0 27	-5 39	-1 5	-22 31	-1 10
19	0	12	52	10	24	08	8	29	38	9 10	0 34	-24 45	-1 21	-20 38	-0 29	-19 50	1 09	-20 29	-0 23	13 25	-0 27	-5 38	-1 5	-22 30	-1 11
22	0	12	49	10	24	10	8	29	43	9 39	0 39	-25 01	-1 36	-20 30	-0 29	-20 35	1 03	-20 25	-0 23	13 24	-0 27	-5 37	-1 5	-22 30	-1 11
25	0	12	45	10	24	13	8	29	49	10 09	0 43	-25 05	-1 48	-20 22	-0 29	-21 15	0 56	-20 20	-0 23	13 23	-0 27	-5 36	-1 5	-22 29	-1 11
28	0	12	42	10	24	16	8	29	55	10 39	0 47	-24 55	-1 58	-20 13	-0 29	-21 49	0 49	-20 16	-0 23	13 22	-0 27	-5 35	-1 5	-22 28	-1 11
31	0	12	40	10	24	19	9	0	00	11 10	0 51	-24 32	-2 05	-20 04	-0 29	-22 18	0 42	-20 12	-0 23	13 22	-0 27	-5 34	-1 5	-22 27	-1 12

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2021 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टें.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2021 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जनवरी 1	0	12	39	10	24	20	9	0	02	11 21	0 52	-24 21	-2 06	-20 01	-0 29	-22 26	0 39	-20 10	-0 23	13 21	-0 27	-5 33	-1 5	-22 27	-1 12
4	0	12	37	10	24	23	9	0	08	11 52	0 56	-23 39	-2 09	-19 51	-0 30	-22 47	0 32	-20 06	-0 23	13 21	-0 27	-5 32	-1 5	-22 26	-1 12
7	0	12	36	10	24	27	9	0	14	12 24	0 59	-22 44	-2 07	-19 42	-0 30	-23 01	0 24	-20 02	-0 24	13 21	-0 27	-5 30	-1 5	-22 25	-1 12
10	0	12	35	10	24	31	9	0	20	12 56	1 02	-21 34	-2 01	-19 32	-0 30	-23 09	0 17	-19 57	-0 24	13 20	-0 27	-5 29	-1 5	-22 25	-1 12
13	0	12	35	10	24	35	9	0	26	13 28	1 04	-20 12	-1 49	-19 22	-0 30	-23 11	0 09	-19 52	-0 24	13 20	-0 27	-5 27	-1 5	-22 24	-1 13
16	0	12	35	10	24	40	9	0	32	14 00	1 07	-18 38	-1 31	-19 12	-0 30	-23 06	0 01	-19 48	-0 24	13 20	-0 27	-5 25	-1 5	-22 23	-1 13
19	0	12	35	10	24	44	9	0	38	14 33	1 09	-16 56	-1 06	-19 01	-0 31	-22 55	-0 06	-19 43	-0 24	13 21	-0 26	-5 23	-1 4	-22 22	-1 13
22	0	12	36	10	24	49	9	0	44	15 05	1 11	-15 10	-0 33	-18 51	-0 31	-22 37	-0 14	-19 38	-0 25	13 21	-0 26	-5 21	-1 4	-22 21	-1 13
25	0	12	37	10	24	54	9	0	56	15 37	1 13	-13 28	0 09	-18 40	-0 31	-22 13	-0 21	-19 33	-0 25	13 22	-0 26	-5 19	-1 4	-22 20	-1 14
28	0	12	39	10	25	00	9	0	56	16 08	1 15	-12 01	0 57	-18 29	-0 31	-21 44	-0 28	-19 28	-0 25	13 22	-0 26	-5 17	-1 4	-22 20	-1 14
31	0	12	42	10	25	05	9	1	02	16 39	1 17	-10 59	1 49	-18 18	-0 32	-21 08	-0 35	-19 23	-0 25	13 23	-0 26	-5 15	-1 4	-22 19	-1 14
फरवरी 1	0	12	43	10	25	07	9	1	04	16 50	1 17	-10 46	2 06	-18 14	-0 32	-20 55	-0 37	-19 21	-0 25	13 23	-0 26	-5 14	-1 4	-22 19	-1 14
4	0	12	46	10	25	13	9	1	09	17 20	1 19	-10 32	2 54	-18 03	-0 32	-20 11	-0 44	-19 17	-0 26	13 25	-0 26	-5 12	-1 4	-22 18	-1 15
7	0	12	49	10	25	19	9	1	15	17 50	1 20	-10 57	3 28	-17 51	-0 32	-19 23	-0 50	-19 12	-0 26	13 26	-0 26	-5 09	-1 4	-22 17	-1 15
10	0	12	53	10	25	25	9	1	21	18 20	1 21	-11 49	3 41	-17 40	-0 33	-18 29	-0 56	-19 07	-0 26	13 27	-0 26	-5 07	-1 4	-22 16	-1 15
13	0	12	57	10	25	31	9	1	26	18 49	1 22	-12 55	3 34	-17 28	-0 33	-17 31	-1 01	-19 02	-0 26	13 29	-0 26	-5 04	-1 4	-22 16	-1 16
16	0	13	02	10	25	38	9	1	31	19 17	1 23	-13 59	3 11	-17 16	-0 33	-16 28	-1 06	-18 57	-0 27	13 30	-0 26	-5 02	-1 4	-22 15	-1 16
19	0	13	07	10	25	44	9	1	37	19 44	1 24	-14 53	2 37	-17 04	-0 33	-15 21	-1 10	-18 52	-0 27	13 32	-0 26	-4 59	-1 4	-22 14	-1 16
22	0	13	13	10	25	51	9	1	42	20 11	1 25	-15 33	1 59	-16 52	-0 34	-14 10	-1 14	-18 47	-0 27	13 34	-0 25	-4 57	-1 4	-22 14	-1 17
25	0	13	19	10	25	57	9	1	47	20 37	1 26	-15 57	1 20	-16 40	-0 34	-12 55	-1 17	-18 42	-0 27	13 36	-0 25	-4 54	-1 4	-22 13	-1 17
28	0	13	25	10	26	04	9	1	51	21 01	1 26	-16 07	0 42	-16 28	-0 35	-11 38	-1 20	-18 37	-0 28	13 38	-0 25	-4 51	-1 4	-22 13	-1 17
मार्च 1	0	13	27	10	26	06	9	1	53	21 09	1 26	-16 06	0 31	-16 24	-0 35	-11 11	-1 21	-18 35	-0 28	13 39	-0 25	-4 51	-1 4	-22 13	-1 17
4	0	13	34	10	26	13	9	1	57	21 33	1 27	-15 56	-0 03	-16 12	-0 35	-09 50	-1 23	-18 31	-0 28	13 41	-0 25	-4 48	-1 4	-22 12	-1 18
7	0	13	41	10	26	20	9	2	02	21 55	1 27	-15 32	-0 33	-16 00	-0 35	-08 26	-1 25	-18 26	-0 28	13 43	-0 25	-4 45	-1 4	-22 12	-1 18
10	0	13	49	10	26	27	9	2	06	22 16	1 28	-14 55	-1 00	-15 49	-0 36	-07 01	-1 26	-18 22	-0 29	13 46	-0 25	-4 43	-1 4	-22 11	-1 18
13	0	13	56	10	26	34	9	2	10	22 36	1 28	-14 05	-1 23	-15 37	-0 36	-05 34	-1 26	-18 17	-0 29	13 48	-0 25	-4 40	-1 4	-22 11	-1 19
16	0	14	04	10	26	40	9	2	13	22 55	1 28	-13 02	-1 43	-15 25	-0 37	-04 05	-1 26	-18 13	-0 29	13 51	-0 25	-4 37	-1 4	-22 10	-1 19
19	0	14	13	10	26	47	9	2	17	23 13	1 29	-11 48	-1 58	-15 13	-0 37	-02 35	-1 25	-18 09	-0 30	13 54	-0 25	-4 35	-1 4	-22 10	-1 20
22	0	14	21	10	26	54	9	2	20	23 29	1 29	-10 23	-2 10	-15 01	-0 38	-01 05	-1 24	-18 04	-0 30	13 57	-0 25	-4 32	-1 4	-22 10	-1 20
25	0	14	30	10	27	01	9	2	23	23 44	1 29	-08 46	-2 18	-14 50	-0 38	0 26	-1 22	-18 00	-0 30	14 00	-0 25	-4 29	-1 4	-22 10	-1 20
28	0	14	39	10	27	07	9	2	26	23 51	1 29	-06 59	-2 21	-14 38	-0 38	1 56	-1 20	-17 57	-0 31	14 03	-0 25	-4 27	-1 4	-22 09	-1 21
31	0	14	49	10	27	14	9	2	28	24 10	1 29	-05 01	-2 21	-14 27	-0 39	3 27	-1 17	-17 53	-0 31	14 06	-0 25	-4 24	-1 4	-22 09	-1 21

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रान्ति-शर (सन् 2021 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि.) (भा.स्टैं.टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेप्च्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
										क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर
2021 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	0	14	52	10	27	16	9	2	29	24 13	1 29	-4 20	-2 20	-14 23	-0 39	3 57	-1 16	-17 52	-0 31	14 07	-0 25	-4 23	-1 4	-22 9	-1 21
4	0	15	01	10	27	23	9	2	31	24 24	1 29	-2 09	-2 13	-14 12	-0 40	5 26	-1 12	-17 48	-0 31	14 10	-0 25	-4 21	-1 4	-22 9	-1 22
7	0	15	11	10	27	29	9	2	33	24 32	1 29	0 11	-2 03	-14 02	-0 40	6 55	-1 08	-17 45	-0 32	14 13	-0 25	-4 18	-1 5	-22 9	-1 22
10	0	15	21	10	27	35	9	2	35	24 40	1 29	2 39	-1 47	-13 51	-0 41	8 22	-1 03	-17 42	-0 32	14 16	-0 25	-4 16	-1 5	-22 9	-1 22
13	0	15	31	10	27	41	9	2	36	24 46	1 28	5 14	-1 27	-13 41	-0 41	9 47	-0 58	-17 39	-0 32	14 19	-0 24	-4 14	-1 5	-22 9	-1 23
16	0	15	41	10	27	47	9	2	37	24 50	1 28	7 54	-1 03	-13 31	-0 42	11 11	-0 53	-17 36	-0 33	14 22	-0 24	-4 11	-1 5	-22 10	-1 23
19	0	15	51	10	27	53	9	2	38	24 53	1 28	10 36	-0 35	-13 21	-0 42	12 32	-0 47	-17 34	-0 33	14 26	-0 24	-4 9	-1 5	-22 10	-1 24
22	0	16	01	10	27	59	9	2	39	24 54	1 28	13 16	-0 04	-13 11	-0 43	13 50	-0 41	-17 32	-0 34	14 29	-0 24	-4 7	-1 5	-22 10	-1 24
25	0	16	12	10	28	04	9	2	39	24 54	1 27	15 50	0 28	-13 02	-0 44	15 05	-0 34	-17 30	-0 34	14 32	-0 24	-4 5	-1 5	-22 10	-1 24
28	0	16	22	10	28	09	9	2	39	24 52	1 27	18 11	1 00	-12 53	-0 44	16 17	-0 28	-17 28	-0 34	14 35	-0 24	-4 3	-1 5	-22 11	-1 25

(पृष्ठ 17 3 का शेष)

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2021 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4		चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4		चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	अप्रैल 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	अप्रैल 2021 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	विशा.	9	45	15	7	20	31	1	55	10/11	उ.भा.	6	46	13	16	19	49	2	22	21/22	आश्ले.	7	58	14	07	20	13	2	15
1	अनु.	7	21	12	48	18	17	23	47	11/12	रेव.	8	57	15	33	22	10	4	49	22/23	मघा	8	14	14	11	20	04	1	54
2	ज्येष्ठा	5	19	10	52	16	27	22	04	12/13	अश्वि.	11	29	18	10	00	52	7	35	23/24	पू.फा.	7	41	13	25	19	07	00	45
3	मूल	3	43	9	24	15	07	20	51	13/14	भर.	14	19	21	03	3	49	10	35	24	उ.फा.	6	22	11	55	17	27	22	56
4	पू.षा.	2	38	8	27	14	17	20	11	14/15	कृत्ति.	14	22	00	09	6	57	13	44	25	हस्त	4	23	3	48	15	12	20	33
5	उ.षा.	2	05	8	2	14	01	20	02	15/16	रोहि.	20	32	3	19	10	07	16	53	26	चित्रा	1	54	7	13	12	31	17	43
6	श्रव.	2	04	8	9	14	15	20	24	16/17	मृग.	23	39	6	25	13	09	19	52	26/27	स्वाती	23	05	4	21	3	37	14	52
7	धनि.	2	34	8	46	15	00	21	15	18	आर्द्रा	2	33	9	13	15	51	22	27	27/28	विशा.	20	08	1	23	6	33	11	55
8	शत.	3	32	9	51	16	11	22	33	19/20	पुन.	5	01	11	33	18	02	00	28	28/29	अनु.	17	12	22	30	3	48	3	08
9/10	पू.भा.	4	57	11	22	17	48	00	16	20/21	पुष्य	6	52	13	13	19	31	1	46	29/30	ज्येष्ठ	14	23	13	51	1	15	6	40
																				30/1	मूल	12	07	17	36	23	07	4	40

सूर्य-चार (सन् 2020-2021 ई.)

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 2		पू.षा.	2	0	04
5		पू.षा.	3	6	33
8		पू.षा.	4	13	03
11		उ.षा.	1	19	35
15	मकर	उ.षा.	2	2	07
18		उ.षा.	3	8	41
21		उ.षा.	4	15	15
24		श्रवण	1	21	51
28		श्रवण	2	4	30
31		श्रवण	3	11	14
फरवरी 3		श्रवण	4	18	02
7		धनिष्ठा	1	0	57
10		धनिष्ठा	2	7	57
13	कुम्भ	धनिष्ठा	3	15	03
16		धनिष्ठा	4	22	14
20		शत.	1	5	29
23		शत.	2	12	51
26		शत.	3	20	20
मार्च 1		शत.	4	3	56
4		पू.भा.	1	11	42
7		पू.भा.	2	19	37
11		पू.भा.	3	3	41
14	मीन	पू.भा.	4	11	53
18		उ.भा.	1	20	13
21		उ.भा.	2	4	41
24		उ.भा.	3	13	17
27		उ.भा.	4	22	02
31		रेवती	1	6	57
अप्रैल 3		रेवती	2	16	04
7		रेवती	3	1	20
10		रेवती	4	10	47
13	मेष	अश्वि.	1	20	23

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अप्रैल 17		अश्वि.	2	6	06
21		अश्वि.	3	15	58
24		अश्वि.	4	1	58
27		भरणी	1	12	08
30		भरणी	2	22	27
मई 4		भरणी	3	8	57
7		भरणी	4	19	36
11		कृत्तिका	1	6	22
14	वृष	कृत्तिका	2	17	16
18		कृत्तिका	3	4	15
21		कृत्तिका	4	15	21
25		रोहिणी	1	2	33
28		रोहिणी	2	13	52
जून 1		रोहिणी	3	1	17
4		रोहिणी	4	12	50
8		मृग.	1	0	28
11		मृग.	2	12	09
14	मिथुन	मृग.	3	23	53
18		मृग.	4	11	39
21		आर्द्रा	1	23	27
25		आर्द्रा	2	11	18
28		आर्द्रा	3	23	11
जुलाई 2		आर्द्रा	4	11	06
5		पुन.	1	23	03
9		पुन.	2	11	00
12		पुन.	3	22	55
16	कर्क	पुन.	4	10	47
19		पुष्य	1	22	36
23		पुष्य	2	10	23
26		पुष्य	3	22	07
30		पुष्य	4	9	49

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अगस्त 2		आश्ले.	1	21	28
6		आश्ले.	2	9	04
9		आश्ले.	3	20	33
13		आश्ले.	4	7	56
16	सिंह	मघा	1	19	11
20		मघा	2	6	19
23		मघा	3	17	21
27		मघा	4	4	17
30		पू.फा.	1	15	06
सितम्बर 3		पू.फा.	2	1	49
6		पू.फा.	3	12	23
9		पू.फा.	4	22	48
13		उ.फा.	1	9	03
16	कन्या	उ.फा.	2	19	07
20		उ.फा.	3	5	03
23		उ.फा.	4	14	50
27		हस्त	1	0	29
30		हस्त	2	9	59
अक्तूबर 3		हस्त	3	19	21
7		हस्त	4	4	33
10		चित्रा	1	13	34
13		चित्रा	2	22	25
17	तुला	चित्रा	3	7	05
20		चित्रा	4	15	36
23		स्वाती	1	24	00
27		स्वाती	2	8	15
30		स्वाती	3	16	23
नवम्बर 3		स्वाती	4	0	23
6		विशा.	1	8	14
9		विशा.	2	15	55
12		विशा.	3	23	29

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
नवम्बर 16	वृश्चिक	विशा.	4	6	52
19		अनु.	1	14	12
22		अनु.	2	21	25
26		अनु.	3	4	32
29		अनु.	4	11	35
दिसम्बर 2		ज्येष्ठा	1	18	33
6		ज्येष्ठा	2	1	26
9		ज्येष्ठा	3	8	13
12		ज्येष्ठा	4	14	54
15	धनु	मूल	1	21	32
19		मूल	2	4	07
22		मूल	3	10	40
25		मूल	4	17	13
28		पू.षा.	1	23	45
(सन् 2021 ई.)					
जनवरी 1		पू.षा.	2	6	16
4		पू.षा.	3	12	47
7		पू.षा.	4	19	16
11		उ.षा.	1	1	45
14	मकर	उ.षा.	2	8	15
17		उ.षा.	3	14	46
20		उ.षा.	4	21	20
24		श्रवण	1	3	59
27		श्रवण	2	10	41
30		श्रवण	3	17	28
फरवरी 3		श्रवण	4	0	18
6		धनिष्ठा	1	7	12
9		धनिष्ठा	2	14	09
12	कुम्भ	धनिष्ठा	3	21	12
16		धनिष्ठा	4	4	21
19		शत.	1	11	37

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2020 से 13 अप्रैल, 2021 ई. तक)

सूर्य-चार (सन् 2021 ई.)

तारीख 2021 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी	22		शत.	2	19	00
	26		शत.	3	2	32
मार्च	1		शत.	4	10	12
	4		पू.भा.	1	17	59
	8		पू.भा.	2	1	53
	11		पू.भा.	3	9	54
	14	मीन	पू.भा.	4	18	03
	18		उ.भा.	1	2	21
	21		उ.भा.	2	10	49
	24		उ.भा.	3	19	27
	28		उ.भा.	4	4	16
	31		रेव.	1	13	14
अप्रैल	3		रेव.	2	22	21
	7		रेव.	3	7	36
	10		रेव.	4	16	59
	14	मेष	अश्वि.	1	2	31

मंगल-चार (सन् 2020 ई.)

जनवरी	4		अनु.	2	19	35
	9		अनु.	3	18	13
	14		अनु.	4	16	32
	19		ज्ये.	1	14	32
	24		ज्ये.	2	12	15
	29		ज्ये.	3	9	41
फरवरी	3		ज्ये.	4	6	54
	8	धनु	मूल	1	3	52
	13		मूल	2	0	34
	17		मूल	3	20	59
	22		मूल	4	17	11
	27		पू.षा.	1	13	11
मार्च	3		पू.षा.	2	9	01
	8		पू.षा.	3	4	41

मंगल-चार (सन् 2020-2021 ई.)

तारीख 2020 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च	13		पू.षा.	4	0	10
	17		उ.षा.	1	19	29
	22	मकर	उ.षा.	2	14	40
	27		उ.षा.	3	9	48
अप्रैल	1		उ.षा.	4	4	54
	6		श्रवण	1	0	01
	10		श्रवण	2	19	06
	15		श्रवण	3	14	13
	20		श्रवण	4	9	27
	25		धनि.	1	4	53
	30		धनि.	2	0	36
मई	4	कुम्भ	धनि.	3	20	40
	9		धनि.	4	17	06
	14		शत.	1	14	00
	19		शत.	2	11	31
	24		शत.	3	9	51
	29		शत.	4	9	10
जून	3		पू.भा.	1	9	39
	8		पू.भा.	2	11	27
	13		पू.भा.	3	14	50
	18	मीन	पू.भा.	4	20	13
	24		उ.भा.	1	4	09
	29		उ.भा.	2	15	12
जुलाई	5		उ.भा.	3	6	02
	11		उ.भा.	4	1	37
	17		रेव.	1	3	31
	23		रेव.	2	14	18
	30		रेव.	3	13	51
अगस्त	7		रेव.	4	9	13
	16	मेष	अश्वि.	1	18	25
	31		अश्वि.	2	12	05

तारीख 2020 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
सितम्बर	10	वक्री			3	53
	19		अश्वि.	1	16	12
अक्तूबर	5	मीन	रेव.	4	5	31
	15		रेव.	3	1	13
	26		रेव.	2	18	55
नवम्बर	14	मार्गी			6	07
दिसम्बर	3		रेव.	3	4	59
	15		रेव.	4	4	26
	24	मेष	अश्वि.	1	10	21
(सन् 2021 ई.)						
जनवरी	1		अश्वि.	2	12	16
	8		अश्वि.	3	22	14
	15		अश्वि.	4	21	28
	22		भरणी	1	13	02
	28		भरणी	2	23	03
फरवरी	4		भरणी	3	4	54
	10		भरणी	4	7	24
	16		कृत्तिका	1	7	07
	22	वृष	कृत्तिका	2	4	36
	28		कृत्तिका	3	0	22
मार्च	5		कृत्तिका	4	18	22
	11		रोहिणी	1	11	48
	17		रोहिणी	2	3	48
	22		रोहिणी	3	18	54
	28		रोहिणी	4	9	19
अप्रैल	2		मृग.	1	23	09
	8		मृग.	2	12	27
	14	मिथुन	मृग.	3	1	14

बुध-चार (सन् 2020 ई.)

तारीख 2020 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी	1		मूल	4	1	39

बुध-चार (सन् 2020 ई.)

तारीख 2020 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी	3		पू.षा.	1	4	18
	5		पू.षा.	2	6	35
	7		पू.षा.	3	8	28
	9		पू.षा.	4	9	57
	11		उ.षा.	1	10	59
	13	मकर	उ.षा.	2	11	34
	15		उ.षा.	3	11	42
	17		उ.षा.	4	11	24
	19		श्रवण	1	10	41
	21		श्रवण	2	9	36
	23		श्रवण	3	8	13
	25		श्रवण	4	6	39
	27		धनि.	1	5	04
	29		धनि.	2	3	41
	31	कुम्भ	धनि.	3	2	53
फरवरी	2		धनि.	4	3	10
	4		शत.	1	5	25
	6		शत.	2	11	21
	9		शत.	3	0	11
	12		शत.	4	6	46
	17	वक्री			6	23
	22		शत.	3	6	50
	25		शत.	2	18	52
	28		शत.	1	21	39
मार्च	3		धनि.	4	13	21
	10	मार्गी			9	19
	17		शत.	1	21	10
	22		शत.	2	4	42
	25		शत.	3	14	26
	28		शत.	4	14	15
	31		पू.भा.	1	7	55

बुध-चार (सन् 2020–21 ई.)

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अप्रैल 2		पू.भा.	2	21	09
5		पू.भा.	3	7	08
7	मीन	पू.भा.	4	14	20
9		उ.भा.	1	19	19
11		उ.भा.	2	22	22
13		उ.भा.	3	23	40
15		उ.भा.	4	23	23
17		रेव.	1	21	40
19		रेव.	2	18	38
21		रेव.	3	14	23
23		रेव.	4	9	00
25	मेष	अश्वि.	1	2	33
26		अश्वि.	2	19	07
28		अश्वि.	3	10	50
30		अश्वि.	4	1	46
मई 1		भरणी	1	16	00
3		भरणी	2	5	44
4		भरणी	3	18	59
6		भरणी	4	7	59
7		कृत्तिका	1	20	51
9	वृष	कृत्तिका	2	9	47
10		कृत्तिका	3	22	58
12		कृत्तिका	4	12	36
14		रोहिणी	1	2	55
15		रोहिणी	2	18	13
17		रोहिणी	3	10	42
19		रोहिणी	4	4	40
21		मृग.	1	0	37
22		मृग.	2	22	52
24	मिथुन	मृग.	3	23	58
27		मृग.	4	4	37
29		आर्द्रा	1	14	06

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जून 1		आर्द्रा	2	5	51
4		आर्द्रा	3	7	34
8		आर्द्रा	4	3	08
14		पुन.	1	9	19
18	वक्री			10	28
22		आर्द्रा	4	13	09
29		आर्द्रा	3	13	53
जुलाई 5		आर्द्रा	2	9	06
12	मार्गी			13	57
19		आर्द्रा	3	5	25
23		आर्द्रा	4	10	22
26		पुन.	1	10	35
28		पुन.	2	22	29
31		पुन.	3	3	21
अगस्त 2	कर्क	पुन.	4	3	30
4		पुष्य	1	0	26
5		पुष्य	2	19	08
7		पुष्य	3	12	18
9		पुष्य	4	4	25
10		आश्ले.	1	19	49
12		आश्ले.	2	10	54
14		आश्ले.	3	1	54
15		आश्ले.	4	17	03
17	सिंह	मघा	1	8	29
19		मघा	2	0	23
20		मघा	3	16	53
22		मघा	4	10	04
24		पू.फा.	1	4	01
25		पू.फा.	2	22	52
27		पू.फा.	3	18	38
29		पू.फा.	4	15	23
31		उ.फा.	1	13	10

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
सितम्बर 2	कन्या	उ.फा.	2	12	03
4		उ.फा.	3	12	06
6		उ.फा.	4	13	21
8		हस्त	1	15	52
10		हस्त	2	19	45
13		हस्त	3	1	04
15		हस्त	4	8	00
17		चित्रा	1	16	46
20		चित्रा	2	3	34
22	तुला	चित्रा	3	16	57
25		चित्रा	4	9	29
28		स्वाती	1	6	26
अक्टूबर 1		स्वाती	2	10	13
5		स्वाती	3	2	25
10		स्वाती	4	9	28
14	वक्री			6	34
17		स्वाती	3	20	11
22		स्वाती	2	2	26
24		स्वाती	1	22	20
27		चित्रा	4	14	33
30		चित्रा	3	22	20
नवम्बर 3	मार्गी			23	19
8		चित्रा	4	5	53
11		स्वाती	1	21	23
14		स्वाती	2	16	38
17		स्वाती	3	4	26
19		स्वाती	4	12	27
21		विशा.	1	18	28
23		विशा.	2	23	18
26		विशा.	3	3	24
28	वृश्चिक	विशा.	4	7	05
30		अनु.	1	10	31

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
दिसम्बर 2		अनु.	2	13	50
4		अनु.	3	17	05
6		अनु.	4	20	18
8		ज्येष्ठा	1	23	30
11		ज्येष्ठा	2	2	38
13		ज्येष्ठा	3	5	44
15		ज्येष्ठा	4	8	44
17	धनु	मूल	1	11	37
19		मूल	2	14	21
21		मूल	3	16	54
23		मूल	4	19	14
25		पू.षा.	1	21	20
27		पू.षा.	2	23	10
30		पू.षा.	3	0	44
(सन् 2021 ई.)					
जनवरी 1		पू.षा.	4	2	02
3		उ.षा.	1	3	05
5	मकर	उ.षा.	2	3	56
7		उ.षा.	3	4	40
9		उ.षा.	4	5	24
11		श्रवण	1	6	21
13		श्रवण	2	7	48
15		श्रवण	3	10	15
17		श्रवण	4	14	28
19		धनि.	1	21	52
22		धनि.	2	11	30
25	कुम्भ	धनि.	3	16	55
30	वक्री			21	22
फरवरी 4	मकर	धनि.	2	22	40
8		धनि.	1	3	03
10		श्रवण	4	22	46

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2020 से 13 अप्रैल, 2021 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2021 ई.)

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
फरवरी 14		श्रवण	3	3	59
21	मार्गी			6	21
मार्च 1		श्रवण	4	6	53
5		धनि.	1	7	14
8		धनि.	2	14	09
11	कुम्भ	धनि.	3	12	30
14		धनि.	4	5	30
16		शत.	1	18	31
19		शत.	2	4	41
21		शत.	3	12	22
23		शत.	4	18	03
25		पू.भा.	1	21	58
28		पू.भा.	2	0	17
30		पू.भा.	3	1	10
अप्रैल 1	मीन	पू.भा.	4	0	41
2		उ.भा.	1	22	58
4		उ.भा.	2	20	04
6		उ.भा.	3	16	05
8		उ.भा.	4	11	05
10		रेवती	1	5	07
11		रेवती	2	22	13
13		रेवती	3	14	30

गुरु-चार (सन् 2020 ई.)

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 4		पू.षा.	1	16	22
19		पू.षा.	2	7	01
फरवरी 3		पू.षा.	3	8	54
19		पू.षा.	4	9	43
मार्च 8		उ.षा.	1	6	07
30	मकर	उ.षा.	2	3	48
मई 14	वक्री			20	03
जून 30	धनु	उ.षा.	1	5	25

गुरु-चार (सन् 2020-21 ई.)

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जुलाई 26		पू.षा.	4	15	16
सितम्बर 6		पू.षा.	3	18	00
13	मार्गी			6	12
19		पू.षा.	4	18	43
अक्तूबर 30		उ.षा.	1	13	11
नवम्बर 20	मकर	उ.षा.	2	13	27
दिसम्बर 7		उ.षा.	3	20	57
23		उ.षा.	4	11	18

(सन् 2021 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 7		श्रवण	1	3	48
21		श्रवण	2	8	46
फरवरी 4		श्रवण	3	9	53
18		श्रवण	4	13	16
मार्च 5		धनि.	1	1	58
20		धनि.	2	8	43
अप्रैल 6	कुम्भ	धनि.	3	0	25

शुक्र-चार (सन् 2020 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 1		श्रवण	4	0	03
3		धनि.	1	17	22
6		धनि.	2	10	48
9	कुम्भ	धनि.	3	4	22
11		धनि.	4	22	05
14		शत.	1	15	57
17		शत.	2	9	58
20		शत.	3	4	10
22		शत.	4	22	33
25		पू.भा.	1	17	07
28		पू.भा.	2	11	55
31		पू.भा.	3	6	58
फरवरी 3	मीन	पू.भा.	4	2	17

शुक्र-चार (सन् 2020 ई.)

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
फरवरी 5		उ.भा.	1	21	55
8		उ.भा.	2	17	53
11		उ.भा.	3	14	12
14		उ.भा.	4	10	55
17		रेव.	1	8	03
20		रेव.	2	5	37
23		रेव.	3	3	42
26		रेव.	4	2	19
29	मेष	अश्वि.	1	1	32
मार्च 3		अश्वि.	2	1	27
6		अश्वि.	3	2	09
9		अश्वि.	4	3	44
12		भरणी	1	6	18
15		भरणी	2	9	59
18		भरणी	3	14	56
21		भरणी	4	21	20
25		कृत्तिका	1	5	27
28	वृष	कृत्तिका	2	15	37
अप्रैल 1		कृत्तिका	3	4	17
4		कृत्तिका	4	20	07
8		रोहिणी	1	16	01
12		रोहिणी	2	17	19
17		रोहिणी	3	2	13
21		रोहिणी	4	22	50
27		मृग.	1	16	51
मई 6		मृग.	2	1	44
13	वक्री			12	15
20		मृग.	1	17	07
28		रोहिणी	4	12	31
जून 3		रोहिणी	3	2	27
8		रोहिणी	2	11	54
15		रोहिणी	1	1	55

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जून 25	मार्गी			12	18
जुलाई 6		रोहिणी	2	11	28
13		रोहिणी	3	14	54
19		रोहिणी	4	2	04
23		मृग.	1	20	02
28		मृग.	2	3	57
अगस्त 1	मिथुन	मृग.	3	5	09
5		मृग.	4	1	27
8		आर्द्रा	1	17	58
12		आर्द्रा	2	7	32
15		आर्द्रा	3	18	40
19		आर्द्रा	4	3	50
22		पुन.	1	11	21
25		पुन.	2	17	27
28		पुन.	3	22	18
सितम्बर 1	कर्क	पुन.	4	2	03
4		पुष्य	1	4	49
7		पुष्य	2	6	41
10		पुष्य	3	7	44
13		पुष्य	4	8	04
16		आश्ले.	1	7	45
19		आश्ले.	2	6	50
22		आश्ले.	3	5	23
25		आश्ले.	4	3	26
28	सिंह	मघा	1	1	02
30		मघा	2	22	12
अक्तूबर 3		मघा	3	18	56
6		मघा	4	15	18
9		पू.फा.	1	11	18
12		पू.फा.	2	6	58
15		पू.फा.	3	2	19
17		पू.फा.	4	21	23

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2020 से 13 अप्रैल, 2021 ई. तक)

शुक्र-चार (सन् 2020-2021 ई.)

तारीख 2020 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अक्तूबर 20		उ.फा.	1	16	11
23	कन्या	उ.फा.	2	10	45
26		उ.फा.	3	5	06
28		उ.फा.	4	23	13
31		हस्त	1	17	09
नवम्बर 3		हस्त	2	10	53
6		हस्त	3	4	25
8		हस्त	4	21	48
11		चित्रा	1	15	01
14		चित्रा	2	8	05
17	तुला	चित्रा	3	1	02
19		चित्रा	4	17	52
22		स्वाती	1	10	35
25		स्वाती	2	3	13
27		स्वाती	3	19	45
30		स्वाती	4	12	13
दिसम्बर 3		विशा.	1	4	35
5		विशा.	2	20	53
8		विशा.	3	13	07
11	वृश्चिक	विशा.	4	5	16
13		अनु.	1	21	23
16		अनु.	2	13	26
19		अनु.	3	5	28
21		अनु.	4	21	27
24		ज्येष्ठा	1	13	25
27		ज्येष्ठा	2	5	22
29		ज्येष्ठा	3	21	17
(सन् 2021 ई.)					
जनवरी 1		ज्येष्ठा	4	13	11
4	धनु	मूल	1	5	03
6		मूल	2	20	54

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जनवरी 9		मूल	3	12	44
12		मूल	4	4	33
14		पू.षा.	1	20	22
17		पू.षा.	2	12	11
20		पू.षा.	3	4	00
22		पू.षा.	4	19	49
25		उ.षा.	1	11	39
28	मकर	उ.षा.	2	3	29
30		उ.षा.	3	19	20
फरवरी 2		उ.षा	4	11	10
5		श्रवण	1	3	01
7		श्रवण	2	18	53
10		श्रवण	3	10	44
13		श्रवण	4	2	37
15		धनिष्ठा	1	18	31
18		धनिष्ठा	2	10	26
21	कुम्भ	धनिष्ठा	3	2	22
23		धनिष्ठा	4	18	20
26		शत.	1	10	20
29		शत.	2	2	21
मार्च 3		शत.	3	18	24
6		शत.	4	10	28
9		पू.भा.	1	2	34
11		पू.भा.	2	18	41
14		पू.भा.	3	10	50
17	मीन	पू.भा.	4	3	00
19		उ.भा.	1	19	14
22		उ.भा.	2	11	30
25		उ.भा.	3	3	48
27		उ.भा.	4	20	09
30		रेव.	1	12	32
अप्रैल 2		रेव.	2	4	58

तारीख 2021 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
अप्रैल 4		रेव.	3	21	26
7		रेव.	4	13	56
10	मेष	अश्वि.	1	6	28
12		अश्वि.	2	23	04

केतु-चार (सन् 2020-21 ई.)

तारीख 2020-21 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. (भा.स्टैं.टा.)	मि.
जुलाई 22		मूल	1	15	02
सितम्बर 23	वृष	ज्ये.	4	12	51
नवम्बर 25		ज्ये.	3	10	36
जनवरी 27		ज्ये.	2	7	57
मार्च 31		ज्ये.	1	5	47

शनि-चार (सन् 2020-21 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 24	मकर	उ.षा.	2	9	54
फरवरी 23		उ.षा.	3	6	34
अप्रैल 3		उ.षा.	4	7	52
मई 11	वक्री			9	39
जून 19		उ.षा.	3	5	30
अगस्त 6		उ.षा.	2	7	07
सितम्बर 29	मार्गी			10	43
नवम्बर 20		उ.षा.	3	7	03
दिसम्बर 24		उ.षा.	4	23	29
जनवरी 22		श्रवण	1	17	44
फरवरी 20		श्रवण	2	5	50
मार्च 25		श्रवण	3	9	47

राहु-चार (सन् 2020-21 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 15		आर्द्रा	2	22	03
मार्च 18		आर्द्रा	1	19	50
मई 20		मृग.	4	17	40
जुलाई 22		मृग.	3	15	02
सितम्बर 23	वृष	मृग.	2	12	51
नवम्बर 25		मृग.	1	10	36
जनवरी 27		रोहिणी	4	7	57
मार्च 31		रोहिणी	3	5	47

केतु-चार (सन् 2020 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 15		मूल	4	22	03
मार्च 18		मूल	3	19	50
मई 20		मूल	2	17	40

यूरेनस-चार (सन् 2020-21 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 11	मार्गी			7	19
मार्च 11		अश्वि.	4	16	11
मई 11		भरणी	1	23	23
अगस्त 15	वक्री			19	58
दिसम्बर 2		अश्वि.	4	9	33
जनवरी 14	मार्गी			14	08
फरवरी 25		भरणी	1	21	44

नेप्च्यून-चार (सन् 2020-21 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
फरवरी 12		पू.भा.	2	16	44
मई 30		पू.भा.	3	8	40
जून 23	वक्री			10	06
जुलाई 17		पू.भा.	2	13	58
नवम्बर 29	मार्गी			6	09
मार्च 16		पू.भा.	3	1	01

प्लूटो-चार (सन् 2020-21 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
फरवरी 25	मकर	उ.षा.	2	7	41
अप्रैल 26	वक्री			0	21
जून 28	धनु	उ.षा.	1	17	56
अक्तू. 4	मार्गी			19	00
दिसम्बर 31	मकर	उ.षा.	2	0	02

ग्रहों के वक्र/मार्ग उदयास्त अगले पृष्ठ पर देखिये।

ग्रहों के वक्र-मार्ग/उदयास्त की तारीखें.

(1 जनवरी, 2020 से 12 अप्रैल, 2021 ई. तक)

ग्रह	वक्र/ मार्ग	तारीख
मंगल	वक्री	10 सितं., 2020 ई.
मंगल	मार्गी	14 नवं., 2020 ई.
बुध	वक्री	17 फर., 2020 ई.
बुध	मार्गी	10 मार्च, 2020 ई.
बुध	वक्री	18 जून, 2020 ई.
बुध	मार्गी	12 जुलाई, 2020 ई.
बुध	वक्री	14 अक्तू., 2020 ई.
बुध	मार्गी	3 नवं., 2020 ई.
बुध	वक्री	30 जन., 2021 ई.
बुध	मार्गी	21 फर., 2021 ई.
गुरु	वक्री	14 मई, 2020 ई.
गुरु	मागी	13 सितं., 2020 ई.
शुक्र	वक्री	13 मई, 2020 ई.
शुक्र	मार्गी	25 जून, 2020 ई.
शनि	वक्री	11 मई, 2020 ई.
शनि	मार्गी	29 सितं., 2020 ई.
यूरेनस	मार्गी	11 जन., 2020 ई.
यूरेनस	वक्री	15 अग., 2020 ई.
यूरेनस	मार्गी	14 जन., 2021 ई.
नेप्च्यून	वक्री	23 जून, 2020 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	29 नवं., 2020 ई.
प्लूटो	वक्री	26 अप्रैल, 2020 ई.
प्लूटो	मार्गी	4 अक्तू., 2020 ई.

ग्रह	उदय/ अस्त	तारीख
मंगल	वि. संवत् 2077 में सालभर उदित रहेगा।	
बुध	प. में उदित	30 जन., 2020 ई.
बुध	प. में अस्त	19 फर., 2020 ई.
बुध	पू. में उदित	3 मार्च, 2020 ई.
बुध	पू. में अस्त	23 अप्रैल, 2020 ई.
बुध	प. में उदित	16 मई, 2020 ई.
बुध	प. में अस्त	22 जून, 2020 ई.
बुध	पू. में उदित	10 जुलाई, 2020 ई.
बुध	पू. में अस्त	5 अग., 2020 ई.
बुध	प. में उदित	1 सितं., 2020 ई.
बुध	प. में अस्त	20 अक्तू., 2020 ई.
बुध	पू. में उदित	1 नवं., 2020 ई.
बुध	पू. में अस्त	27 नवं., 2020 ई.
बुध	प. में उदित	11 जन., 2.21 ई.
बुध	प. में अस्त	1 फर., 2021 ई.
बुध	पू. में उदित	15 फर., 2021 ई.
बुध	पू. में अस्त	6 अप्रैल, 2021 ई.
गुरु	पूर्व में उदित	10 जन., 2020 ई.
गुरु	प. में अस्त	17 जन., 2021 ई.
गुरु	पूर्व में उदित	15 फर., 2021 ई.
शुक्र	प. में अस्त	31 मई, 2020 ई.
शुक्र	पूर्व में उदित	8 जून, 2020 ई.
शुक्र	पूर्व में अस्त	9 फर., 2021 ई.
शनि	पूर्व में उदित	30 जन. 2020 ई.
शनि	प. में अस्त	7 जन., 2021 ई.
शनि	पूर्व में उदित	10 फर., 2021 ई.

ग्रहोदयास्त निर्णय

सूर्य, चन्द्र आदि सभी ग्रहों के सूक्ष्म दैनिक उदयास्तकाल, चन्द्रदर्शन की तारीख तथा मंगल आदि के लोप-दर्शन की तारीखें ज्ञात करने की सरलातिसरल प्रक्रिया इस पुस्तक में आप पायेंगे। प्राचीन एवं नवीन ज्योतिर्गणित-ग्रन्थों में उपलब्ध ग्रहों के दैनिक उदयास्त का काल तथा लोप-दर्शन का दिन जानने की जटिल गणित-प्रक्रियाओं को लेखक ने स्वनिर्मित मौलिक सारणियों तथा शैली द्वारा आश्चर्यजनक रूप में सुबोध, सरल बना दिया है। अनेकों उदाहरणों द्वारा सभी गणित-प्रक्रियाओं को पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

0 से 63^{0} तक के प्रत्येक अक्षांश का दैनिक सूक्ष्म सूर्योदयास्तकाल 48 पृष्ठों की एक विशाल सारणी में दिया गया है, जिससे विश्व के उत्तरी या दक्षिणी अक्षांश के किसी भी स्थल का सूर्योदयास्तकाल स्थानीय (क्षेत्रीय) स्टैं. टा. में तुरन्त जाना जा सकता है।

गुरु और शुक्र के उदयास्त (लोप-दर्शन) की सन् 2001 से 3000 ई. तक के (एक हज़ार वर्षों के) लिए 'उन्नतांश पद्धति' से निर्णीत वेधसिद्ध सूक्ष्म, शुद्ध तारीखें इस पुस्तक की अनुपम विशेषता है। किस वर्ष में किस भारतीय अक्षांश पर गुरु का लोप-दर्शन, शुक्र का पश्चिमलोप-पूर्वदर्शन या पूर्वलोप-पश्चिम-दर्शन किस तारीख को होगा?—यह पुस्तक में दी गयी विलक्षण सारणी पर दृष्टि डालते ही आप (ज्योतिषानभिज्ञ सामान्य व्यक्ति भी) तुरन्त विद्युद्गति से जान लेंगे। इसे अतिशयोक्ति न समझा जाए। लेखक की प्रतिज्ञा है—ग्रहों के उदयास्त, लोप-दर्शन पर उनका यह प्रकाशन सर्वथा अपनी ही तरह का है।

मूल्य Rs. 300/- + डाकव्यय Rs. 50/-

पुस्तक मिलने का पता—

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil,
'अभिजित् प्रकाशन', कोठी नं. 59/6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा)-134 109,
Phone: 0172-2565303

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी जिला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः— अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48
अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20
अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56
आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	—
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
उखरुल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	–35 16	कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	–28 28	कालिकट	(के.)	11 15	75 46	–26 56
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	– 8 00	करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	–28 00	कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
उपशी	(का.)	33 52	77 50	–18 40	कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	–12 52	काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	– –
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	– 0 48	करनाल	(ह.)	29 42	77 02	–21 52	कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	–21 40
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	–12 08	करसोग	(हि.)	31 23	77 13	–21 08	किरकी	(म.)	18 36	73 57	–34 12
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	–37 32	कराड	(म.)	17 15	74 12	–33 12	किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	–26 48
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	–23 04	करूर	(ता.)	10 58	78 03	–17 48	किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	–29 36	कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	–21 08	किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	–30 32
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	–24 52	काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	–17 00	कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	–23 44
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	–34 56	करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00	कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	–14 40
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	–15 20	करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	–13 36	कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	–10 44
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	–18 56	करौली	(रा.)	26 30	77 01	–21 56	कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	–21 12
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	–24 56	कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	–17 40	कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	–12 24
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	–19 48	कल्याण	(म.)	19 17	73 11	–37 16	कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	–19 44
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	– 5 24	कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	–39 28	कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	–21 48
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	–24 32	कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	– 5 00	कुराली	(पं.)	30 50	76 35	–23 40
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	–29 00	कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	–30 00	कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	–22 40
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56	कसौली	(हि.)	30 55	76 57	–22 12	कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	–21 36
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	–53 52	काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	– 1 08	कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	– 9 36	कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	– 3 52	कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
ओरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	–11 56	कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	–24 48	केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	–25 36	कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	–11 04	केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
औट	(हि.)	31 47	77 11	–21 16	काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	–11 52	केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	–13 44
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	–28 32	काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	–46 00	केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44	कादियां	(पं.)	31 49	75 23	–28 28	केसरी	(ह.)	30 14	76 54	–22 24
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	– 8 12	कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	– 8 36	कैथल	(ह.)	29 48	76 26	–24 16
कटरा	(का.)	32 59	74 57	–30 12	कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	–12 56	कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	–21 32	कारकाल	(क.)	13 12	74 59	–30 04	कोचीन	(के.)	9 58	76 14	–25 04
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20	कारगिल	(का.)	34 31	76 13	–25 08	कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	–30 24
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	–27 52	कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	–33 24	कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	–19 36
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	–21 32	कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	–10 40	कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	–20 04
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	–28 20	कालका	(ह.)	30 50	76 56	–22 16	कोटा	(रा.)	25 10	75 52	–26 32
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	–10 20	कालाहस्ती	(आं.)	13 46	79 42	–11 12	कोद्दागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	– 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56	गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00	घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52	गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36	घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12	गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28	घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04	गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28	घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28	गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12	चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24	गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04	चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00	गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16	चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48	गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16	चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44	गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28	चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36	गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24	चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44	गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36	चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20	गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44	चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36	गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24	चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48	गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12	चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32	गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00	चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28	गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36	चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44	गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40	चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20	गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08	चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28	गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12	चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08	गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40	चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08	गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20	चित्तौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24	गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00	चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08	गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28	चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36	गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40	चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32	गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56	चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16	गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20	चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40	गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44	चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32	गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40	चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00	गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28	चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44	गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16	चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44	गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12	चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24	गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04	चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20	ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20	चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–	जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	–27 44	टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	–16 52
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48	जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56	टोंक	(रा.)	26 11	75 50	–26 40
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	–19 36	जालोर	(रा.)	25 22	72 38	–39 28	टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	–28 04
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00	जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	–12 36	टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	–26 24
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	–11 28	ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08	ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	–22 00
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00	जींद	(ह.)	29 19	76 19	–24 44	ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	–20 36
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	–14 08	ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	–30 04	डगशाई	(हि.)	30 53	77 03	–21 48
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	–11 56	जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	–19 14	डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	–31 00
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	–33 56	जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	–47 44	डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	–27 20
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	– 1 44	जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	–47 12	डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	–26 04
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	–28 04	जैतों	(पं.)	30 28	74 53	–30 28	डामन	(डा.)	20 25	72 53	–38 28
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	–20 48	जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	–46 24	डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16	जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	–22 56	डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
जण्ड्याला	(पं.)	31 36	75 03	–29 48	जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	–37 44	डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	–21 32	जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48	डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	–18 00
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	–13 20	जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44	डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	–17 00
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	–10 04	ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	–24 32	डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	–38 40	ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	–24 44	डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	–31 44
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40	झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	–23 24	डीसा	(गु.)	24 14	72 13	–41 08
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08	झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	–31 28	डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	–35 08
जमूई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52	झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36	डोडा	(का.)	33 10	75 35	–27 40
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	–30 24	झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	–15 40	ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	–45 56
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36	झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	–25 20	ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	–26 32	झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	–25 24	तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	–13 24
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	–27 24	झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	–28 20	तपा	(पं.)	30 19	75 21	–28 36
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56	टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	–27 28	तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	–30 08
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	–11 20	टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44	तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48	टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	–34 52	तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	– 2 48	टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	–16 00	ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	–18 04
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	–28 12	टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	–14 28	तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	–26 40	टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	–23 52	ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	– 9 32
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	–49 36	टुंकुरें	(क.)	13 21	77 05	–21 40	तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
जालना	(म.)	19 50	75 58	–26 08	टुटीकोरिन	(ता.)	8 48	78 11	–17 16	तारा	(गु.)	24 00	71 51	–42 36

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें −	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेघार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
धांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04
परभानी	(म.)	19 16	76 51	−22 36
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52
पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24
पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00
पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16
पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04
पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48
पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40
पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40
पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56
पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32
पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20
पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08
पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28
पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32
पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48
पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36
पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00
पुदुक्कोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44
पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04
पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28
पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48
पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28
पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36
पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00
पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52
प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04
प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52
प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24
प्रोदातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40
फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
फर्रूखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
बंबई	(म.)	देखें −	मुम्बई	
बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
बरौनी	(बि.)	25 30	85 58	+13 52
बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी जिला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40
बल्लमगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04
बांस्वाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52
बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52
बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16
बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08
बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40
बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00
बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56
बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40
बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56
बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28
बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52
बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52
बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16
बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20
बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04
बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32
बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12
बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36
बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28
बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56
बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24
बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12
बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32
बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36
बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40
बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04
बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52
बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00
बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28
ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
मंगालादै	(आसा.)	26 23	92 02	+38 08
मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32	माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52	मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20	मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24	मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08	मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12	मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36	मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20	मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16	मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36	यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20	मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56	यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48	मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32	यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36	मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28	योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20	मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00	रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08	मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16	रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20	मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48	रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36	मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00	रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32	मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40	रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36	मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48	राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24	रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04	मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32	राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20	मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52	राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−16 04	मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16	राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16	मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48	राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12	मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04	राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08	मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36	राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48	मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	−17 00	राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24	मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12	राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08	मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12	राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16	मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56	रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28	मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32	राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08	मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00	रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28	मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08	रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20	मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20	रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36	मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48	राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36	मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40	रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28	मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04	रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32	मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00	रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04
रिटाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52
रोहड़ू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−16 20
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40
लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32
लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00
लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40
लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16
लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44
वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20
वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08
वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08
वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20
वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40
वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28
वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00
विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00
विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40
विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24
विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40
विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44
विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08
विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04
विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12
विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36
वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20
वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08
वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24
वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12
व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08
शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32
शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48
शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48
शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44
शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44
शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग़	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्द्वानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.)

वैशाख

माह	अंग्रेज़ी तारीख	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	ज्ये.१	५ ३४											

ज्येष्ठ

माह	अंग्रेज़ी तारीख	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आ.१	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

अंग्रेज़ी तारीख		आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
जून	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
जून	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
जून	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
जून	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
जून	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
जून	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
जून	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
जून	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
जून	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
जून	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
जून	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
जून	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
जून	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
जून	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
जून	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
जून	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
जुलाई	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
जुलाई	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
जुलाई	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
जुलाई	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
जुलाई	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
जुलाई	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
जुलाई	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
जुलाई	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
जुलाई	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
जुलाई	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
जुलाई	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
जुलाई	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
जुलाई	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
जुलाई	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
जुलाई	१६	श्रा.१	५ ३५											

श्रावण

अंग्रेज़ी तारीख		श्रावण प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
जुलाई	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
जुलाई	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
जुलाई	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
जुलाई	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
जुलाई	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
जुलाई	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
जुलाई	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
जुलाई	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
जुलाई	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
जुलाई	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
जुलाई	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
जुलाई	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
जुलाई	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
जुलाई	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
जुलाई	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३२
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
अगस्त	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
अगस्त	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
अगस्त	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
अगस्त	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
अगस्त	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
अगस्त	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
अगस्त	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
अगस्त	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
अगस्त	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
अगस्त	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
अगस्त	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
अगस्त	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
अगस्त	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
अगस्त	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
अगस्त	१६	भा.१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टै.टा.]

मास	अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	भाद्रपद सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	आश्विन कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्टूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

कार्तिक

मास	अंग्रेज़ी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्तूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १४	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा.१	६ ५७											

मार्गशीर्ष

मास	अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ.१	७ १९											

पौष

मास	अंग्रेज़ी तारीख	तिथि	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	मा.१	७ २८											

माघ

मास	अंग्रेज़ी तारीख	तिथि	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चैत्र	६ ३८											

अंग्रेज़ी तारीख		चैत्र प्रविष्टे	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	चै. १	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	±३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	+२	+३	+३

लग्न / नगर	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	±१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	-४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड़	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किञ्च भिन्न–भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की ज़रुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी जरूरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई **"अक्षांशादि सारणी"** से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिएः–

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी–पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घडी–पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घडी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घडी– पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घडी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें **"सारणीस्थ घड़ी–पल"** कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घडी--पलों का "सारणीस्थ घड़ी–पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" और "अभीष्ट घड़ी–पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड़ दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण– मान लीजिए– वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोडे तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घड़ी--पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घडी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोडने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६ ।३९ ।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६ । ५५ । ४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१३	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

सहायक सारणी

पल → ↓	१ क.	१ वि.	२ क.	२ वि.	३ क.	३ वि.	४ क.	४ वि.	५ क.	५ वि.	६ क.	६ वि.	७ क.	७ वि.	८ क.	८ वि.	९ क.	९ वि.	१० क.	१० वि.	११ क.	११ वि.	१२ क.	१२ वि.	१३ क.	१३ वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	− ७	२०४७	− १३	२०५५	− २०	२०६३	−२६	२०७१	−३३
२०२४	+ ६	२०३२	− १	२०४०	− ८	२०४८	− १४	२०५६	− २१	२०६४	−२७	२०७२	−३४
२०२५	+ ५	२०३३	− २	२०४१	− ९	२०४९	− १५	२०५७	− २२	२०६५	−२८	२०७३	−३५
२०२६	+ ४	२०३४	− ३	२०४२	− ९	२०५०	− १६	२०५८	−२२	२०६६	−२९	२०७४	−३६
२०२७	+ ३	२०३५	− ४	२०४३	−१०	२०५१	− १७	२०५९	−२३	२०६७	−३०	२०७५	−३६
२०२८	+ २	२०३६	− ४	२०४४	−११	२०५२	− १८	२०६०	−२४	२०६८	−३१	२०७६	−३७
२०२९	+ १	२०३७	− ५	२०४५	−१२	२०५३	− १८	२०६१	−२५	२०६९	−३१	२०७७	−३८
२०३०	+ १	२०३८	− ६	२०४६	− १३	२०५४	− १९	२०६२	−२६	२०७०	−३२	२०७८	−३९

दशमलग्न साधन का उदाहरण:– वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अत: दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अत: ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + ४क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है, तैयार करें

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)
] ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी 'से उठाइये।

विशेष- यदि ''**अक्षांशादि सारणी** '' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के **स्टैण्डर्ड** - अन्तर के मिनटादि(या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का ''**स्थानीयमध्यमकाल**'' बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)}अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकत्ता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टै अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६ से. हुए यह २४ घ. से ज्यादा हो गया है , अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

साम्पातिक काल घं. मि.	सभी स्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
० ०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४
० ३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३
१ ०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७
१ ३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७
०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५
३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२
०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	१४२ ४०
३०	५४ ५१	१४५ ५०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०
०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १
३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४
०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८
३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५	१७३ ३४	१७३ ४४
०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०
३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६
०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२
३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६
८ ०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९
८ ३०	१२५ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०
९ ०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०
९ ३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८
१० ००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५
१० ३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३
११ ०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३
११ ३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६

साम्पातिक काल घं. मि.	सभीस्थलों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. कं.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
१२ ३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१३ ०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२६९ २१	२६७ ३३
१३ ३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
१४ ०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
१४ ३०	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
१५ ००	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
१५ ३०	२३४ ५१	३१२ ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
१६ ०	२४२ ५	३२१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
१६ ३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
१७ ०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
१७ ३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
१८ ०	२७० ०	a ०	० ०	० ०	० ०	० ०
१८ ३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
१९ ०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
१९ ३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
२० ०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
२० ३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
२१ ०	३१२ ३२	५५ ५०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
२१ ३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
२२ ०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
२२ ३०	३३४ ४२	७८ ५१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
२३ ०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
२३ ३०	३५१ ५०	९२ ५०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
२४ ०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९७१	६ ३९ ०७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६ ३९ ५९	२००६	६ ४१ ११	२०१३	६ ४२ २३	२०२०	६ ३९ ३९
१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६ ३९ ०२	२००७	६ ४० १४	२०१४	६ ४१ २६	२०२१	६ ४२ ३८
१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६ ४२ ०१	२००८	६ ३९ १७	२०१५	६ ४० २९	२०२२	६ ४१ ४०
१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६ ४१ ०४	२००९	६ ४२ १६	२०१६	६ ३९ ३१	२०२३	६ ४० ४३
१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६ ४० ०७	२०१०	६ ४१ १९	२०१७	६ ४२ ३१	२०२४	६ ३९ ४६
१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६ ३९ ०९	२०११	६ ४० २१	२०१८	६ ४१ ३३	२०२५	६ ४२ ४५
१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६ ४२ ०९	२०१२	६ ३९ २४	२०१९	६ ४० ३६	२०२६	६ ४१ ४८

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	२८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२९	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अक्षांश ८°(उ.)		अक्षांश ११°(उ.)		अक्षांश १४°(उ.)		अक्षांश १७°(उ.)		अक्षांश २०°(उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४२	८	५५	९	९	९	२४	९	४२
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	२५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमश: १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अत: यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अत: इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६कं. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा ४ अं. ३९ क.) नियरणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालमं में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशम्लग्र८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमश: ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५२ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुत: अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अंक्षाश २३° (उ.)	अंक्षाश २६° (उ.)	अंक्षाश २९° (उ.)	अंक्षाश ३२° (उ.)	अंक्षाश ३५° (उ.)	साम्पातिक काल	सभीस्थलों के लिए	अंक्षाश २३° (उ.)	अंक्षाश २६° (उ.)	अंक्षाश २९° (उ.)	अंक्षाश ३२° (उ.)	अंक्षाश ३५° (उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न		दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. कं.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. कं.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
० ०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४	१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
० ३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३	१२ ३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१ ०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७	१३ ०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२६९ २१	२६७ ३३
१ ३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७	१३ ३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
२ ०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५	१४ ०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
२ ३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२	१४ ३०	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
३ ०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	१४२ ४०	१५ ००	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
३ ३०	५४ ५१	१४५ ५०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०	१५ ३०	२३४ ५१	३१२ ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
४ ०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १	१६ ०	२४२ ५	३२१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
४ ३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४	१६ ३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
५ ०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८	१७ ०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
५ ३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५	१७३ ३४	१७३ ४४	१७ ३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
६ ०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०	१८ ०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
६ ३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६	१८ ३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
७ ०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२	१९ ०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
७ ३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६	१९ ३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
८ ०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९	२० ०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
८ ३०	१२४ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०	२० ३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
९ ०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०	२१ ०	३१२ ३२	५५ ५०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
९ ३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८	२१ ३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
१० ००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५	२२ ०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
१० ३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३	२२ ३०	३३५ ४२	७८ ५१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
११ ०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३	२३ ०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
११ ३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७	२३ ३०	३५१ ५०	९२ ५०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
१२ ०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६	२४ ०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९७१	६ ३९ ०७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६ ३९ ५९	२००६	६ ४१ ११	२०१३	६ ४२ २३	२०२०	६ ३९ ३९
१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६ ३९ ०२	२००७	६ ४० १४	२०१४	६ ४१ २६	२०२१	६ ४२ ३८
१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६ ४२ ०१	२००८	६ ३९ १७	२०१५	६ ४० २९	२०२२	६ ४१ ४०
१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६ ४१ ०४	२००९	६ ४२ १६	२०१६	६ ३९ ३१	२०२३	६ ४० ४३
१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६ ४० ०७	२०१०	६ ४१ १९	२०१७	६ ४२ ३१	२०२४	६ ३९ ४६
१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६ ३९ ०९	२०११	६ ४० २१	२०१८	६ ४१ ३३	२०२५	६ ४२ ४५
१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६ ४२ ०६	२०१२	६ ३९ २४	२०१९	६ ४० ३६	२०२६	६ ४१ ४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४			

जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	[illegible]	४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१२	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
															२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६९	+१५५	+१४२	+१२९	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

संस्कार सैकण्ड	-५७/+१६९	+१५६	+१४१	+१११	+११५	+१०१	+८१	+७७	+५१

[illegible] कोष्टक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५
घं.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.	मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २.	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	- ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५९	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४९	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३९	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २९	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.		वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४१
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा: ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पू.फा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	नं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	कलेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोडने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोडने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह [illegible] दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, [illegible]
वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि– मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी–कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं., बु., शु., श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रि बल–दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

❖ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ❖ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।❖ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।❖ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६।८।१२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से १/२ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41 / 42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्म–कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, दिकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र–ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद्	बहुपद्	चतुष्पद्	द्विपद्	द्विपद्	द्विपद्	भुजंगपद्	अपद्	अपद्	पाद्
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म–नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, 3 और जोड़ें, 8 से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा (मास–दिन)	सं.	सि.	उ.	भ.	भ्रा.	धा.	पिं.	मं.
मास	२	२	२	१	१	१	०	०
दिन	२०	१०	०	२०	१०	०	२०	१०

गर्भयोग—

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र**–तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों;३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५ नैरोग्य	५ मरण	५ कृषता	५ व्याधि	७ सौख्य

भूम्युपवेशन–मुहूर्त्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो **"यथा कुलधर्म वः"**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १; २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधारस्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र मे उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के ३ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ३ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों) । **ध्यान रहे**, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह **कोष्ठक देखें** :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमाशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है ।कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक।किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा है,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर कन्या के नाम के आदिम वर्णों से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर अवर्ग क आदि पांच वर्ण 'कवर्ग च' आदि पांच वर्ण चवर्ग ट आदि पाँच वर्ण टवर्ग त आदि पाच वर्ण तवर्ग प आदि पांच वर्ण 'पवर्ग य आदि पांच वर्ण यवर्ग तथा श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

र्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

र्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
र्ग के र्ग	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प. फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
र्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गो के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तो नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों)-में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही [illegible] है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	ब.	बु.	बु.	च.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	द.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अ.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	म.	म.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक, म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन

अब प्रकाशित है

(मिलान सम्बन्धी सभी समस्याओं का आमूलचूड़ समाधान)

अब प्रकाशित है

वर्ण आदि अष्टकूट, मंगली दोष, विवाहमुहूर्त्त साधन आदि विवाह सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषयों का सरल-सुबोध शैली में पूरा विस्तृत विवेचन इसमें आपको मिलेगा। गुण मिलान में घटित होने वाले अष्टकूट दोषों एवं उनके परिहारों का सप्रमाण सुस्पष्ट निर्देश करने वाली, वर-कन्या के जन्मनक्षत्रों के चरणों के अनुसार बनाई गई ३६ पृष्ठों पर फैली अद्वितीय मौलिक 'मेलापक सारणी' तथा मंगलीक दोष का बलाबल बतलाने वाले कोष्ठक इस पुस्तक की अपनी विशेषता है। सन् १९७० ई. से सन् २००० ई. तक पैदा हुए वर कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र-चरण और जन्मकुण्डली बिना किसी पुराने पंचांग की सहायता के आप इस पुस्तक में दिए गए अद्भुत कोष्ठकों द्वारा १०-१५ मिनटों में ही स्वयं जानकर वर-कन्या की ग्रहस्थितियों का मिलान कर सकते हैं। मिलान सम्बन्धी सभी विवादास्पद विषयों का शास्त्रीय समाधान किया गया है। दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सैक्टर-6.पो. पंचकूला-134109

मेलापक सारणी (भाग 1)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ द भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 द भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ञ ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग द भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब द त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	.20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पू.षा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ बयतग	26½ बयत	22½ तबयग	18½ गभतय	25½ भत	14 भनग	13½ भनग	25 भ	23½ भत	25 बतर	26 बतर	20 बतयरग	20 बतयरग	15 बनतरग	16 बनतयर	14½ नभतय	24½ भत	26 भ
	भर. 1,2,3,4	13½ बगनतय	29½ बत	21½ गबतय	17½ गभतय	17½ नभत	19½ गभत	20 गभ	18 नभ	26 भ	27½ बर	26 बतर	10 बयगनतर	10 बयगनतर	20 गबतर	24 बयतर	22½ तभय	17½ नभत	26½ भत
	कृत्ति. 1	27½ बतय	15½ बगनत	19½ बनतय	15½ भनतय	19½ गभत	25½ भत	24½ भत	18 गभय	12 गभन	13½ बगनर	11½ बयरगन	25 बतयर	25 बतयर	27 बतर	19 बगतयर	17½ गभतय	19½ गभत	11½ गभतन
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ बभतय	10½ गबभनत	14½ बभतनय	20½ नतय	24½ गत	30½ त	20 भतर	13½ यगभर	7½ गभनर	12 गभन	10 यगभन	23½ भतय	29½ बतय	31½ बत	23½ गबतय	20 गतयर	22 गतर	14 गनतर
	रोहि. 1,2,3,4	19 गबभ	15½ बभनत	9½ तबगनभ	15½ गनत	29½ त	23½ गत	14 गभतर	19 रभतय	11½ यभनर	16 भयन	17 नभय	20 गभ	26½ गब	24½ गबत	30½ बत	27 तर	27 तर	19 रनत
	मृग. 1,2	12 बभनग	25 बभ	18½ बभतग	24½ तग	21½ नत	24½ तग	15 भतरग	10 नभतयर	17 यभतर	21½ भयत	25 भय	13 नभग	19 बगन	27 बग	29½ बत	26 तर	18 नतर	27 तर
मिथुन	मृग. 3,4	14 नभग	27 भ	20½ भतग	14 भवतरग	11 भवनतर	14 भवतरग	23 तरग	18 नतयर	25 यतर	20 भयवत	23½ भवय	11½ नभवग	13 नभग	21 भग	23½ भत	25½ तवर	17½ नवतर	26½ वतर
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 गभय	27 भ	20 गभय	13½ रगवभय	17 तभवयर	3 यतगवभनर	16 गनतर	28 तर	28 तर	23 भवत	23 भवत	17½ गभवय	19 गभय	12 गभन	17 नभय	19 नरवय	26½ वतर	26½ वतर
	पुन. 1,2,3	20½ भतग	28 भ	22 भग	15½ वभरग	21½ वभर	7 रगवभनत	14 यरतनग	27 तर	27 तर	22 वतभ	23 वतभ	17 वतभयग	18½ भगतय	14 नभग	16 नभय	18 रनयव	28 रव	27½ वतर
कर्क	पुन. 4	20½ बतरग	28 वरब	22 वरबग	20 गभ	26 भ	11½ तगभन	8 वतबभगनय	21 बभवत	21 बभवत	26 बतर	27 बतर	21 बगतयर	12½ बभवतयगर	8 बभवनगर	10 बभरनवय	16 नभय	20 भ	25½ भत
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबवतयर	26½ बवतर	21 रबगवय	19 भयग	18 भन	21 भग	17 गबभवत	11 यबभतनव	21 बभवत	26 बतर	25 बयतर	13 गबनतयर	4½ भबगयवनतर	14½ बवतरगभ	18 बभवयर	24 भय	18 नभ	27 भ
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ बवतर	12½ गबवतरन	17½ नबवतर	15½ नभत	20 गभ	26 भ	22½ बभवय	16 गबवभत	8 गबवभनत	13 गबरनत	13 बगतनर	26 बतयर	17½ बभवतरय	19½ बभवतर	11½ गबभवतयर	17½ गभतय	21 गभ	13 गभन
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ बवतर	11½ बवतरगन	16½ बवतरन	22½ नवत	25½ गवत	33 व	25 भव	19 गवभ	8½ वगभनतय	3½ बरतयगभन	4½ बरतगभन	18½ बरतभ	24½ बवतर	25½ बवतर	18½ बवरगत	18½ गभत	19½ गभत	13 गभन
	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवतरगन	25½ बवतर	18½ बवरगत	24½ गवत	23½ नवत	25½ गवत	19 गवभ	17 भवन	24 भवन	17 बरभय	18½ बतभत	4½ बरतगभन	10½ बवतरगन	19½ बवरगत	24½ बवरत	24½ भत	17½ नभत	25½ भत
	उ.फा. 1	16½ बवतयगर	25½ बवतर	16½ बवयगतर	22½ यवगत	31½ वत	17½ गवतन	9½ गवनभत	25 भव	25 भव	20 बरभ	20 बरभ	11½ बरतगभय	17½ बवतगरय	11½ बवतगनर	15½ बवतनरय	15½ नभतय	26½ भत	25½ भत
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबयभत	25½ बभत	16½ गबयभत	18 यवतगर	27 वतर	13 गवतनर	14 गनतर	29½ र	29½ र	24½ भव	24½ भव	16 गभवतय	16½ गबभतय	10½ गबनभत	14½ बभनतय	17½ तनवयर	28½ वतर	27½ वतर
	हस्त 1,2,3,4	20 बभयग	26½ बभत	18½ बभतयग	20 वगतयर	26 वतर	13 नवतरग	15 नतरग	27 तर	28½ र	23½ भव	24½ भव	18½ भगवय	19 बभयग	8½ बयभनतग	13½ बभनतय	16½ वनतयर	26½ वतर	27½ वतर
	चित्रा 1,2	20 बभन	19 गबभय	26½ बभत	28 वतर	11 गवनतयर	25 वतयर	27 तयर	14 गनतर	22 गतर	17 गभत	18½ गभव	15½ भवनय	16 बयभन	24 बभय	16½ गबतभय	19½ गवतयर	10½ गयवनतर	19½ वगतयर

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ य ग
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत य र
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	26 र ब त य
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	13 तबग न र
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	21 ग ब त र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	17 ग भ व त
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ भ व
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ भ न व य
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	17 य भ न
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पू.भा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
मीन	पू.भा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर वयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र ब व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

कन्या \ वर		तुला चित्रा 3,4	तुला स्वाती 1,2,3,4	तुला विशा. 1,2,3	वृश्चिक विशा. 4	वृश्चिक अनु. 1,2,3,4	वृश्चिक ज्ये. 1,2,3,4	धनु मूल 1,2,3,4	धनु पू.षा. 1,2,3,4	धनु उ.षा. 1,	मकर उ.षा. 2,3,4	मकर श्रव. 1,2,3,4	मकर धनि. 1,2,	कुम्भ धनि. 3,4	कुम्भ शत. 1,2,3,4	कुम्भ पू.भा. 1,2,3	मीन पू.भा. 4	मीन उ.भा. 1,2,3,4	मीन रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ दवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	28 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पू.षा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त.	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पू.भा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पू.भा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न—गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी—आधी घडी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः—आचार्य चूड़ामणौ—"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या—संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र—पौष—विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म—मासादिषु निषेधः— सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः—** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यो की आवश्यकता हो तो— एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग—अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः— ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय— दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निरसंदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह; जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यो में मरणाशौच— साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १½ मास, कुल वालों के मरण से २२½ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह—दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा—ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें— **"झष—चाप—कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्राद्दष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः—धर्म—धी—धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि—जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि—परिहारः— गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल—शोधनम्

पूज्यगुरुः— १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः—९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः— ४/८/१२
श्रेष्ठरविः— ३/६/१०/११
पूज्यरविः— २/५/९
विशेष पूज्य रविः— १/७
नेष्टरविः— ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः— ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः—१/२/३/५/६/७/९/१०/११/१२

कन्या—वरयोःतैलादि—लापन (बन्न)—दिन—संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि—वार—नक्षत्राणि—रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध—रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय—रहित—तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्त्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोडकर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा पुन. श. पू.फा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू. फा.	अभि.	उ. षा.	श्रव.	रेव.	उ. भा.	पू. भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ. फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रान्तिसाम्य-दोषचक्र

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे-मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि-दोषचक्र

९	२	४	६	५	१०	← सूर्य
१२	११	१	३.	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन-विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। *-कश्यपः*

लत्तादि-दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर-भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी-बंगाल-अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः- चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः-स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध-परिहारः-"पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
-(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है- **भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥**

अस्यापवादः- ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न-शुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :- व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः— लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** —पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद: भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे— दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्— उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष—शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि— पूवोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद—स्थानानि										
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद
६	३	६	२	२	२	६	६	६		दशविंशोपकाधिकंम्।
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः— लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः— कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्								
नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च— सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि—गासवेध भृगु—गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना— व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति—तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥ रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधू प्रवेश शुभ है।

वधू-प्रवेश-समय

वधूप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्धयादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधू द्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतदभिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. 3, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मू., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये–भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश–योनि–मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाप्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगडे आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पूभा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने–बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्ः– "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में षंड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च–** सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालया-रम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशया-रम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशा-ज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यमं
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः—मध्य—पूर्व—आग्नेय—दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्— अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः— पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्		
ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, ,पू.,षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ—भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब—लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता—विशेषेण लग्नम्:— सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोडकर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०—शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिए।

विशेषः— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे—हवने कृते शान्तिः— क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र—मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रंहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या फल	६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ क्वाथकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त्त–विचारः

हस्त, **मृग.**, श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः— जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः— न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्

सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ६	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः— उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्

दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.
घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।

चन्द्रफलम्ः— सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाऐं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३।।।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७।।	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८।।।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२।।	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा–मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽहिन चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः– प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कु.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	आषा.	पौ.	ज्ये.	भाद्र.	माघ	आश्वि.	श्राव.	वैशा.	चैत्र	फाल्गु.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३– इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.– इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.– ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं– **अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः।**

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य–पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– "**मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥**

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः– आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती **है– एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीथेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च							
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

तदत्राह–
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।

विशेष– यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीडा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

…………

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०७७ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109,

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द शर्मा, B.A. का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

—: समयशुद्धि :—

शुक्र-अस्त :- शुक्र इस वर्ष ज्ये. शु. ९ र. से आषा. कृ.———२ र. (३१ मई से ७ जून, २०२० ई.) तक अस्त रहेगा। इसके बाद माघ कृ. १३ मं. से सं. २०७७ वि. के अन्त (९ फर., २०२१ से १२ अप्रै., २०२१ ई.) तक भी शुक्र अस्त रहेगा।

गुरु-अस्त :- गुरु इस वर्ष पौष शु. ४ र. से माघ शु. ३ र. (१७ जन. से १४ फर., २०२१ ई.) तक अस्त रहेगा।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है। क्योंकि, अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिये गये कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त 'सं. २०७७ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पश्चिम में अस्त	३१ मई, '२०	३१ मई,'२०	३१ मई,'२०	३१ मई,'२०
शुक्र पूर्व में उदित	८ जून, '२०	८ जून, '२०	८ जून, '२०	९ जून, '२०
शुक्र पूर्व में अस्त	२४ फर., '२१	२० फर., '२१	१३ फर., '२१	४ फर., '२१
गुरु अस्त	१८ जन. '२१	१८ जन. '२१	१७ जन. '२१	१६ जन. '२१
गुरु उदित	१० फर.,'२१	११ फर.,'२१	१३ फर.,'२१	१७ फर.,'२१

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किये जाते। **ध्यान दें :-** मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि—इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्त में स्वीकार करें।

दैवज्ञ ध्यान दें—

'(विवाहलग्नों की संख्या में वृद्धि)

इन आगे दिये जा रहे शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों को देखने से आपको ज्ञात होगा कि—शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या अब हमारे पंचांग में पहले की अपेक्षा अधिक हो गयी है। दैवज्ञों के लिए इस अधिक संख्या का कारण यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

भारत के अधिकतर पंचांगों में लग्नस्थ चन्द्र-पापग्रह, षष्ठस्थ चन्द्र-शुक्र-लग्नेश, सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु तथा अष्टमस्थ चन्द्र-मंगल-लग्नेश या शुभग्रह होने पर परम्परया लग्नभंग माना जा रहा है। ऐसी स्थिति में उस लग्न को पंचांगकार तभी विवाहयोग्य मानते हैं, जबकि वहां लग्नभंग का परिहार हो। इस परम्परा में लग्नस्थ चन्द्र और पापीग्रह तथा षष्ठस्थ लग्नेश और सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु एवं अष्टमस्थ लग्नेश का परिहार बिल्कुल नहीं माना जाता और इन स्थितियों में उस लग्न को विवाह में सर्वथा अयोग्य दैवज्ञ लोग मानते चले आते रहे हैं। लेकिन संहिताओं में अनेक ऐसे विशेष स्पष्टवाक्य हमें मिलते हैं, जो सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र-गुरु, एकादशस्थ सूर्य-चन्द्र, सप्तमहीन केन्द्रस्थ या एकादशस्थ लग्नेश आदि दस ग्रहादि-स्थितियों को सभी प्रकार के लग्नभंगों का परिहारक घोषित करते हैं। लग्नभंग के इन संहितोक्त विशेष परिहारों में से यदि केवल एक भी परिहार लग्नकुण्डली में प्राप्त हो जाये, तब संहिताकारों का कहना है कि—उस एकमात्र परिहार से ही वहां लग्नभंगकारक सभी दोष पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। **ये परिहार दशमस्थ मंगल, चतुर्थस्थ राहु, तृतीयस्थ शुक्र, सप्तमस्थ गुरु-चन्द्र और द्वादशस्थ शनि की पूजा वाले दोषों का भी पूरी तरह निवारण करते हैं। यह भी इन परिहार-वाक्यों से सुस्पष्ट है।** संहिताओं के इन्हीं प्रबल प्रमाणवाक्यों के आधार पर अब हम लग्नभंगकारक दोषों के इन संहितोक्त विशेष परिहारों को भी दृष्टि में रखते हुए विवाहार्थ शुद्ध लग्नों का निर्णय करते हैं, जिससे शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या में यह वृद्धि हुई है।

ध्यान दें—पहले शुद्धविवाहलग्नों के आगे कोष्ठक में लग्नभंगकारक उन ग्रहों का निर्देश किया रहता था, जिनका वहां परिहार हुआ है। अब यह निर्देश अनावश्यक समझकर हमने छोड़ दिया है। विशेष स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक "मुहूर्त्तगजानन" के पृष्ठ १५१ पर दिया लेख '**लग्नभंगपरिहार (एक संशोधन)**' अवश्य पढ़िये। इस लेख का सारांश ४-५ वर्ष पूर्व पंचांग में भी मैंने दिया था।—**प्रियव्रतशर्मा**

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७७ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२० ई.	विवाह नक्षत्र	विवाहलग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वैशा. कृ. ९ गु.	वैशा. ४	अप्रै. १६	धनि.	मकर	मेष	मकर	ल. ११, १२ (निर्बल लग्न),
वैशा. शु. ८ शु.	वैशा. १९	मई १	मघा	सिंह	मेष	मकर	ल. ११, १२ (निर्बल लग्न),
वैशा. शु. ९ श.	वैशा. २०	मई २	मघा	सिंह	मेष	मकर	दि.ल. २, ६, गोधू., (८/५८ से १४/१० तक क्रां.सा.),
वैशा. शु. ११ चं.	वैशा. २२	मई ४	उ.फा.	कन्या	मेष	मकर	दि.ल. २, ५, गोधू., (मृत्यु-परिहार)
वैशा. शु. १३ मं.	वैशा. २३	मई ५	हस्त	कन्या	मेष	मकर	दि.ल. २,
वैशा. शु. १३ मं.	वैशा. २३	मई ५	चित्रा	कन्या	मेष	मकर	ल. गोधू.,
वैशा. शु. १४ बु.	वैशा. २४	मई ६	चित्रा	तुला	मेष	मकर	दि.ल. २,
वैशा. शु. १४ बु.	वैशा. २४	मई ६	स्वा.	तुला	मेष	मकर	दि.ल. ६,
ज्ये. कृ. १० र.	ज्ये. ४	मई १७	उ.भा.	मीन	वृष	मकर	दि.ल. ७, गोधू., १०, १,
ज्ये. कृ. ११ चं.	ज्ये. ५	मई १८	उ.भा.	मीन	वृष	मकर	दि.ल. ७ (१६/५७ तक),
ज्ये. कृ. ११ चं.	ज्ये. ५	मई १८	रेव.	मीन	वृष	मकर	दि.ल. ७ (१६/५७ बाद), गोधू.,
ज्ये. कृ. १२ मं.	ज्ये. ६	मई १९	रेव.	मीन	वृष	मकर	दि.ल. ७ (१७/३१ तक),
आषा. कृ. ६ गु.	ज्ये. २९	जून ११	धनि.	कुम्भ	वृष	मकर	दि.ल. ६, ७ (१६/३५ तक),
आषा. कृ. १० चं.	आषा. २	जून १५	रेव.	मीन	मिथुन	मकर	दि.ल. ७ (१६/२९ तक),
आषा. कृ. १० मं.	आषा. ३	जून १६	अश्वि.	मेष	मिथुन	मकर	दि.ल. ६ (१३/४१ तक), गोधू., १२, २, (मृत्यु-परिहार),
आषा. शु. ४ गु.	आषा. १२	जून २५	मघा	सिंह	मिथुन	मकर	दि.ल. ७, गोधू., १ (निर्बल लग्न), २, (मृत्यु-परिहार),
आषा. शु. ७ श.	आषा. १४	जून २७	उ.फा.	कन्या	मिथुन	मकर	ल. ११ (२३/६ बाद), १, २ (२६/५४ तक),
आषा. शु. ९ चं.	आषा. १६	जून २९	चित्रा	कन्या/तुला	मिथुन	मकर	दि.ल. ५, ७, गोधू., ११, २
आषा. शु. १० मं.	आषा. १७	जून ३०	स्वा.	तुला	मिथुन	धनु	दि.ल. ५, गोधू., ११, १, २ (२८/४ तक),
आषा. शु. १२ गु.	आषा. १९	जुला. २	अनु.	वृश्चिक	मिथुन	धनु	दि.ल. ५, ७ (निर्बल लग्न), गोधू., ११, १(२५/१३ तक),
श्राव. कृ. १ चं.	आषा. २३	जुला. ६	श्रव.	मकर	मिथुन	धनु	ल. १, २,
श्राव. कृ. २ मं.	आषा. २४	जुला. ७	श्रव.	मकर	मिथुन	धनु	दि.ल. ५, ७ (निर्बल लग्न), गोधू.,
श्राव. कृ. ३ बु.	आषा. २५	जुला. ८	धनि.	मकर/कुम्भ	मिथुन	धनु	दि.ल. ५ (९/१९ बाद), ७ (निर्बल लग्न), गोधू., १ (२५/१५ तक),
श्राव. कृ. ७ र.	आषा. २९	जुला. १२	रेव.	मीन	मिथुन	धनु	दि.ल. ५ (८/१८ बाद), ७ (निर्बल लग्न), गोधू., ११, १, २,
श्राव. कृ. ८ चं.	आषा. ३०	जुला. १३	रेव.	मीन	मिथुन	धनु	दि.ल. ५,
श्राव. कृ. ८ चं.	आषा. ३०	जुला. १३	अश्वि.	मेष	मिथुन	धनु	दि.ल. ७ (निर्बल लग्न), गोधू. ११, २,
श्राव. कृ. ९ मं.	आषा. ३१	जुला. १४	अश्वि.	मेष	मिथुन	धनु	दि.ल. ५, (मृत्यु-परिहार),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७७ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२० ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
श्राव. कृ. १२ शु.	श्राव. २	जुला. १७	रोहि.	वृष	कर्क	धनु	दि.ल. ५ (९/१० तक), (९/१० से १८/८ तक क्रां.सा.), (मृत्यु-परिहार),
श्राव. शु. ३ गु.	श्राव. ८	जुला. २३	मघा	सिंह	कर्क	धनु	दि.ल. ७ (निर्बल लग्न),
श्राव. शु. ५ श.	श्राव. १०	जुला. २५	हस्त	कन्या	कर्क	धनु	दि.ल. ७ (निर्बल लग्न), गोधू., ११, १, २,
श्राव. शु. ६ र.	श्राव. ११	जुला. २६	हस्त	कन्या	कर्क	धनु	दि.ल. ५ (१२/३७ तक) (निर्बल लग्न),
श्राव. शु. ६ र.	श्राव. ११	जुला. २६	चित्रा	कन्या/तुला	कर्क	धनु	दि.ल. ७ (निर्बल लग्न), गोधू., ११, १ (२३/४९ तक), २, (मृत्यु-परिहार),
श्राव. शु. ७ च.	श्राव. १२	जुला. २७	स्वा.	तुला	कर्क	धनु	ल. गोधू., ११, २, (मृत्यु-परिहार),
श्राव. शु. ९ मं.	श्राव. १३	जुला. २८	स्वा.	तुला	कर्क	धनु	दि.ल. ५,
श्राव. शु. १० बु.	श्राव. १४	जुला. २९	अनु.	वृश्चिक	कर्क	धनु	दि.ल. ५ (८/३३ बाद), ७ (निर्बल लग्न), रा.ल. ११ (२१/१९ बाद), १, (१५/५ से २१/१९ तक क्रां.सा.)
श्राव. शु. ११ गु.	श्राव. १५	जुला. ३०	अनु.	वृश्चिक	कर्क	धनु	दि.ल. ५ (७/४० तक),
श्राव. शु. १५ चं.	श्राव. १९	अग. ३	श्रव.	मकर	कर्क	धनु	दि.ल. ५ (७/१९ बाद), ७, ८ (निर्बल लग्न), गोधू., ११, १,
भाद्र. कृ. १ मं.	श्राव. २०	अग. ४	श्रव.	मकर	कर्क	धनु	दि.ल. ५ (८/११ तक),
भाद्र. कृ. ४ शु.	श्राव. २३	अग. ७	उ.भा.	मीन	कर्क	धनु	दि.ल. ८ (१३/३३ बाद) (निर्बल लग्न), गोधू. ११, १,
भाद्र. कृ. ५ श.	श्राव. २४	अग. ८	उ.भा.	मीन	कर्क	धनु	दि.ल. ५, ७, ८ (निर्बल लग्न),
भाद्र. कृ. ९ गु.	श्राव. २९	अग. १३	रोहि.	वृष	कर्क	धनु	दि.ल. ५, गोधू., ११, १,
भाद्र. शु. २ गु.	भाद्र. ५	अग. २०	उ.फा.	सिंह	सिंह	धनु	ल. २ (२३/५० बाद) (निर्बल लग्न),
भाद्र. शु. ३ शु.	भाद्र. ६	अग. २१	उ.फा.	कन्या	सिंह	धनु	दि.ल. ८ (निर्बल लग्न),
भाद्र. शु. ३ शु.	भाद्र. ६	अग. २१	हस्त	कन्या	सिंह	धनु	ल. २ (निर्बल लग्न),
भाद्र. शु. ४ श.	भाद्र. ७	अग. २२	चित्रा	कन्या	सिंह	धनु	ल. २ (निर्बल लग्न),
भाद्र. शु. ५ र.	भाद्र. ८	अग. २३	चित्रा	तुला	सिंह	धनु	दि.ल. ६, ८ (निर्बल लग्न),
भाद्र. शु. ५ र.	भाद्र. ८	अग. २३	स्वा.	तुला	सिंह	धनु	ल. गोधू., १२, २ (निर्बल लग्न), (२८/४९ बाद क्रां.सा.),
भाद्र. शु. ६ चं.	भाद्र. ९	अग. २४	स्वा.	तुला	सिंह	धनु	दि.ल. ६, ८ (निर्बल लग्न), (९/१२ तक क्रां.सा.),
भाद्र. शु. ७ मं.	भाद्र. १०	अग. २५	अनु.	वृश्चिक	सिंह	धनु	ल. गोधू., १२,
भाद्र. शु. १२ र.	भाद्र. १५	अग. ३०	श्रव.	मकर	सिंह	धनु	ल. गोधू., १२, २ (निर्बल लग्न), (१५/६ तक सूर्यवेध),
भाद्र. शु. १३ चं.	भाद्र. १६	अग. ३१	श्रव.	मकर	सिंह	धनु	दि.ल. ६, ८ (१३/२१ तक) (निर्बल लग्न),
भाद्र. शु. १३ चं.	भाद्र. १६	अग. ३१	धनि.	मकर	सिंह	धनु	ल. गोधू., १२, २ (निर्बल लग्न),
द्वि.(शु.)आश्वि.शु. ३ चं.	कार्त्ति. ३	अक्तू. १९	अनु.	वृश्चिक	तुला	धनु	दि.ल. ९,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु. ४ मं.	कार्त्ति. ४	अक्तू. २०	मूल	धनु	तुला	धनु	ल. ५ (२६/१२ बाद),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७७ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२० ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
द्वि.(शु.)आश्वि.शु. ५ बु.	कार्त्ति. ५	अक्तू. २१	मूल	धनु	तुला	धनु	ल. गोधू.,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु. ८ श.	कार्त्ति. ८	अक्तू. २४	धनि.	मकर	तुला	धनु	ल. ५ (२७/४ बाद),
द्वि.(शु.)आश्वि.शु. ९ र.	कार्त्ति. ९	अक्तू. २५	धनि.	मकर/कुम्भ	तुला	धनु	दि.ल. ९, ११ (१५/२५ तक) (निर्बल लग्न), गोधू.,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु. १२ बु.	कार्त्ति. १२	अक्तू. २८	उ.भा.	मीन	तुला	धनु	दि.ल. ९, ११ (निर्बल लग्न), गोधू., ५,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु. १३ गु.	कार्त्ति. १३	अक्तू. २९	उ.भा.	मीन	तुला	धनु	दि.ल. ९ (११/५९ तक),
द्वि.(शु.)आश्वि.शु. १४ शु.	कार्त्ति. १४	अक्तू. ३०	अश्वि.	मेष	तुला	धनु	दि.ल. ११ (१४/५७ बाद) (निर्बल लग्न),
द्वि.(शु.)आश्वि.शु. १५ श.	कार्त्ति. १५	अक्तू. ३१	अश्वि.	मेष	तुला	धनु	दि.ल. ९, ११ (निर्बल लग्न),
कार्त्ति. कृ. २ चं.	कार्त्ति. १७	नवं. २	रोहि.	वृष	तुला	धनु	ल. ५,
कार्त्ति. कृ. ८ चं.	कार्त्ति. २४	नवं. ९	मघा	सिंह	तुला	धनु	दि.ल. ९ (१०/५४ तक), गोधू., (१०/५४ से १६/२० तक क्रां.सा.),
कार्त्ति. कृ. १२ गु.	कार्त्ति. २७	नवं. १२	हस्त	कन्या	तुला	धनु	दि.ल. ९, ११ (निर्बल लग्न), गोधू.,
कार्त्ति. शु. १ चं.	मार्ग. २	नवं. १६	अनु.	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	दि.ल. ९, ११ (निर्बल लग्न),
कार्त्ति. शु. ३ मं.	मार्ग. ३	नवं. १७	मूल	धनु	वृश्चिक	धनु	दि.ल. ११ (निर्बल लग्न), ५, ७, (मृत्यु-परिहार),
कार्त्ति. शु. ६ शु.	मार्ग. ६	नवं. २०	श्रव.	मकर	वृश्चिक	धनु/मकर	दि.ल. ९ (९/२२ बाद), ११, गोधू., ३, ५ (निर्बल लग्न), ७ (२१/४ तक), (२१/४ बाद क्रां.सा.),
कार्त्ति. शु. ७ श.	मार्ग. ७	नवं. २१	धनि.	मकर	वृश्चिक	मकर	दि.ल. ११, गोधू., ३,(१२/२ तक क्रां.सा.),
कार्त्ति. शु. ८ र.	मार्ग. ८	नवं. २२	धनि.	कुम्भ	वृश्चिक	मकर	दि.ल. ९ (९/३६ बाद) (निर्बल लग्न),
कार्त्ति. शु. १० मं.	मार्ग. १०	नवं. २४	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	मकर	ल. गोधू., ३, ५ (निर्बल लग्न), ७,
कार्त्ति. शु. ११ बु.	मार्ग. ११	नवं. २५	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	मकर	दि.ल. ९ (निर्बल लग्न), ११,
कार्त्ति. शु. १२ शु.	मार्ग. १३	नवं. २७	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	मकर	दि.ल. ९ (निर्बल लग्न), ११, रा.ल. ३, ५ (२४/२२ तक) (निर्बल लग्न),
कार्त्ति. शु. १५ चं.	मार्ग. १६	नवं. ३०	रोहि.	वृष	वृश्चिक	मकर	दि.ल. ९ (निर्बल लग्न), ११, रा.ल. ३, ५ (निर्बल लग्न), ७,
मार्ग. कृ. १ मं.	मार्ग. १७	दिसं. १	रोहि.	वृष	वृश्चिक	मकर	दि.ल. ९ (८/३० तक) (निर्बल लग्न),
मार्ग. कृ. ७ चं.	मार्ग. २३	दिसं. ७	मघा	सिंह	वृश्चिक	मकर	दि.ल. ९ (निर्बल लग्न),
मार्ग. कृ. ९ बु.	मार्ग. २५	दिसं. ९	हस्त	कन्या	वृश्चिक	मकर	दि.ल. ११ (१२/३२ बाद), गोधू., ३, ५ (निर्बल लग्न),
मार्ग. कृ. १० गु.	मार्ग. २६	दिसं. १०	चित्रा	कन्या/तुला	वृश्चिक	मकर	ल. गोधू., ३, ५ (निर्बल लग्न), (२६/१४ बाद गुरु का नीचांशस्थ दोष),

आगामी सं. २०७८ वि. में गुरु-शुक्रास्त—आगामी सं. २०७८ वि. में गुरु लगभग २३ फर., २०२२ ई. से २७ मार्च, २०२२ ई. तक अस्त रहेगा। शुक्र संवत् के आरम्भ से १८ अप्रै., २०२१ ई. तक अस्त रहेगा। इसके बाद शुक्र लगभग ६ जन., २०२२ ई. से १२ जन., २०२२ ई. तक अस्त रहेगा।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में मृत्युबाण-वेध-युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिये जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिये जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गये हैं— *मृत्युबाण का परिहार*—यहां विवाहमुहूर्त्तों में मृत्युबाण को तभी दोषकारक (त्याज्य) माना गया है, जबकि वह बुधवार को घटित हो, क्योंकि मुहूर्त्तकारों ने इसे इसी वार को त्याज्य लिखा है—"बुधे मृत्युं परित्यजेत्।" *सौम्यग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के दोष का परिहार*—मुहूर्त्तकारों ने क्रूरग्रह का वेध होने पर पूर्णनक्षत्र को त्याज्य लिखा है, लेकिन शुभ ग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के एक चरण को ही विद्ध माना गया है। जैसे—**वेधक नक्षत्र** के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ चरण में स्थित शुभ ग्रह विद्ध नक्षत्र के क्रमशः चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय, प्रथम चरण को ही वेधता है। लेकिन 'मुहूर्त्तमार्त्तण्ड' कार एवं वशिष्ठ का मत है कि—यदि लग्नेश एकादश में हो, चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो, लग्न में चन्द्ररहित कोई शुभग्रह हो या कालहोरा शुभग्रह की हो तो वेधदोष समाप्त हो जाता है—"**लग्नेशे भवगेऽथवा शशिनि सद्दृष्टे शुभे वांऽगगे। होरायां च शुभस्य वा व्यधमयं नास्तीति पूर्वे जगुः॥**" हमने शुभग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के मुहूर्त्तशोधन में इस मत का भी प्रयोग किया है। वैसे तो क्रूरग्रह-विद्ध नक्षत्र-दोष का भी परिहार इस मतानुसार युक्तिसंगत सिद्ध होता है। *युतिदोष का परिहार*—नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। *कर्त्तरीदोष का परिहार*—मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। *दग्धातिथि का परिहार*—मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। *षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार*—नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। *अष्टमस्थ मंगल का परिहार*—मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। *षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार*—शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तो उसका भी कोई परिहार नहीं है।

ध्यान रहे—उपरोक्त लग्नभंग के सामान्य (अपूर्ण) परिहार हैं, जिन्हें पंचांगकार परम्परया प्रयोग में लाते रहे हैं। लेकिन इनसे अतिरिक्त अन्य लग्नभंग के विशेष परिहार भी हैं, जिनका हमने सं. २०७० वि. से लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। इसकी विस्तृत जानकारी के लिए मेरी पुस्तक "**मुहूर्त्तगजानन**" में दिया "**लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)**" लेख पढ़ना चाहिए। यह लेख सं. २०७० वि. के पंचांग में भी प्रकाशित हुआ है।

वि. सं. 2078 में (13 अप्रै., 2021 ई. से 1 अप्रै., 2022 ई. तक) सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त

प्रतिवर्ष हमें ऐसे दैवज्ञों एवं अन्य अनेक लोगों के Phone Calls/पत्र आते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि—आगामी वर्ष में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* किन-किन दिनों में सम्भावित हैं। उनकी इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए यह स्तम्भ प्रारम्भ किया गया है। इससे यह पर्याप्त स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है कि—आगामी वर्ष के किन-किन दिनों में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* सम्भावित हैं और किन-किन दिनों में नहीं। **यहां जिन तारीखों के आगे गुणनचिह्न (×) दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त बिल्कुल नहीं बनते। इनके अतिरिक्त जहां गुणनचिह्न नहीं दिया है, उन दिनों में शुद्ध मुहूर्त्त बनने की पर्याप्त सम्भावना है।** —प्रियव्रत शर्मा

तारीख	अप्रै.'21	मई '21	जून '21	जुला.'21	अग.'21	सितं.'21	अक्टू.'21	नवं.'21	दिसं.'21	जन.'22	फर.'22	मार्च '22	अप्रै.'22	तारीख
1	—						×		×	×	×	×	×	1
2	—						×		×	×		×	—	2
3	—						×	×	×	×		×	—	3
4	—					×	×	×	×	×		×	—	4
5	—					×	×	×		×		×	—	5
6	—				×	×	×			×		×	—	6
7	—		×	×	×	×	×			×		×	—	7
8	—		×	×	×					×		×	—	8
9	—	×	×	×	×					×		×	—	9
10	—	×	×	×						×		×	—	10
11	—	×	×							×	×	×	—	11
12	—	×								×	×	×	—	12
13	×	×								×		×	—	13
14	×	×	×						×	×		×	—	14
15	×		×	×	×	×		×	×			×	—	15
16	×			×	×	×	×	×	×			×	—	16
17	×						×		×			×	—	17
18	×								×			×	—	18
19	×								×			×	—	19
20	×					×			×		×	×	—	20
21	×					×			×		×	×	—	21
22						×			×		×	×	—	22
23						×			×		×	×	—	23
24						×			×		×	×	—	24
25						×			×		×	×	—	25
26						×			×		×	×	—	26
27						×			×		×	×	—	27
28						×			×		×	×	—	28
29						×			×		—	×	—	29
30						×			×	×	—	×	—	30
31	—		—			—		—	×	×	—	×	—	31

इस वर्ष (सं. 2078 वि. में) इन निम्नांकित प्रमुख दोषों के कारण निम्नांकित ये तारीखें विवाहकृत्य तथा अन्य सभी मंगलकृत्यों में स्पष्टरूप में सर्वथा वर्जित होंगी—

शुक्र पूर्व लोप दोष

(संवत् के प्रारम्भ से 21 अप्रैल 2021 ई. तक)

श्राद्ध(महालय)दोष

(20 सितं. से 6 अक्टू., 2021 ई. तक)

धनुस्थ सूर्यदोष

(15 दिसं., 2021 से 13 जन., 2022 ई. तक)

शुक्र पश्चिम लोप दोष

(3 जन. से 14 जन., 2022 ई. तक)

गुरुलोप-दोष

(20 फर. से 29 मार्च, 2022 ई. तक)

मीनस्थ सूर्यदोष

(14 मार्च से संवत् के अन्त तक)

ध्यान दें—इन उपरोक्त तारीखों तथा अन्य उन तारीखों को भी, जो विवाहकृत्य में वर्जित हैं, इस बायीं ओर दिये कोष्ठक में गुणनचिह्न से अंकित किया गया है।

सं. २०७७ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०७७ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाहमुहूर्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। संवत् २०७७ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त इस पंचांग में पृ 261 पर दिये गये हैं। किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिये गये 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं—इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे—मेषराशि वाले लड़के और वृषराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०७७ वि. में जुलाई (२०२० ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है?—यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,—लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे जुलाई, २०२० ई. की ६, ७, ८, १२, १३, १४ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि वृष के आगे जुलाई की २, ६, ७, ८, १२, १३, १४, १७, २५, २६, २७, २८, २९, ३० तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि जुलाई, २०२० ई. में मेष राशि वाले लड़के और वृष राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार जुलाई की केवल ६, ७, ८, १२, १३, १४ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि जुलाई की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-वृष) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं। इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिये। क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है। ध्यान दें—लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हों तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है। इस वर्ष गुरु स्वराशि धनु एवं नीच राशि मकर में विचरण करेगा, अतः मकर राशि का गुरु ही इस वर्ष पूज्य रहेगा।

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७७ वि.) (२५ मार्च, सन् २०२० ई. से १२ अप्रै., सन् २०२१ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है—
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है—	लड़की	
मेष	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, ६, १७, १८, १९; जून ११, १५, १६, २५, २७, २९, ३०; जुला. ६, ७, ८, १२, १३, १४; अग. २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१; अक्तू. २०, २१, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; नवं. २, ९, १२,	ज्येष्ठ, कार्त्तिक,	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, ६, १७, १८, १९; जून ११, १५, १६, २५, २७, २९, ३०; जुला. ६, ७, ८, १२, १३, १४, १७, २३, २५, २६, २७, २८; अग. ३, ४, ७, ८, १३, २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१; अक्तू. २०, २१, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; नवं. २, ९, १२, १७, २०, २१, २२, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ७, ९, १०,	---
वृष	मई १७, १८, १९; जून ११, १५, १६, २७, २९, ३०; जुला. २, ६, ७, ८, १२, १३, १४, १७, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३; अक्तू. १९, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; नवं. २, १२, १६, २०, २१, २२, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ९, १०,	ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, माघ,	अप्रै. १६; मई ४, ५, ६, १७, १८, १९; जून ११, १५, १६, २७, २९, ३०; जुला. २, ६, ७, ८, १२, १३, १४, १७, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१; अक्तू. १९, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; नवं. २, १२, १६, २०, २१, २२, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ९, १०,	---

नाम/जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७७ वि.) (२५ मार्च, सन् २०२० ई. से १२ अप्रै., सन् २०२१ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है—
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है—	लड़की	
मिथुन	मई १, २, ६; जून १५, १६, २५, २९ (१८/२६ बाद), ३०; जुला. २, ८ (१२/३१ बाद), १२, १३, १४, १७, २३, २६ (२३/४९ बाद), २७, २८, २९, ३०; अग. ७, ८, १३, २०, २३, २४, २५; अक्तू. १९, २०, २१, २५ (१५/२६ बाद), २८, २९, ३०, ३१; नवं. २, ९, १६, १७, २२, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ७, १० (२१/५२ बाद),	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन,	मई १, २, ६, १७, १८, १९; जून ११, १५, १६, २५, २९ (१८/२६ बाद), ३०; जुला. २, ८ (१२/३१ बाद), १२, १३, १४, १७, २३, २६ (२३/४९ बाद), २७, २८, २९, ३०; अग. ७, ८, १३, २०, २३, २४, २५; अक्तू. १९, २०, २१, २५ (१५/२६ बाद), २८, २९, ३०, ३१; नवं. २, ९, १६, १७, २२, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ७, १० (२१/५२ बाद),	मकर
कर्क	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, १७, १८, १९; जुला. १७, २३, २५, २६ (२३/४९ तक), २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३, २०, २१, २२, २५, ३०, ३१; नवं. १६, १७, २०, २१, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ७, ९, १० (२१/५२ तक),	माघ,	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, १७, १८, १९; जून १५, १६, २५, २७, २९ (१८/२६ तक); जुला. २, ६, ७, ८ (१२/३१ तक), १२, १३, १४, १७, २३, २५, २६ (२३/४९ तक), २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३, २०, २१, २२, २५, ३०, ३१; अक्तू. १९, २०, २१, २४, २५ (१५/२६ तक), २८, २९, ३०, ३१; नवं. २, ९, १२, १६, १७, २०, २१, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ७, ९, १० (२१/५२ तक),	- - -
सिंह	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, ६; जून ११, १६, २५, २७, २९, ३०; जुला. ६, ७, ८, १३ (११/१४ बाद), १४; अग. २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१; अक्तू. २०, २१, २४, २५, ३०, ३१; नवं. २, ९, १२,	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, ६; जून ११, १६, २५, २७, २९, ३०; जुला. ६, ७, ८, १३ (११/१४ बाद), १४, १७, २३, २५, २६, २७, २८; अग. ३, ४, १३, २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१; अक्तू. २०, २१, २४, २५, ३०, ३१; नवं. २, ९, १२, १७, २०, २१, २२, २७, ३०; दिसं. १, ७, ९, १०,	- - -
कन्या	मई १७, १८, १९; जून ११, १५, २५, २७, २९, ३०; जुला. २, ६, ७, ८, १२, १३ (११/१४ तक), १७, २३, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३; अक्तू. १९, २४, २५, २८, २९; नवं. २, ९, १२, १६, २०, २१, २२, २४, २५, ३०; दिसं. १, ७, ९, १०,	ज्येष्ठ, आश्विन, कार्त्तिक, माघ,	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, ६, १७, १८, १९; जून ११, १५, २५, २७, २९, ३०; जुला. २, ६, ७, ८, १२, १३ (११/१४ तक), १७, २३, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३, २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१; अक्तू. १९, २४, २५, २८, २९; नवं. २, ९, १२, १६, २०, २१, २२, २४, २५, ३०; दिसं. १, ७, ९, १०,	- - -
तुला	मई १, २, ४, ५, ६; जून १५, १६, २५, २७, २९, ३०; जुला. २, ८ (१२/३१ बाद), १२, १३, १४, २३, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ७, ८, २०, २१, २२, २३, २४, २५; अक्तू. १९, २०, २१, २५ (१५/२६ बाद), २८, २९, ३०, ३१; नवं. ९, १२, १६, १७, २२, २४, २५, २७; दिसं. ७, ९, १०,	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन	मई १, २, ४, ५, ६, १७, १८, १९; जून ११, १५, १६, २५, २७, २९, ३०; जुला. २, ८ (१२/३१ बाद), १२, १३, १४, २३, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ७, ८, २०, २१, २२, २३, २४, २५; अक्तू. १९, २०, २१, २५ (१५/२६ बाद), २८, २९, ३०, ३१; नवं. ९, १२, १६, १७, २२, २४, २५, २७; दिसं. ७, ९, १०,	मकर

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७७ वि.) (२५ मार्च, सन् २०२० ई. से १२ अप्रै., सन् २०२१ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है—
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है—	लड़की	
वृश्चिक	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, ६, १७, १८, १९; जुला. १७, २३, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३, २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१; नवं. १६, १७, २०, २१, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ७, ९, १०,	ज्येष्ठ,	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, ६, १७, १८, १९; जून १५, १६, २५, २७, २९, ३०; जुला. २, ६, ७, ८ (१२/३१ तक), १२, १३, १४, १७, २३, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३, २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१; अक्तू. १९, २०, २१, २४, २५ (१५/२६ तक), २८, २९, ३०, ३१; नवं. २, ९, १२, १६, १७, २०, २१, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ७, ९, १०,	- - -
धनु	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, ६; जून ११, १६, २५, २७, २९, ३०; जुला. २, ६, ७, ८, १३ (११/१४ बाद), १४; अग. २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१; अक्तू. १९; २०, २१, २४, २५, ३०, ३१; नवं. २, ९, १२,	आषाढ़, माघ,	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, ६; जून ११, १६, २५, २७, २९, ३०; जुला. २, ६, ७, ८, १३ (११/१४ बाद), १४, १७, २३, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, १३, २०, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१; अक्तू. १९, २०, २१, २४, २५, ३०, ३१; नवं. २, ९, १२, १६, १७, २०, २१, २२, २७, ३०; दिसं. १, ७, ९, १०,	- - -
मकर	मई १७, १८, १९; जून ११, १५, २७, २९, ३०; जुला. २, ६, ७, ८, १२, १३ (११/१४ तक), १७, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३, अक्तू. १९, २०, २१, २४, २५, २८, २९; नवं. २, १२, १६, १७, २०, २१, २२, २४, २५, ३०; दिसं. १, ९, १०,	ज्येष्ठ, आश्विन, माघ, फाल्गुन,	अप्रैल १६, मई ४, ५, ६, १७, १८, १९; जून ११, १५, २७, २९, ३०; जुला. २, ६, ७, ८, १२, १३ (११/१४ तक), १७, २५, २६, २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३, २१, २२, २३, २४, २५, ३०, ३१; अक्तू. १९, २०, २१, २४, २५, २८, २९; नवं. २, १२, १६, १७, २०, २१, २२, २४, २५, ३०; दिसं. १, ९, १०,	- - -
कुम्भ	अप्रैल १६; मई १, २, ६; जून १५, १६, २५, २९ (१८/२६ बाद), ३०; जुला. २, ६, ७, ८, १२, १३, १४, २३, २६ (२३/४९ बाद), २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, २०, २३, २४, २५, ३०, ३१; अक्तू. १९, २०, २१, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ९, १६, १७, २०, २१, २२, २४, २५, २७; दिसं. ७, १० (२१/५२ बाद),	आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १६; मई १, २, ६, १७, १८, १९; जून ११, १५, १६, २५, २९ (१८/२६ बाद), ३०; जुला. २, ६, ७, ८, १२, १३, १४, २३, २६ (२३/४९ बाद), २७, २८, २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, २०, २३, २४, २५, ३०, ३१; अक्तू. १९, २०, २१, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; नवं. ९, १६, १७, २०, २१, २२, २४, २५, २७; दिसं. ७, १० (२१/५२ बाद),	मकर
मीन	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, १७, १८, १९; जून ११; जुला. १७, २३, २५, २६ (२३/४९ तक), २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३, २०, २१, २२, २५, ३०, ३१; नवं. १६, १७, २०, २१, २२, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ७, ९, १० (२१/५२ तक),	आश्विन,	अप्रैल १६; मई १, २, ४, ५, १७, १८, १९; जून ११, १५, १६, २५, २७, २९ (१८/२६ तक); जुला. २, ६, ७, ८, १२, १३, १४, १७, २३, २५, २६ (२३/४९ तक), २९, ३०; अग. ३, ४, ७, ८, १३, २०, २१, २२, २५, ३०, ३१; अक्तू. १९, २०, २१, २४, २५, २८, २९, ३०, ३१; नवं. २, ९, १२, १६, १७, २०, २१, २२, २४, २५, २७, ३०; दिसं. १, ७, ९, १० (२१/५२ तक),	- - -

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७७ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाये होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त-सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि—अमुक नक्षत्र, अमुक दिन, अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी लग्नभंग-परिहार नहीं हो सकता, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे*—यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०७७ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिये जा रहे हैं।— प्रियव्रत शर्मा।

तिथि-वार				तारीख २०२० ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ से वैशा. कृ. ५ र. (२५ मार्च से १२ अप्रै., २०२० ई.) तक मीनस्थ रवि।							
वैशा.	कृ.	६	चं.	अप्रैल	१३	मूल	संक्रान्ति,
वैशा.	कृ.	७	मं.	अप्रैल	१४	उ.षा.	शनियुति अपरिहार्य,
वैशा.	कृ.	८	बु.	अप्रैल	१५	उ.षा.	शनियुति अपरिहार्य,
वैशा.	कृ.	८	बु.	अप्रैल	१५	श्रव.	भौमयुति अपरिहार्य,
वैशा.	कृ.	९	गु.	अप्रैल	१६	श्रव.	भौमयुति अपरिहार्य,
वैशा.	कृ.	१०	शु.	अप्रैल	१७	धनि.	लग्नाभाव,
वैशा.	शु.	२	श.	अप्रैल	२५	रोहि.	शनिवेध,
वैशा.	शु.	३	र.	अप्रैल	२६	रोहि.	शनिवेध,
वैशा.	शु.	३	र.	अप्रैल	२६	मृग.	शनिवेध,
वैशा.	शु.	४	चं.	अप्रैल	२७	मृग.	शनिवेध,
वैशा.	शु.	१०	र.	मई	३	उ.फा.	भद्रा,
वैशा.	शु.	११	चं.	मई	४	हस्त	लग्नाभाव,
वैशा.	शु.	१५	गु.	मई	७	स्वा.	भद्रा, व्यतीपात,
ज्ये.	कृ.	१	शु.	मई	८	अनु.	सूर्यवेध,
ज्ये.	कृ.	२	श.	मई	९	अनु.	सूर्यवेध,
ज्ये.	कृ.	२	श.	मई	९	मूल	भद्रा, ग्रहणनक्षत्र,
ज्ये.	कृ.	३	र.	मई	१०	मूल	ग्रहणनक्षत्र,

तिथि-वार				तारीख २०२० ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
ज्ये.	कृ.	४	चं.	मई	११	उ.षा.	कालाल्पता,
ज्ये.	कृ.	५	मं.	मई	१२	उ.षा.	शनियुति अपरिहार्य,
ज्ये.	कृ.	५	मं.	मई	१२	श्रव.	लग्नाभाव,
ज्ये.	कृ.	६	बु.	मई	१३	श्रव.	मासान्त,
ज्ये.	कृ.	७	गु.	मई	१४	श्रव.	संक्रान्ति,
ज्ये.	कृ.	७	गु.	मई	१४	धनि.	संक्रान्ति,
ज्ये.	कृ.	८	शु.	मई	१५	धनि.	लग्नाभाव,
ज्ये.	शु.	१	श.	मई	२३	रोहि.	शनिवेध,
ज्ये.	शु.	१	श.	मई	२३	मृग.	कालाल्पता,
ज्ये.	शु.	२	र.	मई	२४	मृग.	शनिवेध,
ज्ये.	शु.	३	चं.	मई	२५	मृग.	शनिवेध,
शुक्रास्त—ज्ये.शु. ६ गु. से आषा. कृ. ५ बु. (२८ मई से १० जून, २०२० ई.) तक शुक्र वार्धक्य, अस्त एवं बाल्यदोष।							
आषा.	कृ.	८	श.	जून	१३	उ.भा.	मासान्त,
आषा.	कृ.	९	र.	जून	१४	उ.भा.	संक्रान्ति,
आषा.	कृ.	९	र.	जून	१४	रेव.	संक्रान्ति,
आषा.	कृ.	१०	चं.	जून	१५	अश्वि.	भद्रा,
आषा.	कृ.	११	बु.	जून	१७	अश्वि.	लग्नाभाव,

तिथि-वार				तारीख २०२० ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
आषा.	शु.	५	शु.	जून	२६	मघा.	लग्नाभाव,
आषा.	शु.	८	र.	जून	२८	उ.फा.	भद्रा,
आषा.	शु.	८	र.	जून	२८	हस्त	भौमवेध,
आषा.	शु.	९	चं.	जून	२९	हस्त	भौमवेध,
आषा.	शु.	१०	मं.	जून	३०	चित्रा	लग्नाभाव,
आषा.	शु.	११	बु.	जुला.	१	अनु.	लग्नाभाव,
आषा.	शु.	१३	शु.	जुला.	३	मूल	केतुयुति अपरिहार्य,
आषा.	शु.	१४	श.	जुला.	४	मूल	केतुयुति अपरिहार्य,
आषा.	शु.	१५	र.	जुला.	५	उ.षा.	वैधृति,
श्राव.	कृ.	१	चं.	जुला.	६	उ.षा.	शनियुति अपरिहार्य,
श्राव.	कृ.	२	मं.	जुला.	७	धनि.	भद्रा,
श्राव.	कृ.	६	श.	जुला.	११	उ.भा.	भौमयुति अपरिहार्य,
श्राव.	कृ.	७	र.	जुला.	१२	उ.भा.	भौमयुति अपरिहार्य,
श्राव.	कृ.	११	गु.	जुला.	१६	रोहि.	संक्रान्ति,
श्राव.	कृ.	१२	शु.	जुला.	१७	मृग.	शनिवेध,
श्राव.	शु.	२	बु.	जुला.	२२	मघा	व्यतीपात,
श्राव.	शु.	४	शु.	जुला.	२४	उ.फा.	भौमवेध,
श्राव.	शु.	५	श.	जुला.	२५	उ.फा.	भौमवेध,
श्राव.	शु.	७	चं.	जुला.	२७	चित्रा	लग्नाभाव,

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७७ वि.)

तिथि-वार				तारीख २०२० ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
श्राव.	शु.	१२	शु.	जुला.	३१	मूल	केतुयुति अपरिहार्य,
श्राव.	शु.	१३	श.	अग.	१	मूल	वैधृति,
श्राव.	शु.	१४	र.	अग.	२	उ.षा.	शनियुति अपरिहार्य,
श्राव.	शु.	१५	चं.	अग.	३	उ.षा.	भद्रा, शनियुति अपरिहार्य,
भाद्र.	कृ.	१	मं.	अग.	४	धनि.	सूर्यवेध,
भाद्र.	कृ.	२	बु.	अग.	५	धनि.	सूर्यवेध,
भाद्र.	कृ.	५	श.	अग.	८	रेव.	भौमयुति अपरिहार्य,
भाद्र.	कृ.	६	र.	अग.	९	रेव.	भौमयुति अपरिहार्य,
भाद्र.	कृ.	६	र.	अग.	९	अश्वि.	भुजंगपात,
भाद्र.	कृ.	६	चं.	अग.	१०	अश्वि.	भुजंगपात,
भाद्र.	कृ.	८	बु.	अग.	१२	रोहि.	लग्नाभाव,
भाद्र.	कृ.	९	गु.	अग.	१३	मृग.	भद्रा, शनिवेध,
भाद्र.	कृ.	१०	शु.	अग.	१४	मृग.	शनिवेध,
भाद्र.	कृ.	११	श.	अग.	१५	मृग.	मासान्त, शनिवेध,
भाद्र.	शु.	४	श.	अग.	२२	हस्त	लग्नाभाव,
भाद्र.	शु.	८	बु.	अग.	२६	अनु.	वैधृति,
भाद्र.	शु.	९	गु.	अग.	२७	मूल	केतुयुति अपरिहार्य,
भाद्र.	शु.	१०	शु.	अग.	२८	मूल	केतुयुति अपरिहार्य,
भाद्र.	शु.	११	श.	अग.	२९	उ.षा.	शनियुति अपरिहार्य,
भाद्र.	शु.	१२	र.	अग.	३०	उ.षा.	शनियुति अपरिहार्य,
भाद्र.	शु.	१४	मं.	सितं.	१	धनि.	प्रोष्ठपदी श्राद्ध,

महालय श्राद्ध—भाद्र.शु. १५ बु. से प्र.आश्वि. कृ. ३० गु. (२ से १७ सितं., २०२० ई.) तक महालय श्राद्ध।

आश्विन अधिकमास—१८ सितं. से १६ अक्तू., २०२० ई. तक आश्विन अधिक(मल)मास दोष।

तिथि-वार				तारीख २०२० ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
द्वि.(शु.)आश्वि.शु.		१	श.	अक्तू.	१७	चित्रा	संक्रान्ति,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु.		१	श.	अक्तू.	१७	स्वा.	संक्रान्ति,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु.		२	र.	अक्तू.	१८	स्वा.	लग्नाभाव,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु.		२	र.	अक्तू.	१८	अनु.	लग्नाभाव,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु.		६	गु.	अक्तू.	२२	उ.षा.	शनियुति अपरिहार्य,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु.		७	शु.	अक्तू.	२३	उ.षा.	शनियुति अपरिहार्य,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु.		७	शु.	अक्तू.	२३	श्रव.	भुजंगपात,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु.		८	श.	अक्तू.	२४	श्रव.	भुजंगपात,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु.		१३	गु.	अक्तू.	२९	रेव.	भौमयुति अपरिहार्य,
द्वि.(शु.)आश्वि.शु.		१४	शु.	अक्तू.	३०	रेव.	भौमयुति अपरिहार्य,
कार्त्ति.	कृ.	३	मं.	नवं.	३	रोहि.	परिघार्ध, भद्रा,
कार्त्ति.	कृ.	३	मं.	नवं.	३	मृग.	शनिवेध,
कार्त्ति.	कृ.	४	बु.	नवं.	४	मृग.	शनिवेध,
कार्त्ति.	कृ.	१०	मं.	नवं.	१०	मघा	लग्नाभाव,
कार्त्ति.	कृ.	१०	मं.	नवं.	१०	उ.फा.	वैधृति,
कार्त्ति.	कृ.	११	बु.	नवं.	११	उ.फा.	भौमवेध,
कार्त्ति.	कृ.	११	बु.	नवं.	११	हस्त	लग्नाभाव,
कार्त्ति.	कृ.	१२	गु.	नवं.	१२	चित्रा	क्षीणचन्द्र,
कार्त्ति.	शु.	४	बु.	नवं.	१८	मूल	लग्नाभाव,
कार्त्ति.	शु.	५	गु.	नवं.	१९	उ.षा.	भुजंगपात, शनियुति अपरिहार्य,
कार्त्ति.	शु.	६	शु.	नवं.	२०	उ.षा.	भुजंगपात, शनियुति अपरिहार्य,

तिथि-वार				तारीख २०२० ई.		विवाह नक्षत्र	दोष
कार्त्ति.	शु.	७	श.	नवं.	२१	श्रव.	क्रान्तिसाम्य,
कार्त्ति.	शु.	११	बु.	नवं.	२५	रेव.	भौमयुति अपरिहार्य,
कार्त्ति.	शु.	१२	गु.	नवं.	२६	रेव.	भौमयुति अपरिहार्य,
कार्त्ति.	शु.	१२	गु.	नवं.	२६	अश्वि.	व्यतीपात,
कार्त्ति.	शु.	१४	र.	नवं.	२९	रोहि.	कालाल्पता,
मार्ग.	कृ.	१	मं.	दिसं.	१	मृग.	शनिवेध,
मार्ग.	कृ.	२	बु.	दिसं.	२	मृग.	शनिवेध,
मार्ग.	कृ.	६	र.	दिसं.	६	मघा	वैधृति, भद्रा, विष्कंभ,
मार्ग.	कृ.	८	मं.	दिसं.	८	उ.फा.	भौमवेध,
मार्ग.	कृ.	९	बु.	दिसं.	९	उ.फा.	भौमवेध,
मार्ग.	कृ.	१०	गु.	दिसं.	१०	हस्त	भद्रा,
मार्ग.	कृ.	११	शु.	दिसं.	११	चित्रा	गुरु का परमनीचांशस्थ दोष,
मार्ग.	कृ.	११	शु.	दिसं.	११	स्वा.	गुरु का परमनीचांशस्थ दोष,

धनुःस्थ सूर्य—मार्ग.शु. १ मं. से पौष कृ. ३० बु. (१५ दिसं., २०२० ई. से १३ जन., २०२१ ई तक) सूर्य धनुःस्थ रहेगा।

गुरु अस्त—पौष शु. १ गु. से माघ शु. ६ बु. (१४ जन., २०२१ ई. से १७ फर., २०२१ ई.) तक गुरु-वार्धक्य, अस्त एवं बाल्यदोष।

शुक्र अस्त—माघ कृ. ९ श. से संवत् के अन्त (६ फर., २०२१ ई. से १२ अप्रै., २०२१ ई.) तक शुक्र-वार्धक्य एवं अस्त दोष।

होलाष्टक—२१ से २८ मार्च, २०२१ ई. तक।

मीनस्थ सूर्य—फाल्गु. शु. १ र. से वर्षान्त (१४ मार्च से १२ अप्रै., २०२१ ई.) तक मीनस्थ सूर्य।

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं. २०७७ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं?)

मुण्डनादि इन मुहूर्तों के शोधन में हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक-एक या दो-दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिये हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिये, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिये गये शुद्ध मुहूर्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं, उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है। ध्यान रहे--मुण्डनादि इन मुहूर्तों के शोधन में हमने केवल शुद्धकाल का निर्णय किया है, शुद्ध लग्नों का नहीं। अतः दैवज्ञों को चाहिए कि—आवश्यक मुहूर्त्त के लिए दिये गये शुद्धकाल की अवधि में गुरु, शुक्र, बुध, सूर्य एवं लग्नेश आदि की शुभस्थानों में स्थिति को ध्यान में रखते हुए बलवान् लग्न का वे स्वयं निर्णय करें। यदि शुद्ध काल के समय 'अभिजित्-मुहूर्त्त' भी उपलब्ध हो तो शुभकार्य के लिए लग्न के स्थान पर 'अभिजित्-मुहूर्त्त' का प्रयोग करना चाहिए; क्योंकि 'अभिजित्-मुहूर्त्त' में बलवान् लग्न की शक्ति मानी गयी है।

मुण्डन-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १० शु.	अप्रै. १७	धनि.	७/८ तक,
वैशा. शु. ७ गु.	अप्रै. ३०	पुष्य	१४/३९ तक,
ज्ये. शु. ५ बु.	मई २७	पुष्य	७/२८ बाद,
आषा. कृ. ७ शु.	जून १२	शत.	१०/२ से १८/४८ तक,
आषा. कृ. १० चं.	जून १५	रेव.	१६/२९ तक,
आषा. कृ. ११ बु.	जून १७	अश्वि.	६/३ तक,

मुण्डन में विशेष—किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अक्षरारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

ज्ये. कृ. ११ चं.	मई १८	रेव.	१६/५७ बाद,
ज्ये. शु. ३ चं.	मई २५	आर्द्रा.	७/५४ बाद,
आषा. कृ. १० चं.	जून १५	रेव.	१६/२९ तक,

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २020 ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १० शु.	अप्रै. १७	धनि.	७/८ तक,
वैशा. कृ. १२ र.	अप्रै. १९	पू.भा.	
वैशा. शु. १० र.	मई ३	पू.फा.	१२/८ तक, १५/४४ बाद,
ज्ये. कृ. १० र.	मई १७	पू.भा.	१२/४२ से १३/५८ तक,
ज्ये. कृ. १० र.	मई १७	उ.भा.	१३/५८ बाद,
ज्ये. शु. ५ बु.	मई २७	पुष्य	७/२८ बाद,
ज्ये. शु. ६ गु.	मई २८	पुष्य	६/२९ से ७/२६ तक,
आषा. कृ. ६ गु.	जून ११	धनि.	११/२८ से १६/३५ तक,
आषा. कृ. ११ बु.	जून १७	अश्वि.	६/३ तक,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग—बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

उपनयन-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

वैशा. शु. ५ मं.	अप्रै. २८	आर्द्रा	(राहुयुति परिहार),
वैशा. शु. १० र.	मई ३	पू.फा.	१२/८ तक,
वैशा. शु. ११ चं.	मई ४	उ.फा.	६/१३ बाद,
ज्ये. शु. ३ चं.	मई २५	आर्द्रा	७/५४ बाद,
ज्ये. शु. ५ बु.	मई २७	पुष्य	७/२८ बाद,

द्विरागमन-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. शु. ६ बु.	अप्रै. २९	पुष्य	२६/१ बाद,
वैशा. शु. ७ गु.	अप्रै. ३०	पुष्य	१४/३९ तक,
वैशा. शु. ११ चं.	मई ४	उ.फा.	६/१३ से १९/१९ तक,
वैशा. शु. ११ चं.	मई ४	हस्त	१९/१९ से २८/४४ तक,
कार्त्ति. शु. १ चं.	नवं. १६	अनु.	७/६ से १४/३६ तक,
कार्त्ति. शु. ६ शु.	नवं. २०	श्रव.	९/२२ बाद,
कार्त्ति. शु. ११ बु.	नवं. २५	उ.भा.	१५/५६ तक,
कार्त्ति. शु. १२ शु.	नवं. २७	अश्वि.	८/२८ से २४/२२ तक,

द्विरागमन में विशेष—विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के इन मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

*वैशा. कृ. १० शु.	अप्रै. १७	धनि.	७/८ तक,
*वैशा. कृ. ११ श.	अप्रै. १८	शत.	
वैशा. शु. ११ चं.	मई ४	उ.फा.	६/१३ से ८/५६ तक, (८/५६ बाद अग्निबाण),

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*श्राव. कृ. ४ गु.	जुला. ९	शत.	१०/११ बाद,
*श्राव. कृ. ८ चं.	जुला. १३	रेव.	११/१४ तक,
*श्राव. शु. ५ श.	जुला. २५	हस्त	१४/१८ बाद,
श्राव. शु. १० बु.	जुला. २९	अनु.	८/३३ से १५/५ तक,
श्राव. शु. ११ गु.	जुला. ३०	अनु.	७/४० तक,
*कार्त्ति. कृ. १२ गु.	नवं. १२	हस्त	
*कार्त्ति. शु. १ चं.	नवं. १६	अनु.	७/६ से १४/३६ तक,
कार्त्ति. शु. ११ बु.	नवं. २५	उ.भा.	१५/५६ तक,
कार्त्ति. शु. १५ चं.	नवं. ३०	रोहि.	
*मार्ग. कृ. ९ बु.	दिसं. ९	हस्त	१५/१८ बाद,
*मार्ग. कृ. १० गु.	दिसं. १०	चित्रा	१२/५१ बाद,
*मार्ग. कृ. ११ शु.	दिसं. ११	चित्रा	८/४८ तक,
*मार्ग. कृ. ११ शु.	दिसं. ११	स्वा.	८/४८ से १५/५० तक,

*(तारा) अंकित मुहूर्त्तों में केवल वृष-वास्तुचक्र शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये मुहूर्त्त सर्वथा शुद्ध हैं।

गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

वैशा कृ. १३ चं.	अप्रै. २०	उ.भा.	७/२२ बाद,
वैशा. शु. ११ चं.	मई ४	उ.फा.	६/१३ से १९/१९ तक,
*ज्ये. कृ. १ शु.	मई ८	अनु.	८/३८ से १२/५५ तक, २३/१४ बाद,
*ज्ये. कृ. २ श.	मई ९	अनु.	६/३३ तक,
ज्ये. कृ. ११ चं.	मई १८	उ.भा.	१६/५७ तक,
ज्ये. कृ. ११ चं.	मई १८	रेव.	१६/५७ बाद,

*(तारा) अंकित मुहूर्त्तों में कलशचक्र-शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये निर्दोष हैं।

सर्वदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
(उत्तरायणकाल)			
वैशा. कृ. १० शु.	अप्रै. १७	धनि.	७/८ तक,
वैशा. कृ. ११ श.	अप्रै. १८	शत.	
वैशा. कृ. १३ चं.	अप्रै. २०	उ.भा.	७/२२ बाद,
वैशा. शु. ७ गु.	अप्रै. ३०	पुष्य	
वैशा. शु. ११ चं.	मई ४	उ.फा.	६/१३ बाद,
ज्ये. कृ. १ शु.	मई ८	अनु.	८/३८ बाद,
ज्ये. कृ. ८ शु.	मई १५	धनि.	८/२२ तक,
ज्ये. कृ. ११ चं.	मई १८	उ.भा.	
ज्ये. कृ. १३ बु.	मई २०	अश्वि.	
ज्ये. शु. ५ बु.	मई २७	पुष्य	७/२८ बाद,
ज्ये. शु. ६ गु.	मई २८	पुष्य	६/२९ से ७/२६ तक, (६/२९ तक क्रां.सा.),
आषा. कृ. ७ शु.	जून १२	शत.	१०/२ बाद,
आषा. कृ. १० चं.	जून १५	रेव.	
आषा. कृ. ११ बु.	जून १७	अश्वि.	६/३ तक,
आषा. कृ. १३ शु.	जून १९	रोहि.	१०/३१ से ११/१ तक

तामसदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२०ई.)

(दक्षिणायनकाल)			
कार्त्ति. शु. ११ बु.	नवं. २५	उ.भा.	
कार्त्ति. शु. १२ शु.	नवं. २७	अश्वि.	८/२८ बाद,
कार्त्ति. शु. १५ चं.	नवं. ३०	रोहि.	
मार्ग. कृ. ११ शु.	दिसं. ११	चित्रा	८/४८ तक,
मार्ग. कृ. ११ शु.	दिसं. ११	स्वा.	८/४८ बाद,

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्री विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त "सात्त्विक देवप्रतिष्ठा" वाले मुहूर्त्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्त्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्तकाल बताए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि—सात्त्विक देवप्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्री विष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समानरूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि श्री गणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी-देवताओं के लिए यहां पृथक् रूप से लिखे गए प्रतिष्ठामुहूर्त्त केवल इन्हीं के लिए हैं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है। ध्यान दें—गौरी, गणेश, दुर्गा और शिव की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शास्त्रों में क्रमशः शुक्ल तृतीया, कृष्ण चतुर्थी, शुक्ल नवमी और कृष्ण चतुर्दशी तिथियां शुभ मानी गई हैं, तदनुसार ही यहां इनके विशेष मुहूर्त्तों में केवल इन तिथियों का ही निर्देश किया गया है। शिवप्रतिष्ठा के लिए आर्द्रा नक्षत्र भी शुभ माना जाता है, अतः यहां आर्द्रा नक्षत्र में भी शिव-प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त लगाए गए हैं। इन मुहूर्त्तों में भी गुरु-शुक्रास्तकाल तथा सिंहाशकस्थ सिंहगत गुरु, भद्रा आदि को वर्जित किया जाता है।

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०२०ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ. १३ चं.	अप्रै. २०	उ.भा.	७/२२ बाद,
वैशा. शु. ७ गु.	अप्रै. ३०	पुष्य	१४/३९ तक,
वैशा. शु. ११ चं.	मई ४	उ.फा.	६/१३ से १९/१९ तक,
ज्ये. कृ. १ शु.	मई ८	अनु.	८/३८ से १२/५५ तक,
ज्ये. कृ. २ श.	मई ९	अनु.	६/३३ तक,
ज्ये. कृ. १० र.	मई १७	उ.भा.	१३/५८ बाद,
ज्ये. कृ. ११ चं.	मई १८	उ.भा.	१६/५७ तक,
ज्ये. कृ. ११ चं.	मई १८	रेव.	१६/५७ बाद,
ज्ये. कृ. १३ बु.	मई २०	अश्वि.	१९/४३ तक,
ज्ये. शु. ५ बु.	मई २७	पुष्य	७/२८ बाद,
ज्ये. शु. ६ गु.	मई २८	पुष्य	६/२९ से ७/२६ तक,
आषा. कृ. १० चं.	जून १५	रेव.	१६/२९ तक,
आषा. कृ. ११ बु.	जून १७	अश्वि.	६/३ तक,
आषा. कृ. १३ शु.	जून १९	रोहि.	१०/३१ से ११/१ तक,
आषा. शु. १२ गु.	जुला. २	अनु.	
श्राव. कृ. ७ र.	जुला. १२	रेव.	८/१८ बाद,
श्राव. कृ. ८ चं.	जुला. १३	रेव.	११/१४ तक,
श्राव. कृ. ८ चं.	जुला. १३	अश्वि.	११/१४ से १८/९ तक,
श्राव. शु. ५ श.	जुला. २५	हस्त	१४/१८ बाद,
श्राव. शु. ६ र.	जुला. २६	हस्त	१२/३७ तक,
श्राव. शु. ६ र.	जुला. २६	चित्रा	१२/३७ बाद,

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०२० ई.)

तिथि-वार	तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
श्राव. शु. ७ चं.	जुला. २७	चित्रा	७/१० तक,
श्राव. शु. १० बु.	जुला. २९	अनु.	८/३३ से १५/५ तक,
श्राव. शु. ११ गु.	जुला. ३०	अनु.	७/४० तक,
भाद्र. कृ. ५ श.	अग. ८	उ.भा.	१६/११ तक,
भाद्र. कृ. ६ चं.	अग. १०	अश्वि.	६/४३ तक,
भाद्र. कृ. ९ गु.	अग. १३	रोहि.	१३/२६ बाद,
भाद्र. शु. ३ शु.	अग. २१	उ.फा.	२१/२९ तक,
भाद्र. शु. ५ र.	अग. २३	चित्रा	१७/६ तक,
द्वि.(शु.)आश्वि. शु. ३ चं.	अक्तू. १९	अनु.	१४/८ तक,
द्वि.(शु.)आश्वि. शु. १२ बु.	अक्तू. २८	उ.भा.	९/११ बाद,
द्वि.(शु.)आश्वि. शु. १३ गु.	अक्तू. २९	उ.भा.	११/५९ तक,
द्वि.(शु.)आश्वि. शु. १५ श.	अक्तू. ३१	अश्वि.	७/५ से १७/५७ तक,
कार्त्ति. कृ. १२ गु.	नवं. १२	हस्त	
कार्त्ति. कृ. १३ शु.	नवं. १३	चित्रा	१७/५९ तक,
कार्त्ति. शु. १ चं.	नवं. १६	अनु.	१४/३६ तक,
कार्त्ति. शु. ११ बु.	नवं. २५	उ.भा.	१५/५६ तक,
कार्त्ति. शु. १२ शु.	नवं. २७	अश्वि.	८/२८ बाद,
कार्त्ति. शु. १५ चं.	नवं. ३०	रोहि.	
मार्ग. कृ. ९ बु.	दिसं. ९	हस्त	१५/१८ बाद,
मार्ग. कृ. १० गु.	दिसं. १०	चित्रा	१२/५१ बाद,
मार्ग. कृ. ११ शु.	दिसं. ११	चित्रा	८/४८ तक,

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं. मि. को स्थानीय सूर्योदय– काल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है, दिनमान का 30वां भाग मुहूर्त्तार्ध कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब अभिजित् मुहूर्त्तों को प्रयोग में लाना चाहिए।

क्या आपको मालूम है कि "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" संक्षिप्तरूप में "श्री बटुक पञ्चांग" के नाम से प्रकाशित होता है ? "श्री बटुक पञ्चांग" पॉकेट साईज़ में है और इसमें प्रमुख-प्रमुख एवम् वर्गीकृत व्रत-पर्व, गण्डमूल, पंचक, ग्रहणविवरण, राशिफलादेश, वर्षराजादि फलविचार, २४ पक्ष, तिथ्यादि पंचांग, दैनिक-लग्नसारणी, विवाहादि मुहूर्त्त और मेलापक सारणी आदि वह सभी कुछ उपलब्ध है, जिसकी दैवज्ञों/आम लोगों को हर समय ज़रूरत रहती है।

आज ही अपनी प्रति बुक्सेलर से सुरक्षित कराएं ।

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०७७ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

इन सर्वार्थसिद्धि योग, रवियोग आदि के प्रारम्भ-समाप्तिकालों के साधन में श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय—कुराली (पं.) के सुयोग्य कार्यकर्त्ता श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य द्वारा पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। तदर्थ मेरा इन्हें सधन्यवाद आशीर्वाद है।—प्रियव्रत शर्मा

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम पाठकों की सुविधा के लिए सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, सिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर एवं रवि—इन तिथि-भ-वार से बनने वाले एवं सूर्य और चन्द्र के नक्षत्र-संयोग से उत्पन्न सुयोगों के शास्त्रोक्त काल का सूक्ष्म निर्णय करते हैं। अत्यन्त शीघ्रता की स्थिति में किसी भी शुभकार्य को सम्पन्न करने के लिए यदि गुरु-शुक्रास्त आदि दोषों के कारण शुभ (शुद्ध) समय न मिल पा रहा हो तो वहां इन शुभ (सर्वार्थसिद्धि आदि) योगों का प्रश्रय लेना चाहिए—ऐसी शास्त्राज्ञा है। अत: इन सुयोगों के काल में आप किसी भी शुभकार्य को नि:संकोच सम्पन्न कर सकते हैं। **ध्यान रहे**—इन सुयोगों के कालनिर्णय में भद्रा, गुरु-शुक्रास्तादि दोषों का विचार नहीं होता।

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग—जैसा कि इनके नाम से ही स्पष्ट है, इन योगों के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाये तो वह सफल होता है। यात्रा, गृहप्रवेश, नूतन-कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश गुरु-शुक्रास्त आदि का विचार असम्भव होने पर इन सर्वार्थसिद्धि आदि सुयोगों का आश्रय लेना चाहिए। **यहां ब्रैकेटों (Brackets) में दिये गये अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गये हैं।** ये योग (अमृतसिद्धि संज्ञक सर्वार्थसिद्धि योग) जिन-जिन वारों में घटित हुए हैं, उनका निर्देश भी हमने यहां साथ-साथ कर दिया है। **ध्यान रहे—गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योगों (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योगों के समय नये घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योगों के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें नि:संकोच प्रयोग में लाइये।**

रवियोग—रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भांति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की अद्‌भुत शक्ति रखता है—"कुयोगविध्वंस-करा: शुभेषु।"

सिद्धियोग—सिद्धियोग भी सर्वार्थसिद्धि और रवियोगों की भांति ही प्रत्येक कार्य के लिए महत्त्वशाली एवं शुभ माने गये हैं। सिद्धियोग में **यमघण्ट**, **विष** आदि कुयोगों का प्रभाव प्राय: समाप्त हो जाता है—ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

त्रिपुष्करयोग—मुहूर्त्तविदों का कथन है कि—इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभकार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित (तीन गुणा) हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि, गाड़ी आदि) का क्रय (खरीदना) त्रिगुणकारी माना जाता है। **द्विपुष्करयोग**—ये योग त्रिपुष्करयोगों की ही भांति शुभाशुभ सभी घटनाओं को द्विगुणित (दो गुना) करते हैं। त्रिपुष्कर एवं द्विपुष्कर—इन सुयोगों का सत्यापक शास्त्रवचन इस तरह है—"**त्रिपुष्करस्त्रिगुणदो द्विगुणो यमलांघ्रिभे।**"

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०२० ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
२०२० ई.	घं.	मि.	२०२० ई.	घं.	मि.	२०२० ई.	घं.	मि.	२०२० ई.	घं.	मि.
मार्च २६	सू.	उ.	मार्च २७	१०	९	(अप्रै. २७	सू.	उ.	अप्रै. २८	०	२९)चं.
मार्च ३०	सू.	उ.	मार्च ३१	३	१५	(अप्रै. ३०	सू.	उ.	मई १	१	५२)गु.
(मार्च ३१	३	१६	मार्च ३१	सू.	उ.)चं.	मई ३	२१	४३	मई ४	सू.	उ.
अप्रैल २	सू.	उ.	अप्रैल ३	२	४३	मई १०	सू.	उ.	मई ११	४	१३
(अप्रैल ३	२	४४	अप्रैल ३	सू.	उ.)गु.	मई १७	१३	५९	मई १८	सू.	उ.
अप्रैल १२	१९	१३	अप्रैल १३	सू.	उ.	(मई १९	१९	५४	मई २०	सू.	उ.)मं.
अप्रैल २१	सू.	उ.	अप्रैल २१	१०	२२	(मई २३	सू.	उ.	मई २४	४	५१)श.
अप्रैल २३	सू.	उ.	अप्रैल २३	१६	४	(मई २५	सू.	उ.	मई २५	६	९)चं.
(अप्रै. २५	२०	५८	अप्रै. २६	सू.	उ.)श.	(मई २८	सू.	उ.	मई २८	७	२६)गु.

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
२०२० ई.	घं.	मि.	२०२० ई.	घं.	मि.	२०२० ई.	घं.	मि.	२०२० ई.	घं.	मि.
मई ३१	सू.	उ.	जून १	३	१	(जून २८	८	४७	जून २९	सू.	उ.)र.
(जून १	३	२	जून १	सू.	उ.)र.	(जुलाई २	२	३५	जुलाई २	सू.	उ.)बु.
जून ४	१८	३७	जून ५	सू.	उ.	जुलाई २	सू.	उ.	जुलाई ३	१	१३
जून ७	सू.	उ.	जून ७	१४	१०	जुलाई ५	२३	३	जुलाई ६	सू.	उ.
जून १४	सू.	उ.	जून १५	०	२१	जुलाई ६	२३	१२	जुलाई ७	सू.	उ.
(जून १६	सू.	उ.	जून १७	सू.	उ.)मं.	जुलाई १२	सू.	उ.	जुलाई १२	८	१८
(जून २०	सू.	उ.	जून २०	१२	१)श.	(जुला.१४	सू.	उ.	जुला.१४	१४	६)मं.
जून २६	११	२६	जून २७	सू.	उ.	जुलाई १५	१६	४४	जुलाई १६	सू.	उ.
जून २८	सू.	उ.	जून २८	८	४६	जुलाई २०	२१	२१	जुलाई २१	सू.	उ.

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०२०-२१ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
२०२० ई.	घं.	मि.	२०२० ई.	घं.	मि.	२०२०-२१ई.	घं.	मि.	२०२०-२१ई.	घं.	मि.	२०२१ ई.	घं.	मि.	२०२१ ई.	घं.	मि.
जुलाई २१	२०	३१	जुलाई २२	सू.	उ.	अक्तू. २४	१	२९	अक्तू. २५	२	३७	फर. १४	१६	३३	फर. १५	सू.	उ.
जुलाई २४	सू.	उ.	जुलाई २४	१६	२	अक्तू. २९	१२	०	अक्तू. ३०	सू.	उ.	(फर. १६	२०	५७	फर. १७	सू.	उ.)मं.
(जुला.२६	सू.	उ.	जुलाई २६	१२	३७)र.	(अक्तू.३०	सू.	उ.	अक्तू. ३०	१४	५७)शु.	(फर. २०	सू.	उ.	फर. २१	सू.	उ.)श.
(जुला.२९	८	३४	जुलाई ३०	सू.	उ.)बु.	नवं. २	२३	५०	नवं. ३	सू.	उ.	(फर. २२	सू.	उ.	फर. २२	१०	५७)चं.
जुलाई ३०	सू.	उ.	जुलाई ३०	७	४०	नवं. ४	सू.	उ.	नवं. ५	४	५०	(फर. २५	सू.	उ.	फर. २५	१३	१७)गु.
अग. २	६	५३	अग. ३	सू.	उ.	नवं. ६	६	४५	नवं. ७	सू.	उ.	फर. २८	९	३६	मार्च १	सू.	उ.
अग. ३	७	२०	अग. ४	सू.	उ.	नवं. ८	सू.	उ.	नवं. ८	८	४५	मार्च ४	२३	५८	मार्च ५	सू.	उ.
अग. ९	१९	७	अग. १०	सू.	उ.	नवं. १२	४	२६	नवं. १२	सू.	उ.	मार्च ७	सू.	उ.	मार्च ७	२०	५९
अग. १२	०	५७	अग. १३	सू.	उ.	नवं. १४	सू.	उ.	नवं. १४	२०	९	मार्च १४	सू.	उ.	मार्च १५	२	११
अग. १७	६	४५	अग. १८	५	४३	नवं. १६	सू.	उ.	नवं. १६	१४	३६	(मार्च १६	सू.	उ.	मार्च १७	सू.	उ.)मं.
अग. १८	सू.	उ.	अग. १९	४	८	नवं. २०	९	२३	नवं. २१	९	५३	(मार्च २०	सू.	उ.	मार्च २०	१६	४५)श.
अग. २६	सू.	उ.	अग. २६	१०	४०	नवं. २४	१५	३२	नवं. २५	सू.	उ.	मार्च २६	२१	४०	मार्च २७	सू.	उ.
(अग. २६	१०	४१	अग. २६	१३	४)बु.	नवं. २६	सू.	उ.	नवं. २८	०	२२	मार्च २८	सू.	उ.	मार्च २८	१७	३५
अग. ३०	सू.	उ.	अग. ३०	१३	५२	नवं. ३०	सू.	उ.	दिसं. १	सू.	उ.	अप्रैल १	७	२२	अप्रैल २	५	११
अग. ३१	सू.	उ.	अग. ३१	१५	४	दिसं. २	सू.	उ.	दिसं. २	१०	३७	अप्रैल ५	२	६	अप्रैल ५	सू.	उ.
(सितं. ४	२३	२९	सितं. ५	सू.	उ.)शु.	दिसं. ३	१२	२२	दिसं. ४	१३	३८	अप्रैल ६	२	५	अप्रैल ६	सू.	उ.
सितं. ६	सू.	उ.	सितं. ७	५	२३	दिसं. ९	१२	३३	दिसं. १०	सू.	उ.	अप्रैल ११	सू.	उ.	अप्रैल ११	८	५७
सितं. ८	८	२६	सितं. १०	सू.	उ.	दिसं. १८	सू.	उ.	दिसं. १८	१९	४						
सितं. १३	१६	३४	सितं. १४	१५	५२	दिसं. २२	सू.	उ.	दिसं. २३	१	३७						
सितं. १५	सू.	उ.	सितं. १५	१४	२५	दिसं. २४	सू.	उ.	दिसं. २५	७	३६						
सितं. २०	१	२१	सितं. २०	सू.	उ.	दिसं. २८	सू.	उ.	दिसं. २८	१५	३९						
सितं. २१	२०	४९	सितं. २२	सू.	उ.	(दिसं. २८	१५	४०	दिसं. २९	सू.	उ.)चं.						
सितं. २६	१९	२६	सितं. २७	सू.	उ.	दिसं. ३१	सू.	उ.	दिसं. ३१	१९	४८						
अक्तू. २	५	५७	अक्तू. २	सू.	उ.	(दिसं. ३१	१९	४९	जन. १	सू.	उ.)गु.						
(अक्तू. २	सू.	उ.	अक्तू. ३	सू.	उ.)शु.	जन. ६	सू.	उ.	जन. ६	१७	९						
अक्तू. ४	सू.	उ.	अक्तू. ४	११	५२	जन. १९	सू.	उ.	जन. १९	९	५४						
अक्तू. ६	सू.	उ.	अक्तू. ६	१७	५४	जन. २१	सू.	उ.	जन. २१	१५	३६						
अक्तू. ७	सू.	उ.	अक्तू. ८	सू.	उ.	जन. २३	२१	३३	जन. २४	सू.	उ.						
अक्तू. १०	०	२७	अक्तू. १०	सू.	उ.	(जन. २५	सू.	उ.	जन. २६	१	५५)चं.						
अक्तू. ११	सू.	उ.	अक्तू. १२	१	१८	(जन. २८	सू.	उ.	जन. २९	३	५०)गु.						
अक्तू. १७	११	५२	अक्तू. १८	सू.	उ.	फर. १	१	१८	फर. १	सू.	उ.						
अक्तू. १९	सू.	उ.	अक्तू. २०	३	५२	फर. ७	१६	१५	फर. ८	सू.	उ.						

रवियोग (सन् २०20 ई.) (भा. स्टैं. टा.)

मार्च २७	१०	१०	मार्च २८	१२	५२
मार्च २९	१५	१८	मार्च ३०	१७	१७
मार्च ३१	६	५७	मार्च ३१	१८	४३
अप्रैल २	१९	२९	अप्रैल ४	१७	८
अप्रैल ६	१२	१७	अप्रैल ७	९	१५
अप्रैल १२	१९	१३	अप्रैल १३	१९	२
अप्रैल १३	२०	२३	अप्रैल १४	१९	४०
अप्रैल २५	२०	५८	अप्रैल २६	२२	५५
अप्रैल २७	१२	८	अप्रैल २८	०	२९
अप्रैल २९	१	३३	अप्रैल ३०	२	१
मई २	१	५	मई ३	२१	४२
मई ५	१६	४०	मई ६	१३	५१
मई १३	४	५५	मई १४	६	२२

रवियोग (सन् २०२० ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२० ई.	घं.	मि.	२०२० ई.	घं.	मि.
मई २६	७	३	मई २७	७	२८
मई २८	७	२७	मई २९	६	५८
मई ३१	४	४३	जून २	१	३
जून ३	२०	४४	जून ४	१८	३६
जून ११	१६	३६	जून १२	१८	४८
जून २४	१३	११	जून २५	१२	२६
जून २६	११	२६	जून २७	१०	११
जून २९	७	१४	जुलाई १	४	४
जुला. ३	१	१४	जुला. ४	०	७
जुला. ११	५	३४	जुला. १२	८	१८
जुला. २३	१७	४५	जुला. २४	१६	२
जुला. २५	१४	१९	जुला. २६	१२	३७
जुला. २८	९	४२	जुला. ३०	७	४०
अग. १	६	४९	अग. २	६	५२
अग. २	२१	२८	अग. ३	७	१९
अग. ९	१९	७	अग. १०	२२	५
अग. २१	२१	३०	अग. २२	१९	११
अग. २३	१७	७	अग. २४	१५	२०
अग. २६	१३	५	अग. २८	१२	३७
अग. ३०	१३	५३	अग. ३०	१५	५
अग. ३१	१५	५	सितं. १	१६	३७
सितं. ८	८	२६	सितं. ९	११	१५
सितं. २०	१	२१	सितं. २०	२२	५१
सितं. २१	२०	४९	सितं. २२	१९	१८
सितं. २४	१८	१०	सितं. २६	१९	२५
सितं. २७	०	२९	सितं. २७	२०	४९
सितं. ३०	०	४८	अक्तू. १	३	१४
अक्तू. ७	२०	३६	अक्तू. ८	२२	५०
अक्तू. १९	६	९	अक्तू. २०	३	५२
अक्तू. २१	२	१३	अक्तू. २२	१	१३
अक्तू. २५	२	३८	अक्तू. २७	६	३६
अक्तू. २९	१२	०	अक्तू. ३०	१४	५७

रवियोग
(सन् २०२०-२१ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२०-२१ई.	घं.	मि.	२०२०-२१ई.	घं.	मि.
नवं. ६	६	४५	नवं. ६	८	१३
नवं. ७	८	६	नवं. ८	८	४५
नवं. १७	१२	२२	नवं. १८	१०	३९
नवं. १९	९	३९	नवं. १९	१४	११
नवं. २०	९	२३	नवं. २१	९	५३
नवं. २३	१३	५	नवं. २५	१८	२०
नवं. २८	०	२३	नवं. २९	३	१९
दिसं. ६	१४	४७	दिसं. ७	१४	३२
दिसं. १७	१९	१४	दिसं. १८	१९	४
दिसं. १९	१९	४१	दिसं. २०	२१	१
दिसं. २३	१	३८	दिसं. २५	७	३६
दिसं. २७	१३	२०	दिसं. २८	१५	३९
दिसं. २८	२३	४५	दिसं. २९	१७	३२
जन. ४	१९	१८	जन. ५	१८	२०
जन. १६	५	१७	जन. १७	६	९
जन. १८	७	४४	जन. १९	९	५४
जन. २१	१५	३७	जन. २३	२१	३२
जन. २४	३	५९	जन. २४	२४	०
जन. २७	३	१२	जन. २८	३	४९
फर. २	२२	३३	फर. ३	२१	७
फर. १४	१६	३३	फर. १५	१८	२८
फर. १६	२०	५७	फर. १७	२३	४८
फर. २१	८	४४	फर. २३	१२	३०
फर. २५	१३	१८	फर. २६	१२	३५
मार्च ४	१	३६	मार्च ४	१७	५८
मार्च ४	२३	५८	मार्च ५	२२	३७
मार्च १६	४	४४	मार्च १७	७	३०
मार्च १८	२	२१	मार्च १८	१०	३४
मार्च १९	१३	४५	मार्च २०	१६	४५
मार्च २२	२१	२८	मार्च २४	२३	१२
मार्च २६	२१	४०	मार्च २७	१९	५१
अप्रैल ३	३	४४	अप्रैल ४	२	३८

सिद्धियोग
(सन् २०२०-२१ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२०-२१ई.	घं.	मि.	२०२०-२१ई.	घं.	मि.
अप्रैल २	सू.	उ.	अप्रैल २	१९	२८
अप्रैल १२	१९	१३	अप्रैल १३	सू.	उ.
अप्रैल २१	सू.	उ.	अप्रैल २१	१०	२२
मई १०	सू.	उ.	मई ११	४	१३
जून ७	सू.	उ.	जून ७	१४	१०
जून २६	११	२६	जून २७	सू.	उ.
जुलाई ६	२३	१२	जुलाई ७	सू.	उ.
जुलाई १५	१६	४४	जुलाई १६	सू.	उ.
जुलाई २४	सू.	उ.	जुलाई २४	१६	२
अग. ३	७	२०	अग. ४	सू.	उ.
अग. १२	सू.	उ.	अग. १३	३	२६
अग. ३१	सू.	उ.	अग. ३१	१५	४
सितं. ९	सू.	उ.	सितं. ९	११	१५
सितं. २०	१	२१	सितं. २०	सू.	उ.
अक्तू. १७	११	५२	अक्तू. १८	सू.	उ.
नवं. ६	६	४५	नवं. ६	सू.	उ.
नवं. १४	सू.	उ.	नवं. १४	२०	९
नवं. २४	१५	३२	नवं. २५	सू.	उ.
दिसं. ३	१२	२२	दिसं. ४	सू.	उ.
दिसं. २२	सू.	उ.	दिसं. २३	१	३७
दिसं. ३१	सू.	उ.	दिसं. ३१	१९	४८
जन. १९	सू.	उ.	जन. १९	९	५४
फर. ७	१६	१५	फर. ८	सू.	उ.
मार्च ७	सू.	उ.	मार्च ७	२०	५९
मार्च २६	२१	४०	मार्च २७	सू.	उ.
अप्रैल ६	२	५	अप्रैल ६	सू.	उ.

द्विपुष्करयोग
(सन् २०२० ई.) (भा. स्टैं. टा.)

मार्च ३१	सू.	उ.	मार्च ३१	१८	४३
मई २४	४	५२	मई २५	१	१

द्विपुष्करयोग
(सन् २०२०-२०२१ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२०-२१ई.	घं.	मि.	२०२०-२१ई.	घं.	मि.
जनू २	१२	६	जनू २	२२	५४
जुला. २६	१२	३८	जुला. २७	सू.	उ.
अग. ४	२१	५६	अग. ५	सू.	उ.
सितं. ११	सू.	उ.	सितं. ११	९	१०
सितं. २७	२०	५०	सितं. २८	सू.	उ.
नवं. २१	९	५४	नवं. २१	२१	४८
दिसं. १	१६	५३	दिसं. २	सू.	उ.
जन. २५	०	१	जन. २५	सू.	उ.
मार्च २०	१६	४६	मार्च २१	७	१०
मार्च ३०	सू.	उ.	मार्च ३०	१२	२१

त्रिपुष्करयोग
(सन् २०२०-२१ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

अप्रै. १९	४	२५	अप्रै. २०	०	४३
अप्रै. २५	सू.	उ.	अप्रै. २५	११	५२
जून २३	सू.	उ.	जून २३	११	१९
जून २७	१०	१२	जून २८	२	५४
अग. १६	७	४	अग. १६	१३	५१
अग. २५	सू.	उ.	अग. २५	१२	२२
अग. २९	१३	३	अग. ३०	८	२२
सितं. ९	०	४	सितं. ९	सू.	उ.
अक्तू. १८	८	५२	अक्तू. १८	१७	२८
अक्तू. २७	१०	४८	अक्तू. २८	सू.	उ.
नवं. १	२२	५१	नवं. २	सू.	उ.
नवं. ७	७	२४	नवं. ७	८	५
दिसं. २०	२१	२	दिसं. २१	सू.	उ.
दिसं. २६	१०	३६	दिसं. २७	४	१८
जन. ५	सू.	उ.	जन. ५	१८	२०
फर. १३	१५	१२	फर. १४	०	५६
फर. २३	१८	६	फर. २४	सू.	उ.
फर. २८	११	२०	मार्च १	सू.	उ.
मार्च ९	१५	३	मार्च ९	२०	४१

अमृतसिद्धियोग
(सन् २०२०-२१ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२०-२१ई.	घं.	मि.	२२०२०-२१ई.	घं.	मि.
(मार्च ३१	३	१६	मार्च ३१	सू.	उ.)चं.
(अप्रै. ३	२	४४	अप्रै. ३	सू.	उ.)गु.
(अप्रै. २५	२०	५८	अप्रै. २६	सू.	उ.)श.
(अप्रै. २७	सू.	उ.	अप्रै. २८	०	२९)चं.
(अप्रै. ३०	सू.	उ.	मई १	१	५२)गु.
(मई १९	१७	५४	मई २०	सू.	उ.)मं.
(मई २३	सू.	उ.	मई २४	४	५१)श.
(मई २५	सू.	उ.	मई २५	६	९)चं.
(मई २८	सू.	उ.	मई २८	७	२६)गु.
(जून १	३	२	जून १	सू.	उ.)र.
(जून १६	सू.	उ.	जून १७	सू.	उ.)मं.
(जून २०	सू.	उ.	जून २०	१२	१)श.
(जून २८	८	४७	जून २९	सू.	उ.)र.
(जुला. २	२	३५	जुला. २	सू.	उ.)बु.
(जुला.१४	सू.	उ.	जुला.१४	१४	६)मं.
(जुला.२६	सू.	उ.	जुला.२६	१२	३७)र.
(जुला.२९	८	३४	जुला.३०	सू.	उ.)बु.
(अग.२६	१०	४१	अग.२६	१३	४)बु.
(सितं. ४	२३	२९	सितं. ५	सू.	उ.)शु.
(अक्तू. २	सू.	उ.	अक्तू. ३	सू.	उ.)शु.
(अक्तू.३०	सू.	उ.	अक्तू.३०	१४	५७)शु.
(दिसं.२८	१५	४०	दिसं. २९	सू.	उ.)चं.
(दिसं.३१	१४	४९	जन. १	सू.	उ.)गु.
(जन. २५	सू.	उ.	जन. २६	१	५५)चं.
(जन. २८	सू.	उ.	जन. २९	३	५०)गु.
(फर. १६	२०	५७	फर. १७	सू.	उ.)मं.
(फर. २०	सू.	उ.	फर. २१	सू.	उ.)श.
(फर. २२	सू.	उ.	फर. २२	१०	५७)चं.
(फर. २५	सू.	उ.	फर. २५	१३	१७)गु.
(मार्च १६	सू.	उ.	मार्च १७	सू.	उ.)मं.
(मार्च २०	सू.	उ.	मार्च २०	१६	४५)श.

साईज 28 x 21 सें. मी. (एटलस साईज़).
पृष्ठसंख्या 722

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS (1951 To 2050 A.D.)

चिरस्थायी Imported पेपर
आकर्षक Colourful टाईटल

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिक ग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेश व वक्र–मार्गकाल)

(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में) (इस समय उपलब्ध है।)

बडे साईज़ के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृक्सिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु , स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टैं. टा. मे राशि, नक्षत्र–प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्गकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशि–प्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहिली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों **Computer Program** द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है।

ज्योतिर्विदों का मन्तव्य है कि– यह प्रकाशन ज्योतिषजगत् के लिए वरदान है। इसमें वह सभी कुछ है, जिसका चिरकाल से हमारे पञ्चांगों में अभाव खटकता था। भारत के अब तक के ज्योतिषजगत् के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला प्रकाशन है, जिसकी तुलना इस विषय के किसी भी पाश्चात्त्य प्रकाशन से की जा सकती है।

पुस्तक **English** एवं हिन्दी– एक साथ दोनों भाषाओं में है, जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इस एक ही ग्रन्थ से समानरूप से लाभान्वित होंगे।

मूल्य Rs.1000/- + डाकव्यय Rs. 60/-

विशेष छूट– ज्योतिषशिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों, ज्योतिष अनुसंधानरत संस्थाकेन्द्रों एवं सभी पुस्तकालयों के लिए इसका डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 800/- है।

साईज़ 24 x 18½ सें. मी.
पृष्ठसंख्या 280

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

मनोहारी बहुरंगा टाईटल
पुस्तक उपलब्ध है।

[एक ऐसी पुस्तक, जिसकी मदद से आप जातक के जन्मकालिक लग्न का निर्णय और उसकी जन्मकुण्डली का निर्माण कम्प्यूटर की सी द्रुतगति से कर सकते हैं।]

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टैं. टा. में तुरन्त बदला जा सकता है। $0°$ से $66\frac{1}{2}°$ अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश–कला के अन्तर पर (अर्थात् 0°–1′, 0°–2′, 0°–3′, 0°–4′, 0°–5′ अक्षांश .... इस प्रकार विश्व के प्रत्येक अक्षांश–कला के लिए) मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 136 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां Computer द्वारा तैयार करके दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षांशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान सकते हैं। ध्यान रहे – बच्चे का जन्म जिस ग्राम में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश–कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस ग्राम के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को वहां प्रयोग में लाने पर लग्न के निर्णय में स्थूलता रहती है। इस पुस्तक में विश्व के हर ग्राम की अक्षांशकला की सूक्ष्मतम लग्नसारणी दी गई है, जिसके प्रयोग से यह सथूलता नहीं रहती।

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नारम्भकाल बतलाने वाली जन्मस्थलीय अक्षांश की सारणी से आप तुरन्त (बिना गुणा–भाग किए, साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक $1\frac{1}{2}$ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह सन्दिग्ध लग्न (सन्देहास्पद लग्न) जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। भूगोल के किसी भी स्थल पर स्थित छोटे से छोटे ग्राम में भी (उस ग्राम के अपने कला तक शुद्ध वास्तविक अक्षांश के आधार पर) लग्नराशि का सेकण्ड तक शुद्ध प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल आश्चर्यजनक सरलता से चुटकियों में बतलाने वाली ऐसी अद्भुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

स्पष्टता के लिए देश–विदेश के विभिन्न नगरों में उत्पन्न जातकों के जन्मकालिक लग्न एवम् जन्मकुण्डलियां बनाने के 28 उदाहरण दिए गए हैं। भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्था. म. का. और क्षेत्रीय स्टैं. टा. का अन्तर) तथा G.M.T. एवं भा.स्टैं.टा. से उनके क्षेत्रीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर दिया गया है।

मूल्य Rs. 500/- + डाकव्यय Rs. 50/-

इन दोनों पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

पुस्तकों का प्राप्तिस्थान :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2077 वि.) का 'शोधनिबन्ध' विशेषांक

(लेखक एवं सम्पादक—प्रियव्रत शर्मा)

इस विशेषांक के विषय :-

विषय	पृष्ठ
(i) समस्या एवम् समाधान	281-288
(ii) किस ग्रह का रत्न धारण करें?	289-293
(iii) दशा-प्रारम्भ का सूक्ष्म काल	294-299
(iv) भारतेतर देशों में व्रतपर्व तिथियों का निर्णय	300-302

इन नीचे लिखी ' अभिजित् प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित प्रो. प्रियव्रत द्वारा लिखित दैवज्ञ-प्रिय पुस्तकों के प्रतिपाद्य विषय एवं मूल्य आदि जानने के लिए हमें नीचे लिखे पते पर पत्र दीजिए। हम आपको एतदर्थ अपना विस्तृत पुस्तक-सूचीपत्र (Catalouge) बिना मूल्य भेजेंगे। चाहे तो आप नीचे दिए फोन नं. पर भी इन प्रकाशनों के बारे में अपेक्षित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

पुस्तक	पुस्तक
(i) ग्रहोदयास्त-निर्णय.....................	(vi) मुहूर्त्त-गजानन............................
(ii) गणक मार्त्तण्ड...........................	(vii) ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन..............
(iii) शताब्दी ग्रहभोगांश......................	(viii) विश्व लग्नसारणी.........................
(iv) शताब्दी विश्वकुण्डली दर्पण.......	(ix) ग्रहणादर्श..................................
(v) व्रत-पर्व-विवेक........................	(x) भारतीय चन्द्रोदयास्त-निर्णय...........

ग्राहकों के लिए हर्षप्रद समाचार

' अभिजित् प्रकाशन ' की उपरोक्त इन सभी पुस्तकों में से Rs. 1000/- या इससे अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगवाने वाले ग्राहक को पुस्तक मूल्य पर 20 प्रतिशत की छूट दी जायेगी और डाकखर्च भी माफ किया जायेगा।

पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य आप हमारे (अभिजित् प्रकाशन, पंचकूला—हरियाणा के) O.B.C. Bank (ORIENTAL BANK OF COMMERCE) के Account no. 09 88 11 31 00 13 92 (IFSC- ORBC- 0100988) में भी जमा करवा सकते हैं। हमारे इस बैंक खाता में पैसे जमा करवाने के बाद हमारे फोन नं. 090413 30161 पर हमें अपना नाम, पता, फोन नं. और पुस्तकें, जो आप मंगवाना चाहते हैं, SMS द्वारा सूचित करना न भूलें।

भवदीया :-

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., 'अभिजित् प्रकाशन',

कोठी नं. 59, सैक्टर 6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) - 134 109

Phone: 0172-2565 303, (M.) 09041330161

110 वर्ष का सर्वप्रथम खगोलसिद्ध सूक्ष्मतम पंचांग (दो भागों में)

(द्वितीय संस्करण उपलब्ध)

पृष्ठ संख्या 826

गणकमार्त्तण्ड

साईज 24X18 सें. मी.

कम्प्यूटर द्वारा तैयार और मुद्रित किया गया भारत का सबसे पहिला 110 वर्ष (सन् 1941 से 2050 ई. तक) का सूक्ष्मतम पंचांग, जिसकी तुलना विश्व के किसी भी प्रामाणिक Ephemeris से की जा सकती है।

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य (सम्पादक – श्रीमार्त्तण्डपंचांग),

दो भागों (जिल्दों) में विभाजित इस महाग्रन्थ में जन्मपत्र आदि निर्माण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, ज्योतिषियों के लिए नितान्त उपयोगी अनेक विषयों में से कुछेक इस प्रकार हैं –

1–भारत के सभी (35) प्रान्तों के प्रसिद्ध 4,000 से भी अधिक नगर–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैण्डर्ड अन्तर (रथा. म. का. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर)।

2–विश्व के प्रमुख 230 नगरों के अक्षांश, रेखाश, स्टैण्डर्ड अन्तर तथा G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से उनके स्टैं.टा. का अन्तर।

3–विश्व के लगभग 120 देशों की स्टैण्डर्ड मेरिडियन्स, उनके स्टैं. टा. का G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से अन्तर ।

4–0° से 60° अक्षांश तक के दैनिक सूर्योदयास्तकाल तथा सेकण्ड तक सूक्ष्म सूर्योदयास्तसाधन की विधि।

5–विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री बनाने की सोदाहरण विस्तृत, सरल विधि तथा भारतीय पंचांग के तिथि–नक्षत्र–योग आदि को अन्य देशों के स्टैं. टा. में परिवर्तित करने की सोदाहरण विधियां और Summer Time का विवेचन।

6–इष्टकालिक सूर्यादि ग्रह स्पष्ट करने की अनेक सरल पद्धतियों का सोदाहरण निर्देश एवम् तदर्थ अनेक मौलिक सारणियां।

7–'अन्तर्न्यासपद्धति' द्वारा चन्द्र एवम् बुध जैसे द्रुतगति ग्रहों को सूक्ष्मतापूर्वक इष्टकालिक बनाने की नवीन प्रकिया को अत्यन्त सरल बना देने वाली सारणियां और उनका सोदाहरण स्पष्टीकरण।

8–प्राचीनपद्धति (इष्टकाल और स्पष्टसूर्य) से इष्टकालिक लग्न स्पष्ट करने के लिए सम्पूर्ण भारत (8° से 35° अक्षांश तक) की आधा–आधा अक्षांशान्तर पर लग्नसारणियां एवम् उनसे इष्टकालिक लग्नसाधन का सोदाहरण विस्तृत स्पष्टीकरण।

9–नवीन पद्धति (साम्पातिककाल पद्धति) से लग्नसाधन के लिए अखिल भारतीय लग्नसारणियां, तदनुसार इष्टकालिक लग्नसाधन की सोदाहरण विधि तथा सन् 1941 से 2050 ई. तक का सूक्ष्म साम्पातिक काल और अयनांश।

10– समस्त भारत के नगरों (अक्षांशों) के लिए मेषादि लग्नों का प्रारम्भकाल बतलाने वालीं अद्भुत सारणियां, जिनकी मदद से किसी भी नगर में किसी भी दिन अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल एक मिनट में ही बिना गणित किए जाना जा सकता है।

11– सन् 1941 से 2050 ई. तक (110 वर्षों) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा.स्टैं. टा.) 92 पृष्ठों पर दिया गया है, जिससे जातक की जन्मकुण्डली 2–3 मिनट में ही बनाई जा सकती है।

12– 220 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के तिथि, नक्षत्र, योगों का दैनिक समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) है।

13– 220 पृष्ठों पर सूक्ष्म दैनिक स्पष्ट सूर्य और चन्द्रमा दिए गए हैं।

14– 110 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के साप्ताहिक स्पष्ट मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवम् राहु दिए गए हैं। यहां एक विशेष कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी मदद से साप्ताहिक स्पष्टग्रह को तुरन्त ही इष्टकालिक बना सकते हैं। ग्रहों के वक्री–मार्गी होने की तारीखें भी दी गई हैं।

15– 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों की सूची, गुरु–शुक्र के अस्तोदय की तारीखें, श्रीरामनवमी, जन्माष्टमी, दीपमाला आदि प्रमुख–प्रमुख सभी मासिक पर्व तथा हरिद्वार आदि के चारों महाकुम्भों की तारीखें दी गई हैं।

ध्यान रहे– 110 वर्ष के इस पंचांग की गणित और मुद्रण–दोनों Electronic Computer द्वारा ही किए गए है, जिससे इसमें गणित एवम् मुद्रणसम्बन्धी किसी भी प्रकार की अशुद्धि की तनिक भी गुंजायश नहीं है।

पुस्तक के दोनों भाग उत्कृष्ट Imported Paper पर मुद्रित एवम् आकर्षक टाईटलों में निबद्ध हैं।

मूल्य **Rs. 1150/– + डाकव्यय Rs. 60/–**

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य **M.O.**या **D.D.** द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए।

पुस्तक मिलने का पता :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,

कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" 59/6, पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

समस्याएं और समाधान

लेखक:– प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सेक्टर–6 (अभिजित्), पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

विशेष निर्देश– समस्या भेजने वाले को अपना पूरा साफ–साफ पता और फोन नं. दोनों अनिवार्यतः भेजने होंगे। पता एवं फोन नं. के बिना प्राप्त समस्याओं के समाधान न तो पंचांग में प्रकाशित होंगे और न ही उनका उत्तर डाक से दिया जा सकेगा– यह ध्यान रखें।

चार से अधिक समस्याएं न भेजें।

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।

–प्रियव्रत शर्मा

समस्या–(i) ग्रहणकाल में सूर्य एवं चन्द्रमा की क्रान्ति समान होती है, फिर भी सभी ग्रहणकाल क्रान्तिसाम्य की सूची में नहीं आते– ऐसा क्यों ?

(ii) अयनांश में वृद्धि के कारण भारतीय मासों का सम्बन्ध निरन्तर ऋतुओं से हटता जा रहा है। आगामी लगभग ग्यारह हज़ार वर्षों में अयनांश का मान 180° के लगभग हो जाएगा। तब ज्येष्ठ के महीने में कंपकंपाती सर्दी और पौष के मास में तेज गर्मी हुआ करेगी। क्या कोई ऐसी व्यवस्था (अधिकमास, क्षयमास की तरह या अन्य) सम्भव नहीं जिससे निरयण–पद्धति और सायन पद्धति में समन्वय स्थापित हो सके ?

(iii) चन्द्रदर्शन की तारीखों के साथ दिए गए चन्द्र के 'उन्नत शृंग' की दिशा और 'अंश' से क्या अभिप्राय है ?

(iv) जन्माष्टमी के दिन मध्यरात्रिकाल कौन सा लिया जाए ? रात्रि $12^h.00^m$ I.S.T., स्थानीय सूर्यास्त और सूर्योदय का मध्य का काल अथवा स्थानीय चन्द्रोदयकाल ?

श्री धनीराम शर्मा,

V.P.O. किरमच, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)।

समाधान–(i) सूर्य–चन्द्र के ग्रहणों के समय घटित होने वाली सूर्य–चन्द्र की क्रान्तियों में समानता को "क्रान्तिसाम्य" कहा जाता है और ग्रहणों से अन्य काल में घटित होने वाली सूर्य–चन्द्र की क्रान्तियों में समानता को "महापात" के नाम से पुकारा जाता है।

जब सूर्य और चन्द्र के भोगांशों (राशि, अंशादि) का अन्तर शून्य या 6 राशितुल्य होता है, तब वहां क्रमशः सूर्य एवं चन्द्र के ग्रहण की स्थिति बनती है। ग्रहण की इन स्थितियों में घटित होने वाली क्रान्तियों की समानता 'क्रान्तिसाम्य' के नाम से पुकारी जाती है।

जब सूर्य और चन्द्र के भोगांशों का योग शून्य या 6 राशितुल्य हो, तब घटित होने वाली इन ग्रहों की क्रान्तियों की समानता को 'महापात' की विशेष संज्ञा दी गई है। यह 'महापात' भी दो प्रकार का है– भोगांशों के शून्यतुल्य

योग से घटित ' महापात ' "वैधृति महापात " तथा दोनों के भोगांशों के छः राशितुल्य योग से घटित ' महापात ' ' व्यतीपात महापात " कहलाता है। ध्यान रहे– ' महापात ' को भी दैवज्ञ लोग अकसर ' क्रान्तिसाम्य ' ही कहते हैं। ' **श्री मार्तण्ड पंचांग** ' में " **यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए महत्त्वपूर्णकाल** " स्तम्भ के अन्तर्गत दिए जाने वाले क्रान्तिसाम्य के प्रारम्भ–समाप्तिकाल ' महापात ' के ही प्रारम्भ–समाप्तिकाल हैं। इन्हें शुभकृत्यों में वर्जित किया जाता है। वैसे, सूर्य–चन्द्र–ग्रहणकालीन क्रान्तिसाम्य भी शुभकृत्यों में वर्ज्य है। लेकिन उसे ' महापात ' के प्रारम्भ–समाप्तिकालों के साथ चर्चित करना अनावश्यक समझा जाता है, क्योंकि शुभकृत्यों में सूर्य और चन्द्रग्रहण वाला पूरा दिन अपने पूर्वापररवर्त्ती दो दिनों के साथ स्वतः वर्जित होता ही है।

(ii) इसमें सन्देह नहीं– हमारी निरयण पंचांगगणना हमारे चैत्रादि मासों और तत्सम्बद्ध व्रत–पर्वों को उनकी मूलभूत वर्त्तमान ऋतुओं से धीरे–धीरे विच्छिन्न करती जा रही है। इस समस्या का कोई समाधान सचमुच उपलब्ध नहीं है। यदि बलात् सायनगणना के आधार पर पंचांगों के निर्माण का प्रयास किया भी गया तो हमारे मासों, पर्वों का इन मूल ऋतुओं से स्थायी सम्बन्ध तो अवश्य बन जाएगा। लेकिन हमारे प्राचीन सिद्धान्त–फलित–ज्योतिष–साहित्य, वेद–पुराण–स्मृति–धर्मशास्त्र–काव्य–महाकाव्य आदि हमारे अन्य समस्त प्राचीन साहित्य में लभ्यमान नाक्षत्र, ग्रहगतिस्थिति आदि के असंख्य सन्दर्भ असह्यरूपेण बुरी तरह विक्षुब्ध हो जाएंगे और भारतीय **'त्रिस्कन्ध ज्योतिष'** का पूरे का पूरा साहित्य अप्रयोज्य (Obsolete) हो जाएगा। यही कारण है, भारत सरकार द्वारा आयोजित Indian Calendar Reformation Committee भी हमारे इस भारतीय पंचांग की नाक्षत्रप्रकृति को चाहते हुए भी सायनप्रकृति देने में विफल रही। इस स्थिति में हम अपने पंचांग की इस अनभीष्ट प्रकृति को सहन करने के लिए बाधित हैं।

(iii) अमावस्या के अनन्तर सायं सूर्यास्तबाद शुक्लपक्ष की प्रतिपदा या द्वितीया तिथि के दिन जब पश्चिमक्षितिज से लगभग 12 अंश की ऊंचाई (उन्नतांश) पर नया चान्द दिखाई पड़ता है, तब उसके बिम्ब का लगभग 180 अंशात्मक परिधिखण्ड (सुवर्ण के आधे कंगन जैसा) पश्चिमक्षितिज की ओर चमकता दीख पड़ता है। इस दीप्त परिधिखण्ड के दो छोर (Ends), जिन्हें यहां ' शृंग ' कहा जाता है, उत्तर एवं दक्षिण दिशा में होते हैं। पश्चिमक्षितिज से नीचे सूर्य की स्थिति–दिशा के अनुसार ये दोनों ' शृंग ' कभी ' चन्द्रबिम्ब के केन्द्र से गुजरने वाली पश्चिमक्षितिज के समानान्तर रेखा (प' क क्ष'– नीचे दिया आलेख देखें) के नीचे रहते हैं। इस स्थिति में यह माना जाता है कि– चन्द्र का कोई भी शृंग उन्नत नहीं है। जब कभी दोनों शृंगों में से कोई एक– उत्तरी या दक्षिणी शृंग इस रेखा से ऊपर उठा होता है, तब माना जाता है कि– चन्द्र का अमुक (उत्तरी या दक्षिणी) शृंग उन्नत है। (देखें– नीचे दिए आलेख में उत्तरी शृंग उन्नत दिखाया गया है।) उन्नत शृंग कितने अंश उत्तर या दक्षिण में उन्नत है– इसका निर्णय इस प्रकार करेंगे (आलेख देखिए)–

चन्द्रबिम्ब के केन्द्र (क) से उन्नत शृंग (शृं.) को छूती रेखा (क ग) खींचिए। इस रेखा और " चन्द्रबिम्ब के केन्द्र से गुजरती पश्चिमक्षितिज की समानान्तर रेखा (प' क्ष') से चन्द्रबिम्ब के केन्द्र 'क' में बने कोण (∠ग क क्ष') के तुल्य शृंग (शृ.) के उन्नतांश हमें ज्ञात हो गए। (इस ' आलेख ' में उत्तरी शृंग उन्नत दिखाया गया है।)

और स्पष्टता के लिए यह आलेख देखिए–

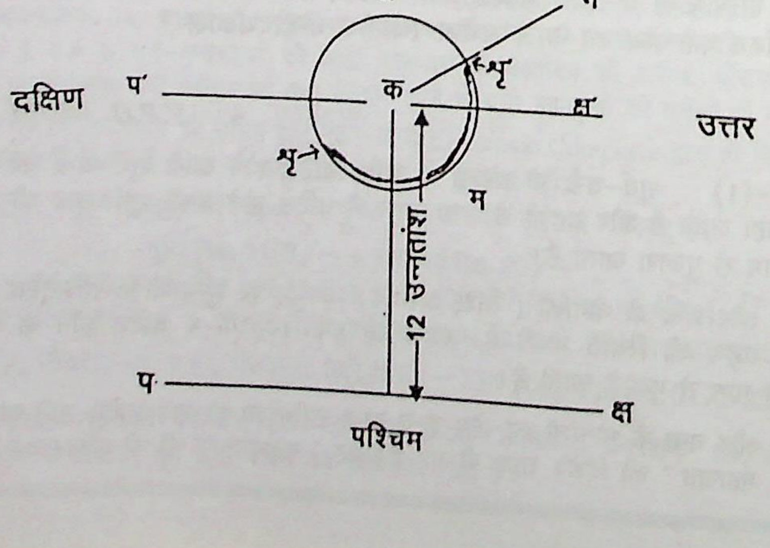

ख शृ. म शृ. = चन्द्रबिम्ब

क = चन्द्रबिम्ब केन्द्र

प क्ष = पश्चिमक्षितिज

प' क क्ष' = बिम्बकेन्द्रगामी 'प क्ष '(पश्चिमक्षितिज) रेखा के समानान्तर रेखा।

शृ. म शृ.' = चन्द्रबिम्ब का दीप्त परिधिखण्ड।

शृ.' = उत्तर शृंग

शृ. = दक्षिण शृंग

∠गकक्ष = उत्तरी शृंग का उन्नतांश कोण

(iv) स्थानीय रात्रिमान (सूर्यास्त से सूर्योदय तक के काल) को 15 से विभाजित करने पर रात्रि के एक मुहूर्त्त का मान प्राप्त होता है। रात्रि का आठवां मुहूर्त (रात्रि का मध्यवर्त्ती मुहूर्त) ' निशीथ ' कहलाता है। यह निशीथ रात्रि का मध्य माना गया है। कृष्णपक्ष की अष्टमी में निशीथ के आसपास ही चन्द्रोदय हुआ करता है। श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्ण का जन्म भाद्र. कृष्ण अष्टमी को ठीक चन्द्रोदय के समय बतलाया गया है। जिससे सामान्य जनता श्रीकृष्ण का जन्मकाल आसन्नमानेन मध्यरात्रि मानती है।

I. S. T. के अनुसार रात्रि के $12^h\ 00^m$ ($0^h\ 00^m$) का समय यथार्थ स्थानीय अर्धरात्रिकाल (निशीथ मध्यकाल = निशीथमुहूर्त्त का मध्यकाल) नहीं है। यह काल तो हमारी (भारत की) स्टैण्डर्ड मेरिडियन (82° 30′ पू.) का स्थानीय मध्यमकाल है। स्वस्थानीय (स्वनगरीय) मेरिडियन का स्पष्टकालानुसारी $0^h\ 00^m$ काल ही स्वनगरीय यथार्थ रात्रिमध्यबिन्दु (निशीथमध्यकाल) होगा, जो स्थानीय सूर्यास्त एवं सूर्योदयकालों का ही मध्यबिन्दु है।

समस्या– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा और आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाले क्रमशः वासन्त और शारद नवरात्रों से तो हम सभी परिचित हैं। लेकिन गत कुछ वर्षों से दो और नवरात्रों, जिन्हें **'गुप्तनवरात्रों '** की संज्ञा दी जाती है, की भी चर्चा सुनने को मिली है। इन गुप्तनवरात्रों की प्रारम्भ तिथियां तथा इनके अनुष्ठान आदि का कृपया परिचय दें। धर्मनिष्ठ समाज में इनका अब अच्छा प्रचार है, अतः इन्हें **'श्रीमार्त्तण्ढ पंचांग'** में प्रतिवर्ष निर्दिष्ट भी किया करें।

पं. रामदास शर्मा,
खिजराबाद (रूपनगर)।

समाधान– प्रचलित दो वासन्त और शारद नवरात्रों के अलावा जो दो और नवरात्र, जिन्हें गुप्तनवरात्र कहा जाता है, प्रचार में आए हैं, इनका प्रारम्भ आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा और माघ शुक्ल प्रतिपदा से होता है। इनकी प्रारम्भ तिथियों का निर्णय ठीक उन्हीं धर्मशास्त्रीय नियमों के अनुसार होता है, जिनके आधार पर वासन्त, शारद नवरात्रों की प्रारम्भ तिथियों का। यहां एक बात ध्यान देने योग्य है– इन चारों नवरात्रों में से पहले तीन नवरात्रों का परस्पर अन्तर तीन–तीन मास का है– लेकिन चौथा नवरात्र (माघ मास वाला) अपने पूर्ववर्त्ती नवरात्र (आश्विन वाले नवरात्र) से चौथे मास पर घटित होता है। जबकि क्रमानुसार इसे पौष मास में घटित होना चाहिए। ऐसा लगता है– पौष मास को खर मास (धनुःस्थ सूर्य वाला मास) जानकर नवरात्रारम्भ के लिए उसे अनुपयुक्त मान लिया गया है।

इन नवरात्रों की अधिष्ठात्री देवी भी अन्य नवरात्रों की ही भान्ति दुर्गा ही है। इन नवरात्रों में किया जाने वाला अनुष्ठान आदि वासन्त, शारदनवरात्रों के अनुष्ठान से भिन्न नहीं है।

इन गुप्तनवरात्रों की चर्चा 'कालमाधव', 'तिथिनिर्णय', 'निर्णयसिन्धु' 'धर्मसिन्धु' आदि किसी भी व्रतपर्व–निर्णायक ग्रन्थ में नहीं है। इनका निर्देश केवल ' देवीभागवत ' में उपलब्ध है। इन नवरात्रों का विशेष प्रचार राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि प्रान्तों में रहा है, जो अब Media के प्रभाव से अन्य प्रान्तों में भी प्रविष्ट हो गया है।

समस्या– क्या कारण था–सं. 2070 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' तथा महाराष्ट्र, गुजरात एवं द. भारत के पंचांगों में भी आश्वि. कृष्णपक्ष (महालय) का तृतीया–श्राद्ध उदयव्यापिनी द्वितीया के दिन शनिवार को और चतुर्थीश्राद्ध उदयव्यापिनी तृतीया के दिन रविवार को लिखा गया था, जब कि पंजाब, हि.प्र., दिल्ली और राजस्थान के कुछ अन्य पंचांगों में ये श्राद्ध क्रमशः उदयव्यापिनी तृतीया और चतुर्थी के ही दिन (रवि और चन्द्रवार को ही) लिखे गए थे ?

प्रो. डी.सी. शर्मा, M.A.,
भलवान–सरकाघाट (मण्डी) हि.प्र.।

समाधान– महालय श्राद्ध– पार्वण श्राद्ध होते हैं। ये पार्वण श्राद्ध अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि के दिन किए जाते हैं। (" पार्वणं त्वपराह्णके ")। यदि मृत्युतिथि (श्राद्ध तिथि) दो दिन अपराह्ण को विषमता से (एक दिन अधिक और दूसरे दिन कम मात्रा में) व्याप्त करे तब धर्मशास्त्र का नियम है–उस तिथि का श्राद्ध उस दिन किया जाए जिस दिन वह अपराह्णकाल को अधिक मात्रा में व्याप्त कर रही हो। 'मरीचि स्मृति " का वचन है–

" द्व्यपराह्णव्यापिनी स्यादाब्दिकस्य यदा तिथिः ।
महती यत्र तद्विद्धां प्रशंसन्ति महर्षयः।।"

सं. 2070 वि. में महालय की तृतीया और चतुर्थी तिथियां दो–दो दिन अपराह्ण को व्याप्त कर रही थीं। तृतीया शनि और रविवार को तथा चतुर्थी रवि और चन्द्रवार को अपराह्णव्यापिनी थीं। अतः उपरोक्त शास्त्रनियमानुसार तृतीया–श्राद्ध शनिवार को (उदयव्यापिनी द्वितीया के दिन) तथा चतुर्थी–श्राद्ध रविवार को (उदयव्यापिनी तृतीया के दिन) लिखा गया। क्योंकि ये तिथियां क्रमशः शनिवार और रविवार के दिन अपराह्णकाल को अधिक व्याप्त कर रही थीं।

इन दिनों पंजाब आदि में अपराह्णकाल लगभग 13^घं 28^मि. से 15^घं 53^मि. तक था।

स्पष्ट है– इन पंजाबादि प्रदेशों के जिन पंचांगकारों ने अपराह्णव्याप्ति की मात्रा का विचार किए बिना ही इन तिथियों के श्राद्ध क्रमशः उदयव्यापिनी तृतीया और चतुर्थी के ही दिन लगाए थे– वे शास्त्र–विहित नहीं थे।

समस्या–सं. 2069 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में श्रावणकृष्ण एकादशी (कामिका एकादशी) का व्रत स्मार्त्तों एवं वैष्णवों के लिए दो भिन्न–भिन्न तारीखों क्रमशः 14 और 15 जुलाई, 2012 ई.को लिखा था जब कि पंजाब के एक अन्य पंचांग में इसे दोनों के लिए केवल एक ही दिन 14 जुलाई को लिखा था– किसे ठीक समझा जाए ?

पं. नृदेव आचार्य,
वसन्तविहार, नई दिल्ली।

समाधान– यहां द्वादशी की वृद्धि है और एकादशी शुद्धा (अरुणोदयकाल में दशमी से अस्पृष्ट) है। इस स्थिति में सामान्यनियमानुसार तो वैष्णवों का व्रत भी स्मार्त्तों के व्रत के साथ ता. 14 जुलाई को ही (एकादशी के दिन) होना चाहिए। लेकिन आचार्य माधव (कालमाधवकार) के विशेष प्रतिपादनानुसार यहां वैष्णवों का व्रत एकादशी के दिन न होकर द्वादशी (वृद्धा द्वादशी) के दिन 15 जुलाई, 2012 ई. को ही (स्मार्त्तों के व्रतदिन से दूसरे दिन) होना चाहिए। इस विषय में ' धर्मसिन्धु ' का यह सोदाहरण विवेचन देखिए–

" अथ दशमी 55 घ., एकादशी 58 घ., द्वादशी 60 घ. 1 प.– इयं शुद्धा (दशम्या अरुणोदये अविद्धा) एकादशी, द्वादशीमात्राधिक्यवती, अत्र वैष्णवानां द्वादश्यामुपोषणम्, स्मार्त्तानां पूर्वा। "

इस प्रमाण से 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में दिया यह स्मार्त्तों और वैष्णवों का एकादशीव्रत शास्त्रविहित सिद्ध है।

ध्यान रहे– ' धर्मसिन्धु 'कार द्वारा उद्धृत यह उपरोक्त मत ' कालमाधव 'कार का है। यहां ' हेमाद्रि ' का मत आचार्य 'माधव' के मत के प्रतिकूल है। उसके मतानुसार तो इस उपरोक्त स्थिति में स्मार्त्तों का व्रत भी वैष्णवों के व्रतके ही दिन (षष्टिघट्यात्मिका द्वादशी को) होना चाहिए। लेकिन अधिकतर आचार्य एवं 'पंचांगकार' इस स्थिति में कालमाधव को ही प्रामाणिकता देते हैं। इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है, आप द्वारा निर्दिष्ट इस पंजाबी पंचांग में दिया गया एकादशी–व्रतनिर्णय माधव और हेमाद्रि– दोनों की दृष्टि से शास्त्रानुकूल नहीं है।

समस्या– सं. 2069 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में माघ शुक्ल में गौंतरी (गौरी) तृतीया का व्रत 13 फरवरी, 2013 ई. को लिखा था, जब कि तृतीया का चन्द्रमा 12 फरवरी, 2013 ई. को उदय हुआ था। इसी (चन्द्रोदय के) आधार पर हमारे यहां बहुत सी महिलाओं ने यह व्रत इसी दिन (12 फरवरी, '13 को) रखा था। 13 फरवरी, 2013 को तो तृतीया तिथि बहुत कम (केवल 3 घ. 4 प. ही) थी। क्या कारण है– फिर भी आपने गौरी व्रत 13 फरवरी, 2013 ई. को ही लिखा।

श्री सतीश कुमार,
गांव–कुनेर रतियां (ऊना) हि. प्र.।

समाधान– ध्यान रहे– इस व्रत का चन्द्रोदयकाल से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि दूसरे दिन तृतीया सूर्योदयानन्तर एक मुहूर्त्त (लगभग 2 घड़ी) भी विद्यमान हो तो भी यह व्रत दूसरे ही दिन करने की शास्त्राज्ञा है। 'कालमाधव'कार का वचन है–

" मुहूर्त्तमात्रसत्त्वेऽपि दिने गौरी व्रतं परे। "

'पुरुषार्थचिन्तामणि'कार का भी मत है–

" चैत्र–भाद्र–माघ–शुक्ल–तृतीयासु गौरीव्रतं विहितम्। तत्र मुहूर्तमात्राप्युत्तरैव।"

'धर्मसिन्धु'कार तो दूसरे दिन एक घटी से भी कम तृतीया में भी इस व्रत की अनुमति देते हैं। लेकिन इस बारे 'कालमाधव' एवं 'पुरुषार्थचिन्तामणि' के मत को ही मान्यता दी जाती है।

पंचांग के पाठकों से हमारा बार–बार नम्र निवेदन है– वे तिथि के घड़ी–पलों की मात्रा (कम या अधिक) देख कर उस तिथि के व्रतपर्व का स्वयं निर्णय न किया करें। क्योंकि– किसी तिथि के व्रत–पर्व के दिन का यथार्थ निर्णय व्रतपर्वशास्त्र के अध्ययन के बिना नहीं किया जा सकता। इसके लिए तिथि के घड़ी–पलों के अलावा अन्य कई बातों का विचार करना होता है।

समस्या– 'गण्डमूल' का क्या अर्थ है ? अश्विनी आदि छः नक्षत्रों को ही गण्डमूल क्यों माना गया है ? अश्विनी आदि गण्डमूल नक्षत्रों के जिन चरणों को दोषरहित माना गया है, क्या उनमें उत्पन्न जातक का जन्म होने पर भी शान्ति करवानी चाहिए ?

श्री ओमप्रकाश शर्मा, रामकोट (फाज़िल्का) पं.।

समाधान– रेवती–अश्विनी, आश्लेषा–मघा और ज्येष्ठा–मूल – ये तीन नक्षत्रयुगल गण्डमूल कहे जाते हैं। इन नक्षत्रयुगलों के ये दो–दो नक्षत्र जहां परस्पर मिलते हैं, वहां क्रमशः मीन–मेष, कर्क–सिंह और वृश्चिक–धनु राशियां भी मिलती हैं। अर्थात् रेवती–अश्विनी की सन्धि पर मीन–मेष, आश्लेषा–मघा की सन्धि पर कर्क–सिंह और ज्येष्ठा–मूल की सन्धि पर वृश्चिक–धनु की भी सन्धि है। यही कारण है– इन नक्षत्रयुगलों को 'गण्डनक्षत्र' कहा जाता है, जिसका अर्थ है– जोड़(सन्धि) वाले नक्षत्र। संस्कृत में गण्ड शब्द का अर्थ जोड़ या 'गांठ' होता है। ध्यान रहे– इन तीन नक्षत्रयुगलों के अलावा और कोई ऐसा नक्षत्रयुगल नहीं है, जहां (जिनके मध्य) राशि–सन्धि घटित हो रही है।

'सूर्यसिद्धान्त' में इन गण्डमूल नामक नक्षत्रयुगलों के पूर्ववर्त्ती नक्षत्रों के अन्तिम चरणों को 'भसन्धि' और परवर्त्ती नक्षत्रों के प्रथम चरणों को 'गण्डान्त' कहा गया है। 'भसन्धि' एवं 'गण्डान्त' में जन्म होना जातक के लिए अशुभ एवं इनमें किया गया शुभकृत्य विफल माना गया है।

यद्यपि इन गण्डमूल नक्षत्रों के 'भसन्धि' एवं गण्डान्त' नामक चरणों में ही जन्म दोषकारक बतलाया गया है, इनके शेष चरणों को निर्दोष कहा गया है– तथापि अनेक मुहूर्तशास्त्रियों का परामर्श है, इनके 'इन शेष' तीन–तीन निर्दोषचरणों में उत्पन्न जातक की भी गण्डमूलशान्ति करवा देनी चाहिए क्योंकि दोषपूर्ण 'भसन्धि' और 'गण्डान्त' चरणों के सम्पर्क से इन चरणों में भी कुछ दोष रहता है– ऐसा माना जाता है।

समस्या– कार्त्तिक कृष्ण त्रयोदशी को 'धनतेरस' का पर्व मनाया जाता है। पंचांगकारों में इसकी तिथि (दिन) के बारे में अनेकदा मतभेद देखा गया है। कोई इसे उदयव्यापिनी तिथि में और कोई इससे पहले दिन बतलाते हैं। इसकी यथार्थ तिथि का निर्णय कैसे किया जाना चाहिए ?

मि. संजय पाठक, पंचकूला (हरि.)।

समाधान– व्रतपर्व शास्त्रानुसार शुक्लपक्ष की त्रयोदशी पूर्वविद्धा और कृष्णपक्ष की परविद्धा लेनी चाहिए। यदि वह (कृष्ण त्रयोदशी) परविद्धा न प्राप्त हो तो उसे पूर्वविद्धा ले लेना चाहिए। [" शुक्ल–त्रयोदशी पूर्वा, परा कृष्णत्रयोदशी। अलाभे सापि पूर्वैव ......।"– (*कालमाधव*)] इस शास्त्रनियमानुसार ही धनतेरस का निर्णय करना चाहिए। ध्यान रहे– सूर्योदयानुसार त्रिमुहूर्तव्यापिनी (लगभग 6 घटी तक व्याप्त) तिथि परविद्धा होती है। दिनमान को 5 से विभाजित करने पर शुद्ध (वास्तव) त्रिमुहूर्त का मान ज्ञात होता है।

कुछ पंचांगकार तो इसतिथि (कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी) को उदयमात्रव्यापिनी देख कर ही, त्रिमुहूर्तन्यून तिथि के दिन ही 'धनतेरस' लिख देते हैं। जो शास्त्रविरुद्ध है।

समस्या– 'वसन्त पञ्चमी' पर्व की तिथि (दिन) का निर्णय कैसे किया जाना चाहिए ? इसकी तिथि के निर्णय में भी पंचांगकारों में अनेकदा मतभेद पाया गया है।

डा. रेणुका जोशी, देहरादून (उ. खं.)।

समाधान– पूर्वाह्ण में व्याप्त माघशुक्ल पंचमी के दिन यह पर्व मनाया जाना चाहिए। यदि पञ्चमी दूसरे ही दिन पूर्वाह्ण में व्याप्त हो तो उसी दिन, यदि वह दोनों दिन पूर्वाह्ण में व्याप्त हो तो इसे पहले ही दिन मनाया जाता है। (' परत्रैव पूर्वाह्णव्याप्तौ परा,अन्यथा पूर्वैव।' –धर्मसिन्धु) दिनमान का पूर्वार्ध ही पूर्वाह्णकाल है।

पाठक ध्यान दें– उदयव्यापिनी तिथि के आधार पर ही किसी व्रतपर्व की तिथि (दिन) का निर्णय पाठक को स्वयं नहीं कर लेना चाहिए, क्योंकि सभी व्रत–पर्वों के कर्मकाल (मध्याह्न, अपराह्ण, सायाह्न, प्रदोष आदि काल– जिसमें व्रत–पर्व के पूजादि अनुष्ठान किए जाते हैं) व्रत–पर्व–शास्त्र में भिन्न–भिन्न बतलाए गए हैं। अपने कर्मकाल में व्रत–पर्व की तिथि की व्याप्ति के आधार पर ही उस व्रत–पर्व के दिन का निर्णय शास्त्र–नियमानुसार करना होता है।

समस्या–(i) 'श्रीमार्त्तण्ड पंचाङ्ग' वैक्रम संवत 2070 (2013–14 ई.) के पृष्ठ 254 पर " विवाह मुहूर्त्त–शोधन में लग्नभंग–परिहार " निश्चितरूप से स्वागतयोग्य संशोधन है। किन्तु विक्रमी संवत् 2069(2011–12) पृष्ठसंख्या ('श्रीमार्त्तण्ड पंचाङ्ग') 259 पर 'श्री मुकेशजैन' द्वारा प्रेषित शंका नं. ii में आप द्वारा दिए गए समाधान में नकारा गया है– इसका क्या कारण था ?

(ii) लग्नभंग के 255 पृष्ठ पर अंकित दस परिहारों में यदि केन्द्र–कोण तथा एकादश भावों में स्थित बु., गु.,शु., चं., सू. तथा लग्नेश यदि नीच राशियों या शत्रु राशि में स्थित हों– तो ऐसी स्थिति में क्या लग्नभंगदोष का परिहार मान लिया जाए ?

(iii) क्या 'जन्मराशि' तथा 'जन्मलग्न' से 'अष्टम लग्नदोष' का परिहार भी उक्त दस परिहारों में से किसी एक की उपलब्धि से सम्भव है ?

श्री दुर्गालाल शर्मा, राजपुरोहित,
किश्तवाड़प्रदेश (जम्मू–काश्मीर राज्य)।

समाधान–(i) हमारा नवार्जित मौलिक ज्ञान अनेकदा पूर्वाजित अपने ही ज्ञान में हमें संशोधन के लिए बाधित करता है। ऐसा हमारे अपने दिव्यद्रष्टा ऋषि–मुनियों एवं आचार्यों में भी हम देखने चले आ रहे हैं। हमारे संस्कृत वैयाकरण आचार्यों में भी ऐसे संशोधनों को प्रमा माना जाता रहा है– " उत्तरोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम् ।" इस प्रमाणवाक्य का स्पष्ट अभिप्राय यही है-- " उत्तरोत्तरं चिन्तनानां प्रामाण्यम् ।"

लग्नभंग परिहारों के बारे में मेरा ज्ञान एकमात्र परम्पराप्राप्तनिर्णयों पर आधारित होने के कारण बुरी तरह अपूर्ण था– यह मुझे मुहूर्त्तग्रन्थों, संहिताओं के गंभीर परिशीलन से जब स्पष्ट हो गया, तब सुदृढ़ प्रमाणों से परिपुष्ट नवज्ञात इस लग्नभंग परिहार सिद्धान्त को मैंने अपने " मुहूर्त्तगजानन " ग्रन्थ के माध्यम से प्रेक्षावान् विद्वानों के सम्मुख उपस्थापित किया। इसे आप जैसे तर्कनिष्ठ विद्वानों ने प्रशस्य माना– यह मेरे मनस्तोष के लिए है।

(ii) इस तरह की असंख्य विषमताओं से ज्योतिष–फलितशास्त्र भरा पड़ा है। ध्यान रहे– परम्परागत लग्नभंग परिहार वाक्य भी इस प्रकार की असमाधेय समस्याओं का शिकार है। मैंने इसका उत्तर " मुहूर्त्तगजानन " के पृष्ठ 145 पर दिया है कि– अपनी बलवत्ता की मात्रा के अनुपात से ही केन्द्र, त्रिकोण, एकादशभावस्थ गुरु आदि ग्रह भग्नलग्न के दोष की न्यूनाधिक मात्रा का परिहार कर सकेंगे। वास्तविकता तो यह है, किसी ग्रह के कुप्रभाव एवं सुप्रभाव की मात्राओं का याथार्थ्येन परिपूर्णतया निर्णय शक्य नहीं है, क्योंकि (यवनेश्वर के शब्दों में) ग्रहों के विविध शुभाशुभ योगायोगों की संख्या " समुद्राम्बुवत् अप्रमेय " है, जिनका विश्लेषण सम्भव नहीं है।

(iii) हां, काफी कुछ सम्भव है। जब दस परिहारों में से प्रत्येक परिहार को लग्नभंग दोषों का परिहारक तथा लग्न का बलाधायक संहिताकारों ने , माना है, तब यह इस दोष का भी कुछ परिहार करेगा ही। लग्नभंग–दोष के परिहार का अभिप्राय यही है कि– उस परिहृत–दोष लग्न में विवाहित दम्पती का जीवन यथासम्भव सुख–समृद्धि–सम्पन्न होगा। अतः " जन्मराशि तथा जन्मलग्न से अष्टम लग्न–दोष " को भी उसे कुछ न कुछ परिहृत करना ही चाहिए। वैसे, इस दोष के विशेष परिहार " एकाधिपत्ये राशीशे मैत्रे वा नैष दोषकृत्। " का प्रयोग भी हो सके तो करना चाहिए।

समस्या– कज्जली तृतीया और मुक्ताभरण– ये दो नए व्रत–पर्व कुछ दिनों से Calendars एवं पंचांगों में चर्चित हो रहे हैं। इनके बारे में जानकारी दें कि– ये कब और किस तरह मनाए जाते हैं ?

श्रीसुभाष त्रिवेदी, धौला कुआं, दिल्ली।

समाधान– ये पर्व अभी तक इधर पंजाब आदि में प्रचलित नहीं थे। आजकल Media के प्रचार–प्रसार से इनका अनुष्ठान इधर भी होने लगा है। इनकी तिथि के निर्णय और अनुष्ठान–प्रक्रिया के बारे में इस प्रकार जानिए–

कज्जली तृतीया— यह व्रत परविद्धा भाद्र. कृष्ण तृतीया (शुक्लादि गणितानुसार– श्रावण कृष्ण तृतीया) के दिन किया जाता है। इस व्रत के देवता विष्णु हैं। अतः इस दिन विष्णु की षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। विष्णु–सहस्रनाम–स्तोत्र आदि का पाठ करना भी पुण्यप्रद है।

मुक्ताभरण– पूर्वविद्धा भाद्र. शुक्ल सप्तमी के दिन यह व्रत किया जाता है। इस दिन उमा और शिव की पूजा–अर्चना करनी चाहिए। इसके अनुष्ठान से दीर्घायु–पुत्र की प्राप्ति होती है। इस व्रत को ' सन्तानसप्तमी व्रत ' भी कहा जाता है।

समस्या–(i) एकादशी के दिन चावल नहीं खाने चाहिएं– क्या इस बारे कोई शास्त्रवाक्य है ?

(ii) ग्रहणवेध, ग्रहणशूल, ग्रहणसूतक– क्या परस्पर पर्यायवाची हैं ?

(iii) कंकणग्रहण की आकृति कैसी होती है ? इसे चित्र द्वारा व्यक्त कीजिएगा।

शेर सिंह राणा,
ग्राम रामपुर, रुड़की (हरिद्वार) उ.खं.।

समाधान–(i) " भात या ओदन एकादशी के दिन नहीं खाना चाहिए "– ऐसा कोई स्पष्ट शास्त्रवाक्य मेरी दृष्टि में नहीं आया। हां– " एकादशी में कुछ नहीं खाना चाहिए, उसदिन उपवास रखना चाहिए अन्न नहीं खाना चाहिए"– ऐसे अनेक वाक्य तो शास्त्रों में उपलब्ध हैं, जैसे–

" एकादश्यां न भुञ्जीत पक्षयोरुभयोरपि "

तथा च –

" अन्नमाश्रित्य पापानि तिष्ठन्ति हरिवासरे। " –इत्यादि–इत्यादि।

संस्कृत में ' अन्न ' शब्द का प्रयोग प्राधान्येन गेहूं, जौ, चावल, चना, मूंग आदि अनाजों (Cereals) के लिए ही होता है (जैसे– "अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः" आदि) इसका प्रयोग " उबले चावल (भात) के लिए भी पाया जाता है।" " वसिष्ठस्मृति " का यह वाक्य देखिए–

" शस्यं क्षेत्रगतं प्रोक्तम् सतुषं धान्यमुच्यते।
आमं तु वितुषं ज्ञेयम् स्विन्नम् अन्नम् उदाहृतम्।।

(अर्थात् खेत में खड़े चावल 'शस्य', तुष (Husk) युक्त 'धान्य', तुषरहित 'आम' और उबले हुए चावल 'अन्न ' कहलाते हैं।

इससे यह प्रतीत होता है कि " अन्नमाश्रित्य पापानि तिष्ठन्ति हरि-वासरे। " इत्यादि वाक्यों में अन्न शब्द का ' भात ' अर्थ, ऐसे पर्वतीय, बंगदेशीय, दक्षिणभारतीय आदि लोगों द्वारा किया गया है, जिनका प्रमुख खाद्य ' भात ' है।

अपि च– वैदिक काल में चावल प्रमुख अन्न रहा है। वैसे– धर्मशास्त्र के असंख्य वाक्य एकादशी में सर्वथा अनशन, उपवास (सभी प्रकार के अनाजों, खाद्यों के त्याग) का ही आदेश देते हैं। धर्मशास्त्र के इन वाक्यों में यह कहीं भी निर्देश नहीं है कि– एकादशी के दिन भात नहीं खाना चाहिए। वे तो भोजन (खाना खाने) का ही स्पष्ट रूप में निषेध करते हैं– " एकादश्यां न भुंजीत पक्षयोरुभयोरपि " – इत्यादि।

अतः स्पष्ट है– जो लोग एकादशी के दिन केवल चावलों को ही अभक्ष्य मान लेते हैं और शेष गेहूं, जौ, चना, मूंग आदि का भोजन कर लेना शास्त्रविहित समझते हैं, सर्वथा भ्रान्त हैं।

(ii) ये सभी पर्यायवाची शब्द हैं। यहां ' ग्रहणसूतक ' शब्द प्रसवसूतक (प्रसवाशौच) के सादृश्य पर बना है।

(iii) खग्रास सूर्यग्रहण में सूर्यबिम्ब चन्द्रबिम्ब से पूरी तरह ढक जाता है जब कि कंकण ग्रहण में उसे

चन्द्रबिम्ब इस प्रकार ढक पाता है कि– सूर्यबिम्ब बीच में काला और चारों ओर पिघली चान्दी के कंगन की तरह चमकता दीख पड़ता है (नीचे दिए गए चित्र की भान्ति)–

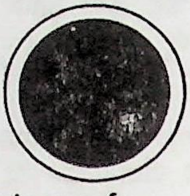

कंकण सूर्यग्रहण

(यहां मध्य में काला चन्द्रबिम्ब है। चारों ओर चमकता कंकणाकृति सूर्यबिम्ब है।)

चन्द्रमा जब पृथ्वी से अधिक दूर (उच्चस्थ या उच्चासन्नस्थ) होने के कारण सूर्यबिम्ब से कुछ छोटा दिखाई देता है, तब कंकण ग्रहण घटित हुआ करता है।

समस्या– महर्षि पराशर ने बलवान् शुभग्रहों (गुरु– शुक्र) को केन्द्राधिपत्य–दोष बतलाया है। जातकग्रन्थकारों ने स्वराशिस्थ इनकी केन्द्र में स्थिति बहुत शुभफलप्रद (महापुरुष योगकारक आदि) लिखी है। अतः यदि ये ग्रह केन्द्र में स्वराशिस्थ हों, तब केन्द्राधिपत्य–दोष के कारण पराशर–मतानुसार इनका फल अशुभ और स्वराशिस्थ, केन्द्रगत होने के कारण शुभ– इस प्रकार दोनों अशुभ–शुभफलों का वहां मिश्रण होगा। ऐसी स्थिति में इन परस्पर विरोधी फलों में तारतम्य का निर्धारण कैसे करना होगा ? कृपया स्पष्ट करें।

श्रीमायाधर शर्मा,
ग्राम–कैथो, सपनोट (मण्डी) हि.प्र.।

समाधान– "केन्द्राधिपत्य–दोषस्तु बलवान् गुरु–शुक्रयोः।"– पराशर के इस वाक्य का अर्थ आपने गलत समझा है। यहां "बलवान्" शब्द " केन्द्राधिपत्यदोषः " का विशेषण है, " गुरुशुक्रयोः " का नहीं। अतः इसका वास्तव अर्थ है– " गुरु–शुक्र का केन्द्राधिपत्यजन्यदोष बलवान् (माना गया) है।"

अब रही बात आपकी प्रकृत समस्या के समाधान की। ध्यान रहे– फलितज्योतिष के फलादेशकारक विभिन्न जातक, ताज़िक, अष्टवर्ग, गोचर, नाड़ी आदि पद्धतियों में समन्वय भारी समस्या है दैवज्ञों के लिए। इन पद्धतियों के परस्पर निरपेक्ष, फलादेशसिद्धान्तों में सुस्पष्टता से व्यक्त विरोधों का समाधान दैवज्ञ लोग, अपनी–अपनी चिन्तन शैली से करते चले आ रहे हैं शताब्दियों से, जिसके कारण इनसे प्राप्त फलादेशों में परस्पर वैमत्यों का आजतक कोई स्पष्ट समाधान फलितज्योतिष–जगत् उपलब्ध नहीं कर सका। इसका एकमात्र कारण– इन फलित–पद्धतियों की उपपत्ति–शून्यता (अवैज्ञानिकता) है। इसी लिए इसका " इदमित्थम् " समाधान संभव नहीं है।

किस ग्रह का रत्न धारण करें ?

लेखक–प्रो. प्रियव्रत शर्मा,

[जो ग्रह अशुभ फल करता है, उसकी शान्ति के लिए उसी ग्रह का रत्न पहना जाए– एक मत यह है। कुछ दैवज्ञ इसे नहीं मानते। वे उस ग्रह के रत्नधारण का परामर्श देते हैं, जन्मकुण्डली में जिसकी स्थिति अशुभफलदायी ग्रह के सर्वथा विपरीत तत्सम्बद्ध शुभफल देने वाली है। कौन–से मत को मान्यता दें–अनेक दैवज्ञ इस दुविधा में हैं। यह लेख इस विषय में उनके सन्देह, भ्रान्ति को दूर करेगा।]

दूसरों के भविष्य–पथ को उजागर करने वाले इस ज्योतिःप्रदीप के नीचे भी कम तमस् नहीं है। इसके साहित्य को गंभीरता और अशेषता से स्वाध्याय करने वाला प्रत्येक तर्कशील व्यक्ति पदे–पदे उपलब्ध होने वाले परस्पर विरुद्ध नियमों से झुंझलाकर इस शास्त्र की प्रामाणिकता को सन्देह की दृष्टि से देखने लगता है। नितान्त आश्चर्य की बात तो यह है कि– इन स्पष्ट तथा परस्पर प्रतिकूल नियमों, सिद्धान्तों के समर्थक दैवज्ञों के भिन्न–भिन्न वर्ग, जो संख्या में भी एक दूसरे के वर्ग से प्रतिद्वन्द्विता करते हैं, अपने–अपने मत को प्रतिज्ञापूर्वक प्रामाणिक, विश्वसनीय (यथार्थ फल देने वाला) बतलाते हैं। क्योंकि दोनों वर्गों द्वारा आदिष्ट (Predicted) फलों में समानरूप से अपवाद और सत्यता मिलती है, यही कारण है कि– दोनों वर्गों में से किसी एक की प्रामाणिकता आज शताब्दियों बाद भी अन्तिमरूप से प्रतिष्ठापित नहीं हो सकी है। उनमें मतभेद वैसे का वैसा स्थिर बना हुआ है। ऐसी अनिश्चयात्मक स्थिति में किसी एक मत की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए शास्त्रवाक्यों का ही अधिकतर सहारा लिया जाता है। जिस पक्ष के समर्थन में अधिकाधिक शास्त्रवाक्य मिलें, उसे प्रामाणिक मानने की भी एक परम्परा है। वराहमिहिर ने फलित नियमों, योगायोगों में इस प्रकार के मतभेदों का निर्णय शास्त्रीय बहुमत से ही करके अपने फलित ग्रन्थ लिखे हैं। यद्यपि बहुमत के आधार पर प्रतिष्ठापित सिद्धान्त सर्वत्र तर्कनिकष पर खरे नहीं उतरते, पुनरपि विकल्पान्तर के अभाव में हम भी निर्धारक अन्य कुछ प्रमाणों, तर्कों के साथ इसका भी प्रयोग एक ऐसे ही विवादास्पद फलितशास्त्रीय विषय के निर्धारण में करेंगे, जो फलितज्ञों को दुविधा में डाले हुए है। वह विषय है–" रत्नधारण। "

दैवज्ञ लोग जब जातक की कुण्डली से किसी भाव पर कुप्रभाव डाल रहे किसी ग्रह को (जो उस भाव का स्वामी, कारक, द्रष्टा या उस भाव से किसी प्रकार सम्बद्ध है) देखते हैं तो वे उस ग्रह के कुफल को शान्त करने के लिए जातक को उस ग्रह का दान–जप करने के साथ–साथ कोई रत्नधारण करने का भी परामर्श देते हैं। कुछ दैवज्ञ उसी ग्रह का रत्न धारण करने का परामर्श देते हैं, जो भाव को साक्षात् दूषित कर रहा हो। उनका मत है कि– वह कुप्रभावी ग्रह अपने रत्न को धारण करने वाले जातक पर सन्तुष्ट होकर अपना कुफल समेट लेता है। दूसरे कुछ दैवज्ञों का मत है कि– कुप्रभावी ग्रह के रत्न के स्थान पर उस ग्रह का रत्न धारण करना चाहिए, कुण्डली में जिसकी स्थिति उस भाव को पुष्ट कर रही हो। इन दैवज्ञों का तर्क है कि– कुफलदायी ग्रह का रत्न धारण करने से तो वह ग्रह बलशाली बनकर उस भाव को और भी कुप्रभावित करेगा। इसलिए उस ग्रह का रत्न नहीं पहनना चाहिए। वे परामर्श देते हैं कि– उस भाव के लिए शुभ स्थिति वाले ग्रह के रत्न को ही धारण करना चाहिए, ताकि वह ग्रह शक्तिशाली होकर भाव को और भी पुष्ट करे। लेकिन उपलब्ध ज्योतिषशास्त्रीय सिद्धान्त के अनुसार उनका यह तर्क ठीक नहीं हैं। क्योंकि ग्रह तभी कुफल देता है जबकि– वह निर्बल स्थिति में हो। प्रबल ग्रह ही शुभफल देता है, भले ही वह क्रूर (पापी) क्यों न हो। नीचस्थ, अस्त, शत्रुराशिस्थ, शत्रुवर्गस्थ, दुःस्थानस्थ, शत्रु–पापदृष्ट ग्रह निर्बल होता है। ऐसा निर्बल ग्रह जिस भाव से सम्बद्ध होगा, उसे दूषित करेगा, उससे सम्बद्ध अशुभ फल देगा। जो ग्रह उच्चस्थ, शुभ/मित्र–ग्रह–दृष्ट–युत, शुभ–मित्रवर्गस्थ होगा, वह बलवान् होगा। ऐसा ग्रह अपने से सम्बद्ध भाव को पुष्ट करता है। उससे सम्बद्ध शुभ फल देता है। अपनी दशा–अन्तर्दशाओं में मंगलकारी माना जाता है। यह नियम शुभ और पापी दोनों प्रकार के ग्रहों के लिए समान है। जातक एवं संहिता–ग्रन्थ इसमें प्रमाण हैं। " पापीग्रह बलवान् होने पर अधिक अशुभ करता है"– इस

आशय के भी कुछ वाक्य हमारे फलित ग्रन्थों में यत्र–तत्र मिलते हैं (शायद इसी के आधार पर अशुभ फलदायी ग्रह के रत्न धारण करने के पक्ष में कुछ दैवज्ञ नहीं हैं)। लेकिन इन वाक्यों का दूसरे ऐसे असंख्य वाक्यों से विरोध पाया जाता है, जो उच्चस्थ, शुभ–मित्र-वर्गस्थ, शुभ–मित्र–दृष्ट–युत, अनस्तंगत, षड्बलयुत पापीग्रहों का दशा–अन्तर्दशा, भाव एवम् राशि में स्थिति का फल पूर्णरूपेण शुभ बतलाते हैं। सबल पापीग्रह की शुभफल देने की शक्ति का निर्देश करने वाले असंख्य वाक्य जातक–मुहूर्त–प्रश्न ग्रन्थों में पदे–पदे मिलते हैं। सभी जातकपद्धतियां भी बली पापग्रह को शुभफलप्रद ही सिद्ध करती हैं। इन ग्रन्थों में बली और निर्बल ग्रहों के क्रमशः शुभ और अशुभ फलों का स्पष्ट निर्देश बतलाता है कि- ग्रह की "बलशालिता" का अर्थ है, उसकी "शुभफल देने की शक्ति" और "बलहीनता" का अर्थ है, उसकी "शुभफल दे सकने में असमर्थता"। उदाहरण देखिए– यदि नवमेश (भाग्येश) चाहे वह मंगल (क्रूरग्रह) हो या गुरु (शुभग्रह) नीच राशि में स्थित, अस्त, शत्रुवर्गगत, शत्रुदृष्ट हो तो वह निर्बल ही होगा। ऐसा भाग्येश जातक को भाग्यहीन ही बनाएगा। यदि वह भाग्येश उच्चराशिस्थ, मूलत्रिकोणगत, उदित, मित्र–शुभवर्गस्थ, शुभ–मित्रदृष्ट, त्रिकोणगत होगा तो वह बलवान् होगा। ऐसा बलवान् भाग्येश जातक को सौभाग्यशाली बनाएगा। इससे यह स्पष्ट है कि– किसी भी भाव का शुभ या अशुभ फल उस भाव के स्वामी की (चाहे वह पापी हो या शुभ ग्रह) क्रमशः सबलता और निर्बलता पर ही आधारित है। ग्रह जितना अधिक निर्बल या सबल होगा, उस द्वारा उत्पन्न फल क्रमशः उतना ही अधिक अशुभ या शुभ होगा। सभी जातक एवम् संहिता ग्रन्थ निरपवादरूप से इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है–"**कुफलप्रद ग्रह के रत्न धारण से वह ग्रह बलशाली होकर कुफल की वृद्धि करता है**"– यह आशंका सर्वथा विपरीत चिन्तन का परिणाम है। इस प्रकार की कल्पना ज्योतिषशास्त्र के प्रणेता ऋषियों, मुनियों द्वारा प्रतिपादित ग्रहसम्बन्धी शुभाशुभ फल के निर्धारक मूलभूत सिद्धान्तों के सर्वथा प्रतिकूल है।

अपि च– ग्रह के कुफल की शान्ति के लिए हमारे ज्योतिषशास्त्र तथा कर्मकाण्ड में ग्रह के जप, पाठ, दान का प्रचुर निर्देश है। सभी दैवज्ञ जानते हैं कि– यह जप, दान, पाठ उसी ग्रह के लिए किया जाता है, जो निर्बल होता है, जो जातक की कुण्डली में नीचादि स्थिति आदि के कारण किसी भावविशेष को दूषित कर रहा होता है। इस प्रकार के अनुष्ठान में कुफलप्रद ग्रह के ही मन्त्रों का जप, पाठ और तत्सम्बद्ध धान्य, स्वर्ण, रत्न आदि का ही दान किया जाता है।

प्रमाणार्थ 'ज्योतिर्निबन्ध' के ये कुछ वाक्य देखिए, जहां निर्देश है कि– अमुक दुष्ट (दोष-युक्त=कुफलप्रद) ग्रह से उत्पन्न अरिष्ट (कुफल या क्लेश) की निवृत्ति के लिए यह दान करना चाहिए।

इस ग्रन्थ के इस वाक्य में उस सूर्य के लिए लाल वस्त्र, गुड़, स्वर्ण, ताम्बा और माणिक्य रत्न आदि का दान लिखा है, जो जन्मकुण्डली में सदोष स्थिति वाला (दुष्ट=कुफलदायी) हो–

" **कौसुम्भवस्त्रं गुड़ –हेमताम्रं माणिक्य–गोधूम–हिरण्य–पद्मम्।**
सवत्सगोदानमिति प्रणीतं – दुष्टाय सूर्याय मसूरिकाश्च।।"

इस ग्रन्थ का यह पद्य बतलाता है कि– चन्द्रमा से उत्पन्न अरिष्ट (कुफल) को शान्त करने के लिए घृत, कलश, श्वेत वस्त्र, मोती आदि का दान करना चाहिए–

" **घृतकलशं सितवस्त्रं दधि–शंख–मौक्तिक–सुवर्णञ्च।**
रजतं च शंखं दद्याच्चन्द्रारिष्टोपशान्तये।।"

इसी ग्रन्थ का यह श्लोक दुष्ट (दोषकारक) मंगल को संतुष्ट करने के लिए मूंगा, गोधूम आदि दान का निर्देश करता है–

" **प्रवाल–गोधूम–मसूरिकाश्च वृषश्च ताम्रं करवीरपुष्पम्।**
आरक्तवस्त्रं गुड–हेमताम्रं दुष्टाय भौमाय सचन्दनञ्च।।"

इस प्रकार अन्य दोषकारक ग्रहों के दान भी इस ग्रन्थ में लिखे हैं।

अन्य अनेक ज्योतिष–ग्रन्थों में जहां इसी प्रकार जातक की कुण्डली में दुःस्थिति के कारण कुफल–दायी सूर्यादि ग्रहों को प्रसन्न करने के लिए तत्तद्ग्रहों से सम्बद्ध माणिक्य आदि रत्नों तथा अन्य पदार्थों का दान करने के लिए जातक को निर्देश दिए गए हैं, वहां साथ यह भी लिखा है कि– इन कुफलप्रद ग्रहों की सन्तुष्टि के लिए इनके माणिक्य आदि रत्नों का दान ही नहीं, अपितु जातक को इन ग्रहों से सम्बद्ध ये रत्न आदि पदार्थ, जो शरीर पर धारण किए जा सकें, स्वयं भी धारण करने चाहिएं–

"यद् यद् ग्रहस्य यद्द्रव्यं तत्तस्मिन् विषमे स्थिते।
दद्यात्सत्कृत्य–विप्रेभ्यः स्वयं च बिभृयात्ततः।।"

[अर्थात् जो ग्रह कुण्डली में विषम स्थिति वाला (दोषकारक) हो, उस ग्रह के लिए शास्त्रों में बतलाए गए माणिक्य आदि रत्न, रक्त, पीत आदि वस्त्र, स्वर्ण, रजत आदि धातुओं का जातक दान भी करे और उन्हें स्वयं भी अपने शरीर पर धारण करें।]

"ज्योतिषतत्त्व–सुधार्णव" का यह वाक्य भी स्पष्ट कहता है कि– जब सूर्य आदि विगुण (सदोष = कुफलप्रद) हों तब उनकी शान्ति के लिए क्रमशः माणिक्य, वैडूर्य, मूंगा, पद्मराग, मोती, हीरा, नीलम, गोमेद और मरकत धारण करना चाहिए–

"माणिक्यं विगुणे सूर्ये वैडूर्यं शशलाच्छने।
प्रवालं भूमिपुत्रे च पद्मरागं शशांकजे।।
गुरौ मुक्तां भृगौ वज्रं इन्द्रनीलं शनैश्चरे।
राहौ गोमेदकं धार्यं केतौ मारकतं तथा।।"

(यहां चन्द्र, गुरु और केतु के रत्न प्रचलित रत्नों से भिन्न लिखे गए हैं, अन्य कई ग्रन्थों में इस प्रकार की भिन्नता मिलती है।)

कालिदास ने भी "ज्योतिर्विदाभरण" में रुष्ट सूर्यादि ग्रहों की तुष्टि के लिए उनके रत्न और धातुओं को धारण करने का जातक को इस पद्य में परामर्श दिया है–

"आरेनयोः विद्रुममिन्दु–धिष्ण्ययोः तारं विदः कर्बुरमिन्द्रमन्त्रिणः।
मुक्ताफलं धार्यमयश्च तुष्टये यमस्य लाजावलयं किलान्ययोः।।"

(अर्थात्– मंगल, सूर्य की तुष्टि के लिए मूंगा; चन्द्र, शुक्र के लिए चान्दी; बुध के लिए सोना; गुरु के लिए मोती; शनि के लिए लोहा और राहु–केतु के लिए लाजावर्त धारण करना चाहिए।)

कश्यप ऋषि भी दोषकारक सूर्यादि की संतुष्टि के लिए उनके माणिक्य आदि धारण करने का परामर्श इस प्रकार देते हैं–

"सूर्यादीनां च सन्तुष्ट्यै माणिक्यं मौक्तिकं तथा
सुविद्रुमं मारकतं पुष्परागं च वज्रकम्।
नील–गोमेद–वैदूर्यं धार्यं स्व–स्व–दृढक्रमात्।।"

सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद् श्रीपति भी अशुभ फल देने वाले ग्रहों का रोष शान्त करने के लिए उनके अपने–अपने रत्नों के धारण करने का सुझाव देते हैं–

"धार्यं तुष्ट्यै विद्रुमं भौम–भान्वोः।
रूप्यं शुक्रेन्द्वोश्च हेमेन्दुजस्य।।
मुक्ता सूरेः लौहमर्कात्मजस्य।
लाजावर्त्तः कीर्तितः शेषयोश्च।।"

(इस श्लोक का अर्थ वही है, जो ऊपर उद्धृत "ज्योतिर्विदाभरण" के पद्य का है।)

इस तरह अन्य सभी भारतीय ज्योतिष–ग्रन्थों में जहां ग्रह के अशुभ फल निवारण के प्रतीकार की बात चर्चित है, निरपवादरूप से यही निर्देश दिया गया है कि– जातक को क्लेशप्रद ग्रह से सम्बद्ध रत्न धारण तथा उस ग्रह के निमित मन्त्र जप–दान करना चाहिए। उस अशुभ फल के विपरीत शुभफल देने वाली स्थिति वाले ग्रह का रत्न धारण कर उसके निमित मन्त्रजप, दान द्वारा शुभफल प्राप्त करने की बात तो उन प्राचीन भारतीय फलित (जातक, मुहूर्त्त, संहिता, प्रश्न आदि) के किसी भी ग्रन्थ में नहीं मिलती।

किंच– विवाह आदि शुभ मंगलकृत्यों के मुहूर्त्तकाल में भी यदि कोई ग्रह लग्न को दूषित कर रहा होता है (जैसे विवाहलग्न में सप्तमस्थ चन्द्र–गुरु, द्वादशस्थ शनि आदि तथा यात्रा में सम्मुख शुक्र आदि), तब उसी दोषकारक गुरु–चन्द्र–शनि–शुक्रादि का ही दान–पूजा करने का शास्त्रीय विधान है। मुहूर्त्त के समय इनसे उत्पन्न दोष के प्रतिकूल शुभफल देने वाले ग्रहों की वहां पूजा करने का कोई निर्देश नहीं है।

अपि च–**"अनिष्टकारी ग्रह का रत्न धारण करने से वह ग्रह बलशाली बन कर और भी अधिक अनिष्ट करेगा"**– जो लोग यह मत रखते हैं, उनके इस मतानुसार तो अनिष्टकारी ग्रह का मन्त्र–जप, पूजा और दान भी उस ग्रह को बलशाली बनाकर उसके अनिष्टफल की वृद्धि का कारण ही बनेगा। लेकिन ध्यान रहे– अनिष्ट फलप्रद ग्रहों को उनके मन्त्रजाप आदि द्वारा अनुकूल बनाने की इस प्रक्रिया को सर्वथा विपरीत फलकारी बतलाने का एक मात्र अभिप्राय यह होगा कि– भारतीय ज्योतिष एक प्रवंचनाशास्त्र है, जो शताब्दियों, सहस्राब्दियों से लोगों को ग्रहपीड़ानिवारण के लिए इस प्रकार के प्रतीकार का परामर्श देता और उनसे ये प्रतिकार करवाता भी चला आ रहा है। **" यह प्रतिकार–पद्धति सर्वथा विपरीत फलप्रद है"**– यह कोई भी भारतीय दैवज्ञ एवम् ज्योतिष पर आस्था रखने वाला सामान्य–जन भी सोच नहीं सकता, क्योंकि भारतीय ज्योतिष –साहित्य इस प्रकार की प्रतिकार–प्रक्रिया द्वारा ही ग्रहों के अनुग्रह की उपलब्धि पर विश्वास रखता है। इस प्रकार के और भी असंख्य ऐसे प्रमाण भारतीय ज्योतिष–ग्रन्थों से उद्धृत किए जा सकते हैं, जो रत्नधारण, दान, जप आदि द्वारा अशुभ–फलप्रद ग्रह को संतुष्ट करने के सिद्धान्त का एक–स्वर से समर्थन करते हैं। जिनसे यह सर्वथा प्रमाणित हो जाता है कि– **" दुष्ट ग्रह के रत्नधारण से उसके कुफल की वृद्धि होती है"**– यह एक निर्मूल एवम् भ्रामक तथाकथित सिद्धान्त है।

शुभफल देने वाले ग्रह का रत्न धारण करने से शुभफल की वृद्धि होती है– इस सिद्धान्त का भी प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। क्योंकि ग्रह भी अपनी पूजा, मन्त्रजप, दान तथा अपने रत्न के धारण से प्रसन्न या बलवान् होकर जातक के प्रति कृपावान् हो जाते हैं– यह बात शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित है। जब रुष्ट (कुफलदायी) ग्रह जातक द्वारा किए गए मन्त्रजप, दान तथा रत्न–धारण से संतुष्ट होकर उसे सुफल देने में प्रवृत्त हो जाते हैं तो **'समान न्याय'** से शुभफलदायक ग्रहों को भी जातक द्वारा किए गए स्वमन्त्रजप, दान तथा स्वरत्न–धारण से संतुष्ट होकर जातक को स्वसम्बद्ध शुभफल और भी अधिक मात्रा में देने के लिए प्रवृत्त होना ही चाहिए– इस सिद्धान्त का भी हमारे शास्त्र समर्थन करते हैं। यही कारण है कि– **सभी मांगलिक कृत्यों के प्रारम्भ में नवग्रहपूजन हमारी परम्परा का एक अंग है।** इस नवग्रहपूजा का उद्देश्य यही है कि– कुफलदायी ग्रह प्रसन्न होकर सुफल दें और सुफलदायी ग्रह प्रसन्न होकर अपने सुफल में और वृद्धि करें।

हमारे ज्योतिर्ग्रन्थों में नवरत्न–मुद्रिका–धारण का निर्देश भी इसी उद्देश्य से किया गया है कि– इसके धारण से जातक की कुण्डली में दुःस्थिति वाले ग्रहों के अशुभफल निवृत्त और सुस्थिति वाले ग्रहों के सुफल प्रवृद्ध हों। यदि दुःस्थिति वाले ग्रह का रत्न धारण करने से उसके कुफल की वृद्धि का वह तथाकथित सिद्धान्त यथार्थ होता तो नवरत्नमुद्रिका–धारण का परामर्श हमारे शास्त्र न देते, क्योंकि इस मुद्रिका में कुफलदायी ग्रहों के रत्न भी तो समाविष्ट होते हैं। मेरा विचार है कि– जो लोग ग्रहों द्वारा उत्पादित कुफल और सुफल की रत्नधारण द्वारा निवृति और प्रवृत्ति पर विश्वास रखते हैं, उन्हें नवरत्न–मुद्रिका ही धारण करनी चाहिए। राजा लोग अपने आभूषणों और मुकुट में नवरत्न इसीलिए तो जड़ाते थे।

दूषित भाव और दूषक ग्रह के लिए रत्नधारण के बारे में कुछ परामर्श–

कई बार एक ही भाव को अनेक ग्रह दूषित करते हैं। ऐसी स्थिति में भाव को सर्वाधिक दूषित करने वाले ग्रह का रत्न धारण करना तो अनिवार्य है ही, इसके साथ ही दूषित भाव के स्वामी ग्रह का भी रत्न यदि जातक पहिने तो परिणाम द्रुत एवम् अधिक अच्छा होगा। यदि कोई जातक अनेक रत्नों को धारण करने से संकोच नहीं करता तो उसे उस भाव के कारक–ग्रह का रत्न भी पहिनना चाहिए, क्योंकि भाव के शुभ–अशुभ फल का सर्वाधिक उत्तरदायित्व भावेश और भावकारक– दोनों की सबलता और निर्बलता पर निर्भर करता है।

रत्न कब धारण करना चाहिए– इसका निर्णय भावों की प्रकृति पर निर्भर करता है। भाव दो प्रकार के हैं– कुछ भावों का सम्बन्ध जातक के समस्त जीवन से (जन्म से मरणपर्यन्त) रहता है। कुछ भाव उसकी (जातक की) आयु, व्यवसाय, स्थिति तथा उसके जीवन की किसी घटना–विशेष से सम्बन्ध रखते हैं।

पहले प्रकार के भावों में लग्न, भाग्य और मृत्यु भाव आते हैं। क्योंकि आरोग्य, सम्पन्नता, यश–प्रतिष्ठा और दीर्घायु– ये सभी जातक के लिए आजीवन अपेक्षित हैं। इन भावों को दूषित करने वाले ग्रह और इन भावों के स्वामी एवम् कारक ग्रहों के रत्न जातक को बाल्यावस्था से ही धारण कर लेने चाहिएं। "ग्रहों का प्रभाव उनकी दशान्तरदशा में विशेष रूप से होता है।" इस में सन्देह नहीं है। लेकिन अन्य ग्रहों की महादशा में आने वाली अपनी अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा और सूक्ष्म दशाओं में भी दूषक ग्रह अपना कुप्रभाव जातक पर डालते रहते हैं और ये अल्पकालीन प्रत्यन्तर्दशा एवम् सूक्ष्म दशाएं तो थोड़े–थोड़े अन्तराल पर घटित होती ही रहती हैं। अतः जातक को दोषी ग्रह की इन कुफलप्रद छोटी–छोटी कालावधियों में अपने आपको सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सतर्कता की दृष्टि से उनके रत्न हमेशा पहिने रहना चाहिए। यही कारण है कि–लग्न आदि आजीवन प्रभावी भावों के लिए रत्न भी आजीवन पहिनना हितकर है।

लग्न, भाग्य और मृत्यु भावों के अलावा शेष लगभग सभी भाव दूसरे प्रकार में आते हैं। यदि ये भाव दूषित हों तो जातक को उसी आयु, स्थिति आदि के समय में ही इनसे सम्बद्ध दोषपूर्ण ग्रहों के रत्न धारण करने चाहिएं, जब इन भावों के फल विशेषतः अपेक्षित हों। उदाहरणार्थ– यदि शिक्षासम्बन्धी भाव, ग्रह शिथिल है तो 5–6 वर्ष की अवस्था में ही तत्सम्बद्ध रत्न जातक को पहिना देना चाहिए। यदि सन्तान भाव ठीक नहीं है तो सन्तान के प्रतिबन्धक ग्रह का रत्न विवाह से कुछ पूर्व या अनन्तर पहिनना युक्ति–युक्त होगा। यदि एकादश (आय) भाव निर्बल है तो उससे सम्बद्ध ग्रह का रत्न व्यवसाय प्रारम्भ करने से पहले धारण करना लाभप्रद होगा। इस प्रकार दैवज्ञ को स्वबुद्ध्या रत्नधारण–सम्बन्धी निर्णय लेने चाहिएं।

सामान्यतः लगभग 50 प्रतिशत भाव अनेक जातकों के कुछ न कुछ दूषित या निर्बल होते ही हैं। वे यदि एक ही भाव के लिए दो–दो रत्न भी पहिनें तो सभी अंगुलियां रत्नमुद्रिकाओं से भर जाएंगी, जो देखने वालों को शायद रुचिकर न लगें। इसका एकमात्र प्रतिकार नवरत्न–मुद्रिका ही है, लेकिन यह सम्पन्न जातकों के लिए ही साध्य है।

हां, जो अर्थाभाव के कारण रत्न नहीं पहन सकते, वे उन ग्रहों को उनके मन्त्रजाप द्वारा भी अनुकूल बना सकते हैं– शास्त्र इसमें प्रमाण हैं। रत्नधारण के साथ–साथ यदि ग्रह के मन्त्र का जाप भी जातक करे तो परिणाम और भी अच्छा होगा।

यदि आप ज्योतिष का व्यवसाय करते हैं तो आपको आवश्यकता है 'अभिजित प्रकाशन' की पुस्तकों की। 'अभिजित् प्रकाशन' की पुस्तकों से सम्बद्ध जानकारी पृष्ठ 279 पर देखिए।

दशाप्रारम्भ का सूक्ष्म काल

लेखक– प्रियव्रत शर्मा,

[दशा की प्रारम्भकालिक लग्नकुण्डली में दशेश आदि की शुभाशुभ स्थिति के आधार पर दशा का शुभाशुभ फल प्रभावित होता है,–ऐसा 'वराहमिहिर' आदि का मत है। दशा की प्रारम्भकालिक कुण्डली बनाने के लिए दशा के प्रारभ होने (दशाप्रवेश) का काल सूक्ष्म (सर्वथा शुद्ध) होना चाहिए। जन्मपत्रियों में दशाओं के जो प्रारम्भकाल दैवज्ञों द्वारा परम्परया लिखे जाते हैं, उनमें घण्टा–मिनटों या घड़ी–पलों तक की सूक्ष्मता की तो बात छोड़िये, दिन तक की भी सूक्ष्मता नहीं होती। यद्यपि मेरा मत है (जोकि सिद्धान्तानुसार संगत भी है), कि दशा–प्रवेशकाल में क्रियात्मकरूप से इतनी सूक्ष्मता लाना लगभग असम्भव है*, पुनरपि यहां गणित द्वारा इसका सूक्ष्मकाल जानने की यथार्थ पद्धति, जिसे मौलिक रूप से मैंने ज्ञात किया है, दे रहा हूँ। इससे उन पाठकों को भी सान्तवना मिलेगी, जो दशाप्रवेशकाल को परम सूक्ष्मता से जानने के लिए मुझे पत्र लिखते रहे हैं।]

जन्मकालिक नक्षत्र के भुक्तकाल (भयात) को जन्मकालिक दशेश के पूर्ण दशावर्षों से गुणाकर भभोग से भाग देकर पांच लब्धियां (क्रमशः वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पल) प्राप्त करें। यह जन्मकालिक दशेश की दशा का भुक्तकाल होगा। इसे जन्मकालीन दशेश के पूर्ण दशावर्षों में से घटाने पर शेष वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पल उस (जन्मकालीन) दशेश की दशा के जन्मकालीन भोग्यवर्ष आदि होंगे⬟। इन्हें जन्मकालिक विक्रमसंवत्◈ और जन्मकालिक स्पष्टसूर्य के राशि, अंश, कला, विकलाओं में क्रमशः जोड़ दें। (अर्थात्– वि. संवत् में भोग्य वर्ष और जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कला, विकलाओं में क्रमशः भोग्यमास–दिन–घड़ी–पल जोड़ दें)। यहां जोड़ करते समय जन्मकालिक स्पष्टसूर्य के राशि, अंश, कला, विकलाओं को क्रमशः मास, दिन, घड़ी, पल मानना होगा– यह ध्यान रहे। इस प्रकार जो योगफल प्राप्त

---

* *अपने इस मत का प्रतिपादन मैंने इस लेख के अन्त में किया है, उसे पढ़िए।*

⬟ *यहां पाठक को यह बतला देना आवश्यक है कि– सूर्य आदि के दशावर्ष (6, 10 आदि) सौर वर्ष हैं। सूर्य का भगणकाल (12 राशियों का भोगकाल) सौर वर्ष कहलाता है। उदाहरणार्थ– " चन्द्रमा के दशावर्ष 10 हैं–" इसका अभिप्राय है कि-चन्द्रमा के दशाकाल में सूर्य 10 भगण पूरे करता है (अर्थात 12 राशियों को 10 बार भोगता है)। यहां यह भी समझ लेना चाहिए कि– सूर्य द्वारा 1 राशि का भोगकाल एक सौरमास, 1 अंश का भोगकाल 1 सौरदिन, 1 कला का भोगकाल 1 सौर घड़ी और 1 विकला का भोगकाल 1 सौरपल होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि– भुक्त–भोग्य दशा के जो वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पल भयात, भभोग द्वारा उपरोक्त गणित से प्राप्त होते हैं, वे क्रमशः सूर्य के भुक्त–भोग्य वर्ष (भगण) राशि, अंश, कला, विकलाएं ही होती हैं। जैसे– यहां आगे दिए गए उदाहरण में जातक के जन्म के समय गुरु की दशा का भुक्तकाल 4 वर्ष, 8 मास, 2 दिन, 38 घड़ी, 44 पल है। इसका अभिप्राय है कि– जातक के जन्म के समय गुरु की दशा की उतनी अवधि बीत चुकी है, जितनी अवधि में सूर्य 4 भगण, 8 राशि, 2 अंश, 38 कला और 44 विकला पार कर जाता है। इसी तरह यहां जन्म के समय गुरु की भोग्यदशा 11 वर्ष, 3 मास, 27 दिन, 21, घड़ी, 16 पल है। इसका अभिप्राय है कि– जन्म के समय गुरु की दशा की उतनी अवधि शेष है, जितनी अवधि में सूर्य 11 भगण, 3 राशि, 27 अंश, 21 कला और 16 विकलाएं भोगता है। ध्यान रहे– दशा के भुक्त, भोग्यसाधन की प्रक्रिया से प्राप्त सूर्य के भुक्त–भोग्य भगण, राशि, अंश, कला, विकलाओं को दैवज्ञ लोग क्रमशः वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पल ही कहा करते हैं, जो ठीक ही है। क्योंकि दशा के भुक्त–भोग्य का यह काल सौर वर्ष, मास आदि ही तो है। हमने भी इस लेख में इसे गणितप्रक्रिया के लिए अनेकत्र वर्ष, मास आदि ही लिखा है।*

◈ *यहां सर्वत्र विक्रम संवत् का प्रारम्भ मेषसंक्रान्तिकाल से ही माना जाएगा, चैत्र शुक्ल–प्रतिपदा से नहीं, यह ध्यान रहे।*

होगा, वह जन्मकालिक दशेश की दशा का समाप्तिकालिक क्रमशः वि. संवत् और स्पष्ट सूर्य की राशि, अंश, कला, विकलाएं होंगी।※ इस (जन्मकालिक दशेश के दशा-समाप्तिकालिक) विक्रम संवत् में परवर्ती दशेशों के पूर्ण दशावर्षों को उत्तरोत्तर यथाक्रम जोड़ देने पर शेष सभी दशेशों की दशाओं के समाप्तिकालीन वि. संवत् प्राप्त हो जाएंगे। ध्यान रहे– इन सभी दशाओं के समाप्ति के समय स्पष्टसूर्य के राश्यादि ठीक वही होंगे, जो जन्मकालीन दशेश की दशा की समाप्ति के समय हैं। नीचे दिया गया उदाहरण देखिए–

9 मार्च, 1997 ई. (वि. सं. 2053) को प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर किसी जातक का जन्म हुआ, जबकि स्पष्टसूर्य 10 रा. 24 अं. 38 कला 25 वि. था। इसके जन्म के समय पूभा. नक्षत्र और भभोग 21घं. 10 मि.(=1270 मि.) तथा भयात 6 घं. 11 मि.(=371 मि.) था। इसका जन्मकालिक दशेश गुरु है। गुरु के दशावर्षों(16) को भयात (371 मि.) से गुणा करके भभोग (1270 मि.) से भाग देकर पांच लब्धियां क्रमशः 4 वर्ष, 8 मास, 2 दिन, 38 घड़ी, 44 पल मिले। यह जातक के जन्म के समय गुरु की भुक्त दशा है। इसे गुरु के दशावर्षों(16) में से घटाने पर 11 वर्ष, 3 मास, 27 दिन, 21 घड़ी, 16 पल मिले। ये जन्म के समय गुरु की भोग्यदशा है। दशा के इन भोग्य वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पलों को जन्मकालिक वि. संवत् 2053 और स्पष्टसूर्य के राश्यादि 10/24/38/25 यानि (10 मास, 24 दिन, 38 घड़ी, 25 पल) में क्रमशः जोड़ देने पर योगफल 2065/2/21/59/41 मिला। जैसे–

वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल
2053	10	24	38	25
+ 11	3	27	21	16
2065	2	21	59	41

इसका अभिप्राय यह हुआ कि–वि. सं. 2065 में जब स्पष्टसूर्य के राश्यादि 2/21/59/41 होंगे, ठीक उसी समय गुरु की दशा समाप्त हो जाएगी। अब गुरु से अग्रिम दशेशों (शनि, बुध, केतु, शुक्र आदि) के दशावर्षों (19, 17, 7, 20 आदि) को गुरुदशा की समाप्ति के वर्ष 2065(वि. सं.) में क्रमशः उत्तरोत्तर जोड़ देने पर शनि आदि की दशाओं के समाप्तिवर्ष (वि. सं.) क्रमशः 2084, 2101, 2108, 2128 आदि ज्ञात हो गए। यहां प्रत्येक ग्रह की दशा की समाप्ति के समय स्पष्ट सूर्य के राश्यादि 2/21/59/41 ही होंगे,– यह तो पूर्वोक्त निर्देशानुसार स्पष्ट ही है। इसे हम चक्र द्वारा इस भान्ति दर्सा सकते हैं–

दशासमाप्ति–कालिक वर्ष और स्पष्टसूर्य

[(जन्मतारीख 9/3/97, समय प्रातः 5 घं. 30 मि.(भा.स्टैं.टा.)]

दशेश		गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
दशासमाप्तिवर्ष वि. संवत्)		2065	2084	2101	2108	2128	2134	2144	2151
दशासमाप्ति के समय स्पष्टसूर्य	रा.	2	2	2	2	2	2	2	2
	अं.	21	21	21	21	21	21	21	21
	क.	59	59	59	59	59	59	59	59
	वि.	41	41	41	41	41	41	41	41

※ *ध्यान दें– यहां दशा के भोग्यकाल (वर्ष आदि) में जन्मकालिक वि. संवत् और स्पष्टसूर्य को जोड़ते समय हमने स्पष्टसूर्य की राशि, अंश, कला, विकलाओं को यद्यपि क्रमशः मास, दिन, घड़ी, पल माना है, लेकिन यहां इनके योगफल को हमें स्पष्टसूर्य के राशि, अंश, कला, विकला ही मानना होगा।*

इस प्रकार प्रत्येक दशा की समाप्ति का वर्ष तो स्पष्टतया ज्ञात हो ही जाता है, लेकिन इनकी समाप्ति का दिन (तारीख) व काल (घं. मि.) तभी मालूम हो सकेगा, जब हम यह ज्ञात कर लें कि– दशा–समाप्तिकालीन स्पष्ट सूर्य (जो सभी दशाओं की समाप्ति के समय समान है), इन भिन्न–भिन्न दशावर्षों में कब–कब(किन–किन तारीखों को किस–किस समय) होगा। इसे ज्ञात करने की विधि इस प्रकार है– जातक के जन्म के ईस्वी सन्▣ से पूर्ववर्ती ई. सन् के पंचांग में दिए गए दैनिक स्पष्ट ग्रहों में देखिए कि– हमारा दशासमाप्ति–कालीन स्पष्टसूर्य वहां किन दो पंक्तियों◈ के मध्य पड़ता है। इन दोनों पंक्तियों वाले स्पष्टसूर्य के राश्यादि का अन्तर कीजिए (अर्थात् सूर्य की गति निकालिए)। प्रथम पंक्ति के स्पष्टसूर्य का दशा–समाप्तिकालीन स्पष्टसूर्य से अन्तर कीजिए। इस अन्तर को 24 से गुणा करके सूर्यगति से भाग देकर दो लब्धियां (घं. मि.) प्राप्त कीजिए। इन्हें प्रथम पंक्ति के वार◆ तथा काल (घं. मि.) में जोड़िए। इससे जो वार घं. मि. प्राप्त होंगे, उनमें 1 वार, 6 घं. 9 मि. जोड़ दें। इससे प्राप्त योगफल (वा.घं. मि.) में **'प्रथम दशा की वर्षसंख्या'*** द्वारा दशा–समाप्तिकाल–कोष्ठक से प्राप्त वार, घं. मि. जोड़ देने पर जन्मकालीन दशेश की दशासमाप्ति का वार और काल (घं. मि.) प्राप्त हो जाएंगे। इसमें जन्मकालीन दशेश से अग्रिम (क्रमानुसार परवर्त्ती) दशेश की दशा की वर्षसंख्या द्वारा **''दशा–समाप्तिकाल कोष्ठक''** से ही प्राप्त वार, घं. मि. जोड़ देने पर उस परवर्त्ती दशेश की दशासमाप्ति का वार और काल मालूम हो जाएगा। इसी प्रकार क्रमानुसार उससे परवर्ती शेष दशेशों की दशाओं की वर्षसंख्याओं द्वारा इसी कोष्ठक से प्राप्त वार, घं. मि. को उत्तरोत्तर जोड़ते हुए उनकी दशाओं के समाप्तिकालीन वार, घं. मि. (काल) भी मालूम कर लेने चाहिएं।

दशासमाप्ति–काल कोष्ठक

वर्ष–संख्या	वार	घं.	मि.	वर्ष–संख्या	वार	घं.	मि.	वर्ष–संख्या	वार	घं.	मि.
0	0	00	00	8	3	01	13	16	6	02	27
1	1	6	9	9	4	07	22	17	0	08	36
2	2	12	18	10	5	13	32	18	1	14	45
3	3	18	27	11	6	19	41	19	2	20	54
4	5	00	37	12	1	01	50	20	4	03	03
5	6	06	46	13	2	07	59				
6	0	12	55	14	3	14	08				
7	1	19	04	15	4	20	17				

आगे उदाहरण देखिए–इस उदाहरण से आप इस गणितप्रक्रिया को अत्यन्त सहजता से जान लेंगे।

▣ *क्योंकि ईस्वी सन् जनवरी आदि मास व स्टैं. टा. का ही प्रयोग सर्वसाधारण द्वारा किया जाता है और इससे गणितप्रक्रिया कुछ सहज भी हो जाती है, अतः अब हम वि. संवत् तथा चैत्र आदि मास व घड़ी–पलों की जगह ई. सन्, जनवरी आदि मास तथा स्टैं. टा. में ही दशाओं का समाप्तिकाल निकालेंगे।*

◈ *स्पष्टग्रह पंचांग में जिस दिन (तारीख) का दिया होता है, उस दिन (तारीख) को ग्रह की पंक्ति कहते हैं। पंक्ति के ग्रह पंचांग में जिस समय के दिए रहते हैं, उस समय को 'पंक्तिकाल' कहते हैं। जैसे– 'श्रीमार्तण्ड पंचांग' में दैनिक स्पष्टग्रह प्रातः 5 घण्टा 30 मिनट के दिए रहते हैं, अतः यहां 'पंक्तिकाल' प्रातः 5 घं. 30 मि.है।*

◆ *यहां वार सर्वत्र पाश्चात्य पद्धति वाला (रात्रि के 12 बजे बदलने वाला) ही लिया जाएगा।*

* *जन्मकालीन दशेश की दशा के समाप्तिकालीन ई. सन् और जन्मकालीन ई. सन् के अन्तर को यहां '' प्रथम दशा की वर्षसंख्या'' लिखा गया है।*

हमारे उदाहरण में जन्म के ई. सन् 1997 से पूर्ववर्ती ई. सन् 1996 है। इस वर्ष के (ई. सन् 1996 वाले) पंचांग में हमारा दशा–समाप्तिकालीन स्पष्टसूर्य 2/21/59/41 (राश्यादि) 7 और 8 जुलाई वाली पंक्तियों के बीच पड़ता है। ⊕ इन दोनों पंक्तियों वाले स्पष्टसूर्य के राश्यादि का अन्तर (सूर्यगति) 57/12 (कलादि) है। प्रथम पंक्ति वाले स्पष्टसूर्य 2/21/20/55 और दशा–समाप्तिकालीन स्पष्ट सूर्य 2/21/59/41 के अन्तर 38/46 (कलादि) को 24 से गुणा कर सूर्यगति (57/12) से भाग देकर दो लब्धियां 16 घं. 16 मि. मिलीं। इन्हें प्रथम पंक्ति के वार रविवार (1) और काल 5 घं. 30 मि. में जोड़ने पर 1 वार 21 घं. 46 मि. हुए। इसमें 1 वार 6 घं. 9 मि. जोड़े तो 3 वार 3 घं. 55 मि. हुए। इसमें प्रथम दशा (गुरु दशा) की वर्षसंख्या 11 द्वारा "दशा–समाप्ति-कालकोष्ठक" से प्राप्त 6 वार 19 घं. 41 मि. जोड़ देने पर 2 वार 23 घं. 36 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि– गुरु की दशा 2 वार (चन्द्रवार) को रात्रि में 11 घं. 36 मि.(भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी। इसमें शनिदशा की वर्षसंख्या 19 द्वारा "दशासमाप्ति–काल कोष्ठक" से प्राप्त 2 वार 20 घं. 54 मि. जोड़ने पर 5 वार 20 घं. 30 मि. हुए। यह शनिदशा की समाप्ति का वार और काल (भा.स्टैं.टा.) है। इसी प्रकार इसमें (शनिदशा की समाप्ति के वार और काल में) बुध–दशा की वर्षसंख्या 17 द्वारा इसी कोष्ठक से प्राप्त वा. घ. मि. जोड़ने पर बुधदशा कीसमाप्ति का वार और काल मालूम हो जाएगा। इसी प्रकार शेष ग्रहों की दशाओं की समाप्ति के वार–काल मालूम हो जाएंगे। नीचे दिए गए चक्र में इस उदाहरण के सभी ग्रहों की दशासमाप्ति के वार और काल दर्शाए गए हैं–

दशासमाप्तिकाल–चक्र

[जन्मतारीख 9–3–97, समय प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.)]

दशेश	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
दशासमाप्ति–वर्ष (ई. सन्)	2008	2027	2044	2051	2071	2077	2087	2094
दशासमाप्ति–वार	चं.	गु.	शु.	र.	गु.	गु.	बु.	शु.
दशा समाप्तिकाल (घं. मि.) (भा.स्टैं.टा.)	23/36	20/30	5/6	00/10	3/13	16/8	5/40	00/44
दशासमाप्ति–तारीख	7 जुला.	8 जुला.	8 जुला.	9 जुला.	9 जुला.	8 जुला.	9 जुला.	9 जुला.

इसप्रकार दशाओं की समाप्ति के वर्ष (ई. सन्) और वार ज्ञात हो जाते हैं। इनकी तारीखों का निर्णय इसप्रकार करना चाहिए–

जन्मकालिक ई. सन् से पूर्ववर्ती ई. सन् में जिस तारीख को दशा–समाप्तिकालिक स्पष्टसूर्य उपलब्ध होता है, प्रत्येक दशा की समाप्ति के समय लगभग वही तारीख होती है। इस तारीख में अधिक से अधिक दो दिन का अन्तर हो सकता है। यथार्थ तारीख का निर्णय दशा–समाप्तिकालिक वार द्वारा कर लेना चाहिए (अर्थात् दशा–समाप्तिकालिक वार इस तारीख की समीपस्थ जिस तारीख को हो उसे ही दशा–समाप्तिकालिक यथार्थ तारीख समझना चाहिए)। हमारे उदाहरण में दशा–समाप्तिकालिक स्पष्टसूर्य (2/21/59/41) ई. सन् 1996 (जन्मवर्ष से पूर्ववर्ती वर्ष) में 7 जुलाई को उपलब्ध होता है। अतः यहां प्रत्येक दशा की समाप्ति के समय लगभग 7 जुलाई होगी– यह स्पष्ट है। सभी दशाओं के समाप्तिकालिक वारों के अनुसार दशा–समाप्तिकाल की यथार्थ तारीखों का निर्णय करके उन्हें ऊपर दिए गए " दशा–समाप्तिकाल–चक्र " की अन्तिम पंक्ति में लिख दिया गया है।

दशा–समाप्तिकाल में घं. मि. तक की सूक्ष्मता ला सकना क्या सम्भव है ?

दशासमाप्ति के सूक्ष्मकाल कानिर्णय करने की गणितप्रक्रिया ऊपर दे दी गई है। लेकिन इस

⊕ क्योंकि 7 जुलाई को स्पष्ट सूर्य 2/21/20/55 और 8 जुलाई को 2/22/18/7 है।

प्रक्रिया द्वारा तभी अपेक्षित सूक्ष्म परिणाम प्राप्त किया जा सकता है, जबकि जन्मकालिक स्पष्ट चन्द्रमा के भोगांश या उसके भयात, भभोग में अपेक्षित सूक्ष्मता हो।

दशा–समाप्ति के काल में मिनट तक की सूक्ष्मता लाना संभव नहीं है, भले ही चन्द्रमा का भोगांश प्रतिविकला तक शुद्ध क्यों न हो ? चन्द्र के भोगांश में एक प्रतिविकला की अशुद्धि होने पर सूर्य के दशासमाप्ति–काल में 1 मिनट और शुक्र के दशा–समाप्तिकाल में 4 मिनट की अशुद्धि आती है।

इष्टकाल में एक सेकण्ड की अशुद्धि से चन्द्रमा के भोगांश में 33 प्रतिविकला की अशुद्धि उत्पन्न होती है, जिससे सूर्य और शुक्र के दशा–समाप्तिकालों में क्रमशः 30 मिनट और 2 घण्टे की अशुद्धि हो जाती है। इसी प्रकार इष्टकाल में 20 सेकण्ड की अशुद्धि (जिससे चन्द्र के भोगांश में 11 विकला की अशुद्धि पैदा होती है) सूर्य एवम् शुक्र के दशा–समाप्तिकालों में क्रमशः 12 और 40 घण्टे की अशुद्धि पैदा करती है।

इष्टकाल में सेकण्ड तक की सूक्ष्मता भी तभी संभव है, जबकि जातक का जन्मकाल एवम् जन्मस्थानीय सूर्योदयकाल सेकण्ड तक शुद्ध हों। क्योंकि जन्मकाल और सूर्योदयकाल घण्टा, मिनटों में ही ज्ञात किए जाते हैं, सेकण्डों की वहां उपेक्षा कर दी जाती है, अतः प्रत्येक जातक के जन्मकाल में एक मिनट तक की अशुद्धि हो सकती है। स्थानीय सूर्योदयकाल में सेकण्ड तक की सूक्ष्मता ला पाना भारी समस्या है।

जन्मकाल, इष्टकाल और सूर्योदयकाल में कितनी अशुद्धि होने पर चन्द्रभोगांश एवम् दशासमाप्ति–काल में कितना अन्तर आता है– यह नीचे दिए गए कोष्ठक में दिखाया गया है–

जन्मकाल, इष्टकाल या सूर्योदयकाल में अशुद्धि	चन्द्रभोगांश में अशुद्धि	सूर्यदशा में अन्तर	शुक्रदशा में अन्तर
सेकण्ड	वि./प्र. वि.	घण्टा	दिन–घण्टा
1	0/33	$\frac{1}{2}$	0/ 2
5	2/45	3	0/10
10	5/30	6	0/20
20	11/00	12	1/16
30	16/30	18	2/12

इस कोष्ठक से स्पष्ट है कि– जन्मकाल, इष्टकाल या सूर्योदयकाल में कुछ सेकण्डों की अशुद्धि से भी ग्रहों के दशा–समाप्तिकाल में इतना अधिक अन्तर आ जाता है, जिससे तात्कालिक लग्न का शुद्ध निर्णय नहीं हो सकता और इसीलिए दशा–प्रवेशकालिक लग्नकुण्डली–द्वारा दशा के शुभाशुभ फल का निर्णय करने वाले सिद्धान्त को क्रियान्वित कर पाना संभव नहीं है।

हमारे प्राचीन ज्योतिषग्रन्थों (ब्रह्मसिद्धान्त, सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव आदि) द्वारा अलग–अलग स्पष्ट किए गए एक ही समय के चन्द्रभोगांशों में परस्पर कई कलाओं तक का अन्तर रहता है। अतः इन विभिन्न ग्रन्थों के अनुसार स्पष्ट किए गए जन्मकालीन चन्द्रभोगांशों में इस अन्तर के कारण जातक के दशा–समाप्तिकालों में दिनों, अनेक स्थितियों में तो मासों का भी अन्तर रहता है– यह बहुत कम दैवज्ञ जानते हैं।

नवीन (चित्रापक्षीय दृक्‌सिद्ध) पद्धति (जिसके आधार पर भारत के लगभग शत–प्रतिशत पंचांग आजकल तैयार होते हैं) और सूर्यसिद्धान्त आदि प्राचीन पद्धतियों (जिनके अनुसार आज से 50–60 वर्ष पहले तक सभी भारतीय पंचांग तैयार होते रहे हैं) द्वारा स्पष्ट किए गए चन्द्रभोगांशों में 2 अंश से भी अधिक तक का अन्तर पाया जाता है। जिससे इन दोनों (नवीन और प्राचीन) पद्धतियों के अनुसार दशा–समाप्तिकाल अक्सर समान नहीं आते। इनमें 3 वर्ष तक का अन्तर कई बार देखा जाता है। इस अन्तर का

प्रभाव दशा-समाप्तिकाल पर तो पड़ता ही है, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशाओं के समाप्तिकालों पर तो यह प्रभाव अत्यन्त असह्य होता है, जिससे इन दोनों पद्धतियों के अनुसार अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशाओं के स्वामी बिलकुल बदल जाते हैं और दशासम्बन्धी फलादेश बिलकुल उलट–पुलट हो जाता है।

B.V. Raman (बंगलोर) ने जो अयनांश स्वीकार किए हैं, उनके अनुसार स्पष्ट किए गए चन्द्रभोगांश चित्रापक्षीय चन्द्रभोगांशों से तो हमेशा 1 अंश 27 कला अधिक रहते हैं, जिससे B.V. Raman पद्धति और चित्रापक्षीय पद्धति से स्पष्ट किए गए दशा–समाप्तिकालों में 8 से 27 महीनों तक का अन्तर हमेशा रहता ही है, जिसके परिणामस्वरूप अन्तर्दशाओं के स्वामी ग्रह इन दोनों पद्धतियों से अक्सर भिन्न–भिन्न होते हैं। प्रत्यन्तर्दशाओं के स्वामी तो इन दोनों पद्धतियों से कभी मेल खाते ही नहीं हैं। स्पष्ट है– इन दोनों पद्धतियों से स्पष्ट की गई दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओं के फलादेश में अनेकत्र भारी विरोध रहता है।

भयात, भभोग या चन्द्र की दैनिक गति द्वारा त्रैराशिक से स्पष्ट किए गए इष्टकालिक चित्रापक्षीय दृक्तुल्य चन्द्रभोगांश में भी 4 कला तक की स्थूलता (अशुद्धि) रहती है, जिससे दशासमाप्ति–काल में 11 से 36 दिन तक का अन्तर हो जाता है। इस अन्तर के कारण अधिकतर प्रत्यन्तर्दशाओं के काल तो अशुद्ध हो ही जाते हैं।

स्पष्ट चन्द्रमा में कितनी अशुद्धि से दशासमाप्ति–काल में कम से कम (दशेश सूर्य की स्थिति में) और अधिक से अधिक (दशेश शुक्र की स्थिति में) उत्पन्न होने वाली अशुद्धि कितनी होगी, इसका विवरण नीचे कोष्ठक में दिया गया है–

चन्द्रभोगांश में अशुद्धि	सूर्यदशा में अशुद्धि	शुक्रदशा में अशुद्धि	चन्द्रभोगांश में अशुद्धि	सूर्यदशा में अशुद्धि	शुक्रदशा में अशुद्धि
अं. क.	दिन	दिन	अं. क.	दिन	दिन
0/1	3	9	0/20	54	180
0/2	5	18	0/30	81	270
0/3	8	27	1/00	162	540
0/4	11	36	2/00	324	1080
0/10	27	90	3/00	486	1620

इस विवेचन का सारांश यह है कि– किसी ग्रह के दशासमाप्ति–काल को मिनट या घण्टा तक की सूक्ष्मता से ज्ञात करने का गणितीय प्रयास अर्थहीन है, क्योंकि अनेकत्र तो दिन तक की सूक्ष्मता प्राप्त कर पाना भी सम्भव नहीं है। इतनी सूक्ष्मता प्राप्त करने के लिए जन्मकाल, सूर्योदयकाल और चन्द्रभोगांश में जो सूक्ष्मता अपेक्षित है, उसे प्राप्त कर सकना गणक के सामर्थ्य से बाहिर है। व्यवहार में लाई जाने वाली काल की सूक्ष्मता की भी एक सीमा है, जिसका अतिक्रमण सम्भव नहीं है। अतः स्पष्ट है– दशा–प्रवेशकालिक लग्नकुण्डली द्वारा दशाफल के निर्धारण के लिए जातकशास्त्रों द्वारा किया गया निर्देश कोई अर्थ ही नहीं रखता। इसलिए यही उचित है कि– दशासमाप्ति का लगभग दिन ही ज्ञात कर लिया जाए। दशासमाप्तिकालीन सूर्य के राश्यादि जिस तारीख को पड़ते हैं, उसी तारीख को सभी दशाओं की समाप्तितारीख मान लेना ही ठीक है।

इस उपरोक्त प्रतिपादन से यह सिद्ध होता है कि– " ग्रहों की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओं के गणितागत प्रारम्भकाल से ही उनका शुभाशुभ प्रभाव प्रारम्भ हो जाता है" – दैवज्ञों द्वारा इस प्रकार की धारणा रखना सर्वथा अयुक्त है, क्योंकि उल्लिखित अनेक अपरिहार्य कारणों से दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओं के प्रारम्भकाल का मास और अनेकदा वर्ष भी विश्वसनीय,(प्रामाणिक) सिद्ध नहीं होता, दिन और घण्टा–मिनटों की बात तो बहुत दूर की है।

भारतेतर देशों में व्रत-पर्व-तिथियों का निर्णय

मैने अपनी पुस्तक ''व्रतपर्वविवेक'' में ''स्थान(भूपृष्ठ) भेद से विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दू व्रतपर्वों **की तारीखों में अन्तर''** शीर्षक लेख के अन्तर्गत विस्तृत विमर्श में यह सुझाव दिया है कि– हिन्दू व्रत-पर्वों को विश्व के सभी देश-प्रदेशों में उन्हीं तारीखों को मनाया जाना चाहिए, जिन तारीखों को वे भारत में मनाए जाते हैं। स्थानीय सूर्योदयास्त-तिथ्यादिकालानुसारी तारीख को इन्हें मनाने में अनेक ऐसी असमाधेय या दुःसमाधेय समस्याएं पैदा होती हैं, जिनका निर्देश विस्तारपूर्वक मैने उपरोक्त लेख में किया है। पुनरपि, ऐसे धर्मनिष्ठ कुछ भारतीय भी विदेशों में बसे हैं, जो स्थानीय सूर्योदयास्त आदि के आधार पर ही इन व्रतपर्वों की तारीखों के निर्धारण का आग्रह रखते हैं। ऐसे महानुभावों के लिए व्रत-पर्वों की स्थानीय तारीख के निर्धारण की प्रक्रिया नीचे सोदाहरण स्पष्ट की जा रही है–

भारतीय पंचाग में दिए गए अभीष्ट तिथि (व्रततिथि) के प्रारम्भ एवं समाप्तिकालों (भा. स्टैं. टा.) को स्वक्षेत्रीय स्टैं. टा. (Z.S.T.) में बदल लें। यदि कोई नक्षत्र उस व्रत-पर्व के निर्धारण में प्रयुक्त हो रहा है * तो उस नक्षत्र के प्रारम्भ और समाप्तिकालों (भा. स्टैं. टा.) को भी स्वक्षेत्रीय स्टैं. टा. (Z.S.T.) में बदल लीजिए।

क्योंकि, व्रततिथि की मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष आदि कर्मकालों में व्याप्ति भी व्रततिथि (व्रत की तारीख) की निर्णायक होती है, अतः उस दिन का सूर्योदयास्तकाल* भी स्वक्षेत्रीय स्टैं. टा. में ज्ञात करें और इसी के अनुसार स्वक्षेत्रीय मध्याह्न आदि कर्मकालों का निर्णय करना होगा।

कई व्रत-पर्व (श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी आदि) ऐसे भी हैं, जिनका निर्णय स्थानीय चन्द्रोदय पर भी निर्भर करता है। ऐसे व्रतपर्वों की स्थानीय तारीख के निर्धारण के लिए व्रततिथि के प्रारम्भ एवं समाप्ति की (दोनों) तारीखों का स्थानीय चन्द्रोदयकाल* भी स्वक्षेत्रीय स्टैं. टा. (Z.S.T.) में जानना होगा।

उपरोक्त प्रक्रिया करने के बाद व्रततिथि की स्थानीय मध्याह्न, अपराह्न, प्रदोष आदि कर्मकाल या चन्द्रोदयकाल में व्याप्ति, अव्याप्ति आदि तथा अपेक्षा होने पर पूर्वविद्धा, परविद्धा आदि का भी विचार करते हुए, ठीक उसी तरह व्रत-पर्व की तारीख का निर्णय करें, जिस प्रकार 'व्रतपर्व-विवेक' में **'व्रत-पर्व-तिथिनिर्णय'** प्रकरण (2) में निर्दिष्ट किया गया है।

स्पष्टता के लिए हम यहां इसके तीन उदाहरण दे रहे हैं–

उदाहरण (i)– वि. संवत् 2062 में श्रीरामनवमी भारत में 18 अप्रैल, '05 ई. को मनाई गई। यह पर्व लण्डन (U.K.) में स्थानीय सूर्योदयास्त आदि के अनुसार किस दिन (तारीख को) होना चाहिए था, यह निर्धारित करना है।

क्योंकि, रामनवमी व्रत मध्याह्नव्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी के दिन होता है, अतः हमें यह देखना है

---

* जैसे– विजयादशमी में श्रवण और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी में रोहिणी नक्षत्र भी अनेक बार निर्धारक होता है।

* बहुधा स्थानीय सूर्योदयास्त एवं चन्द्रोदयकाल-साधन की ज़रूरत ही नहीं पड़ती, क्योंकि स्वक्षेत्रीय स्टैं. टा. वाले तिथि एवं नक्षत्रों के प्रारम्भ-समाप्तिकाल से ही अनेकदा स्वयं स्पष्ट हो जाता है कि– अमुक तिथि-नक्षत्र की स्थानीय मध्याह्न, सायाह्न, प्रदोष या चन्द्रोदयकाल आदि में व्याप्ति/अव्याप्ति आदि है या नहीं। जैसा कि देखिए, यहां दिए गए उदाहरण (i) एवं (ii) में स्थानीय सूर्योदयास्त, चन्द्रोदयास्त की ज़रूरत ही नहीं पड़ी।

कि– लण्डन के सूर्योदयास्तानुसार वहां नवमी की मध्याह्न में व्याप्ति, अव्याप्ति आदि की क्या स्थिति है। तदनुसार ही लण्डन में इस पर्व की तारीख का निर्णय होगा। इसके लिए यह निम्नांकित प्रक्रिया होगी–

⊗ लण्डन का अक्षांश 51° 32′ (उ.)

⊗ लण्डन का रेखांश 0° 05′ (प.)

I.S.T. अनुसार नवमी का प्रारम्भ = 9 घं. 20 मि. (17 अप्रैल, 2005 ई.)

I.S.T. अनुसार नवमी की समाप्ति = 11 घं. 40 मि. (18 अप्रैल, 2005 ई.)

क्योंकि– लण्डन (U.K.) के S.T. (स्टैंण्डर्ड टाईम)(G.M.T.) से I.S.T. का अन्तर = +5 घं. 30 मि. है–

अतः G.M.T. अनुसार नवमी का प्रारम्भ = 3 घं. 50 मि. (17 अप्रैल, 2005 ई.)

G.M.T. अनुसार नवमी की समाप्ति = 6 घं. 10 मि. (18 अप्रैल, 2005 ई.)

देखिए– यहां लण्डन के स्थानीय सूर्योदयास्तसाधन के बिना ही स्पष्ट है कि– यहां (लण्डन में) नवमी 17 अप्रैल, 2005 ई. को ही मध्याह्नव्यापिनी थी, अतः वहां स्थानीय मध्याह्नानुसार यह पर्व 2005 ई. में 17 अप्रैल को ही था।

उदाहरण (ii)– सं. 2062 वि. में **संकष्ट चतुर्थी** (माघ कृष्ण चतुर्थी) का व्रत भारत में 18 जनवरी, 2006 ई. को मनाया गया। Austin (Texas) U.S.A. में स्थानीय गणनानुसार यह पर्व कब होना चाहिए था, यह ज्ञात करना है।

क्योंकि, संकष्टचतुर्थी–व्रत का निर्धारण चन्द्रोदय के समय चतुर्थी की व्याप्ति, अव्याप्ति आदि पर निर्भर करता है। अतः हमें जानना होगा कि– यहां Austin में चतुर्थी की चन्द्रोदय के समय व्याप्ति, अव्याप्ति आदि अनुसार यह पर्व किस दिन सिद्ध होता है। इसका निर्णय इस तरह किया जाएगा–

Austin (Texas) का अक्षांश = 30° 16′ (उ.)

Austin (Texas) का रेखांश = 97° 44′ (प.)

I.S.T. अनुसार चतुर्थीप्रारम्भ = 22 घं. 18 मि. (17 जन., 2006 ई.)

I.S.T. अनुसार चतुर्थीसमाप्त = 1 घं. 02 मि. (19जन., 2006 ई.)

क्योंकि, Austin के Z.S.T. (C.S.T.) से I.S.T. का अन्तर = +11 घं. 30 मि. है–

अतः C.S.T. अनुसार चतुर्थी प्रारम्भ = 10 घं. 48 मि. (17 जन., 2006 ई.)

C.S.T. अनुसार चतुर्थी समाप्त = 13 घं. 32 मि. (18 जन., 2006 ई.)

यहां Austin में चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी केवल 17 जनवरी, 2006 ई. को ही है– यह बिल्कुल स्पष्ट है– क्योंकि, कृष्णचतुर्थी के दिन चन्द्रोदय सूर्यास्त के 3–4 घण्टा बाद ही होता है, यहां Austin में चतुर्थी 17 जनवरी को सूर्यास्त के बाद पूरी रात्रि में भी विद्यमान है। इसप्रकार स्थानीय (Austin का) चन्द्रोदयकाल–साधन किए बिना ही स्पष्ट हो गया कि– यहां यह पर्व 17 जनवरी, 2006 ई. को था।

⊗ *यद्यपि यहां* London *और* Austin *वाले उदाहरणों में अक्षांश, रेखांश का प्रयोग नहीं हो पाया है। पुनरपि, गणितप्रक्रिया में इनका निर्देश करना ज़रूरी है, क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर इन नगरों में स्थानीय सूर्य–चन्द्रोदयास्त–साधन के लिए इनकी ज़रूरत पड़ सकती है।*

उदाहरण (iii)– सं. 2062 वि. में विजयादशमी पर्व भारत में 12 अक्तूबर, '05 ई. को था। Sydney (Australia) में स्थानीय सूर्योदयास्तादि अनुसार इस पर्व की तारीख ज्ञात करनी है।

विजयादशमी (दशहरा) अपराह्णव्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी में मनाया जाता है। दशमी की दो दिन अपराह्णव्याप्ति–अव्याप्ति आदि की स्थितियों में श्रवण नक्षत्र की अपराह्ण आदि में व्याप्ति द्वारा भी इस पर्व की तारीख का निर्णय किया जाता है (देखें – "व्रत–पर्व विवेक" के "व्रत–पर्व तिथिनिर्णय" प्रकरण में 'विजयादशमी निर्णय')। अतः यहां दशमी के प्रारम्भ–समाप्तिकालों के साथ श्रवण नक्षत्र के प्रारम्भ–समाप्तिकाल भी हमें स्थानीय स्टैं. टा. में ज्ञात करने होंगे। इस प्रकार Sydney में इस पर्व की तारीख का निर्णय इस तरह किया जाएगा–

I.S.T. अनुसार दशमीप्रारम्भ = 9 घं. 13 मि. (12 अक्तू., 2005 ई.)
I.S.T. अनुसार दशमीसमाप्त = 6 घं. 43 मि. (13 अक्तू., 2005 ई.)

I.S.T. अनुसार श्रवणप्रारम्भ = 4 घं. 13 मि. (12 अक्तू., 2005 ई.)
I.S.T. अनुसार श्रवणसमाप्त = 2 घं. 30 मि. (13 अक्तू., 2005 ई.)

क्योंकि– Sydney के Z.S.T. से I.S.T. का अन्तर = –4 घं. 30 मि. है–

अतः Sydney के Z.S.T. अनुसार दशमीप्रारम्भ = 13 घं. 43 मि. (12 अक्तू., 2005 ई.)
Sydney के Z.S.T. अनुसार दशमीसमाप्त = 11 घं. 13 मि. (13 अक्तू., 2005 ई.)

Sydney के Z.S.T. अनुसार श्रवणप्रारम्भ = 8 घं. 43 मि. (12 अक्तू., 2005 ई.)
Sydney के Z.S.T. अनुसार श्रवणसमाप्त = 7 घं. 00 मि. (13 अक्तू., 2005 ई.)

Sydney में Z.S.T. अनुसार 12/13 अक्तूबर, 2005 ई. को अपराह्णकाल 12 घं. 58 मि. से 15 घं. 33 मि. तक है⊙। अतः स्पष्ट है– 12 अक्तूबर को Sydney में दशमी और श्रवण– दोनों अपराह्णव्यापी हैं, इसलिए यहां भी इस वर्ष विजयादशमी निर्विवादरूपेण 12 अक्तूबर, 2005 ई. को ही सिद्ध होती है। ध्यान रहे– Sydney में यद्यपि 13 अक्तूबर को दशमी त्रिमुहूर्त्त से अधिक है, लेकिन यहां श्रवण अपराह्णव्यापी नहीं है। अतः " **उदये दशमी किञ्चित्......... सा तिथिः विजयाभिधा।।**"– इस वाक्य की प्रवृत्ति न होने से 13 अक्तूबर को विजयादशमी का योग यहां नहीं बनता।

इस प्रकार भारतेतर किसी भी देश के अभीष्ट नगर में स्थानीय सूर्योदयास्त, चन्द्रोदय आदि के आधार पर किसी भी व्रत–पर्व की स्थानीय तारीख का निर्धारण किया जा सकता है। इस पुस्तक के "व्रत–पर्वतिथिनिर्णय" प्रकरण में दिए गए व्रत–पर्व– तिथि के निर्णायक नियमों को जिसने आत्मसात् किया है, स्पष्ट है, उसके लिए यह सरल है।

ध्यान रहे– भूगोल के अधिक अक्षांश वाले तथा अन्य अनेक स्थानों पर, जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है, हिन्दू व्रत–पर्वो की तारीखों का निर्धारण कई भौगोलिक/खगौलिक विलक्षणताओं के कारण सम्भव नहीं है।

("व्रतपर्वविवेक" से उद्धृत)

— — — —

⊙ Sydney के सूर्योदयास्तानुसार यह ज्ञात करके लिखा गया है (12/13 अक्तू. को Sydney में Z.S.T. अनुसार सूर्योदयकाल 5 घं. 20 मि. और सूर्यास्तकाल 18 घं. 06 मि. है)।

पृष्ठ संख्या 271
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

व्रतपर्व–विवेक

साईज़-24x18½ C.M.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

[व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णायक नियमों पर सरल–सुबोध भाषा–शैली में लिखा एक प्रामाणिक अपूर्व प्रकाशन]

[सन् 2001 से 2050 ई. तक के रामनवमी, दशहरा, दीपावली आदि सभी हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों की तैयार लम्बी सूची।]

इस पुस्तक में हिन्दुओं के चैत्र आदि 12 मासों के व्रतपर्वों के निर्णय का विशद विवेचन, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के प्रमाण–वाक्यों के आधार पर ऐसी सरल भाषा–शैली में किया गया है कि– हिन्दी जानने वाला कोई भी इसे पढ़कर, रामनवमी आदि किसी भी व्रतपर्व की तारीख का निर्णय आसानी से कर सकता है। विभिन्न पंचांगों में किसी व्रतपर्व की तारीख के बारे में मतभेद होने पर इस पुस्तक में दिए गए नियमों के अनुसार यह निर्णय आप अधिकारपूर्वक कर सकते हैं कि– किस पंचांग की तारीख शुद्ध है।

व्रतपर्वों की तारीख का निर्णय पञ्चांङ्गकार किन नियमों के आधार पर करते हैं– यह सब शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विस्तारपूर्वक हिन्दी में समझाया गया है। व्रतपर्वों के निर्णायक धर्मशास्त्रीय सैकड़ों संस्कृतवाक्य, श्लोक हिन्दी–अनुवादसहित उद्धृत किए गए हैं। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, प्रदोष, अरुणोदय, निशीथ, पूर्वविद्धा–परविद्धा तिथि आदि सभी पारिभाषिक कठिन शब्दों की (जिनका प्रयोग व्रतपर्व–निर्णय के प्रसंग में बार–बार आता है) सुस्पष्ट व्याख्या की गई है और इन्हें जानने की गणितप्रक्रिया से मुक्ति दिलाने वाले अनेक कोष्ठक आपको यहां मिलेंगे।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से कुछेक की ओर हम पाठकों का ध्यान यहां आकृष्ट करते हैं:–

(i) हिन्दु व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों–सिद्धान्तों की सरल व्याख्या दी गई है।

(ii) हिन्दु व्रतपर्वों में यदा–कदा पैदा होने वाले मतभेद के कारण और उनके प्रतिकार बतलाए गए हैं।

(iii) चैत्रादि 12 चान्द्रमासों के 24 पक्षों में मनाए जाने वाले नवरात्रारम्भ, श्रीरामनवमी, अक्षयतृतीया, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्राद्धारम्भ–समाप्ति, दीपावली आदि सभी व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों का विस्तृत विवेचन तथा धर्मशास्त्रों के सभी अपेक्षित व्रतपर्वनिर्धारक संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को उद्धृत कर, इन व्रतपर्वों की तिथि (तारीख) का निर्धारण–प्रकार सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

(iv) किस व्रतपर्व के मनाने का शास्त्रीय–विधान क्या है ? व्रतदिन की चर्या कैसी हो ? व्रतदिन में पूजा–पाठ कैसे किया जाए ? व्रतदेवता की पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजा कैसे, किस मन्त्र से, किन उपकरणों (सामग्री) से की जाए, व्रत में देवता का ध्यानमन्त्र क्या है ? व्रत में क्या खाएं, क्या न खाएं ? व्रती के लिए क्या विधि–निषेध है ? व्रतपारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) का समय क्या है ? पारणा में कौन–कौन से पदार्थ भक्ष्य और कौन से वर्ज्य हैं ? सूतक–पातक में व्रत कैसे किया जाए ? रजस्वला स्त्री व्रत के दिन क्या करे ? व्रतभंग होने पर क्या प्रायश्चित्त है ? सूर्य–चन्द्रग्रहण के समय स्नान–दान–जपादि का क्या विधान है ? – इत्यादि पचासों ज्ञातव्य विषयों पर सप्रमाण पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

(v) आधुनिक युग के व्यस्त जीवन को दृष्टि में रखते हुए व्रतदेवता की पूजादि का सारगर्भ संक्षिप्त विधान दिया गया है, जिसे 10–15 मिनटों में ही कोई भी व्यक्ति स्वयं कर्मकाण्डी विद्वान् की सहायता के बिना ही कर सकता है। नवरात्र–घटस्थापन, रामनवमी–पूजा, श्राद्ध–तर्पण, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजनादि सभी व्रतपर्वसम्बन्धी अनुष्ठानों को आप स्वयं कर सकें– ऐसी बालबोध शैली में समझाया गया है। लगभग सभी व्रतदेवताओं के संस्कृत–स्तोत्र भी दिए गए हैं।

(vi) करवाचौथ आदि व्रतपर्वों के उद्यापन की सरल प्रक्रिया बिना किसी विशेषज्ञ की मदद के कोई भी गृहिणी स्वयं कर सके–ऐसा सरल विधानसहित निर्देश है।

(vii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के नवरात्रारम्भ, प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत, दशहरा, दीपावली आदि लगभग सभी हिन्दु–व्रतपर्वों की अंग्रेज़ी तारीखों की लम्बी सूची दी गई है। हरिद्वार, प्रयाग, नासिक, उज्जैन के कुम्भपर्वों की तारीखें।

(viii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों, गजच्छाया, अर्धोदय आदि पर्व।

(ix) सन् 2001 से 2050 ई. तक के गुरु–शुक्रास्तकाल, जैन–पर्वों की तारीखें।

(x) सन् 2001 से 2050 ई. तक के प्रमुख–प्रमुख चैत्रादि मासों के चन्द्रदर्शन की तारीखें, तदनुसार मुहर्रम आदि मुस्लिम मासों

(xi) सन् 2001 से 2050 ई. तक के त्योहारों की तारीखों का ज्ञानप्रकार। की प्रारम्भ–तारीखें एवम् मुहर्रम, ईद–उल–फित्र आदि मुस्लिम

(xii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सिक्ख–गुरुपर्वों की तारीखें।

(xiii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के ईस्टर सण्डे, गुडफ्राईडे की तारीखें और तदनुसार अन्य क्रिश्चियन पर्वों की तारीखों का तुरन्त निर्णय करने वाली अद्भुत तालिका।

(xiv) सभी प्रमुख व्रतों की माहात्म्य कथाएं।

(xv) सभी प्रमुख व्रतों के देवी–देवताओं की आरतियां एवं स्तोत्र।

इन उपरोक्त विषयों के अलावा व्रतपर्वों से सम्बद्ध अन्य बीसों विषय आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। इसे खरीद लीजिए। बस, आगामी 43 वर्षों तक (सन् 2050 ई. तक) व्रतपर्वों की तारीखें जानने के लिए पंचांग, डायरी या कैलेण्डर खरीदने की आपको ज़रुरत नहीं होगी।

मूल्य Rs. 525/– + Rs. 50/– डाकव्यय

हमारी पुस्तकें केवल "अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59/6, पंचकूला से ही मिलेंगी।
इन्हें बेचने का अधिकार अन्य किसी भी बुकसेलर को नहीं दिया गया है।

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

पृष्ठ संख्या 272 साईज़ 24 X 18 सें. मी. उत्कृष्ट बहुमूल्य पेपर पर मुद्रित आकर्षक बहुरंगा आवरण

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

[मेलापकसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का परिपूर्ण समाधान करने वाला अद्वितीय प्रकाशन]

[दूसरा संस्करण]

विवाह–सम्बन्ध के निर्णय के लिए वर और कन्या के अष्टकूटों के गुणों की गणना और उनकी कुण्डलियों के मिलान पर आज तक कोई प्रमाणिक पुस्तक नहीं लिखी गई है। " ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन " पुस्तक इस अभाव की शतप्रतिशत पूर्ति करती है। यह पुस्तक छः अध्यायों में विभाजित है– प्रथम अध्याय में अष्टकूट का सांगोपांग विस्तृत विवेचन, द्वितीय अध्याय में कुज (मङ्गली) दोष पर विस्तृत विमर्श, तृतीय अध्याय में विवाहमुहूर्त्त के साधन की सुबोध प्रक्रिया दी गई है। चतुर्थ अध्याय में भारत के 800 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश तथा ऐसे अनेक मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं, जिनकी मदद से सन् 1971 ई. से 2000 ई. तक (30 वर्षों में) पैदा हुए वर–कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र, जन्मनवांश और जन्मकुण्डली बिना पुराने पंचांगों की सहायता के 10–15 मिनटों में ही जानकर दैवज्ञ उनकी ग्रहस्थितियों का मिलान तथा अष्टकूटों के गुण आदि का निर्णय सरलता से कर सकता है। पंचम और छठे अध्याय मे फलित एवं सिद्धान्त ज्योतिषसम्बन्धी शोधपूर्ण ज्ञानवर्धक ग्यारह (11) मौलिक निबन्ध दिए गए हैं, जो ज्योतिष के चौंका देने वाले अज्ञात रहस्य उदघाटित करते हैं।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों में से इन कुछेक विषयों पर दृष्टिपात कीजिए:-

(1) वर-कन्या के नक्षत्रचरणों के आधार पर बनाई गई विस्तृत गुणमिलान-सारणी36 बड़े पृष्ठों पर फैली है, जिसमें सभी अष्टकूटों के गुण और दोष तथा उनके परिहार एक ही दृष्टि में तुरन्त देखे जा सकते हैं। इस प्रकार की परमोपयोगी विलक्षण महान् मिलानसारणी का निर्माण सचमुच एक अपूर्व ऐतिहासिक प्रयास है। नितान्त श्रमसाध्य इस विशाल सारणी के निर्माण के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया गया है। इस मिलानसारणी के अलावा दो और भिन्न प्रकार की मिलानसारणियां भी इस पुस्तक में दी गई हैं।

(2) वर्ण, गण, षडष्टक, नाड़ी आदि दोषपूर्ण कूटों के बारे में उपलब्ध अनेक परिहारवाक्यों का सोपपात्तिक सप्रमाण विवेचन तथा उनका तार्किक विश्लेषण एवं "नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्" और " एक नक्षत्रजातानां नाड़ीदोषो न विद्यते" आदि बीसों निराधार परिहारवाक्यों का सप्रमाण निराकरण किया गया है।

(3) मंगलदोष के बारे में प्रचलित "द्वितीये भौमदोषस्तु युग्म-कन्यकयोर्विना" और "गुरु-मंगल संयोगे भौमदोषो न विद्यते" - आदि अनेक परिहारवाक्यों की प्रामाणिकता पर विस्तृत सप्रपञ्च विचार-विमर्श एवं इन परिहार-वाक्यों का विश्लेषण-पूर्वक सप्रमाण खण्डन-मण्डन किया गया है।

(4) कुज (मंगल) दोष की मात्रा का सूक्ष्मतापूर्वक यथार्थ निर्णय दैवज्ञों की भारी समस्या है। इसके लिए इस पुस्तक में सात 'कुजदोष कोष्ठक' दिए गए हैं, जिनकी सहायता से जोड़-घटावमात्र जानने वाला कोई भी दैवज्ञ मौखिक गणित द्वारा ही वर-कन्या के कुजदोष की मात्राओं के आंकिकमान (Numerical Values) 20-25 मिनटों में ही सरलतापूर्वक ज्ञात कर सकता है और उनकी तुलना द्वारा वह वर-कन्या के विवाहसम्बन्ध की शक्याशक्यता का निर्णय प्रामाणिक रूप में कर सकता है। कुजदोषमात्रा का आंकिक मान ज्ञात करने की प्रक्रिया को अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है।

(5) मिलान में उपयोगी अन्य बीसों मौलिक सारणियां दी गई हैं, जो लेखक के विस्तृत, गम्भीर अध्ययन एवं अथक परिश्रम का परिणाम हैं।

(6) मिलान पर मिलने वाले विभिन्न मत–मतान्तरों का विश्लेषण विस्तारपूर्वक किया गया है। प्रतिपाद्य विषयों के खण्डन–मण्डन के समर्थन में लगभग 90 मूल ग्रन्थों (संहिता, होरा, मुहूर्त्त आदि) से सैकड़ों प्रमाणवाक्य (श्लोक) पदे–पदे उदधृत किए गए हैं।

इसके अलावा इस पुस्तक में अनेक ऐसे विषय आपको मिलेंगे, जो गुणमिलान और कुण्डलीमिलान पर आपकी विशेष ज्ञानवृद्धि करेंगे। " नाड़ीदोष होने पर भी सम्बन्ध किया जा सकता है", " वर–कन्या की कुण्डलियों का मिलान न होने पर भी सम्बन्ध करने का ज्योतिषशास्त्र में निर्दिष्ट शास्त्रीय विधान क्या है?" – इस प्रकार की अनेक मिलान–सम्बन्धी समस्याओं का शास्त्रप्रतिपादित समाधान विस्तारपूर्वक इस पुस्तक में सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। विषकन्या योग और मंगलीक दोष के उदगम तथा विकास पर विशेष ऐतिहासिक विवेचन दिया गया है।

यह पुस्तक आपको वह सब कुछ बतलाएगी, जो मिलान के लिए अपेक्षित है। इसे पढ़कर आपको आश्चर्य होगा कि– मिलान में अनेक मूर्धन्य दैवज्ञ भी कितनी अक्षम्य त्रुटियां करते हैं और इस विषय में उनका ज्ञान कितना अधूरा है।

मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पुस्तक मिलने का पता:– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,'
कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, **Phone: 0172.2565 303**

सकल पदारथ है जग माही, भाग्यहीन नर पावत नाहीं।

प्राचीन भृगु संहिता महाशास्त्र

(फोटोस्टेट में) (संस्कृत-हिन्दी) (भाषा-टीका सहित)

यह ग्रंथ सभी खण्डों में हमारे यहाँ उपलब्ध है-

- कुण्डली खण्ड
- संतान उपाय खण्ड
- राज खण्ड
- फलित खण्ड
- मूक प्रश्न विचार खण्ड
- स्त्री फलित खण्ड
- जातक प्रकरणम खण्ड
- सर्वारिष्ट निवारण खण्ड
- नष्ट जन्मांग दीपिका खण्ड
- नरपति जयचर्या खण्ड

- शास्त्रों में ऐसा वर्णन है कि प्रत्येक मनुष्य के जीवनकाल में तीन ऐसे समय आते हैं जैसे दो शुभ और एक अशुभ या दो अशुभ और एक शुभ। अतः मनुष्य का यह जान पाना अत्यन्त ही कठिन है कि शुभ समय कब आयेगा, परन्तु भृगु संहिता ग्रंथ के द्वारा प्रत्येक समस्या का समाधान संभव है। महर्षि भृगु ऋषि ने प्रत्येक प्राणी के वर्तमान, भूतकाल एवम् भविष्यकाल के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता प्रदान की है।
- प्रत्येक व्यक्ति के जीवनकाल में घटित घटना का विवरण, जातक की उम्र के मुताबिक होगा। जैसे एक वर्ष से पांच वर्ष तक, पाँच से दस वर्ष तक, पच्चीस से तीस आदि मृत्यु का कारण भी उपलब्ध है।
- कुण्डली खण्ड में अनेक कुण्डली और फलित खण्ड में उसका फलादेश अर्थात ज्योतिष शास्त्र का कोई भी विषय इस ग्रंथ में निहित है (ग्रंथ का एक-एक अक्षर अपनी जगह पर सर्वथा उपयुक्त एवम् बहुत गहरे अर्थ से युक्त है। इस महान ग्रंथ का एक-एक खण्ड अनेक ग्रंथों की बराबरी करता है।
- ग्रहों की दृष्टि का फल व नष्ट जातक का स्टीक विचार तो अनूठा एवम् अद्वितीय है ही, परस्पर राजयोगों का विस्तृत व प्रमाणिक विवेचन भी इसमें मिलेगा। भृगु संहिता महाशास्त्र को पढ़े बिना ज्योतिष स्वाध्याय आधा अधूरा सा ही रह जाता है।
- सौभाग्यशाली समुद्र सबके जीवन में एक बार आवश्यक आता है। जिसके पास जितना बड़ा पात्र होता है, उतना उसमें भर लेता है। सौभाग्य वृद्धि के समय का पूर्व ज्ञान हो तो उसका समुचित लाभ न उठा पाने का दुःख आदि की सम्यक् जानी प्राप्त की जाती है" भृगु संहिता महाशास्त्र" से।
- यह प्राचीन ग्रंथ अनेक वर्षों की खोज, हजारों मील की यात्रा सैकड़ों विद्वानों के अध्यवसाय तथा लाखों रुपये व्यय करके अत्यन्त ही जीर्ण दशा में कठिनता से, सर्वधारण जनता के हित के लिए यह महान् ग्रंथ सुलभ हो चुका है।
- सुविस्तृत व मिलावट से रहित सर्वतोभावेन अर्थ बोधक व्याख्या से युक्त एक प्रमाणिक एवम् प्राचीन ग्रंथ, जो स्वयं एक पुस्तकीय पुस्तकालय में विभाजित है और तीन सुन्दर सजिल्द (क्लाथ बाइंडिंग) में उपलब्ध है।

पुराणाकार साईज 20 X 30/6 बढ़िया सफेद लगभग 2500 पृष्ठ मूल्य 5500/- (पच्चन सौ रुपये मात्र)।

सभी प्रकार की धार्मिक एवं ज्योतिष ग्रंथ आदि की पुस्तकें प्राप्त करने का एकमात्र स्थान-

अग्रवाल बुक डिपो

460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 011-23943254, 23936116

ज्ञान सागर

लेखक-रविन्द्र लाखोटिया

आज के आधुनिक एवं प्रतियोगी जीवन में मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि उसके पास अपनी दैनिक दिनचर्या से कुछ समय निकालना कठिन सा प्रतीत होता है यदि व्यक्ति 15 मिनट प्रतिदिन स्वाध्याय के लिए खाली समय में (जिसका प्रयोग वह अपने कार्य की सोच में बिताता है) या यात्रा के दौरान या सोने से पहले निकाल ले। यह पुस्तक तब न केवल उसके ज्ञान की वृद्धि भी करेगी बल्कि एक सच्ची मार्गदर्शक भी साबित होगी। इस पुस्तक में *''पिता के पत्र पुत्री के नाम''* एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण लिए हुए तनाव युक्त बच्चों में आत्मविश्वास तथा विवेक आदि बढ़ाने वाले प्रेरणात्मक पत्रों का संकलन है। मूल्य : रुपये 45.00 *(डाक व्यय अलग)*

लाल किताब
(सम्पूर्ण)

उर्दू भाषा की 1200 पृष्ठों की प्रसिद्ध एवं प्राचीन पुस्तक का हुबहू सरल हिन्दी अनुवाद

(9x14 इंच साइज में हिन्दी भाषा में प्रथम बार तीन खण्डों में फोटो स्टेट रूप में)

* यह अनोखी पुस्तक बहुत से आश्चर्यजनक ज्योतिष नियमों एवं विचित्र ज्ञान के लिये प्रसिद्ध है।
* ग्रहों की शान्ति के लिये सरल, व्यवहार में आ सकने वाले अचूक टोटके व उपाय जो प्रत्येक व्यक्ति आसानी से व कम खर्च में कर सकता है।
* साथ ही जन्म कुंडली की ग्रह स्थिति का हस्तरेखाओं के साथ मिलान करने की विधि का वर्णन है।
* जिनकी जन्मकुंडली नहीं या गलत है उनके मकान की कुंडली बनाकर ग्रह स्थिति और उसके फलित का मिलान करने की विधि इत्यादि।
* इसमें वर्ष कुंडली बनाने और वर्षफल निकालने की एक ऐसी विधि बताई गई है, जिससे 10 मिनट में किसी भी वर्ष की कुंडली और फलित निकाला जा सकता है अर्थात् लम्बे-चौड़े गणित की आवश्यकता नहीं रही।

चमत्कारी फलादेश के लिये प्रसिद्ध दुर्लभ एवं बेजोड़ ग्रन्थ प्रथम बार दो खण्डों में (हिन्दी भाषा में) स्वयं पढ़िये और आजमाइये।

* उर्दू की फोटोस्टेट प्रति ज्यों की त्यों भी उपलब्ध की जा सकती है।

मूल्य रु. 3100/- सम्पूर्ण दोनों खण्ड

* कृपया आदेश के साथ पेशगी 1000/- रुपये अवश्य भेजें। डाक व्यय 200 रुपये अलग।

ज्योतिष रत्न

(ज्योतिष पर आधारभूत पुस्तक)

इस पुस्तक में ज्योतिष और दर्शन शास्त्र का समन्वय कर इसे सत्य व रोचक बना दिया है। चूंकि दर्शनशास्त्र व ज्योतिष दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, अत: एक अच्छा ज्योर्तिविद् वही हो सकता है जिसे ज्योतिष के साथ-साथ दर्शनशास्त्र का भी ज्ञान हो, क्योंकि समस्त पराविद्याओं का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र से है। यही कारण था कि हमारे ऋषि-मुनि त्रिकालदर्शी होने के साथ-साथ उच्चकोटि के दार्शनिक भी थे।

इसके अलावा इस पुस्तक में खगोल गणित व फलित ज्योतिष का संक्षिप्त परिचय देते हुए षोड्षवर्ग सिद्धान्त की सरल व्याख्या की गई है तथा साथ में सभी ग्रहों का पौराणिक, वैज्ञानिक और सामान्य परिचय देते हुए भौतिक और अभौतिक स्तर पर उनके सम्पूर्ण कारकत्व की तार्किक विवेचना की गई है। इस पुस्तक में फलादेश की ''सम्यक'' विधि की व्याख्या ठोस फलित सूत्रों के साथ की गई है तथा साथ ही इसमें एक संक्षिप्त ज्योतिष शब्द कोश व प्रश्नोत्तर माला भी दी गई है।

मूल्य : रुपये 175.00 *(डाक व्यय सहित)*

सुख-समृद्धि की राह : गृह-वास्तु

लेखिका- सुमन पंडित

वास्तुशास्त्र मानवमात्र के अधिकतम शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण के लिए है। एक वास्तु सम्मत घर आपकी सभी कामनाओं और लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकता है और आपको प्रदान कर सकता है :-

* सुख और समृद्धि
* उत्तम दाम्पत्य जीवन
* स्वास्थ्य और रोग से मुक्ति
* उत्तम शिक्षा और
* घर और व्यवसाय में सफलता
* एक बेहतर जीवन प्रणाली

इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के सिद्धांत एवम् व्यवहार दोनों पक्षों का आधुनिक संदर्भ में संश्लिष्ट रूप से विवेचन किया गगया है। **भूखण्ड का चयन, भवन निर्माण प्रक्रिया, वास्तु नियोजन** से लेकर **आंतरिक साज-सज्जा** तक प्रयोग में आने वाले वास्तु नियमों का इस पुस्तक में एक व्यवहारिक, क्रमबद्ध और सहज सुगम रूप से प्रस्तुत किया गया है। **फ्लैट्स के चयन** और ,आंतरिक साज-सज्जा द्वारा उनमें अधिकतम ऊर्जा के संचार के लिए सरल सटीक उपाय भी इस पुस्तक में दिए गये हैं जो आधुनिक संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं। वास्तुशास्त्र के विद्यार्थियों, विद्वानों और सुखसमृद्धि की कामना करने वाले सामान्य व्यक्तियों-सभी के लिए यह अत्यन्त उपयोगी और अनिवार्य पुस्तक है।

मूल्य : रुपये 175.00 (डाक व्यय सहित)

सभी पुस्तकों के लिए मनीऑर्डर निम्न पते पर भेजें-

अग्रवाल बुक डिपो

460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006

फोन : (011) 23943254

शताब्दी की सबसे महत्वपूर्ण विलक्षण घटना

लंकाधिपति दशानन रावण कृत ज्योतिष, औषधिविज्ञान,
रसायन शास्त्र, दार्शनिक विचारों और नीति शास्त्र के अनुपम ग्रन्थ

रावण संहिता

का हस्तलिखित रूप में प्रकाशन

लंकाधिपति महाराज रावण जहां प्रबल प्रतापी त्रिलोक्य विजेता वीर थे वहीं वे ज्योतिषशास्त्र और तन्त्रशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान भी थे। औषधि विज्ञान और रस निर्माण में वे महर्षि चरक के समकक्ष थे तो ज्योतिष में भी महाराज भृगु से कम नहीं। नीतिशास्त्र का ज्ञान तो उनका इतना अथाह था कि भगवान श्री राम ने अपने भाई लक्ष्मण को उनके पास नीति वचन श्रवण करने हेतु भेजा था।

परमपिता परमात्मा की महती कृपा, आप जैसे धर्मप्राण विज्ञजनों के अनुग्रह तथा विद्यावारिद् ब्राह्मणों एवं दर्शनशास्त्र और प्राचीन साहित्य के मर्मज्ञों के विपुल श्रम एवं सहयोग से आज लंकेश रचित प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ रावण संहिता का प्रकाशन संभव हो सका है। बीस वर्षों से सतत् अनुसंधान, दुर्गम क्षेत्रों की यात्राओं और जहां से भी किंचित् मात्र प्रामाणिक सामग्री प्राप्त हो सकती थी वहां से उस सामग्री के संकलन और समायोजन का महकता हुआ पुष्प है पन्द्रह सौ से अधिक पुराणाकार पृष्ठों का यह हस्तलिखित असली प्राचीन ग्रन्थ संहिता।

महान् विद्वान रावण द्वारा रचित ज्योतिष, औषधि-विज्ञान और तंत्रशास्त्र का यह ज्ञान यद्यपि मूल रूप में रचित एक ग्रंथ के रुप में कहीं उपलब्ध नहीं, परन्तु ज्ञान की धारा दृष्टि से ओझल भले ही हो जाए वह विलुप्त नहीं होती। ज्ञान के यत्र-तत्र बिखरे इन बिन्दुओं, किरणों और मोतियों को एक स्थान पर संग्रहित किया गया है रावण संहिता नामक इस हस्तलिखित वृहद् ग्रंथ में। प्रस्तुत ग्रंथ पांच खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में लंकाधिपति रावण के वंश का परिचय, जन्म की कथा, उनके महान् कार्यों और ज्ञानवान स्वरूप की झांकी प्रस्तुत की गई है। द्वितीय खण्ड में लंकेश द्वारा रचित माने जाने वाले चिकित्सा विज्ञान और औषधिशास्त्र से संबंधित एक हजार एक सौ श्लोकों का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक जटिल रोगों के निदान से संबंधित जानकारियां संग्रहित हैं। तृतीय खण्ड में तंत्रशास्त्र एवं तांत्रिक क्रियाओं से संबंधित प्राचीनतम ज्ञान का संकलन है तो चतुर्थ खण्ड में हैं सहस्त्राधिक कुण्डलियां। पंचम खण्ड में कुण्डलियों के फलादेश दिए गए हैं जो लगभग साढ़े छः सौ पृष्ठों में हैं।

धर्म में आस्था रखने वाले गुण ग्राहक ज्ञानीजनों, ज्योतष के गूढ़ रहस्यों को समझने के आकांक्षी ज्योतिषाचार्यों, यंत्र-मंत्र-तंत्र शास्त्र के आराधकों एवं प्राचीन चिकित्सा पद्धति के प्रेमियों के लिए तो यह हस्तलिखित ग्रंथ परम उपयोगी सिद्ध होगा ही, भक्ति भाव से इसका पाठ-पठन और श्रद्धापूर्वक नमन करने वाले भी मनवांछित सिद्धियों की प्राप्ति कर सकेंगे, ऐसा विश्वास किया जाता है। विपुल श्रम और राशि व्यय करने पर ही इस ग्रंथ का प्रकाशन संभव हो सका है फिर भी जन-कल्याण और प्राचीन विलुप्त साहित्य को जन-जन में लोकप्रिय बनाने की भावना से मात्र 3100/- इक्तीस सौ रुपये एवं डाक खर्च 250/- रुपये अतिरिक्त रखी गई है। रु. 1000/- (एक हजार रुपये) पेशगी भेजकर शेष 2350/- (दौ हजार तीन सौ पचास रुपये) की वी.पी. द्वारा यह ग्रंथ आप घर बैठे भी प्राप्त कर सकते हैं। मंगाने का पता-

इसके अतिरिक्त हमारे यहाँ ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र-यंत्र एवं कर्मकाण्ड संबंधी पुस्तकों का विशाल भण्डार है। कुछ दुर्लभ एवं प्राचीन ग्रंथ भी समय-समय पर आते रहते हैं। नवीन पुस्तकों के लिए भी सम्पर्क रखें।

अग्रवाल बुक डिपो

☎ 011-23943254

460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006

तन्त्र पथ प्रदर्शक

लेखक:- श्री रमेश दत्त झा झक्करनाथ, झाबाबा मूल्य : रुपये 150.00 *(डाक खर्च 50 रु. अलग)*

प्रस्तुत शोध प्रबंध में- तंत्र, मंत्र, यंत्र, ज्योतिष एवं साहित्य कर्मकाण्ड के विषय पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत-शोध-प्रबन्ध ''रूचि'' को तंत्र विद्या के विषय में आकृष्ट करना है।

''गुरुमुख'' (दीक्षा संकार) के लिये प्रारंभिक-प्रयास, धार्मिक उपासना, पूजा-पद्धति साधना-उपासना की ''आचारसंहिता'' (नियमादि) रहस्यमयी माया के गूढ़ तथा गोपनीय-विज्ञान, जोकि तंत्र विषयक-विवेचनात्मक समीक्षा के आधार पर, यह शास्त्र षट्कर्म (Six fold activity) के रूप में माना जाता है। इसके वस्तुस्थिति से यथा संभव विषय-वस्तु से परिचय कराना चाहता हूँ।

जिस प्रकार ''उपासना के ये सभी क्रियाएं-इच्छानुसार प्रार्थना द्वारा अलौकिक प्रेरक शक्ति के माध्यम से प्रगतिशील मानव, उत्तम और सही दिशा में सफलता प्राप्ति के लिए प्रगति-पथ पर अग्रसर हों एवं गति प्राप्त करने के लिये उचित दिशा की ओर संकेत करती है। यह संकेत हमारी कुछ विश्वस्त परम्परा पर आधारित है। 6 प्रकार के कर्म इस प्रकार है - मारण मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, उद्वेषण और शान्ति। मानसिक तनाव, विकलता हलचल उद्विग्नता, आदि में शान्ति कर्म के द्वारा समाधान होता है। इस प्रकार से आवश्यकतानुसार अन्य कार्यों के लिये दूसरे निर्दिष्टकर्म से समाधान संभव होता है।

कुर्लाणवतंत्र के अनुसार - तांत्रिक प्रवृत्ति - सांसारिक वस्तु की उपलब्धि के लिये है। इसका फल शीघ्र होता है। महाकाव्य और पुराण में - इस रहस्यमय गूढ़ एवं गोपनीय विद्या के बारे में उपाख्यान के रूप में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। ये सभी वर्णन प्रयोग रूप में है। यह विद्या पहले राक्षसों के बीच थी ऋषि शुक्राचार्य को भी यह विद्या प्राप्त थी, परन्तु सिर्फ राक्षस ही उनके शिष्य थे।

इस प्रकार यह ब्रह्म विद्या के रूप में अवतरिक हुआ। तंत्र विद्या के विषय में - हमेशा वर्णन है कि यह एक रहस्यमयी, गूढ़ और गोपनीय मार्ग है। एक तरह से - यह साथकों के धन-सम्पत्ति हरण कर देता है। पत्नी एवं उनके जीवन को भी बर्बाद करदेता है। फिर भी - इसके प्रति आस्था विश्वास और भरोसे पर सन्देह नहीं करना एवं इसके रहस्य को दूसरों के सामने व्यक्त नहीं करना चाहिये।

किसी भी जाति के कोई भी व्यक्ति बिना कोई दिक्कत के इस शास्त्र में प्रवेश कर सकते हैं। मन्त्र ग्रहण कर सकते हैं, यदि उनकी रुचि हो। प्राप्त करने की मानसिकता हो। प्राप्त करने योग्य हो। दृढ़ संकल्पित हो। तंत्र शास्त्र एंक सुलभ व्याख्या है। वेदों की सत्यता का प्रमाण है। अल्पज्ञानी, थोड़ी आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों के लिए कलियुग के व्यस्त और बोझिल लोगों के लिए सर्वोत्तम और सर्वोच्च साधन है।

मनुष्य के कष्टों के समाधान के लिये - भगवान शिव ने इस शास्त्र को इसी युग (काल) के लिए उत्कृष्ट शैली में प्रचारित किया। धार्मिक सत्यता में प्रवेश करने का एक पारपत्र (बीजा) के रूप में तंत्र का आविष्कार किया।

इस प्रकार आगे बढ़ने के लिये - आध्यात्मिक निर्देशन भी आवश्यक होता है। सिद्धि और माया तंत्र शास्त्र में - शिव-पार्वती (कथोप-कथन) उत्कृष्ट और विशिष्ट भाषा शैली है। प्रतिमा की रचनात्मक क्रिया और पीठों की स्थापना मन्दिरों के निर्माण, जीवों के कल्याण, मानवों को दीक्षा (संस्कार) प्राप्त होने के लिये होता है। उपासना, साधना, तपस्या तथा आध्यात्मिक प्रयोगात्मक कर्म के लिये ही होता है। जिसे वांछित फल की प्राप्ति होती है, मनोरथ सिद्ध होता है। विशेष रूप से जिसकी जैसी भावना वैसा ही फल होता है।

अत: उपर्युक्त विषय वस्तुओं का विस्तृत वर्णन (संकेत) रूप में इस पुस्तक की विशेषता है।

अग्रवाल बुक डिपो

460, खारी बावली, दिल्ली - 110 006 ☎ 23943254

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

1. 'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय'—यह शताब्दी पुराना उत्तरभारत का एकमात्र ऐसा ज्योतष कार्यालय है, जिसने असंख्य लोगों की जटिल से जटिलतर समस्याओं का फलितशास्त्रीय चमत्कृतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत कर भारी अक्षुण्ण यश अर्जित किया है। हमारे यहां से चित्रापक्षीय निरयण गणनापद्धति द्वारा क्षेत्रीय (Zonal), जन्म समय, जन्म तारीख और जन्म स्थान के शुद्ध अक्षांश आदि के आधार पर अक्षांश, सूर्योदयास्त, अयनांश आदि में सभी अपेक्षित सूक्ष्म संस्कार देकर स्वनिर्मित अत्याधुनिक/कम्प्यूटरीकृत सारणियों द्वारा भारतीय/विदेशी जन्मपत्र, टेवा/दशा और निवास स्थानीय अक्षांश आदि से वर्षफल अतीव सूक्ष्मतापूर्वक बनाये जाते हैं, जिनमें स्वास्थ्य, सन्तान, स्त्री, धन-सम्पत्ति, भाग्योदय, कार्यक्षेत्र, प्रगति आदि का निर्णय किया जाता है। जन्मपत्रादि हिन्दी में सुन्दर व संक्षिप्त फलादेशसहित अत्यन्त सावधानी से बनाये जाते हैं।

नोट—प्रत्येक कार्य की पूरी फीस ऑर्डर के साथ ही भेजें। V.P.P. नहीं की जायेगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा। डाकव्यय अलग से होगा।

(i)	भारतीय साधारण जन्मपत्र की फीस	Rs. 800/-
(ii)	भारतीय विस्तृत (बड़े) जन्मपत्र की फीस	Rs. 1500/-
(iii)	विदेशी जन्मपत्र की फीस	Rs. 1500/-
(iv)	भारतीय टेवा/दशा की फीस	Rs. 300/-
(v)	विदेशी दशा की फीस	Rs. 500/-
(vi)	भारतीय वर्षफल की फीस	Rs. 500/-
(vii)	विदेशी वर्षफल की फीस	Rs. 1100/-
(viii)	शुद्ध विवाहमुहूर्त्त/कुण्डली मिलान की फीस	Rs. 1100/-
(ix)	फोन पर मुहूर्त्त/मिलान की फीस	Rs. 2100/-
(x)	सर्वसाधारण प्रश्न की फीस	Rs. 1100/-

2. हमारे यहां मन्त्रादि साधनाकाल के विशेष समय में नवग्रहयन्त्र, महालक्ष्मी यन्त्र, सिद्धगोपाल यन्त्र आदि भी बनाये जाते हैं। जिनमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण यह है—

(i) सिद्ध शनियन्त्र—इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभ पीड़ा से मुक्ति मिलती है। फीस—Rs. 2100/-

(ii) श्रीलक्ष्मी यन्त्र—अष्टगन्ध आदि से विधिवत् शुभ वेला में बनाये इस यन्त्र को पूजास्थल या गल्ले में रखने से लक्ष्मीजी की अपार कृपा रहती है। फीस—Rs. 5100/-

(iii) अठाराहा नाशक यन्त्र—जिन औरतों के बच्चे अठाराहा, मसान दोष आदि के कारण मर जाते हैं, उनके संरक्षणार्थ यह यन्त्र वरदान रूप है। फीस—Rs. 2100/-

(iv) सिद्धगोपाल यन्त्र—इस यन्त्र को श्रद्धासहित स्त्री धारण करे तो चिरंजीवी पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। फीस—Rs. 2100/-

व्यापारियों के लिए चांस (तेजी-मन्दी)

समय-समय पर हम रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड, शेयर मार्कीट, सोना, चांदी आदि के चांस की लिखित Report देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। एक जिन्स (चना, ग्वार आदि अनाज, तिल-तेल सरसों, बिनौला आदि तिलहन, रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट तथा सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित Report की अडवांस फीस Rs. 5100/- प्रतिमास एवं वर्षभर की फीस Rs. 51000/- के हिसाब से चार्ज किये जाते हैं। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापार- विमर्श' के अन्त में देखें।

नोट—Report के अतिरिक्त Phone पर प्रतिदिन बात करने की फीस अलग से होगी।

पत्रव्यवहार हेतु अपने साफ-साफ डाक पते के साथ फोन नं. एवं Pincode लिखना न भूलें।

—: पण्डित जी से मिलने हेतु :—

क्रमांक (Token) प्राप्ति का समय—7 से 10 A.M.

पण्डित जी से मिलने का समय—9 A.M. से

(दूर से आने वाले सज्जन टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन व समय निश्चित कर लें।)

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्र-व्यवहार के लिए पता—

पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,

सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय (नजदीक रेलवे स्टेशन),

मु.पो. कुराली, जिला मोहाली (पंजाब) पिन-140103,

फोन—0160-2641277, 09988407010

Website : www.shrimartand.com

पृष्ठ संख्या 222
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

मुहूर्त्त गजानन

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा,

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वशिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थो में दिया गया मुहूर्त्त का साधनप्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त्त में कौन-सा मास-तिथि-वार-नक्षत्र-योग ग्राह्य हैं, कौन-सा काल लग्नमुहूर्त्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो-इत्यादि मुहूर्त्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्त्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु-शुक्रास्त, मासान्त-संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि सभी दोषों का विस्तृत विवरण तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय-विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त-ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों-सहित किया गया है। सभी उदधृत संस्कृत-प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

भारतीय पंचांगों में दिए गए विवाहादि लग्न केवल भारत के लिए ही होते हैं। इन्हें भारत से अन्य देशों में प्रयोग में लाना अपराध है। इस पुस्तक में अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है कि- किसी अभीष्ट विदेशी नगर में प्रयोग में लाने के लिए इन विवाहादि लग्नों में कौन-कौन से संस्कार कैसे करने चाहिएं। विगत एक वर्ष का पूरा तिथ्यादि पंचांग भी दिया गया है। जिसकी मदद से विभिन्न मुहूर्त्तों के शुद्धकाल एवं लग्न के निर्णय-प्रकार अनेक उदाहरणों द्वारा बालबोध शैली में समझाए गए हैं।

मुहूर्त्तशास्त्रों में उपलब्ध जाति, धर्म, लिंग एवं प्रादेशिक परम्पराओं पर आधारित मतभेदों का पूर्वाग्रहमुक्त विश्लेषण किया गया है। अनेक शोधलेख, जो मुहूर्त्तसम्बन्धी अज्ञात रहस्य उदघाटित करते हैं, इसमें आपको मिलेंगे।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि-ज्ञापक आदि बीसों मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध 200 नगरों में मेषादि लग्नों की प्रारम्भ-समाप्ति जानने के लिए दो कोष्ठक दिए गए हैं। जिनसे मौखिक जोड़-घटाव द्वारा ही किसी भी दिन इन नगरों में मुहूर्त्तकालिक लग्न का प्रारम्भ-समाप्तिकाल वस्तुतः 30 सेकण्ड में ही जाना जा सकता है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. नहीं की जाती।

मूल्य Rs. 500/- + डाकव्यय Rs. 50/-

ध्यान दें- हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" कोठी नं. 59, सेक्टर-6, P.O. पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

पता- श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर-6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) - 134 109, Phone: 0172-2565 303